श्री श्री गौरांगविधुर्जयति

सचित्र

श्री श्री चैतन्यचरितामृत

(ब्रजभाषा में)

श्री श्री सुवलश्यामजी कृत

रसिक प्रवर पूज्य श्री गौरांगदासजी महाराज के कृपापात्र,
वरसाना (कोसी) निवासी, सेठ वनखण्डि आत्मज,
गौरनिष्ठ, लाला चतुर्भुज (चेतराम) हरि-
सम्बन्धि नाम चैतन्यदास जी के
सम्पूर्ण आर्थिक सहाय
से मुद्रित

न्यौछावर

५॥)

प्रथमावृत्ति १०००
सम्वत् २००६ विक्रमी,
चैतन्याब्द ४६४

प्रकाशक—
कृष्णदास
कुसुमसरोवर

मुद्रक:—बालकृष्ण बन्सल, बन्सल प्रेस, छीपीटोला आगरा।

श्री श्री गौरांगविधुर्जयति

सचित्र

श्री श्री चैतन्यचरितामृत

(ब्रजभाषा में)

श्री श्री सुवलश्यामजी कृत

रसिक प्रवर पूज्य श्री गौरांगदासजी महाराज के कृपापात्र,
बरसाना (कोसी) निवासी, सेठ वनखण्डि आत्मज,
गौरनिष्ठ, लाला चतुर्भुज (चेतराम) हरि-
सम्बन्धि नाम चैतन्यदास जी के
सम्पूर्ण आर्थिक सहाय
से मुद्रित

न्यौछावर
५॥)
प्रथमावृत्ति १०००
सम्वत् २००६ विक्रमी,
चैतन्याब्द ४६४

प्रकाशक—
कृष्णदास
कुसुमसरोवर

मुद्रकः—बालकृष्ण बन्सल, बन्सल प्रेस, छीपीटोला आगरा।

❀ श्री श्री गौरांगविधुर्जयति ❀

ब्रजभाषा में

श्री श्री चैतन्यचरितामृतम्

महा महोदय श्रील सुबलश्यामजी विरचितम्

श्रीकृष्णचैतन्य प्रभुनित्यानन्द ।
हरेकृष्ण हरेराम राधेगोविन्द ॥
भज-निताई गौर राधेश्याम ।
जय-हरेकृष्ण हरेराम ॥

ग्रन्थकर्त्ता की गुरुपरम्परा

(१) श्रीराधाकृष्ण मिलित स्वरूप श्रीमन्महाप्रभु । (२) तस्य पार्षदप्रवर श्रीगदाधर पण्डित गोस्वामी (३) तच्छिष्य श्रीकृष्णदास ब्रह्मचारी (४) तच्छिष्य ब्रजाचार्य्य, व्रज में रासलीलानुकरण के मूल आचार्य्य तथा बरसाना में श्रीलाडिली जू के प्राकट्यकारी नारदावतार श्रीनारायण भट्ट (५) तच्छिष्य श्रीदामोदर भट्ट, (६) तच्छिष्य श्रीबालमुकुन्द भट्ट, (७) तच्छिष्य श्रीगोपाल भट्ट, (८) तस्य श्रीब्रजपति भट्ट, (९) तस्य यदुपति भट्ट, (१०) तच्छिष्य ग्रन्थ रचयिता श्रीसुबलश्याम ।

अर्थ सहायक—
सेठ बनखण्डि आत्मज,
कोसी (बरसाना) निवासी,
चतुर्भुज (चेतराम) जी

प्रथमावृत्ति १०००
वि० सं० २००६ चैतन्याब्द ४६४

प्रकाशक :—
बाबा—कृष्णदास
कुसुमसरोवर
पो० राधाकुण्ड
जि० मथुरा ।

सूची-पत्रम्

अवतरणिका

आज करुणामय गुरुदेव की कृपा से करुणावरुणालय प्रेम पुरुषोत्तम प्रेमावतार प्रेमदाता श्री राधाकृष्ण मिलित विग्रह श्री भगवान गौराङ्ग महाप्रभु के श्री लीलारस से युक्त यह श्री चैतन्य-चरितामृत मूलबंगभाषा के आधार पर ब्रजभाषा में मुद्रित होकर जन साधारण के लाभार्थ प्रकाशित है। इस ग्रन्थ रत्न के रचयिता ब्रजभाषा के प्राचीन कवि श्री सुबलश्यामजी हैं। प्रायः २५० वर्ष पूर्व इसकी रचना इन्होंने की थी। आप ब्रज के प्रसिद्ध आचार्य्य नारदावतार रासलीला प्रवर्तक श्री नारायण भट्टजी की शिष्य-परम्परा को सातवीं पीढ़ी में हुए हैं। इन्हीं श्री नारायणभट्टजी के द्वारा बरसाना-स्थित श्री लाड़िलीजी तथा ब्रज के अनेक लुप्ततीर्थों का प्राकट्य हुआ था।

श्री चैतन्यचरितामृत मूल ग्रन्थ बंगला भाषा में पयार छन्द में रचित है जिसका श्रेय श्री कृष्णदास कविराज गोस्वामी महोदय को है। इन्होंने इसमें समस्त उपनिषद् पुराण इतिहास पंचरात्र श्रीगीता ब्रह्मसूत्र तथा श्रीमद्भागवतादि भक्ति-ग्रन्थ और भक्ति-रसामृतसिंधु, उज्ज्वलनीलमणि प्रभृति यावतीय गोस्वामी गण विरचित वैष्णव ग्रन्थों का सार तथा प्रमाण रूप अनेक श्लोक उद्धरण देकर यह अद्भुत ग्रन्थ रत्न प्रगट किया। श्री कविराज गोस्वामिपाद श्रीनित्यानन्द प्रभुपाद की शक्ति-प्रेरणा से इस अद्वितीय ग्रन्थ की रचना करने में समर्थ हुए थे। आपने श्री श्री महाप्रभु के लीला चरित्रों को श्री रघुनाथदास गोस्वामिपाद के मुखारविन्द से श्री राधाकुण्ड पर श्रवण करके श्री वृन्दावनदास ठाकुर द्वारा रचित श्री चैतन्य-भागवत के आधार पर इस अमूल्य लीला रूप गाथा को संचय किया। श्री चैतन्य-भागवत में जो लीलाऐं श्री वृन्दावनदास ठाकुर ने विस्तार से नहीं लिखीं थी उनको इन्होंने उक्त ठाकुर महाशय के प्रसाद रूप विस्तार से दिया है तथा श्री चैतन्य-भागवत की विस्तृत कथाओं को सूक्ष्म रूप से दिया है। यह ग्रन्थ आपाततः दो भागों में विभक्त है, सिद्धान्तांश और लीलांश। श्री महाप्रभु की लीलाओं तथा स्वरूप-तत्व को जानने की पुष्टि के लिये ही सिद्धान्तांश निहित है।

श्री महाप्रभु के स्वरूप-परिकर-धामादि तत्वों को समझाने के लिये ग्रन्थ के आदि के ग्यारह परिच्छेद केवल सिद्धान्त से ही भरे हैं, इसी प्रकार मध्यखण्ड के अष्टम तथा उन्नीस से चौबीस परिच्छेद तक सिद्धान्त का विस्तार है। विज्ञ पाठक गण इन परिच्छेदों में दिये सिद्धान्त तथा समग्र ग्रन्थ में अन्य स्थलों में दिये हुए सिद्धान्त-समुच्चय को बड़े चाव से धैर्य्यपूर्वक दृढ़-निष्ट हो श्री गुरु-वैष्णवानुगत्य में निरन्तर पाठ करें तथा समझने का उद्योग करें। यह ग्रन्थ इसी कारण समस्त वैष्णवों के लिये परम आदर की वस्तु है और श्री माध्व-गौड़ेश्वर सम्प्रदाय का तो यह आधार-भूत नित्य पाठ्य-ग्रन्थ ही है।

किन्तु बंगभाषा में होने के कारण यह ग्रन्थ इतरदेशीय जनों को अधिक लाभप्रद नहीं होता था। इस बात को दृष्टिगोचर रखते हुए ब्रजस्थ-वैष्णव गणों के आदेशानुसार श्री सुबलश्याम जी ने (प्रायः २५० वर्ष पूर्व) इस अनुपम संग्रहणीय ग्रन्थ रत्न को सरल ब्रज भाषा में भाषान्तरित कर के परवर्त्ति जनसाधारण का अतुलनीय उपकार किया है। हिन्दी भाषा भाषी जनता श्रीमहाप्रभु की लीला से प्राय अनभिज्ञ है जो दो एक छोटे बड़े ग्रन्थ हाल में प्रकाशित हुए भी हैं, उनसे श्री महाप्रभु के विषय में भ्रम फैलने की जो शंका है उसको निराकरण करने के लिये इस प्राचीन (प्रायः २५० वर्ष पूर्व लिखित) ग्रन्थ का पुनः प्रकाशन होना परम श्रेयस्कर है। श्री नाभादासजी द्वारा लिखित श्री भक्तमालजी के शब्दों में विश्वास-शैथिल्य के कारण इतर लेखकों ने प्रायः महा-प्रभु को भगवदवतार न मान कर ही भक्तरूप से वर्णन-चेष्टा की है। इस ग्रन्थ में निहित सिद्धान्त ही ऐसे भ्रमादि का निराकरण करेंगे।

जिन हस्त लिपियों से यह पुस्तक प्रस्तुत हुई है उनके आदि अन्त के पृष्ठों के प्रति-रूप (फ़ोटो) चित्र इस ग्रन्थ में दे रहे हैं। इसमें तीन पृष्ठों के चित्र हैं (१) ऊपर में ग्रन्थकार का

गुरुपरम्परा-परिचय है (२) मध्य में-आदि खण्ड के अन्तिम पृष्ठ का प्रतिरूप है, तथा (३) नीचे-मध्य खण्ड के अन्तिम पृष्ठ का। अन्तिम दोनों चित्रों में ग्रन्थ की प्रति-लिपि लेखन सम्वत् १८२८-२६ दिये हुए हैं।

इस ग्रन्थ का सन्धान सर्व प्रथम हमारे पूज्य गुरुभ्राता श्री रजनीदास बाबाजी (गोविन्द कुण्ड वृन्दावन) से हमें प्राप्त हुआ, तत्पश्चात श्री पूज्य बंशीदासजी बाबाजी (गौ घाट वृन्दावन) से आदि खण्ड प्राप्त हुआ, तदनन्तर राधारमणैक-जीवन गौरनिष्ठ गोस्वामी श्री कृष्ण चैतन्यजी महाराज से आदि तथा मध्य दो खण्ड प्राप्त हुए।

भक्तिविशारद, आचार्य श्री मदन मोहन गोस्वामीजी ने इस ग्रन्थ की प्राप्ति कराने में हमें अत्यन्त सहायता प्रदान की। हमारे काकागुरु श्री युक्त अद्वैतदासजी महाराज (नवद्वीप धामस्थ) के शिष्य श्रीमान् वृन्दावनदास से उक्त पुस्तकों की प्रतिलिपि कराने में हमें बड़ी सहायता मिली है। पूज्य श्री ज्येष्ठ गुरुभ्राता श्री गौराङ्गादासजी महाराज, श्रीयुक्त कृपासिंधुदासजी महाराज (रमणरेती) तथा पूज्य काका गुरु श्री बाबा उद्धारणदासजी (कुसुमसरोवर) और श्रीमान् राधाचरणदासजी (गोविन्द कुण्ड, वृन्दावन) श्रीमान् हरिदास शास्त्रीजी, (कालिदह) श्री पूज्य बाबा मनोहरदासजी (चकलेश्वर गोवर्द्धन) बरसाना निवासी गोस्वामी श्री प्रियालालजी तथा जयदेव वंशोद्भव गोस्वामी श्री यमुनावल्लभजी, श्रीमान् गौरनिष्ठ श्री जगमोहनलालजी श्रीवास्तव, न्याय मन्त्री (मध्य भारत प्रान्त) श्रीमान् राजा रघुनन्दनजी (मुंगेर) एवं अन्यान्य ब्रजस्थ वैष्णवगणों के प्रोत्साहन फल स्वरूप यह ग्रन्थ प्रकाशित करने में हम समर्थ हुए हैं। इस ग्रन्थ के मुद्रितादि कार्य में हमें आगरा निवासी श्रीमान् डाक्टर पूर्णचन्द्र शर्माजी से सम्पूर्ण सहाय मिली है। पूज्य श्री गौरांगदासजी के शिष्य बरसाना (कोसी) निवासी लाला चेतराम (चतुर्भुजदास) के सम्पूर्ण अर्थ सहाय से यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है। एतदर्थ समस्त महानुभाव सज्जनों के हम आभारी हैं।

मूल ग्रन्थ तीन खण्डों में बंग भाषा में उपस्थित है। परन्तु बहुत खोज करने पर भी हमें ब्रज भाषा में श्री सुबलश्याम कृत दो ही (आदि तथा मध्य खण्ड) प्राप्त हुए हैं। अभी अन्त खण्ड की खोज हो रही है। विलम्ब होने के कारण दो ही खण्ड छाप कर प्रकाशित किये जा रहे हैं। इतने पर भी कोई महानुभाव प्रस्तुत पुस्तक को असम्पूर्ण ग्रन्थ न समझें; स्वयं मूल ग्रन्थकार ने इस शंका का निराकरण मध्य खण्ड के द्वितीय परिच्छेद के अन्तिम पयारों में इस प्रकार किया है:—

शेष लीलार सूत्रगण कैल किछु विवरण इहा विस्तारिते चित्त हय।
थाके जदि आयु: शेष विस्तारिव लीला शेष यदि महाप्रभु कृपा हय ॥

आगे भी—एइ अन्त लीला सार सूत्र मध्ये विस्तार करि किछु करिल वर्णन।
इहामध्ये मरिजवे वर्णिते ना पारि तवे एई लीला भक्तगण धन ॥

श्री सुबल श्यामजी ने भी इस प्रकार कवित्त में उक्त शब्दों को कहा है:—

सेस लीला सूत्र गण विवरण कियो कछू कियौ चाहे मन मेरो तिनको विस्तार है।
जो पै आयु अवसेस करों व्यास लीला सेस जो है महाप्रभूजु की करुणा अपार है।
यहै सेस लीलासार ताके सूत्र बीच कहूँ वर्णन कियो है कछू करिके विस्तार है।
जो पै याही बीच मरों सकों नहिं ताहि कहि तौ पै यह लीला भक्त गण धनसार है।

सर्व साधारण से प्रार्थना है कि हमारी त्रुटि को क्षमा करेंगे।

प्रस्तुत पुस्तक जल्दी में छपने के कारण जहाँ कहीं प्रेस भूल रह गई हैं कृपालु पाठक भूल सुधार कर पाठ कर लें जल्दी के कारण विस्तृत भूमिका देने में असमर्थ हैं।

मार्गशीर्ष पूर्णिमा
सम्वत् २००६ वि०

विनीत प्रकाशक—
कृष्णदास (कुसुमसरोवर)

निताई गौरांग

आजानुलम्बितभुजौ कनकावदातौ
संकीर्त्तनैकपितरौ कमलायताक्षौ ।
विश्वम्भरौ द्विजवरौ युगधर्म्मपालौ
वन्दे जगत्प्रियकरौ करुणावतारौ ॥

✻ श्री श्रीगौरांगविधुर्जयति ✻

श्री श्रीचैतन्यचरितामृत

(आदिखण्ड)

आज लों न दीन्हीं जोय उज्ज्वल सुधारस की, भक्तन उधार सार सम्पदा भगति की।
दैन हेत ताकों अवतार धार आये कलि, अधम उधारन की करुणा प्रघट की।
सुन्दर सुवर्ण दुति पुंज सों दिपति देह, नेह के निधान लज्जवन रतिपति की।
तुम्हरे हिय कन्दरा विराजें हरि सर्वदा, सो नन्दन शची जू के मूरति पिरीति की॥

पूरन प्रकाश पुंज मञ्जुल श्री वृन्दावन, कल्पद्रुम नीचे मणि मन्दिर विशाल है।
ताके मध्य भाग रत्न सिंहासन राजत है, उज्ज्वल अनूप दुति दीपति रसाल है।
राधिका सहित तँह श्री गोविन्द क्रीड़त हैं, प्रिय सखी गण सेवें बंशी गावें कल है।
मेरो मन हंस ध्यान करें स्मरें मत्त ह्वै के, पाइवे को चाह सदा श्री पद मृणाल है॥

गोपी मन मीन सुख खेलिवे को वत्त महा, लावन कलोल सुख सरसी पसारी है।
कैंधों राधाचित्त नटिनी के नाचवे कों रंग, वत्सादिक चिन्ह से विचित्र सु-सँभारी है।
हास मुख-सुधा वसुधा की महा बाधा हरें, मुरली की धुनि तापै तन मन बारी है।
वंशी वट तट मद मत्त गोपी गण साथ, सोई गोपीनाथ प्यारौ सम्पदा हमारी है॥

जिन्हौं निज मन्त्र दियौ तुच्छ जीव स्वच्छ कियौ, लियौ अपनाइ तेई चाहौं सो गहाय हैं।
जिनकी कृपा तें गौर कृष्ण गण नातो भयो, वेई कृष्ण महाप्रभु चरित कहाय हैं।
जिनकी कृपा तें धाम वृन्दावन वास लह्यौ, वेई निज शक्ति बल पंगु कौं नचाय हैं।
मन हूं को दुर्लभ जे सुलभ ते करी जिन्हौं, तेइ श्री यदुपति जू सिर पै सहाय है॥४॥

मोहि वल बड़ौ श्री गुसांई व्रजपति जू को, व्रज में विराजमान सदा अधिकार है।
श्री गोपाल भट्ट जू के पद सिर छत्र मेरै, ताते ही संताप भजि गयो निरधार है।
वालमुकुन्द भट्ट जू के पद हिय में धारि, श्रीयुत दामोदर जू देहु रस सार है।
भट्ट श्री नारायण जू व्रज के उपासी एक, तिन पद धूरि मेरी जीवनि अधार है॥५॥

प्रणवौं श्री कृष्णदास ब्रह्मचारी अधिकारि, मदनगुपाल जू के प्यारे रसरास हैं।
महाभाव पगे प्रभु राधिका गदाधर जू, दया करौ हिये होय चरित प्रकाश हैं।
मोहू से अयोग पर कृपा कीये ह्वै है जग, दीनबन्धु दयासिन्धु जस के विकास है।
यहै दान चाहौं अवगाहौं गौरकृष्ण लीला, जे जे कही कविराज राज कृष्णदास हैं॥ ६॥

अथ आज्ञा निरूपण-कवित्त—

प्रेम निज दान हेत गेह वृषभान नन्द, प्रगट ह्वै करी लीला राधाकृष्ण नाम है।
ताही हेत फेर तेई गदाधर चैतन्य ह्वै प्रगटे हैं दोऊ गुण रूप अभिराम है।
तेइ निज रूप आप रूप के स्वरूप ह्वै के, कहै गुण रूप प्रेम लीला नित्य धाम हैं।
श्री गोविन्द जिन्हौं जोग पीठते प्रगट किये, दिये दरसाय जिये जीव पूजे काम है॥ ७॥

प्रगटे अनंत तेई श्री गुसांई हरीदास बहुधा लड़ाये जिन्हौं गोविंद पियारे है।
दै निदेश जिन्हौं कविराज राज जू सों फेरि चरित कहाये प्रभु जीवनि जियारे है।
वेइ पुनि प्रगटे हैं श्री गुसांई नित्यानंद तेई श्री गुसांई सिवराम उजियारे है।
कृष्ण कै चरण हियें जिनके विराजै सदा श्री गोविंद चरण जू सरस हियारे है॥ ८॥

तिन हीं कौ रूप आप श्री गुसांई जगन्नाथ, प्रगट विराजमान जग हितकारी है।
गौरलीला विना कैसे कृष्ण के स्वरूप जानैं, भक्ति हीन दीन जीव चिंता चित धारी है।
वारुणी दिशा के जीव कैसे भान उदौ जानैं, हिये उन मानें प्रभु गुण सुखकारी है।
महाप्रभु लीला वृज भाषा के प्रगट होय जानें जन सबै मिटैं हिये अंधियारी है॥ ९॥

ऐसे जीव दया देखि दियो है निदेश जिन्हौं ताते अति भई मेरी मति मतवारी है।
कहाँ मति मंद मैं जु कहाँ गौरलीला सिंधु कैसे पार ह्वै हों याके जिय न विचारी है।
हिये ही कौ राग तान हाथ कै प्रताप जैसे काठ सौं गवावैं गावैं आप वीना धारी है।
जानि ऐसी आशा अब प्रबल उछाह बढ्यौ लोक उपहास हू की लाज सब टारी है॥१०॥

जाही के विलास वस भये मुनि जपी तपी मोहिनी के बल जीते शिव से प्रबल है।
औरन की कहा बात तात सब विश्व के जे ते ते अज मोहे रहे ताहि ते अचल है।
ऐसे मैंन सैंन जिहि सैंन आगे भजैं तजैं सर पांच छूटैं जाहि छूटे छलवल है।
मोहन मदन तातें भयो अभिराम, नाम तिन्हौं वस किये जिन्हौं ताही ते सुवल है॥११॥

ऐसें श्री सुवल पाय तिन को सहाय हियों भरचौ चाप भाय रह्यौ नेकु न विचार है।
रहे अवगाहि जाही कृष्ण के विभूति से श्री गौरलीला सुधासिंधु निपट अपार है॥
ताकी कोऊ बीच छियौं चाहै तट बीच ठाड़ौ मो सों नीच जीव जाहि नाहिं अधिकार है।
मेरो अभिलाष-और नाम निज दोऊ एई करि हौ सफल अब परैगी सम्हार है॥१२॥

रैंन दिन नाम गान ताही सौं पगे हैं प्रान आन कौंन भान जिय तम के हरन है।
जीति अनायास जन मन में निवास कियो सो न पास आवे काम गहै ता सरण है।
गोपीनाथ प्यारे न्यारे नेक हूँ न होत जिहि देखें दुख नसैं महारस को भरन है।
भयो श्री श्यामचरन नाम अभिराम याते आठ जाम हियें रहैं स्याम के चरन है ॥१३॥

जहाँ तहाँ कृष्ण भक्त वत्सल सुने है मैं जु भक्ति लेस हीन ताते भयो हिय त्रास है।
एक दीनबन्धु नाम काम को न सोऊ मेरे जाते वह दीनता न आवै आस पास है।
जिते हरी भक्त ते अभक्तनि पै कृपा करें यहै सुनि देखि भई मोहि बड़ी आस है।
ताते ही निसंक ह्वै के मोसो मति मंद जीव गौर गुन भाषा निज करत प्रकास है ॥१४॥

वृन्दावन वासी गौर कृष्ण के उपासी भक्त सब सुख-रासी तिन पद सिर नायकै।
कृष्ण रस मांते देह नांते ह्वांते किये जिन्हौं दोस हू में लेत गुन अपने सुभायकै।
नेकु संग कियें हियें डारें रस भंभरि को कृष्ण भक्ति प्रेम रूप देंहि दरसाय कै।
तिन हीं कौ बल पाय लाज ही बहाय महाप्रभु गुन कहौं व्रज भाषा में बनाय कै ॥१५॥

ग्रंथकर्त्तु: श्रीकृष्णदासस्य मंगलाचरणश्लोकानि ॥

वन्दे गुरूनीशभक्तानीशमीशावतारकान्। तत्प्रकाशांश्च तच्छक्तीः कृष्णचैतन्य संज्ञकम् ॥ १ ॥
वन्दे श्रीकृष्णचैतन्यनित्यानन्दौ सहोदितौ। गोडोदये पुष्पवन्तौ चित्रौ शन्दौ तमोनुदौ ॥ २ ॥
यदद्वैतं ब्रह्मोपनिषदि तदप्यस्य तनुभा य आत्मान्तर्यामी पुरुष इति सोऽस्यांशविभवः।
षड़ैश्वर्य्यैपूर्णो य इह भगवान् स स्वयमयं न चैतन्यात्कृष्णाज्जगति परतत्वं परमिह ॥ ३ ॥
अनर्पितचरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ समर्पयितुमुन्नतोज्ज्वलरसां स्वभक्तिश्रियम्।
हरिः पुरटसुन्दरद्युतिकदम्बसन्दीपितः सदा हृदयकन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः ॥ ४ ॥
राधाकृष्णप्रणयविकृतिर्ह्लादिनीशक्तिरस्मादेकात्मानावपि भुवि पुरा देहभेदं गतौ तौ।
चैतन्याख्यं प्रकटमधुना तद्द्वयं चैक्यमाप्तं राधाभावद्युति सुबलितं नौमि कृष्णस्वरूपम् ॥ ५ ॥
श्रीराधायाः प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैवा-स्वाद्यो येनाद्भुतमधुरिमा कीदृशो वा मदीयः।
सौख्यं चास्या मदनुभवतः कीदृशं वेति लोभात्तद्भावाढ्यः समजनि शचीगर्भ सिन्धौ हरीन्दुः ॥ ६ ॥

संकर्षणः कारणतोयशायी गर्भोदशायी च पयोब्धिशायी।
शेषश्च यस्यांशकलाः स नित्यानंदाख्यरामः शरणं ममास्तु ॥ ७ ॥
मायातीते व्यापि वैकुन्ठलोके पूर्णैश्वर्य्ये श्रीचतुर्व्यूहमध्ये।
रूपं यस्योद्भाति संकर्षणाख्यं तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥ ८ ॥
माया भर्त्ता जाण्ड संघाश्रयांगः शेते साक्षात् कारणाम्भोधिमध्ये।
यस्यैकांशः श्रीपुमानादिदेवस्तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥ ६ ॥
यस्यांशांशः श्रीलगर्भोदशायी यन्नाभ्यब्जं लोकसंघातनालम्।
लोकस्रष्टुः सूतिका धाम धातु स्तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥१०॥
यस्यांशांशांशः परात्माखिलानां पोष्टा विष्णुर्भाति दुग्धाब्धिशायी।
क्षौणीभर्त्ता यत्कला सोऽप्यनंतस्तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥११॥

महाविष्णु जंगत्कर्ता मायया यः सृजत्यदः । तस्यावतार एवायमद्वैताचार्य्य ईश्वरः ॥१२॥
अद्वैतं हरिणाद्वैतादाचार्य्यं भक्तिशंसनात् । भक्तावतारमीशं तमद्वैताचार्य्यमाश्रये ॥१३॥
पञ्चतत्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम् । भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम् ॥१४॥
जयतां सुरतौ पंगो र्मम मन्दमते र्गती । मत्सर्वस्वपदाम्भोजौ राधामदनमोहनौ ॥१५॥
दिव्यद्वृन्दारण्यकल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागारसिंहासनस्थौ ।
श्री श्री राधा श्रीलगोविन्ददेवौ प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि ॥१६॥
श्रीमन्रासरसारम्भी वंशीवटतटस्थितः । कर्षन्वेणुस्वनै र्गोपीः गोपीनाथो श्रियोऽस्तु नः ॥

॥ अथ दोहा ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय दासवर्ग सुखकंद ॥
ग्रंथ आदि मंगल करैं यहै सिष्ट आचार । गुरु हरि हरिजन सुमिरियै ताको यहै प्रकार ॥
इन तीनों सुमिरैं सकल होय सुविघ्न विनास । अनायास पूरण सबै होय हिये की आस ॥
सो वह मंगल त्रिविध है एक वस्तु निर्देश । इक आसिस इक प्रणति है कहैं जु करि उद्देश ॥
श्लोक दोय करि प्रथम हीं कीनौ इष्ट प्रणाम । सो सामान्य विशेष करि दोऊ रूप अभिराम ॥
श्लोक तृतीय में दूसरौ कह्यो वस्तु निर्देश । याही ते जान्यौ परै परम तत्व उद्देश ॥
श्लोक चतुर्थ करि जगत कौं दींनौ आर्शीवाद । सब ही कौं माग्यो यहै श्री चैतन्य प्रसाद ॥
ता में प्रभु अवतार को कारण कह वहिरंग । छटे पांच ये मधि कह्यौ कारण मूल सरंग ॥
श्लोक छहनि करि प्रथम हीं कह्यो सुप्रभुको तत्व । और पांच करि पुनि कह्यौ नित्यानन्द महत्व ॥
श्लोक दोय करि पुनि कह्यौ श्री अद्वैत स्वरूप । और एक करि पुनि कह्यौ पंच तत्व को रूप ॥१०॥
इन चौदह सब पदनि करि कीनौ मंगलचार । ताही में कीनौ कथन तत्व वस्तु को सार ॥११॥
सब श्रोता हरि जननि कौं करि प्रणाम वहुवार । श्लोक सवनि को करत है नीके अर्थ विचार ॥
सुनौ भक्त सब एक मन करि कैं हिय उल्लास । गौर कृष्ण रस शास्त्र मत कीजै अर्थ प्रकास ॥
गुरु दोऊ हरिदास हरि हरि अवतार प्रकास । शक्ति कृष्ण षट रूप धरि इहि विधि करैं विलास ॥
इनि छह तत्वनि के चरण कमल सीस पर धार । प्रथम कियो सामान्य करि मंगल एक प्रकार ॥

वन्दे गुरुनीशभक्तानीशमीशावतारकान् । तत्प्रकाशांश्च तच्छक्तीः कृष्णचैतन्यसंज्ञकम् ॥

कृष्ण मंत्र-गुरु और जे सीक्षा गुरु सुख धाम । तिन के पद पंकजनि कौं आगे करौं प्रणाम ॥
रूप सनातन और रघुनाथ भट्ट गोपाल । जीव दास रघुनाथ जू जीवन के प्रतिपाल ॥
ए छह गुरु सिक्षा गुरु जु मेरे इष्ट अधार । इन के श्रीयुत पदकमल प्रणवौं वारंवार ॥
अरु प्रभु के सब भक्त हैं जे श्री वास प्रधान । तिन सब के पद दंडवत करि सहस्र भुज जान ॥
आचारज अद्वैत जू विष्णु अंस अवतार । पादपद्म तिनकेन कौं मम प्रणाम वहुवार ॥२०॥
श्रीयुत नित्यानंद प्रभु हैं जु स्वरूप प्रकाश । चरण कमल वन्दौं जु तिनि जिनको हों निजुदास ॥
पंडित गदाधरादि ये हैं प्रभु के निजु शक्ति । तिन सबके चरणन करौं प्रणति हिये धरि भक्ति ॥

श्री चैतन्य महाप्रभू आप स्वयं भगवान । चरण कमल प्रणवौं जु तिनि मेरे जीवनि प्राण ॥
वंदन करि आवरण सह प्रभु को बारंबार । ज्यों थेइ छह हैं तेई तैसें करौं विचार ॥
जदूयपि मम गुरु हैं महाप्रभु जू के निजुदास । तिन को हम जानतेऊ तिन ही को जु प्रकाश ॥
गुरु स्वरूप हैं कृष्ण कौ वेद पुरान प्रमान । कृपा करैं गुरु रूप धरि भक्तन पर भगवान ॥

तथाहि श्री भागवते—आचार्य्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित् ॥ इति ॥

शिक्षा गुरु को जानियै हैं निज कृष्ण स्वरूप । अन्तरयामी भक्तवर ये विवि रूप अनूप ॥

तथाहि तत्रैव-आचार्य चैत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्तीति ॥ गीतायां-ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते इति ॥ अन्यत्र च-शिक्षागुरुश्च भगवान् शिखिपिंछमौलिरिति ॥ तथा ब्रह्मणे भगवान् स्वयमुपदिश्यानुभावितवान् ।

तथाहि—ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम् । सरहस्यं तदङ्गञ्च गृहाण गदितं मया ॥
यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्म्मकः । तथैव तत्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात् ॥

दोहा—प्रभु स्वरूप के भक्त हैं बसिवे कौ निजु धाम । भक्तन के हिय कमल में सदा कृष्ण विश्राम ॥

तथाहि भागवते—

साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहमिति ॥ तीर्थी कुर्व्वन्ति तीर्थानि स्वान्तस्थेन गदाभृता ॥

दोहा

एक अंस अवतार है इक गुन शक्त्यावेश । त्रिविध कहे अवतार प्रभु श्रीभागवत विशेष ॥३०॥
पुरुष और मत्स्यादि सब कहै अंस अवतार । अज हरि हर तीनौं जु ए गुन अवतार विचार ॥
सनकादिक पृथु व्यास मुवि शक्त्यावेश अनूप । अरु है श्रीभगवान के दोय प्रकाश स्वरूप ॥
तिनको एक प्रकाश है अरु है एक विलास । तिनके लच्छन सुनो अब करिकै हिये हुलास ॥
एकहि विग्रह होंइ जौ रूप अनेक अनूप । आकृति भेद न होय जो है एक ही स्वरूप ॥
महिषी गण के कर गहै जैसे कीनौ रास । याही कौं कहियै जु श्री प्रभु की मुख्य प्रकास ॥
सब भक्तन निरखौ कियो ताको नाम विलास । एकहि वपु आकृति पृथक ठौर अनेक प्रकाश ॥
ज्यौं हलधर बैकुंठ में नारायण भगवान । वासुदेव प्रद्युम्न ज्यौं अरु संकर्षण जान ॥
कृष्ण शक्ति निज त्रिविध है इक लक्ष्मी गण रूप । अरु महिषीगण शक्ति निज है अति परम अनूप ॥
सर्वोपर निजशक्ति है गोपीगन जु प्रधान । पूरणतम जिनिके जु प्रिय नंद नँदन भगवान ॥३९॥
स्वयं रूप भगवान के कायव्यूह हू जान । भक्ति सहित आवरण सब है तिन ही जु प्रमान ॥४०॥
भक्त आदि क्रम कै कियो सब ही कों जु प्रणाम । इनकौ बंदन सुभ सवनि कौ कारण अभिराम ॥
श्लोक एक कर यों कह्यौ सो सामान्य प्रकार । बंदन कियौ विशेष करि विवि पद अर्थ विचार ॥

वन्दे श्रीकृष्ण चैतन्य नित्यानन्दौ सहोदितौ । गौड़ोदये पुष्पवन्तौ चित्रौ शन्दो तमोनुदौ ॥२॥

व्रज में विहरे प्रकट ज्यों प्रथम कृष्ण बलराम । कोटि भानु ससि सम उदित दिपत दुहुन कौ धाम ॥
तेई विवि सब जगत पै हिय में भये दयाल । गौड़देश गिरितै इतै उदै भये सम काल ॥

* श्री श्रीगौरांगविधुर्जयति *

श्री श्रीचैतन्यचरितामृत

(आदिखण्ड)

आज लों न दीन्हीं जोय उज्ज्वल सुधारस की, भक्तन उधार सार सम्पदा भगति की।
दैन हेत ताकों अवतार धार आये कलि, अधम उधारन की करुणा प्रघट की।
सुन्दर सुवर्ण दुति पुंज सों दिपति देह, नेह के निधान लज्जवन रतिपति की।
तुम्हरे हिय कन्दरा विराजें हरि सर्वदा, सो नन्दन शची जू के मूरति पिरीति की ॥

पूरन प्रकाश पुंज मञ्जुल श्री वृन्दावन, कल्पद्रुम नीचे मणि मन्दिर विशाल है।
ताके मध्य भाग रत्न सिंहासन राजत है, उज्ज्वल अनूप दुति दीपति रसाल है।
राधिका सहित तँह श्री गोविन्द क्रीड़त हैं, प्रिय सखी गण सेवें वंशी गावें कल है।
मेरो मन हंस ध्यान करें स्मरें मत्त ह्वै के, पाइवे को चाह सदा श्री पद मृणाल है ॥

गोपी मन मीन सुख खेलिवे को वत्त महा, लावन कलोल सुख सरसी पसारी है।
कैंधों राधाचित्त नटिनी के नाचवे कों रंग, वत्सादिक चिन्ह से विचित्र सु-सँभारी है।
हास मुख-सुधा वसुधा की महा बाधा हरे, मुरली की धुनि तापै तन मन वारी है।
वंशी वट तट मद मत्त गोपी गण साथ, सोई गोपीनाथ प्यारौ सम्पदा हमारी है ॥

जिन्हौं निज मन्त्र दियौ तुच्छ जीव स्वच्छ कियौ, लियौ अपनाइ तेई चाहौं सो गहाय हैं।
जिनकी कृपा तें गौर कृष्ण गण नातो भयो, वेई कृष्ण महाप्रभु चरित कहाय हैं।
जिनकी कृपा तें धाम वृन्दावन वास लह्यौ, वेई निज शक्ति बल पंगु कौं नचाय हैं।
मन हूं को दुर्लभ जे सुलभ ते करी जिन्हौं, तेइ श्री यदुपति जू सिर पै सहाय है ॥४॥

मोहि बल बड़ौ श्री गुसांई ब्रजपति जू को, ब्रज में विराजमान सदा अधिकार है।
श्री गोपाल भट्ट जू के पद सिर छत्र मेरै, ताते ही संताप भजि गयो निरधार है।
बालमुकुन्द भट्ट जू के पद हिय में धारि, श्रीयुत दामोदर जू देहु रस सार है।
भट्ट श्री नारायण जू ब्रज के उपासी एक, तिन पद धूरि मेरी जीवनि अधार है ॥५॥

प्रणवौं श्री कृष्णदास ब्रह्मचारी अधिकारि, मदनगुपाल जू के प्यारे रसरास हैं।
महाभाव पगे प्रभु राधिका गदाधर जू, दया करौ हिये होय चरित प्रकाश हैं।
मोहू से अयोग पर कृपा कीये ह्वै है जग, दीनबन्धु दयासिन्धु जस के विकास है।
यहै दान चाहौं अवगाहौं गौरकृष्ण लीला, जे जे कही कविराज राज कृष्णदास हैं॥ ६॥

अथ आज्ञा निरूपण-कवित्त—

प्रेम निज दान हेत गेह वृषभान नन्द, प्रगट ह्वै करी लीला राधाकृष्ण नाम है।
ताही हेत फेर तेई गदाधर चैतन्य ह्वै प्रगटे हैं दोऊ गुण रूप अभिराम है।
तेइ निज रूप आप रूप के स्वरूप ह्वै के, कहै गुण रूप प्रेम लीला नित्य धाम हैं।
श्री गोविन्द जिन्हौं जोग पीठते प्रगट किये, दिये दरसाय जिये जीव पूजे काम है॥ ७॥

प्रगटे अनंत तेई श्री गुसांई हरीदास बहुधा लड़ाये जिन्हौं गोविंद पियारे है।
दै निदेश जिन्हौं कविराज राज जू सों फेरि चरित कहाये प्रभु जीवनि जियारे है।
वेइ पुनि प्रगटे हैं श्री गुसांई नित्यानंद तेई श्री गुसांई सिवराम उजियारे है।
कृष्ण के चरण हियें जिनके विराजै सदा श्री गोविंद चरण जू सरस हियारे है॥ ८॥

तिन हीं को रूप आप श्री गुसांई जगन्नाथ, प्रगट विराजमान जग हितकारी है।
गौरलीला विना कैसे कृष्ण के स्वरूप जानैं, भक्ति हीन दीन जीव चिंता चित धारी है।
वारुणी दिशा के जीव कैसे भान उदौ जानैं, हिये उन मानें प्रभु गुण सुखकारी है।
महाप्रभु लीला वृज भाषा के प्रगट होय जानें जन सबै मिटैं हिये अंधियारी है॥ ९॥

ऐसे जीव दया देखि दियो है निदेश जिन्हैं ताते अति भई मेरी मति मतवारी है।
कहाँ मति मंद मैं जु कहाँ गौरलीला सिंधु कैसे पार ह्वै हों याके जिय न विचारी है।
हिये ही को राग तान हाथ के प्रताप जैसे काठ सौं गवावैं गावैं आप वीना धारी है।
जानि ऐसी आशा अब प्रबल उछाह बढ्यौ लोक उपहास हू की लाज सब टारी है॥१०॥

जाही के विलास वस भये मुनि जपी तपी मोहिनी के बल जीते शिव से प्रबल है।
औरन की कहा बात तात सब विश्व के जे ते ते अज मोहे रहे ताहि ते अचल है।
ऐसे मैन सैंन जिहि सैंन आगे भजैं तजैं सर पांच छूटैं जाहि छूटे छलवल है।
मोहन मदन तातें भयो अभिराम, नाम तिन्हौं वस किये जिन्हौं ताही ते सुवल है॥११॥

ऐसें श्री सुवल पाय तिन को सहाय हियों भरचौ चाप भाय रह्यौ नेकु न विचार है।
रहे अवगाहि जाही कृष्ण के विभूति से श्री गौरलीला सुधासिंधु निपट अपार है॥
ताकी कोऊ बीच छियौं चाहै तट बीच ठाड़ौ मो सों नीच जीव जाहि नाहिं अधिकार है।
मेरो अभिलाष और नाम निज दोऊ एई करि हौ सफल अब परैगी सम्हार है॥१२॥

रैंन दिन नाम गान ताही सौं पगे हैं प्रान आन कौन भान जिय तम के हरन है।
जीति अनायास जन मन में निवास कियो सो न पास आवे काम गहै ता सरण है।
गोपीनाथ प्यारे न्यारे नेक हूँ न होत जिहि देखें दुख नसैं महारस को भरन है।
भयो श्री श्यामचरन नाम अभिराम याते आठ जाम हियें रहैं स्याम के चरन है ॥१३॥

जहाँ तहाँ कृष्ण भक्त वत्सल सुने है मैं जु भक्ति लेस हीन ताते भयो हिय त्रास है।
एक दीनबन्धु नाम काम को न सोऊ मेरे जाते वह दीनता न आवै आस पास है।
जिते हरी भक्त ते अभक्तनि पै कृपा करें यहै सुनि देखि भई मोहि बड़ी आस है।
ताते ही निसंक ह्वै के मोसो मति मंद जीव गौर गुन भाषा निज करत प्रकास है ॥१४॥

वृन्दावन वासी गौर कृष्ण के उपासी भक्त सब सुख-रासी तिन पद सिर नायकै।
कृष्ण रस मांते देह नांते ध्यांते किये जिन्हौं दोस हू में लेत गुन अपने सुभायकै।
नेकु संग कियें हियें डारें रस भंभरि को कृष्ण भक्ति प्रेम रूप देंहि दरसाय कै।
तिन हीं कौ बल पाय लाज ही बहाय महाप्रभु गुन कहौं ब्रज भाषा में बनाय कै ॥१५॥

ग्रंथकर्त्तु : श्रीकृष्णदासस्य मंगलाचरणश्लोकानि ॥

वन्दे गुरूनीशभक्तानीशमीशावतारकान्। तत्प्रकाशांश्च तच्छक्तीः कृष्णचैतन्य संज्ञकम् ॥ १ ॥
वन्दे श्रीकृष्णचैतन्यनित्यानन्दौ सहोदितौ। गोडोदये पुष्पवन्तौ चित्रौ शन्दौ तमोनुदौ ॥ २ ॥
यदद्वैतं ब्रह्मोपनिषदि तदप्यस्य तनुभा य आत्मान्तर्यामी पुरुष इति सोऽस्यांशविभवः।
षडैश्वर्य्यैपूर्णो य इह भगवान् स स्वयमयं न चैतन्यात्कृष्णाज्जगति परतत्वं परमिह ॥ ३ ॥
अनर्पितचरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ समर्पयितुमुन्नतोज्ज्वलरसां स्वभक्तिश्रियम्।
हरिः पुरटसुन्दरद्युतिकदम्बसन्दीपितः सदा हृदयकन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः ॥ ४ ॥
राधाकृष्णप्रणयविकृतिर्ह्लादिनीशक्तिरस्मादेकात्मानावपि भुवि पुरा देहभेदं गतौ तौ।
चैतन्याख्यं प्रकटमधुना तद्द्वयं चैक्यमाप्तं राधाभावद्युति सुवलितं नौमि कृष्णस्वरूपम् ॥ ५ ॥
श्रीराधायाः प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैवा-स्वाद्यो येनाद्भुतमधुरिमा कीदृशो वा मदीयः।
सौख्यं चास्या मदनुभवतः कीदृशं वेति लोभात्तद्भावाढ्यः समजनि शचीगर्भ सिन्धौ हरीन्दुः ॥ ६ ॥

संकर्षणः कारणतोयशायी गर्भोदशायी च पयोब्धिशायी।
शेषश्च यस्यांशकलाः स नित्यानंदाख्यरामः शरणं ममास्तु ॥ ७ ॥
मायातीते व्यापि वैकुन्ठलोके पूर्णैश्वर्य्ये श्रीचतुर्व्यूहमध्ये।
रूपं यस्योद्भाति संकर्षणाख्यं तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥ ८ ॥
माया भर्त्ता जाण्ड संघाश्रयांगः शेते साक्षात् कारणाम्भोधिमध्ये।
यस्यैकांशः श्रीपुमानादिदेवस्तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥ ९ ॥
यस्यांशांशः श्रीलगर्भोदशायी यन्नाभ्यब्जं लोकसंघातनालम्।
लोकस्रष्टुः सूतिका धाम धातु स्तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥१०॥
यस्यांशांशांशः परात्माखिलानां पोष्टा विष्णुर्भाति दुग्धाब्धिशायी।
क्षौणीभर्त्ता यत्कला सोऽप्यनंतस्तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥११॥

महाविष्णु र्जगत्कर्ता मायया यः सृजत्यदः। तस्यावतार एवायमद्वैताचार्य्य ईश्वरः ॥१२॥
अद्वैतं हरिणाद्वैतादाचार्य्यं भक्तिशंसनात्। भक्तावतारमीशं तमद्वैताचार्य्यमाश्रये ॥१३॥
पञ्चतत्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकम्। भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तशक्तिकम् ॥१४॥
जयतां सुरतौ पंगो र्मम मन्दमते र्गती। मत्सर्वस्वपदाम्भोजौ राधामदनमोहनौ ॥१५॥
दिव्यद्वृन्दारण्यकल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागारसिंहासनस्थौ।
श्री श्री राधा श्रीलगोविन्ददेवौ प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि ॥१६॥
श्रीमन्रासरसारम्भी बंशीवटतटस्थितः। कर्षन्वेणुस्वनै र्गोपीः गोपीनाथो श्रियोऽस्तु नः ॥

॥ अथ दोहा ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद। जय अद्वैत हिमांशु जय दासवर्ग सुखकंद ॥
ग्रंथ आदि मंगल करैं यहै सिष्ट आचार। गुरु हरि हरिजन सुमिरियै ताको यहै प्रकार ॥
इन तीनों सुमिरैं सकल होय सुविघ्न विनास। अनायास पूरण सबै होय हिये की आस ॥
सो वह मंगल त्रिविध है एक वस्तु निर्देश। इक आसिस इक प्रणति है कहैं जु करि उद्देश ॥
श्लोक दोय करि प्रथम हीं कीनौ इष्ट प्रणाम। सो सामान्य विशेष करि दोऊ रूप अभिराम ॥
श्लोक तृतीय में दूसरौ कह्यो वस्तु निर्देश। याही ते जान्यौ परै परम तत्व उद्देश ॥
श्लोक चतुर्थ करि जगत कौं दींनौ आर्शीवाद। सब ही कौं माग्यो यहै श्री चैतन्य प्रसाद ॥
ता में प्रभु अवतार को कारण कह वहिरंग। छटे पांच ये मधि कह्यौ कारण मूल सरंग ॥
श्लोक छहनि करि प्रथम हीं कह्यो सुप्रभुको तत्व। और पांच करि पुनि कह्यौ नित्यानन्द महत्व ॥
श्लोक दोय करि पुनि कह्यौ श्री अद्वैत स्वरूप। और एक करि पुनि कह्यौ पंच तत्व को रूप ॥१०॥
इन चौदह सब पदनि करि कीनौ मंगलचार। ताही में कीनौ कथन तत्व वस्तु को सार ॥११॥
सब श्रोता हरि जननि कौं करि प्रणाम वहुवार। श्लोक सवनि को करत है नीके अर्थ विचार ॥
सुनौ भक्त सब एक मन करि कैं हिय उल्लास। गौर कृष्ण रस शास्त्र मत कीजै अर्थ प्रकास ॥
गुरु दोऊ हरिदास हरि हरि अवतार प्रकास। शक्ति कृष्ण षट रूप धरि इहि विधि करैं विलास ॥
इनि छह तत्वनि के चरण कमल सीस पर धार। प्रथम कियो सामान्य करि मंगल एक प्रकार ॥

वन्दे गुरुनीशभक्तानीशमीशावतारकान्। तत्प्रकाशांश्च तच्छक्तीः कृष्णचैतन्यसंज्ञकम् ॥

कृष्ण मंत्र-गुरु और जे सीचा गुरु सुख धाम। तिन के पद पंकजनि कौं आगे करौं प्रणाम ॥
रूप सनातन और रघुनाथ भट्ट गोपाल। जीव दास रघुनाथ जू जीवन के प्रतिपाल ॥
ए छह गुरु सिचा गुरु जु मेरे इष्ट अधार। इन के श्रीयुत पदकमल प्रणवौं वारंवार ॥
अरु प्रभु के सब भक्त हैं जे श्री वास प्रधान। तिन सब के पद दंडवत करि सहस्र भुज जान ॥
आचारज अद्वैत जू विष्णु अंस अवतार। पादपद्म तिनकेन कौं मम प्रणाम वहुवार ॥२०॥
श्रीयुत नित्यानंद प्रभु हैं जु स्वरूप प्रकाश। चरण कमल वन्दौं जु तिनि जिनको हों निजुदास ॥
पंडित गदाधरादि ये हैं प्रभु के निजु शक्ति। तिन सबके चरणन करौं प्रणति हिये धरि भक्ति ॥

श्री चैतन्य महाप्रभू आप स्वयं भगवान । चरण कमल प्रणवौं जु तिनि मेरे जीवनि प्राण ॥
वंदन करि आवरण सह प्रभु को बारंबार । ज्यों येइ छह हैं तेई तैसें करौं विचार ॥
जद्यपि मम गुरु हैं महाप्रभु जू के निजुदास । तिन को हम जानतेऊ तिन ही को जु प्रकाश ॥
गुरु स्वरूप हैं कृष्ण कौ वेद पुरान प्रमान । कृपा करैं गुरु रूप धरि भक्तन पर भगवान ॥

तथाहि श्री भागवते—आचार्य्यं मां विजानीयान्नावमन्येत कर्हिचित् ॥ इति ॥

शिक्षा गुरु को जानियै है निज कृष्ण स्वरूप । अन्तरयामी भक्तवर ये विवि रूप अनूप ॥

तथाहि तत्रैव-आचार्य चैत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्तीति ॥ गीतायां-दादामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते इति ॥
अन्यत्र च-शिक्षागुरुश्च भगवान् शिखिपिंछमौलिरिति ॥ तथा ब्रह्मणे भगवान् स्वयमुपदिश्यानुभावितवान् ।
तथाहि–ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितम् । सरहस्यं तदगञ्च गृहाण गदितं मया ॥
यावानहं यथाभावो यद्रूपगुणकर्म्मकः । तथैव तत्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात् ॥

दोहा–प्रभु स्वरूप के भक्त हैं बसिवे कौ निजु धाम । भक्तन के हिय कमल में सदा कृष्ण विश्राम ॥

तथाहि भागवते—

साधवो हृदयं मह्यं साधूनां हृदयं त्वहमिति ॥ तीर्थी कुर्व्वन्ति तीर्थानि स्वान्तस्थेन गदाभृता ॥

दोहा

एक अंस अवतार है इक गुन शक्त्यावेश । त्रिविध कहे अवतार प्रभु श्रीभागवत विशेष ॥३०॥
पुरुष और मत्स्यादि सब कहै अंस अवतार । अज हरि हर तीनौं जु ए गुन अवतार विचार ॥
सनकादिक पृथु व्यास मुनि शक्त्यावेश अनूप । अरु है श्रीभगवान के दोय प्रकाश स्वरूप ॥
तिनको एक प्रकाश है अरु है एक विलास । तिनके लच्छन सुनो अब करिकै हिये हुलास ॥
एकहि विग्रह होइ जौ रूप अनेक अनूप । आकृति भेद न होय जो है एक ही स्वरूप ॥
महिषी गण के कर गहै जैसे कीनौ रास । याही कौं कहियै जु श्री प्रभु को मुख्य प्रकास ॥
सब भक्तन निरनौ कियो ताको नाम विलास । एकहि वपु आकृति पृथक ठौर अनेक प्रकाश ॥
ज्यौं हलधर वैकुंठ में नारायण भगवान । वासुदेव प्रद्युम्न ज्यौं अरु संकर्षण जान ॥
कृष्ण शक्ति निज त्रिविध है इक लच्मी गण रूप । अरु महिषीगण शक्ति निज है अति परम अनूप ॥
सर्वोपर निजशक्ति है गोपीगन जु प्रधान । पूरणतम जिनिके जु प्रिय नंद नँदन भगवान ॥३९॥
स्वयं रूप भगवान के कायव्यूह हू जान । भक्ति सहित आवरण सब है तिन ही जु प्रमान ॥४०॥
भक्त आदि क्रम कै कियो सब ही कों जु प्रणाम । इनकौ वंदन सुभ सवनि कौ कारण अभिराम ॥
श्लोक एक कर यों कह्यौ सो सामान्य प्रकार । वंदन कियौ विशेष करि विवि पद अर्थ विचार ॥

वन्दे श्रीकृष्ण चैतन्य नित्यानन्दौ सहोदितौ । गौड़ोदये पुष्पवन्तौ चित्रौ शन्दो तमोनुदौ ॥२॥

व्रज में विहरे प्रकट ज्यों प्रथम कृष्ण बलराम । कोटि भानु ससि सम उदित दिपत दुहुन कौ धाम ॥
तेई विवि सब जगत पै हिय में भये दयाल । गौड़देश गिरितै इतै उद्दै भये सम काल ॥

महाप्रभु श्रीकृष्ण जु और श्री नित्यानंद । जिनि के उदै प्रकाश तें भयौ जगत आनन्द ॥
भानुचंद जैसें हरैं जीवनि को अँधियार । देहि वस्तु दरसाय कै करैं सुधर्म्म प्रचार ॥
भाई दोऊ प्रकट इमि जीवनि कौ अज्ञान । सोई तम सब नाश किय तत्व वस्तु कौ दान ॥
ताही तम अज्ञान को कहियैं कैतव नाम । धर्म्म अर्थ कामादि कौ सो हिय उपजै काम ॥
तामें चाहजु मुक्ति की कैतव मोक्ष प्रधान । कृष्ण भक्ति कै होत है जाते अंतर्ध्यान ॥

तथाहि श्री भागवते:—धर्म्मः प्रोज्झितकैतवेत्यादि ।

स्वामी श्रीधर जु कियौ या को अर्थ प्रमान । कैतव कह्यौ प्रशब्दते मुक्ति चाह हू जान ॥५०॥
कृष्ण भक्ति बाधक जिते शुभ अरु अशुभ जु कर्म्म । तेऊ है या जीव के तम ही कौ इक धर्म्म ॥
जिनि के होत प्रसाद ते इन सब तम कौ नास । हिय अज्ञान नसाय कै करैं जु तत्व प्रकास ॥
तत्व वस्तु हरि भक्ति हरि कहिये प्रेम स्वरूप । नाम कीर्त्तन कृष्ण कौ है सब आनंद रूप ॥
दिनकर ससि ते होत है बाहर तम को नास । बहिवस्तु घटपट जिते तिन कौ होय प्रकास ॥
दोऊ भाई रविजु ससि कियौ हिये तम नास । दोऊ भागवत को कियो हिय में जिन्हौ प्रकास ॥
एक भागवत शास्त्र कौं बड़ो भागवत जान । कृष्ण भक्ति रस पात्र जो भक्त भागवत मान ॥
दोऊ भागवत द्वार ह्वै दियो भक्तिरस जान । ताही रस के बस भये तिन के हिय भगवान ॥
इक अद्भुत समकाल विवि एक समान प्रकास । अरु अद्भुत हिय गुहा कौ कीनौ सब तम नास ॥
ये दोऊ रवि ससि परम सदय जीव के काज । जगत भाग्य बस उदौ किय गौड़ उदै गिरिराज ॥

कवित्त

वन्दे महाप्रभु नित्यानन्द भानु ससि दोऊ गौड़ गिरि उदै सम काल ही प्रकाश हैं ।
हृदय सरोज खिले भक्ति मकरन्द झिले विमुख उलूकनि के भये तम नास हैं ।
जीव निज कृत्य लगे महानिसा ते जु जगे मेंड़ तजि भाव सिंधु उमड़ें कुलास हैं ।
चहूं दिस राग छयौ वेद हिम कंप गयौ रसिक चकोर हिय आनन्द उजास हैं ॥

दोहा—

श्लोक दोय इनि करि कियौ वंदन विविध प्रकार । जाते विघ्न विनाश हरि बांछा सिद्धि प्रकार ॥

कवित्त

महाप्रभु नित्यानंद और श्री अद्वैत जू को कह्यौ हैं महत्व जामें मति अनुसार है ।
तिन के जे भक्त नाम प्रेम रस धाम तत्व न्यारे-न्यारे लिखे आछे करि कैं विचार है ।
ग्रन्थ बहु व्यास भये कियो विस्तार अति थोरे आंक कह्यौ सब अर्थनि को सार है ।
सुने जाने सबै वस्तु तत्व सार नीकै करि भक्ति को प्रकास होय मिटै अंधियार है ॥

दोहा—

रूप दोय रघुनाथ पद रज ही कीजै आस । कृष्णदास जे कहत हैं चरितामृत रस रास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । चरितामृत सो कहत हैं व्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखंडे गुर्व्वादिवन्दनमंगलाचरणं नाम प्रथम परिच्छेदः ॥

द्वितीय परिच्छेद

श्रीचैतन्यप्रभुं वन्दे बालोऽपि यदनुग्रहात् । तरेन्नानामतग्राहव्याप्तं सिद्धान्तसागरम् ॥ १ ॥
कृष्णोत्कीर्त्तनगाननर्त्तनकलापाथोजनि भ्राजिता, सद्भक्तावलि हंसचक्रमधुपश्रेणी विहारास्पदम् ।
कर्णानन्दिकलध्वनि र्वहतु मे जिह्वामरुप्रांगणे, श्री चैतन्यदयानिधे तव लसल्लीला सुधास्वर्धुनी ॥ २ ॥

दोहा—

जय-जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय दासवर्ग सुखकन्द ॥ १ ॥
श्लोक तृतीय को अर्थ अब करौं बुद्धि अनुसार । कियौं वस्तु निर्देस में जामें मंगल चार ॥

तथा हि—यदद्वैतं ब्रह्मोपनिषदि तदप्यस्य तनुभा य आत्मान्तर्य्यामी पुरुष इति सोऽस्यांशविभवः ॥
षडैश्वर्य्यैः पूर्णो य इह भगवान् स स्वयमयं, न चैतन्यात् कृष्णाज्जगति परतत्वं परमिह ॥३॥

ब्रह्म आत्म भगवान अरु यह अनुवाद जु कीन । आभा अंस स्वरूप जो कहै विषय ये तीन ॥
आगे कहि अनुवाद कौ पाछे कहैं विधेय । अर्थ रीति यह शास्त्र की सुनौ संत मन देय ॥
स्वयं कृष्ण भगवान पर तत्व पूर्ण आनन्द । पूरण ज्ञान महत्व प्रभु कहे जु शुक नँदनन्द ॥
तेई प्रभु अब अवतरे श्री चैतन्य स्वरूप । तीन नाम तेई धरैं बहु प्रकास अंग रूप ॥
ब्रह्म एक परमात्म अरु पूरण श्री भगवान । तिनहीं के यह नाम है श्री भागवत प्रमान ॥

तथाहि श्री भागवते—

वदन्ति तत्तत्वविदस्तत्वं यज्ज्ञानमद्वयम् । ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते ॥४॥

दोहा—

निर्मल तिनके अङ्ग की किरण मण्डली आहि । निर्विशेष सब उपनिषद ब्रह्म कहत हैं ताहि ॥
चर्म चक्षु को दीखई निराकार ज्यौं शूर । ज्ञान मार्ग इमि ना लहै कृष्णरूप छवि पूर ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—यस्य प्रभा प्रभवतो जगदण्डकोटी, कोटीष्वशेषवसुधादि विभूतिभिन्नम् ।
तद्ब्रह्म निष्कलमनंतमशेषभूतं गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥५॥

दोहा—

कोटि कोटि ब्रह्माण्ड जिहिं है जु विभूति समान । वही ब्रह्म गोविन्द की अङ्ग प्रभा है जान ॥
तिन श्री गोविंद कौ भजौं मेरे प्रभु है जोय । तिनहीं के जु प्रसाद तें सृष्टि शक्ति मम होय ॥

तथाहि श्री भागवते—

मुनयो वातरसनाः श्रमणा ऊर्ध्वमन्थिनः । ब्रह्माख्यं धाम ते यान्ति शान्ताः सन्न्यासिनोऽमलाः ॥६॥

दोहा—

अन्तरजामी आत्म करि जोगी कहत है ताहि । सोऊ श्री गोविन्द की अँस विभूति जो आहि ॥
ज्यौं अनन्त फटिकनि विषै एक भान कौ भास । जीवनि में गोविन्द कौ त्यौं इक अंस प्रकास ॥

गीतायां—अथवा बहुनैतेन किं ज्ञातेन धनञ्जय । विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥

श्री भागवते—तमिममहमजं शरीरभाजां हृदि हृदि धिष्ठितमात्मकल्पितानाम् ।
प्रति दिशमिव नैकधार्कमेकं समाधिगतोऽस्मि विधूतभेद मोहः ॥

दोहा—

सोई श्री गोविन्द जू आप कृष्णचैतन्य । नाहिन जिव निस्तार हित दयावान इमि अन्य ॥
परव्योम में बसत जे नारायण अभिधान । षट गुण पूरण ये सदा लक्ष्मीपति भगवान ॥
वेद भागवत उपनिषद आगम और पुरान । पूर्ण तत्व जाकौं कहै ताकौ नाहि समान ॥
भक्ति योग करि लहत है जिनको दरसन धीर । देवयूथ ज्यौं भानु कौ देखत है स-शरीर ॥१८॥
ज्ञान योग मारग भजै तिनकौ जे सब लोय । ब्रह्म आत्मा रूपकरि तिनको अनुभव होय ॥
भक्ति भेद ते होय तिहि ईश्वर महिमा ज्ञान । ताही तैं तिनको दई उपमा भानु समान ॥
तिन नारायण कृष्ण को है जो नाम अभेद । एकहि विग्रह है तऊ आकृति मात्र विभेद ॥
कृष्णचन्द्र ये द्विभुज वे नारायण भुज चार । चक्रादिक वे धरे ये मुरलीधर सुकुमार ॥

तथाहि श्री भागवते—नारायणस्त्वं नहि सर्वदेहिनामात्मास्यधीशाखिललोकसाक्षी ।
नारायणोऽगं नरभुजलायनात्तच्चापि सत्यं न तवैव माया ॥

दोहा—

ब्रह्मा बालक वत्स हरि किय अपराध प्रमाद । ताकौ क्षमा कराय कैं मांगत है जु प्रसाद ॥
नाभि-कमल तुमते भयो मेरो जन्म प्रमान । तांते माता पिता तुम मोहि पुत्र अभिमान ॥
मात पिता नहि ये धरें बालक कौ अपराध । मम अपराध क्षमा करौ और प्रसाद अगाध ॥
कृष्ण कहैं अज पिता तुव नारायण भगवान । तुम ब्रह्मा हौं गोपसुत कैसे तनय समान ॥

कवित्त—

ब्रह्मा कहैं महाप्रभु नारायण नाही तुम तुमहीं हो मुख्य सुनौ हेतु अभिमान है ।
प्राकृत औ अप्राकृत जिते जीव लोकनि में तिनके निदान तुम तुमहीं तो धाम है ।
घट कुल कारण औ आश्रय हू पृथिवी ज्यों ऐसे तुम तातें मुख्य नारायण नाम है ।
कारण कह्यो है एक दूसरोऊ सुनौ प्रभु नाम की निरुक्ति जामें कही अति वाम है ।
जीव के जे ईस पुरुषादि अवतार सब तिन हूँ में बड़ी तुव ईसता अपार है ।
याही ते अधीसुर हो सब ही के पिता तुम शक्ति तें तुम्हारी तिन्हें रक्षा अधिकार है ।
नार के अयन जाते पालन करौ हो तुम ताते मूल नारायण नाम निरधार है ।
ये है एक हेतु-कह्यौ तीसरोऊ सुनौ प्रभु ज्ञाते तुम नाम सो जु अर्थ अनुसार है ॥२॥

दोहा —

अनन्त कोटि ब्रह्मांड जे बैकुण्ठादिक धाम। तिनमें जितेक जीव हैं नार कहैं तिंहि नाम ॥
तिनके सुभ अरु असुभ जे है त्रैकालिक कर्म। साच्छि तुम देखौ तिन्हैं जानत हो सब मर्म ॥
तुम देखौ सब जगत को थिति नीके करि होय। जो तुम तिहि देखौ नहीं ताकी गति नहिं होय ॥
जाते देखौ नार को जानों तुम जगदीश। नारायण तुम मूल हो सब ईशन के ईश ॥
कृष्ण कहैं यह वचन तुम जानत नहिं सब कोय। जीव हिये जल में बसै सो नारायण होय ॥
ब्रह्मा कहैं जो जल बसैं नारायण भगवान। है तेऊ इक अंश तुव वेद पुराण प्रमान ॥
कारण अर्णव गर्भ जलनिधि चीरोदक सैंन। माया द्वार रचै जगत सब ये माया ऐंन ॥
ज़लशायी जे सबनि के अन्तर्यामी आहि। ब्रह्माण्डनि के आतमा पुरुष नाम है ताहि ॥
हिरण्यगर्भ के आतमा गर्भोदक में सैंन। व्यष्टि जीव के आतमा चीर उदधि में ऐंन ॥
ये सब देखैं प्रकृति कौ तामे माया गन्ध। कृष्ण तुरीय तिनमें नहीं माया को सनबन्ध ॥

तथाहि श्री भागवते—

विराट् हिरण्यगर्भश्च कारणञ्चेत्युपाधयः। ईशस्य यत्त्रिभिर्हीनं तुरीयं तत्प्रचक्षते ॥

यद्यपि ये तीनों करें माया में व्यवहार। परसैं तऊ न ताहि ये सब हैं माया पार ॥

तथाहि तत्रैव — एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः। न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥

नारायण तीनोंन के तुमहीं परम जु भौंन। तुम नारायण मूल हो यामें संशय कौन ॥
अंसी इन तीनोंन के परव्योम में धाम। नारायण भगवान वे तुम प्रकाश अभिराम ॥
याही ते अज वचन कौ तत्व कह्यौ यह ब्यास। नारायण बैकुण्ठ में सोई कृष्ण प्रकाश ॥
श्लोक तत्व लच्छण परम यहै भागवत्र सार। है परिभाषा रूप यह सर्वग जिहि अधिकार ॥
ब्रह्म आत्म भगवान ये है श्रीकृष्ण बिहार। अर्थ न जानें अज्ञ इह कछु औ करे विचार ॥
औतारी बैकुण्ठपति और कृष्ण अवतार। ते नारायण चारि भुज ये मनुष्य आकार ॥४२॥
पूर्व पच्छ इह मत करै नाना भाँतिन अज्ञ। तिनको निर्जित करन इक पद्य भागवत विज्ञ ॥
श्लोक सुनौ तुम बन्धु सब नीके करौ विचार। मुख्य तत्व इक तीन ये तिनही के परकार ॥
अद्वय ज्ञान सुतत्व है सो श्रीकृष्ण स्वरूप। ब्रह्म आत्म भगवान ये तीनों तिनके रूप ॥
याही पद के अर्थ तुम भये निरुत्तर आहि। और भागवत को वचन एक कहौं सुनि ताहि ॥

तथाहि—एते चांशकला पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयं। इन्द्रारिव्याकुलं लोकं मृडयन्ति युगेयुगे ॥

दोहा—

लच्छण सब अवतार के करि सामान्य प्रकार। कृष्णचन्द्र हू की करी गणना तिनहिं मझार ॥
तब तौ श्री शुकदेवजी मन में ह्वै भयभीत। फिर पाछै निरनौ कियौ जिहि स्वरूप जो रीति ॥
जे अवतार जु पुरुष के कला अंश सब जान। सब ही के अवतंस है कृष्ण स्वयं भगवान ॥

याही ते ह्यां कहत हैं कृष्ण रूप अवतार। यही अर्थ तुव बचन कौ क्यौंअरु करत विचार ॥
तासों कहियै करै तू क्यों कुतर्क अनुमान। अर्थ जु शास्त्र विरुद्ध जो सो क्यों-हू न प्रमाण ॥

तथाहि शास्त्रे—अनुवादमनुक्त्वैव न विधेयमुदीरयेत् ॥

दोहा—

बिना कहे अनुवाद के कहियै नाहिं विधेय। आगे करि अनुवाद कौ पाछे कहिय विधेय ॥
कहियै ताहि विधेय है जोई वस्तु अज्ञात। ताहि कहैं अनुवाद सब होइ वस्तु जो ज्ञात ॥
कह्यौ विप्र पण्डित परम यहां विप्र अनुवाद। पण्डित ताहि विधेय है अर्थ यहै अविवाद ॥
द्विज करि जानैं ताहि सब पण्डितता अज्ञात। आगे जाते विप्र कहि पण्डितता पश्चात् ॥
तैसे यहँ अवतार जू को कैसो है ज्ञात। ये अवतार जू कौन के सो विधेय अज्ञात ॥
एते कर अवतार कौ आगे कहि अनुवाद। कला अंश है पुरुष के पुनि विधेय संवाद ॥
त्यौं ही सब अवतार मधि कृष्णचन्द्र है ज्ञात। तिनको ज्ञान विशेष जो वही वस्तु अज्ञात ॥
याही ते आगे कह्यौ कृष्ण शब्द अनुवाद। फिर भगवन्त स्वयं कियौ है विधेय संवाद ॥
ह्यां भगवत्ता स्वयं ही है जु कृष्ण की साध्य। और स्वयं भगवान कौ भई कृष्णता बाध्य ॥
कृष्ण अंस अंसी जु तिहि नारायण हों सोय। बचन तबै शुकदेव कौ यह विपरीत जु होय ॥
नारायण अंसी जु है आप स्वयं भगवान। तेइ इक भये कृष्ण सों जो करते ब्याख्यान ॥
भ्रम प्रमाद अरु वंचना करुणापाटव आहि। आरष विज्ञ वचनन में ए सब दोष जु नाहि ॥
कहत जु अर्थ विरुद्ध तुम कहत करौ अरु रोस। है अवमृष्ट विधेय इक तुव ब्याख्या में दोस ॥
भगवत्ता ते जासु की पर-भगवत्ता होय। शब्द स्वयं भगवान की सत्ता निश्चय सोय ॥
इक दीपक ते होइ ज्यों दीपक प्रकट अनेक। गणना किये अनेक ह्वै कारन दीपक एक ॥
सब भगवानन के भयौ कारण कृष्णहि जान। कुत्सी व्याख्या खंडगुण पद्य सुनौ दे ध्यान ॥

तथाहि तत्रैव—अत्र सर्गो विसर्गश्च स्थान पोषण मूतयः।मन्वन्तरेशान कथा निरोधो मुक्तिराश्रयः॥
दशमस्य विशुद्ध्यर्थं नवानामिहि लक्षणम्।वर्णयन्ति महात्मानः श्रुतेनार्थेन चाञ्जसा ॥

दोहा—

नवम पदार्थ कहिये हों जु होय आश्रय ज्ञान। हेतु नवनि उत्पत्ति कौ वही आश्रय ज्ञान ॥
कृष्ण एक सब आश्रय कृष्ण सवन कौ धाम। विग्रह में श्रीकृष्ण के सकल विश्व बिश्राम ॥

तथाहि श्रीधर पादेनोक्तं—

दशमे दशमं लक्ष्यमाश्रिताश्रय विग्रहम्। श्रीकृष्णाख्यं परं धाम जगद्धाम नमामि तत् ॥

कृष्ण स्वरूप जु और तिहिं शक्ति त्रय कौ ज्ञान। सो जिहिं होय न तासु हिय होय कृष्ण अज्ञान ॥
तिहि श्रीकृष्ण स्वरूप को है षड विधि जु विलास। प्राभव वैभव रूप है तिनको द्विविध प्रकाश ॥
अंश जु शक्त्यावेश औ द्विविध रूप अवतार। प्रथम वाल्य पौगंड तिहि धर्म जु दोय प्रकार ॥

कृष्ण किशोर स्वरूप नित अवतारी गुनसिंधु । क्रीड़ें ये छह रूप धरि विश्वम्भर जगबन्धु ।।
इनही छहनि स्वरूप को है जु अनन्त विभेद ।एक रूप बहुरूप में है नाहिंन कछु भेद ।।
चित् स्वरूप जो शक्ति है अन्तरंग जिहि नाम । ताके वैभव है अमित वैकुण्ठादिक धाम ।।
वहिरङ्गा माया शकति जग को कारण जोय । गण अनन्त ब्रह्माण्ड के ताके वैभव सोय ।।
शक्ति तटस्था जीव इक ताकौ नाहिन अन्त । मुख्य तीन ये शक्ति हैं तिनकौ भेद अनन्त ।।
ये स्वरूप गुण और जे तीनों शक्ति जु तास । सब के आश्रय कृष्ण हैं सबके कृष्ण निवास ।।
यद्यपि गण ब्रह्माण्ड के आश्रय पुरुष प्रधान । तिनहूँ सब पुरुषादि कै आश्रय कृष्ण निदान ।।
कृष्ण स्वयं भगवान है सबको आश्रय सोय । कृष्ण जु है ईश्वर परम कहै शास्त्र सब कोय ।।

तथाहि ब्रह्मसंहितायां —

ईश्वरः परमः कृष्ण सच्चिदानन्दविग्रहः । अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारणकारणम् ।।

ये-ही सब सिद्धान्न तुम जानत हौ भलि चेत । पूर्व पच्छ तऊ करत हौ हमें चलावन हेत ।।
अवतारी श्री कृष्ण जो आप व्रजेन्द्र कुमार । सो चैतन्य स्वरूप ह्वै प्रकट कियौ अवतार ।।
ताही ते चैतन्य जू सीमा है परतत्व । क्षीरोदधिशायी तिन्है कहै कहा जु महत्व ।।
भक्तन कौ सोऊ वचन नहि विभिचारी होय । सब ही तिन कौ संभवै अवतारी है सोय ।।
अवतारी के देह में सब अवतार निवास । किहूं रूप कोऊ कहौ जैसे बुद्धि प्रकास ।।
कोऊ कहै श्री कृष्ण कौ है नारायण रूप । क्षीरोदधिशायी कहै कोऊ वामन रूप ।।
नारायण वैकुण्ठ पति कोऊ कहत है ताहि ।ताते सब ही उचित तिहि अवतारी ते आहि ।।
सब श्रोता गण पद कमल वंदन करौं अनेक । सब सिद्धान्त श्रवण करौ करिकै मन को एक ।।
कहत सुनत सिद्धान्त के आलस करौ न जीय । याही ते श्री कृष्ण में लगै सुदृढ़ करि हीय ।।
लहियै सब सिद्धांत ते महिमा श्री चैतन्य । महिमा ही के ज्ञान ते हिय दृढ़ लगै अनन्य ।।
कहन हेत चैतन्य प्रभु महिमा अकथ अपार । याते महिमा कृष्ण की कहियै करि विस्तार ।।
महाप्रभू भगवान हैं तत्व निरूपण सार । महाप्रभू भगवान हैं आप व्रजेन्द्र कुमार ।।
श्री रूप जु रघुनाथ पदरज ही की जिहिं आस। कृष्णदास जू कहत हैं चरितामृत रसरास ।।
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । चरितामृत सो कहत है व्रजभाषा हि प्रकास ।।९४।।

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे वस्तुनिर्देश मंगलाचरणं नाम द्वितीय परिछेदः ।।

———

तृतीय परिच्छेद

श्री चैतन्यप्रभुं वन्दे यत्पादाश्रयवीर्य्यतः। संगृन्हात्याकरव्रातादज्ञः सिद्धान्तसन्मणीन्॥

दोहा—

जै जै श्री चैतन्य जू जै श्री नित्यानन्द। जै अद्वैत हिमांशु जय दासवर्ग सुखकन्द॥
श्लोक तृतीय कौ अर्थ यह कह्यौ बुद्धि के भाय। चौथे हूं कौ अर्थ अब सुनो रसिक मन लाय॥

तथाहि—अनर्पितचरीं चिरात् करुणयावतीर्णः कलौ, समर्पयितुमुन्नतोज्वलरसां स्वभक्तिश्रियम्॥
हरिः पुरट सुन्दरद्युतिकदम्ब सन्दीपितः, सदा हृदय कन्दरे स्फुरतु वः शचीनन्दनः॥

पूर्ण कृष्ण भगवान जे श्री व्रज राज कुमार। व्रज गन सह व्रज लोक में तिन कौ नित्यविहार॥
ब्रह्मा के दिन एक में एक बार अवतार। तिनको तब तहँ होत है व्रजपुर प्रकट विहार॥
सत त्रेता द्वापर जु कलि ऐ चारौं जुग जानि। तेई चारौ जुग मिलै दिव्य एक जुग मान॥
इकहत्तर जुग दिव्य कौ मन्वन्तर इक होइ। चौदह मन्वन्तर जु हो ब्रह्मा कौ दिन सोइ॥
मन्वन्तर सप्तम तहँ वैवस्वत जिहि नाम। सात बीस जुग चौकरी भये तहां जु बिराम॥
अष्टाविंशति चतुरजुग तहँ द्वापर कौ शेष। होत तहां व्रज जन सहित कृष्ण प्रकाश विशेष॥
दास्य सख्य वात्सल्य शुचि चारौ रस जु प्रधान। चारि भाव मय भक्ति जे तिन के बस भगवान॥
दास सखा माता पिता प्रेयसि गण लै संग। वृज में क्रीड़ा करैं हरि प्रेम सहित तिन रंग॥
जैसी इच्छा विहरि कैं जब किय अन्तर्ध्यान। पाछे फिर ऐसें हिये करें कृष्ण अनुमान॥
बहुत काल लौं नहि कियौ प्रेम भक्ति हम दान। भक्ति बिना नहिं जगत की गति कोऊ है आन॥
सकल जगत मेरी करै बहुधा वैधी भक्ति। वैधी ते व्रज भाव के पालन की नहिं शक्ति॥
ईश्वर मोकौं जानि कै करैं जु वैधी भक्ति। जाय लोक बैकुण्ठ में पावै चारौ मुक्ति॥
सार्ष्टि और सारूप्य पुनि सामिप सालुक चारि। सायुज लेहि न भक्त जिहिं ब्रह्म सु एकाकार॥
करौं प्रवृत्त जु युग धरम कीरंतन हरि नाम। चारि भाव मय भक्ति दै जगत नचावौं वाम॥
भक्ति भाव आपुन करौं हिय में अङ्गीकार। करि आचरण बताय हौं सर्व धर्म कौ सार॥
आप किये विन आचरन होंय न धर्म प्रचार। गीता अरु श्री भागवत कहत जु यहै पुकार॥

तथाहि गीतायां—धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगेयुगे। उत्सीदेयुरस्मिल्लोकाः न कुर्य्याद्कर्म चेदहम्।
शंकरस्य च कर्त्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः। यद्यदाचरति श्रेष्टस्तत्तदेवेतरो जनः॥

होय सकै इक अंश ते युग को धर्म प्रचार। मो बिन कोउ न दै सकै व्रज को प्रेम अपार॥

तथाहि—सन्त्ववताराः बहवः पंकजनाभस्य सर्वतो भद्राः। कृष्णादन्यः को वा लतास्वपि प्रेमदो भवति।

तातें अपनें भक्त सब तिनकों लै करि संग। पृथ्वी में अवतीर्ण ह्वै करौं जु नाना रंग॥
ऐसे स्वगत विचार करि कलि संध्या के आदि। नवद्वीप में जगत हित प्रगटे कृष्ण अनादि॥

भयौ सिंह चैतन्य कौ नवद्वीप अवतार। सिंह ग्रीव बल सिंह कौ और सिंह हुँकार ॥
बसौ सिंह चैतन्य सो जिय हिय गुहा जु आय। हुँकृति सुनि हिय गुहा कौ कल्मष द्विरद नसाय ॥
तिनकौं लीला प्रथम में प्रभु विश्वम्भर नाम। भक्ति सुधारस दान दै धरैं भरैं जिय ग्राम ॥
अर्थ जु डु भृञ्ञ धातु के धारन पोषण दोय। धारैं पोषैं प्रेम दै त्रिभुवन में प्रभु सोय ॥
धरयौ लीला शेष में नाम कृष्ण चैतन्य। कृष्ण चितायो सबनि कौ विश्व कियो अतिधन्य ॥
गर्ग महाशय परम ऋषि तिन के युगअवतार। नाम करण श्रीकृष्ण हैं तहँ कीनों निरधार ॥

तथाहि दशमे—आसन्वर्णा स्त्रयो ह्यस्य गृन्हतोऽनुयुगं तनूः। शुक्लो रक्त-स्तथापीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥

शुक्ल रक्त अरु पीत पुनि ये तीनौ दुति जान। सत त्रेता कलिकाल में धारै श्री भगवान ॥
अब द्वापर में कृष्ण है कृष्णवर्ण भगवान। आगम शास्त्र पुरान कौ यही मर्म है जान ॥

तथाहि—द्वापरे भगवान् श्यामः पीतवासाः निजायुधः ॥

कलियुग को यह धर्म है केवल नाम प्रचार। ताही हित चैतन्य को पीत वर्ण अवतार ॥
तप्त हेम सम कांति जिहि महाप्रकाण्ड शरीर। नव जलधर की गरज जिमि कंठ नाद गंभीर ॥
चार हाथ निज होय जिंहि देह दीर्घ विस्तार। महापुरुष ताको कहै विज्ञ लोक निरधार ॥
परिमण्डल न्यग्रोध इक कहि तिनकौ यह नाम। वट परिमंडल सदृश तन अतन-कांति गुण धाम ॥
लंवितभुज आजानु जिहि अरुणकमल दलनैंन। नासा तिलके कुसुम सम वदन चंद रस ऐंन ॥
चंदन के अंगद वलय चंदन भूषण अंग। नृत्य समै ये पहिरि कै करैं कीर्त्तन रंग ॥
वैशंपायन मुनि प्रवर येई गुन सब धारि। कहे जु नाम सहस्र में ये तिहि नाम विचारि ॥
द्वै लीला चैतन्य की आदि शेष सुख धाम। इक-इक लीला में कहें चारि-चारि प्रभु नाम ॥

तथाहि सहस्रनाम स्तोत्रे—

सुवर्ण वर्णो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी। सन्न्यास कृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्ति परायणः ॥

कह्यौ भागवत व्यक्तकरि सब ठां बारम्बार। कलियुग कौ युगधर्म अरु युग अवतार विचार ॥

तथाहि भागवते—

कृष्णवर्णं त्विषा कृष्णं सांगोपांगास्त्रपार्षदम्। यज्ञैः संकीर्त्तनप्रायैर्यजन्ति हि सुमेधसः ॥

महिमा श्री चैतन्य की सुनौ सकल चितधारि। याही पद करि कही तिहिं महिमा सीम अपार ॥
कृष्णजु इहि द्वैवरन कौ जिहिंमुख सदा निवास। कै वर्णन श्रीकृष्ण कौ निसदिन निज सुख रास ॥
कृष्ण वर्ण इहि शब्द कौ अर्थ यहै जु प्रमान। कृष्ण नाम बिन एक छिन तिहिंसुख नाहिं न आन ॥
कोऊ कहै जु स्याम तनु कृष्ण वर्ण करि ताहि। और विशेषण एक तिहि करै निवारण आहि ॥
तप्त हेम सम देह द्युति प्रकट विराजत तास। छटा समूह करैं जु तिहिं हिय तम तति कौ नास ॥
जीवनि कौ अज्ञान तम नाश करन के काज। अङ्ग उपांग सु नाम धरि नाना अस्त्र समाज ॥
भक्ति विरोधी कर्म जे धर्म अधर्म जु आन। ताही को कल्मष कहै वही महा तम जान ॥

ऊर्ध्वबाहु बोलें हरी प्रेम दृष्टि करि चाय । कल्मष तमसौं नास करि तिन दै प्रेम बढ़ाय ॥
श्री अँग श्री मुख माधुरी जे जे देखें लोय । तिनके पाप नसै लहै कृष्ण प्रेम धन सोय ॥
और जिते अवतार सब शस्त्र सैन्य तिहिं सङ्ग । सैन्य सङ्ग चैतन्य के निज श्री अङ्ग उपङ्ग ॥
अङ्गोपांग जु अस्त्र सब साधे निज निज काज । अङ्ग शब्द कौ अर्थ सब सुनौं सु संत समाज ॥
अङ्ग शब्द अंशहि कहैं हैं सब शास्त्र प्रमान । जो अवयव इक अङ्ग कौ सो उपांग करि जान ॥

तथाहि भागवते—नारायणोऽङ्गं नर भूजलायनात्तच्चाऽपि सत्यन्न तवैव माया ॥

सोरठा—नारायण जु प्रशंस अन्तर्यामी जलशयी । सोई है तुव अंश तुम नारायण मूल हो ॥

दोहा—

अंश कहैं अँग शब्द करि सत्य सोउ जु प्रमान । माया कार्य नहीं सबै चिदानन्द मय जान ॥
नित्यानन्द अद्वैत जू दोऊ प्रभु के अङ्ग । इनके अवयव गन जिते ते कहिये जु उपांग ॥
प्रभु सँग अंग उपांग जे तीक्षन अस्त्र समाज । पाखण्डी दल दलमलैं यह अस्त्रनि कौ काज ॥
नित्यानन्द गोस्वामि जू हैं हलधर को रूप । आचारज अद्वैत जू ते ईश्वर के रूप ॥
श्रीवासादिक पारिषदगण सैना लै संग । दोऊ सेनापति फिरैं करत कीर्तन रंग ॥
सोरठा—श्री नित्यानन्द राय भेष दलन पाखण्ड कौ । पाखँड पाप पलाय आचारज हुँकारते ॥

दोहा—

नाम कीर्तन के जु हैं आचारज चैतन्य । यज्ञ कीरतन करि भजैं तिन्हैं तेई अति धन्य ॥
सर्व यज्ञ हू ते अधिक कृष्ण नाम मखसार । वही सुमति है जगत में औ कुबुद्धि संसार ॥
कोटि कोटि हयमेध हू कहै सुनाम समान । सो पाखण्डी जानियै तिहि दण्डै सुत भान ॥
रच्यौ ग्रन्थ संदर्भ के प्रथमहि मंगलचार । जीव गुसांईं तहाँ किय इह पद अर्थ विचार ॥

तथाहि—अन्तः कृष्णं वहिर्गौरं दर्शितांगादिवैभवम् । कलौ संकीर्त्तनाद्यैः स्म कृष्णचैतन्यमाश्रिताः ॥

भारत पुनि श्री भागवत आगम और पुराण । गौर कृष्ण अवतार के हैं सब प्रकट प्रमान ॥
अरु प्रत्यत्त प्रमान हैं नाना प्रगट प्रभाव । कर्म अलौकिक लोक ते हैं अपूर्व अनुभाव ॥
देखे हूं देखैं नहीं गण अभक्त जन आहि । ज्यौं उलूक दृग सकै नहिं भान किरन अवगाहि ॥

तथाहि यमुनाचार्य्य स्तोत्रे—

त्वं शील रूप चरितैः परम प्रकृष्टै स्सत्वेन सात्विकतया प्रवलैश्च शास्त्रैः ।
प्रख्यातदैवपरमार्थविदाम्मतैश्च नैवासुरप्रकृतयः प्रभवन्ति वोद्धुं ॥

रूप दुरावन हेतु हरि करैं अनेक उपाय । तऊ तिन्हैं तिनके भगत जानि लेंहिं निज भाय ॥

तत्रैव—उल्लंघितत्रिविधसीमसमातिशायि, सम्भावनं तव परिवृढिमस्वाभावम् ॥
मायावलेन भवतापि निगृह्यमानं, पश्यन्ति केचिदनिशं त्वदनन्यभावाः ॥

कबहुँ न जानै कृष्ण को जाकौ असुर सुभाय । अपने प्रीतम भक्त सों कबहु न सकै लुकाय ॥

तथाहि—द्वौ भूतस्वर्गौ लोकेऽस्मिन् दैव आसुर एवच । विष्णुभक्तः स्मृतो दैव आसुरस्तद्विपर्य्ययः ॥

आचारज अद्वैत जू कृष्ण भक्त अवतार। हेतु कृष्ण अवतार कौ है जिन कौ हुंकार ॥
जब पृथिवी पर कृष्ण जू करैं प्रकट अवतार। पहिले ही गुरुवर्ग कौ करैं आप संचार ॥
तात मात गुरु आदि जे अरु पूजक सुखधाम। पहिले ही सब भूमि पर प्रकट भये अभिराम ॥
प्रगट होय आचार्य्य जू देखैं सब संसार। कृष्ण भक्ति सौगंधि सों हीन विषै व्यवहार ॥
कोई पाप कोइ पुन्य लगि करैं विषै भोग। भक्ति गंधहू नाहि जे मिटैं जु जिहि भवरोग ॥
आचारज लखि लोकगति हिय करुणा सों भोय। चिंता करैं जु लोक कौ कैसे कै हित होय ॥
आपुन जो श्रीकृष्ण जू करैं प्रकट अवतार। साधक ह्वै आचरण करि करैं जु भक्ति प्रकार ॥
नाम विना कलिकाल में और धर्म नहिं कोय। कलियुग में अवतार प्रभु कौन भांति करि होय ॥
शुद्धभाव करि कृष्ण कौ करि आराधन चाय। करौं निवेदन दैन्य करि निसि दिन अपने भाय ॥
नाम कीरतन कौ करों लाय कृष्ण संचार। सफल नाम अद्वैत मम तब ह्वै हैं निरधार ॥
जिहिं आराधन प्रभुजु वस होय सु कौन प्रकार। श्लोक एक आयौ मनहि ऐसे करत बिचार ॥

तथाहि—तुलसीदलमात्रेण जलस्य चुलुकेन वा। विक्रीणीते स्वमात्मानं भक्तेभ्यो भक्तवत्सलः ॥

आचारज या वचन को कह्यो अर्थ विस्तार। सोई अब हूं कहत हौं निज मति के अनुसार ॥
जल तुलसी श्रीकृष्ण को जो जन अर्पैं आहि। करैं कृष्ण चिंता हियें ऋण सोधैं हित ताहि ॥८२॥
तुलसी की तुलसी नहीं निजघर में कछु आन। तब आपुन कौ वेचि तिहि ऋन सोधैं भगवान् ॥
यह हिय करकै भावना आचारज रसलीन। सोई आराधन करैं जातै कृष्ण अधीन ॥८४॥
अनुछिन तुलसी मंजरी गंगाजल पुनि आहि। कृष्ण चरन हिय भावना करिकै अर्पैं ताहि ॥
आवाहन हरि को करैं करिकै अति हुँकार। इही भांति श्री कृष्ण कौ करवायो अवतार ॥
गौरकृष्ण अवतार कौ मुख्य यही है हेतु। जन इच्छा करि अवतरैं कृष्ण धर्म्म के सेतु ॥

तथाहि श्रीभागवते—त्वं भक्तियोगपरिभावितहृत्सरोज, आस्से श्रुतेक्षितपथो ननु नाथ पुंसां।
यद्यद्धियात उरुगाय विभावयन्ति, तत्तवपुः प्रनयसे सदनुग्रहाय।

यह पद कौ संक्षेप करि यहै अर्थ है सार। जन इच्छा करि कृष्ण के हैं सब हीं अवतार ॥
भयो सु चौथे पद्य कौ अर्थ सुनिश्चित एत। भये गौर अवतीर्ण ह्यां प्रेम प्रकाशन हेतु ॥
रूप सनातन पद कमल मधि जाको है वास। चरितामृत चैतन्य कौ कहैं कृष्ण को दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबलश्याम पद आस। प्रभु चरितामृत कौ लिखैं व्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे आशीर्वादमंगलाचरणे
श्री चैतन्यावतारसामान्यकारणं नाम तृतीय परिच्छेदः

———

चतुर्थ परिच्छेद

श्री चैतन्यप्रसादेन तद्रूपस्य विनिर्णयं । बालोऽपि कुरुते शास्त्रं दृष्ट्वा व्रजविलासिनः ॥

जय-जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांसु जय दास वर्ग सुख कंद ॥१॥
श्लोक चतुर्थ के अर्थको किय विवरण इहिभाय। श्लोक पांचवे कौ सुनौ अर्थ संत मन लाय ॥२॥
श्लोक मूल के अर्थ कौ कीजतु हैं जु प्रकास । अर्थ लगाबन हित प्रथम करि लीजै आभास ॥
चौथे पद कौ यह सुनौ कह्यो अर्थ विस्तार । प्रेम नाम विस्तार हित यह प्रकटे अवतार ॥
यह हेतु अवतार कौ सत्य किन्तु वहिरंग । और हेतु तुम सुनौ इक अन्तरंग करि रंग ॥५॥
पहिले ज्यौं श्री कृष्ण जू हरणहेत भूभार । स्थिति-कर्त्ता जो विष्णु हैं जग पालैं निरधार ॥
किन्तु कृष्ण अवतार को कालहु तो जबजोय । भार हरण को काल हूँ तहां मिल्यौ जब सोय ॥
पूर्ण स्वयं भगवान के अवतरिवे के काज । और सबै तिन में मिलैं अवतारिन के काज ॥
चतुर्व्यूह बैकुण्ठपति मत्स्यादिक अवतार । मन्वन्तरावतार युग विष्णु जिते जु अपार ॥१०॥
कृष्ण अङ्ग में आयकै सबै भये अवतीर्ण । याही विधि कै अवतरे कृष्ण आप परिपूर्ण ॥११॥
याही ते सब विष्णु हैं कृष्ण शरीर मंझार । तिनही द्वारा कृष्ण जू करें असुर संहार ॥
अनुषंगिक इह कर्म है मारण सुर प्रतिकूल । जिहिं कारण अवतार सो कारन कहै जु मूल ॥
रसिक मुकुटमणि कृष्ण जू परम करुन हैं सोय । इनहीं दोनों हेतु करि इच्छा उपजी दोय ॥
प्रभुता ज्ञान मिल्यौ भजै सब जग की यह रीति । सिथिल प्रेम ऐश्वर्य करि तासों नहिं मम प्रीति ॥
मुहिको ईश्वर मानि करि आपुन मानत हीन । कबहूँ ताको प्रेमवश हौं न होंहुँ आधीन ॥१६॥
जो जो जन मोकों भजै करि करि जैसौ भाय । तैसेई ताकों भजों मेरो यहै सुभाय ॥

तथाहि गीतायां—ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहम् ॥

कृष्ण तनय मम सखा मम मेरे पति हैं प्रान । करै शुद्ध रति कोइ जो इहि विधि मोकौ जान ॥
आपुन को बड मानई मोको सम अरु हीन । मन बच क्रम करि होत हूँ मैं ताके आधीन ॥

तथाहि दशमे—मयि भक्ति र्हि भूतानाममृतत्वाय कल्पते । दिष्ट्या यदासीन्मत्स्नेहो भवतीनां मदापनः ॥

पुत्र भाव करि मात मम बंधन करें प्रवीन । लालन पालन करत नित जानि मोहि अति हीन ॥
सुद्ध सख्य करि सखा मम कांधे चढ़ैं सुजान । कौन बड़े तुम लोक हौ हम तुम एक समान ॥
मान समैं जब प्रिया मम भर्त्सन करें निदान । वेद स्तुति हूते अधिक हरें सुमन अरु प्रान ॥
शुद्ध भक्त ये संग लें करौं प्रगट अवतार । व्रज में करों जु विविध विधि अद्भुत सहजबिहार ॥
जिनिको नहीं प्रचार हैं वैकुण्ठादिक लोय । मन ते लीला करौं जिहिं चमत्कार मम होय ॥
गोपी गन कौ मम विषय है उपपति जो भाव । करि हैं माया योग निज तिहि अपने जु प्रभाव ॥
सोरठा—हों नहिं जान्मै ताहि गापीजन जानै नहीं । हरै नित्य मन आहि विवि गुन रूप दोऊनके ॥

धर्म छांड़ि दोऊ करें मिलन राग के चाय। कभूं मिलै न मिले कभूं दे वयोग विवि पाय ॥
यह सब रस निर्यास कों करि नीके आस्वाद। इँही द्वार करि करों सब भक्तनिं पै जु प्रसाद ॥
व्रज कौ निर्मल राग सुनि जन समूह ह्वै चूर। राग मार्ग करि भजैंगो-धर्मनि करि करि दूर ॥

तथाहि श्रीभागवते—

अनुग्रहाय भक्तानां मानुषं देहमाश्रित:। भजते तादृशी: क्रीडा: या श्रुत्वा तत्परो भवेत् ॥

इहाँ क्रिया विधि लिंग जो सो यों कहत जु गाय। आवश्यक कर्तव्य है अनिथा है प्रतिवाय ॥

सोरठा—कारन यहै विचार मुख्य कृष्ण अवतार कौ।
करि यों असुर संहार अनुसंगिक फल सबनि कौ ॥

दोहा—

ऐसे ही चैतन्य जू कृष्ण पूर्ण रस धाम। करैं जु धर्म प्रचार जग इह तिनको है काम ॥
जब मन भयौ अवतार कौ कारन कौ जु उपाय। तिहीं समैं युग धर्म कौ काल मिल्यौ तहँ आय ॥
जन गन संग लै अवतरें दोय हेत जिय जान। आपुन आस्वादन करें प्रेम नाम गुणगान ॥
तिही द्वार करि स्वपच लौं करि कीर्तन संचार। नाम प्रेम-माला गुही पहराई संसार ॥
भक्त भाव इहि भाय करि करि कै अङ्गीकार। आपुन करि कैं आचरण किय यौं भक्ति प्रचार ॥
दास्य सख्य वात्सल्य है और मधुर रस सार। चारि विधिन के भक्त जे चारों रस आधार ॥
अपने अपने भाव कौ सब ही मानैं सार। आस्वादैं ये कृष्ण सुख सबै भाव अनुसार ॥
करैं विचार तटस्थ ह्वै हिय में जबै सुजान। सब रस तें सिंगार में अधिक माधुरी ज्ञान ॥

तथाहि रसामृतसिन्धौ—

यथोत्तरमसौ स्वादु विशेषोल्लासमय्यपि। रतिर्वासनया स्वाद्वी भासते कापि कस्यचित् ॥

याही ते ताकौ कहैं विज्ञ मधुर रस नाम। स्वकिया परकीया और भाव द्विविधि संस्थान ॥
भाव परकिया मध्य है निरवधि भाव प्रभाव। ताहू में श्रीराधिका कौ निरवधि है भाव ॥४१॥
प्रौढ़ भाव निरमलसु रस प्रेम जु सर्व प्रधान। कृष्ण माधुरी स्वाद को कारण सोई जान ॥
याही ते तिहू भाव कौ करि कै अङ्गीकार। पूर्णकरी श्री गौरहरि निज बांछा रस सार ॥

तदुक्तं श्रीरूपगोस्वामिना—

सुरेशानां दुर्गं गतिरतिशयेनोपनिषदां, मुनीनां सर्वस्वं प्रणतपटलीनां मधुरिमा।
विनिर्यास: प्रेम्णो निखिलपशुपालाम्बुजदृशां, स चैतन्य: किं मे पुनरपि दृशो र्यास्यति पदम् ॥

अपारं कस्यापि प्रणयिजनवृन्दस्य कुतुकी, रसस्तोमं हृत्वा मधुरमुपभोक्तुं कमपि य:।
रुचिं स्वामावव्रे द्युतिमिह तदीयां प्रकटयन्, स देवश्चैतन्याकृतिरतितरां न: कृपयतु ॥

भाव ग्रहन को हेतु किय धर्महि स्थापन सार। श्लोक पांचवेकौ करत ताके लिये विचार ॥
श्लोक पांचवे कौ कह्यौ ऐसे करि आभास। अब ताही कौ कीजियतु नीकै अर्थ प्रकास ॥

तथाहि—राधा कृष्णप्रणयविकृतिर्ल्हादिनी शक्तिरस्मा, देकात्मानावपि भुवि पुरा देहभेदं गतौ तौ ॥
चैतन्याख्यं प्रकटमधुना तद्द्वयं चैक्यमाप्तं, राधाभावद्युति सुबलितं नौमि कृष्णस्वरूपं ॥

श्रीराधा अरु कृष्ण इक रूप देह द्वै धार । आस्वादन रसकौ कियो करि अन्योन्य विहार ॥
तेई दोऊ एक अब श्री चैतन्य गुसाइ । आस्वादन हित भाव के भये जु विवि इक ठाइ ॥
याही ते आगे करैं ताको विवरण सोइ । याही ते श्री गौर की महिमा कथन सुहोइ ॥
राधा जू श्रीकृष्ण कौ हैं निज प्रणय वकार । निज जु शक्ति आल्हादिनी है जिहि नाम प्रचार ॥
करवावैं आल्हादिनी कृष्णानँद आस्वाद । ताही द्वारा हरि करैं जन पोषन परसाद ॥
सत् चित् आनन्द पूर्ण जो हैं श्रीकृष्ण स्वरूप । तिनकी इक चित् शक्ति जो धरै तीन यह रूप ॥
हर्ष अंश आल्हादिनी संधिनि है सत अंश । चित अंश संवित कहैं ज्ञान भान परसंश ॥
संधिन कौ सारांश हैं शुद्ध सत्व जिहि नाम । जित जित सत्ता कृष्ण की तहां जु तिहि विश्राम ॥

तथाहि विष्णुपुराणे—

ल्हादिनी सन्धिनी सम्वित् त्वय्येका सर्व संश्रये । ल्हादतापकरी मिश्रा त्वयि नो गुणवर्जिते ॥

मात पिता जु स्थान गृह सज्या आसन जोय । शुद्ध सत्व श्री कृष्ण को तिहि विकार सब सोय ॥

तथाहि श्री भागवते—सत्वं विशुद्धं वसुदेवशब्दितं यदीयते तत्र पुमानपावृतः ।

सम्वित कौ यह सार हैं हरि भगवत्ता ज्ञान । ब्रह्म ज्ञान आदिक सबैं तिहिं परिवारहि जान ॥
ल्हादिनि सार जु प्रेम हैं भाव सार तिहि वाम । परमसार जो भाव कौ महाभाव तिहि नाम ॥
ठकुराइनि श्री राधिका महा भाव कौ रूप । कृष्ण सुकांता मुकुटमणि गुणगण परम अनूप ॥

तथाहि उज्जल नीलमणौ—महाभाव स्वरुपेयं गुणैरति वरीयसी ॥

कृष्ण प्रेम भावित सदा जिहि चित इंद्रिय काय । कृष्ण शक्ति निज राधिका क्रीड़ा की जु सहाय ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—आनन्द चिन्मय रस प्रतिभाविताभिस्ताभिर्य एव निज रुपतयाकलाभिः ॥

रस आस्वादन कृष्ण कौ करवावें जिहिं भाय । सो विवरण सुनु भांति जिहिं क्रीड़ा की जुसहाय ॥
कृष्ण सु कान्ता गण जितें त्रिविधि प्रकारहि जान । इक लक्ष्मी गण नाम हैं महिषीगण पुनिआन ॥
व्रज देवी गण रूप अरु हैं कांता गणसार । राधा जू ते होत सब कान्तागण विस्तार ॥
अवतारी श्री कृष्ण ज्यों करें जु बहु अवतार । ऐसे राधा अंसिनी तें गण तीन प्रकार ॥

कवित्त—लक्ष्मी गण तिनकी हैं वैभव विलास रूप, महिषीगण वैभव प्रकासरू जानिये ।
आकृति स्वभाव भेद व्रज देवीगण काय व्यूह रूप तिनको कारण रस मानिये ॥
ताहू मध्य व्रज नाना भाव भेद रासादिक, लीला स्वाद कृष्ण जू को करावे वखानियै ॥
कान्ता बहु विना नहीं रस कौ उल्लास ताते लीला के सहाय बहु प्रकास सु ठानिये ॥१॥

गोविंद की आनंदिनी राधा मोहनि और। सर्वस हैं गोविन्द की सब कांता सिरमौर ॥
गौतमीय तन्त्रे—देवी कृष्णमयी प्रोक्ता राधिका पर देवता। सर्वलक्ष्मीमयी सर्वकान्तिः संमोहिनी परा ॥
द्योतिमान देवी कहें परम सुन्दरी होय। हरिक्रीड़ा पूजानिकी कै निवास है सोय ॥
कृष्णमयी कहैं कृष्ण जु अन्तर वाहिर आहि। जित जित नेत्र परैं तिते कृष्ण फुरैहै ताहि ॥
परम प्रेम रस मय जु ये अथवा कृष्ण स्वरूप। जिन की जो निज शक्ति हैं हैं तिनसों इक रूप ॥
कृष्ण सु बांछा पूर्ति सब आराधैं तिहि जान। याही तैं श्री राधिका नाम पुरान बखान ॥
दशमे—अनया राधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः। यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद्रहः ॥
याही ते पूज्या सबनि परम देवता जोय। पालन कर्त्ता विष्णु की जग माता हैं सोय ॥
सर्व लच्मी शव्द को आगे कियौ व्याख्यान। सब लच्मीगण में जु तिहिं अधिष्ठान हैं जान ॥
सर्व लच्मी कृष्ण जु कौ किय षड्विध ऐश्वर्य। अधिष्ठात्रि तिन की जु हैं सब शक्तिन में वर्य ॥
सर्व कांति सौंदर्य जो तिन में बसै जु सोय। सर्व लच्मी गणन की सोभा जातें होय ॥
कांति शब्द कहि कृष्ण की सब इच्छाहि वखान। सकल वांछा कृष्ण की राधा ही ते जान ॥
पूरैं सब श्री राधिका कृष्ण जु वांछित जान। सर्व कांति जो शब्द है ताकौ यहै वखान
जग के मोहन कृष्ण हैं ए मोहत हैं ताहि। याही ते सब में परम ठकुरानी ए आहि ॥
पूर्ण शक्ति श्री राधिका शक्तिमान भगवान। भेद न दोऊ वस्तु में वेद पुराण प्रमान ॥
मृगमद ताकी गंध ज्यों नहिं कबहूँ विच्छेद। ज्वाला ते नहिं अग्नि कौ जैसे कबहूँ भेद ॥
कृष्ण राधिका यों सदा ये हैं एक स्वरूप। लीला रस आस्वाद हित दोय धरत हैं रूप ॥
शिक्षा हित निज प्रेम की आपुन ले अवतार। भाव कांति विवि राधिका कौ करि अङ्गीकार ॥
गौर रूप श्री कृष्ण जू आप कियौ अवतार। श्लोक पांचवे कौ यहैं जानौ अर्थ प्रचार ॥
श्लोक छठे के अर्थ कौ कीजतु है जु प्रकाश। तातैं पहिले कहतु हैं ताही कौ आभास ॥
नाम कीरतन कौ कियौ अवतरि प्रभु जु प्रचार। वाह्य हेतु यह प्रथम ही करि आये जु विचार ॥
वीज और अवतार कौ अन्तरंग है जोय। रसिक मुकटमणि प्रभु जु कौ निजकारज है सोय ॥
अति निगूढ़ जो हेत है सो वह त्रिविध प्रकार। श्री स्वरूप गोस्वामिते जाकौ भयौ प्रचार ॥
अन्तरंग प्रभु के अधिक श्री स्वरूप जू आहि। प्रभु प्रसंग जानै जु ये तिनहीते अवगाहि ॥
प्रभु अन्तर निति वसति हैं मूर्त्तिराधिका भाय। निसिदिन ताही भावकरि सुख दुख उठैंजु आय ॥
प्रभु के लीला शेष में कृष्ण विरह उन्माद। प्रभु चेष्टा सब भ्रम मई अरु प्रलाप मई वाद ॥
उद्धव देखी ज्यौं भई राधा भाव प्रमत्त। निसिदिन प्रभु त्यौं ही रहैं तिहीभाव करि मत्त ॥
निसि कौ करैं विलाप प्रभु श्रीस्वरूप हियलाय। आप कहैं आवेस में खोलि हिये कौ भाय ॥
प्रभु जू के हिय में उठें जब-जब जोई भाय। श्री स्वरूप जू देहि सुख वही पद्य पद गाय ॥

अब कछु कारज नहीं है इन सब के जु विचार। आगे इनि कौ कहैंगे करि नीके विस्तार॥
पहिले व्रज में कृष्ण कौ त्रिविध कह्यौ वयधर्म। हैं कुमार पौगंड पुनि अरु किशोर अति मर्म॥
वात्सल्य आवेस में सफल कियो कौमार। सफल कियो पौगंड पुनि लै बल सखा अपार॥
श्री राधादिक संगलै किय रासादि विलास। इच्छा भरि आस्वाद किय यह रस को निर्जास॥
वय किशोर मनमथजु पुनि सकलजगत जो दीन। रासादिक लीलान करि सफल किये ऐ तीन॥

तथाहि विष्णु पुराणे—सोपि कैशोरकवयो मानयन्मधुसूदनः। रेमे स्त्रीरत्नकूटस्थः क्षपासु क्षपिताहितः॥
रसामृत सिन्धौ—

वाचा सूचित शर्वरी रतिकला प्रागल्भ्यया राधिकां, व्रीडा कुञ्चित लोचनां विरचयन्नग्रे सखीनामसौ॥
तद्वक्षोरुहचित्रकेलिमकरीपाण्डित्य पारं गतः, कैशोरं सफली करोति कलयन्कुञ्जे विहारं हरिः॥
हरिरेष नचेदवातरिष्यन्मथुरायां मधुराक्षि राधिका च। अभविष्यदियं वृथाविसृष्टि र्मकराङ्कस्तु विशेषत स्तदात्र॥

पहिले इहिविधि कृष्णजू सब रस के जु निवास। चर्वन कीनौ यदपि यौं सबरस कौ निर्जास॥
तऊ तहां नाहिन भई इच्छा पूरन तीन। तहां जु नित आस्वाद हित जद्यपि जतन जु कीन॥
तिनकी वांछा प्रथम कौ कीजतु है विख्यान। मन में कहैं जू कृष्ण हम सबरस के जु निधान॥
हौं पूरण आनंदमय चिन्मय पूरण तत्व। राधा जू के प्रेम सो हमैं करै उन्मत्त॥
नहिं जानों तिहि प्रेम के नीको बल है कोय। विह्वल करें जु सर्वदा हमहूँ कौ बल सोय॥
मम गुरु राधा प्रेम हैं हों नट तिहि आधीन। नाना नाच नचावहीं हमको सदा प्रवीन॥

तथाहि गोविन्द लीलामृते—

कस्माद्वृन्दे! प्रिय सखि! हरेः पादमूलात् कुतोऽसौ, कुण्डारण्ये किमिह कुरुते नृत्यशिक्षां गुरुः कः।
तत्त्वन्मूर्तिः प्रतितरुलता दिग्विदिक्षु स्फुरन्ती शैलूषीव भ्रमति परितो नर्तयन्ती स्वपश्चात्॥

निज प्रेम आस्वाद में होय जु मम अहलाद। ताहूते है कोटि गुण राधा प्रेमास्वाद॥
आश्रै धर्म विरुद्ध कौ जैसौ है मम रूप। ऐसौ राधा प्रेम है सदा विरूद्ध स्वरूप॥
राधा प्रेमा विभु जिही बढ़िबे कौं नहिं ठौर। इतनेऊपै सो सदा छिन छिन बाढ़ै और॥
जाते नहि गुरु वस्तु अरु सो गौरवता हीन। जातें निर्मल नहिं कोऊ तऊ वक्रता लीन॥

तथाहि दानकेलिकौमुद्यां—

विभुरपि कलयन् सदातिवृद्धिं, गुरुरपि गौरवचर्य्यया विहीनः।
मुहु रुपचित वक्रिमापि शुद्धो, जयति मुरद्विषि राधिकानुरागः॥

श्री राधा जू हैं सदा परम आश्रय ताहि। विषयालंबन में सदा तिहिं प्रेमा कौ आहि॥
विषयजाति कौ सुख जु है ताको मम आस्वाद। मोहू ते है कोटि गुण आश्रय को अहलाद॥
सुख आश्रय जातीय तिहि हेत सदा मन धाय। ताहि न पावे यत्न करि करौं जु कौन उपाय॥
जौ कबहूं इहि प्रेम की हूजै आश्रय सोय। तब इह प्रेमानन्द कौ अनुभव नीकौ होय॥

रहैं कौतुकी कृष्ण तब यौं चिंता करि जीय। प्रेम लोभ की धक-धकी दिन-दिन बाढ़ै हीय ॥
यहै हेत इक और ही सुनौ जु लोभ प्रकार। कृष्ण देखि निज माधुरी आपु न करैं विचार ॥
अद्भुत पूरण अंत नहिं मम मधुरिमा जु आहि। नहिं पावै तिहुँ लोक में सीमा कोऊ याहि ॥
इही प्रेम द्वारा जु नित राधा एक प्रवीन। माधुर्य्यामृत मम सकल आस्वादें रस लीन ॥
यद्यपि राधा प्रेम सत निर्मल दर्पन आहि। तऊ स्वच्छता अधिकही छिन-छिन बाढ़ें ताहि ॥
नाही है मम माधुर्य्य कौ बढ़िबे कौ अवकास। इहि दर्पन के अग्र पुनि नव-नव होय प्रकास ॥
प्रेम जु तिहि माधुर्य्य मम हिये होउ करि दोय। छिन-छिन विवि बाढ़ै अधिक हार न मानैं कोय ॥
है मेरो माधुर्य निति नव नव परम अनूप। आस्वादैं तिहिं भक्त सब निज निज रति अनुरूप ॥
जब देखौं निज माधुरी दर्पणादि के माहि। होय लोभ आस्वाद हित हौं समर्थ तिहि नाहि ॥

तथाहि ललित माधवे---अपरिकलितपूर्व्वः कश्चमत्कारकारी, स्फुरति मम गरीयानेष माधुर्य्यपूरः।
अयमहमपि हन्त प्रेक्ष्य यं लुब्धचेताः, सरभसमुपभोक्तुं कामये राधिकेव ॥

अद्भुत माधुरि कृष्ण की अद्भुत बल है ताहि। जाके श्रवन सुभायते मन करि देतहि काय ॥
यहै कृष्ण माधुर्य्य कौ स्वाभाविक बल एक। कृष्ण आदि नारी पुरुष चंचल करै जु टेक ॥
आकर्षै दर्शन श्रवन सब के मन अपनाय। आपुन के आस्वादहित करै अनेक उपाय ॥
माधुर्य्यामृत यह सदा पान करै जो कोय। होय न तृष्णा शांति किहुँ छिनछिन बाढ़ै सोय ॥
ह्वै अतृप्ति निंदन करें विधि कौ सबै विदग्ध। विधिहि न जानें भली विधि सृजन बड़ौ अविदग्ध ॥
रोंम रोंम नहिं नैंन दीय सब के द्वै हीकीय। ताहू में जु निमेष दिय क्यों करि देखें पीय ॥

तथाहि श्री भागवते---यद्दर्शने दृशिषु पक्ष्मकृतं शपन्ति ॥

दरसन बिन श्री कृष्ण के नाहि नेत्र फल आन। जो जन देखै कृष्ण को भाग्यवान सोइ जान ॥

तथाहि दशमे—अक्षण्वतां फलमिदं न परं विदामः, सख्यः पशूननु विवेशयतोर्वयस्यैः।
वक्त्रं व्रजेश सुतयो रनुवेणु जुष्टं, यै र्वा निपीतमनुरक्तकटाक्षमोक्षम् ॥
गोप्य स्तपः किमचरन् यदमुष्य रूपं लावण्यसारमसमोर्द्धमनन्यसिद्धं।
दृग्भिः पिबन्त्यनुसवाभिनवं दुरापमेकान्तधाम यशसः श्रिय ऐश्वरस्य ॥

अद्भुत माधुरि कृष्ण की उपजावति है छोभ। सकै तु नहिं आस्वाद करि मन में रहै जु लोभ ॥
द्वितीय हेतु कौ यह कीयौ नीके करि विख्यान। तृतीय हेतु कौ अब सुनौ लच्छन कहौं बखान ॥
है अत्यन्त निगूढ़ यह सब रस कौ सिद्धांत। श्री स्वरूप गोस्वामिजू जानत हैं एकान्त ॥
कोऊ जानै और जो ले—तिनहीं ते सोय। गोस्वामी चैतन्य के गूढ़ मर्म है जोय ॥
गोपीगण के प्रेम कौ रूढ़ भाव है नाम। अमल विशुद्ध जु प्रेम सौ है कबहूँ नहिं काम ॥

तथाहि तन्त्रे---प्रेमैव गोपरामाणां काम इत्यगमत्प्रथां।

काम प्रेम इन दुहुन के न्यारे लच्छण जान। ज्यों सुवर्ण अरु लोह कौं रूपै विलच्छण भान ॥

जो निज इंद्रिय प्रीत की चाह कहै तिहि काम । कृष्ण प्रीति अभिलाख कौं धरैं प्रेम तिहि नाम ॥

कवित्त—काम तातपर्य्य कहैं केवल संभोग निज कृष्ण सुख तातपर्य्य प्रेम बल यही है।
वेद धर्म लोक धर्म देह धर्म कर्म लज्जा धैर्य्य आत्म देह सुख जोई प्रिय सही है।
दुस्त्यज जो आर्य पथ परिजन स्वजन को ताडन और भर्त्सन सोऊ सुख नहीं है।
सबै त्यागि कृष्ण भजै तत्सुख ही हेत सजै करै प्रेम सेवा भांति प्रिय रुचि लही है ॥ ३४॥

दोहा—

याही ते श्री कृष्ण कौ कहियै दृढ़ अनुराग । जैसे उज्ज्वल बसन में नाहि न कोऊ दाग ॥
याही ते अन्तर बड़ौ काम प्रेम में जान । काम अन्धतम महा है प्रेम अमल है भान ॥
जहाँ भान तहाँ तम नहीं जहँ तम नहिं रविधाम । जहां काम प्रेम न तहां जहां प्रेम नहिं काम ॥
यातै गोपी गण विषै नहीं काम कौ गन्ध । तिन के तत्सुख मात्र हित है तिन सौं संबन्ध ॥

दशमे—यत्ते सुजात चरणाम्बुरुहं स्तनेषु, भीताः शनैः प्रियदधीमहि कर्कशेषु ।
तेनाटबीमटसि तद्व्यथते न किं स्वित्, कूर्पादिभि र्भ्रमति धी र्भवदायुषां नः ॥

अपने सुख दुख कौ नहीं गोपिन के जु विचार । करै कृष्ण सुख हेत सब तन मन कौ व्यवहार ॥
कृष्ण विना और सबनि कौ करि नीके परित्याग । करैं कृष्ण सुख हेत ये परम शुद्ध अनुराग ॥
एक प्रतिज्ञा कृष्ण की पहिलै करी जु आय । जो मोकौ जैसै भजै हौं त्यौं भजौं जु ताहि ॥४०॥

तथाहि—ये यथा मां प्रपद्यंते तां स्तथैव भजाम्यहं ॥

तिन को गोपी भजन ने सो वृत मिथ्या कीय । ताकौ वहै प्रमाण है श्री मुख उत्तर दीय ॥

तथाहि दशमे—न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां स्वसाधु कृत्यं विविधायुषाऽपि वः ॥
या माभजन् दुर्जरगेह शृंखला संवृश्च्य तद्वः प्रतियातु साधुना ॥

गोपिन के निज देह में तऊ जो लखियै प्रीति । सोऊ है श्रीकृष्ण हित निश्चै यह तिहिं रीति ॥
यहै देह हम कृष्ण कौ कियौ समर्पन आहि । साधन तिहि संभोग कौ यह धन हैगो ताहि ॥
दरसै परसै देह यह होय कृष्ण सन्तोष । याहीतें तिनकों करैं मंजन भूषण पोष ॥

तथाहि गोपीप्रेमामृते श्रीकृष्ण वाक्यं—
निजांगमपि या गोप्यो ममेति समुपासते । ताभ्यः परं न मे पार्थ निगूढ़ प्रेम भाजनम् ॥

औरु एक अद्भुत सुनौ गोपी भाव सुभाव । नहिं गोचर हो बुद्धि को यह जाको जु प्रभाव ॥
जब देखें श्रीकृष्ण कौं गोपी गण रस भोय । सुख इच्छा नाहिन तऊ कोटि गुनो सुख होय ॥
गोपिनु देखै कृष्ण कौ जो आनंद सुख होय । आस्वादन गोपी करें कोटि गुणो सुख होय ॥
आस्वादन गोपी करें निज सुख को अनुरोध । तऊ जु सुख बाढ़ै अधिक यातें परयौ विरोध ॥
या बिरोध कै इहै इक समाधान है जान । गोपी सुख कौ कृष्ण सुख में है पर्यवसान ॥

गोपी देखें कृष्ण के बढ़े प्रफूलनि जोय। ताते बढ़ै सु माधुरी ताकी सम नहिं कोय ॥
मम दरसन में कृष्ण जु पायौ इतौ इक रंग। याही सुख गोपीनुकें होय हर्ष अँग अङ्ग ॥
गोपी सोभा देखि हरिजू सोभा अधिकाय। हरि छवि लखि तिनकी बढ़ै सोभा तिहीं जु भाय ॥
होड़ा-होड़ी परसपर परै जु यों दुहुँ मांहि। बढ़ै परसपर यों वदन दोऊ मोड़ैं नांहि ॥
गोपी गुण अरु रूप करि ऐपै हरि सुख होय। तिहि सुख सौं सुख वृद्धि अति गोपी गन के सोय ॥
याही ते तिहि सुख विषै होय कृष्ण सुख पोष। इही हेतु तिन प्रेम में नहीं काम मय दोष ॥
स्वाभाविक एक चिन्ह है और प्रेम को तास। काम दोष करि हीन है प्रेम प्रकारहिं जास ॥
गोपी प्रेम करै जु श्रीकृष्ण माधुरी पुष्ट। तिहि माधुर्य बढ़ाय कै होंय प्रेम संतुष्ट ॥
रति के विषयानन्द तब हर्ष आश्रय होय। निज सुख वांछा गंध जो तहां नाहिंनैं सोय ॥
निरूपाधि प्रेमा जहां तहां इहै है रीति। प्रीति विषय सुख देखि कै होय जु आश्रयप्रीत ॥
प्रेमानंद बाधै जबै तिहि सेवानंद सार। तिहि आनंद पै भक्त के होय सुक्रोध अपार ॥

रसामृतसिन्धौ---अंगस्तम्भारंभमत्तुंगयन्तं प्रेमानन्दं दारुको नाभ्यनन्दत्।
कंसाराते र्वीजने येन साक्षादक्षोदीयानन्तरायो व्यधायि ॥

तत्रैव---गोविन्दप्रेक्षणाक्षेपि वाष्पपूराभिवर्षिणं। उच्चैरनिन्ददानन्दमरविन्द विलोचना ॥

शुद्ध भक्त जे कृष्ण के तिहि सेवा सुख बांच। निज सुख हित नाहिन गहै सालोक्यादिक पांच ॥
काम गंध बिनु साहजिक है गोपिनु कौ प्रेम। निर्मल उज्वाल शुद्ध अति जैसे तापौ हेम ॥
हरि सहाय गुरु बंधु है और प्रेयसी आहि। गोपी है प्रिय शिष्य पुनि सखी जु दासी ताहि ॥
मन वांछित जो कृष्ण कौ जानै गोपी जोय। सेवा रीति जु प्रेम की इष्ट समीहित सोय ॥

तथाहि---सालोक्य सार्ष्टि सामीप्यसारूप्यैकत्वमप्युत। दीयमानं न गृह्णन्ति विना मत्सेवनं जनाः ॥
तथाहि गोपीप्रेमामृते--
सहाया गुरवः शिष्या भुजिष्या बान्धवाः स्त्रियः। सत्यं बदामि ते पार्थ गोप्य किं मे भवन्ति न ॥

ताहू गोपी गण विषै श्री राधा जु प्रधान। रति सुहाग गुण रूप करि सबतें अधिक प्रमान ॥

तथाहि पद्मपुराणे—
यथा राधा प्रिया विष्णो स्तस्याः कुण्डं प्रियं तथा। सर्वगोपीषु सेवैका विष्णोरत्यंतवल्लभा ॥
गोपीप्रेमामृते–त्रैलोक्ये पृथिवी धन्या यत्र वृंदाबनपुरी। तत्रापि गोपिकाः पार्थ यत्र राधाभिधामम ॥

राधा सह क्रीड़ा रसै वृद्धिहि कारन आहि। गोपी गण सम और है सब उपकार सु ताहि ॥
कृष्ण-वल्लभा राधिका और कृष्ण-धन-प्रान। तिन विन सुख को हेतु नहिं गोपी गण जे आन ॥

तथोक्तं श्री जयदेवाचरणैः—
कंसारिरपि संसार बासना बद्धशृङ्खलां। राधामाधाय हृदये तत्याज ब्रजसुंदरीः ॥

सोई राधा भाव लै गौर कृष्ण अवतार। नाम प्रेम जुग-धर्म्म जो ताकौ कियो प्रचार ॥
करी गौर तिहि भाव करि निजइच्छा ही जोय। जिहि इच्छा करि अवतरैं कारण मूल जु सोय ॥

गौर कृष्ण गोस्वामि जू हैं व्रज राजकुमार। रसमय मूरति कृष्ण जू मूरतिमंत सिंगार ॥
सोई रस आस्वाद हित प्रकट कियो अवतार। अनुसंगिक यह फल भयो सब रस को जु प्रचार ॥

तदुक्तं श्री जय देव चरणैः—शृङ्गारः सखि मूर्त्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति ॥

गौर कृष्ण गोस्वमि जू हैं रस सदन अशेष। आस्वादन रस कौ तिन्हौ कियो असेष विशेष ॥
बहु प्रवर्त तिहि द्वार ह्वै कलियुगहू को धर्म। गौरचन्द्र के दास जे जानत ये सब मर्म ॥
श्री अद्वैताचार्य जू अरु श्री नित्यानन्द। श्री निवास पुनि गदाधर पंडित जू सुख कन्द ॥
श्री स्वरूप गोस्वमि जू दामोदर अभिराम। और ब्रह्म हरिदास जू लेंहि निरन्तर नाम ॥
और जिते चैतन्य के भृत्य वर्ग समुदाय। भक्ति भाव करि सीस धरि तिन सब कहौं पाय ॥
श्लोक छठें कौ यह कह्यौ नीके के आभास। श्लोक अर्थ सब सुनौ अब कीजतु है जु प्रकास ॥

तथा—श्री राधायाः प्रणयमहिमा कीदृशो वानयैवा, स्वाद्यो येनाद्भुतमधुरिमा कीदृशो वा मदीयः ॥
सौख्यञ्चास्याः मदनुभवतः कीदृशं वेतिलोभात्, तद्भावाढ्यः समजनि शचीगर्भ सिंधौ हरींदुः ॥

सब सिद्धांत निगूढ़ ये कहें न क्यौं हूं जाहिं। कोऊ इन के बिन कहैं अंतहि पावै नाहिं ॥
जानि लेंहिंगे रसिक सब नहिं समझेंगे मूढ़। याही तें जु इन्हैं कहैं कछु करि कैं जो गूढ़ ॥
हियैं धरैं चैतन्य जे अरु श्री नित्यानन्द। इनि सब सिद्धांतनि जु में पैहैं अति आनन्द।
यह सब जो सिद्धान्तरस सो रसाल दल आहि। कोकिल भक्त समूह जो बल्लभ सदा जु ताहि ॥
विमुख ऊंट कौ या विषैं जो नहिं होय प्रवेस। तब तौ मेरे हृदय में है आनन्द विशेष ॥
जासौं लागै कहत भय सोई जानें ताहि। याहू तें कछु सुख अधिक ह्वै त्रिभुवन के माँहि ॥
नमस्कार करि सबनि कौं जन समूह जो सोय। शंका रहित कहौं तिन्है चमत्कार अति होय ॥
इक विचार यौं कृष्ण कैं सदा रहै हिय जोय। पूरणआनँद पूर्णरस रूप कहैं मम लोय ॥
हम ही ते त्रैलोक में सब आनन्दित होय। हम हू कौं आनन्द दे ऐसौ जन है कोय ॥
हम हूं तें जाकौ अधिक सौ-गुण गुण जो होय। मो आल्हादन करन कौं जन समर्थ है सोय ॥
जग में हमते गुनी बड़ यहै असम्भव आहि। एकहि राधा हैं अधिक किय अनुभव मैं ताहि ॥
कोटि काम स्वरूप मम परम अनूप सु होय। महा अलौकिक माधुरी जाकी सम नहिं कोय ॥
अद्भुत मेरे रूप करि सब त्रिभुवन आप्याय। राधा देखें मम नयन सीतलता अधिकाय ॥८८॥
आकर्षण त्रिभुवन करै मम बंशी सुर गान। परम मधुर राधा वचन हरै सु मम मन कान ॥
यद्यपि मेरी गन्ध करि सब जग होत सुगन्ध। चित्त प्राण मेरे हरै श्री राधा अँग-गंध ॥
यद्यपि मम रस कै सकल जगत सरस अति होय। राधा जू कौ अधर रस हम हि बस करै सोय ॥
सीतल है विधु कोटि तैं यद्यपि परस हमार। राधा परस करै जु मम सीतलता जु अपार ॥
सब जग कौ सुख हेतु मैं हौं याही जु प्रकार। राधा जू के रूप गुन मम जीवन जु अपार ॥
अनुभव करि या भांति कै मेरे है जु प्रतीत। करि विचार जग देखियै तब ही सब विपरीत ॥

राधा दरसन विषै मम सीतल नैन रु आन। मम दरसन सुख में तहां राधा के अज्ञान॥
वेणु गीत झांई तनक हरै चेतना ताहि। लपटै दौरि तमाल कौं तिहि मम भ्रम अवगाहि॥
आलिंगन पिय कौ लह्यौ जन्म सफल मम आहि। याही सुख में मगन ह्वै रहै जु भुज भरि ताहि॥
पवन चलै अनुकूल जौ लहै जो मम तन गंध। उड़ि परि कै चाहै जु तिहि होय नेत्र करि अंध॥
चर्वित मम तांबूल रस करैं दूर तें पान। मग्न होय आनन्द निधि जानैं नहिं कछु आन॥
मम सँग में श्री राधिका लहै जु आनँद याहि। सत मुख ह्वै कैं कहै जो अन्त न पावै ताहि॥
सुरतांत सुख बीच में अङ्ग माधुरी आहि। तिहिं लखि सुख करि मोहि तब आपौ बिसारैं जाहि॥
समरस जो है दुहुनि कौ यों मुनि भरत प्रमान। मम व्रज कौ समरस जु यह ताकौ तिहूँ न ज्ञान॥
अरस परस संगम विषै मम जितनौ सुख होय। ताहूतें श्री राधिका सुख सत अधिक जु सोय॥
तातें जानत मो विषैं अद्भुत रस है कोय। राधा मेरी मोहिनी तिहि बस करै जु सोय॥
मोतें सुख श्री राधिका लहै जु जिहि जातीय। तिहि आस्वादन हेतु मम उत्-कंठित है हीय॥
करों जतन आस्वाद हित तिहिं समर्थ हों नाहिं। सो सुख माधुरि प्राण हित लोभ बढ़ै हिय माहिं॥
रस आस्वादन हेत यह लियो जु मैं अवतार। आस्वादन किय प्रेम रस नीके विविध प्रकार॥
राग मार्ग करि जन करैं भक्ति प्रकारहि जोय। लीला आचरण दार जु तिन्हें सिखायौ सोय॥
तृष्णा मम हैं तीन जो भईं न पूरन आहि। नहीं विजाती भाव करि आस्वादन है ताहि॥
राधा जू की प्रेम वपु विन तिहि अङ्गीकार। तिनि तीनों सुख कौ कभूं नहिं आस्वाद अपार॥
राधाभाव सुवर्ण तिहि करिकैं अङ्गीकार। तीनों सुख आस्वाद हित करि हौं हों अवतार॥
सर्वभाव करि कृष्ण किय निश्चै यहै रसाल। युग अवतार समें तहां आयो ताही काल॥
तिहीं समें अद्वैत जू आराधे प्रभु हीय। तिनही के हूंकार करि कृष्णाकर्षण कीय॥

पिता मात गुरु वर्ग कों आगें करि अवतार। भाव वर्ण श्री राधिका कौ करि अङ्गीकार॥
नवद्वीप शचि गर्भ सों शुद्ध दुग्ध कौ सिन्धु। ताते प्रकटे कृष्ण जू पूर्ण इंदु जगबंधु॥
श्लोक छटे कौ यह कह्यौ नीकैं करि व्याख्यान। श्री स्वरूप गोस्वामि के पाद पद्म करिध्यान॥
इन ही दोऊ पद्य कौ जो हम कीनों अर्थ। रूप गुसांई पद्य है ताहि प्रमान समर्थ॥

तथाहि---अपारं कस्यापि प्रणयिजनवृन्दस्य कुतुकी, रसस्तोमं हित्वेति॥

रूप सनातन पद कमल मधि जाकौ है बास। चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस। प्रभु चरितामृत कौं लिखें व्रजभाषाहि प्रकाश॥

इति श्रीचैतन्यचरितामृते आदिखंडे श्री चैतन्यावतारे मूल प्रयोजनं नाम चतुर्थ परिच्छेदः॥

पञ्चम परिच्छेद

वन्देऽनन्ताद्भूतैश्वर्यं श्री नित्यानंदमीश्वरं । यस्येच्छया तत्स्वरूपमज्ञेनापि निरुप्यते ॥

जै जै श्री चैतन्य जू जै श्री नित्यानंद । जय अद्वैतहिमांशु प्रभु दास वर्ग सुखकंद ॥
श्लोक छयनि इनि करि कह्यौ श्री चैतन्य महत्व । अरु इनि पांचनि करि कहैं नित्यानंद महत्व ॥
सब अवतारी कृष्णजू आप स्वयं भगवान । तिन को दूजौ देह है श्री बलरामहि जान ॥
दोऊ एक स्वरूप हैं भिन्न मात्र है काय । काव्यव्यूह जू आद्य तिहिं है लीला जु सहाय ॥
नवद्वीप चैतन्य जू जोई कृष्ण जु नाम । श्री नित्यानँद संग हैं सोई श्री बलराम ॥

तथाहि—संकर्षणः कारणतोयशायी गर्भोदशायी च पयोब्धिशायी ।
शेषश्च यस्यांशकलाः स नित्यानन्दाख्य रामः शरणं ममास्तु ॥

आदु करें श्री कृष्ण कौं लीला कौ जु सहाय । सृष्ट्यादिक जो कार्य है करें चारि धरि काय ॥
संकर्षण जो मूल हैं सोई श्री बलराम । पंचरूप धरि कृष्ण कौं सेवत हैं सुखधाम ॥
सृष्ट्यादिक सेवाजु तिहि आज्ञा पालन जोय । शेष रूप धरि कृष्ण कौं सेवत विविध जु सोय ॥
सब वपु आस्वादन करें कृष्ण जु शेषानन्द । सोई राम जु गौर सँग है श्री नित्यानंद ॥
सातहि के अर्थहि करों करिकें चारि श्लोक । जातें नित्यानंद को तत्व लहै सब लोक ॥

तथाहि—मायातीते व्यापि बैकुंठलोके पूर्णैश्वर्य्ये श्री चतुर्व्यूह मध्ये ।
रूपं यस्योद्भाति संकर्षणाख्यं तं श्रीनित्यानंदरामं प्रपद्ये ॥

धाम प्रकृति ऊपर जु है परव्योम जिहि नाम । विग्रह ज्यों श्री कृष्ण के बिभुतादिक गुनधाम ॥
सर्वग ब्रह्म अनन्त जिहि बैकुण्ठादिक धाम । कृष्ण कृष्णा-अवतार कौं ताही में विश्राम ॥
ताके ऊपर भाग है कृष्णलोक इक जान । द्वारावति मथुरा पुनि जु गोकुल त्रिविध स्थान ॥
सर्वोपरि गोकुल जु पुनि ब्रजलोकनि कौ धाम । श्वेतदीप गोलोक औ वृन्दावन है धाम ।
सर्वग सो जु अनंत विभु कृष्ण हि तनु सम आहि । ऊपर अध व्यापी सु है कछू नियम नहि ताहि ॥
सब ब्रह्मांड प्रकाश तिहि कृष्ण सु इच्छा पाय । है स्वरूप तिहि एक ही नहै दूसरौ काय ॥
चिन्तामणि मय भूमि है सुरतरु मय वन आहि । चर्म चक्षु देखैं जु सब सम प्रपंच की ताहि ॥
प्रेम नेत्र जे देख ही ताहि स्वरूप प्रकास । गोप और गोपी जु सँग जहां जु कृष्णविलास ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—चिन्तामणिप्रकरसद्मसुकल्पवृक्षलक्षावृतेषु सुरभिरभिपालयन्तं ।
लक्ष्मीसहस्रशतसंभ्रमसेव्यमानं गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥

मथुरा द्वारावति विषैं करि निज रूप प्रकास । चतुर्व्यूह ह्वै करत हैं नाना रूप विलास ॥
वासुदेव संकर्षणसु प्रद्युम्न जु अनिरुद्ध । चतुर्व्यूह अंसी जु सो है तुरिय विशुद्ध ॥
इन ही तीनों लोकि हरि केवल लीला रूप । निज गण लै खेलैं सदा समय अनन्त अनूप ॥

परव्योम मधि कृष्ण जू करि सु स्वरूप प्रकाश । नारायण के रूप ह्वै करैं जु विविध विलास ॥
निज विग्रह जो कृष्ण कौ केवल द्विभुज जु आहि । नारायण पुनि रूप हैं भुजा चारि तनु ताहि ॥
शंख चक्र पंकज गदा हैं ऐश्वर्य स्वरूप । श्री भू लीला शक्ति जिहि सेवा करैं अनूप ॥
यद्यपि क्रीड़ा मात्र हैं केवल तिनकौ धर्म । तऊ जीव पर कृपा करि करै एतनौं कर्म ॥
सालोक्य जु सामीप्य हैं सार्ष्टि और सारूप । चारि मुक्ति दै करत हैं जीव उधार अनूप ॥
ब्रह्मैकत्व जु मुक्ति है ताहि तहां गति नाँहिं । बाहिर श्री बैकुण्ठ ते स्थिति सबकी ता माँहिं ॥
इक बाहिर बैकुण्ठ तें मण्डल ज्योति सरूप । कृष्ण अंग की प्रभा सों उज्वल परम अनूप ॥
सिद्धि लोक तिहि नाम सो है मायातें पार । चित् स्वरूप नहिं तहां है है चित शक्ति विकार ॥
ज्यों रवि मंडल बाहिरें निर्विशेष है जोय । रथ आदिक सविशेष है भीतर सविता सोय ॥
परव्योम में है जु त्यों बहु चिच्छक्ति विलास । निर्विशेष जो जोति है बाहिर विंब प्रकाश ॥
निर्विशेष जो ब्रह्म इक ज्योतिर्मय है जोय । अधिकारी सायुज्य के लहैं तहां लय सोय ॥

तथाहि ब्रह्माण्ड पुराणे—

सिद्धलोकस्तु तमसः पारे यत्र वसन्तिहि । सिद्धाः ब्रह्मसुखे मग्नाः दैत्याश्च हरिणा हताः ॥

परव्योम सोई विषैं नारायण चहुँपास । चतुर्व्यूह जो द्वारका है तिहिंदुतिय प्रकास ॥
वासुदेव संकर्षण सु प्रद्युम्न जु अनिरुद्ध । चतुर्व्यूह यह दुतिय जो है सो तुरिय विशुद्ध ॥
तहां महा संकर्षण जु सो जु रूप बलराम । कारण के कारण जु ते चित्त शक्ति के धाम ॥
है चित शक्ति विलास इक शुद्ध सत्व जिहि नाम । शुद्ध सत्व मय हैं जिते बैकुण्ठादिक धाम ॥
अईश्वर्य्य षड विध तहां चिन्मय सकल सु आहि । संकर्षण सुविभूति सब निश्चै जानों ताहि ॥
नाम तटस्था शक्ति इक जीव नाम है ताहि । जीवन के आश्रय महा संकर्षण जू आहि ॥
जातें जग उतपत्ति है प्रलय जिहीं तें होय । तिहीं पुरुष के आश्रय संकर्षण है सोय ।
सर्वाद्भुत सब आसरय जिहिं ऐश्वर्य्य अनन्त । कहि न सकै जु अनन्त हूं तिहिं महिमा कौ अन्त ॥
तत्व तुरीय प्रसिद्ध जो है संकर्षण नाम । सोऊ जिनि कै अंग है सो नित्यानँदराम ॥
श्लोक आठयेकौ कह्यौ विवरण है संछेप । श्लोक नये कौ अर्थ सुनि तजि मन कौ विच्छेप ॥

तथाहि—मायाभर्ताजाण्डसंघाश्रयाङ्गः, शेते साक्षात्कारणाम्भोधिमध्ये ।
यस्यैकांशः श्रीपुमानादिदेव, स्तं श्रीनित्यानन्दरामं प्रपद्ये ॥

बाहिर श्री बैकुण्ठ के जो ज्योतिर्मय धाम । ताहू के बाहिर जु है कारण अर्णव नाम ॥
वेष्टित इक बैकुण्ठ सों अद्भुत जलनिधि आहि । है जु अनन्त अपार सो नहीं अवधि है ताहि ॥
पृथिव्यादि बैकुण्ठ में चिन्मय सकल जु सोय । पंचभूत मायिकनिकौ तहां जन्म नहिं होय ॥
चिन्मय सब सोई जु है कारण परम सु आहि । जग पावन गंगा जु हैं सो इक कन है ताहि ॥
कारण अर्णव तिही मधि संकर्षण जु सोय । अपनेंई इक अंस करि शयन करें तहँ जोय ॥

पुरुष महत स्रष्टा जु इक जग कारण है सोय। करें आद्य अवतार करि माया दरसन जोय ॥
बाहिर कारण उदधितें रहै जु मायाशक्ति। तिहि समुद्र के परस कों माया की जु अशक्ति ॥
ताही माया की कहैं स्थिति है दोय प्रकार। उपादान है जगत की प्रकृति प्रधान विचार ॥
जग की कारण प्रकृति नहिं जड रूपा निरधार। कृष्ण कृपा करि करत हैं तहां शक्ति संचार ॥
कृष्ण शक्ति करि प्रकृति हैं कारण गौन जु सोय। अग्नि शक्ति करि लौह ज्यों कारण दाहक होय ॥
याही तें श्री कृष्णजू जग कारण हैं मूल। कारण प्रकृति जु अजा के हैं जुगलस्तन तूल ॥
कारण माया अंस करि कहैं निमित्त जु ताहि। सोउ नाहि जातें पुरुष कर्ता हेतु जु आहि ॥
घट कौ हेतु निमित्त हैं जिहि प्रकार घटकार। तैसें कर्त्ता जगत के हैं जु पुरुष अवतार ॥
कर्ता हैं श्री कृष्ण तिहिं माया करै सहाय। ज्यों घट कारन चक्र अरु दण्डादिक जु उपाय ॥
करैं दूर ते पुरुष सो माया कौ अवधान। जीव रूप इक वीर्य कौ करें तहाँ आधान ॥
करैं अंग आभास इक माया मिलन विचार। ताही तें जन्मे तबै गण ब्रह्मांड अपार ॥
अन गिन होय अनन्त यत अंड समूह अनेक। सब में करै प्रवेश बहु रूप पुरुष जो एक ॥
नासातें जब पुरुष की बाहिर निकसै श्वास। तिही श्वास सह होत है वहु ब्रह्मांड प्रकास ॥
फेरि जबै तिहिं श्वास सों तन में करे प्रवेश। तिहि संग तहां होय लय जे ब्रह्मांड अशेष ॥
जालरन्ध्र में होत है ज्यों त्रस-रेणु प्रचार। पुरुष रोम कूप जु विषैं त्यों ब्रह्मांड अपार ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—यस्यैकनिस्वसितकालमथावलम्ब्य, जीवन्ति लोमविलजा जगदण्डनाथाः।
विष्णु र्महान् स इह यस्य कलाविशेषो, गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥

दशमे—काहं तमो महदहं खचराग्निवार्भू, संवेष्टिताण्डघटसप्तवितस्तिकायः।
क्केदृग्विधाविगणिताण्डपराणुचर्य्या वाताध्वरोमविवरस्य च ते महत्वं ॥

होय अंस जो अंस कौ कला सु ताकौ नाम। प्रति-मूरति गोविंद की सो हैं श्री बलराम ॥
तिनिही कौ इक अंश श्री प्रभु संकर्षण जोय। पुरुष अंस तिन कौ जु है कलागणनि में सोय ॥
कला कह्यौ तिनकी जिनहि महा विष्णु हुँ जोय। अवतारी जु महापुरुष सर्वविष्णु हैं सोय ॥
गर्भोदक क्षीरोदके शायि पुरुष विव नाम। ते दोऊ जिहि अंश हैं विश्व विष्णु के धाम ॥

तथाहि—विष्णोस्तु त्रीणि रूपाणि पुरुषाख्यान्यथो विदुः।
एकंतु महतः स्रष्टा द्वितीयं त्वन्डसंस्थितम् ॥
तृतीयं सर्व भूतस्थं तानि ज्ञात्वा विमुच्यते ॥

यद्यपि तिन कौं कृष्ण की कह्यौ कला करि आहि। मत्स्यादिक अवतार जे अवतारी ये ताहि ॥

तथाहि श्री भागवते—एते चांश कलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् ॥

सोई पुरुष जु सृष्टि अरु स्थित लय कर्ता आहि। नाना विधि अवतार करि जग भर्ता कहि ताहि ॥
सृष्टयादिक जु निर्मित्त करि जिहीं अंस अवधान। तिहीं अंस कौ कहै अवतार नाम है जान ॥

है जु आदि अवतार ये महापुरुष भगवान। बीज सर्व अवतार के सर्वाश्रय जु निधान ॥

तथाहि श्रीभागवते—आद्योवतारः पुरुषः परस्येति। जगृहे पौरुषं रूपं भगवान् महदादिभिः इति ॥

सर्वाश्रय तेउ यद्यपि तिनही तें संसार। अंतर आत्मा रूप करि तिनि कौ जगत अधार ॥
तिनकें प्रकृति सँयोग करि है दोऊ संबंध। तऊ प्रकृति सह नाहि नै तिनहि परस कौ गंध ॥

गीतायां—एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः। न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥

इहीं भांति गीता तिन्हें कहै जु बारंबार। सदा अचिन्त्य जु शक्ति मय ईश्वर तत्व विचार ॥
बसै जु हम सब जगत में जगत बसै हम मांहि। नाहिन हम में जग बसै जग में हम न बसाहि ॥
ईश्वरता जु अचिन्त्य है इहै हमारी जान। गीता कौ यह अर्थ है कियो प्रचार प्रमान।
वही पुरुष जिन कौ जु इक अंस धरतु है नाम। गौर संग तेई जु ये श्री नित्यानंदराम ॥
तब ब्रह्मांड अनन्त सृजि सोई पुरुष विशेष। वहु मूरति ह्वै कें कियो सब ब्रह्मांड प्रवेश ॥
श्लोक नये कौ यहै है अर्थ विवरण आहि। श्लोक दसम कौ अर्थ जो सुनौ जु मन दै ताहि ॥

तथाहि—यस्यांशांशः श्रीलगर्भोदशायी यन्नाभ्यब्जंलोकसंघातनालं।
लोक स्रष्टुः सूतिकाधाम धातुस्तं श्रीनित्यानंदरामं प्रपद्ये ॥

देखैं भीतर पैठि जो केवल है अँधियार। रहिवेकौ जु निवास कछु तब किय तहां विचार ॥
निज अङ्ग के प्रस्वेद करि तब जल सृजि भगवान। तिनहीं जलकरिभरयौतिन अन्डअर्द्धपरिमान ॥
जोजन कोटि पचास है सब ब्रह्मांड प्रमान। जिहि आयाम रु दीर्घता दोऊ एक समान ॥
आधौ जल कै पूर्ण करि तिहि किय तहां निवास। औरअर्ध करि कियौ सब चौदह भुवन प्रकाश ॥
प्रगट कियौ तब तहां ही निजवैकुण्ठ सुधाम। शेष शयन जल बीच सब कियौ तिनहि विश्राम ॥
सज्या करि जुअनंतकी शयन कियौतहां आहि। मस्तक हैं जु सहस्र तिहि वदन सहस्र हैं ताहि ॥
चरण सहस्र रु हस्त है नयन सहस्र हैं ताहि। अवतारनि के वीज ये जग कारन है आहि ॥
नाभि कमल तें तासुकी प्रगट भयौ इक पद्म। ब्रह्मा को तिहि कमल तें भयौ जन्म अरु सद्म ॥
तिहीं कमल की नाल तें भुवन भये दस चारि। तातें ब्रह्मा होय के सृष्टि करी जु अपार ॥
विष्णु रूप करि करत हैं जग पालन वे आहि। गुणातीत सो विष्णु हैं गुन कौ परस न ताहि ॥
रुद्र रूप करि करत है जग संहारन सोय। सृष्टि स्थिति औ प्रलय हूँ जिहीं इच्छा सु होय ॥
अंतरयामि विराट कौ जग कारन है सोय। सब विराट की कल्पना जिनके अङ्ग ते होय ॥६०॥
नारायण ऐसैं जु सो तिहिं अंसनि के अंस। सोई नित्यानन्द प्रभु हैं सब के अवतंस ॥
श्लोक दशम के अर्थ कौ किय विवरण इहि भाय। श्लोक ग्यार-है कौ जु अब सुनौ अर्थ मन लाय ॥

तथाहि—यस्यांशांशांशः परत्माखिलानां पोष्टा विष्णुर्भाति दुग्धाब्धिशायी।
क्षौणीभर्त्ता यत्कला सोऽप्यनन्तस्तं श्री नित्यशनन्दरामं प्रपद्ये ॥

नाभि नाल मधि भूमि सब नारायण के आहि । गणियें सात समुद्र ये ते मधि हैंगे ताहि ॥
तिनमें क्षीरोदधि जु मधि श्वेतद्वीप जिहि नाम । पालयता जो विष्णु है तिनकौ सो निजु धाम ॥
तेई हैं सब जीव के अंतर्यामी आहि । पालक तेई जगत के अरु स्वामी हैं ताहि ॥
जुग मन्वन्तर मधि कर ते नाना अवतार । धर्म स्थापन करत हैं अरु अधर्म संघार ॥

दरसन पायौ नाहि जिहि जिते देव गन आहि । क्षीरोदक के तीर में स्तवन कियौ हूँ ताहि ॥
तब अवतारी करतु हैं जग पालन जो सोय । तिहिं वैभव जु अनन्त हैं तिहिं गनना नहिं होय ॥
सोई हैं श्री विष्णुतिहिं अंश अंशकौ अंस । सोई नित्यानन्द प्रभु हैं सब के अवतंस ॥
सोई विष्णु जु सेस वपु धरणी धारैं जोय । कहाँ है जु सिर पर मही यह नहीं जानें सोय ॥

विस्तीरण जु सहस्र हैं फण मण्डल जु ताहि । सूरज सम मणिगण तहाँ करैं जु झलमल आहि ॥
जोजन कोटि पचास है पृथिवी कौ विस्तार । जिनके इक फन में रहै सरस्यों के आकार ॥१०२॥
सोई आप अनन्त जू सेस भक्त अवतार । प्रभु के सेवन बिन नहीं जानै और व्यवहार ॥
करैं जु बदन सहस्र करि कृष्णचन्द्र गुनगान । निरबधि गावैं गुन तेउ नहीं अन्त कौ ज्ञान ॥

सनकादिक श्री भागवत सुनें जु तिहि मुख जाय । कहैं जु गुन भगवान के प्रेमानन्द समाय ॥
छत्र पादुका सेज उपधान बसन हैं जोय । सूत्र निवास अराम औ सिंहासन है सोय ॥
इनि मूरति के भेद करि करैं जु सेवन ताहि । सेस लहैं श्रीकृष्ण कौ सेस नाम यत आहि ॥
सो अनन्त जिनकी कही एक कला है जान । ऐसें नित्यानन्द की क्रीड़ा कौ किहि ज्ञान ॥

जान्यौं इन जु प्रमान करि नित्यानन्द कौ तत्व । कहियै नितहि अनन्त जौ तिनकौ कहा महत्व ॥
भक्तनि कौ सोऊ वचन सत्य मानिये ताहि । सोऊ तिनको संभवै यत अवतारी आहि ॥
अवतारी अवतार में गिनें अभेद जु जान । पहिलें जों श्री कृष्ण ही करें कउ कछु बखान ॥
नर नारायण आप हैं कृष्णहिं कहै जु कोय । कोऊ कहैं जु कृष्ण कों आपुन बामन होय ॥

क्षीरोदकशायी जु के कहैं तिन्हें अवतार । तिहीं असम्भव है न कछु सत्य वचन सब सार ॥
आश्रय सब अंसनि जु के कृष्ण करें अवतार । आय मिलें तब कृष्ण में सब ही अंस अपार ॥
जिही रूप जे जानई त्यों ही कहैं जु ताहि । सकल संभवै कृष्ण में मिथ्या कछु नहिं आहि
यातें प्रभु चैतन्यजू सकल रसिकमणि राय । लीला बस अवतार की करि सब दई दिखाय ॥

इहि विधि नित्यानन्द जू है अनन्त प्रकाश । उँही भाव करि कहूं मैं श्री प्रभुजी के दास ॥
कबहूँ गुरु कबहूं सखा कबहूँ लीलादास । तीनि भाव करि प्रथम ज्यों ब्रज में किय विलास ॥
वृष ह्वै कबहूं कृष्ण संग करै जु युद्ध उपाय । कबहूं करै जु कृष्ण जू संवाहन तिहि पाय ॥
आपुन कौ तिहि भृत्य करि कृष्णहि निज प्रभु जानि । कृष्ण कलाकी कला जो ताकौ निज अभिमान ॥
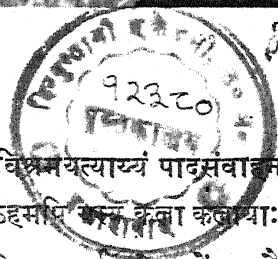
तथाहि दशमे वृषायमाणौ नर्दन्तौ युयुधाते परस्परं इति ॥ स्वयं विश्रमयत्याय्यं पादसंवाहनादिभिः ॥
प्रायोमायास्तु मे भर्तु र्नान्यामेऽपि विमोहिनीति॥ ब्रह्मा भवोऽहमपि यस्य कला कलायाः ॥ इति ॥

एकहि ईश्वर कृष्ण जू और दास सब ताहि । जिहि विधि जाहि नचावई सो त्यों नाचै आहि ॥
और सबै तिहि पारषद कै किंकर हैं कोय । ऐसे ही चैतन्य जू इक ईश्वर है सोय ॥
नित्यानंद अद्वैत जू है गुरु वर्ग सु ताहि । श्रीनिवास औरौ जिते लघु सम आरज आहि ॥
सबै पारषद गण जिते लीला के जु सहाय । सब लै साधैं कार्य निज गौरराय इहि भाय ॥
आचारज अद्वैत जू नित्यानंद विवि अङ्ग । दोऊ जन लै गौर कौ जितनौ है कछु रंग ॥
आचारज अद्वैत जू ईश्वर प्रगट प्रभाव । प्रभु गुरु करि मानें तिन्हें तेऊ किंकर भाव ॥
.आचारज अद्वैत कौ तत्त्व कह्यौ नहिं जाय । तास्यौं भुवन सबै जिन्हें प्रभु अवतार कराय ॥
नित्यानंद स्वरूप भौ पहिलैं लच्मण आहि । लघु भाई हैं राम कौ सेवा कीनौं ताहि ॥
जो चरित्र श्री राम करैं दुख कारन सब सोय । प्रभु स्वतन्त्र लीलानि में लच्मण के दुख होय ॥
यातें सकें न करि मनें लघु भ्राता हैं सोय । रहैं मौन करि लच्मण जु मन में अतिदुख होय ॥
भये कृष्ण अवतार में अग्रज सेवा काज । करवावैं श्री कृष्ण कौं सुख आस्वाद समाज ॥
राम जु लच्मण ये विषें कृष्ण राम कौ अंश । प्रगट समें विवि दुहुनि में कियौ प्रवेश प्रसंस ॥
वही अंस लै ज्येष्ठ पुनि औ कनिष्ठ अभिमान । अंश जु अंशी भाव करि कहै जुशास्त्रवखान ॥
महाप्रभु सो कृष्ण हैं नित्यानँद सो राम । नित्यानंद पूरण करें कृष्ण चन्द्र हिय काम ॥
नित्यानँद महिमा उदधि है जु अनन्त अपार । परस्यौ ताकौ एक कन सो तिहिं कृपा बिचार ॥
और सुनौ तिहि कृपा की इक अद्भुत अधिकाय । जैसे तिन जन अधम कौं ऊंचे दियौ चढ़ाय ॥
कहत निपट अयोग्य हैं देव गुह्य इक बात । तिन की कृपा प्रकास हित कहौं तऊ न समात ॥
लिखै जू आनन्द विवस है तुव प्रसाद निरुपाध । श्री नित्यानँद महाप्रभु चमा करौ अपराध ॥

कवित्त—नित्यानन्द अवधूत जू के एक भृत्य प्रेम धाम मीनकेतन श्रीरामदास नाम हैं ।
आलय हमारे में तौ रैंनदिन कीरतन न्यौंते तहाँ तेऊ आय बैठे मम धाम हैं ॥
सकल समाज आय तिहि पद सीस नाय करें नमस्कार धाय जन अभिराम हैं ।
प्रेम मत्त काहू पर चढ़ैं काहू मारें वंशी काहू कें थपेरे मारें रीती अति धाम हैं ॥

दोहा—

जिही नेत्र देख्यौ चहै जिहि मन आँसू धार । तिही नेत्र सो वहि चलै आंसु अखंड अपार ॥
कवहूँ काहू अङ्ग में पुलक कदम्ब दिखाय । एक अङ्ग तिहि जाड्यौ औ अङ्ग कंप अधिकाय ।
श्री नित्यानँद बोलिकै करें जबैं हुँकार । चमत्कार जिहि देखि कें लोकनि के जु अपार ॥
मिश्र गुणार्णव नाम इक रहै आर्य द्विज सोय । श्री मूरति के ढ़िग करै कृत्ज तिन के होय ॥

आंगन वैठे आय तिनि संभासन किय नांहि । रामदास लखि कहै तिहि क्रोध होय हिय मांहि ॥
पुत्र रोमहर्षण यह सूत दूसरौ आहि । देखि वह बलभद्र कौ उठौ न घट अवगाहि ॥
ऐसें कहि करि कियौ हिय नांचि गाय संतोष । टहल करें प्रभु विप्र यह जातें कियौ न रोस ॥
उत्सव पूर्ण भये चले तिहिं पर करि जु प्रसाद । तिनसों मम भ्राता सम भयौ जु कछू विवाद ॥
गोस्वामी चैतन्य मधि ताकें दृढ़ विश्वास । श्री नित्यानँद जू विषैं कछु विश्वासाभास ।
रामदास के दुःख अति हियें भयौ यह जानि । भ्राता कौ भर्त्सन कियौ तव मैं तजि कैं कानि ॥
दोऊ भाई तत्व इक एक समान प्रकास । नित्यानन्द मानै नहीं ह्वै है तुव सब नास ॥
एक विषै विश्वास करि नहीं अन्य सन्मान । अर्धकुक्कटी न्याय जिमि है तेरो जु प्रमान ॥५०॥
वे दोऊ मानै नहीं होय बड़ौ पाखण्ड । इक मानै नहिं अन्य कौ है यह मत अति भण्ड ॥
रामदास तब क्रुद्ध ह्वै चले जु वंसी तोर । सर्व नास ताको भयौ जो भ्राता है मोर ॥
तिनके सेवक कों कह्यौ है जु अगाध प्रभाव । और एक कह्यौ मोर जो अति ही दया स्वभाव ॥
भाई कौ भर्त्सन कियो यह गुन मम इक लीय । नित्यानँद प्रभु तिहीं निसि दरसन मोकौं दीय॥
नैहाटी के निकट इक झामटपुर है ग्राम । तहाँ स्वप्न में दरस दिय श्री नित्यानँद राम ॥
परयौ जु मैं तव दण्डवत् चरन कमल मधि ताहि । पाद पद्म निज सीस मम दिये कृपा करि आहि ॥
उठि उठि ऐसैं मोद करि कह्यौ जु वारंवार । उठि तिहि देख्यैं रूप भौ चमत्कार विस्तार ॥
चिक्कन स्याम जु कांति जिहि महा प्रकांड शरीर । मनमथ मूरतिवंत जनु महामल्ल है वीर ॥
सुवलित भुज अरु चरण जिहि अरुण कमल दल नैन । पट्ट वस्त्र परिधान जिहि पट्टवस्त्र सिर ऐंन ॥
सुवरन कुण्डल कर्ण जिहि अंगद वलय सु ताहि । नूपुर बाजे चरन जिहि पुहुप माल गर आहि ॥
चंदन लेपित अङ्ग तिहि माथे तिलक सुठौन । अति ही मत्त गजेन्द्र जिमि मद मंथर तिहि गौंन ॥
कोटि चन्द्र सम देखियै उज्वल वदन सुताहि । दन्त दाड़िमी वीज सम चर्वित वीरा आहि ॥
कृष्ण प्रेम करि मत्त अँग डुले दाहिनें वाम । बोल वचन गंभीर सुर कृष्ण कृष्ण कहि नाम ॥
अरुण छरी करि फेरई मत्तसिंह जिमि सोइ । चहूँ ओर घिरि रहे अलि चरन कमल रस भोय ॥
देखे ये गन पारषद सबै गोप के वेष । कृष्ण कृष्ण बोलें सबै भरे प्रेम आवेस ॥
कोइ गावैं कोइ नाचइ बँशी शृङ्ग बजाय । जन कोऊ बीरा लियें कोऊ चौर डुलाय ॥
नित्यानंद स्वरूप कौं देख्यौ वैभव आहि । महारूप लीला जु गुन सबै अलौकिक ताहि ॥
आनन्द विह्वल भयौ तब मोहि कछू नहि ज्ञान । तबहि आप मोसों प्रभु बोले वचन सुजान ॥
कृष्णदास हो आवतु जिनि करि भय हियमांहि । वृन्दावन जावै तहां कछु अलभ्य तुवनाहिं ॥
ऐसे कहि प्रेरयौ जु मन सेंन हाथ की देय । अन्तर्ध्यान कियौ प्रभु निज गण सब संग लेय ॥
होय मूर्छित तब तहां परयौ भूमि मम गात । स्वप्न भंग तिहि छिन भयो देख्योभयौ प्रभात ॥

देख्यो कहा सुन्यौ जु मैं करौं विचार जु हीय। वृन्दावन के चलन कौं प्रभु निदेस मोहि दीय ॥
वृन्दावन कौं तिहीं छिन गमन कियौ सब त्यागि। वृन्दावन आयौ तबै प्रभु करुणा सुख पागि ॥
जय जय नित्यानंद जू श्री नित्यानंद राम। पायौ जिनकी कृपा तें श्री वृन्दावन धाम ॥
जय जय नित्यानंद जू कृपा रूप है जोय। रूप सनातन आसरो लह्यौ कृपा लहि सोय ॥
जिनहीं तें पाये महाशय जू श्री रघुनाथ। श्री स्वरूप आशय लह्यौ जिनही ते जु अनाथ ॥
लह्यौ भक्ति सिद्धान्त मैं कह्यौ सनातन जोय। प्रीति भक्ति रस कौ लह्यौ रूप कृपा करि सोय ॥
जय जय नित्यानन्द जू जय तिहि पद अरविंद। जिनही ते पाये जु प्रभु श्री राधा गोविन्द ॥
माधाईतें अधम मैं और जगाई ते जु। पुनि पुरीष के कीट तें अति लघिष्ठ हौं मैं जु ॥
मेरे नामहि सुनै जो तिही पुण्य क्षय होय। मेरे नामहि लेहि जो होय पाप तिहि सोय ॥८०॥
मोसे निर्धन पै कृपा करै कौन है जोय। इक श्री नित्यानंद बिनु जगत मध्य में कोय ॥८१॥
प्रेममत्त नित्यानँद जू कृपा रूप अवतार। तातें उत्तम अधम को करै न कछु विचार ॥
जोई दृष्टि परै जु पथ करैं जु तिहि निस्तार। दुराचारि मोहू जु सों किय ताको उद्धार ॥
ल्याये मो पापिष्ठ कौं श्री वृन्दावन जोय। चरण कमल श्री रूप के दिये अधम कौ सोय ॥
दरसन मौहन मदन श्री गोविंद नैंन विसाल। कहिवै कौं नहिं योग्य है ये वातें जु रसाल ॥
वृन्दावन के इंद्र श्री मोहन मदन गुपाल। आपु व्रजेन्द्रकुमार हैं रास विलासी लाल ॥
राधा ललितादिक प्रिया लै संग रास विलास। मनमथ हू कौ मन मथै जिनकौ रूप रसाल ॥

तथाहि श्री भागवते—तासामाविरभूच्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः।
पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥

करैं सु निज माधुर्य्य करि मन आकर्षण लोय। राधा ललिता दुहूं ढिंग सेवत हैं रस भोय ॥
नित्यानंद दया जु ते मोहि दीये जु दिखाय। राधा मोहन म:न मम प्रभु करि दिये गहाय ॥
योगपीठ वृंदाविपिन सुरतरु वन जहँ होय। रतन खचित मंडप तहां रत्न सिंहासन सोय ॥
श्री गोविंद बसें तहां आप ब्रजेन्द्रकुमार। करि माधुर्य प्रकास अति मोहैं जगत अपार ॥
वाम भाग श्री राधिका लिये सखी गन संग। रासादिक लीला करैं सो प्रभु नाना रंग ॥
करै जु अज निज लोक में जिनही कौ नित ध्यान। करत उपासन अष्टदस अक्षर मंत्रविधान ॥
भुवन चतुर्दस सब करैं जिनही कौ नित ध्यान। वैकुण्ठादिक मधि करैं जिहि लीला गुनगान ॥
आकर्षण जिहि माधुरी करै जु श्री कौ आहि। रूप गुसाई भली विधि वर्णन कीनौ ताहि ॥

तथाहि—स्मेरां भंगीत्रयपरिचितां साचिविस्तीर्णदृष्टिं, वंशीन्यस्ताधरकिसलयामुज्ज्वलां चन्द्रकेन।
गोविन्दाख्यं हरितनुमितः केशितीर्थोपकण्ठे, मा प्रेक्षिष्ठा स्तव यदि सखे! बन्धुसंगेऽस्तिरंगम् ॥

है साक्षात वृजेन्द्र-सुत यामें कछु नहिं आन। जे अति अज्ञ करैं जु तिहि प्रतिमा कौ सो ज्ञान।

तिनकौं तिहि अपराध करि नहीं होय निस्तार। ऐसें गोविंद के जु गुन करौं कहा विस्तार ॥
ऐसें जौ गोविंद प्रभु पाये जिनतें सोय। तिनके चरननि की कृपा बरणि सकै सो कोय ॥
वृंदावन में बसत हैं वैष्णव मण्डल जोय। नाम परायन कृष्ण के मंगल अति है सोय ॥
जिनि के दोऊ प्राणधन नित्यानँद चैतन्य। राधाकृष्ण सु भक्ति बिनु जाने नहिं कछु अन्य ॥
तिन भक्तन की पादरज अरु पद छाया ताहि। नित्यानंद दया सु करि मोसे अधमहि आहि ॥
तहां भयो सब लाभ मम जो प्रभु आज्ञा दीय। सोइ कह्यौ जु सूत्र यह ताको विवरण कीय ॥
ये सब ही पाये जु मैं श्री वृंदावन आय। अभिप्राय प्रभु कौ यहै सर्व लभ्य यह भाय ॥
आप लिखी अपनी कथा होय निलज अधिकाय। तऊ लिखायौ तिंहि गुणनि करि उन्मत्त बनाय ॥
नित्यानंद प्रभु गुणनि की महिमा है जु अपार। सेस कहै जो सहस मुख तऊ लहै नहिं पार ॥
रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि बास। नित्यानंद प्रभु तत्व कछु कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस। प्रभु चरितामृत कौं लिखैं व्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे श्री नित्यानंदतत्वनिरूपणं नाम पञ्चमपरिच्छेदः ॥१०७॥

षष्टपरिच्छेदः

वंदे श्रीलमदद्वैताचार्यमद्भुतचेष्टितं। यस्य प्रसादादज्ञोऽपि तत्स्वरूपं निरूपयेत् ॥

दोहा—

जय जय श्री चैतन्य जू जै श्री नित्यानंद। जय अद्वैत हिमांशु प्रभु दास वर्ग सुख कंद ॥
श्लोक पाँच करि यह कह्यौ श्री नित्यानँद तत्व। श्लोक दोय करि कहत हैं श्री अद्वैत महत्व ॥

तथाहि—महाविष्णुर्जगत्कर्त्ता मायया यः सृजत्यदः। तस्यावतार एवायमद्वैताचार्य्य ईश्वरः ॥
अद्वैतं हरिणाद्वैतादाचार्य्यं भक्तिशंसनात्। भक्तावतारमीशं तमद्वैताचार्य्यमाश्रये ॥

आचारज अद्वैत जू ईश्वर आपुन आहि। नाहिन गोचर जीव कें अद्भुत महिमा जाहि ॥
महाविष्णु सृष्टी करैं जगदादिक जो कार्य। तिनही कौ अवतार है श्री अद्वैताचार्य ॥
पुरुष जु सृष्टि स्थिति करैं निज माया करि आहि। सृष्टि अगण ब्रह्मांड की करैं जु लीला ताहि ॥
इच्छा करि कें करैं बहु मूर्त्ति प्रकास विशेष। एक एक मूरति करैं सब ब्रह्मांड प्रवेश ॥
अंश जु तिहि अद्वैत हैं नहि तिनसो कछु भेद। है जु शरीर विशेष तिहि नाहिन है विच्छेद ॥
तिनकौं करैं सहाय ये लै करि कें जु प्रधान। करैं कोटि ब्रह्मांड कौं इच्छा के निर्मान ॥

जग मंगल अद्वैत जू मंगल गुन गन धाम । मंगल सदा चरित्र जिहि मंगल जिहि कौ नाम ।।
कोटि अंस औ शक्ति हू कोटि कोटि अवतार । इनकौं ले करि सृजत हैं पुरुष सकल संसार ।।
माया ज्यौं द्वै अंस करि कारण विषै प्रमान । माया हेतु निमित्त है उपादान जु प्रधान ।।११।।
ऐसें ईश्वर पुरुष हैं मूरति करि कैं दोय । विश्व सृजै जो निमित्तरु उपादान हूँ होय ।।
कारण होय निमित्त जग आपुन पुरुष जु सोय । उपादान अद्वैत वपु सो नारायण होय ।।
माया कौ ईक्षण करैं अंश निमित्त हि जोय । उपादान अद्वैत जू सृजै अजांडनि सोय ।।
कर्त्ता श्री अद्वैत जू कोटि अंड के आहि । भरण करैं ब्रह्मांड अरु एक एक वपु ताहि ।।
मुख्य अंग अद्वैत जू तिनि नारायण जानि । अंश शब्द करि अंस कहि श्री भागवत प्रमान ।।

तथाहि—नारायणोंगं नरभूजलायनात्तचापि सत्यन्न तवैव माया ।।

ईश्वर कौ अँग अंस जो चिदानंद मय आहि । माया कौ संवन्ध नहिं श्लोक कहै यह ताहि ।।
काहे अंस कह्यौ नही अंग कह्यौ क्यों ताहि । यातें अंग है अंस तें अन्तरंग अति आहि ।।
महाविष्णु कौ अँस महा आचारज गुन धाम । ईश्वर सों जु अभेद तें भौ अद्वैत जु नाम ।।
पहिलैं सकल जु विश्व कौ जिन्ह सृजन किय आहि । अब अवतरि करि कियो है भक्ति-प्रवर्त्तन ताहि ।।
सकल जीव निस्तार किय कृष्ण भक्ति करि दान । गीता अरु भागवत कौ करैं भक्ति व्याख्यान ।।
नहीं भक्ति उपदेस विनु तिनकें हैं कछु कार्य । याही तें तिनकौ भयौ अवै नाम आचार्य्य ।।
आचारज अद्वैत इक मिलै नाम भौ ताहि । ते गुरु है वैष्णवनि कै जगत आर्य हैं आहि ।।
कमल नयन के हैं जु ते जाते ये अँग अंस । ताही ते कमलाक्ष करि धरै नाम अवतंस ।।

पावैं गणजे पारिषद ईश्वर सों सारूप । पीत वसन अरु चतुर्भुज नारायण जिहि रूप ।।
आचारज अद्वैत जू अंस वर्य है ताहि । तिनके तिहि जो नाम गुन अचिरज कहा जु आहि ।।
जिनके तुलसी और जल अरु जिनके हुंकार । गौरचन्द्र निज गण सहित प्रगट भयो अवतार ।।
जिही द्वार ह्वै प्रभु कियौ कीरंतन जु प्रचार । ताही द्वारा प्रभु कियौ सकल ज़गत निस्तार ।।

आचारज गोस्वामि कें गुन महिमा जु अपार । जीव कीट यह कहां तें पावै तिनकौ पार ।।
आचारज अद्वैत हैं मुख्य अँग चैतन्य । तिनके नित्यानंद प्रभु अंग एक है अन्य ।।
श्री वासादिक भक्तगण प्रभु उपांग इह जानि । अंग नेत्र मुख हस्त औ चक्रायस्त्र समान ।।
इन सब ही कौं संग लै निज वांछित जु प्रचार । इन सब ही कौं संग लै प्रभु चैतन्य विहार ।।

माधवेन्द्र जू कै जु ये सिष्य यहै हिय जान । आचारज जू कौं करैं प्रभु गुरु करि सनमान ।।
लौकिक लीला धर्म करि मरिजादा स्थिति आहि । तिनकी भक्ति स्तुति करैं अरु पद बंदन ताहि ।।
आचारज चैतन्य कौं करि निज प्रभु कौं ज्ञान । हम हैं श्री चैतन्य के दास यहै अभिमान ।।

ताही के अभिमान सुख भूलि अपनपौ जाहि। होहु जीव सब दास हरि यह उपदेस कराँहि ॥
कृष्णदास अभिमान में जो आनँद निधि आहि। कोटि ब्रह्म सम सुख नहीं एक बिंदु की ताहि ॥
दास मैं जु चैतन्य कौ अरु है नित्यानंद। दास भाव सम नाहिनें और कहूं आनन्द ॥
परम प्रेयसी लछिमी हिय निवास है जाहि। वहू दास सुख माँगई करिकें विनती ताहि ॥
दास भाव में मुदित ह्वै गण पार्षद जु अपार। विधि भव नारद और शुक सनकादिक मुनि चार ॥
नित्यानँद अवधूत हैं सब में मुख्य जु सोय। दास भाव चैतन्य कै मत्त भये हैं जोय। ४०॥
श्री निवास हरिदास अरु राम गदाधर जान। शशिशेखर बक्रेसुर जु मुकुँद मुरारि प्रमान ॥
ए सब पंडित लोग हैं जिनिकौं परम महत्व। गौरदास करि सबनि कौं कियौ प्रेम उनमत्त ॥
नाचैं गावैं इही विधि करैं उच्च अतिहास। लोकनि कौं उपदेस दें हो प्रभु के तुम दास ॥
मोकौं श्री चैतन्य जू आप करैं गुरु ज्ञान। तब हू मेरें तिनि विषैं है जु दास अभिमान ॥
कृष्ण प्रेम को एक यह है जु अपूर्व प्रभाव। करवावै गुरु सम लघुनि दास भाव में चाव ॥
यामें सुनौ जु प्रमान सब कह्यौ जु शास्त्र बखान। महदनुभव यातें बड़ौ है जो सुदृढ़ प्रमान ॥
कहा कथा है और की नंद पिता व्रज माहि। तिहि सम गुरुजन कृष्ण के कोऊ औरहि नाहिं ॥
बातसल्य रस शुद्ध जेहि ईश्वर ज्ञान न ताहि। तिनहूं कौं दासहि कृपा प्रेम करावै ताहि ॥
तेऊ रति मति मांगई कृष्ण चरण मधि होइ। श्रीमुख वानी तिनहिकी तहां प्रमान जु सोइ ॥
उद्धव सुनौ सु सत्य मम कृष्ण तनय यह नीति। तेऊ ईश्वर होंहि जो तुम मन यहै प्रतीति ॥
तऊ जु तिनमें मम सदा रहै जु मन की वृत्ति। तुव ईश्वर श्री कृष्ण मधि मम रति होहु प्रवृत्ति॥

तथाहि श्रीभागवते—

"मनसो वृत्तयो नः स्युः कृष्णपादाम्बुजाश्रयाः।" "रति र्नः कृष्ण ईश्वरे ॥"

श्री दामादिक जिते व्रजसखा समूह अनूप। हीन जु ईश्वर ज्ञान तिहि केवल सख्य सरूप ॥
युद्ध करैं श्रीकृष्ण संग काँधे चढ़ै जु ताहि। दास्य भाव करि करैं ते सेवन चरन सु आहि ॥

तत्रैव—पादसंवाहनं चक्रुः केचित्तस्य महात्मनः। अपरे हतपाप्मानो व्यजनैः समवीजयन् ॥

कृष्ण प्रेयसी व्रज जितीं गोपी गण अनुरक्त। जिनिकी पद रज जांचई उद्धव से निज भक्त ॥
जिनि सब तें ऊपर नही कृष्णप्रिया जो आन। तेऊ करें जु आपको तिहि दासी अभिमान ॥

तथाहि तत्रैव—भज सखे ! भवत किंकरीः स्म नो"। "कचिदपि स कथां नः किंकरीणां गृणीते" ॥

कथा रही तिन सबन की श्री जुत राधा जोय। सबही ते सब के जु मत अधिका परम जु सोय ॥
तेऊ तिहि दासी जु ह्वै पद सेवत हैं ताहि। जिनके अद्भुत प्रेम गुन सदा कृष्ण वश आहि ॥

तथाहि—दास्यास्ते कृपणाया मे सखे दर्शय सन्निधिं ॥

महिषी गण जिति द्वारिका रुक्मिण्यादि सुजान। तेउ आपुन कौं करैं कृष्णदास्य अभिमान ॥

तत्रैव—साहं तद्गृहमार्जनीत्यादि ॥ आत्मारामस्य तस्येमा वयं वै गृहदासिका इति ॥

कहा काज है और कौ श्रीबल महा प्रभाव। शुद्ध सख्य वात्सल्य मय जिनकै है निज भाव ॥
तेऊ आपुन कौं करैं दास्य भाव अभिमान। कृष्णदास इह भाव विनु नीकें को जन आन ॥
सहस वदन जे शेष जू है संकर्षण जोय। करैं जु सेवन कृष्ण कौं दस वपु करिकैं सोय ॥६९॥
रुद्र अगणित्रह्मांड-मधि जिहि सिव जू कौ अंस। तेई गुण अवतार हैं सर्वदेव अवतंस ॥
तेऊ करैं जु कृष्ण की सदा दास की आस। कहैं निरन्तर शिव जु हौं कृष्णचन्द्र कौ दास ॥
रहैं जु विह्वल दिग्वसन कृष्ण प्रेम उन्मत्त। तिहि गुन लीला गायकें नाचें सदा प्रमत्त ॥
मात तात गुरु मित्र किन कोऊ भाव जु होय। कृष्ण प्रेम को सहज यह करे दासता सोय ॥
एक कृष्ण जू सेव्य हैं सब के ईश्वर आहि। सेवक अनुचर और ये सब जितने हों ताहि ॥
सोई कृष्ण जु अवतरे ईश्वर श्री चैतन्य। तिनही के किंकर जु हैं याही तें सब अन्य ॥
कोऊ माने नहिं कोउ हैं सब तिनके दास। जो नहि मानें होय तिहि तिंही पाप करि नास ॥
प्रभु जू कौ हों दास हों हौं प्रभु जू कौं दास। ते प्रभु जू के दास हैं हौं जु दास कौं दास ॥
ऐसें कहि नाचन लगे करि हुँकार जु सोय। तब बैठें आचार्य जू छिन इक सुस्थिर होय ॥७०॥
श्री बलराम जु मूल है तिहि बलराम जु दास। अनुगत तिनके अंस गण सोई भाव प्रकास ॥
तिनकौ इक अवतार है श्री संकर्षण जान। सदा सर्वदा भक्त करि करैं जु ते अभिमान ॥
तिनही कौ औतार जो श्रीयुत लक्ष्मण आहि। कियौ दास्य श्रीराम कौ सदा निरन्तर जाहि ॥
कारणाब्धिशायी जु हैं संकर्षण अवतार। अनुगत तिनके हृदय में भक्ति भाव अति सार ॥
तिनकौ भेद प्रकाश हैं श्री अद्वैताचार्य। मन वच क्रम करि भक्ति नित करै तास यह कार्य ॥
हौं अनुचर चैतन्य को यौं करि वचन प्रकासं। मन में मनन करैं सदा हों तिनकौ हों दास ॥
जल तुलसी दै कार्य करि सेवन करै अपार। तारैं सबही भुवन जिन्हि करि कैं भक्ति प्रचार ॥
पृथ्वी को धारण करै जो संकर्षण सेस। काय-व्यूह करि कृष्ण कौ सेवन करैं असेस ॥
एई सब श्रीकृष्ण के हैं जु. प्रगट अवतार। तऊ निरन्तर देखिये सब कें भक्तयाचार ॥
इन सब ही कौं शास्त्र सब कहैं भक्त अवतार। है जु भक्त अवतार पद सर्वोपर रस सार ॥
अंसी एकहि कृष्ण हैं औ सब अंस विचार। लखिये अंसी अंस में ज्येष्ठ कनिष्ठाचार ॥
ज्येष्ठ भाव करि होत हैं अंसी मधि प्रभु ज्ञान। आपु विषें जु कनिष्ठ कें होय भक्ति अभिमान ॥

तथाहि श्रीभागवते—

न तथा मे प्रियतम आत्मयोनि र्न शंकरः। न च संकर्षणो न श्री नैवात्मा च यथा भवान् ॥

दोहा—

नहीं जु सम हरि माधुरी आस्वादन हिय होय। भक्ति भाव करि करत है माधुरि-चर्वन सोय ॥
यहै शास्त्र सिद्धांत है विज्ञनि अनुभव आहि। मूढ़ लोक जानै नहीं भावै वैभव ताहि ॥

दास्यहि अंगीकार कीय वल लच्छण जु विसेश । नित्यानंद अद्वैत जू अरु संकर्षण सेस ॥८६॥
कृष्ण माधुरी रस अमृत तिहि नित करें जु पानं । मत्त रहै सुख में तिहि जानें नहिं कछु आन ॥
रहौ वात पुनि और की आपुन ही श्री कृष्ण । निज माधुरी जु पान हित आपुन ही जु सतृष्ण ॥
निज माधुरी जु स्वाद हित करें जतन बहु आहि । भक्ति भाव विनु नाहिनै आस्वादन है ताहि ॥
भावहि अंगीकार करि भौ अवतीरण जोय । सर्व भाव करि पूर्ण भौ गौर रूप करि सोय ॥
नाना भक्ति जु भाव करि करै माधुरी पान । पहिलें इहि सिद्धांत को करि आये विख्यान ॥
अवतारिन कौ गुण जु तिहि भक्ति भाव अधिकार । भक्ति भावतें और कछु नहि सुख अधिक अपार ॥
यातें जन अवतार हैं श्री संकर्षण आर्य । करिय भक्ति अवतार मधि गणना श्री आचार्य्य ॥
आचारज अद्वैत कौं महिमा है जु अपार । जिनही के हूँकार करि लियौ जु प्रभु अवतार ॥
कीरंतन जु प्रचार करि जग तारन किय जोय । श्री अद्वैत प्रसाद करि लह्यौ प्रेम धन लोय ॥
महिमा है जु अनंत जिहि सकै जु कहि तिहि कोय । सोई मैं जु लिखी जिती सुनी महाजन लोय ॥
श्री आचारज चरण मधि कोटि प्रणत मम आहि । यामें कछु अपराध नहिं भयो हमारें ताहि ॥
महिमा है जु अपार तुव कोटि समुद्र अगाध । कहै इयत्ता जो तिही यहै बड़ौ अपराध ॥
जय जय जय जय जय करौं श्री अद्वैताचार्य । जय जय श्री चैतन्य औ नित्यानंद जू आर्य ॥
विवि पद किय अद्वैत कौ तत्व निरूपण जोय । पंचतत्व विवरण कछू सुनौ भक्तगण सोय ॥
रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि वास । कहै कछुक प्रभु चरित कौं कृष्णदास तिहि दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखैं व्रजभाषाहि प्रकाश ॥
इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे व्रजभाषायां श्री अद्वैततत्वनिरुपणं नाम षष्ठपरिच्छेदः ॥१०२॥

सप्तम परिच्छेदः

अगत्यैक गतिं नत्वा हीनार्थाधिकसाधकं । श्री चैतन्यं लिख्यतेऽस्य प्रेमभक्ति वदान्यता ॥

जय जय प्रभु श्री कृष्ण जू जय जय जय चैतन्य । जे आश्रित तिहि चरण के तेई है अति धन्य ॥
प्रकटे श्री चैतन्य जू पंच तत्व लै संग । पंच तत्व लै संग में करैं कीरतन रंग ॥
पंच तत्व इक वस्तु है यामें कछु नहिं भेद । तऊ जु रस आस्वाद हित होय जु विविध विभेद ॥
तथाहि—पंच तत्वात्मकं कृष्णं भक्तरूपस्वरूपकं । भक्तावतारं भक्ताख्यं नमामि भक्तिशक्तिकम् ॥
गुर्वादिक षट तत्व कौ पहिलैं कियौ प्रणाम । कहि आये गुरु तत्व अब कहैं पंच के नाम ॥
कृष्ण आप भगवान जो, ईश्वर एकहि आहि । नंदात्मजै अदुतीय सो नाम रसिकमनि ताहि ॥

व्रज ललना नागर जु हैं रास विलासी जोय। और जिते सब देखिये तिहि परिकर हैं सोय ॥
सोई कृष्ण जु अवतरे आप कृष्ण-चैतन्य। वेई परिकर गन संग है सब ही अति धन्य ॥
ईश्वर तन जो एक ही ईश महाप्रभु आहि। भक्ति भावमय है जु यह शुद्ध कलेवर ताहि ॥
कृष्ण माधुरी कौ जु है अद्भुत एक स्वभाव। अपनें ही आस्वाद हित कृष्ण करैं जन भाव ॥

भक्त भाव यातें धरें महाप्रभू रसकंद। तिन क भक्त स्वरूप हैं भाई नित्यानन्द ॥
गोस्वामी आचार्य जू अहैं भक्त अवतार। प्रभु करि गाये सवनि मिलि एजु तीनि जन सार ॥
महाप्रभू तौ एक हैं औ प्रभु-जन हैं दोय। प्रभु जू के सेवैं चरण प्रभु दोऊ है जोय ॥
येई तीनि जु तत्व हैं सर्वाराध्य जु मान। चौथो तत्व जु भक्त जे तैं आराधक जान ॥

श्रीनिवास जू आदि हैं कोटि भक्तगण ताहि। शुद्ध भक्त तत्व मधि करि तिनकी गणना आहि ॥
श्री पंडित जू आदि हैं प्रभु के शक्ति अवतार। अन्तरंग तिहि भक्ति करि गणना करी विचार ॥
जिनही सब कौ संग लै करैं प्रेम रस पान। तिनि सब कौ सँग लै करैं प्रेम महाधन दान ॥
पंच तत्व एई जु मिलि आये भूमि विचार। पहिलैं प्रेम भँडार की मुद्रा दई उघार ॥

पांचौ मिलि लूटे करैं प्रेमास्वादन आहि। ज्यौं जु पिये त्यौं त्यौं बढ़ै तृष्णा छिनछिन ताहि ॥
फेरि फेरि पीवै जु तिहि पियें होय अतिमत्त। नाचैं गावैं हँसै अरु रोवैं ज्यों उनमत्त ॥१६॥

कवित्त—

ऐसें मत्त भये जिन्हें स्थान औ अस्थान हू कौ पात्र औ अपात्र हू कौ नाहिन विचार है।
उमगि चली है प्रेम नदी चारौ दिसा और फैलि गई पृथिवी में जाकी बड़ी धार है।
जाहि जहां पावै तही करैं प्रेमदान तहां खाय देय लूटि कियौ ऊजर भँडार है।
अचिरज यहै बड़ौ प्रेम को भंडार ताहि ज्यौं ज्यौं ये लुटावै त्यौं त्यौं बाढ़त अपार है ॥१॥

नारी नर वाल वृद्ध सज्जन औ दुर्जन हूँ पंगु अंध गुणहीन जितौ जीव रास है।
प्रेम के प्रवाह नें बुड़ाये सब जग जीव बूड्यौ जग सबै भयौ जीव वीज नास है।
देखि ताहि पांचन के हिये में हुलास भयो ज्यौं ज्यौं ये बढ़ावैं ताहि त्यौं ही त्यौं प्रकास है।
बढ्यौ इतौ प्रेम जल तीनौं लोक व्यापि गयौ बिना भीजें कोऊ नहीं रह्यौ आगें तास है ॥२॥

मायावादी कर्म निष्ठ औ कुतर्क में प्रविष्ट निन्दक पाखण्डी नीच पण्डित अपार है।
येई सब महादच भाजै तासों भीत ह्वै कैं तिन्हैं छ्वैन सकी नदी नीचगामी धार है।
तिन्हैं देखि महाप्रभु सोचै येजु कीनैं मैंजु जग के बुड़ायवे कौं जतन विचार है।
कोऊ कोऊ ऐंड़ि रहैं भइ है प्रतिज्ञा भङ्ग तिन्हैं डूबिवे कौं करौं रंग उदगार है ॥३॥

दोहा—

ऐसें कहि मन में कछुक किय कौतुकी विचार । किय आश्रम संन्यास कौ प्रभु जु अङ्गीकार ॥
गृहस्थ आश्रम में रहें वर्ष बीस अरु चार । पंच विंश ये वर्ष में किय यति धर्म विचार ॥
करि संन्यास महाप्रभू किय आकर्षण सोय । जितने भाजि बचे हुते तार्किकादि गण सोय ॥
पढुवा पाखण्डी जिते कर्मी निन्दक आहि । अवनत ह्वै ते आय सब चरण कमल मधि ताहि ॥
छमा भयो अपराध तिहि बूढ़े प्रेम सुनीर । महा जाल प्रभु प्रेम के बचे कौंन से धीर ॥
सब ही के निस्तार हित प्रभुहि कृपा अवतार । तातें सब निस्तार हित करैं जु बुद्धयाचार ॥
काजी म्लेछ जिते तिन्हैं भक्त किये निज टेक । सब में काशी के बचे मायावादी एक ॥
वृन्दावन कौं चलत प्रभु रहे जु कासी बीच । लागे निन्दा करन तिहि मायावादी नींच ॥
सन्यासी ह्वै कें करैं नृत्य गान अति बाम । सुनें नहीं वेदान्त नित करें कीरतन नाम ॥
मूरख संन्यासी जु निज धर्म न जानें ताहि । भावुक ह्वै ये भावुकनि संगहि मिल कैं आहि ॥
यह सब सुनि चैतन्य हँसि मन ही मन के माहिं । करी उपेक्षा सबनि सौं किय संभाषन नाहि ॥
करी उपेक्षा गमन किय मथुरा कौं निरधार । देखि मधुपुरी तहां किय पुनि आगमन विचार ॥
शूद्र चंद्रशेषर तहां लेखक रहै प्रमान । तिनही के घर रहैं प्रभु है स्वतन्त्र भगवान ॥
भिक्षा निर्वाहन करैं तपन मिश्र घर आय । मानें नहीं निमन्त्रणहि संन्यासिन संग जाय ॥
प्रभु जू सौं तब तहाईं मिले सनातन आय । तिहि शिक्षा हित प्रभु रहे तब द्वै मास बनाय ॥
तिन्हैं सिखायौ सब जितो जो भक्तनि कौ धर्म । शास्त्र भागवत कौ जितौ गूढ़ अर्थ कौ मर्म ॥
तबै चंद्रशेखर तहां तपन मिश्र हू आय । कियौ निवेदन प्रभु चरन तिन्हैं हिये दुख पाय ॥
सुनैं कहां लौं हम प्रभू निंदन करै जु जोय । अब सामर्थ न सहन कौं जीवन छाड़ैं सोय ॥
सब संन्यासी गण जिते तुमकौ निंदै सोय । ताकौं हम नहिं सुनि सकैं श्रवन विदारन होय ॥
सुनि प्रभु रहे जु मौंन करि करि कै ईसत हास । इक द्विज मिलौ तिंही समै आय जु प्रभु कें पास ॥
आय निवेदन कियौ तिहि चरण सीस धरि सोय । एक वस्तु मागौं प्रभू देहु प्रसन्न जु होय ॥
सब सन्यासिनु को कियौ मैं जु निमन्त्रण जोय । तुम जो आवो तहां मम मनसा पूरण होय ॥
संन्यासिन की सभा तुम नहिं जावौ मम ज्ञान । तऊ निमन्त्रण मानि मम करौ अनुग्रह जान ॥
कियौ महाप्रभु बिहँसिकै निमन्त्रणांगीकार । संन्यासिन पै कृपा करि तिहि भंगी जु अपार ॥
काहू के गृह जाय नहिं प्रभु जानै द्विज जोय । प्रेरण तातें तिनहिकी करैं आग्रह सोय ॥
गये महाप्रभु और दिन ताही भवन विचार । बैठे लखै जु हैं तहां संन्यासी जु अपार ॥
नमस्कार करि सबनि कौं गये धोयवे पाय । प्रक्षालन करि चरन प्रभु तिंहिं ठां बैठे जाय ॥
बैठि तहां प्रभु कियौ कछु निज ऐश्वर्य प्रकास । महातेज मय वपु सु जिहि कोटि सूर्य सम भास ॥

प्रभु प्रभाव ऐंचे सकल संन्यासिन मन आहि। उठि सनमान कियो सबनि निजु आसन तजि ताहि॥
नाम प्रकासानन्द तिहि संन्यासी जु प्रधान। बोल्यौ श्री गोस्वामि सौं कछु करिकैं सनमान॥
आवौ ह्यां आवौ इहां सुनौं अहो श्रीपाद। बैठे अशुचि स्थल जु तुम कहौ कहा अवसाद॥
तिनसौं महाप्रभु जु कहैं संप्रदाय हम हीन। सभा तुम्हारी में जु हम बैठि सकैं नहि दीन॥
आप प्रकासानंद जू कर गहि तिन्है जु लाय। बैठाये अति मान करि सभा मध्य सिर नाय॥
पूछें तिनसौं है जु तुम नाम कृष्णचैतन्य। तुम हौ केशव भारती शिष्य जु तातें धन्य॥
सम्प्रदाय के तुम रहौ संन्यासी यह ग्राम। करौ न दरसन हम सबनि किहि कारण यह ठाम॥
संन्यासी ह्वै कैं करौ नृत्य गान किहिं भाय। भावुक जन सँग लै करौ संकीर्त्तन अति चाय॥
श्रवन कथन वेदांत कौ संन्यासिन कौ धर्म। ताहि छाड़ि क्यों करत हौ भावुक के तुम कर्म॥
नारायण साक्षात तुम लखियै बड़ौ प्रभाव। हीनाचार करौ जु क्यौं कारन कौन सुभाव॥
कहैं जु प्रभु श्रीपाद सुनि ह्यां कारण है जोय। गुरु मोकौं मूरख जु लखि किय सासन जब सोय॥
मूरख तू वेदांत कौ नहि तोकौं अधिकार। कृष्ण मन्त्र जपु तू सदा यहै मन्त्र है सार॥
कृष्ण नाम ही तें सकल संसृत मोचन होय। कृष्ण नाम ही तें लहैं कृष्ण चरण रज भोय॥
नाम बिना कलि काल में नहिं और कोउ धर्म। नाम मन्त्र सब सार है यहै शास्त्र कौ मर्म॥
श्लोक एक ऐसैं जु कहि दीनौ मोहि सिखाय। ताहि कंठ करि करत हौं तिहि विचार मन लाय॥

तथाहि—हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवलं। कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा॥

यहै पाय अज्ञा सदा लेंन लग्यो हौं ताहि। लेत लेत ही नाम मम भ्रांति भयौ मन आहि॥
सकौं न हौं तव धीर धरि भयौ जु अति उनमत्त। हसौं पुकारौं नृत्य करि गावौं ज्यौं मदमत्त॥
तब हौं करिकैं धैर्य्य अति मन में कियौ विचार। कृष्ण नाम ते ज्ञान मम ढकि लीनौ निरधार॥
धीरज नहिं मन में जु हों भयो मत्त निरधार। कियो निवेदन गुरुचरन यौं मन में जु विचार॥
हों गुरुमन्त्र दियौ कहा कोऊ बल है याहि। मोहि मन्त्र ने जपत ही कियो मत्त अति आहि॥
करवावै क्रंदन जु अति मोहि हँसाय नचाय। यह सुनिकैं गुरुवर जु तब बोले मृदु मुसकाय॥
महा मन्त्र हरि नाम कौ कोऊ यह जु सुभाव। जोई जपै तिहि कृष्ण में उपजावै यह भाव॥
कृष्ण विषै जो प्रेम है सो पुरुषारथ सार। जिहिं आगें तृण तुल्य हैं पुरुषारथ हैं चार॥
पञ्चम पुरुषारथ जु है प्रेमानँद रस सिंधु। मोक्षादिक आनन्द जो याकी नहिं एक विंदु॥
कृष्ण नाम फल कृष्ण मधि-प्रेम कहैं श्रुति गाय। वही प्रेम तुव भाग्य करि उदै भयौ हिय आय॥
प्रेमा कौ जु स्वभाव यह करै चित्त तन चोभ। कृष्णचरण की प्राप्ति में उपजावै अति लोभ॥
हँसै पुकारै गान करि हरिजन प्रेम सुभाय। लाज नहीं उनमत्त ह्वै नाचै इत उत धाय॥७५॥

कवित्त—

स्वेद कंप सुरभंग अश्रु औ रोमांच संग ज्यौं विवर्ण अंग अंग होय ये विकार हैं ॥
विषाद उन्माद धैर्य गर्व हर्ष दैन्य प्रेमा भायन नचावै इन भक्त ये अपार हैं ॥
कृष्णानंद सुखसिन्धु तामें तिन्हैं मग्न करैं चारौं पुरुषारथ हूं ताहि लगि छार हैं ॥
भली भई पायौ तुम सार पुरुषारथ जौ यातें मैं कृतार्थ भयौ मुख्य ये विचार हैं ॥७६॥

दोहा—

नाचौ गावौ भक्त संग करौ कीरतन सार। कृष्ण नाम उपदेश करि करौ सबै निस्तार ॥
श्लोक एक ऐसें जु कहि तिन्हौं सिखायो मोहि। यहै सार भागौत कौ कह्यौ जु फिरि फिरि मोहि ॥

तथाहि—एवं व्रतः स्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागो द्रुतचित्तउच्चैः।
हसत्यथो रोदिति रौति गायत्युन्मादवन्नृत्यति लोकवाह्यः ॥

तिनके याही वचन मधि धरिकें दृढ़ विश्वास। कृष्ण नाम संकीर्तन जु करौं निरन्तर तास ॥
कबहूँ नाम गवाव ही मोहि नचावै सोय। गाऊं नाचौं नाहि मैं निज इच्छा करि जोय ॥
कृष्ण नाम आनँद उदधि जों आस्वादन ताहि। ब्रह्मानन्द आगे जु तिहि खारोदक सम आहि ॥

तथाहि हरिभक्तिसुधोदये—तत् साक्षात् करणाल्हादविशुद्धाब्धिस्थितस्य मे।
सुखानि गोष्पदायन्ते ब्राह्मण्यपि जगद्गुरो ॥

प्रभु कौ मधुर सुवाक्य सुनि संन्यासी गण आहि। मधुर वचन लागे कहन चित्त फिरि गये ताहि ॥
जो कछु कह्यौ तुम सबै सत्य वचन है सोय। कृष्ण प्रेम पावै वही भाग्य उदौ जिहि होय ॥
कृष्ण भक्ति जे तुम करौ यह सब कैं संतोष। सुनौ नहीं वेदांत तुम कहौ कहा तिहि दोष ॥
यह सुनि कैं हँसि महाप्रभु बोले बचन जु ताहि। जो नहिं मानौं दुःख तुम करौं निवेदन आहि ॥
यह सुनिकें बोले सकल संन्यासी गन जोय। तुमकौं हम जानै जु इमि नारायण निज सोय ॥
सीतल भये जु श्रवन ये सुनत तुम्हारे बैन। देखि तुम्हारी माधुरी सीतल भये हम नैंन ॥
तुव प्रभाव सब के भये मन आनन्दित जोय। नहीं असंगत है कभू बचन तुम्हारो सोय ॥
कहैं महाप्रभु सूत्र तिहि ईश्वर वचन जु आहि। व्यास रूप ह्वै कें कह्यो श्री नारायण जाहि ॥
भ्रम प्रमाद अरु वंचना करुणापाटव और। ईश्वर के नहिं वचन में इन दोषन कौ ठौर ॥८०॥
उपनिषदनि के सहित ही सूत्र कहे जो तत्व। मुख्यावृत्ति जु कहैं वही अर्थ जु परम महत्व ॥
गौणवृत्ति करि भाष्य जो कह्यौ शंकराचार्य। ताकें सुनें रु पढ़ैं तें नास जाय सब कार्य ॥
ताहू कौ नहिं दोष कछु ईश्वर आज्ञा पाय। गौन अर्थ करि मुख्य जो राख्यौ ताहि दुराय ॥
ब्रह्म शब्द कौ मुख्य जो अर्थ कहैं भगवान। पूरण चित् ऐश्वर्य जिहिं ऊरध नहीं समान ॥
तिनकी देह विभूति जे चिदाकार सब आहि। चिद् विभूति आच्छादिकैं निराकार कहि ताहि ॥

चिदानंद मय देह तिहि स्थान और परिवार। तिनकौ प्राकृत सत्व कौ तेई कहैं विकार ॥
दोष न तिहि तेऊ जु है आज्ञाकारी दास। और कोई जो तिहि सुनें होय सर्व तिहि नास ॥
निंदा नहि अरु विष्णु की यातें ऊपर आहि। प्राकृत करिके मानियें विष्णु कलेवर ताहि ॥
जोई ईश्वर तत्व है ज्वलित ज्वलन सम होय। द्वै स्वरूप इमि जीव कौ विस्फुलिंग कन जोय ॥
जीव तत्व हरिशक्ति है शक्तिमान प्रभु तत्व। गीता विष्णु पुरान ह्यां है जु प्रमान महत्व ॥

तथाहि गीतायां—

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मामिकां। जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्य्यते जगत् ॥

विष्णु पुराणे—

विष्णुशक्तिः परा प्रोक्ता क्षेत्रज्ञाख्या तथापरा। अविद्या कर्म्म संज्ञान्यां तृतीया शक्तिरिष्यते ॥

जीवतत्व ऐसो जु तिहि लिख्यौ जु तिहि परतत्व। आच्छादित किय श्रेष्ठ जो ईश्वर कौ जु महत्व ॥
व्यास सूत्र के मध्य परिणाम बाद करि सोय। व्यास भ्रांत कहि तहां तिहि वाद उठायो जोय ॥
प्रभु परिणाम जु वाद मधि होय विकारी आहि। विवर्त्तवाद थाप्यौ तहां ऐसें कहिके ताहि ॥
परिणामहि जो वाद है वास्तव वहै प्रमान। आत्मबुद्धि जो देह में यहै विवर्त्त स्थान ॥
युत अविचिन्त्य जु शक्ति है श्रीभगवान जु नाम। इच्छा करि जगरूप सौं पावै है परिणाम ॥
तऊ अचिन्त्य जु शक्ति तहँ है अविकारी आहि। प्राकृति चिंतामणि तहाँ धरचौ निदरसन ताहि।
चिंतामणि सौं होत हैं रत्नरासि बहु जोय। चिंतामणि जु स्वरूप करि तऊ जु अविकृत सोय ॥
जो प्राकृतिहि वस्तु सो शक्ति अचिन्त्य जु आहि। प्रभु अचिन्त्य शक्ति जु तहां कौनौ विस्मय नाहि॥
महावाक्य औ वेद को है सो प्रणव निदान। प्रभु स्वरूप ही प्रणव है विश्वधाम सब जान ॥
सर्वाश्रय प्रभु कौ जु सो करै प्रणव उद्देश। है जु तत्वमसि वाक्य जो सो जु वेद इक देश ॥
महावाक्यता प्रणव की आच्छादन करि जोय। महावाक्य करि तत्वमसि स्थापन कीनौ सोय ॥
सर्व वेद औ सूत्र के करै कृष्ण अभिधान। मुख्यावृत्ति हि छाड़ि किय लच्छण करि विख्यान ॥
सहजहि वेद प्रमान है और सिरोमनि ताहि। निज प्रमानता हानि भो किये लच्छणा आहि ॥
इहि सम सब सूत्रनि सहज अर्थ छाड़ि करि जोय। गौण अर्थ व्याख्या सवै करी कल्पना सोय ॥
याही मत प्रति सूत्र सब प्रभु जु दूषण दीय। चमत्कार सुनि कैं भयौ संन्यासिन को हीय ॥
तिनसौं संन्यासी सकल कहे सुनौ श्रीपाद। अर्थ कह्यो जो मुख्य तुम है सो नहीं बिवाद ॥
आचारज कल्पित अरथ सब यह हमकौं ज्ञान। संप्रदाय अनुरोध तिहि तऊ करैं सनमान ॥
मुख्य अर्थ व्याख्या करौ देखैं तुम बल जोय। मुख्य अर्थ करि सूत्र सब दिये लगाय जु सोय ॥
ब्रह्म कहिय वस्तु जु वृहत कौं हैं श्री भगवान। षडैश्वर्य करि पूर्ण पर तत्व धाम तें जान ॥
है स्वरूप ऐश्वर्य तिहि नाही मायागंध। तेई श्री भगवान सब वेदनि कौ संबन्ध ॥१२०॥

निर्विशेष तिनकौं कह्यौ नहि चिच्छक्तिहि मानि। मानौ अर्धस्वरूप नहि पूरणता की हानि ॥
प्राप्त हेत भगवान की जे करियै जु उपाय। श्रवणादिक औ भक्ति जो है प्रभु प्राप्ति सहाय ॥
सब ही वेदनि कौं वही है अभिधेय सुनाम। नवधा साधन भक्ति तें होय प्रेम उद्दाम ॥
कृष्ण चरन मधि जो कभूं होय प्रेम अनुराग। अन्यत्रहि श्रीकृष्ण बिनु रहै नहीं तिहि राग ॥
पंचम पुरुषारथ वही प्रेम महाधन आहि। करै कृष्ण माधुर्यरस आस्वादन जन ताहि ॥
प्रेमाहीते होंय हरि निज भक्तनि वश आहि। प्रेमाहीतें पाइयै सेवा सुख रस ताहि ॥
अभिधेय जु संबंध औ नाम प्रयोजन जान। इनही तीनौं अर्थ मधि सूत्रनि पर्यवसान ॥
सब सूत्रनि कौ इही विधि सुनि नीके व्याख्यान। बोले संन्यासी सकल विनै होय करि मान ॥
तुम मूरति हौ वेदमय नारायण निज सोय। क्षमा करौ अपराध किय पहिलें निंदन जोय ॥
तबहीं ते फिरि मन गयौ संन्यासिन कौ आहि। कृष्ण कृष्ण यह नाम जो सदा उचारैं ताहि ॥
इहीं भाँति सबकौ प्रभू क्षमा कियो अपराध। कृष्ण नाम सबहीनकौं कियौ प्रसाद अगाध ॥
तब सब संन्यासी महाप्रभु संग लै चाय। भिक्षा करि जु सबनि के मध्य तिन्हैं बैठाय ॥
भिक्षा करिकें महाप्रभु आये घर तिहि काल। इमि लीला अद्भुत करें सुन्दर गौर दयाल ॥
तबैं चन्द्रशेखर जु औ मिश्र तपन जू आहि। आनन्दित मन दुहुनि के सुनि अरु देखि सु ताहि ॥
आवैं संन्यासी सकल प्रभु के दरसन चाय। करैं प्रशंसा सब पुरी प्रभु जू की करी भाय ॥
आये पुरि वाराणसी महाप्रभू चैतन्य। पुरी सकल सब लोक भौ ताही तें अति धन्य ॥
लक्ष लक्ष आवै जु जन प्रभु के चरणनि चाय। द्वार प्रवेस न करि सकें होय भीर अधिकाय ॥
विश्वेश्वर के दरस कौं जब श्री प्रभु जू जाँय। लाख लाख जे लोग हैं मिलैं आय तिहि ठांय ॥
स्नान करन कौं जांय जब प्रभु जू गंगातीर। आवैं लोक तबै सकल होय तहां ई भीर ॥
उर्द्ध बाहु बोलें प्रभू हरि हरि हरि कहु लोय। करैं लोक हरि धुनि सबै भरें स्वर्ग भुव जोय ॥
निस्तारयौ सब लोक प्रभु भयौ चलन कों हीय। वृन्दावन कौं प्रभु तबै पठै सनातन दीय ॥
कोलाहल बहु लोक कौ निसि दिन लखि प्रभु चाय। छांड़ि तबै कासी चलैं नीलाचल कौं धाय ॥
यहै सुलीला कहैंगे आगे करि विस्तार। इहां कही संक्षेप करि पाय प्रसंग विचार ॥
पंचतत्व इमि रूप है महाप्रभु चैतन्य। प्रेम नाम श्री कृष्ण कौ दियौ विश्व किय धन्य ॥
मथुरा कौं पठये जु श्री रूप सनातन दोय। दोऊ सेनापतिनु किय भक्ति प्रचारण सोय ॥
नित्यानंद गोस्वामि कौं पठयौ गौंड जु देस। भक्ति प्रचार तिन्हैं कियौ तहां अशेष बिशेष ॥
आपुन दक्षिण देस कौं गमन कियो जु विचार। ग्राम ग्राम में कियौ प्रभु नाम प्रचार अपार।
सेतुबंध पर्य्यंत प्रभु कियो जु भक्ति प्रचार। कृष्ण प्रेम कौं दै तिन्है किय सब कौ निस्तार ॥
पंचतत्व कौ यह कह्यौ नीकें करि विख्यान। हाँय जु याके सुनत ही गौरतत्व कौ ज्ञान ॥

प्रभू जु नित्यानंद औ श्री अद्वैत जु जोय । श्री वासादि गदाधर जु और भक्तगन सोय ॥
चरन कमल तिनि सबनि के करि दण्डौत अपार । जैसें तैसें कछु कहौ श्री चैतन्य विहार ॥
रूप सनातन जीव रघुनाथ चरण जिहि वास । गौर चरित कछु कहत हौं कृष्णदास तिहि दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौ लिखौं बृजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे पंचतत्व लक्षणं नाम सप्तम परिच्छेदः ॥१५४॥

अष्टम परिच्छेदः

वन्दे चैतन्यदेवं तं भगवन्तं यदिच्छया । प्रसभन्नृत्यते चित्रं लेखरंगे जडोऽप्ययम् ॥

जय जय श्री चैतन्य जू गौरचंद रसकंद । जय जय परमानन्दमय जय श्री नित्यानंद ॥
जय अद्वैताचार्य जू जय जय कृपा स्वरूप । जय श्री पण्डित गदाधर आशय महा अनूप ॥
जय जय जय श्री वास जू आदि भक्त गन सार । प्रणत होय वंदौं सबनि चरन कमल सिरधार ॥
इनि सब के सुमिरें करें मूक कवित्त सुधार । पंगु लँघै गिरि अंध हूँ उड़गण लखै अपार ॥

इन सब कौं मानें नहीं पंडित सब जे आहि । विद्या पढ़िवौ भेक कौ कोलाहल है ताहि ॥
इन सबकों मानें नहीं कृष्ण भक्ति करि जोय । कृष्ण कृपा तिनपै नहीं नहिं तिनकी गति होय ॥
पहिलै जैसैं राजगन जरासिन्धु मुख जोय । वेद धर्मतें करें अरु विष्णुहि पूजें सोय ॥
ये नहिं जानें कृष्ण कौं तातें दैत्य समान । मानें नहिं चैतन्य ये दैत्य तिन्हैं त्यौं जान ॥

मोकों मानेंगे न सव लोक होय गौ नास । ताही लिये कृपा जु करि लीनौ प्रभु संन्यास ॥
नमस्कार मम करैंगे संन्यासी जु विचारि । तऊ दोष सब नासि हैं ह्वै है तिहि निस्तार ॥
प्रभू जु ऐसें कृपा मय जे न भजें जन ताहि । सर्वोत्तम हुँ तऊ जु वे असुर गणन है जाहि ॥
याही तें फिरि फिरि कहौ ऊर्द्धवाहु मैं होय । प्रभु नित्यानंदहि भजौ तजि कुतर्क है जोय ॥

जो कबहूँ तार्किक कहें तर्क सोइ जु प्रमान । तर्क शास्त्र करि सिद्ध जो सेव्यधाम मो जान ॥
गौर कृष्ण की दया कौ नीकें करौ विचार । कियें विचार हि लहौगे चमत्कार निरधार ॥
बहुत जन्म लगि करै जौ श्रवण कीर्तन जोय । तउ नहि पावै कृष्ण के चरण प्रेमधन सोय ॥

तथाहि पाद्मे – ज्ञानतः सुलभा मुक्ति र्भुक्तिर्यज्ञादि पुण्यतः । सेयं साधन साहस्रै र्हरिभक्तिः सुदुर्लभा ॥

भुक्ति मुक्ति दै भक्त कौं कृष्ण तौ जु छुटिजाय । प्रेम जु कबहूं देंय नहिं राखैं ताहि दुराय ॥

तथाहि श्री भागवते—राजन्पति गुरु रलं भवतां यदूनां दैवं प्रियः कुलपतिः कच किंकरो वः।
अस्त्वेवमंगभजतां भगवान्मुकुन्दो मुक्ति ददाति कर्हिचित्स्म न भक्तियोगं ॥

कवित्त—

ऐसौ प्रेम श्री चैतन्य नित्यानंद जाहि ताहि जैसें तैसें दियौ कियौ नाहिनै विचार है।
जगाई माधाई लौं सु औरन की कहा बात ईश्वर स्वतंत्र दुरयौ प्रेम कौ भण्डार है।
दीनों है लुटाय जाकौं ताकौं न विवेक कियौ देख्यौ अवहू लौं तिन महिमा अपार है।
लेय जो चैतन्य नाम कृष्ण प्रेम कंप रोम विह्वल सो होय अति वहै अश्रुधार है ॥

दोहा—

श्रीनित्यानंद कहत ही हरि प्रेमोदय होय। सकल अंग अकुलाय दृग वहै सुरधुनी सोय ॥
कृष्ण नाम अपराध कौ मन में करै विचार। अपराधी जे कहैं हरि होय न प्रेम विकार ॥

तथाहि श्री भागवते—तदश्मसारं हृदयं वतेदं यद्गृह्यमाणै हरिनामधेयैः।
न विक्रियेताथ यदाविकारो नेत्रे जलं गात्ररुहेषु हर्षः ॥

एक कृष्ण नाम जु करें सब पापन कौ नाश। कारण हैं जो प्रेम कौ करैं जु भक्ति प्रकाश ॥
उदय प्रेम कौ होय जब करै सु प्रेम विकार। स्वेद कंप पुलकादि अँग गद गद आँसूधार ॥
अनायास संसार क्षय हरिसेवन तें होय। कृष्ण नाम इक फल इतो धन पैयतु है सोय ॥
कृष्ण नाम ऐसौ जु तिहि कोऊ लै बहुबार। तऊ न प्रेमा जो उदय होय न आँसूधार ॥
जानिय तव ताकै जु अपराध प्रचुर है कोय। कृष्ण नाम जो बीज तिहि तहां न अंकुर होय ॥
श्री प्रभु नित्यानंद के ये सब नहीं विचार। नाम जो लेहीं देंहि तिहि प्रेम बहै दृगधार ॥
प्रभु ईश्वर जु स्वतन्त्र है है अत्यन्त उदार। तिनहूँ को जो भजौ नहिं नाहिं कभूं निस्तार ॥
सुनौ लोक सब मूढ़ हौ मंगल श्री चैतन्य। श्री प्रभु महिमा जानियौं याही तें अतिधन्य ॥
हरिलीला भागवत के वक्ता वेदव्यास। गौरचरित के व्यास हैं श्रीवृन्दावनदास ॥
श्री वृन्दावनदास किय प्रभु कौ मंगल जोय। जाके सुनें विनासई सबै अमंगल सोय ॥
श्री प्रभु नित्यानन्द की जानिय महिमा ताहि। कृष्ण भक्ति सिद्धांत की सीमा लहियै ताहि ॥

कवित्त—

भक्ति कौ सिद्धांतसार कह्यौ जितो भागवत इहां सोई लिख्यौ तातें करिकें उद्धार हैं।
श्री चैतन्य मंगल जो म्लेच्छ औ पाखंडी सुनैं सोऊ महा भागवत होय तिही बार हैं।
ऐसें ग्रन्थ रचना की नाहिन मनुष्य शक्ति तिन मुख ह्वै करिकें वक्ता निरधार हैं।
वृन्दावनदास पाद कोटि नमस्कार जिन्हौं ऐसौ करि ग्रन्थ तारयौ सब ही संसार हैं।

दोहा—

नारायणी जु गौर की है उच्छिष्ट निवास। तिनके गर्भहि जन्म लिय श्री वृन्दावनदास ॥

चैतन्य चरित वर्णन सु कह्यौ अद्भुत ताहि । शुद्ध कियौ जिहि श्रवण तें सब त्रिभुवन जो आहि ॥
भजौ जु याही तें सबै प्रभु औ नित्यानन्द । खण्डन ह्वै है दुःख सब लहि हौं प्रेमानन्द ॥
किय चैतन्य जु भागवत श्रीवृन्दावनदास । प्रभु लीला सब तहां तिहि वर्णन करै प्रकास ॥
प्रथमहि लीला सूत्र करि कीनौ ग्रन्थनि आहि । पीछें किय विस्तार करि नीकें विवरण ताहि ॥
गौरचन्द्र लीला उदधि है सु अनन्त अपार । करत करत वर्णन जु तिहि भयौ ग्रन्थ विस्तार ॥
मन में कछु संकोच भौ देहि ताहि विस्तार । कछु कछु लीला सूत्र करि धरी न किय विस्तार ॥
नित्यानँद लीलानि कें वर्णन में आवेश । भयौ जु लीला शेष प्रभु रह्यौ जु तिहि अवसेस ॥
सुनिये सो लीलानि कौ जो है विवरण ताहि । वनवासी वैष्णवन कौ उत्कण्ठित मन आहि ॥
वृन्दावन मधि कल्पतरु हेमसदन है जोय । महा जोगपीठ सु तहां रतन सिंहासन सोय ॥
आप ब्रजेन्द्र कुमार जु तहां विराजै ऐंन । गोविन्द जु श्री नाम जिहि मूरति वंत सुमैंन ॥
होय राजसेवा जु तिहि तहां विचित्र प्रकार । अलंकार सब दिव्य तिहि वसन सौंज सब सार ।
अनुछिन सेवक सहस्र जिहि सेवा करें बनाय । जिन की वदन सहस्र करि सेवा कही न जाय ॥
सेवा के अध्यक्ष हैं श्रीं पण्डित हरिदास । जिनि को जस गुन जगत सब होय रह्यो जु प्रकास ॥
शान्त सहिष्णु सुशील अति औ वदान्य गंभीर । मधुर वचन चेष्टा मधुर दीनबंधु अति धीर ॥
कर्त्ता सब सनमान्निकैं करें जु सब हित आहि । मत्सर हिंसा कुठिलता चित्त न जानें नाहिं ॥
साधारण जे कृष्ण के हैं सद्गुन पंचास । तिनहीं सब सद्गुणनि कौ तिहि शरीर मधि वास ॥

तथाहि श्री भागवते—यस्यास्ति भक्ति र्भगवत्यकिंचना सर्वै र्गुणैस्तत्र समासतेसुराः ।
हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणाः मनोरथेनासति धावतो वहिः ॥

पण्डित श्री गोस्वामि के शिष्य अनन्ताचार्य । कृष्ण प्रेम मय तन सुजिहि अति उदार औआर्य ॥
तिन कें हैं जु अनन्त गुन कैसें करौं प्रकाश । तिन हीं के ए शिष्य हैं पण्डित श्री हरिदास ॥
प्रभु श्री निन्यानन्द मधि जिन कें परम विश्वास । गौरचन्द्र मंगल विषै जिनि कें परम हुलास ॥
गुणग्राही वैष्णवनु के देखें नहिं कछु दोष । काय वाक्य मन करि करें वैष्णव कों संतोष ॥
गौर चन्द्र मंगल सरस सुनें निरन्तर सोय । तिन ही कों जु प्रसाद करि सुनें वैषणव जोय ॥
कथा सबै उज्वल करें जैसैं पूरणचंद । करै जु निज गुण अमृत करि भक्तनि कौ आनन्द ॥
कीनी तिन्हौं कृपा वड़ी आज्ञा मम दिय जोइ । लीला सेस जु गौर की कही लिखन कों सोइ ॥
काशीश्वर गोस्वामि के शिष्य जे गोविन्द सोय । प्रिय सेवक गोविन्द के तिनतें बड़ौ न कोय ॥
संगी जे श्री रूप के श्री यादवाचार्य । गौर चरित मधि ते जु अति रंगी बड़े सु आर्य ॥
पण्डित जू के शिष्य भूगर्भ गुसांई सोय । गौर कथा विनु जिहि वदन और बात नहिं कोय ॥
गोविन्द जू के शिष्य तिहि हैं चैतन्य जु दास । मुकुंदानन्द चक्रवै प्रेमी कृष्ण हि दास ॥
वृन्दावन में औ जिते वसें भक्त गन चाय । लीला शेषहि श्रवन कौ भौ सबै के मन भाय ॥

मोकों आज्ञा करी सब करुणा करिकें जोय । तिन ही सब के कहे तें लिख्यौ निलज अतिहोय ॥
भक्तन आज्ञा पाय कें हिय विचार किय आहिं । गयो मदन गोपाल कें आज्ञा मांगन ताहि ॥
दरसन करिकें कियौ मैं वंदन चरणन तास । करैं पुजारी जु सिवपद तवै गुसाईं दास ॥
आज्ञा मांगी मैं जवै प्रभु चरननि के पास । आनि कंठ माला दई मोहि गुसाईं दास ॥
आज्ञा माला पाइकें भौ आनँद मम हीय । तब ही तिन के ग्रन्थ कौ मैं आरम्भ जु कीय ॥
मोहि लिखायौ ग्रन्थ यह मोहन मदन गुपाल । है मेरौ जो लिखन सो ज्यौं शुक पढ़न रसाल ॥
मोहि लिखायौ तिन्हैं जो लिख्यौ जो सोई सोय । जैसें प्रतिमा दारु की कुहक नचावै जोय ॥
कुल अधिदैवत है जु मम मोहन मदन सु आहि । रूप सनातन और रघुनाथहि सेवक ताहि ॥
श्रीवृन्दावनदास के चरन कमल करि ध्यान । तिहि आज्ञा लै लिख्यौं मैं जातें होय कल्याण ॥
मूर्ख नीच अति क्षुद्र मैं विषै लालसा हीय । भक्तनि आज्ञा बलहि करि इतनौ साहस कीय ॥
रूप और रघुनाथ के चरन कमल बल जोय । जिनिकें सुमिरें सिद्धि सब होय बांछित फल सोय ॥
रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । प्रभु चरितामृत कहै सो कृष्णदास तिहि दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौं लिखैं व्रज भाषाहिप्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे आज्ञानिरूपणं नाम अष्टमपरिच्छेदः ॥७१॥

नवम परिच्छेदः

तं श्रीमत्कृष्णचैतन्यदेवं वन्दे जगद्गुरुं । यस्ययानुकम्पया श्वापि महाब्धिं संतरेत्सुखं ॥

जय जय श्री चैतन्य जू गौरचन्द्र सुखकंद । जय जय अद्वैत जू जय जय नित्यानंद ॥
श्रीनिवास आदि जय जय प्रभु जन गण सुख रास । जिन सुमिरन जु अभीष्ट सब देय करें दुखनाश॥

श्लोक—मालाकारः स्वयं कृष्णः प्रेमामरतरुः स्वयं । दाता भोक्ता तत्फलानां यस्तं चैतन्यमाश्रये ॥

प्रभु जो कह्यौ धरयौ जु हम विश्वम्भर यह नाम । नाम सु सार्थक होय तब भरयौ विश्वसुखधाम ॥
यों विचारि कें लियौ प्रभु मालाकार जु धर्म । नवद्वीप आरम्भ किय फल उद्यान जु कर्म ॥
माली श्री चैतन्य जू लाय भूमि मधि जोय । रोप्यौसुरुतरु भक्ति कौ इच्छा सींचौ सोय ॥
जय जय श्री माधवपुरी कृष्ण प्रेम के पूर । भक्ति कल्पतरु के जु हैं तिहीं प्रथम अंकूर ॥
अंकुर सो अति पुष्ट भो ईश्वर पुरी स्वरूप । स्कंध प्रगट भौ आपु प्रभु माली परम अनूप ॥
स्कंध भये निज शक्ति करि आपुन माली जोय । स्कंध सकल साखा जु कौ मूल आश्रय सोय ॥
परमानन्द पुरी जु औ केशव भारति सोय । श्री ब्रह्मानन्द भारती ब्रंह्मानन्दपुरी सोय ॥

विष्णुपुरी केशवपुरी पुरी जु कृष्णानंद । श्री नृसिंह तीरथ पुरी सुखानन्द सुखकन्द ॥
एई नव मूल जु सुदृढ़ निकसीं तरें जु ताहि । इनहीं आठन मूल तरु निश्चल कियौ जु आहि ॥
धीर सु परमानँदपुरी मध्य मूल हैं ताहि । इनही नव मूलन जु तरु सुस्थिर कियौ जु आहि ॥
स्कंधनि ऊपर बहुत ही शाखा निकसीं जोय । उपरि उपरि साखा जु तिहि अगनित भक्ती सोय ॥
वीस वीस शाखानि किय इक इक मंडल खंड । महा महा शाखानि सव छायौ सब ब्रह्माण्ड ॥
एक एक साखानिते उपशाखा शत आहि । उपजी जिती सुकहाँ लौं गणना करौं सुताहि ॥
साखा ऊपर वृक्ष के स्कंध भयौ है दोय । एक नाम अद्वैत जू अरु नित्यानँद सोय ॥
मुख्य मुख्य साखा जु गण नाम गणन जो आहि। आगें करिहैं सुनौ अब वर्णन वृक्ष सु ताहि ॥
शाखागण उपज्यौ जु तिहि दुहुँ स्कंधते आहि । छाय गयौ सव ही जगत उपसाखा गण ताहि ॥
वड़ शाखा साखा जु उप उपसाखा है आहि । व्यापि गयौ सब जगत सो कहा लिखों कहि ताहि ॥
शिष्यनि जिते प्रसिष्य तिहि औ उपसिष्य समूह । छाय गयौ सब जगत जिहि गणना है जु दुरुह ॥
जैसैं वृक्ष उडुंबर जु सव अँग फलै जु आहि । सबठां इहि विधि भक्ति तरु फल लागत है ताहि ॥
स्कंध मूल शाखा जु कै उपसाखा के वृन्द । लागै तिन जे प्रेम फल अमृत तुल्य रसकंद ॥
पाके जे बहु प्रेम फल मधुर अमृत ते आहि । बांटि दिये माली जु प्रभु मोल न लीनौ ताहि ॥
उत्तम धन अरु रतन मनि जिते त्रिलोकी आहि । एक एक फल मोल करि गणना नाहिन ताहि ॥
मांगै कै मांगै नही कौउ पात्र अपात्र । याकौ नहीं विचार जिहि जानें देवौ मात्र ॥२५॥
भरि भरि अंजुली फलनि कौ फेंकैं दिसानि चारि । लै लै खांय जु रंक त्यौं माली हँसै उदार ॥
वृक्ष अलौकिक यह करै सब इंन्द्रिय कौ कर्म । स्थावर ह्वै कें धरत है यह जंगम कौ धर्म ॥
अंग जिते या वृक्ष के सवै सचेतन सोय । वढ़ि कै व्याप्यौ सवै तव सकल भुवन है जोय ॥
मालाकार जु एक लौ कहां कहां लौं खाव । कितेक फलनि उठाइकै हौं एक लौ लुटाव ॥
अरु एक लें उठाय कें देत परिश्रम होय । कोऊ पावै नहि कोउ रहै यहै भ्रम सोय ॥
याही तें मैं सवनि कौं आज्ञा दीनी आहि । जहां तहां ए प्रेम फल देहु जाहि अरु ताहि॥
माली जौं हौं एकलौ केतिक ये फल खांव । कहां करौं जो देंहु नहि धरिवे कौं नहि ठांव ॥
अपनी इच्छा अमृत करि सींच निरन्तर ताहि । ताही तें अक्षय जु फल ऊपर तरु कें आहि ॥
याही तें सब फलनि कौं देहु जाहि अरु ताहि । अजर अमर यह लोक सब होंय खायकें जाहि ॥
पुण्य ख्याति ह्वै है जु सब जगत भरैगौ सोय । सुखी होय सब लोक मम कीर्ति गाय है जोय ॥
भारत भुवि में भयो जिहि जन्म मनुष्य सुसार । यहै सुफलता ताहि तिहि करै जु पर उपकार ॥

तथाहि श्री भागवते—

एतावज्जन्म साफल्यं देहिनामिह देहिषु । प्राणैरर्थैर्धिया वाचा श्रेय आचरणं सदा ॥

माली मानुष हौं जु मम राज्य भूमि धन जोय। दै फल फूलन करत हों पुण्य उपार्जन सोय॥
माली ह्वै कें वृक्ष भौ यह इच्छा करि सोय। तरु ही तें उपकार जौ सब प्राणिन कौं होय॥

तथाहि श्री भागवते—

अहो एषां वरं जन्म सर्व्वप्राण्युपजीवनम्। सुजन्मस्येव येषां वै विमुखाः यान्ति नार्थिनः॥

यहै आज्ञा करि जबै प्रभु जु मालाकार। पायो आनँद परम तब सकल वृक्ष परिवार॥
जहां तहां तेई करैं दान प्रेम फल सोय.। प्रेम फलनि कौ स्वादु सुख व्याप्यो सब ठां जोय॥
महामादक सु प्रेमफल उदर जु भरि भरि खाय। मतवारे भौ लोक सब नाचैं हसैं जु गाय॥
कोऊ लोटैं जाय गड़ि कोउ करैं हुँकार। भये जु हर्षित देखिकें हँसें जु मालाकार॥४२॥
यहै प्रेम फल खाय कैं एई मालाकार। निरवधि मातो रहत है विह्वल विवस अपार॥
सब लोकनि कों मत्त किय आपुन ही जु समान। प्रेम मत्त सब जन रहै देखत नहि कछु आन॥
जिन्हौं प्रथम निन्दा करी मतवारो कहि जाहि। तेऊ नांचैं खाय फल साधु साधु कहि ताहि॥
भक्ति वृक्ष कौ प्रेम फल वितरण कह्यौ जु ताहि। फलदाता कौ सुनहु अब जे साखा गण आहि॥
रूप और रघुनाथ के चरननि की करि आस। प्रभु चरित्र कछु कहत हैं कृष्णदास तिहि दास॥
रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस। प्रभु चरितामृत कों लिखैं ब्रजभाषाहि प्रकास॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे भक्तिकल्पवृक्षवर्णनो नाम नवमपरिच्छेदः॥४८॥

दशम परिच्छेदः

चैतन्यचरणाम्भोजमधुपेभ्यो नमो नमः। कथञ्चिदाश्रयाद्येषां श्वापि तद्गन्धभाग्भवेत्॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद। जय अद्वैताचार्य जू जय प्रभु भक्तनिवृन्द॥
यह माली यह वृक्ष की कथा अकथ्य है सोय। सुनौ जु अब सब मुख्य करि साखाविवरणजोय॥
प्रभु जू के जे पारिषद गण समूह है जोय। गुरु लघु भाव जु तिनहि मधि है निश्चै नहिं सोय॥
जिन जिन कीनों महत जन गणना तिहि सब आहि। गुरु लघु क्रम जो तिनहिकौ सकै न करिकैं ताहि॥
याही तें तिन सबन कौं नमस्कार करि तोष। नाम मात्र ही लेत हौं लीजै नहिं मम दोष॥

तथाहि—वन्दे श्रीकृष्णचैतन्यप्रेमामरतरोः प्रियान्। शाखारूपान्भक्तगणान्कृष्णप्रेमफलप्रदान्॥

श्री निवास पण्डित सरस अरु पण्डित श्री राम। विवि भाई साखा जु ह्वै जगत विदितगुनधाम॥
श्रीपति श्री निधि तिनहि के है जु सहोदर दोय। गृह परिकर दासादि सब चारण कौ है सोय॥
तिन दोऊ शाखानि की उपशाखा सब जोय। संकीर्तन तिनके जु गृह प्रभु के सदा जु होय॥

चारों भाई वंशयुत करैं जु प्रभु कौ सेव। गौरचन्द्र विनु और नहिं जिनि कैं देवी देव ॥
श्री आचारज रत्न जू इक वड साखा आहि। तिन कौ परिकर शिष्य जे उपसाखा हैं ताहि ॥
श्री आचारज रत्न कौ ससिशेखर है नाम। नाचैं देवी भाव करि प्रभु जू तिन कें धाम ॥
पुण्डरीक विद्या जु निधि तिहि वड साखा जानि। प्रभु जू तिन कौ नाम लै क्रन्दन कियौ प्रमानि ॥
तिन की बड़ि साखा गदाधर पण्डित जू सोय। ते हैं लक्ष्मी रूप निज तिन सम और न कोय ॥
तिन जु शिष्य उपशिष्य सब उपसाखा हैं ताहि। इही भांति शाखानि उप साखा लिखन जु आहि ॥
वक्रेश्वर पण्डित जु हैं प्रभु के बड़ प्रिय भृत्य। एक भाव करि चारि औ वीस पहर जिहि नृत्य ॥
नृत्य समें जिहि महाप्रभु आपुन गावैं आहि। प्रभु जू के पद धरि कहैं यों वक्रेश्वर ताहि ॥
दश सहस्र गंधर्व मम देहु चन्द्रमुख जोय। ते गावैं नाचौं जु हों तब मेरें सुख होय ॥
कहैं जु प्रभु तुम पक्ष मम साखा इक सुख राशि। पाऊं पांख जु और जो तौ उड़ि जाउं अकाश ॥
पण्डित जगदानन्द जू प्रभु के प्रान स्वरूप। तिन कों लोक कहैं जु सब सतिभामा कौ रूप ॥
प्रभु कौ चाहौ कियो जे लालन पालन आहि। प्रभु वैराग्य जु लोक भय कबहुँ न मानें ताहि ॥
परै खटपटी दुहुनि में झगरौ होय सु आहि। तिन की प्रीति कथा जु सब आगे कहि हैं ताहि ॥
राघव पण्डित गौर के अनुचर मुख्य हैं जोय। तिहि उपसाखा एक है मकरध्वज कहि सोय ॥
दमयंती भगिनी सुतिहि प्रभुदासी हैं आहि। करैं सौंज सब भोग की द्वादश मासहि ताहि ॥
सो सब सामग्री जिती भरि पिटारि के माहि। राघव झाली कहैं सब यह प्रसिद्ध है ताहि ॥
तिनि सब सामिग्रीनि कौ करिहैं अग्र बिचार। जिनि कें सुनें जु भक्ति करि वहै अश्रु की धार ॥
प्रभुजू के अत्यन्त प्रिय पँडित गदाधरदास। जिनि कें सुमिरें होत है सब बन्धन कौ नाश ॥
श्री आचार्य पुरन्दर प्रभु के पार्षद सोय। बोलें जिन कों पिता करि गौर महाप्रभु जोय ॥
दामोदर पण्डित जु तिहि शाखा प्रेम प्रचण्ड। प्रभु जूहू कौ जिन्हँ कियो वाक्यरूप करिदंड ॥
दण्ड कथा आगे जु तिहि कहि हैं करि विस्तार। नवद्वीप प्रभु तुष्ट ह्वै पठयो तिन्हैं विचार ॥
साखा तिन के अनुज हैं संकर पण्डित आहि। प्रभु पद के उपधान करि नाम विदितहै ताहि ॥
अरु पण्डित श्री सदाशिव जिहि प्रभुपद की आस। पहिलें नित्यानंद कों जिनके घर में वास ॥
सेवक श्री नरसिंह के वहु प्रद्युम्न जु आहि। नाम नृसिंहानन्द करि प्रभु जू धरयो जाहि ॥
नारायण पण्डित जु प्रभु साखा एक उदार। जिन के प्रभु के चरण विनु और न कछू विचार ॥
अरु पण्डित श्रीमान जू साखा प्रभु निज भृत्य। दीवट धरें जु हाथ जब प्रभु जू करैं सुनृत्य ॥
शुक्लाम्बर वड हैं जु ते भागवान वड आहि। अन्न मांगि अरु काढ़िकैं प्रभु जू खायौ ताहि ॥
जगत विदित शाखा जु तिहि श्रीनंदन आचार्य। जिनके गृह में रहे दुरि विवि प्रभु सब के आर्य ॥
मुकुंददत्त साखा प्रभु अरु स्वाध्यायी ताहि। नृत्य करहि जिहि गान महि गौर महाप्रभु आहि ॥
वासुदेव दत्त जु महा आसय प्रभु के दास। सैहस बदन करि गुणनि कौ कथन होहि नहि तास ॥

जिते जीव सब जगत के लै तिन पापनि जोय। चाहैं भोग्यौं नरक कौं जीव छुटावौं सोय ॥
साखा श्री हरिदास जू अद्भुत चरित जु सोय। तीन लच्छ हरि नाम ते निरपराध लैं सोय ॥
तिन के गुन जु अनन्त दिगदरसन करौंजु ताहि। श्राद्धपात्र आचार्य जू सुगतायौ जिन आहि ॥
हैं जु सदृश प्रहलाद की जिहि गुन के जु तरंग। जवननि ताडन किय तऊ भयौ नहीं अ भंग ॥
पाइ सिद्धि जिन्हों तबै देहि अंक लै ताहि। नृत्य कियौ चैतन्य प्रभु महाकुतूहल आहि ॥
और जु कुलीन ग्राम जन तिहि उपसाखा जोय। सत्यराज है आदि तिहि कृपा पात्र है सोय ॥
तिहि लीला नीकें कही श्री वृन्दावनदास। जो अवसेस रही जु तिहि करि हैं फेरि प्रकास ॥
प्रभु के गुप्त मुरारि हैं गुप्त प्रेम भण्डार। प्रभु कौ हृदै द्रवै सुनें जिनि कौ दैन्य अपार ॥
करैं नहीं जु प्रतिग्रहैं परधन लेय न सोय। करैं कुटुम्ब कौं भरन हूँ आत्मवृत्ति करि जोय ॥
करैं चिकित्सा रोग की सदय हृदय है जाहि। देह रोग भव रोग जिहि नाश होय विवि ताहि ॥
मानसेंन श्री है महाप्रभु के भक्त प्रधान। श्री चैतन्यजु चरन बिनु जानें नहिं कछु आन ॥
साखा सर्वोपरि जु है नाम गदाधरदास। काजी गन के मुखहि हरि नाम कहायौ जास ॥
श्री सिवानन्द सेन प्रभु भृत्य अन्तरंग जोय। चलै जबै जु समीप प्रभु सबै संग लै सोय ॥
सिवानन्द प्रतिवर्ष हीं प्रभुगन लें सब संग। श्रीनीलाचल चलन मग पालन करैं अभंग ॥
इक समान देखें सकल जन साक्षात जु सोय। नकुल ब्रह्मचारी वपुहि प्रभु आवेश जु होय ॥
ब्रह्मचारि प्रद्युम्न कें आगें आविर्भाव। इमि जु अलौकिक कर्म प्रभु है जु अनेक स्वभाव ॥
ये सब रस आस्वाद किय सिवानंद रसकंद। कहियै ये विस्तार करि आगें सब आनन्द ॥
सिवानन्द जू की सु उपसाखा परिकर ताहि। पुत्र भृत्य सब आदि ये प्रभु के अनुचर आहि ॥
इक चैतन्य जु दास है रामदास पुनि जोय। कर्णपूर ये तीन सुत सिवानन्द के सोय ॥
एक जु वल्लभसेन है औ जु सेन श्रीकांत। सिवानंद सम्बन्ध करि प्रभु के भक्त एकांत ॥
गोविन्दानन्द प्रभु प्रिय महाभागवत जोय। गोविंददत्त सु आदि द्वै प्रभु कीर्तनिया सोय ॥
विजयदास जिहि नाम है प्रभु के लेखक जोय। पोथी दई अनेक हू प्रभु कों लिखि लिखि सोय ॥
रत्नबाहु करि महाप्रभु नाम धर्यौ है ताहि। कृष्णदास प्रभु प्रिय बड़े है जु अकिंचन आहि ॥
दोना बेचा जु श्रीधर प्रभु जू के प्रियदास। जिन के संग महाप्रभू करें नित्य परिहास ॥
पण्डित श्री भगवान है प्रभु के अति प्रिय दास। पहिलैं कृष्ण जु देह में भये अधिष्ठित जास ॥
पण्डित श्री जगदीश औ महाशय जो हिरन्य। कृपा करी जिहि बाल्य ही दयारूप प्रभुधन्य ॥
जिन हीं दोनों गेह प्रभु दिन एकादशि आहि। आपुन खायौ मागि कें विष्णु निवेदन जाहि ॥
पुरुषोत्तम संजय जु औ प्रभु पढ़ुवौ है जोय। मुख्य शिष्य व्याकरन के दोय महाशय सोय ॥
वनमाली पण्डित जगत मधि विख्यात है जोय। सुवरन मूसल हल जु तिहि देखै प्रभु कर सोय ॥
प्रिय हैं श्री चैतन्य के बुद्धिमंत श्रीखान। आज्ञाकारी जन्म ते प्रभु सेवक जु प्रधान ॥

लेहि नाम मंगल सदा पण्डित गरुड़ जु आहि। नाम अमृत केवल जु करि विह्वल कियौ न जाहि॥
गोपीनाथ जु सिंह इक प्रभु जू के है दास। प्रभु जू तिन्हैं अक्रूर करि करें सदा परिहास॥

कवित्त—

देवानन्दी भागवती वक्रेश्वर कृपाते जु भागवत भक्ति अर्थ प्रभू जू सों पायो है।
खण्डवासी श्री मुकुन्ददास रघुनंदन जु नरहरीदास महाप्रभू मन भायो है।
सुलोचन चिरंजीव येइ सब महा साखा महाप्रभु कृपाधाम रस सरसायो है।
प्रेम फल फलैं सब करैं जहां तहां दान बड़ेई दयाल जस पात पात छायो है॥

वासी ग्राम कुलीन सत राज औ रामानन्द। पुरुषोत्तम जदुनाथ औ संकर विद्यानन्द॥

कवित्त—

वाणीनाथ वसु आदि जिते हैं कुलीनवासी महाप्रभु भृत्य सबै प्रभु धन प्रान है।
कहैं प्रभु जो कुलीन ग्राम कौ जु कूकर है सोऊ प्रिय मेरौ दूरि रहौ जन आन है।
कुलीन ग्रामी जन कौ नहीं कह्यौ जाय भाग्य सूकर चरावै सोऊ करै प्रभू गान है।
रूप श्री सनातन औ अनुपम येई तीन वृक्ष साख पश्चिम कौं सबतें प्रधान है।

रूप सनातन जगत गुरु रस आचारज जोय। तिनहू तीनों मध्य ये बड़ साखा है दोय॥
श्रीअनुपम जू अनुज तिहि सुत श्रीजीव जु आहि। श्रीराजेन्द्र जु प्रभृति ये उपशाखागन ताहि॥
माली इच्छा करि जु ये दोऊ साखा आहि। बहु बढ़ि कै पश्चिम दिशा छाय लई सब जाहि॥
लैकें सिंधु नदि तीर तें और हिमालय जोय। वृन्दावन मथुरा जु सब जिते देस है सोय॥
बिबि शाखा के प्रेम फल मग्न किये सब लोय। प्रेम फलनि के स्वाद जन भौ उनमत्त जु सोय॥
पश्चिम के सब लोक हैं अनाचार अतिमूढ़। तिन हित भक्ति प्रचार किय सदाचार तिहि गूढ़॥
शास्त्र दृष्टि करि तिन्ह किय लुप्त तीर्थ उद्धार। प्रगट कियौ श्री मूर्ति कौं पूजा कौ जु प्रचार॥
प्रभु जू के प्रिय भृत्य हैं श्री रघुनाथ जु दास। सबहि त्याग कियौ जिन्हौं प्रभू चरन तल वास॥
श्री प्रभु जु सौंप्यौ तिन्हैं श्री स्वरूप के हाथ। प्रभु कौ सेवन गुप्त किय श्री स्वरूप के साथ॥
अन्तरंग सेवन कियौ सोरह वर्ष बनाय। श्री स्वरूप अप्रगट भे तब वृन्दावन आय॥
रूप सनातन दुहुँन के चरन तहां लखि जोय। गोवर्द्धन तें तनु तजौं करि भृगु पतन जु सोय॥
आये यह निर्द्धार करि वृन्दावन अकुलाय। रूप सनातन के किये तहां जु दरसन आय॥
तब दोऊ भाई जु तिनि मरन न दीनो आहि। करिकें भाइ निज तृतीय राखे निकट जु ताहि॥
प्रभु जू की लीला जिती बाहिर अंतर आहि। दोऊ जन तिनके जु मुख सुनें निरन्तर ताहि॥
त्याग कियौ जल अन्न कौ अन्य कथन हूं आहि। पल द्वै तीन मठा जु लै भक्षण करै जु ताहि॥
करैं दण्डवत सहस नित लेहि तीन लछ नाम। द्वै सहस्र वैष्णवन कौं करैं जु नित्य प्रनाम॥

निस दिन राधा कृष्ण कौ मानस सेवन आहि । श्री प्रभु जू कौ चरित जो कहैं जाम इक ताहि ॥
अपतित तीनौ समय मधि करें कुण्ड अस्नान । व्रजवासी जन कौं करें आलिंगन सनमान ॥
साढ़ सप्त पहेर करैं साधन भक्ति जु आहि । चारि दंड निद्रा करैं सोउ काहु दिन नाहि ॥
सुनें होत आश्चर्य अति साधन रीति जु ताहि । सो जु रूप रघुनाथ जू मेरे प्रभु हैं आहि ॥
इन सब कौ जैसैं भयो प्रभु सौं मिलन सु आहि । कहि हैं बहु विस्तार करि आगें कथा सु ताहि ॥

कवित्त—

संकर है न्यायाचार्य एक शाखा वृक्ष की यें काशीनाथ औ मुकुंद उपसाखा जानियैं ।
पण्डित श्रींनाथ जू प्रभु के कृपा भाजन हैं कृष्ण सेवा देखि जिहि जगवस आनियैं ।
आचारज जगन्नाथ प्रभु जू के प्रियदास आज्ञा पाय जिन्हौं गंगातट वास ठानियैं ।
कृष्णदास वैद्य और पण्डित शेखर जू है कविचंद्र षष्टीवर कीर्तनीया मानियें ॥

दोहा—

नाथ मिश्र श्री शुभानँद अरु श्रीराम इसान । श्रीनिधि गोपीकांत जू मिश्र और भगवान ॥
कमल नैन सुबुद्धि जू मिश्र जु हृदयानंद । पण्डित महेस श्रीकर जु मधुसूदन रसकंद ॥

कवित्त—

भक्त पुरुषोत्तम श्री गालिम श्री जगन्नाथदास चंद्रसेखर औ द्विज हरिदास हैं ।
रामदास कविचंद्र और भागवताचार्य ठाकुर सारंगदास भरै प्रेम रास हैं ।
श्री गुपालदास जगन्नाथ तीर्थ विप्र और जानकी जु नाथ प्रभु भक्ति के उजास हैं ।
श्री गोपाल आचारज और विप्र वानीनाथ-नाथ है अनाथनि के साखा ये प्रकास हैं ॥

वासुदेव गोविंद औ माधव भाई तीन । नाचै जिनके गान प्रभु नित्यानँद रसलीन ॥
मुख्य प्रेम की रासि है राम दास अभिराम । काठ जु सोरह सांगि कौ वंसी किय तिहिवाम ॥
चले गौड़ नित्यानँद जु प्रभु आज्ञा करि रंग । आये प्रभु आज्ञा जु करि ए तीनौ तिन संग ॥
रामदास माधव जु औ वासुदेव ये घोष । गोविंद घोष रहै जु प्रभु संग पाय संतोष ॥
चिरञ्जीव रघुनन्दन जु श्री भागवताचार्य । जदुनँदन कमलाकांत रु श्री माधव आचार्य ॥
माधाई जगाई औ कृपा पात्र अति सोय । पावन पतित जु गुन प्रभु ताके साक्षी दोय ॥१००॥
कथन जु किय संक्षेप करि नवद्वीप गन जोय । जन अनन्त चैतन्य के तिन गणना नहि होय ॥
येई सब नीलाचलहि भक्त जु प्रभु के संग । दोऊ ठां सेवा करैं प्रभु की नाना रंग ॥
केवल नीलाचल विषै प्रभु जन गन हैं जोय । तिन सब कौं संक्षेप करि करैं कथन कछु सोय ॥
नीलाचल मधि संग प्रभु जिते भक्तगन आहि । तिन सब में अध्यक्ष ये विवि जन मर्महि जाहि ॥
परमानन्द पुरी जु औ दामोदर जु स्वरूप । प्रभु रहस्य अत्यंत ये विवि जन हैं रसरूप ॥

कवित्त—

गदाधर जगदानंद संकर वक्रेश्वर पण्डित दामोदर ठाकुर हरिदास हैं।
वैद्य रघुनाथ और दास रघुनाथ आदि संगी पूर्व बड़े भक्त गन रस रास हैं।
करैं एहि नीलाचल प्रभु जू कौ सेवन ये और जिते गौड़ वासी भक्त गन तास हैं।
वर्ष प्रति प्रभु जू कौं नीलाचल मिलैं आय करें तहां सेवा प्रभु रहै चारि मास हैं ॥

नीलाचल मधि प्रभुजु कौ प्रथम मिलन भौ जानि। तिनही भक्तनि कौ जु अब गणना करिये आनि॥
सार्वभौम साखा जु बड भट्टाचारज आहि। गोपीनाथाचार्य जू भग्नीपति हैं ताहि ॥
कासीमिश्र प्रद्युम्म जु और भवानँदराय। जिनकें मिलें महाप्रभू पायो सुख अधिकाय ॥
आलिंगन करि महाप्रभु कह्यौ वचन यह ताहि। पाण्डव तुव पांचौ तनय तुमहो पांडव आहि ॥
रायजु रामानंद पट्ट नायक गोपीनाथ। कलानिधिजु सुधानिधि औ नायक वाणीनाथ ॥
एई पाँचौ पुत्र तुव प्रेमपात्र मम सोय। देह मात्र मम भेद है रामानँद सँग जोय ॥
नृप प्रतापरुद्र जू औ रुद्र जु कृष्णानन्द। महापात्र परमानँद जु उड़ सिवानंद चँद ॥
आचारज भगवान औ भारती ब्रह्मानँद। सिखी माहिती माहिती औ मुरारि रसकंद ॥
सिखि माहिती की भगिनी माधवि देवी आहि। राधादासी मध्य है नाम सुगणना जाहि ॥
शिष्य जु ईश्वर पुरी के काशीश्वर वड आहि। श्री गोविन्द जु नाम इक प्रिय अनुचरहै ताहि ॥
सिद्धि प्राप्ति के समै विवि तिहि आज्ञा कौं पाय। नीलाचल के मध्य ते मिलै जु प्रभु संग आय ॥
किय गुरु के संबंध करि दौउन कौ सनमान। सेवा दीनि दोउन कौ तिहि आज्ञा कौं जान ॥
श्री प्रभु जू गोविन्द कौं सेवा दई निज अँग। समें दरस जगँनाथ के काशीश्वर जू संग ॥
अपरस जायौ चहैं प्रभु तहां नरन की भीर। तिन्हैं ठेलि कें पथ करें काशीश्वर वड़वीर ॥
रामाइ नंदाई विवि प्रभु किंकर हैं आहि। सेवा ये गोविन्द संग करें निरन्तर ताहि ॥
वाईस घड़ा जल भरें रामाई नित चाय। सेवा करें नँदाइ बहु गोविंद आज्ञा पाय ॥
द्विज जो शुद्ध कुलीन है कृष्णदास जिहि नाम। जिहि संग लै दछिन गनन कियौजुप्रभुअभिराम ॥

कवित्त—

वलभद्र भट्टाचार्य भक्ति अधिकारी वड़े मथुरा गमन समें प्रभु वाट जोई है।
बड़े हरिदास और छोटे हरिदास महा प्रभु पास रहै सदा कीर्तनिया दोई है।
राम भद्राचार्य और उड़ सिंहेश्वर जू है तपनआचार्य प्रभु पद मति भोई है।
और रघुनीलाम्बर सिंहाभट्ट कामाभट्ट औ दंतुर सिवानंद प्रभु भृत्य जोई है ॥

पूर्व भृत्य जो गौड़ में प्रभु प्रिय कमलानन्द। नीलाचल में रहैं ते प्रभु पद सेवानन्द ॥
श्री अद्वैताचार्य के तनय अच्युतानन्द। नीलाचल में रहैं प्रभु पद आश्रय रसकंद ॥
गंगादास अलोम औ विष्णुदास रसरास। नीलाचल में ये जु सब सँग प्रभु करें निवास ॥

कासी मधि सँग भक्त प्रभु ये तीनों जन जोय । तपन मिश्र जू वैद्य इक शेखर चन्द्र जु सोय ।
मिश्र तपन रघुनाथ हैं भट्टाचारज लेखि । आये प्रभु काशी जवैं वृन्दावन कौ देखि ॥
प्रभू चन्द्रशेखर जु गृह किय द्वै मास जु वास । तपन मिश्र के घर प्रभू भिक्षा किय द्वैमास ॥
बाल्यहितें रघुनाथ जू प्रभु सेवन किय आहि । मांगे तिन की झूंठ अरु पद संवाहन ताहि ॥
बड़े भये नीलाचलहि प्रभु समीप गौ जोय । आठ मास रहि भोजन हि कोऊ दिन है सोय ॥
आये श्री वृन्दाविपिन प्रभु आज्ञा कों पाय । रूप गुसाईं के निकट रहैं तहां ते जाय ॥
रूप गुसाईं तिहि निकट सुनै भागवत नित्त । प्रभु की करुणा तें जु ते कृष्ण प्रेम में मत्त ॥
इहि विधि संख्यातीत हैं प्रभु जु भक्त गन आहि । कछु दिग्मात्र लिखे नहीं सम्यक् गणना ताहि ॥
एक एक साखनि कें कोटि कोटि लगि डार । तिहि जु शिष्य उपडार हैं तिनहि सिष्य उपडार ॥
सब ही नीकें फले अति प्रेम फूल फल सोय । कृष्णप्रेम के फलनि में जगत मगन किय जोय ॥
एक एक साखानि की महिमा शक्ति अनन्त । सहसवदन करि सकै नहिं तिहि सीमा कौ अन्त ॥
कछू कहैं संक्षेप करि प्रभु जू के गन संत । सब गणना तिन की जु तिहि सकै न करि जुअनन्त ॥
रूप सनातन और रघुनाथ चरन जिहि वास । गौर चरितअमृतजु कहैं कृष्णदास तिहि हास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौं लिखैं वृजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्रीचैतन्यचरितामृते आदिखण्डे मूलस्कंधशाखागणनं नाम दशमः परिच्छेदः ॥१३६॥

एकादश परिच्छेदः

तस्य श्रीकृष्णचैतन्यसत्प्रेमामरशाखिनं । ऊर्द्ध स्कन्धावधूतेन्दोः शाखारूपान् गणान्नुमः ॥
नित्यानन्दपदाम्भोजभृंगान्प्रेममधून्मदान् । नत्वाखिलान् तेषु मुख्या लिख्यन्ते कतिचिन्मया ॥

जै जै जै श्री कृष्ण जू महाप्रभु चैतन्य । जय जै श्री अद्वैत जू जय नित्यानँद धन्य ॥
श्री नित्यानँद वृक्ष कौ स्कन्ध पुष्ट अति सार । शाखा उपसाखानि कौ तातें भौ विस्तार ॥
माली इच्छा जलसु करि बड़ि साखागन सोय । भरि सुप्रेम फल फूल करि छायौ त्रिभुवन जोय ॥
अगन अनंत जो गणन कौं गणन करें सो कोय । कहौंजु आप पवित्र हित मुख्य मुख्यजनसोय ॥
वीरभद्र गोस्वामि जू साखा स्कंध समान । तिहि उपसाखा जिति तिहीं लिखनअसंख्यप्रमाण ॥
ईश्वर होय कहाबई महाभागवत जोय । वेद धर्म के विषै नहीं वेद धर्म अति सोय ॥
अंतर ईश्वर की क्रिया बाहिर सों निदम्भ । मण्डप श्री हरि भक्ति कौ ताके मूल स्तम्भ ॥
अबहूँ प्रकट जु देखिये दया प्रताप जु ताहि । श्री प्रभु नित्यानंद कों गावै सब जग आहि ॥
वीर भद्र गोस्वामि जू चरन सरन लै जोय । जिन ही के जु प्रसाद करि इच्छा पूरण होय ॥

रामदास अभिराम अति और गदाधर दास । श्री प्रभु जू के भक्त ये रहैं जु तिनकें पास ॥
आज्ञा गौड़ हि जानकी नित्यानंद कौं कीय । श्री प्रभु येई दोउ जने तव नित साथ हि दीय ॥
याही तें विवि गणनि में गननि दुहुनि कौ आहि । माधव वासु जु घोप कौ यह विवरन हैं ताहि ॥

कवित्त—

रामदास अभिराम नित्यानंद मुख्यसाखा महा प्रेम रासि भरें हिये सख्य भायकें ।
बड़ौ एक काठ जुग सोरह उठावैं जन वंसी ताकी करी धरी हाथ पै उठायकें ।
गदाधर दास गोपी भावानंद पूर्ण नित्यानंद करी दान लीला जिहि गृह जायकें ।
श्री माधव घोष मुख्य कीर्तनियां गण माहि जिहि गान नित्यानंद नृत्य करैं चायकें ॥

वासुदेव जू गान में प्रभु कौ वरणें आहि । द्रवै काष्ठ पाषान हू श्रवण किये तें जाहि ॥
प्रभु के दास मुरारि जू करैं अलौकिक रंग । मारैं व्याघ्र थपेर जे खेलैं सर्पन संग ॥
नित्यानंद के गन जिते ते व्रजसखा असेश । शृङ्गवेत्र शिखि पिच्छ सिर सवै गोप के भेष ॥१५॥
वैद्य उपाध्या हैं जु रघुनाथ महाशय सोय । जिहिं दरसन तें कृष्ण की प्रेम भक्ति हिय होय ॥
है जु सुन्दरानन्द जू सखा भृत्य तिहि मर्म । जिनसौं नित्यानन्द जू करें केलि व्रज नर्म ॥
कमलाकर पिपलाइ जू चरित अलौकिक सोय । प्रेम अलौकिक जिन्हौं कौ भुवन विदित है जोय ॥
सूर्यदास सरखेल तिहि भाई कृष्ण जु दास । नित्यानंद सर्वस्व जिहि दियौ सुदृढ़ विश्वास ॥
पण्डित गौरीदास तिहि प्रेमोद्दण्ड जु भक्ति । धरें सु कृष्ण जु प्रेम के देंन लेंन की शक्ति ॥
पण्डित ख्याति पुरन्दर जु नित्यानँद प्रिय सोइ । प्रेम उदधि मधि फिरें ते मन्दिर गिरिलौं जोइ ॥
नित्यानन्द इक सरन जिहि सो परमेश्वर दास । कृष्ण भक्ति पावै सकल सुमिरन किये जु तास ॥
पण्डित श्री जगदीस जू सब जग पावन सोय । कृष्ण सु प्रेमामृतनि कौ घन लौं बरसै जोय ॥
नित्यानंद भृत्य है पँडित धनंजय सोय । अति विरक्त जग सौं सदा कृष्ण प्रेममय जोय ॥
श्री महेस पण्डित जु हैं व्रज के बड़े गुपाल । नाचैं ढ़क्का वाद्य करि प्रेम सकें न संभाल ॥
पुरुषोत्तम नवद्वीप के पँडित महासय सोय । जिहि नित्यानंद नाम ते अति उनमाद जु होय ॥
स्वादी कृष्ण जु प्रेम रस श्री बलराम जु दास । ह्वै नित्यानन्द नाम ते अति उनमाद जु तास ॥
कविचन्द्र जु यदुनाथ है महा भागवत आहि । श्री नित्यानंद जु करें नृत्य हिये में जाहि ॥
कृष्णदास द्विज मुख्य सुराढ़ जन्म है जोय । श्री नित्यानँद प्रभु जु के किंकर परम जु सोय ॥
काले कृष्ण जु दास हैं भक्त बड़े जु प्रधान । श्री नित्यानंद चंद्र विनु जानें कछू न आन ॥
श्री जु सदासिव है सु कविराज महाशय आहि । श्री पुरुषोत्तम दास जू हैं जु तनय ये ताहि ॥
है निमग्न आजन्म तें नित्यानंद पद रंग । लीला बाल्य निरन्तरहि करैं कृष्ण के संग ॥
श्री कान्हा ठाकुर जु है पुत्र महाशय ताहि । हरि प्रेमामृत पूरि ज्यौं रहै देह मधि जाहि ॥

श्रेष्ठ दत्त उद्धरन है महा भागवत सोइ। नित्यानँद पद सेवई सर्व भाव करि जोइ ॥
श्री आचारज वैष्णवानंद भक्ति अधिकार। पूर्वनाम जिहि श्री जु रघुनाथ पुरी सुखसार ॥३५॥

कवित्त—

विष्णुदास नन्दन औ गंगादास तीन भाई पूर्व जिहि गेह रहै नित्यानन्द राय है।
नित्यानंद भृत्य है उपाध्याय परमानन्द पण्डित है जीव हित गुन गन चाये है।
श्री परमानन्द गुप्त कृष्णभक्ति महामति गेह जिहि नित्यानंद बसे भरे भाय है।
नारायण कृष्णदास मनोहर देवानंद चारौं जन नित्यानंद दास कहै गाय है ॥१॥

नित्यानन्द प्रभु-प्राण है बिहारी कृष्णदास नित्यानंद पद बिन जानें नहीं आन है।
नौंकटी मुकुन्द सूर्य माधव श्रीधर रामानंद वसु जगन्नाथ महीधर जान है।
श्रीमत गोकुलदास हरि हरानन्द और सिवाई नंदाई दोऊ बड़े ई प्रमान है।
परमानंद अवधूत वसन्त नवीन होड़ गोपाल सनातन रस के निधान है ॥२॥

विष्णाई हाजरा कृष्णाचार्य औ सुलोचन जू औ कंसारि सेन रामचंद्र कविराज है।
गोविन्द औ श्रीरंग जू औ मुकुन्द ये जु तीनों कविन के मांझ काव्य रस के समाज है।
पीताम्बर औ माधवाचार्य दास दामोदर संकर मुकुंद ज्ञानदास भक्तराज है।
मनोहर नर्त्तक गोपाल रामभद्र और श्री गौरांगदास औ नृसिंहदास आज है ॥३॥

श्रीमीनकेतन रामदास वृन्दावनदास नन्दन नारायणी के भरे प्रेम रास है।
भागवत कृष्णलीला करी वेदव्यास आप महाप्रभु लीला आप वृन्दावन दास हैं।
सर्व साखा श्रेष्ठ वीरभद्र श्री गुसाईं जू के तिहिं उपसाखा जिती गणना न जास है।
नित्यानंद जू के गन है अनन्त गनै कौन निज सुद्ध हेतु कछु कहै जन तास है ॥४॥

दोहा—

पूरन पाके प्रेमफल ये सब साखा होय। जिहि देख्यो तिहि प्रेम दै दिय बहाय सब लोय ॥
प्रेम अनर्गल सबनकौ क्रिया अनर्गल जाहि। प्रेम कृष्ण जग देंन में धरैं सुबल सब आहि ॥
ये जु कहे संक्षेप करि नित्यानंद गन जोय। पावै नहि जिहि अवधि कौ सहस वदन हू सोय ॥
रूप समातन और रघुनाथ चरन जिहि आस। गौर चरित अमृत कहै कृष्णदास जिहि दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस। गौर चरित अमृत सु कहै ब्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे श्री नित्यानन्दशाखावर्णनं नाम एकादस परिच्छेदः ॥४०॥

———

द्वादशपरिच्छेद:

श्री अद्वैतांघ्रयब्जभृंगान् सारासारभृतो खिलान्। हित्वा सारान्सारभृतो वंदे चैतन्यजीवितान् ॥

जय जय प्रभु श्री कृष्ण जू कृपासिन्धु चैतन्य। जय जय नित्यानंद जू ससि अद्वैत जु धन्य ॥
आचारज गोस्वामि तरु स्कन्ध द्वितीय है सोय। तिनकी है साखाजिती तिनको लिखन न होय ॥

श्री चैतन्यामरतरोः द्वितीयस्कन्धरूपिणः। श्रीमदद्वैतचन्द्रस्य शाखारूपान्गणान्नुमः ॥

माली गौर दया जु जल तिहि सेवन है जोय। सोई जल करि पुष्ट है दिन दिन बाढ़ै सोय ॥
तिहि स्कन्ध में प्रेम फल उपजे जितेक सोय। कृष्णप्रेम के फलनि हित जगत भरि लियौ सोय॥
स्कंध करैं साखानि में जिहि जल करि संचार। फूलै फलै सु बाढ़ई भौ साखा विस्तार ॥
आचारज गन मधि प्रथम हु तौ एक मत जोय। भये दैव कारन जु करि पाछै मन तिहि दोय ॥
आज्ञाकारी आचार्य कौ कोउ कोउ जु स्वतन्त्र। स्वमत कल्पना करत है ते जु दैव परतन्त्र ॥
सोई मत आचार्य के सोई गन है सार। तिहि आज्ञा कौ लंघि चलै सोई गन जु असार ॥
इहां असार जु नाम सों नहीं प्रयोजन आहि। भेद जानिवै को कियौ इकठां गणना ताहि॥
तुसहि सहित जौ नापियै धान्यरासि जिहि भाप। संस्कार जब कीजियै दीजै तुस जु उड़ाय ॥
बड़ साखा आचार्य के तनय अच्युतानंद। सेबै जिन्ह आजन्म लौं श्रीप्रभु पद रस कंद ॥
गुरु है केशव भारती श्री प्रभु जू के आहि। यहै वचन सुनि पिता कौ अतिदुख पायो ताहि ॥
तुम गुरु ह्वै सब जगत के करौ जु इमि उपदेश। याही तुम उपदेश करि नष्ट भयौ सब देश ॥
गुरु ह्वै चौदह भुवन के महाप्रभू चैतन्य। नहीं कहूँ यह शास्त्र में तिन के गुरु हैं अन्य ॥
पांच वर्ष के शिसु कह्यौ सब सिद्धान्त जु सार। सुनि के श्री आचार्य जु लह्यौ संतोष अपार ॥
तनय और आचार्य के कृष्णमिश्र है आहि। गोस्वामी चैतन्य जू हिये वसत है ताहि ॥
और पुत्र आचार्य के श्रीगुपाल है नाम। तिहि चरित्र कछु कहत है अतिअद्भुत सुखधाम ॥
गुँडिचा मन्दिर में महाप्रभु के सनमुख आहि। नृत्यगान गोपाल जू करैं प्रेम सुख ताहि ॥
नाना भाव उठें जु तन अद्भुत नर्तन सोय। प्रभु दोऊ हरि हरि कहैं आनन्दित मन होय ॥
भये नाचते नाचते मूर्छित ते गोपाल। परचौ भूमि में देह तिहि नहीं जीव तिहि काल ॥
दुःखित ह्वै आचार्य जू अंक पुत्र लै ताहि। पढ़िकै मन्त्र नरसिंह कौ रच्छा करै जु आहि ॥
नाना मन्त्र पढ़े नहीं भई चेतना ताहि। दुखित भये आचार्य जू रुदन करै अति आहि ॥
धरयौ जु श्री प्रभु जू तबै हस्तकमल तिहि हीय। उठि गुपाल ऐसे कही हरिहरि धुनि तब कीय ॥
सुनि धुनि औ प्रभु के परस उठे तबै गोपाल। आनन्दित सब ही करै हरि-हरिधुनि तिहि काल ॥
और एक आचार्य के सुत है श्री बलराम। अरु इक साखा जिहि तनय है जगदीशजु नाम ॥

किंकर जो आचार्य के सिरीकांत विस्वास। आचारज व्यौहार सो सव अधीन हैं जास॥
नीलाचल कौ तिनहि इक पत्री लिखी बनाय। नृप प्रतापरुद्र जु निकट दीनी सो जु पठाय॥
पत्री की आचार्य जू कथा न जानैं जोय। आई कोई द्वार ह्वै पत्री प्रभु पैं सोय॥
ताही पत्री में लिखौ लिखन इहै जु सुधार। ईश्वरत्व आचार्य कौ स्थापन कियौ विचार॥
ऐपें कारण दैव करि कछु ऋण भयौ जु ताहि। ऋण सोधनहित चाहिये टका तीन सत आहि॥
प्रभु के पत्री पढ़ि कछू मन में दुख भौ जोय। चंद्रवदन जू यौं कहैं बाहिर हँसिकै सोय॥
स्थापित किय आचार्य कौ ईश्वर करि कैं जोय। या में नाहिन दोष कछु ईश्वर दैव जु सोय॥
ईश्वर कौं करि दैन्य पुनि भीख मँगाई आहि। याही तें प्रभु दण्ड करि सिच्छा करी जु ताहि॥
गोविंद कौं आज्ञा दई यहां आज ते आहि। तू बौरे विश्वास कौं आवन दै जिन ताहि॥
भयौ जु सुनि कै दंड कौं परम दुखित विश्वास। हरषित आचारज भये सुनि प्रभु दण्डहि तास॥
कहैं जु ते विश्वास कौं भाग्यवान तुम जोय। कियौ दंड भगवान प्रभु तुमकौं ताते सोय॥
प्रथम महाप्रभु करत हैं मेरौ अति सनमान। दुख पावैं मन मैं जु मैं कियौ यहै अनुमान॥
कियौ योगवासिष्ठ कौ व्याख्या मुक्ति प्रधान। क्रुद्ध होय के प्रभु तवै किय मेरो अपमान॥
दण्ड पाय के भयौ मम आनंद परम सु आहि। भाग्यवंत श्री मुकुन्द जू पायौ दण्डहि जाहि॥
ऐसें कहि आचार्य जू कियौ जु तिहि आस्वास। आये आनदिंत जु ह्वै श्री प्रभु जू के पास॥
भाग्यवती माता सची दंड लहैं है जोय। सोई दण्ड प्रसाद अरु किनते पावैं लोय॥
वोले प्रभु सों चरित तुव जान्यौं किहूँ न जाय। कृपा पात्र कमला कियौ हम हूं ते अधिकाय॥
यह सुनि कै तव महाप्रभु लागे हँसन जु सोय। लिय विश्वास वुलाय के अति प्रसन्नता होय॥
हम कौं जातें कभूं हीं सो प्रसाद नहि होय। तुम चरननि में कियौ हम कहै चूक है कोय॥
आचारज वोले जु तुम क्यो दिय दरसन याहि। दोऊ विधि मेरो करौ वहैं विडम्वन आहि॥
सुनि कै श्री चैतन्य कौ मन प्रसन्न भौ आहि। अन्तर कथा दुहूंन की दोऊ जानें ताहि॥
कहैंजु प्रभु तिहि कमलकौ इमि क्यौं करैं जु जानि। करैं जु सो आचार्य की लाज धर्म की हानि॥
करिये नहि जु प्रतिग्रह कवहुं राजधन जोय। कृष्ण भजन विनु होय यह निस्फल जीवज सोय॥
मन के दुष्ट भये जु तें कृष्णभजन नहि होय। कृष्ण भजन विनु होय यह निस्फल जीवन सोय॥
लोक लाज इक होय अरु धर्म कीर्ति की हानि। सो यह कर्म न कीजियै कवहूँ ऐसौ जानि॥
यह सिच्छा करि सवन कौ सवै मन किये सोय। आचारज गोस्वामि जू हर्ष मन लह्यौ जोय॥
अभिप्राय आचार्य कौ इक प्रभु समझै ताहि। समुझै प्रभु कौ वाक्य सो आचारज ही आहि॥
है जु यहै प्रस्तावना नीके वहु विस्तार। ग्रंथ वढ़न के भय जु करि लिखवे कौ न विचार॥
यदुनंदन आचार्य जू साखाद्वैत जु आहि। साखा उपसाखानि कौ लिखन कछू कहि ताहि॥
श्री भागवताचार्य-अरु विष्णुदास आचार्य। चक्रपानि आचार्य औ श्री अनंत आचार्य॥

कामदेव अरु नंदिनी अरु चैतन्य जु दास। इक बनमाली दास जू औ दुर्लभ विश्वास ॥
जगन्नाथ कर नाम है अरु इक कर भवनाथ। इक हृदयानँद सेन अरु दास जु भोलानाथ ॥

कवित्त—

याद्वदास विजयदास औजनार्दन है अनतंदास कान्हू पंडित परकास हैं।
नारायणदास और श्री वत्स पण्डित जु है ब्रह्मचारी हरिदास भरे रस रास हैं।
श्री पुरुषोत्तम ब्रह्मचारी औ कृष्णदास पुरुषोत्तम पण्डित रघुनाथ उजास हैं।
वनमाली कविचंद्र और वैद्यनाथ लोकनाथ पण्डित जू प्रभु नित्यानंद दास हैं ॥

श्री मुरारि पण्डित जु इक श्री हरिचरन जु नाम। पण्डित माधव विजय है अरु पण्डित श्री राम ॥
साखा श्री अद्वैत की है जु असंख्य अपार। नाम कहाँ लौं कीजिये कहे कछुक जु विचार ॥
दिय अद्वैत स्कंध कौ माली जल जु विचार। तिहि जल कौ लैकैं करै सो साखा संचार ॥
ताही जल सौं जीवई साखा जितीक सोय। लहलहाय फूलैं फलै जीवन दै सब कोय ॥
जिनहि जिवायौ जन्म दिय ताहि न मानें जोय। भये कृतघ्नो तिनहि पर स्कंध क्रुद्ध भौ सोय ॥
स्कन्ध क्रुद्ध ह्वै तिनहि में करै न जल संचार। जल विनु साखा कृस जु ह्वै सूख मरै निरधार ॥
देह रहित चैतन्य करि भये सुस्क सम सोय। जीवत ही सो मृत कहै मरे दंड जम जोय ॥
केवल याही गन जु प्रति नाही है ए दंड। गौर विमुख जोई जु है सोई है पाखण्ड ॥
कहा पण्डित कहा तपस्वी कहा गृही संन्यास। गौर विमुख जोई जु है है जु यहै गति तास ॥
श्री अच्युतानंद कौ मत जिनि लीनौ सोय। सोई गन आचार्य कौ महा भागवत जोय ॥
वहै वहै आचार्य कौ कृपापात्र अति धन्य। अनायास पाये जु ते चरन कमल चैतन्य ॥
कोटि प्रणति मेरे जु है गन आचार्यहि ताहि। प्राय अच्युतानन्द की जीवन प्रभु श्री आहि ॥
आचारज गोस्वामि कौ यहै कहचौ गन आहि। स्कन्ध तीन साखानि कौ कियौ गणन कछु ताहि॥
साखा उपसाखानि कौ नहीं गणन है जाहि। किञ्चिन्मात्र कहचौ यहै करि दिग दरसन आहि ॥
पण्डित है श्री गदाधर तिहि बड़ साखा आहि। तिन उपसाखा गन कछू करियै कथन जु ताहि ॥

कवित्त—

श्रेष्ठ साखा ध्रुवानन्द ब्रह्मचारी श्रीधर जू भागवताचार्य ब्रह्मचारी हरिदास है।
अनन्त आचार्य कविदत्त मिश्र पुत्र गंगा मंत्री मामू ठाकुर औ भक्ति के प्रकास है।
कण्ठाभरण भूगर्भ गुसाई औ भागवत दास ये ही दोय कियो वृन्दावन वास है।
वाणीनाथ ब्रह्मचारी बड़े महा आशय है वल्लभ चैतन्यदास कृष्ण प्रेम रास है ॥

श्रीनाथ चक्रवर्ती उद्धवदास जिता मिश्र काठ काटा जगन्नाथ महारस रास है।
श्री हरि आचार्य सादि पुरिया गोपाल कृष्णदास ब्रह्मचारि जिहि जगमैं प्रकास है।

पुष्प गोपाल श्री हर्ष रघुमिश्र पण्डित श्री लच्मीनाथ रंग वाड़ी श्री चैतन्यदास है।
रघुनाथ अमोघ पण्डित चैतन्य वल्लभ यदु गांगुली और मंगल जन जास है ॥२॥

यहै कह्यौ संत्तेप करि श्री पण्डित गन आहि। ऐसे अरु साखानि उपसाखा गन जू ताहि ॥
पण्डित जू कौ गन जु सब परम भागवत धन्य। प्राणनि ते प्यारे जु हैं सब के श्री चैतन्य ॥
स्कन्ध तीनि इनकौ कह्यौ कछु शाखागन जोय। जिन सबको सुमिरन किये बंधन मोचन होय ॥
याही ते तिन सबनि के पद वंदन करि जोय। प्रभु माली को कह्यौ यह चरित अनुक्रम सोय ॥
जिन सबकौ सुमिरन किये पैयै प्रभु पद जोय। जिनि सबकौ सुमिरन किये वांछित पूरन होय ॥
श्री प्रभु लीला अमृतकौ सिंधु अपार अगाध। सकै कौन करिकैजु तिहिं अवगाहन की साध ॥
तिहि माधुर्यकी गंधकौ लुब्ध भयौ मन आहि। याही ते तिहि तटहि रहि चाख्यौ इक कन लाहि॥
रूप और रघुनाथ के चरन कमल जिहि वास। गौर चरित अभृत कछू कहत कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस। गौर चरित को कहत है ब्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे श्री अद्वैतशाखावर्णनं नाम द्वादसपरिच्छेदः ॥

त्रयोदश परिच्छेद :

स प्रसीदतु चैतन्यो देवो यस्य प्रसादतः। तल्लीलावर्णने योग्यः सद्यः स्यादधमोऽप्ययम् ॥

जय जय श्री चैतन्य जू गौर कृष्ण जय चन्द। जय अद्वैताचार्य शशि जय श्री नित्यानंद ॥
जय पण्डित श्रीगदाधर जय जय श्रीजुनिवास। जय जय श्रीजुमुकुन्द जय वासुदेव हरिदास ॥
जय स्वरूप दामोदर जु गुप्त मुरारि जु सोय। इनही सब चंद्रनि उदय लुप्त कियौ तम जोय ॥
जय जय श्रीप्रभुचंद्रके भक्त चन्द्रगण आहि। उज्वल किय त्रिभुवनि सबनि प्रेम चांदिनी ताहि ॥
यहै जु ग्रंथारंभ में कियौ प्रथम मुखबंध। अब जु करैं चैतन्य कौ लीला क्रम अनुबंध ॥
प्रथम ही सूत्र जु रूप करि करियै गणना आहि। फिर पाछे विस्तार करि विवरण करि है ताहि ॥
आप कृष्णचैतन्य जू करि पृथिवी अवतार। वरस आठ चालीस औ कियो जु प्रगट विहार ॥
चौदह सत अरु सात के शाके जन्म प्रमान। चौदह सत पंचावनै भौ प्रभु अन्तर्ध्यान।
किय चौवीस जु वरस श्री प्रभु जू गृह में वास। तिन्हौं निरन्तर किय तहां कीरंतन जु प्रकास॥
चौविस वरस जु सेस में प्रभु कीन्हो संन्यास। किय चौबिस बरस जिन्हों नीलाचल में बास ॥
तिन में किय षट वरस लौ गमनागमन जु सोय। कभूं गौड़ दच्छिण कभूं श्री वृन्दावन जोय ॥
बरस अठारह में रहे नीलाचल में आय। कृष्ण प्रेम नामामृतहि दिये जु सकल बहाय ॥

गार्हस्थ लीला जु प्रभू आद्य नाम है ताहि। मध्य अंत लीला जु द्वै नाम सेस के आहि ॥
जितीक लीला आद्य में प्रभु जू चरित सु आहि। गुप्त मुरारी जू कियो ग्रंथि सूत्र करि ताहि ॥
मध्य सेस लीला जु प्रभु दामोदर जु स्वरूप। कियौ ग्रंथ में ग्रँथन तिहि करि कै सूत्र अनूप ॥
तिनहीं दोनों जननि के सूत्र देखि सुनि आहि। क्रम करिकैं वर्णन करैं सकल भक्तजन ताहि ॥
सिसु पौगण्ड किशोर औ जोवन चारि विभेद। आदिखण्ड लीला जु के याते चारि विभेद ॥

तथाहि—सर्वसद्गुणसंपूर्णां वन्दे फाल्गुनपूर्णिमां। यस्यां श्रीकृष्णचैतन्योऽवतीर्णः कृष्णनामभिः ॥

फागुन पून्यौ निसि समें प्रभु जन्मोदय जानि। दैव योग करि तिहि समैं चंद्रग्रहन भौ आनि ॥
हरि हरि बोलें लोक सब अति हरषित हिय होय। कृष्ण नाम जन्माय कें जन्म लियौ प्रभु सोय ॥
जन्म बाल्य पौगंड जुव इन सब समै जु ताहि। सबन लिवायौ नाम हरि कौतिक छल करि आहि ॥
बाल्य भाव कें मिस जु करि क्रंदन करैं जु आहि। हरिहरि कृष्ण जु नाम सुनि रहै रुदन तब ताहि ॥
याही तें हरिहरि करैं सब नारी गन आहि। आवैं जे सब बन्धुगन देखन बालक ताहि ॥
हँसैं जु कहि कैं गौर हरि नारीगन तिहि ठांम। याही ते तिनको जु इक भयौ गौर हरि नाम ॥
जब लौं हाथ खरीदई बाल्य बयस अति बाम। जब लौं वय पौगंड नहि किय विवाह रस धाम ॥
प्रगटौ नव जौवन सरस भये विवाह जु ताहि। संकीर्त्तन प्रभु नाम कौ सबन लिवायौ आहि ॥
पढ़ै पढ़ावैं सिष्यगन वय पौगण्ड हि जोय। व्याख्या कृष्णहि नाम की सब ठां करैं जु सोय ॥
सूत्र वृत्ति आदिक सु जे हरि ही में तात्पर्य। होय प्रतीत जु सिष्य कें तिहि प्रभाव आश्चर्य ॥
जिहि देखैं ताही कहैं लेहु कृष्ण कौ नाम। दिय बहाय हरि नाम में नवद्वीप सब ग्राम ॥
वय किसोर आरंभ किय संकीर्त्तन हरि नाम। प्रेम नृत्य निसि दिन करें संग भक्तगन वाम ॥
नगर नगर बोलैं जु ते कीरंतत करि सोय। दिय बहाय त्रिभुवन तिन्ह प्रेम भक्ति करि जोय ॥
या विधि चौबिस बरस लौं नवद्वीप सब ग्राम। सब लोकनि जु लिवाय यों कृष्णप्रेम अरु नाम ॥
भये बरस चौबीस के कियो जु प्रभु संन्यास। भक्तनि गन सँग लै कियो नीलाचल जू वास ॥
तिनहूँ में षट बरस लौं नीलाचल में जानि। नृत्य गीत अरु प्रेम रस भक्ति निरंतर दानि ॥
सेतबन्ध लौं देस जे अरु वृन्दावन जोय। प्रेम नाम सु प्रचार करि कियौ भ्रमन प्रभु सोय ॥
यहै मध्य लीला कहैं नीलाचल जन संग। प्रेम लिवायौ सबन कौं नृत्य गीत बहु रंग ॥३५॥

कवित्त—

द्वादस बरस शेष रही लीलारस आस्वादन छल कैं सिखाई प्रेम की तरंग हैं।
रैन दिन कृष्ण विरह फुरैं चेष्टा उन्माद करैं बचन प्रलाप उठत अभंग हैं।
श्री राधा कैं प्रलाप भयौ उद्धव कैं देखें ज्यौं तैसैंई प्रलाप चेष्टा होय सब अंग हैं।
विद्यापति जयदेव चंडीदास गीत करैं आस्वादन रामानंद औ स्वरूप संग है ॥१॥

कृष्ण वियोग औ योग कौ प्रेम चेष्टित जोय । आस्वादन पूरन कियो निज वांछित हौ सोय ॥
लीला प्रभु जु अनंत है जीव छुद्र अति जोय । करिकैं तिहि विस्तार अति बरनि सकै नहि कोय ॥
जो कबहूँ तिहि सूत्र करि गने जु आप अनंत । सहस वदन करि तऊ तिहि नाहिन पावै अंत ॥
दामोदर स्वरूप जू अरु श्री गुप्त मुरारि । मुख्य मुख्य लीला जु के सूत्र लिखे जु विचारि ॥
लीला सूत्र जु गन लिखे तिनही के अनुसार । वर्नन बृन्दावन कियौ तिनही कौ विस्तार ॥
प्रभु लीला के व्यास हैं श्री बृंदावन दास । लीला अति ही मधुर करि करी तिन्हौं प्रकास ॥
तिन्हौ ग्रंथ विस्तार भय छाँड़ी जा जा स्थान । ताही ताही स्थान कछु करि हैं तिहि विख्यान ॥
प्रभु लीला अमृत तिन्हौ किय आस्वादन आहि । अब करियतु है चर्वन जु भक्त शेष कछु ताहि ॥
लिखें सूत्र लीला प्रथम सुनौ भक्तगन जाहि । सब नहि जाय लिख्यौ लिखें कछु संछेप जु आहि॥
को इक वांछा पूर्ण हित आप बृजेन्द्र कुमार । पृथिवी पै अवतीर्ण हित मन में कियौ विचार ॥
अवतारे सब प्रथम ही जे जे गुरु परिवार । कहैं तिन्है संछेप नहि कह्यौ जाय विस्तार ॥
जगन्नाथ श्री शची श्री माधवपुरी प्रवीन । अरु श्री केसव भारती ईश्वर पुरि रसलीन ॥
आचारज अद्वैत जू अरु पंडित श्री वास । श्री आचारज रत्न औ विद्यानिधि हरिदास ॥
हट्ट देस में घर जु तिहि मिश्र उपेन्द्र जु नाम । वैष्णव पण्डित धनी बहु सद्गुण के विश्राम ॥

कवित्त—

सात ऋषि तुल्य तिहि पुत्र सात मिश्र भये कंसारि परमानंद पद्मनाभ नाम हैं ।
सर्वेश्वर जगन्नाथ और श्री जनार्दन जू मिश्र और लोक नाथ रस के विश्राम हैं ।
नवद्वीप गंगावास कियौ जगन्नाथ जिहि पदवी है पुरंदर मिश्र रसधाम हैं ।
नंद वसुदेव रूप सद्गुण के सागर हैं पत्नी तिहि शचीनाम पतिव्रता वाम हैं ॥१॥

सची माता जू के पिता नीलाम्बर चक्रवर्ती बड़ेई महानुभाव अति ही उदार हैं ।
राढ़ देस जन्म लियौ ठाकुर श्री नित्यानंद गंगादास पण्डित जू भक्तन अधार हैं ।
श्री मुरारि गुप्त जू मुकुंद औ असंख्य निज भक्तन समूह के कराये अवतार हैं ।
पाछें अवतीर्ण भये पूर्ण अभिलाष छये कौतुकी परम बृजराज कौ कुमार हैं ॥२॥

प्रभु के आविर्भाव तें प्रथम भक्तगन जोय । श्री अद्वैताचार्य के निकट गमन कियौ सोय ॥
कहै जु गीता भागवत औ आचारज ताहि । ज्ञान कर्म निंदहि कहैं भक्ति बड़ाई आहि ॥
सबे शास्त्र कौ करैं ये कृष्ण भक्ति विख्यान । ज्ञान योग अरु कर्म तप नहि कछु मानै आन ॥
तिहि सँग आनँद सों करै वैष्णवगण सब आहि । कृष्ण कथा पूजा जु तिहि नाम सँकीर्तन ताहि ॥
ऐपैं देखें लोक सब कृष्ण बहिर्मुख जोय । विषय निमग्न जु लोक लखि हिय दुख पावै सोय ॥
करै लोक निस्तार हित सोच दयाकरि ताहि । किहिं विधि इहिं सब लोककौ ह्वैहै तारण आहि ॥

जौ अवतरि कैं कृष्ण जू करैं भक्ति विस्तार। तौ सबही इन लोक कौ होय सहज निस्तार ॥
ते जु कृष्ण अवतार हित करी प्रतिज्ञा आहि। तुलसी गंगा जलहि दै करि हरि पूजा ताहि ॥
करैं कृष्ण आह्वान करि ते जु सघन हुंकार। भै आकर्ष हुंकार करि श्रीवृजराज कुमार ॥
श्रीजगन्नाथ पत्नी सची तिनके उदरहि जोय। क्रम करि कन्या अष्ट ह्वै जन्मत मरी जु सोय ॥
पुत्र विरह करि मिश्र कौ दुखी भयौ मन आहि। आराधै हित पुत्र के विष्णु चरण तव ताहि ॥
तव तिनके उपजे तनय विश्वरूप जिहि नाम। बड़े महागुनवान ते श्रीवलराम जु धाम ॥
संकर्षण वैकुंठ वलदेव प्रकासहि जोय। उपादान कारण जु है विश्वरूप कौ सोय ॥
तिहि बिनु कछू न विश्व में वस्तु और है आहि। विश्वरूप जो नाम यह याही तें भौ ताहि ॥

तथाहि दशमे—नैतच्चित्रं भगवति ह्यनन्ते जगदीश्वरे। ओतं प्रोतमिदं यस्मिन् तन्तुष्वंग यथा पटः ॥

याते प्रभु के ते भये बड़ भाई रस कंद। कृष्ण और वलदेव विवि श्रीप्रभु नित्यानन्द ॥
भये पुत्र लहि दंपती आनन्दित मन जोय। आराधन गोविन्द पद करैं विशेष जु सोय ॥
शाके चौदहसत जु षट सेस माघ जो मास। जगन्नाथ शचिदेह में भौ श्री कृष्ण प्रकास।
मिश्र कहैं तव सची सौं रीति और लखि आहि। लक्ष्मी आश्रित गेह वहु ज्योतिर्मय है ताहि ॥
जहां तहां सव लोक हू करैं तिनहिं सनमान। घर ही देय पठाय ते वस्त्र और धन धान ॥
शची कहैं आकास पर देखत हौं में जोय। दिव्यमूर्ति जे लोक सव स्तुति अति करैं जु सोय ॥
मिश्र कहैं हम आजु इक स्वप्न लखो इहि भाय। ज्योतिर्मय जो धाम मम हिय में पैस्यौ आय ॥
मम हियतें तुव हृदय में कियौ प्रवेस जु ताहि। ऐसें जानौं जनमि है कोऊ महाशय आहि ॥
ऐसे कहि दोऊ रहैं अति हरषित हिय होय। सेवा सालगाम की करैं अधिक करि सोय ॥
होत होत ही गर्भ कौं भयौ त्रियोदस मास। तऊ गर्भ जन्मै नहीं भयौ मिश्र के त्रास ॥
कहैं जु लगन विचार करि नीलांवर इहि भाय। ह्वै है याही मास में पुत्र पुन्यलक्षण पाय ॥
चौदहसत अरु सात कै शाके फागुन मास। पून्यौं सांझ समें भयौ सुभ छिनकौं जु प्रकास ॥
रासि लग्न तिथि सिंह है ग्रहण उच्च है जोय। अष्ट वर्ग षट वर्ग औ सवहि सुलक्षण सोय ॥
दरसन दीनो गौरहरि अकलंकित द्विजराज। सकलंकित ससिकौ तहां रह्यौ कहा अव काज ॥
यहै जानि किय राहुनें चंद्रग्रहन तव जोय। कृष्ण कृष्ण हरि नाम हरिकहै जु त्रिभुवन सोय ॥
जगत भर्यौ सव लोक जै हरिहरि वोलै आय। गौर कृष्ण भुवि अवतरे नाम सहित छिन ताय ॥
तिहि छिन सबही जगत के भै प्रसन्न मन जोय। हिंदुन कौ करि हास्य हरि बोले जवन जु सोय ॥
हरि हरि करि नारी जु गन करैं जु जै जै कार। नृत्य वाद्य दिवि सुर करैं कौतूहल जु अपार ॥
दसो दिसा अरु नदीजल मुख प्रसन्न छिन ताहि। स्थावर जंगम भये सव आनँद विह्वल आहि ॥

कृष्ण वियोग औ योग कौ प्रेम चेष्टित जोय । आस्वादन पूरन कियो निज वांछित हौ सोय ॥
लीला प्रभु जु अनंत है जीव छुद्र अति जोय । करिकैं तिहि विस्तार अति वरनि सकै नहि कोय ॥
जो कबहूँ तिहि सूत्र करि गने जु आप अनंत । सहस वदन करि तऊ तिहि नाहिन पावै अंत ॥
दामोदर स्वरूप जू अरु श्री गुप्त मुरारि । मुख्य मुख्य लीला जु के सूत्र लिखे जु विचारि ॥
लीला सूत्र जु गन लिखे तिनही के अनुसार । वर्नन वृन्दावन कियौ तिनही कौ विस्तार ॥
प्रभु लीला के व्यास हैं श्री वृंदावन दास । लीला अति ही मधुर करि करी तिन्हौं प्रकास ॥
तिन्हौ ग्रंथ विस्तार भय छाँड़ी जा जा स्थान । ताही ताही स्थान कछु करि हैं तिहि विख्यान ॥
प्रभु लीला अमृत तिन्हौ किय आस्वादन आहि । अब करियतु है चर्वन जु भक्त शेष कछु ताहि ॥
लिखें सूत्र लीला प्रथम सुनौ भक्तगन जाहि । सब दहि जाय लिख्यौ लिखें कछु संक्षेप जु आहि॥
को इक वांछा पूर्ण हित आप वृजेन्द्र कुमार । पृथिवी पै अवतीर्ण हित मन में कियौ विचार ॥
अवतारे सब प्रथम ही जे जे गुरु परिवार । कहैं तिन्है संक्षेप नहि कह्यौ जाय विस्तार ॥
जगन्नाथ श्री शची श्री माधवपुरी प्रवीन । अरु श्री केसव भारती ईश्वर पुरि रसलीन ॥
आचारज अद्वैत जू अरु पंडित श्री वास । श्री आचारज रत्न औ विद्यानिधि हरिदास ॥
हट देस में घर जु तिहि मिश्र उपेन्द्र जु नाम । वैष्णव पण्डित धनी बहु सद्गुण के विश्राम ॥

कवित्त—

सात ऋषि तुल्य तिहि पुत्र सात मिश्र भये कंसारि परमानंद पद्मनाभ नाम हैं ।
सर्वेश्वर जगन्नाथ और श्री जनार्दन जू मिश्र और लोक नाथ रस के विश्राम हैं ।
नवद्वीप गंगावास कियौ जगन्नाथ जिहि पदवी है पुरंदर मिश्र रसधाम हैं ।
नंद वसुदेव रूप सद्गुण के सागर हैं पत्नी तिहि शचीनाम पतिव्रता वाम हैं ॥१॥

सची माता जू के पिता नीलाम्बर चक्रवर्ती बड़ेई महानुभाव अति ही उदार हैं ।
राढ़ देस जन्म लियौ ठाकुर श्री नित्यानंद गंगादास पण्डित जू भक्तन अधार हैं ।
श्री मुरारि गुप्त जू मुकुंद औ असंख्य निज भक्तन समूह के कराये अवतार हैं ।
पाछें अवतीर्ण भये पूर्ण अभिलाष छये कौतुकी परम वृजराज कौ कुमार हैं ॥२॥

प्रभु के आविर्भाव तें प्रथम भक्तगन जोय । श्री अद्वैताचार्य के निकट गमन कियौ सोय ॥
कहै जु गीता भागवत औ आचारज ताहि । ज्ञान कर्म निंदहि कहैं भक्ति बड़ाई आहि ॥
सबे शास्त्र कौ करैं ये कृष्ण भक्ति विख्यान । ज्ञान योग अरु कर्म तप नहि कछु मानै आन ॥
तिहि सँग आनँद सों करै वैष्णवगण सब आहि । कृष्ण कथा पूजा जु तिहि नाम सँकीर्तन ताहि ॥
ऐपैं देखें लोक सब कृष्ण वहिर्मुख जोय । विषय निमग्न जु लोक लखि हिय दुख पावै सोय ॥
करै लोक निस्तार हित सोच दयाकरि ताहि । किहिं विधि इहिं सब लोककौ ह्वैहै तारण आहि ॥

पदराग विहागरो

जीवनि के हित काज कृपा करि जीवन के हित काज।
　　नदिया उदया चलतें प्रगटे अकलंकित द्विजराज ॥ टेक ॥
पूरन कला अंस संग लियें उडगन भक्त समाज।
　　यहै जानि सकलंकित द्विजपति राहु अंक दव्यौ लाज ॥
छयो अनुराग लोक रंजित भये होतहि प्रथम प्रकास।
　　भक्ति चन्द्रिका फैली दिवि भुवि भयौ दरिद्र तम नास ॥
भक्त कुमुद फूलें चहुँ दिसि भयौ रसिक चकोर हुलास।
　　हरि हरि धुनि भई भरे लोक सव त्रिजगत हृदय विकास ॥
ताही समें उठे निज गृह तें श्री अद्वैत गुसांइ।
　　नृत्य करैं आनंदित मन अति फूले अंगन माइ ॥
करैं हुँकार संकीर्त्तन रंग भरे लै हरि दासहि संग।
　　नहि कोऊ जानै कौन हेतु ये करैं नृत्य वहुरंग ॥
लखि उपराग हँसे आये तव वेगिहि गंगा तीर।
　　स्नान कियौ तामें आनंद भरै भक्तन की संग भीर ॥
पाय ग्रहन कौ मिसु अरु अपनौ मन उत्साहै जान।
　　श्री आचारज वोलि द्विजन कौं दिन नानाविधि दान ॥
आनंद मय सव देख जगत कौ अरु निज मन हुल्लास।
　　अति विस्मै भये सेंना वेंनी कहै कछुक हरिदास ॥
ऐसौ न कछु है रंग तुम्हारे अरु मम मन आनंद।
　　ऐसें भाषत नीके कोऊ ह्वै है सुख कौ कन्द ॥
मन आनँद भये आचारज रत्न और जु श्री निवास।
　　कियौ स्नान जाय गंगा मधि प्रगट भई हिय आस ॥
हरि संकीर्तन करैं मन आनन्द जु के प्रवाह।
　　नाना दान द्विजनि कौं तिहि छिन दिय मन के जु उछाह ॥
इही भांति पांति भक्तनि की जिहिं तिहिं देस निवास।
　　तहां तहां सव पाय हर्ष मन भयौ मंगल कौ भास ॥

नाँचैं करैं सु कीर्तन सवही आनँद विह्वल हीय।
पाय ग्रहन कौं मिस जु सवन तहां दान द्विजन कौं दीय ॥
द्विज सज्जन नारी भरि थारिन नाना द्रव्य संजोय।
मंगल भेंट तहां लै आईं मन अति आनन्द सोय ॥
तप्त हेम सुठि वालक मूरति देखि भरी अति चाय।
देहि असीस जियौ चिर वालक मनहि महासुख पाय ॥
सावित्री गौरी जु सरस्वति रंभा अरू ऋषि नारि।
औरौ जिती देवनारी गन निज प्रभु जन्म विचारि ॥
नाना द्रव्य पात्र भरि भरि लै द्विज पत्नी वपु धारि।
आईं सवै करैं दरसन नति रहीं कछुक निहारि ॥
अंतरिच्छ गन्धर्व देव गन ऋषि चारन समुदाय।
स्तुति अरु नृत्य करैं वहु गावें नाना वाद्य वजाय ॥
नवद्वीप में गुणी जिते अरु नर्तक वाद्यक भाट।
सवै आय नाचैं जु प्रीत लहि अपने अपने ठाट ॥
को नाचैं यह गावैं कौ हैं को आयौ गयौ कोय।
तहाँ तिन्हैं जु संभारण कारण नहि काहू सुधि कोय ॥
दुःख शोक सव ही खंडन भये अति ही प्रमुदित लोक।
आनंद विह्वल मिश्र भये तव मिटे जु मन के शोक ॥
श्री आचारज रत्न और पुनि श्रीनिवास जु धाय।
मिश्र जु पास आय तिन कीन्हौं सावधान समुझाय ॥
जात कर्म करवायौ नीकें ज्यौं विधि धर्म प्रमान।
नाना दान करैं तव मिश्र जू तुष्ट हेत भगवान ॥
पायौ जितेक भेंट धन औरौ जितौ हुतौ कछु गेह।
दियौ सवै धन दान मिश्र जू आनंद भरे अछेह ॥
जिते नर्तक गायक वंदिजन जन जु अकिंचन आन।
सव ही धन दै दै तहां कीनौ सव ही कौ सनमान ॥
गृहिणी श्रीवास जु की तहां नाम मालिनी ताहि।
पत्नी संग आचार्यरत्न की तिहि छिन्न हिये उमाहि ॥

लै सिंदुर और जल जु हरिद्रा श्रीफल रंभा लाज।
दै दै पूजैं नारीगण कौं हर्ष समाज हि साज॥
श्री अद्वैताचार्य की भार्य्या श्री ठकुरानी नाम।
जगवंदित आचार्या हैं सब में वत्सल रस धाम॥
आज्ञा लै आचारज जू की चली लैकै उपहार।
बालक मुकुट रत्न देखन हित हिय उत्साह अपार॥
कर्णफूल चक्री जु सलाको है अंगद कमनीय।
सुवरन कंकन चूरी संख की कंठ हार बहु लीय॥
कंचन मुँदरी रजतु बांक पद अरु पायल जु विसेस।
अनवट विछियां नूपुरादि बहु आभूषण जु अशेष॥
बघना हेम जडित कटि डोरी गूहि रेसम अति लाल।
हस्त चरन के जिते आभरन लिये सब हर्ष विसाल॥
धोती उपरैना अति सुन्दर पाट किनारी चारु।
चित्र वर्ण पट सारी अरु बहु मुद्रा धन नहि पारु॥
दूव धान गोरोचन हरदी कुकुंम मलय सुवास।
मंगल द्रव्य पात्र भरि के चढ़ि डोला छादित वास॥
चली जु संग दास दासी लै ब्रहु वस्त्रालंकार।
भक्ष भोज्य उपहारनि के संग लीये बहु भरि भार॥
लै सब चली रली आनंद में सचि गृह पहुँची आय।
आई बेगि सूतिका गृह में आनंद कह्यो न जाय॥
बालक की लखि अति सुठौनता आप कृष्ण निरधार।
वर्ण मात्र विपरीत लखैं इक अरु सब तिहि उनहार॥
सबै अंग निर्मान मनोहर कंचन प्रतिमा भान।
सबही अंग सुलक्षण मय है सुन्दरता की खान॥
बालक की लखि दिब्य देह दुति हृदय लही बहु प्रीति।
वातसल रस द्रवि चल्यो हियो तिहि सकै कौन कहि रीति॥
दूव धान तिहि सिर धरि कीनौ आसिस करि भरि पूर।
दोउ भाई चिरजीबौ ये हैं सब की जीवन मूरि॥

डाकिनि साकिनि तें तिहिकें हिय कछु उपज्यो भय जोय।
तिहि भय करि तिहि नाम निमाई धरयौ नेह वस होय ॥
छटी पूजा करयौ तिहि दीनैं भूषन वहुरंग सार।
कीनौ किन्हौं मिश्र कौं वहु विधि पुत्र सहित सत्कार ॥
सची मिश्र पूजी तिन्हैं तिनकी पूजा लेय।
आई निज गृह ठकुरानी जू हरषित आसिस देय ॥
ऐसें जगन्नाथ श्रीशची जु पुत्र पाय श्री नाथ।
पूरन भैं वांछित गृह आई मनो रंक निधि हाथ ॥
भरयो कलेवर जग आदर करि घर धन धान्य भंडार।
दिन दिन अति आनन्दित मनमें लह्यौ सव सुख कौ सार ॥
मिश्र भागवत शुद्ध अलंपट शान्त दांत गुन वान।
देह गेह धन भोग सु जिन कैं नहि नेंकौ अभिमान ॥
जितनौ धन मिलै आय मिश्र कौं सहजहि पुत्र प्रभाव।
विष्णु प्रीति सव दान देहि ते वड़े उदार सुभाव ॥
नीलाम्वर जु भये हरषित मति लग्न उच्च गृह देखि।
कहैं मिश्र सौं छिपि कै लच्छन महापुरुष अव रेखि ॥
अंग अंग के सुभ लच्छन करि और लग्न अनुसार।
देखियै ए तुव तनय तारि है सकल विमुख संसार ॥
कियौ कृपा करि ऐसें शचिगृह आप कृष्ण अवतार।
जो यह सुनै कहै गावै लहै गौर चरन निरधार ॥
लहि नरदेह सुनें न गौरगुन जो नर विषय अधीर।
अमृतधुनि लहि पियें अज्ञ यौं महाविष गर्त कौ नीर ॥
वृथा जन्म ऐसौ भयौ ताकौ रम्यौ न प्रभु गुन मांझ।
जनमत ही न मरयौ सो क्यौं तिहि जननी भई न वांझ ॥
श्री चैतन्य अरु नित्यानँद जू भक्ति यज्ञ के यूप।
श्री अद्वैत स्वरूप रूप रघुनाथ दास रस रूप ॥
इन सब को पद सिर करि वदन निज धन मम सुख रास।
प्रभू जन्म लीला गाई यह कृष्णदास तिहि दास ॥
ताकौ वृजभाषा करि कीनौ यथा वुद्धि अनुवाद।
रूप सनातन पद रज सिर धरि वेनी कृष्ण प्रसाद ॥

इति श्रीचैतन्यचरितामृते आदिखण्डे महाप्रभु जन्म लीला नाम त्रयोदशपरिच्छेदः ॥

॥ चतुर्द्दश परिच्छेदः ॥

कथञ्चन स्मृते यस्मिन् दुष्करं सुकरं भवेत्। विस्मृते विपरीतं स्यात् श्रीचैतन्यं नमामि तं ॥

जै जै श्री चैतन्य शशि जय श्री नित्यानंद। जय अद्वैत आचार्य जु जय प्रभु भक्तनि वृन्द ॥
प्रभु की लीला जन्म जो कह्यौ सूत्र यह ताहि। जसुदानदंन इहां जौं शचीसूनु भौ आहि ॥
करि संक्षेप कह्यौ जनम लीला अनुक्रम जोय। प्रभु सिसुलीला सूत्र कौ करैं गणन अब जोय ॥

वन्दे चैतन्यदेवस्य वाल्यलीलां मनोहरां। लौकिकीमपि तामीशचेष्टया वलितान्तराम् ॥

शयन पाद उत्थान शिशु लीला आग्रहि ताहि। चरन दिखाये चिन्ह जुत तात मात कौं आहि ॥
दुहुँजन देखें गेह में लघुपद चिन्ह नवीन। तहां महाध्वज वज्र पुनि संख चक्र अरु मीन ॥
देखि दुहुनकें अतिभयौ तब विस्मय हिय माहि। गृह पद चिन्ह ये कौनकें निश्चय पायौ नाहि॥
मिश्र कहैं जु गुपाल शिशु नांकें शिला जु संग। तेई जानौं मूर्ति धरि खेलें गृह वहु रंग ॥
जगे निमाई तिहींछन तिन किय रोदन आहि। अंक लेय तब शचीजू स्तन जु पिवायौ ताहि॥
स्तनजु पिवावत पुत्र कै पद देखे तिहि भाय। वहुधा तेई चिन्ह लखि लिय तब मिश्र बुलाय ॥
देखि मिश्रजूकी भई आनन्दित मति जोय। गुप्त लिये जु बुलाय तिहि नीलाम्बर जू सोय ॥
नीलाम्वर जू चिन्ह लखि बोले हसि कें ताहि। पहिलैं ही हम लग्न गनि लिखि राख्यौ है आहि ॥
लक्षण हैं बत्तीस जे महा पुरुष के जोय। यह सिसु के अँग देखि ये हैं सब लक्षन सोय ॥

तथहि सामुद्रके—पंचसूक्ष्मः पञ्चदीर्घः सप्तरक्तः षडून्नतः। त्रिह्रस्वपृथुगम्भीरो द्वात्रिंशल्लक्षणो महान्।

नारायण के चिन्ह करि कर पद युक्त है याहि। यइ शिशु या सब लोक कौं करिहै तारन आहि ॥
यहै जु शिशु करि है महा हरिजन धर्म प्रचार। याही करि कैं होयगौ दोउ कुल कौ निस्तार ॥
करिहै ये सब लोक कौं धारण पोषन आहि। विश्वम्भर यह नाम है यह कारण करि याहि ॥
सबही द्विजन बुलाय कै करौ महोत्सव ताहि। आजु भलौ दिन करौ तुम नाम करन अब याहि ॥
सुनिजु शची अरु मिश्र कैं आनन्द वाढ्यो हीय। द्विज दम्पति जु बुलाय कें महा महोत्सव कीय ॥
तब ही कितेक द्यौस में प्रभु घुटुवन चले चाय। चमत्कार नाना तहाँ सबकों दिये दिखाय ॥
सबनि कहायौ रुदन मिस हरे कृष्ण यह नाम। नारी सब जब हरि कहैं हसैं गौर द्युति धाम ॥
तब ही कितेक द्यौस में किय तिहि पद संचार। सिसु गन मिलि करि करें ते खेल विविध प्रकार ॥
खील खांड विव लाय इक द्यौस शची जु आहि। दियौ पात्र भरि खाहु तू बैठि कह्यौ यह ताहि ॥
ऐसैं कहि गइ गेह में काज करन कछु आन। वाही छिन लुकि के जु सिसु लगे मृत्तिका खान ॥
आइ जु देखि शची तवैं हाय हाय करि धाय। लई छीन सो कह्यौ यौं माटी काहे खाय ॥
करि क्रन्दन बोले जु सिसु क्यों तुम करौजु रोस। तुम हीं माटी खान कौं दई कहा मम दोस ॥
खील खांड़ अरु अन्न सब माटी के जु विकार। यहै जु सोऊ मृत्तिका कहा जु भेद विचार ॥

माटी वपु अरु भक्ष हू माटी लखौं विचार । बोलि सकौं अब कहा तुम देहु दोष अविचार ॥
अन्तर विस्मित होय शचि कहन लगी यों ताहि । जुगति जु माटी खानकी तोहि सिखाई काहि॥
माटी के जु विकार हैं अन्न खांय बल होय । माटी खायें रोग अरु छीन होय वपु सोय ॥
माटी कौं जु विकार घट जल भरि लीगै ताहि । धरियै माटी पिंड जब सूखि जाय जल आहि ॥
अपने रूप दुराव करि कहन लगे प्रभु ताहि । काहे यह माता प्रथम नहि सिखयौ मम आहि ॥
अब जान्यौ नहिं आज तें माटी खेंहौं सोय । भूख लगै जब तुव स्तन दूध पियौंगौं जोय ॥
ऐसैं कहि कें मात की अंक चढ़े अति धाय । स्तन पान लागै करन प्रभु ईसत मुसिकाय ॥
इहि विधि नाना छल सु करि ईश्वरता जु दिखाय । बाल भाव कौं प्रगट करि पाछे लेंहि छिपाय ॥
अन्न पाक द्विज अतिथि कौं खायौ तीन जु वार । पाछैं ताही विप्र कौं कियौ गुप्त निस्तार ॥
चोर एक लै गयौ श्री प्रभु कौं बाहिर पाय । कांधे चढ़ि आये जु तिहि ताकौं देय भुलाय ॥
व्याधि छलहि करिकै जु जगदीश हिरण घर जोय । खायौ हरि नैवेद्य प्रभु दिन हरिवासर सोय॥
पार परोसिनि के घरनि सिसु सब सँगलै आहि । खांहि द्रव्य चोरीजु करि लरकनि मारैं ताहि ॥
सिसु सब आय शची जु कौं निकट निवेदन कीय। सुनि कें शचीजु पुत्र कौं कछु उरहानो दीय ॥
काहे चोरी करौ तुम क्यौं सिसु मारौ सोय । काहे पर घर जातु हौ कहा न निज घर जोय ॥
सुनि कें क्रोध भये प्रभु जाय गेह मधि सोय । जिते पात्र घर में हुते फोरि फेंकि दिय जोय ॥
गोद लेय तब शची जू किय तिन कौं संतोष । लजित भये जु प्रभु तबै जानि आपनौ दोष ॥
इक दिन मृदु कर सों कियौ माता के जु प्रहार । तिनकौं मूर्छित देखिकैं रोदन करत अपार ॥
तिय गन कहैं जु नारियल देहु आनि जौ याहि । स्वस्थ होय तिहिं पायके तुव जननी ये आहि॥
तब प्रभु बाहिर जायकें लाये द्वै फल सोय । भईं तबै विस्मित सकल देखि अपूरव जोय ॥
स्नान करत हैं सुरधुनी कबहूं सिसु लै संग । आईं पूजन देवता कन्या गन हिय रंग ॥
स्नान सुरधुनी करि लगीं पूजा करन सुभाय । कन्यागन कें बीच श्री प्रभु जू बैठे जाय ॥
तिनहि कहैं पूजौ हमैं हम हैं सब देवेश । गंगा दुर्गा दासिका मम किंकर जु महेश ॥
आपुन चंदन और तिहि पहिरैं फूलन हार । रंभादिक नैवेद्य सब काढ़ि कियौ आहार ॥
कहैं जु कन्या क्रोध करि सुनौ निमाईं बात । तुम जु ग्राम संबंध करि लगौ हमारे भ्रात ॥
हम सबसौं ऐसैं करौ उचित नहीं इहि भाय । सौंज देवता की सु जिनि लेहु न करौ अन्याय ॥
प्रभु बोले तुम सबनि कौं दियौ यहै वर जोय। तुम सबके ह्वै हैं जु पति सुन्दर परम सु सोय ॥
पंडित जुवा विदग्ध अति और धान्य धनवान । सात सात ह्वै हैं तनय ते चिरायु मतिमान ॥
वर सुनि कें कन्यानिके अन्तर अति संतोष । बाहिर तिन सों अति खिझैं करिकें मिथ्या रोस ॥
कोऊ लै नैवेद्य कौं कन्या गई पलाय । ताकौं कहैं पुकारि हरि करिजु रोष अधिकाय ॥
जो मोकौं नैवेद्य नहि देहु कृपन तुम होय । तौ ह्वै है भरता विरध चारि सौति हूं सोय ॥

को जाने इन में कोऊ दैव अधिष्ठित होय ॥
यह सुनिकें तिन सवनि कौ भय मन उपज्यौ क्रोय। प्रभु नैवेद्य हि खाय तिहि दियौ इष्ट वर आहि ॥
तव नैवेद्यहि आनिकें सनमुख धर्यौजु ताहि। सवही पावैं अधिक सुख नहि पावैं दुख कोय ॥
इंही भांति चापल्य करि सवन खिझावैं सोय। इक दिन आई देवता पूजन हित अभिराम ॥
श्री वल्लभ आचार्य की तनया लच्मी नाम। देखत हीं प्रभु कौं भयौ साभिलास मन आहि ॥
स्नान कियो गंगाजु तिहि प्रभुजो देखी ताहि। प्रीति साहजिक दुहुनकी तव तिहि उदौ जु कीय॥
प्रभु देखें लच्मी जु कें प्रीति लही अति हीय। नित्य शुद्ध जो प्रीति है यहै रीति तिहि आहि ॥
वाल भाव करि छन्न सो तऊ निश्चै भो ताहि। करि जु देव पूजा छलहि कियौ दोउनि प्रकास ॥
दोउनि देखें दुहुनि कें भयो हृदैं हुल्लास। मम पूजा करि पाय हौ मन वांछित वर होय ॥
पूजौ मोहि जु प्रभु कह्यौ हों जु महेस्वर सोय। गरैं माल मल्ली जु की दै किय वंदन आहि ॥
दिये पुष्प माला तवै लच्मी अंगहि ताहि। तिन कौ भाव श्लोक पढ़ि कियौ जु अंगीकार ॥
प्रभु तिहि पूजा पायकें लगे हँसन सुख सार।

संकल्पो विदितः साध्वी भवतीनां मदर्चनात् इति।

समझि सकै चैतन्य की को लीला गंभीर ॥
इहिविधि लीला करि गये विवि गृह नेह अधीर। शची मिश्र कों निकट तें देहि उरहनो आय ॥
चापल लखि चैतन्य कौ सवै प्रेम अधिकाय। चली पकरिवे पुत्र कौं भजे धाय करि जोय ॥
एक द्यौस देवी शची खिझि करि पुत्र हि सोय। सुख सों विश्वम्भर प्रभु वैठे ऊपर ताहि ॥
जूंठ गर्त में त्यक्त मृत भाजन परे जु आहि। स्नान जाय गंगा करौ भौ अपवित्रजु आहि॥
शची आय तिनसों कह्यौ अशुचि छियो तुम काहि। विस्मित ह्वै शचि सुरधुनी करवायो जू स्नान ॥
सुनि अपवित्र जु आप कौं कह्यौ मात सौं ज्ञान। देखै दैवत लोक करि भर्यो भवन सव आहि ॥
कवहूँ शयन कियौ शची लै करि पुत्रहि ताहि। चलै तनय वाहिर तवै आज्ञा जननी पाय ॥
शची कहैं हे पुत्र तुम तातहि लेहु वुलाय। चमत्कार सुनिकै भयो तात मात कें हीय ॥
चलते नूपुर तिहि वजें झुन झुन धुनि वहु कीय। सून्य चरन सिसुकेन में नूपुर धुनि क्यौं होय ॥
मिश्र कहैं अद्भुत वड़ी यहै कथा है सोय। दिव्य दिव्य जन आयकें आंगन भरिलिय सोय ॥
शची कहैं देख्यौं जु मैं अरु ईक अद्भुत जोय। स्तुति काहू की करत है किय ऐसै अनुमान ॥
करैं कुलाहल ब तहां ताहि सकौं नहि जान। विश्वम्भर के कुशल हो यहै चाह मम जोय ॥
मिश्र कहैं कछु होहु किन कछु चिंता नहि सोय। धर्म सिखायौ तव तिन्हौं करि वहु भर्त्सन ताहि॥
देखि चपलता पुत्रकी मिश्र एक दिन आहि। कहै मिश्रसौं कछुक सो वचन क्रोध के भाय॥
स्वप्न रैनि ताही जु मधि देख्यौ इक द्विज आय। भर्त्सन ताडन करत हौ करि जु पुत्र अभिमान ॥
मिश्र तुम्है नहि पुत्र कौ है स्वरूप कौ ज्ञान। होहु वडौ कैसौ जु किन तनय तऊ मम सोय ॥
मिश्र कहै सुर सिद्ध मुनि काहे यह नहि होय। हम न सिखावैं तौ जु क्यौं जानें धर्महि मर्म ॥
लालन सिचा पुत्र कौं करै पिता कौ धर्म।

विप्र कहै तुव पुत्र जो देव श्रेष्ठ है आहि। सहज सिद्ध ही जान जो सीख व्यर्थ है ताहि ॥
मिश्र कहै क्यौं नाहि हो पुत्र आप भगवान। तऊ पिता कौ धर्म तिहि सिच्छा करै सुजान ॥
दोऊ इहि विधि सों करै धर्म विचार प्रमान। केवल वत्सल मिश्रकें नहि जानै कछु आन ॥
यहै जु सुनि द्विज गयौ तव आनंदित अति होय। जागे मिश्र भये तवहि विस्मित अतिही सोय॥
सिसु लीला इहि विधि करैं गौरचंद्र सुखकंद। तात मात के वढ़ै अति दिन दिन ही आनन्द ॥
कछुक दिवस में मिश्र जू खरी पुत्र कर दीय। संयोगी अच्छर जिते कछु दिन में सिखि लीय ॥
सिसु लीला के सूत्र कौ अनुक्रम कियौ प्रकास। कह्यौ जु इहि विस्तारि कै श्रीवृन्दावन दास ॥
याही ते संच्छेप करि सूत्र कियौ है याहि। कह्यौ नहीं पुनिरुक्ति भय करि विस्तारहि ताहि ॥
रूप सनातन पद कमल रज ही की जिहि आस। चरित कछुक चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस। प्रभु चरिताभृत कौ लिखौं वृजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे वाल्यलीलावर्णनं नाम चतुर्दशपरिच्छेदः ॥

पंचदस परिच्छेदः

कुमनाः सुमनस्त्वंहि याति यस्य पदाब्जयोः। सुमनोऽर्पणमात्रेण तं चैतन्यं प्रभुं भजे ॥

जै जै श्री चैतन्य जू जै श्री नित्यानन्द। जय अद्वैताचार्य जू जय भक्तति के वृन्द ॥
लीला वय पौगण्ड की सूचन करिये ताहि। प्रभु कौ वय पौगण्ड में पढ़िवौ मुख्यहि आहि ॥

पौगण्डलीला चैतन्यकृष्णस्यातिसुविस्तृता। विद्यारम्भमुखा पाणिग्रहणान्ता मनोहरा ॥

पण्डित गंगादास पै पढ़ै व्याकरण सोय। श्रवण मात्र किय कंठ सव सूत्र वृत्ति गण जोय ॥
अल्पकाल में भये तिहि टीका में जु प्रवीन। पढ़ुवा जे चिरकाल के ते सव भये नवीन ॥
एक दिवस श्री शची के पद प्रणाम करि जोय। कहैंजु प्रभु मोकौं जननि दान देहु एक सोय ॥
कहैं शची जो मागि हौ तुम हम देहैं ताहि। प्रभु जु कहैं हरिवासरहि अन्न न खावो आहि ॥
शची कहैं नहि खाय हैं भली कही यह जोय। तिहि दिन तें लागी करन व्रत एकादसी सोय ॥
विश्वरूप की तरुनता देखि मिश्र जू ताहि। कन्या मांगि विवाह हित मिश्र कियौं मन आहि ॥
विश्वरूप सुनिकैं यहैं घरतें चले पलाय। करि सन्यासहि तीर्थ को करिवे गये जु धाय ॥
मिश्र पुरन्दर को भयो सुनि कैं दुखी जु हीय। तव प्रभु माता पिता कौं आस्वासन वहु कीय ॥
विश्वरूप संन्यास किय भलौ भयौ निरधार। पिता जु कुल माता कुलहु दोउ किये उद्धार ॥
हम करि हैं तुव सवनि कौ सेवन नीकें आहि। सुनि कैं मन संतुष्ट भौ तात मात जे ताहि ॥

ताम्बुल औं नैवेद्य कौं इक दिन प्रभु तिहि खाय । होय अचेतन भूमि पर गिरे तबै अकुलाय ॥
अस्तव्यस्त मातापिता मुखमें जल दिय ताहि । स्वस्त होय प्रभु कहैं अति अद्भुत बानी आहि ॥
विश्वरूप ह्यांते जु मुहि कहूँ लै गयौ सोय । मोहि कह्यौ संन्यास तू करि आज्ञा मम जोय ॥
मैं तिन सौं जु कह्यौ मम माता पिता अनाथ । बालक हौं संन्यास की अबहीं तें कहा गाथ ॥
तात मात जे सेवनहिं करि हों गृही जु होय । याही तें मम तुष्ट ह्वै है लक्ष्मीपति सोय ॥
विश्वरूपजू सुनि यहै तब मोहि दियौ पठाय । मातासों कहियौ जु तुम कोटि प्रणत मम जाय ॥
नाना लीला इही विधि करैं गौरहरि जोय । लीला कारन कौंन यह समझि सकै नहि कोय ॥
ऐसैं केतिक दिवस रहि मिश्र गये परलोक । माता पुत्र जु दुहुनि कें बाढ़्यो अति हिय शोक ॥
सकल बंधु बांधव जिते दुहुनि प्रबोध्यौ आय । ईश्वर ह्वै कें वेद विधि किय पितृ क्रिया बनाय ॥
कितेक दिनमें प्रभु हियें कियौ चिंतवन सोय । ह्वै गृहस्थ अब चाहिये गेह धर्म है जोय ॥
गृहिणी बिनु गृह धर्म जो नाहीं सोभित होय । ऐसें चिंत्य विबाह हित भौ प्रभु कौ मन सोय ॥

तथाहि—न गृहं गृहमित्याहुर्गृहिणी गृहमुच्यते ॥

पढ़ि आवत है एक दिन दैव जोग प्रभु आहि । श्रीवल्लभ आचार्य की कन्या देख्यौ ताहि ॥
सिद्ध भाव जो दुहुनि के तब तिन कियौ प्रकास । आयौ वनमाली घटक दैव योग सचि पास ॥
जानि शची क हृदै की किय संबंध जु ताहि । लक्ष्मी कौ जु विवाह किय शची सूनु जू आहि ॥
वर्णन तिहि विस्तार किय श्रीवृन्दावन दास । लीला वय पौगण्ड की यहै सूत्र परकास ॥
लीला वय पौगण्ड की सो है बहुत प्रकार । किय वृन्दावन दास जू ताकौ अति बिस्तार ॥
याही तें दिङ्मात्र तिहि इहां दिखाई सोय । सब चैतन्य जु मंगलहि लोक ख्याति है जोय ॥
रूप और रघुनाथ के चरण कमल जिहि वास । गौर चरित अमृत कहैं कृष्णदास तिहि दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौं लिखैं व्रजभाषांहि प्रकाश ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे पौगण्डलीलावर्णनं नाम पञ्चदस परिच्छेदः ॥

षोडशपरिच्छेदः

कृपा सुधासरिद् यस्य विश्वमाप्लावयंत्यपि । नीचगैव सदा भाति तं चैतन्यप्रभुं भजे ॥
जै जै श्री चैतन्य जू जै श्री नित्यानन्द । जय ससि श्री अद्वैत जय गौर भक्त के वृंद ॥
तथाहि—जीयात्कैशोरचैतन्यो मूर्तिमत्या गृहाश्रमात् । लक्ष्म्यार्च्चितोऽथ वाग्देव्या दिशां जयि जयच्छलात् ॥
अब लीला कैसोर जो सूचन करिये ताहि । सिष्य समूह पढ़ाइबे किय आरंभ जु आहि ॥
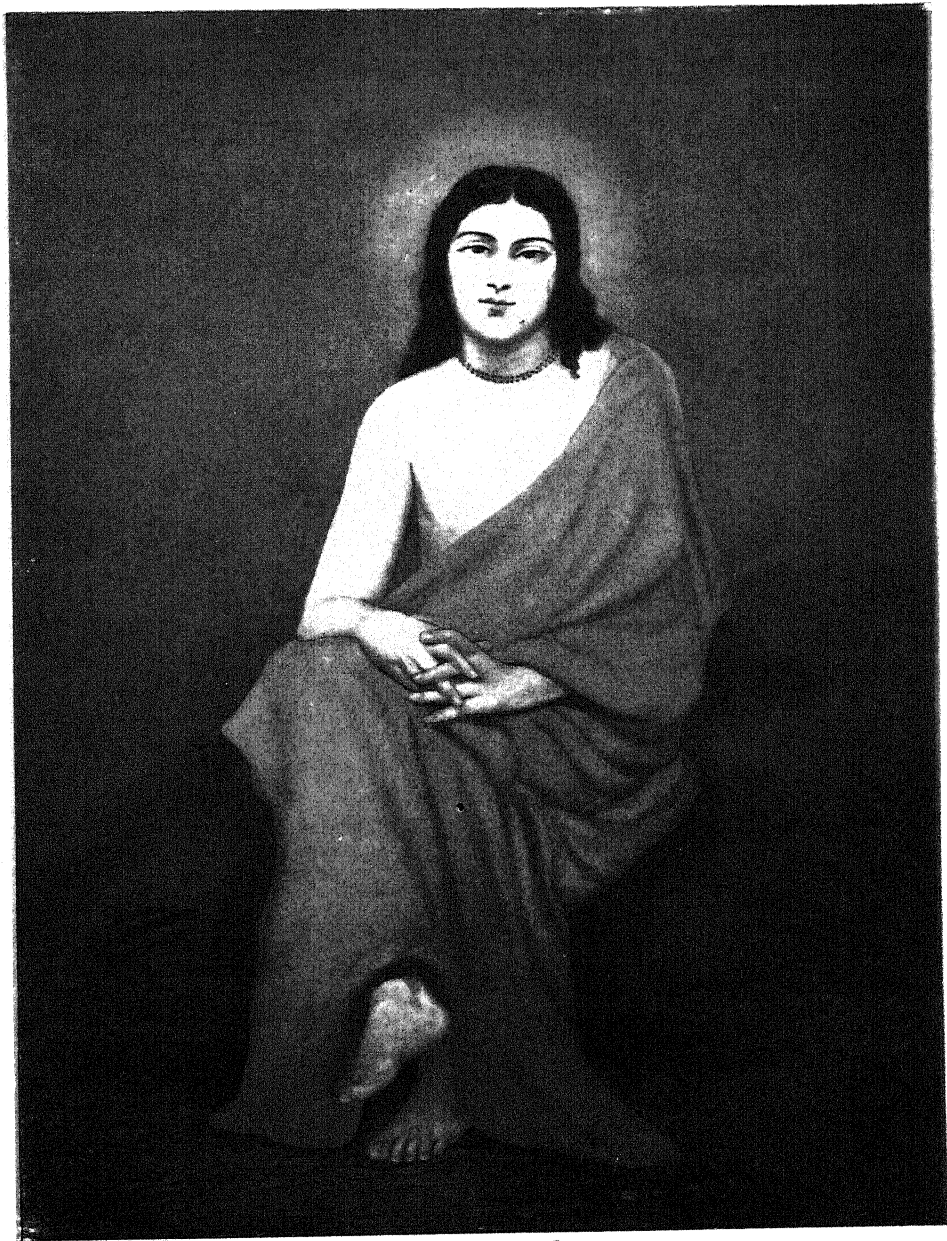
षोडश वर्षीय–अध्यापक निमाई पण्डित।

सत सत सिष्य सदा जु सँग अध्यापन है जोय । व्याख्या सुनि सब लोककें चमत्कार मन होय ॥
सब पंडित सब शास्त्र करि लहैं पराजय जोय । विनय रीति जय हेतु करि दुख काहू नहि होय ॥
नाना उद्धतता करैं सिष्य समूहन संग । गंगा जू के मध्य जल केलि करैं बहुरँग ॥
कितेक दिन में प्रभु कियौ बंग गमन अभिराम । जहाँ जाय करवावई संकीर्तन हरि नाम ॥
विद्या कौ जु प्रभाव लखि चमत्कार हिय होय । सत सत पढ़ुवा आयकैं लगे पढ़न सब सोय ॥
तपन मिश्र जिहि नाम है तिही देस द्विज आहि । निश्चै साधन साध्य कौ सकै न करिकै ताहि ॥
बहु सास्त्रनि के वाक्य करि भयौ चित्त भ्रम जोय । उत्तम साधन साध्य कौं नहीं जु निश्चै होय ॥
देख्यौं स्वप्न कहै जु द्विज सुनौ तपन जू ताहि । गमन करौ पण्डित निकट नाम निमाई जाहि ॥
ते तुव साधन साध्य कौ करि है निश्चै आहि । ते ईश्वर साक्षात हैं नहि संसै कछु आहि ॥
स्वप्न देखि कै मिश्र सो आयौ प्रभुपद पास । तबैं स्वप्न वृत्तांत कौ कियौ निवेदन तास ॥
साधन साध्य कह्यौ जु प्रभु ह्वै प्रसन्न अति ताहि । नाम कीर्तन करयौ यह किय उपदेश जु आहि ॥
प्रभु समीप नदिया बसौं यह इच्छा तिहि हीय । जावौ तुव वाराणसी प्रभु आज्ञा तिहि दीय ॥
तुमकौ दरसन होयगौ तहां हमारे संग । कियौ मिश्र कासी गमन आज्ञा पाय अभंग ॥
प्रभु लीला जु अनन्त हि समुझि सकै नहि कोय । क्यौं निज संग छुड़ाय कें पठये कासी जोय ॥
कियौ महा हित लोककौं इहिविधि बंगहि जाय । किय वैष्णव सनमान दै औ पण्डितनि पढ़ाय ॥
इहि विधि प्रभु बंगहि करैं नाना लीला आहि। ह्यां नदिया लक्ष्मी भई विरह दुखी अति ताहि ॥
प्रभु के विरह भुजंग ते लक्ष्मी डसी जु आहि । विरह सर्प विष ज्वाल करि भौ परलोक जु ताहि ॥
जानि लिये प्रभु हिये सों अन्तर्यामी जोय । आये प्रभु निज देस कौं जानि शची दुख सोय ॥
घर आये तब महाप्रभु बहुधन जन लै आहि । दुःख विमोचन शची कौं कियौ तत्व कहि ताहि ॥
लै कें सिष्य समूह फिरि विद्या कौ जु विलास। विद्याबल करि जीति सब करि औद्धत्य प्रकास ॥
ठकुरानी विष्णुप्रिया तिहि परिणय तब कीय । दिग्विजयि कौ पराजय तहां जु प्रभु करि दीय ॥
किय वृन्दावन दास जू याकौ बहु विस्तार । कह्यौ नही गुण दोष तिहि जहां जु प्रगट विचार ॥
सोइ अंस कहौं तिन्हैं हों करि प्रणत अपार । तिहि सुनि दिग्विजयी कियौ आपुन कौं धिक्कार ॥
रात्रि चांदनी में प्रभू सिष्य समूहनि संग । बैठे गंगातट करैं विद्या कौ जु प्रसंग ॥
दिग्विजयी इक तिहि समें आयौ तहां जु सोय । बंदन करि सुरधुनी कौं प्रभु पै आयौ जोय ॥
आदर करिकें महाप्रभु बैठायौ तब ताहि । हियैं अवज्ञा करि कहै दिग्विजयी यों आहि ॥
पढ़ौ पढ़ावो व्याकरण पँडित निमाई नाम । बाल्य शास्त्र मधि लोक तुव कहैं गुननि कौ ग्राम ॥
जानौं ताहू मैं करौ अध्यापन जु कलाप । सुन्यौं फक्किका तें तुव सिष्यन कौ संलाप ॥
तिहि प्रभु कहैं पढ़ावई हिय अभिमान बनाय । सिष्य न समुझैं ताहि कछु हौं न सकौं समुझाय ॥
कहां तुम सर्व शास्त्र में कविता में सु प्रवीन । कहँ तो हम सब सिशु जु ये हैं पढ़ुवा जु नवीन ॥

जो तुम करौ कृपा जु करि वर्णन गंगा याहि ॥
सुनिवे कौ कछु काव्य तुव हैं मन मेरौ आहि । घरी एक में श्लोक शत वर्णन गंगा कीय ॥
लाग्यौ वर्नन करन सो सुनि गर्वित छिन हीय । तुम सम पृथिवी में नहीं और सुकवि निरधार ॥
महाप्रभू सुनि कैं कियौ तिहि सत्कार अपार । भलैं जु जानौ अर्थ तुम कै भारती जु ताहि ॥
तुव कवित्त के अर्थ कौं समुझै सक्ति हि काहि । तौ सब लोक हियैं बड़ौ सुख पावैं सुनि ताहि ॥
श्लोक एक कौ अर्थ जौ कहौ जु निज मुख आहि । श्लोक सतनि में इक श्लोक प्रभू पढ्यौ जु ताहि ॥
दिग्विजई पूछ्यो जु तुव श्लोक अर्थ हित ताहि ।

तथाहि—महत्वं गंगायाः सततमिदमाभाति नितरां, यदेषा श्री विष्णोश्चरणकमलोत्पत्तिसुभगा ।
द्वितीय श्री लक्ष्मीरिव सुरनरैरर्च्यचरणा, भवानी भर्त्तुर्या शिरसि विभवत्यद्भुतगुणा ॥

कहौ इहीं कौ अर्थ तुम प्रभु जू कह्यौ जु ताहि । दिग्विजई विस्मित भयौ प्रभु सौं पूछैं आहि ॥
बहुधा झंझा वायुवत श्लोक पढ़े हम आहि । कैसै कंठ भयौ जु तुव श्लोक एक मधि ताहि ॥
कहैं जु प्रभु वर देव करि ज्यौं तुव कविवर आहि । श्रुतिधर कोऊ होत है ऐसैं वर करि ताहि ॥
पण्डित अर्थ कियौ जु तिहि हिय में ह्वै संतोष । कहैं जु प्रभु याके कहौ जेहैं गुण औ दोष ॥
पण्डित कहै जु दोष कौ यामें नहिन प्रकास । अलंकार उपमा सुगुण और कछु अनुप्रास ॥
कहैं महाप्रभु कहैं जु हम करौ नहीं जो रोस । श्लोक तुम्हरे इहीं मधि कहौं जु गुन औ दोस ॥
प्रतिभा कौ तुव काव्य है जौ दैवत संतोष । भलैं विचारें ते जु तिहि जानियें गुणरु दोष ॥
तातें याही श्लोक कौ नीकें करौ विचार । कवि कहैं जो हम कह्यौ सोई श्रुति कौ सार ॥
व्याकरणी तुम नहीं पढ़े अलंकार निरधार । तुम कैंसै कै जानि हौ इहि कवित्त कौ सार ॥
कहैं जु प्रभु यातें तुमें पूछत हैं इहि भाय । गुण औ दोष विचारि कें हमें देहु समुझाय ॥
अलंकार नाहिन पढ़े श्रवन कियौ कछु ताहि । तातें यामें देखियें बहु गुन दोष जु आहि ॥
कहैं जु कवि देखें कहौ कहा जु गुण औ दोष । कहैं जु प्रभु कहैं सुनौ करौ नहीं जो रोस ॥
पंचदोस औ पंच ही अलंकार है याहि । क्रम ही करि हम कहत हैं करि विचार सुनि ताहि ॥
है अवमृष्ट विधेय अंस दोस दोय ठां चीन । है पुनरुक्ति विरुद्धमति भग्नक्रम ये तीन ॥
गंगा कौ जु महत्व है या में मूल विधेय । इदं शब्द अनुवाद कै पाछें है अभिधेय ॥
आगें कहि जु विधेय अनुवाद कही फिरि ताहि । याहीतें या श्लोककौं वृथा अर्थ किय आहि ॥

तथाहि—अनुवादमनुक्त्वैव न विधेय मुदीरयेत् ॥

द्वितीय श्री लक्ष्मी इहां है द्वितीयत्व विधेय । गौन भयौ जु समास में नास भयौ अभिधेय ॥
द्वितीय शब्द विधेय सों पर्यौ बीच समास । लक्ष्मी सौं समता जु करि अर्थ कियौ जु विनास ॥
है अविमृष्ट विधेय अंस इहीं दोस कौ नाम ॥ सावधान आगें सुनौ और दोष इक वाम ॥
दियौ भवानी भर्तु पद पायौ बहु संतोष । याही कहै विरुद्धमति यहै महा है दोष ॥

शब्द भवानी कहै सो भव गृहीणी कौं आहि । भान होय पति द्वितिय कौ भर्त्ता कहै जु ताहि ॥
शिव पत्नी भर्ता सुपद सुनतें ही जु विरुद्ध । शब्द करैं जु विरुद्ध मति सो न शास्त्र में शुद्ध ॥
द्विज पत्नि भर्त्ता जु के देहु हाथ में दान । सुनत भयौ इहि शब्दकें द्विवि भर्त्ता कौ ज्ञान ॥
विभवति क्रिया समाप्ति पद फेरि विशेषण आहि । अद्भुतगुन पुनरुक्त यह दूषण वडौ जु ताहि ॥
तीन चरण में देखिये अनुप्रास कौ पौष । एक चरण लखिय तासों भग्नक्रम ये दोस ॥
यदयपि नीकें पांच हैं अलंकार इहि जोय । इनही पांचौ दोष करि अलँकार नास होय ॥
अलंकार दस होय जौ एकहि में जु प्रकास । करै एक ही दोस सव अलंकार गुन नास ॥
जैसैं वपु सुन्दर सकल भूषण भूषित आहि । एक दाग ज्यौं कुष्ठ कौ करै निंदा अति ताहि ॥

तथहि भरत मुनि:—

रसालंकारवत् काव्यं दोषयुक् चेद्विभूषितं । स्याद्वपु: सुन्दरमपि श्वित्रेणैकेन दुर्भगम् ॥

अलंकार ये पांच अव तिन कौ सुनौ विचार । द्वै शब्दालंकार है गुण अर्थालंकार ॥
शब्दालंकृति त्रय चरण अनुप्रास है ताहि । पुन रुक्त वदाभास है श्री लक्ष्मी पद आहि ॥
प्रथम चरन के मध्य में पंच तकार जु पांति । तृतिय चरन मधि पदय के पंच रेफ तिहि भांति ॥
चतुर्थ चरन के बीचमें चारि भकार प्रकास । अनुप्रास या भाँति है शब्द अलंकृत नास ॥
श्रीलक्ष्मी इन शब्द करि एक वस्तु है उक्ति । प्राय लगति पुनरुक्ति है नाहि न जू पुनरुक्ति ॥
श्रीयुत लक्ष्मी अरथ मधि अरथहिं कौ जु विभेद । पुनरुक्ति वदाभाष करि शब्दालंकृति भेद ॥
अर्थालंकृति लक्ष्मिरिव है उपमा जु प्रकास । अर्थालंकृति आन है नाम विरोधाभास ॥
कमल जन्म सुर सरित तें सबही को जु सुबोध । गंगा जन्म जु कमल तें है अत्यंत विरोध ॥
इहां बिष्णु पद पद्म तें गंगा जन्म जु आहिं । इहां विरोधालंकृती करी चमत्कृति ताहि ॥
प्रभु अचिन्त्य शक्तिहि भयो गंगा कौ जु प्रकास । याही तें जु बिरोध नहिं है जु विरोधाभास ॥

तथाहि—अम्बुजमम्बुनि जातं क्वचिदपि न जातमम्बुजादम्बु । मुरभिदि तद्विपरीतं पादाम्भोजान्महानदी जाता ॥

साध्य वड़ाइ गंगा की साधन तिहि निरधार । विष्णु पाद उतपत्ति यह अनुमानालंकार ॥
एई पंच अलंकृतिहि पंच दोष हैं ताहि । ज्यौं सूक्ष्म जु विचारियै तौ अपार ये आहि ॥
प्रतिभा की कविता जु में तुमकौ देय प्रसाद । अविचारहि जु कवित्त में परै दोष कौ वाद ॥
करै कवित्त विचारि के निरमल वह ही होय । सहित अलंकृति अर्थ भौ करै चमत्कृति सोय ॥
सुनि प्रभुके व्याख्यान दिग्विजयी विस्मित होय । मुख निकसत नहि वचन है प्रतिभास्तंभित सोय ॥
पढ़ुवा वालक नें कियौ मेरी मति कौं लोप । जान्यौ देवि सरस्वती मोकौं कीनौ कोप ॥
किय निमाइ विख्यान जे मानुष शक्ति न होय । याकें मुख रहि सरस्वति बोलैं जान्यौ सोय ॥
यही भावना करि कहै पंडित सुनौ निमाइ । तुम व्याख्या सुनि कें भये हम विस्मित जु वनाइ ॥
अलंकार नाही पढ़े नही शास्त्र अभ्यास । काहे तें ए तुम सकल कीने अर्थ प्रकास ॥

सुनिकें ताके प्रश्न कौ प्रभु बहुरंगी आहि । जानि हृदय ताकौ दुखी करिकें भँगी ताहि ॥
भलौ बुरौ जानें न हम शास्त्र विचारहि जोय । जो कहायो सरस्वती वानी कही जु सोय ॥
दिग विजई करिकें यही करिकें निहचैं ताहि । शिशु द्वारा देवि करयो मोहि पराजय आहि ॥
विनती करिहौं आजु तिहि करिकें जप अरु ध्यान । वालक द्वारा है करयौ एतौ मुहि अपमान ॥
करवायौ है वास्तवैं सरसुति पद्य अशुद्ध । औसर बीच विचारि कें ढाँपि दई तिहि बुद्धि ॥
हास्य करन लागे तवै सवैं शिष्य गन आहि । तिन सव कौं जु निषेधि प्रभु वोले पण्डित ताहि॥
महा कविनके मुकुटमणि तुम बहु पण्डित ताहि । वाहिर निकसी काव्यकी वानीअसमुख आहि ॥
कहिवे चाहत है कछू उत्तर आवत नाहिं । तव तौ कछू विचारि कें भौ व्याकुल मन माहि ॥
तुव कविता इहि भांतिहै ज्यौ गंगाजल धार । तुमसम कविजु और कोउ लख्यौ नहीं निरधार ॥
भवभूति सु जयदेव कवि औ कवि कालीदास । तिन सव के कबितानि में है जु दोष परकास ॥
यही अल्प करि मानिये गुन औ दोष विचार । कविता करिवे की सकति वही वाखानी सार ॥
शैशव कौ चापल्य हम कछु ना लेहु सुजान । नही हो सकैं आप कें हम तौ शिष्य समान ॥
आजु जाहु घर कालि हम मिलिहैं और जु वार । सुनिहैं पुनि मुख आपके सवही शास्त्र विचार॥
इंही भांति निज घर गये दोऊ जन सुविचार । जाय विप्र घर सरसुती किय आराधन सार ॥
स्वप्न वीच में सरसुती कय आदेश जु ताहि । ईश्वर ही साक्षात करि प्रभु कौं जानौ आहि ॥
तिन आगैं मो शक्ति नहिं करिवैं कछु विचार । तातें तिहिं ढ़िग जाय कैं प्रणति करौ वहुवार ॥
आय तहीं परभात ही प्रभुपद सरनजु लीन । कृपा महाप्रभु की जु तिहि खण्डन वंधन कीन ॥
ए लीला वरनी सकल श्री वृन्दावन दास । जो कछु हैं जु विशेष सो इहां करी जु प्रकास ॥
श्री चैतन्य गोस्वामि की लीला अमृत धार । तृप्ति होति सव इंद्रियें श्रवन सुनत निरधार ॥
श्री रूपहि रघुनाथ के चरननि जाकैं वास । श्री गौर चरित अमृत कौं कहत कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । गौर चरित कौं करत है वृजभाषा हि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे कैसोरलीलावर्णनं नाम षोडशपरिच्छेदः

सप्तदश परिच्छेदः

वन्दे स्वैराद्भुतेहं तं चैतन्यं यत्प्रसादतः । यवनाः सुमनायन्ते कृष्णनामप्रजल्पकाः ॥

जय जय प्रभु चैतन्य जू जै श्री नित्यानंद । जय जय श्री अद्वैत जू जय प्रभु भक्तनि वृन्द ॥
जो लीला कैशोर तिहि सूत्र जु गन किय ताहि । जौवन लीला सूत्र कौ अनुक्रम करियै आहि ॥

विद्यासौन्दर्य्यसद्वेश सम्भोगनृत्यकीर्तनैः । प्रेम नाम प्रदानैश्च गोरो दीव्यति यौवने ॥
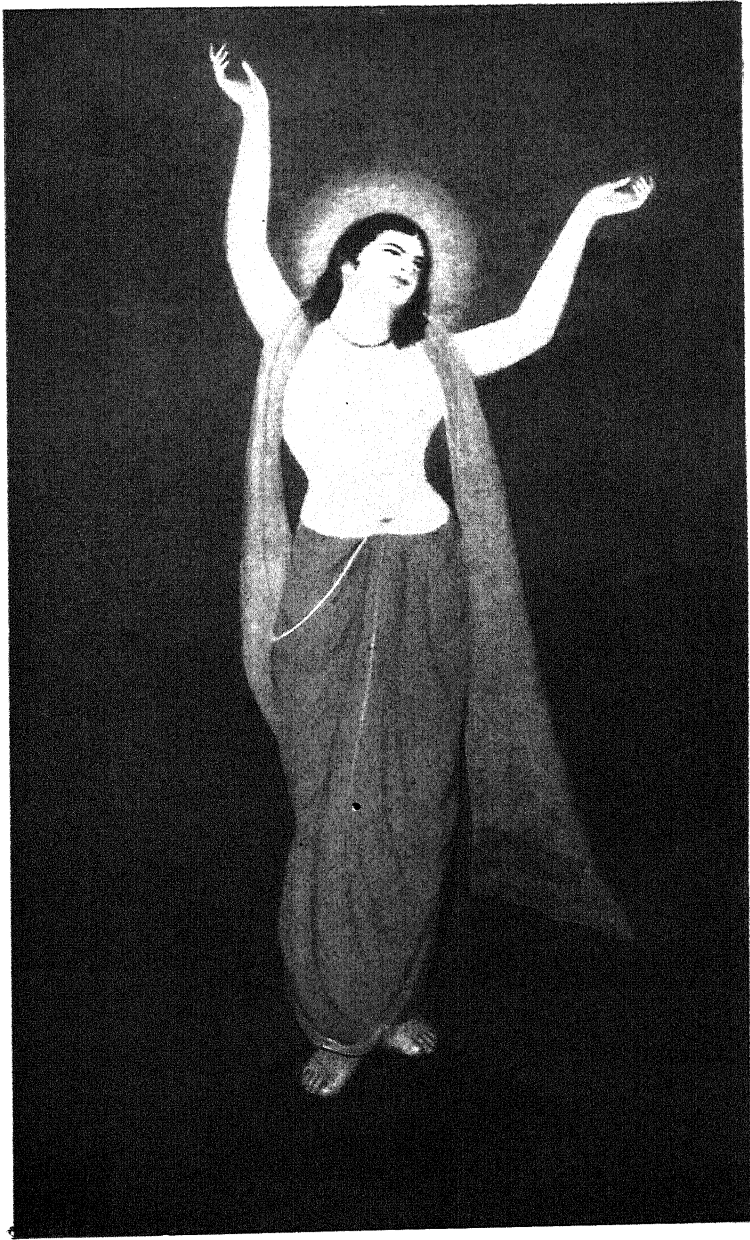
गया से प्रत्यावर्त्तनकारी प्रेमाविष्ट श्रीगौराँग

अंग विभूषन अंग है जौवन के जु प्रवेस । चंदन माल्य सुदिव्य तिहि वस्त्र दिव्य सब वेस ॥
विद्या के औद्धत्य करि गने न काहू सोय । पण्डित सब ही जीति करि तिन्हैं पढ़ावैं जोय ॥
वात रोग के छल जु करि कीनौं प्रेम प्रकास । जन यूथनि करि वंचना करैं जु विविध विलास ॥
गमन गयाकौं महाप्रभु तब हीं कियौं जु आहि । भयौं जु ईश्वर पुरी सँग मिलन तहांई ताहि ॥
दीक्षा कें पीछे कियौं प्रभूजु प्रेम प्रकास । फेरि आगमन देस करि कियौं प्रेम विलास ॥
तबै मिलन अद्वैत कौं प्रेम दान सचि सोय । विश्वरूप दर्शन लह्यौ श्री अद्वैतहि जोय ॥
गृह मधि प्रभु अभिषेक जू कीनो श्रीनिजुवास । खाट बैठि प्रभुजू कियो निज ऐश्वर्य्य प्रकास ॥
नित्यानंद स्वरूप कौं तबै आगमन आहि । प्रभु कौं मिलि पायौ तिन्ह षड़भुज दरसन ताहि ॥
तिन कौं षड़भुज प्रथमही प्रभु दरसन दियौ जोय । शंख चक्र पकंज गदा धनुष वेणु धर सोय ॥
तबै चतुर्भुज भये प्रभु ललित त्रिभंगी सोय । द्वै कर वेणु बजावहीं शंख चक्र कर दोय ॥
केवल वंशीवदन प्रभु भये द्विभुज पुनि सोय । पीत वसन अरु श्याम तनु नंद नँदन है जोय ॥
तब हीं नित्यानंद कौं व्यास जु पूजा सोय । नित्यानंद आवेस करि मूसल धारयौं सोय ॥
राम कृष्ण भाई जु द्वै लखैं शची तिहि वार । तबै जगाई माधाई दोउन किय निस्तार ॥
सात प्रहर प्रभु के तबैं भयौ जु भावावेस । जैसैं जैसैं भक्तगन तिनतें लखे विसेस ॥
शुक्लाम्बर के कियौं तब तंडुल भक्षण आहि । हरेर्नाम या श्लोककौं किय विवरण तब ताहि ॥

हरे र्नाम हरे र्नाम हरेर्नामैव केवलं । कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गति रन्यथा ॥

नाम रूप कलिकाल में हैं जु कृष्ण अवतार । नाम हि तें ह्वै है तहां सब जग कौ निस्तार ॥
दार्ढ्य हेत हरि नाम की उक्ति वार त्रय आहि । जड़ लोकनि में ज्ञातही एव कार फिरि ताहि ॥
केवल पद करि फेरि हूँ निश्चै करन जु सोय । ज्ञान जोग तप कर्म कौ कियौ निवारण जोय ॥
कोऊ नहि मानें अन्यथा ताकौ नहि निस्तार । नहीं नहीं तामें कहैं एव कार त्रय वार ॥
लैवौ नाम सदा जु ह्वै तृण ते नीच निदान । आपुन ह्वै अभिमान विनु जीवनि दैवो मान ॥
तरुकी सम जु सहिष्णुता हरि जन करिवे आहि । भर्त्सन ताडन करो किन कछु कहिवे नहि ताहि ॥
कोऊ जो तरु काटई कछु न वोलै जोय । सूखि जाय मांगे न कछु काहू पै जल सोय ॥
काहू सों मांगे न कछु इहि विधि वैष्णव जोय । अमृत वृत्ति है साक फल मिलै खायवै सोय ॥
नाम निरंतर लेय औ यथा लाभ संतोष । यह आचार करै जु हरि भक्ति सुधन कौ पोष ॥

तथहि श्री मुख शिक्षा—

तृणादपि सुनीचेन तरोरपि सहिष्णुना । अमानिना मानदेन कीर्तनीयः सदा हरिः ॥

ऊर्द्ध वाहु करि कहौं हौं सुनौं भक्त जे लोक । नाम सूत्र मधि गुहिसु इहि पहिरौ कंठ जु श्लोक ॥
प्रभु आज्ञा करि करें इहि पद आचरण हि जोय । पैहै तबै अवश्य करि कृष्ण चरन रज सोय ॥
तब प्रभू जु श्रीवास कें गृह जु निरंतर जोय । निसि संकीर्तन कियौ रहि एक वरस लौ सोय ॥

कीर्त्तन करैं कपाट दै भरैं प्रेम आवेस । आवैं पाषंडी हसन पावैं नही प्रवेस ॥
पाखण्डी सुनि कीर्तन हि जरि बरि मरैं जु सोय । श्री निवासके दुःख हित करैं जुक्ति बहु जोय॥
एक दिना इक विप्र जो चापल नाम गुपाल । पाखंडिन में श्रेष्ठ सो दुर्मुख अति वाचाल ॥
देवो पूजा की जु सब सामिग्री ले आय । श्री जुवास के द्वार पै स्थल लीप्यौ जु बनाय ॥
तहां कदलि के पत्र पर औड़ पुष्प धरि जोय । हरदि सिंदुर जु अरुन फल तंडुल राखे सोय ॥
मदिरा पात्र भरि धरिकै सो निज घर गौ आहि । श्रीजूवास प्रातहि उठि लखौ तहां तब ताहि ॥
बड़े बड़े सब लोक जे ल्याये तिन्है बुलाय । श्री निवास जू कहैं यौं हसि हसि सबनि सुनाय ॥
नित्य रात्रि कौं करैं हम देवी पूजन सोय । मम महिमा देखौ सकल द्विज सज्जन हैं जोय ॥
सिष्ट लोक सब देखिकें करैं जु हा हा कार । ऐसौ कर्म कियौ जु तिहि कौंन निंद्य आचार ॥
नीच ल्याय कै द्रव्य सब दूरि करायौ सोय । गंगा जल गोवर मिलै स्थल जु लिपायौ सोय ॥
तिहि चापल गोपाल कें तीनहि द्यौस विताय ॥ कुष्ठ भयौ सब अंग में धारा रुधिर बहाय ॥
सबअँग वेष्टित कृमिजु करि डसैं निरन्तर ताहि । दुःसह वेदना दुखहि करि पजरै अन्तर आहि॥
घाट सुरधुनी वृच्छ तर परयौ रहै द्विज सोइ । एक दिना वोल्यौ कछु प्रभु कौं देखि जु जोय ॥
हौं जु ग्राम सम्बंध करि तुव मातुल हौं आहि । कुष्ठ व्याधिभौ मानिजे हौंअति व्याकुल ताहि ॥
सब ही लोक उद्धार हित हैं तुम्हारौ अवतार ॥ बडौ दुखी हौं करौ तुम अब मेरौ उद्धार ॥
यह सुनि के प्रभु जू भये महाक्रोध मन माहि । कहैं जु क्रोधावेस करि तर्जन बचन सुताहि ॥
करवायौ श्री वास कौं देवी पूजन ताहि । कोटि जन्म ह्वै है जु तुव रौरव पतन जु आहि ॥
पाखण्डी संहार हित है मेरौ अवतार । पाखण्ड जु संहार करि करि हौं भक्ति प्रचार ॥
ऐसें कहि प्रभु तब गये करन सुरधुनी स्नान । दुख पावै पापी वही जाय नही तिहि प्रान ॥
करि सन्यास जु प्रभु गये नीलाचल तब सोय । आये जब फिरि तहाँ ते कुलिया ग्रामहि जोय
तिहि पापी नें तब तहां लियौ शरन प्रभु जोय । हित उपदेस कियौ तबै हृदे करुन अति होय ॥
भौ पण्डित श्री बास कौ तौसों अति अपराध । तहां जाहु तेई करैं जौ तुब कृपा अगाध ॥
तब तेरौ ह्वै है जु यहि पाप विमोचन आहि । जो फिरि ऐसें करैगौ नहीं आचरन ताहि ॥
सरन लियौ श्रीवास कौ तब तिहि पापी आहि । भयौ जु तिनकी कृपातें पाप विमोचन ताहि ॥
देखन आयौ कीरतन और एक द्विज आहि । द्वारपाल भीतर तबै जान दियौ नहि ताहि ॥
निज घर गयौ जु विप्र सो मन अति दुखी जु होय । गंगापथ में प्रभु कौं लखि कहै और दिन सोय॥
हौं तुमकौं अब सांपि हौं पायौ दुख जु अखंड । तोरि जनेऊ सांपई दुर्मुख महा प्रचण्ड ॥
प्रभु तुमरौ संसार सुख सब ही होहु विनास । सुनिकें साप बढ्यौ जु अति प्रभु कें हिये हुलास ॥
साप बात प्रभु की सुनें जो श्रद्धायुत आहि । परित्राण ह्वै है सदा ब्रह्म साप तें ताहि ॥६०॥
मुकुन्द दत्त कौ तब कियौ प्रभु जू दण्ड प्रसाद । खण्डन ताकौ हृदै कौ भयौ जु सब अवसाद ॥

प्रभु जु श्री आचार्य की करैं भक्ति गुरु जोय । यातें श्री आचार्य की महा दुखित मति होय ॥
भंगी करिकैं तब कियौ ज्ञान मार्ग विख्यान । प्रभु जू क्रोधावेस करि किय तिनकौं अपमान ॥
आचारज गोस्वामि कें तब आनँद भौ हीय । लज्जित ह्वै कें महाप्रभु तब प्रसाद तिहि कीय ॥
गुप्त मुरारिहि वदन तें सुन्यो राम गुन ग्राम । प्रभु जु लिख्यौ ललाट पर रामदास तिहि नाम ॥
श्रीधर जू कै लोह के पात्र कियौ जलपान । सबही भक्तनि कौं दियौ प्रभु इष्ट वर दान ॥
ठाकुर श्री हरिदास कौं कियौ प्रसाद अगाध । आचारज ढिंग मात कौ छिमवायौ अपराध ॥
महिमा कही जु नाम की भक्त गणनि प्रभु आहि । सुनि एक पढुवा कह्यौ अर्थवाद जो ताहि ॥
नाम स्तुति में वाद सुनि प्रभु के दुख भौ आहि । प्रभु सकोप वरज्यो लखौ मति कोऊ मुख याहि ॥
संग सचैल कियौ जु प्रभु गंगा जाय सिनान । अद्भुत महिमा भक्त की तहां जु कही बखान ॥
ज्ञान जोग कर्मादि करि नहीं कृष्ण बस होय । एक हेतु बस कौ जु तिहि प्रेम भक्ति रस जोय ॥

श्रीभागवते—

न साधयति मां योगो न सांख्यं धर्म उद्धव । न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो यथा भक्तिर्म्ममोर्जिता ॥

प्रभु जू कहत मुरारि कौं तुम जु कृष्ण बस कीय । सुनि कै पद्य पठन लगे श्रीमुरारि रस हीय ॥

तथाहि—क्वाहं दरिद्रःपापीयान् कः कृष्णः श्रीनिकेतनः । ब्रह्मबन्धुरिति स्माहं बाहुभ्यां परिरम्भितः ॥

कवित्त—

एक दिन प्रभु सब भक्तनि कौं संग लैकैं कीरतन करैं रस श्रम युत भये हैं ।
एक आंम बीज लैकैं आंगन में रोप्यो प्रभु ताही छिन जम्यौ वृच्छ साखा बहु छाये हैं ।
देखत ही देखत में फल्यो बहु पाक्यो फल देखि सब भक्तनि सु अचिरज ठये हैं ।
द्वैसै फल झारि लैकें धोय तिहि गंगा नीर नीकी भांति कृष्ण जू कौं भोग सुलगाये हैं ।

बरन अरुण औ पीत ते छिलका गुठलि न ताहि । एकहि फल भक्षण कियैं उदर भरैं इक आहि ॥
देखि भये संतुष्ट श्री शचीनंद जू ताहि । सबकौं प्रथम खवाय के फिरि भक्षण किय आहि ॥
जिनमें नहिं है आँस कछु अमृत जु रस मय सोय । एकहि फल को रस पियें उदर सुपूरित होय ॥
याही विधि ते आम्र फल प्रति दिन द्वादस मास । पान किये सब वैष्णवनि प्रभु कें हियें हुलास ॥
ए सब लीला करैं प्रभु शचिनंदन जू सोय । जानै नहि बहिरंग जन जाने निज गन सोय ॥
इहि विधि द्वादस मास प्रति दिन दिन प्रति भगवान । आम्र महोत्सव करैं जू कीर्तन के अवसान ॥
प्रभु कीर्तन करत में आये मेंह गन जोय । अपनी इच्छा कै कियौ मेघ निवारण सोय ॥
प्रभु पण्डित श्रीवास को इक दिन आज्ञा दीय । बृहत सहस्र नाम पढ़ौ सुनिबे कौं भौ हीय ॥
आयौ ताकौ पढ़न में श्रीनृसिंह कौ नाम । सुनि आविष्ट भये जु प्रभु गौर अंग निज धाम ॥

गदा हाथ लैकैं जु प्रभु श्रीनृसिंह के भाय। पाखण्डिन संहार हित चलै नगर कौं धाय ॥
देखि नृसिंहाकृति महातेजो मय सब ताहि। भजैं लोक पथ छाड़ि कै पाय वड़ो भय आहि ॥
सकल लोक भय देखि कैं वाह्य भये प्रभु जोय। श्रीजुवास घर जायकै गदा फेंकि दिय सोय ॥
कहैं प्रभु श्रीनिवास सों करि विषाद अति सोय। भयो मोहि अपराध जे रह्यौ लोक भय जोय ॥
ते जु कहैं तुव नाम जिहि रसना करै प्रकास। कोटि कोटि अपराध तिहि होय तिही छिन नास ॥
कियौ नही अपराध औ कियौ लोक निस्तार। जिनि जिनि देख्यौ प्रभु तुम्हैं छूट्यौ तिहि संसार ॥
ऐसैं कहि श्रीवास जू प्रभु सेवन किय आहि। आये अपनें भवन तव तुष्ट होय प्रभु ताहि ॥
और जु दिन शिव भक्त इक शिव के गीतहि गाय। प्रभु आँगन नृत्य हि करै डमरू वाद्य बजाय ॥
ह्वै आवेस महेस के शचीसुनु जु आहि। नृत्य कियो वहु छण प्रभू कांधे चढ़ि कें ताहि ॥
भिक्षुक एक जु और दिन मांगन आयौ जोय। प्रभु नृत्यहि लखि नृत्य कौं लाग्यौ करन जु सोय॥
भिक्षुक परम हुलास सों प्रभु सँग नाचें जोय। प्रभु जू ताकौं प्रेम दिय बढ्यौ प्रेम रस सोय ॥
और दिन इक ज्योतिषी आयो जिहि सव ज्ञान। तासौं यौं पूछयौ जु प्रभु करिकें वहु सनमान ॥
पूर्व जन्म हौं कौन हौं कहि गनि लग्न विचार। गणन लग्यौ सर्वज्ञ सो सुनि प्रभु वाक्य सुसार ॥
जग अनंत बैकुण्ठ औ सवके आश्रय सोय। देखैं गणक सु ध्यान में महा ज्योतिमय जोय ॥
परम ब्रह्म परतत्व जो परम अधीश्वर जोय। प्रभु मूरति सर्वज्ञ लखि भयौ चकित अति सोय ॥
सकै वोलि नहि सो कछू रह्यौ मौन गहि आहि। कहन लगे तव फेरि जब कियौ प्रश्न प्रभु ताहि ॥
प्रभू जु तुम पहिलें हुते सव जग के जु निधान। जो है सर्वेश्वर्य मय परिपूरण भगवान ॥८॥
पहिलें जैसैं हुते तुम अव हूं सोई रूप। नित्यानँद दुर्वोध अति है तुम्हरौ स्वरूप ॥
कछु नहिं जान्यौ गणक तुम प्रभु हँसि कह्यौ जु ताहि। हुँतौ आगिले जन्म में गोप जाति हों आहि ॥
गोप जाति में जन्म लै भौ गायनि रखवाल। तिही पुण्य करि अव भयो हौं जु विप्र कौ वाल ॥
कहै ज्यौतिषी ध्यान मधि वहु लख्यौ हौं आहि। भयौ चकित हों देखिकें अति ऐश्वर्य्य हि ताहि ॥
वहू रूप यह रूप औ देखे एकाकार। कभू भेद लखिये जु यह तुम माया निरधार ॥
जो हो सो तुम तुम्हें नमस्कार मम आय। कियौ ताकौ सनमान प्रभु दियौ प्रेमधन ताय ॥
वैठे मण्डप विष्णु के एक दिना प्रभु जोय। मधु आनय आनय सुमधु कहै उच्च सुर सोय ॥
नित्यानन्द गोस्वामि जू जान्यौ तिनकौ भाय। गंगा जल कौ पात्र भरि धरयौ जु सन मुख आय ॥
नाचैं प्रभु जल पान करि मद विह्वल अति होय। लीला कर्षणतरणिजा सवै दिखाई सोय ॥
अनुकृति सव वलदेव की गति मदमत्त सुठार। आचारज शेखर जु तिहि देख्यौ रामाकार ॥
बनमाली आचार्य जू लख्यौ स्वर्ण हल ताहि। नृत्य करें आवेस सों विहवल सब मिलि आहि ॥
इहि विधि नृत्य भयौ तहां चारि पहर लौं जोय। संध्या गंगा स्नान करि समें गये गृह सोय ॥
प्रभू जू नगर जनन कौं जवै सु आज्ञा दीय। होंन लग्यौ अति कीरतन घर-घर उत्सव कीय ॥

हरये नम कृष्णाय नम यादवाय नम आहि। गोविंद गोप श्रीराम जू मधुसूदन नम ताहि ॥
करें कीरतन उच्च धुनि बजि मृदंग करताल। हरि-हरि धुनि विनु नाहि नें सुनिये अरु तिहि काल ॥
सुनि आये अति क्रुद्ध ह्वै सकल यवन गन सोय। आये काजी पास सब कियौ निवेदन सोय ॥
साझ समें काजी कुपित आयौ इक गृह जोय। फोरि मृदंग सब जनन सों कहन लग्यौ तब सोय ॥
हिंदुवानी अब लौं प्रगट करी न काहू जोय। अब जो ऊधम कियौ तुम कहा जानि कै सोय ॥
सकल नगर में करौ जिनि कोऊ कीर्तन आहि। हौं तौ निज घर जात हौं आजु छमा करि ताहि ॥
आगे कीर्तन करत जो सुनि पाऊं गो जाहि। करि हौं ताको जाति विनु सब धन लैहों ताहि ॥
ऐसैं कहि काजी गयौ सबै नगर को लोक। कियौ निवेदन प्रभु निकट हिये पाय बड़ शोक ॥
जावौ प्रभु आज्ञा दई कीर्तन करौ निसंक। अब हों तिन्है संघारि हौं सकल जबन जे रंक ॥
लोक सबै गृह जाय कैं करैं कीरतन आहि। काजी के भय सौं रहित मन चिंता नहिं ताहि ॥
तिन सबकौं संकोच कौ प्रभु मन में अनुमाय। लागे लोगनि सौं कहन सब कौं टेरि बुलाय ॥
नगर-नगर में आजु हों कीरतन करौं जोय। देखें काजी कौंन है हमें निवारें सोय ॥
ऐसें कहि संध्या चले गौर राय रसलीन। तबैं कीरतन के किये संप्रदाय प्रभु तीन ॥
आगे नृत्य करैं सरस संप्रदाय हरिदास। मधि नाचें आचार्य जू हिय में अधिक हुलास ॥
संप्रदाय पाछें करैं नृत्य गौर रसकंद। तिन सँग नाचें कहैं हरि प्रभु श्री नित्यानन्द ॥
यह मंगल चैतन्य में श्री वृन्दावनदास। नीकें प्रभु की कृपाबल वर्णन किय करि व्यास ॥
इहि विधि कीर्तन करत सब नगर कियौ संचार। भ्रमत भ्रमत ऐसें गये प्रभु काजी के द्वार ॥
तर्जें गर्जें नगर के करैं कुलाहल चाहि। गौरचंद्र बल करि सकल प्रेममत्त अधिकाय ॥
काजी कीर्तन धुनिहि सुनि गृहमधि लुक्यौ जु सोय। तर्जन गर्जन सुनें सो तऊ न बाहिर होय ॥
ढाहै तिहि गृह कुसुमवन उद्धत लोक अपार। तिहि वृन्दावनदास जू वर्णन किय विस्तार ॥
तब प्रभु बैठे द्वार तिहि हृदे दया अधिकाय। भव्य एक जन प्रेरिकैं काजी लियौ बुलाय ॥
आयो दूरि हिते जु तिहि माथौ दियौ नबाय। बैठायौ प्रभु ताहि तब करि सनमान बनाय ॥
कहैं प्रभु आये जु हम अभ्यागत तुव गेह। हमकौं देखि दुरे जु तुव कौंन धर्म मत एह ॥
सो जु कहै प्रभु सुनौ तुम आये कुपित सु होय। तातें तुम्हरे सांति हित रह्यौ जु दुरि हों सोय ॥
इहि छिन तुम हरषित भये तब हों मिल्यौ जु आय। तुमसे अतिथि लहै सु मम भाग्य कौं न अधिकाय ॥

कवित्त—

चक्रवर्त्ति चाचा लगै मेरे ग्राम नातें करि देहनातें हुतें सांचौ नातौ सही सोई है।
नीलाम्बर चक्रवर्ती मामा तुव लगैं तातें मेरे भानिजे हौ तुम जाते क्रोध होई है।

मातुल कौ अपराध भानजौ न धरै हियैं कहैं दोऊ कथा गुप्त जानें नह कोई हैं।
कहैं प्रभु प्रश्न लियैं आये तुम पास काजी कहै आज्ञा करौ तुम मनमें जु सोई है ॥

प्रभु कहैं गोपय पियौ तातें गो तुम मात। वृष उपजावै अन्न सब तातें सो तुम तात ॥
तात मात कौं मारि कें खाहु कौन इह धर्म। कहौ कौन के वल जु तुम करौ इतेक विकर्म ॥
है तुम्हरे काजी कहैं जैसैं वेद पुराण। हमरे हूँ तैसें जु है शास्त्र किताव कुरान ॥
एक निवृत्ति प्रवृत्ति औ दोय मार्ग किय ताहि। जीव मात्र को वध मनें कियौ निवृत्ति में आहि ॥
आज्ञा गोवध करन की है प्रवृत्ति मग आहि। आज्ञा बल करि बध करैं नहीं पाप फल ताहि ॥
वेद तुम्हरे में जु है गोवध वानी जोय। याही तें गोवध करें बड़े बड़े मुनि सोय ॥
प्रभु कहैं वेद मनें करें गोवध कौं निरधार। यातें हिंदुमात्र नहिं गोवध करै विचार ॥
तब मारैं प्राणी जु तिहि सकै जिवाय जु ताहि। यहै सु वेद पुरान कौ आज्ञा वचन सु आहि ॥
जीर्णदेह जिहि धेनु लो होय तरुणि तिहि वार। याही तें वध नहीं नें है सो तिहि उपकार ॥
जैसि नही कलिकाल में विप्रनि शक्ति विशाल। याही तें गोवध करै नही कोऊ इहि काल ॥

तथाहि—अश्वमेधं गवालम्भं सन्न्यासं पलपैतृकं। देवरेण सुतोत्पत्ति कलौ पञ्च विवर्जयेत् ॥

सकौ नही जु जिवाय तुम है वधमात्र जु सार। यातें तुम्हरौ नरकतें नाहिन है निस्तार ॥
रोम जिते गो अंग में तिते जु वर्ष हजार। परि रौरव में गोवधी नहि ताकौ उद्धार ॥
कर्त्ता जो तुव शास्त्र कौ सो जु भ्रांत भौ आहि। विनु जानें यों सास्त्र हिय आज्ञा दीनि ताहि ॥
सुनि सों थकित भयौ वदन आवै वचन न ताहि। काजी कहै विचारि करि मानि पराभव आहि॥
पण्डित जू तुम कह्यौ जो सबै सत्य है ताहि। सास्त्र हमारौ आधुनिक नहि विचार है ताहि ॥
कल्पित हमारौ शास्त्र है हम सब जानैं आहि। तऊ जाति अनुरोध करि मानें शास्त्रहि ताहि ॥
यवन शास्त्रसों सहज ही अदृढ़ विचारहि आहि। हँसिकें पूछन लगे प्रभु और वार कछु ताहि ॥
प्रश्न करै इक और हम मामा सुनौजु ताहि। कहि यथार्थ छलकारि हमें छलियौ जिनि तुम आहि ॥
होय तुम्हारे नगर में सदा कीरतन जोय। वादय गीत संगीत औ नृत्य कुलाहल सोय ॥
हिन्दु धर्म विरोध कौं तुम काजी अधिकार। मनें करौ नहि हेतु किहि समझि सकै न विचार ॥
काजि कहै जु सव तुम्हैं कहै गौर हरि जोय। तिहि नाम करि हरि तुम्है करें संवोधन सोय ॥
इही प्रश्न कौ गौरहरि कारण सुनौ जु आहि। होंय जवै एकांत तव करौं निवेदन ताहि ॥
प्रभु जु कहैं ए लोक सव अन्तरंग मम जोय। कहौ जु तातें प्रगट ही नहीं कछु भय सोय ॥
तिहि दिन हौं काजी कहै गयो हिंदु घर आहि। आयौ कीर्तन करि मने फोरि मृदंगहि ताहि ॥
तिहीं रात्रि में सिंह इक महा भयंकर जोय। सिंह वदन नरदेह अति गर्जन करै जु सोय ॥
सज्जा मेरी पर तवै चढ़े कूदिकें सोय। कट कट दंत जु मुख करै अट्टहाँस अति जोय ॥

मेरी छाति नखनि दै बोले सुर अति घोर। सब मृदंग पलटै जु तुव उदर डारिहौं फोरि ॥
मने कियौं मम कीरतन करिहौं तेरौ नास। आंखि मूँदि कांपौं जु अति हिय भय पाऊं तास ॥
भीति देखि सिंह कह्यौ हृदय सदय अति सोय। तुव सिच्छा के हेतु तुव कियौ पराजय जोय ॥
ता दिन तें कीनौं नहीं याते बहु उतपात। तातें आजु छमा कियौ नाहि कियौ तुव घात ॥
ऐसैं फिरि जौ करै गो तव सहिहौं नहि ताहि। तोहि वंसहि मारि सब जवनन हति हौं आहि ॥
इतनौ कहि सिंह जु गये भौ मेरे भय सोय। ये देखौ नख चिन्ह तिहि है मेरें हिय जोय ॥
ऐसैंकहि काजी तिन्हैं दिय निज हियौ दिखाय। सुनिकैं लोक हँसे जू अति अचिरज हिय पाय ॥
काजी कहै जु यह कथा करौ न कहूँ प्रकास। एक पियादौ तिही दिन आयौ मेरे पास ॥
आय कही हौंगो मनें करन कीरतन जोय। मेरे मुख उलका अगिनि लगी अचानक सोय ॥
डाढ़ी सब जरि मुख भये बड़े फफोलक आहि। गयो प्यादौ जोइ जहां भइ रीति यह ताहि ॥
बोल्यौ हौं तिहि देखि कें हियें जयौ भय पैठि। मनें करौ जिनि हिंदुवनि रहैं सबै घर बैठि ॥
होंन लग्यौ स्वछंद तब नगर कीरतन जोय। सुनि सब आये म्लेछ मम कियौ निवेदन सोय ॥
हिन्दुन कौ या नगरमें बाढ्यौ धर्म अपार। हरि हरि धुनि बिनु और कछु नहि सुनियेजु विचार ॥
और कहैं हिंदु करैं कृष्ण कृष्ण रस पूरि। नाचैं गावैं धुनि करैं हसैं जाय गडि धूरि ॥
हरि हरि करि हिंदू सबै करैं कुलाहल जोय। पातशाहि जो यह सुन करै कैद तुम सोय ॥
तब तिन जवन सौं जु हौं पूछ्यौ ऐसैं आहि। जान्यौ हिंदु नाम लै यह सुभाव है ताहि ॥
तुम हिंदुन के इष्ट के नाम निरन्तर आहि। जवन होय के लेत हौ कारण कहा जु ताहि ॥
म्लेछ कहै हिंदूनि कौं बोलत हम परिहास। कृष्णदास काहू कह्यौ कह्यौ काहु हरिदास ॥
रामदास काहू कह्यौ हरि हरि बोलत सोय। जानौ घर कौ धन किहू लिय चुराय कें सोय ॥
रसना तबहीं ते जु हम बोलैं हरि हरि आहि। इच्छा नहिं तब हूँ कहै करैं उपाय जु ताहि ॥
और म्लेछ भाषै सुनौ हम हूं इहि विधि जोय। हिंदुनि कौ परिहास किय तिही दिनातें सोय ॥
कृष्ण नाम जिह्वा कहै बरजि न मानें सोय। मंत्रौषधि मानों करौ कछु हिन्दू गण सोय ॥
ऐसैं सुनि तिन सबनि कौं घर कौं दियौ पठाय। हिन्दू पाखंडी तबै पांच सात ढिग आय ॥
कहैं निमाई नास किय हिंदुन कौ सब धर्म। किय प्रवृत्त जो कीरतन कहूं सुन्यौ नहिं कम ॥
शिव चण्डी मंगल दिवस करैं जागरन आहि। वादच नृत्य औ नरनकौ योग्य आचरण ताहि ॥
प्रथम निमाई शांत हौ पण्डित कैसी रीति। आय गया तें अब कछू करि प्रवृत्ति विपरीत ॥
गीत जु गावत उच्च करि करतालीनु बजाय। रब मृदंग करताल कौ लगै श्रवण सौ आय ॥
नाचैं गावैं मत्त ह्वै नहिं जानैं कछु खाय। क्रन्दन करैं हसैं उठैं परैं भूमि गड़ि जाय ॥
मत्त नागरिक किये करि सदा कीरतन जोय। गई नींद निसि जागरन सकैं न कोऊ सोय ॥

नाम निमाई छांडि अब गौर हरी सु कहाय ।धर्म नष्ट हिंदून कौं किय पाखण्ड चलाय ॥
कृष्ण कीरतन करें सब स्वपच आदि है जोय। इही पाप करि ग्राम सब ऊजर ह्वै है सोय ॥
हिंदुन के हैं शास्त्र में नाम मंत्र बड़ जानि । ताहि सुनें सब लोक के मंत्र वीज ह्वै हानि ॥
तुम ठाकुर सब ग्राम के सवै प्रजा तुम आहि । बोलि निमाई कौं अवै मनैं करौ तुम आहि ॥
तब तौ मैं बहु प्रीतिकरि कह्यौ सवनि सौं आहि । सब घर जावो बोलि हौं मनें जु करिहौं ताहि ॥
हिंदुन के जो ईस बड़ नारायण भगवान। सोई तुम हौ करैं यौं मेरो मन उनमान ॥
यह सुनि कें श्री महाप्रभु हिय अति हरषित होय । काजी कौं छ्वैकें कछू कहन लगे तब सोय ॥
कृष्ण नाम तुव वदन में यहै वड़ौ सुविचित्र । भये पापक्षय सवै तुव भयौ जु परम पवित्र ॥
नारायण हरि कृष्ण यौं तीन वार लिय ताहि। भाग्यवान बडहो जु तुम पुण्यवान वड आहि ॥
यह सुनि जलधारा वहै काजी के युग नैंन । छ्वै कें प्रभु के पदकमल कहै मधुर प्रिय वैंन ॥
तुम प्रसाद तें भई मम दुर्मति सवै जु नास । रहै जु तुम में भगति मम करौ कृपा जु प्रकास ॥
माँगत तुम सों दान इक यहै कह्यो प्रभु जोय । कृष्ण कीरतन कौ विघन ज्यौं नदिया नहिं होय ॥
बोल्यौ सो ममवंश में जे उपजेंगे आहि । तिन सब कौं दैहौं सपत मनें करें नहिं ताहि ॥
सुनि प्रभु हरि हरि बोलिकैं उठेजु हरषित होय । हरि हरि धुनि करिकें उठे सकल वैष्णव जोय ॥
गमन कियौ तब महाप्रभु करन कीरतन आहि । काजी आयौ संग चलि मन आनंदित आहि ॥
तब तौ काजी कौं विदा सचिनंदन जू दीय । आये अपनें भवन तब नाचत हरषित हीय ॥
इहि विधि काजी कौं प्रभू कियौ प्रसाद अगाध । जो कोऊ इहि सुनें तिहि नास होय अपराध ॥
श्री जुवास गृह एक दिन भरे गुसाई रंग । करैं नृत्य भाई जु विवि नित्यानँद प्रभु संग ॥
श्री जुवास के पुत्र कौ भयै तहां पर लोक । श्री जुवास के हिये नहि तउन जनम्यौ शोक ॥
मृत बालक के वदन करि कियौ जु ज्ञान प्रकास । आपुहि विवि भाई भये नंदन श्री जुनिबास ॥
सब भक्तन कौं तवै किय श्री प्रभुजू बरदान । अधरामृत नारायणी कौ दै किय सनमान ॥
सियें बसन श्रीवास के दरजी यबन जु आहि । तहां चतुर्भुज रूप प्रभु दरसन दियौ जु ताहि ॥
देख्यौ हों देख्यौ जु कहि भयौ मत्त अति सोय । नाचै प्रेम भरयौ भौ मुख्य वैष्णव सोय ॥
वंसी प्रभु आवेस में श्री जुवास पै आय । मांगी तिन्है जु तब कह्यौ गोपी लई चुराय ॥
सुनि प्रभु कहौ कहौ कहैं भरि आवेस हुलास । वृदांबन लीला सुरस वरन्यौ श्री जु निबास ॥
माधुरि वृंदाविपिन की प्रथमहि वरणन कीय । प्रभु जू कें सुनिकै जु तिहि आनंद वाढ्यौ हीय ॥
सुनि कें प्रभुजू यौं कहें कहौ कहौ बहुवार । फेरि-फेरि श्रीवास जू कहैं जु करि विस्तार ॥
वेनु वाद्य गोपीन कौं किय आकर्षण जोय। तिन सवहिन के संग भौ ज्यौं वन विहरण सोय ॥
ताही मधि छह रितुन की लीला वर्णन आहि । अरु मधुपान रासोत्सव कही केलि जल ताहि ॥

श्री प्रभु कहौ कहौ कहैं सुनिवे कौ जु हुलास । श्री निवास जू तव कह्यौ अनुपम रास विलास ॥
ऐसैं ही जु प्रभात भौ कहत सुनत ही सोय । श्री जु वास सौं प्रभु मिले हिये तुष्ट अति होय ॥
तव आचारज गृह करी लीला कृष्ण अनूप । तहां महाप्रभु जू भये श्री रुक्मिणी स्वरूप ॥
कवहूँ दुर्गा श्री कभू भये कभू चिच्छक्ति । भक्त गनन कौं खाट पै वैठि दई निज भक्ति ॥
एक दिना चैतन्य कें भये नृत्य अवसान । इक द्विज पत्नी आय कें गहे चरन प्रभु जान ॥
सो द्विज नारी चरन रज लेइ सु वारंवार । प्रभु जु कें भौ देखि कें हिये जु दुःख अपार ॥
दौरि तिही छिन महाप्रभु परे सुरधनी जाय । नित्यानंद हरिदास जू लीयौ तिन्हौ उठाय ॥
घर श्री विजयाचार्य के रहे जु रजनी ताहि । प्रातभयें सव भक्तगन गृह लै आये ताहि ॥
इकदिन वैठे गेह हिय गोपीभावहि जोइ । गोपी गोपी नाम लै प्रभु विषन्न अति होइ ॥
इक पढ़ुवा आयौ तहां प्रभु कौं देखन जोय । गोपी गोपी नाम सुनि कहन लगौ यों सोय ॥
क्यौं न लेहु श्री प्रभु जु तुम कृष्ण नाम अति धन्य । गोपी गोपी कें कहें है है कहा जु पुन्य ॥
कृष्ण दोष उदगार किय सुनि प्रभु कुपित जु होय । पढ़ुवा मारन कौ उठे लाठी लै कैं सोय ॥
पढ़ुवा भय करि भाजौ सु प्रभु तिहि पाछें धाय । तिन पाछें सव भक्तगन चलैजु अति अकुलाय॥
ल्याये प्रभु कौं सांति करि निजगृह सव जन सोय । पढ़ुवन कीजु सभा तहां भजि पढ़ुवा गौ जोय ॥
पढ़ुवा सहस्र पढ़ैं तहां सर्व एक ठां होय । जहां जाय द्विज ने कह्यौ प्रभु वृत्तांत जु सोय ॥
सवै जूथ पढ़ुवान के क्रुद्ध भए सुनि ताहि । करन लगे तवमिलि सवै प्रभु कौ निदंन आहि ॥
चाहै द्विज कौं मारिवौ नहीं धर्म भय ताहि । कियौ निमाई एक लै देस भ्रष्ट सव आहि ॥
जो कवहूँ ऐसै जु फिरि करै मारि हैं ताहि । करि सकि है सो कहा वह कौन मनुष्य है आहि ॥
प्रभु निंदा करि सवन की भयौ वुद्धि कौ नास । सुपठित विद्या कौ नहीं काहू होय प्रकास ॥
होंय नम्र नहिं सव तऊ पढ़ुवा दंभिक सोय। जहां तहां निंदा करैं प्रभु उपहासै जोय ॥
प्रभु सर्वज्ञ दया उदधि तिन दुर्गति जानि । करैं चिंतवन वैठि गृह सव कौ हित हिय ठानि ॥
अध्यापक गण हैं जिते और सिष्य गन ताहि । धर्मी कर्मी तपहि पर निंदुक दुर्जन आहि ॥
मम निंदा अपराध करि ये सव जितने आहि । भक्ति लिवावत हौं तिन्हैं लेय सकैं नहि ताहि ॥
आयौ हौं निस्तार हित भौ विपरीत जु सोय । इन सव ही दुर्जननि कौ कैसे कें हित होय ॥
करैं प्रणति ये ज्यौं हमें पाप नास तौ होय । तव तौ हौं इन सवनि कौं भक्ति लिवाऊं सोय ॥
मोकौं प्रणति न करत ये निंदा कौ जुविचार । हौं अवश्य करि हौं तऊ इनि सवको उद्धार ॥
करि हौं अव सन्यास हौं याही तें निरधार । तव ह्वै हैं ये प्रणत मम संन्यासी जु विचार ॥
ह्वै है इनके पाप को प्रणत मात्र ही नास । तव इनके निर्मल हृदै करि हौं भक्ति प्रकास ॥
इन पाखण्डी सवनि कौ तव ह्वै है निस्तार । नाहिन और उपाय कछु यहै युक्ति है सार ॥

प्रभु नीकें करि गेह में यौं दृढ़ युक्ति विचार । आये केशव भारती नदिया नगर मँझार ॥
प्रभु तिनकौ किय दंडवत और निमन्त्रण आहि । करवाई भिक्षा कछू कियौ निवेदन ताहि ॥
प्रभु नारायण आप तुम हौ ईश्वर निरधार । मम संसृति मोचन करौ करि कें कृपा अपार ॥
कहैं भारती इस तुम अंतर्यामी सोय । जो कराव हौं करौं सो नहि स्वतंत्र हम जोय ।
ऐसें कहि कें भारती गये सु कंटक ग्राम । किय संन्यास जु जाय कें महाप्रभू तिहि ठाम ॥
ससिसेखर आचार्य जू श्रीनित्यानँद आहि । दत्त मुकन्द जु तीनि जन किय सब काज सु ताहि ॥
कियौ जु लीला आद्य कौ सूत्र गणन यह आहि । श्रीबृन्दावनदास किय नीके वर्णन याहि ॥
भये यशोदा तनय सो सचीसूनु जू आहि । भक्ति भाव जो चतुर्विध किय आस्वादन ताहि ॥
निज माधुरि औ राधिका प्रेम स्वाद के चाय । तातें अंगीकार किय नीके राधा भाय ॥
जातें गोपीभाव प्रभु धरयौ हिये एकांत । नँद नदंन कौं मानई तातें अपने कान्त ॥
श्री गोपिन के भाव कौ इक दृढ़ निश्चै आहि । नंद नदँन बिनु और ठां होय उदय नहिं ताहि॥
सुन्दर श्याम जु चन्द्रिका गुंजा भूषित जोय । गोपवेश मुरली बदन ललित त्रिभंगी सोय ॥
या बिनु कबहूं और हरि होंय सु आकृति आहि । तो गोपिनु कौ भावसो निकट जाय नाहि ताहि ॥

तथाहि ललित माधवे—

गोपीनां पशुपेंद्रनन्दनजुषो भावस्य कस्तां कृती विज्ञातुं क्षमते दुरुहपदवी सञ्चारिणःप्रक्रियां ।
आविष्कुर्व्वति वैष्णवीमपि तनुं तस्मिन्भुजैर्जिष्णुभि र्यासां हन्त चतुर्भिरद्भुतरुचिं रागोदयः कुञ्चति ॥

करत रास गिरिराज तट समै वसंत सुजान । राधा सों संकेत करि हरि भौ अंतर ध्यान ॥
बैठि एकान्त निकुञ्ज में देखें राधा वाट । आयौ ढूढ़त तब तहां सब गोपिन कौ ठाट ॥
दूरहि ते लखि कृष्ण कौं कहैं गोपिकावृन्द । देखौ याही कुंज मधि हैं आप कृष्ण चन्द ॥
गोपीगन कौं देखि हरि भयौ जु साध्वस सोय । सकें न ते तब दूरि तहं भये विवश भय जोय ॥
करि कें मूरति चतुर्भुज जके थके ह्वै सोय । आईं गोपी निकट कहि कृष्ण लखे वे जोय ॥
देखि कहैं यह कृष्ण नहि हैं नारायण आहि । ऐसें कहि गोपी करें नुति विनती सब ताहि ॥
नारायण वंदन करौ देव करौ जु प्रसाद । देहु कृष्णसँग हमें तुम खण्डन करौ विषाद ॥
इमि कहि गोपीगन गये करि कैं प्रणति जु सोय । तिही समें श्री राधिका दरसन दीयो जोय ॥
कृष्ण तबहि राधाहि लखि हास्य करन कौं ताहि । सोई मूरति चतुर्भुज चाहैं राख्यौ आहि ॥
दोंय हाथ छिपि गये श्री राधा आगें आहि । कीनौ जतन अनेक करि राखि सके नहिं ताहि ॥
राधा निर्मल भाव कौ है सु अचिन्त्य सुभाव । करवायौ जिहि भाव ने कृष्णहि द्विभुज सुभाव ॥

तथाहि उज्वल नीलमणौ—

रासारम्भविधौ निलीयवसता कुञ्जे मृगाक्षीगणै र्दृष्टं गोपयितुं समुद्धरधिया या सुष्ठु सन्दर्शिता। राधायाःप्रणयस्य हन्त महिमा यस्य श्रिया रक्षितुं साशक्या प्रभविष्णुनापि हरिणा नासीच्चतुर्वाहुता ॥

सोई जसुमति है इहां देवी शची जु मात। सोई व्रज के ईस ह्यां जगन्नाथ हैं तात ॥
सोई नँद नन्दन इहां गोस्वामी चैतन्य। भाई सो वलदेव ह्यां नित्यानन्द अति धन्य ॥
सख्य दास्य वात्सल्य पुनि ये जु तीनि जिहि भाय। सोई नित्यानंद हैं श्री चैतन्य सहाय ॥
प्रेम भक्ति दीनी तिन्हौं जगत वहाय सु आहि। तिनकौ चित्र चरित्र जन समझि सकै नहिं ताहि॥
श्री अद्वैताचार्य जू हैं जु भक्त अवतार। कृष्णहि प्रगट कराय कें कियौ जु भक्ति प्रचार ॥
सख्य दास्य द्वै भाव ये सहजहि जिनि कें आहि। कवहूं प्रभुजू करत हैं गुरु व्यवहारहि ताहि ॥
श्रीनिवास आदिहि जिते महा भक्तगन जोय। करैंजु निज निज भाव करि श्रीप्रभु सेवन सोय ॥
गोस्वामी पण्डित प्रमुख जिनिकें जो रस आहि। ताही ताही रसहि करि हैं जु कृष्ण वस ताहि ॥
वंसी मुख ते स्याम है गोपविलासी जोय। कवहूँ द्विज़ यै गौर हैं कहुँ संन्यासी सोय ॥
याही तें प्रभु आप धरि गोपी भावै ताहि। कहैं वृजेन्द्र कुमार कौं प्राणनाथ करि आहि ॥
सोई गोपी कृष्ण सो यहै वडौ जु विरोध। प्रभु कौ चरित अचिन्त्य सो है अति ही दुरवोध ॥
ह्यां कोऊ जु कुतर्क करि करौ न हिय संदेह। शक्ति अचिन्त्य जु कृष्ण की भक्तन के मन एह ॥
अति अद्भुत सु अचिन्त्य है प्रभु चैतन्य विहार। चित्र भाव गुन चित्र सब है विचित्र व्यवहार॥
इन्हैं न मानें तर्क करि दुराचार सो आहि। पचै सुकुंभीपाक में नहि निस्तार सु ताहि ॥

तथा भाष्ये—अचिन्त्याः खलु ये भावा नतांस्तर्केण योजयेत्। प्रकृतिभ्यः परं यत्तु तदचिन्त्यस्य लक्षणम् ॥

अद्भुत प्रभु लीलानि कौ जाकैं हिय विश्वास। जै है श्रीचैतन्य के चरण कमल के पास ॥
पाय प्रसंग हि यह कह्यौ सव सिद्धांतहि सार। लहै वहै जोई सुनें सुद्ध भक्ति निरधार ॥
लिखे ग्रंथकौ कीजिये जौ फिर कैं अनुवाद। तिहि ग्रंथकौ पाइये तौ नीकें आस्वाद ॥
याहीतें श्री भागवत देख्यौ मुनि आचार। करि जु कथा अनुवाद फिरि करै सुवारंवार ॥
याही लीला आद्य के परिच्छेद जे आहि। तिन ही गणना करत हैं पूर्व रीति अवगाहि ॥
कियौ प्रथम परिछेद में मंगल शिष्टाचार। और द्वितीय विच्छेद में प्रभु कौ तत्व विचार ॥
आप स्वयं भगवान श्री नंदनदंन है जोय। तेई श्री चैतन्य प्रभु शची नंदन हैं सोय ॥
कारन गौन जु जन्म कौ कह्यौ तीसरे आहि। कृष्ण नाम जुग धर्म जो प्रेम प्रवारन ताहि ॥
ताही मधि कारण कहैं अधिक प्रेम कौ दान। कहैं चौथ परिछेद में कारण जन्म निदान ॥
अद्भुत निज जो माधुरी प्रेमानँद रस आहि। मूल प्रयोजन यहै जो आस्वादन किय ताहि ॥
श्री नित्यानँद तत्व जो कह्यौ पांचये ताहि। राम रोहिणीतनय जो भौ नित्यानंद आहि ॥

छठें मध्य अद्वैत कौ कीनौ तत्व विचार। आचारज अद्वैतजू महाविष्णु अवतार ॥
किय सप्तम विच्छेद में पंचतत्व आख्यान। पंच तत्व मिलि ज्यौं कियौ जगत प्रेम रसदान ॥
लीला श्री चैतन्य की अति अगाध जो आहि। किय अष्टम परिछेद में विवरण कारण ताहि ॥
एक कृष्ण के नाम की महिमा महा सु जोय। ताहि मध्य ताकौ कथन कीनौ अद्भुत सोय ॥
भक्ति कल्पतरु कौ कियौ विवरण नवेंजु आहि। माली श्री चैतन्य जू आरोपण करि ताहि ॥
दसयें मूल स्कंध की साखावलि गणि आहि। फल वितरण जैसें कियौ सब साखा गन जाहि ॥
नित्यानंद अद्वैत की सांखा वलि है जोय। कही ग्यारहैं बार हैं करि विस्तारहि सोय ॥
विवरण श्री प्रभु जन्म कौ कह्यौ तेरहें सोय। श्री प्रभु जू कौ जन्म ज्यौं कृष्ण नाम सह होय ॥
विवरण लीला बाल्य की कछु चौंधे हैं जोय। लीला तिहि पौगण्ड की कछु कहि पँद्रहिं सोय ॥
सोड़स मध्य किसोर की लीला कौ उद्देस। यौवन लीला सप्तदस कही कछू जु विसेस ॥
इहि प्रकार है सप्तदस लीला आदि प्रवंध। द्वादस ही जु प्रवंध करि भयौ ग्रंथ मुखवंध ॥
पंच प्रवंधनि करि चरित पंच वैस कौ जोय। लिखी जु अति संक्षेप सौं करी न विस्तृत सोय ॥
यह जु चैतन्य मंगलहि श्रीवृन्दावन दास। नित्यानंद आज्ञा बल वरन्यौं विस्तर तास ॥
लीला श्री चैतन्य की अद्भुत है जु अनंत। ब्रह्मा सिव औ सेस हूं जाकौ लहै न अन्त ॥
जो जो अंस कहैं सुनें सोई सोई धन्य। निश्चै ताकौं वेगिहीं मिलि हैं श्री चैतन्य ॥
श्री अद्वैताचार्यजू श्री नित्यानँद चैतन्य। श्री निवास श्री गदाधर प्रभृति भक्त गण धन्य ॥
श्री स्वरूप श्री रूप जू श्री सुसनातन नाम। श्री जीव सुरघुनाथ युग उनके पद अभिराम ॥
भक्त वृन्द जितने वसें वृंदा विपिन मझार। नम्र होय हौं सिर धरौं सब के पद निरधार ॥
सिर धरि कें वंदन करौं नित्य करौं तिन आस। चरितामृत चैतन्य कौं कहत कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस। प्रभु चरितामृत कौं कहैं वृजभाषाहि प्रकास ॥
।३२१।

इति श्री चैतन्यचरितामृते आदिखण्डे वृजभाषायां यौवन लीला सूत्र वर्णनं नाम सप्तदश परिच्छेदः ॥

समाप्तोयं आद्यखंडः—शुभमस्तु ।

———

श्री श्रीचैतन्यचरितामृत

(मध्य खण्ड)

—❧◇☙—

श्रीकृष्णचैतन्यचन्द्रो जयति । श्रीराधागोपीनाथौ जयतां ॥

बन्दे श्रीकृष्णचैतन्यनित्यानंदौ सहोदितौ । गौडोदये पुष्पवन्तौ चित्रौ शन्दौ तमोनुदौ ॥१॥
यस्य प्रसादादज्ञोऽपि सद्यः सर्वज्ञतां व्रजेत् । स श्रीचैतन्यदेवो मे भगवान् संप्रसीदतु ॥२॥
जयतां सुरतौ पंगोर्मम मन्दमतेर्गती । मत्सर्व्वस्वपदाम्भोजौ राधामदनमोहनौ ॥३॥

दिव्यद्वृन्दारण्यकल्पद्रुमाधः श्रीमद्रत्नागारसिंहासनस्थौ ।
श्रीमद्राधाश्रीलगोविंददेवौ प्रेष्ठालीभिर्सेव्यमानौ स्मरामि ॥४॥

श्रीमन्रासरसारंभी वंशीवट तटस्थितः । कर्षन् वेणुस्वनैर्गोपीर्गोपीनाथो श्रियोऽस्तु नः ॥५॥

गौरचंद्र जय जय सदा कृपासिंधु है जोय । जय जय जय श्रीशचीसुत दीनवंधु है सोय ॥
जय जय श्री अद्वैत श्री जय जय नित्यानंद । जय श्रीवास हि आदि दै गौरभक्त के वृंद ॥
पहिलें लीला आदि कौ कह्यौ सूत्रगण आहि । वृन्दावनदास जु कह्यौ करि विस्तार जु ताहि ॥
इक सूचन ही मात्र किय याही तें हम ताहि । जो विशेष कछु भयौ सो कह्यौ सूत्रमधि आहि ॥
कहैंव लीला सेस कौ मुख्य सूत्रगण जोइ । प्रभु लीला अगनित भलै कही जाय नहि सोइ ॥
ताही मधि जो भाग कछु श्रीवृन्दावनदास । किय मगंल चैतन्य मधि वर्णन करि कें व्यास ॥
लिखि हैं सूचन मात्र हम वही भाग ह्यां सार । जो विशेष ताकौं इहां कहि हैं करि विस्तार ॥
प्रभु लीला के व्यास हैं श्रीवृन्दावनदास । चाखत तिहिं उच्छिष्ट हम पाय सुआज्ञा तास ॥८
माथें धरि अति भक्ति करि चरण कमल युग ताहि । वर्णन करिये सूत्रगण लीला सेस हि आहि ॥
रहे वरष चौवीस लौं प्रभु जू अपनें धाम । तहां जु लीला करी तिहि लीला आद्य जु नाम ॥
तहां वर्ष चौवीस कें सेस माघ है मास । शुक्ल पच्छ नव महाप्रभु तव कीनौ संन्यास ॥
रहैं वरष चौवीस लौं प्रभु जू करि संन्यास । नाम सेस लीला जु तिहिं तहां जु करी प्रकास ॥
द्वै हैं लीला सेस के मध्य अंत है नाम । लीला भेद हि जन करें नाम भेद अभिराम ॥

ताही मधि षट वरष लौं गमनागमन हि जोइ। वृन्दावन नीलाचलहि गौड़ सेतवँध सोइ ॥१४॥
तहां जु लीला करी प्रभु मध्य नाम है ताहि। ता पाछें लीला जु तिहि अंत नाम है आहि ॥
केवल अष्टादश वरष प्रभु नीलाचल वास। सिखई करि आचरण निज प्रेम भक्ति रसरास ॥
आदि मध्य अरु अन्त्य में है लीला रससार। अब कछु लीला मध्य कौं करियतु हैं विस्तार ॥
ताही मधि षट वरष प्रभु भक्तगणनि के संग। करि प्रवर्तित प्रेमभगति नृत्य गान वहु रंग ॥
गौड़देश पठये जु प्रभु नित्यानन्द प्रभु जोइ। दिय वहाय के प्रेमरस गौडदेश तिन सोइ ॥
सहज हि नित्यानंद हैं प्रेमोद्दाम सुभाय। प्रेमदान जहँ तहँ कियौ प्रभु की आज्ञा पाइ ॥
नमस्कार कोटिक सु मम चरण कमल मधि ताहि। जिन्हौ भक्ति चैतन्य की जगतनि वोई आहि ॥
गोस्वामी चैतन्य जू वड भाई कहैं जाहि। प्रभु मेरे चेतन्य हैं तेऊ कहैं जू आहि ॥
आपुन नित्यानंद हैं जद्यपि श्री वलराम। तेउ करें चैतन्य कौ दासभाव अभिराम ॥
सेव हु प्रभु चैतन्य कौं नाम लेहु करौ गान। करें भक्ति चैतन्य की जो सोई मम प्राण ॥
इहि विधि श्री चैतन्य की भक्ति दई संसार। दीन हीन निंदक जिते सवै किये निस्तार ॥
रूप सनातन कौ तवै प्रभु जू दियौ पठाय। वृन्दावन आये दोउ प्रभु की आज्ञा पाय ॥२६॥
भक्ति प्रचारी तीर्थ सव प्रगट किये रसरास। गोविंद मदन गुपाल की सेवा करी प्रकास ॥
नाना ग्रंथनि आनि किय भक्ति ग्रंथ कौ सार। मूढ़ अधम हू जननि कौं कियौ तिन्हौ निस्तार ॥
प्रभु की आज्ञा पाइ कें किय रसशास्त्र विचार। व्रज की भक्ति निगूढ हि किय ताकौ जु प्रचार ॥
किय हरिभक्तिविलास अरु भागवतामृत आहि। दशमु टिप्पनी करी अरु दशम चरित्र सु ताहि ॥
इते सनातन जू किये सवै ग्रंथ रससार। रूप गुँसाई जिते किय नहि गणना कौ पार ॥
मुख्य मुख्य तिन में कछू तिन कौ लीजतु नाम। व्रजविलास वर्णन कियौ लच्च ग्रंथ अभिराम ॥
भक्तिरसामृतसिंधु किय श्रीउज्जलमणि सोइ। किय विदग्धमाधव ललितमाधव नाटक दोइ ॥
दानकेलिरसकौमुद्री स्तवमाला गुहि आहि। लीला छँद दश आठ किय अरु पद्यावलि जाहि ॥
श्री गोविंदविरुदावली लच्चन जा कें जोइ। मथुरा कौ महात्म्य किय नाटक लच्चण सोइ ॥
भागवतामृत आदि ये सकें गुणनि करि कोइ। व्रजविलास वर्णन कियौ सव ठां रस में भोइ ॥
भ्रात पुत्र तिनके जु श्री जीव गुसाई आहि। भक्ति ग्रंथ किय जिन्ह जे नहीं अंतहै ताहि ॥
ग्रंथ नाम सन्दर्भ किय श्री भागवत विचारि। भक्ति रीति सिद्धांत कौ जहां दिखायौ पार ॥
श्री गुपालचंपू रच्यौ ग्रंथ महारस सूर। लीला नित्य उपासना जिहिँ व्रजरस कौं पूर ॥
प्रथम वरष सव भक्तगण अद्वैतादिक जोइ। नीलाचल कौं गमन किय प्रभु देखन हित सोइ ॥
रथयात्रा कौ देखि तव रहे जू चातुर्मास। नृत्य गान प्रभु सँग करें अति ही भरे हुलास ॥
विदा समें प्रभु जू कह्यौ तिन सव सों यह आहि। प्रति वत्सर ऐहौ सवै गुँडिचा देखन जहि ॥
प्रभु की आज्ञा पाय सव प्रति वत्सर ही आइ। प्रभु कौं देखि सुगुंडिचा जाहिं महासुख पाइ ॥

करें गतागति यौं सवैं वीस वरस लों जोइ। नहीं परस्पर दुहुन की रहनि दुहनि विनु सोइ ॥
सेस और जो रहें तिहि द्वादस वत्सर जोइ। कृष्ण विरह लीला तहां प्रभु के अंतर सोइ ॥
सदा निरंतर रैंन दिन कृष्ण विरह उन्माद। हँसि गावैं नाचैं गिरैं रोवैं भरैं विषाद ॥
जगन्नाथ दरसन करैं जे छिन प्रभु सुख भोइ। मिले वहुरि कुरुखेत में मन हि भावना सोइ ॥
जात्रा रथ आगें जवै नृत्य करैं प्रभु आहि। तहाँ एक पद यहै जो गान करावें ताहि ॥

पद—पायो हम सोई प्राणाधार। जाके हेतु मदन दावानल भयौ सवै तनु छार ॥

दो०—

याही ध्रुवा के गान में नृत्य प्रहर द्वै कीय। कृष्ण लियें व्रज जांहि है यहै भाव मधि हीय ॥
यही भाव करि नृत्य में श्लोक पढ़ें इहि आहि। इही श्लोक कौ अर्थ जौ कोइ न समझे ताहि ॥

तथाहि काव्यप्रकाशे—

यः कौमारहरः स एव हि वरस्ता एव चैत्रक्षपा, स्ते चोन्मीलितमालतीसुरभयः प्रौढ़ा कदम्वानिलाः ॥
सा चैवास्मि तथापि तत्र सुरतव्यापारलीलाविधौ रेवारोधसि वेतसितरुतले चेतः समुत्कण्ठते ॥ इति ॥

यही श्लोक कौ अर्थ जो जानें एक स्वरूप। दैव जोग ताही वरष तहाँ गये श्रीरूप ॥
रूप गुसाई जू तंही प्रभु के मुख सुनि ताहि। तिही श्लोक के अर्थ कौ किय श्लोक इक आहि ॥
करिकें तिहिइक ताल कौ पत्र वीच लिखि आय। निज निवासकौ छानि जौ तिहि मधि खुरस्यो ताय॥
गये उदधि ये न्यायवैं तहाँ राखि कें ताहि। तिही समें आये जु प्रभु तिन्हैं मिलन हित आहि ॥
रूप सनातन और हरिदास नाम रसलीन। जगन्नाथ मन्दिर सु मधि जाइ न ये जन तीन ॥
जगन्नाथ कौ महाप्रभु उपलभोग लखि सोइ। जांहि आपनें गेह तव इन तीनौ मिलि सोइ ॥
इन तीनौ जन मध्य जव रहैं कोऊ जन आइ। नेम रहैं प्रभु यह मिले आप आय तव ताइ ॥
दैव जोग प्रभु आइ तव ऊचैं चाह्यौ जोइ। ताल पत्र मधि छानितें श्लोक लयौ वह सोइ ॥
नीकें कै आविष्ट भौ प्रभु जू पढि के ताहि। रूप गुसाई आइ कें परे दंडवत आहि ॥
उठि श्री प्रभु जू रूप कें पीठ थपेरहि मारि। लागे कहन तवै कछू तिनकौं भरि अँकवारि ॥
अभिप्राय मम पद्य कौ कोऊ न जाने ताहि। मेरे मन की वात तुम जानी कैसें आहि ॥
ऐसें कहिकें प्रभु तिन्हैं वहु प्रसाद करि जोइ। श्री स्वरूप गोस्वामि कौं आनि दिखायौ सोइ ॥
अति विस्मित ह्वै महाप्रभु पूछन लगे स्वरूप। मेरे मन की बात यह कैसें जानी रूप ॥
कहैं स्वरूप जु हृदय की जानी जातें जोइ। ताही के तुम कृपा के भाजन जानें सोइ ॥
कहैं जु प्रभु हम तुष्टह्वै तिनकौं पात्र विचारि। आलिंगन करि कियौ सव शक्तिनि कौ संचार ॥
रस निगूढ़ सु विचारिकैं जोग्य पात्र है आइ। आस्वादन रस गूढ़ कौं तुमहूं करौ जु ताइ ॥

कहिगें ये सव कथा हम आगें करि विस्तार ।, ह्यां प्रस्तावहि पायकें किय संक्षेप विचार ॥

तथाहि—प्रियः सोऽयं कृष्णः सहचरि कुरुक्षेत्रे मिलितस्तथाहं साराधा तदिदमुभयोः संगमसुखम् ॥
तथाप्यन्तखेलन्मधुरमुरलीपञ्चमजुषे मनो मे कालिन्दीपुलिनविपिनाय स्पृहयति ॥८॥

इह पद कौ संक्षेप करि अर्थ सुनौ जन ताहि । जगन्नाथ लखि भावना ज्यौं प्रभु के हिय आहि ॥
श्री राधा कुरुखेत में दरसन हरि कौ आहि । यदयपि पायौ यह तऊ करैं भावना जाहि ॥
जन गण घोरा गज कहां राजवेस यह जोइ । कहाँ विजन वृन्दाविपिन गोप भेष यह सोइ ॥
सोई भाव सु कृष्ण सों श्री वृन्दावन सोइ । जवै पाइये तव हियैं वांछित पूरण होइ ॥

तदुक्तं दशमे—गेहजुषामपि मनस्युदियात् सदा नः ॥९॥

मेरे वृजपुर गेह में तुव पद पंकज जोइ । उदै करैं जो तवहि मम वांछा पूरण होइ ॥
श्री भागवत श्लोक कौ अर्थ गूढ़ अधिकाय । रूप गुसाई श्लोक कौं दीनौ सवन जनाय ॥
ऐसें तव श्री महाप्रभु देखें श्री जगनाथ । संग सुभद्रा लखि पुनि नहिं वंशी तिनि हाथ ॥
ललित त्रिभंगी व्रजहिमधि श्रीव्रजराज कुमार । कहां लहौं अभिलास यह अनुछिन बढ़े अपार ॥
राधा के उन्माद ज्यौं उद्धव देखें जोइ । उदघूर्णा सु प्रलाप त्यौं प्रभु के निसिदिन होय ॥
द्वादश वत्सर शेस यौं श्री प्रभु वितये जोइ । इही भांति लीला त्रिविध करी सेस है सोइ ॥
किये वरष चौविस मधि करि संन्यास जु कर्म । है जु अनंत अपार ते को जानैं तिनि मर्म ॥
कहन हेत उद्देस तिहि दिग दरसन करि आहि । लीला मुख्यन कौं करैं सूत्रगणन जो ताहि ॥
प्रथम सूत्र मधि महाप्रभु कौ करिबौ संन्यास । ताही समें चले जु प्रभु वृन्दावन सुखरास ॥
अति हीं विह्वल प्रेम करि नही वाह्य सुधि जोइ । राढ़ देस कीनौ भ्रमन तीन द्यौस प्रभु सोइ ॥
श्री नित्यानँद प्रभु तवै श्री प्रभु कौं जु भुलाय । ले आये गंगा निकट यमुना ताहि वताय ॥
सांतिपुरहि आचार्य कें गृह आगमन्न सु आहि । भिक्षा प्रथा करी तहां संकीर्त्तन निस ताहि ॥
शचीजु भक्त समूहकी तहां मिल किय जोइ । समाधान सब करि कियौ गमन नीलगिरि सोइ ॥
नाना लीला पथहि सव दरसन देव विसाल । कथा सुमाधव पुरी की स्थापन गिरि गोपाल ॥
पायस चोरि कथा और साखि देंन गोपाल । दंड भंग प्रभु कौ कियौ नित्यानंद रसाल ॥
जगन्नाथ देखन गये इकले कुपित सुहोय । परे भूमि पद देखि कें होय मूरछित सोइ ।
सार्वभौम प्रभु कौं तवै लै आये निजधाम । श्री प्रभु कौ करि चेतना वीते तीन सु जाम ॥
नित्यानंद मुकुन्द औ पंडित जगदानंद । पाछैं आये मिल सवै पायौ अति आनंद ॥
सार्वभौम कौं महाप्रभु कीय प्रसाद तव जोय । आपुन ईस्वर मूर्ति निज तिन्हैं दिखाई सोइ ॥
गमन कियौ दक्षिण तवै कूर्मक्षेत्र मधि आय । वासुदेव कौं कुष्ठ तें मुक्ति कियौ हिय लाय ॥
स्तवन कियौजु नृसिंहकौ तियद्द नामहै सोइ । ग्राम ग्राम पथ पथ कियौ नाम प्रवर्त्तन जोइ ॥

भौ गोदावरि तीर बन वृन्दावन भ्रम ताहि। श्री रामानंद राय संग तहा मिलन भौ आहि ॥
त्रिमल्ल त्रिपदी गेह कौ जो दरसन किय ताहि। सबठां कियौ प्रवर्त्त प्रभु कृष्ण नामकौं आहि ॥
पाषंडिन के गनन के तवै दमन किय जोय। अहोबलादि नरहरि प्रभु दरसन कीन्हौं सोइ ॥
आये श्री रँगक्षेत्र पुनि कावेरी के तीर। श्री रँगजू के देखते भये जु प्रेम अधीर ॥
त्रिमल्ल भट्ट के गेह में श्री प्रभु कियौ निवास। रहे तहाँई आप प्रभु वर्षा चातुर्मास ॥
त्रिमल्ल भट्ट श्री वैष्णव महापँडित हैं जोय। प्रभु पांडित्य और प्रेम लखि विस्मित भौ सोय ॥
चातुर्मास तहां प्रभू श्री वैष्णव के संग। वितयौ नृत्य सुगान करि हरि संकीर्त्तन रंग ॥
बीते चातुर्मास पुनि दक्षिण गमन सु ताहि। श्री परमानँद पुरी सँग तहां मिलन भौ आहि ॥
कियौ भट्टमारी जु ते कृष्णदास उद्धार। राम जपी द्विज मुख कियौ कृष्ण नाम परचार ॥
रंगपुरी जु संग भयौ तबही दरसन ताहि। राम दास द्विज कौ कियौ दुःख विमोचन आहि ॥
कियौ तत्ववादीन सँग श्री प्रभु तत्व विचार। भइ हीन बुद्धि आप में तिन सब को निरधार ॥
श्री अनंत पुरुषोत्तम जु और जनार्दन जोय। वासुदेव कौ दरस किय पद्मनाभ हैं सोय ॥
सप्तताल मोचन कियौ तब ही प्रभु जू आय। रामेश्वर दरसन कियौ सेतवंध मधि न्हाय ॥
श्री महाप्रभु जू तहांइ सुने जु कूर्म पुराण। रावण माया सिय हरी तहां लिखन यह जान ॥
बही पुरातन पत्र प्रभु आग्रह करि ले आय। रामदास कौ दुख कियौ खंडन तिनहिं दिखाय ॥
कर्णामृत ब्रह्मसँहिता दोऊ पुस्तक देखि। आये द्वे पुस्तक सु लै अति उत्तम अवरेखि ॥
नीलाचल कौं फेरिकें गमन कियौ भरि भाय। स्नानयात्राजू प्रभुलखि भक्तगननि मिलि चाय ॥
जगन्नाथ कौ दरस प्रभु अनु अवसर नहि पाय। आये नाथ अलाल तब विरह विकल अकुलाय॥
रहे तहांई महाप्रभु संग भक्त समुदाय। सो सुधि पाई गौड तें जन सब पहुँचे आय ॥
सार्वभौम आग्रह करी नित्यानँद निज अंग। नीलाचल आये जु ते प्रभु जू कौ ले संग ॥
विरह विकल प्रभु कौं कहूँ नहि वीतै दिन रैन। जन सब आय तिही समें गौड़ देसिननि ऐन ॥
संकीर्त्तन आरंभ किय सब मिलि जुक्ति बनाय। प्रभुकौं तव स्थिर मन भयौ संकीर्त्तन के चाय॥
रामानँद सों पूर्व जब प्रभुजू मिले हैं आय। नीलाचल के आयबेकी आज्ञा दइ ताय ॥
आये राज निदेस लै ते कछु दयौस विताय। निस दिन तिन संग प्रभु जू करें कृष्णकथा भरि ॥

कवित्त

काशीमिश्र जू पै कृपा प्रद्युम्नादि मिश्र मिले, परम भक्त परमानन्द पुरी आये हैं।
श्री गोविन्द काशीश्वर श्रीस्वरूप दामोदर जूकौ कह्यो ऐवौं मिले अति सुख पाये हैं।
यें कुलिया ग्रामबासी भक्तनिनकौं मिलाय, प्रथम ही भयौ प्रभु हिय अति भाये हैं।
मिले सिखी माहिती औ राय भवानन्द, गौड़ देस ते जे आये भक्त मुख्य २ गाये हैं ॥

जिते खंडवासी भगत नरहरिदास प्रधान। सिवानन्द सँग आय कें मिले सबै गुणवान ॥
स्नानजात्रा देखि प्रभु सबै भक्तगण संग। गेह गुंडिचा कौ करयौ सम्मार्जन भरि रंग ॥
रथजात्रा दरसन करयौ सँग सब भक्त प्रधान। रथ आगें प्रभु नृत्य करि गमन कियौ उद्यान ॥
कृपा करि प्रभु ताही ठां रुद्रप्रताप हि जोय। विदा दिवस आज्ञा दई गौड जनन कौं सोय ॥
प्रतिवत्सर ऐहौ जु तुम रथजात्रा के काज। चाहैं मिल्यो इहिं जु मिस निजगण भक्त समाज ॥
भिक्षा परिपाटी जु प्रभु सार्वभौम के गेह। साटी विधवा होहु जिहि माता कहे जु एह ॥
अद्वैतादिक भक्त सब आवैं बरस विताय। सिवानन्द जू सबनि कौं पालन करें बनाय ॥
आयौ संग सिवानँदहि भाग्यवान इक स्वान। प्रभु पद दरसन पायकें भयौ जु अन्तर ध्यान ॥
तिन सब कौ पथ मिलन भौ सार्वभौम सम आहि। फेरि कह्यौ ताही समैं कासी गमनजु ताहि ॥
श्री प्रभु जू सौं ते सबैं मिले वैष्णव आय। प्रभु जलक्रीड़ा सबनि सँग करी भरे अति चाय ॥
सबै संग लै किय गुंडि गृह संमार्जन सोइ। रथजात्रा दरसन समें प्रभु नृत्य करें जोइ ॥
तिही नृत्य करि पुनि कियौ जल विहार सुखमेलि। देखें होरापंचमी तें श्री देवी केलि ॥
उपवन मधि प्रभुजू किये विविध विलास अनेक। कृष्णदास द्विजने कियौ प्रभु जूको अभिषेक ॥
कृष्नजन्म दिनतें भये गोपवेष प्रभु आहि। धरि सिर दधि को कलस तब लकुट फिरायौ ताहि ॥
गौड़ देस के भक्त सब किये विदा प्रभु सोय। करें संग के भक्त लैं सदा कीरतन जोय ॥
वृन्दावन के चलनकौं गौड गमन किय आय। मारग सेवन विविध किय रुद्रप्रताप जु ताय ॥
पुरी गुसांई संग जो वस्त्र प्रदान प्रसंग। आये रामानंद जू भद्रक लौं तिहि संग ॥
विद्यावाचसपति सदन रहे महाप्रभु आय। तिनके दरसन हित तहां आये जन समुदाय ॥
देख्यौ जब दिन पांच लौं नहिं न लोक विश्राम। निसमें आये लोक भय श्रीप्रभु कुलियाग्राम ॥
प्रभु जू कौ आगमन सुनि कुलिया के जन आय। कोटि कोटि आये तहां पाये दरसन ताय ॥
तिहि ठां देवानंद पें कियौ प्रसाद अगाध। क्षमा कराय गुपाल कौं श्री निवास अपराध ॥
पाषंडी निन्दक तबैं आय परयो पद जाहि। करि अपराध क्षमा प्रभू कृष्नप्रेम दिय ताहि ॥
वृन्दावन प्रभु चलन की सुनी नृसिंहानन्द। अति अद्भुत मारग रच्यौ करि मन में आनन्द ॥
रच्यौ कुलिया ग्राम ते रतनखचितपथ आहि। सज्या कोमल कुसुम दल बिछये ऊपर ताहि ॥
पथके दुहुदिस वकुलकी कुसुमपांति कमनीय। बीच बीच तिहिंदुहु निकट सरसी अति रमनीय ॥
रतन जटित सोपानतिहिं प्रफुलित कमल अनूप। कोलाहल वहु खगनिकौ जो मन सुधा स्वरूप॥
सीतल मन्द वहे पवन वहु सुगन्ध लै जोइ। कान्हाई नटसाल सौं लिये बनाय पथ सोइ ॥
मन आगें नाहिन चलै सकै बनाय न ताहि। वंधें न पथ प्रद्युम तब अति विस्मित भौ आहि ॥
निश्चै करिकें कहै तब जन सब सुनौ विचार। प्रभु श्री वृन्दा विपिन कौं नहिं जैहैं इहि बार ॥

कान्हाई नटसाल तें ऐहैं फिरि निरधार । कहि हैं निश्चय जानि कें फिरि पीछें जु विचार ॥
चले जु कुलिया ग्राम तें प्रभु वृन्दावन चाय । तिनके संग सहस्र जन जिते भक्त समुदाय ॥
जाय जहां प्रभु पद परें कमल चलें रस झूमि । तहां तहां रज लेत जन होय गर्त्त तिहि भूमि ॥

क०—वृन्दावन धाम अभिराम देखिवेकौं चले एसैं आये महाप्रभु रामकेलि ग्राम हैं ।
गौडदेस पास वहु सुंदर निवास रहै तहाँ नृत्य करैं प्रेममत्त आठों जाम हैं ।
आये कोटि कोटि जन पादपद्म देखिवेकौं देखि सुख पाये सव पूजे मनकाम हैं ।
गौडदेसराजा यह सुनिकें प्रताप वड़ौ केसव छत्री सौं कहैं वैंन अभिराम हैं ॥

विना दीयें दाम लोक अगनित पाछे फिरैं तातें हम जानें ए ईसुर निरधार हैं ।
काजी औ जवन जिते इनकों न मारें कोऊ जांहि जहां इच्छा सोइ कहतु पुकार हैं ।
सुनिकें यह केसव दीनी है उड़ाय वात गात भई चिंता वोले करिकें विचार हैं ।
भिक्षुक सन्यासी फिरें तीरथ की जात्रा ताहि देखन कौं आवैं कोऊ जन दोय चार हैं ॥

तातें कछु म्लेच्छ कहीबात जिनि मानों तुम तासौं दोष कियौ फलहाथ नहीं आय है ।
और सव नास ह्वै है ऐसें समझाय नृप दीनौ प्रभु पास एक ब्राह्मण पठाय है ।
ताके हाथ भेजी कहि चलनौ उचित ह्यातें तुम्है भय नाहि दास भय कौं सुभाय है ।
ताही समें पातसाह करि कें एकांत पूछी दवीर-खास मंत्री सौं पुर में वुलाय है ॥

पूछें तव कहन लगे महिमा महाप्रभु ए तौ प्रगटे हैं जिन्हौं तोहि राज दियौ है ।
मंगल करण तेरौ तेरें भागवस आये लै कें जन्म गौड देस भागवान कियौ है ।
वानी सिद्धि येतो तेरें इन ही के आसिष सौं ह्वै है जै इन की सम और नहीं वियौ है ।
मोहि कहा पूछौ तुम राजा प्रभु अंस तातें सोई है प्रमाण जो कहन तुव हियौ है ॥

वोल्यो तव राजा मन मेरौ कहैं ऐसैं ए तौ ईश्वर प्रत्यक्ष यामें नेंकु न सन्देह है ।
ऐसैं कहि गयौ नृप सयन महल बीच आये ये दवीर खास जहाँ निज गेह है ।
मिले दोनौं भाई तव जुगति वनाय निसि आधी जव आई चले प्रभु पद नेह है ।
वेस कौ छिपाय आये प्रभु जू के देखवे कौं जहां ए विराजमान कृष्न गौर देह हैं ॥

पहिलें श्री नित्यानन्द और हरिदास जू सौं मिले तिन्है कही महाप्रभु जू सौं जाय कैं ।
आये हैं दवीर-खास रूप दोनौ भाई ठाढ़े हेतु तुव दरसन वेस कौं छिपाय कैं ।
आय इन्हौ देखे तव दंत तृण पूंज धरे वांधि उपर्ना गरें परे भूमि भाय कैं ।
दैंन भरे रुदन करे गमन सुखसिन्धु देखि प्रभु हियौ गयौ करुणा सौं छाय कैं ॥

प्रभु कहैं उठौ उठौ मंगल तुम्हारौ ह्वै है, सुनि मृदु वानी उठे दंत तृण धरि कैं।
जोरि हाथ दीनता सौं लागे स्तुति करवे कौं कंप सुरभेद आये नेंन नीर भरि कैं।
जय जय श्री कृष्न चैतन्य दयामय अहो पतितन के पावन निज दया करि क।
नीच जाति नीच संगी आगें कहैं लाज होति नीच कर्म किये सव आयु सव भरि कें।

तथाहि पद्मपुराणे—मत्तुल्यो नास्ति पापात्मा नापराधीच कश्चन। परीहारेपि लज्जा मे किं ब्रुवे पुरुषोत्तम ॥

हम सौं न पातकी औ तुम सौ न पावन है यहै श्लोक पढ्यौ दोऊ भाई वार वार है।
हम सौ अधम नाहि कोऊ जग बीच एक तिनके उधार हेत तुम अवतार है।
जगाई मधाई तारे पौरुष न यामें भयौ तेन हम होय तुम्है परेगी सम्हार है।
दोऊ द्विज जाति नवद्वीप में निवास करें संग नीच कौ न नीच सेवा अधिकार है॥

हुतौ दोस एक पापाचार दूरि कियौ सो तो पापरासि जारिवेकौ एक नामाभास है।
निंदा करि लेय नाम तऊ मुक्ति देय ताकौं प्रीति सौं जु कहै लहै भक्ति कौ प्रकास है।
जगाई मधाई दोऊ तिनहूं तें कोटि गुणे हम हैं अधम दोऊ कीनौ धर्मनास है।
म्लेच्छ सेवा करें अरु म्लेच्छ हीकौ कर्म धरें गाय द्विज द्रोही ताकौ हमें सदा पास है॥

तातें निजकर्म हमैं वांधि विषै विष्ठा गर्त्त डारचौ अव काढ़िवे कौं लोकमें न कोई है।
काहू के न वल एक विना तुम पतित पावन ऐसौ कौन बाह गहि काढ़े जोय है।
करोगे प्रगट वल हम दोऊ के उधारि वे कौं तब ही सफल ह्वै है वृत सोइ है।
सकल ब्रह्मांड दया वीच नीच गामी देखि मन जो विकल भयौ आसा जिय भोइ है॥

दोहा

एक वात सांची कहौं सुनौ दयामय ताहि। मो विन कोऊ जगत में दयापात्र नहि आहि॥
तातें मो पैं दया करि करौ सफल अब ताहि। देखै सब ब्रह्मांड तुव वड़ौ दयावल आहि॥

तथाहि—नमृषा परमार्थमेव मे शृणु विज्ञापनमेकमग्रतः। यदि मे न दयिष्यसे तदा दयनीयस्तव नाथ दुर्ल्लभः॥

कवित्त

देखि निज दीनताई मन विकलाई होत दीनवन्धुताई तुव हिय सुख दाई है।
देखि कें अजोगताई होति है निरासताई निरखि कृपालताई हर्ष अधिकाई है।
भक्त के सहाई सुनि कंप सरसाई होति भक्ति कहां पाई हम हीयें अज्ञताई है।
अगतिन गतिदाई तुम सुने मन भाई बड़ेई अगति हमें तातें वनि आई है॥

तथहि गोस्वामिपादोक्तश्लोकः—भवन्तमेवानुचरन्निरन्तरः प्रशान्तनिःशेषमनोरथान्तरः।
कदाहमैकान्तिकनित्यकिंकरः प्रहर्षयिष्यामि स नाथ जीवितं॥

जैसैं बौंना चंद गहिवे कौं करैं ऊचौं कर ताही कैसैं धरैं करैं लोक उपहास है।
ऐसैं अभिलाष हियें उठेति हमारी तिन्हैं कहैं लाज होति तुम्हैं सव ही प्रकास है।
सुनि प्रभु बोले सुनौ रूप औ दवीरखास सदा तुम दास मेरे निज लोक वास है।
आजु तें तिहारौ नाम रूप और सनातन छाडौ तुम दैन्य देखि होय धैर्य्य नास है॥

दीनता की पत्री तुम भेजी बार बार हम ताही द्वार ह्वै कैं व्यवहार जानि लीनौ है।
जानि कें तुम्हारौ अभिलाष पत्रीलिखी तुम्हैतामें सब जीव सीछा सार लिखि दीनौं है।
जैसै जार नारि करें आछें गृहकाज सब जानें नही कोऊ हियौ वाकौ रंग भीनौं है।
इहां गौडदेस सौं न काम मेरौ हुतौ कछू एक ही तुम्हारे हेत आगमन कीनो है॥

तथाहि वासिष्ठरामायणोक्तशिक्षाश्लोकः—

परव्यसनिनी नारी व्यग्रापि गृहकर्म्मसु। तमे वास्वादयत्यन्त र्नवसंगरसायनम्॥

आयौ मैं तुम्हारे हेत मन की न जानैं कोऊ जन सब कहैं प्रभु कौंन हेत आये हैं।
भली भई आये तुम दास मेरे सदा के हौ भय जिन करौगेहु जाहु सुख छये हैं।
वेग ही उद्धार प्रभू करेंगे तुम्हारो कहि दोऊ माथें हाथ धरचौ दया सरसाये हैं।
दोऊ भाई प्रभु चरणारविंद सीस धरें कृपा के उठाय इन्हौं हिये सौं लगाये हैं॥

सवै भक्त वृन्दन सौं कह्यौ तव महाप्रभु कृपा करि करौ इन दोऊ कौ उधार है।
ऐसैं दोऊ भाई पर कृपा अधिकाई देखि भयौ सब भक्तन कें आनन्द अपार है।
हरि हरि बोलि सब नाम धुनि कीन अति ढेखि के प्रताप प्रभु कीयौ जै जैकार है।
कहैं सब धन्य दोऊ पाये प्रभु वेगि यातें तुम सम नहीं कोऊ यहै निरधार है॥

नित्यानन्द हरिदास संकर श्री राम पुनि मुकुन्द जगदानंद सवै सुख ऐंन है।
वक्रेसुर औ मुरारि आदि जिते भक्त सब पादपद्म सीस धारि हीयें भीजै चेंन है।
सवन की आज्ञा लै कें चलि वे कैं समै दोऊ प्रभु पद विनें करि वोले मदु वेंन है।
ह्यां तें तुम चलौ कार्य्य ह्यां न है तुम्हारौ कछू करे राजा भक्ति तऊ म्लेच्छ दुखदेंन है॥

दोहा

करै जवन भक्तिहितऊ की जै नहीं प्रतीत। इती भीर नहिं गमन कौं भली नहीं यह रीत॥
विपिन दरस कौं चलैजो संग कोटि जन ताहि। इहि वृन्दावन गमन की नहि परिपाटी आहि॥
यद्यपि वास्तव ईसकौं कछु भय नहिं प्रतिकूल। लौकिक लीला तऊ तिहि कृपा लोक अनुकूल॥
यौं कहि प्रभु पद वंदि कैं चले गेह दुहुँ भ्रात। प्रभु कौ मन तिहि ग्राम तें चलिवेकौं भौ प्रात॥
आये तहा तें प्रात प्रभु कान्हाई नटसाल। तहां लखी सव कृष्न की लीला चित्र रसाल॥

मनही मनमें महाप्रभु किय विचार निसि ताहि । भलौ नही समुदाय सँग कही सनातन आहि ॥
हम जैहैं जो मधुपुरी इतैं लोक लै संग । नहि पैहैं कछु सुख तहां अरु ह्वै है रसभंग ॥
तातैं जैयै एकले कैं इकही जन संग । वृन्दावन के गमन कौं सोभा ह्वै है रंग ॥
यौं मन में सुविचार करि प्रात सुरधनी न्हाय । नीलाचल कौ चलैं कहि चले गौर हरि राय ॥
इहि विधि आये सांतिपुर चले चले रसमेह । पांच सात दिन रहें प्रभु श्री आचारज गेह ॥
देवी सची बुलाय कें नमस्कार करि ताहि । सात दिवस लौं करी प्रभु भिक्षा तिहि ठां आहि ॥
कियौ गमन तव तहां तें तिहि ठां आज्ञा लेय । भक्त गननि कौं विनै करि विदा महाप्रभु देय ॥
जैहैं हम नीलाचलहि संग लेय जन दोय । हमैं मिलन ऐहौ सवै रथ उत्सव में जोय ॥

कवित्त

भट्टाचार्य वलभद्र पंडित दामोदर जू दोई संग लै कैं प्रभु नीलाचल आये हैं ॥
कोऊ दिन तहां रहि चले निस वृन्दावन जानैं नही कोऊ जन काहू न लखाये हैं ॥
भट्टाचार्य वलभद्र एकले ई संग लै कैं झारखंड ह्वै कैं कासी आय रंग छाये हैं ॥
चारि दिन कासी रहि वृन्दावन चले देखि मथुरा वन द्वादस हियें सुख पाये हैं ॥

लीलास्थल कौं देखि प्रभु प्रेम विकल भौ जोइ । कीने तव वलभद्र जू मथुरा वाहिर सोइ ॥
लै कें गंगातीर पथ आये वेगि प्रयाग । प्रभु जू सौं जु मिले तहां आय रूप वड भाग ॥
सिक्षा करि श्री रूप कौं वृन्दावन जु पठाय । आपुन कासी आगमन कियौ भरें हिय चाय ॥
कासी में प्रभु कौं मिले आय सनातन सोय । प्रभु तिनकौं सिक्षा करी रहे महीना दोय ॥
दै प्रभु जु निज भक्तिवल मथुरा पठयौ ताहि । संन्यासनि पै कृपा करि गये नील गिरि आहि ॥
ऐसैं प्रभु षट वरष लौं कीनैं विविध विलास । कवहू इत उत गमन किय कवहूँ क्षेत्र निवास ॥
मधि लीला के सूत्र कौं कियौ जु विवरन आय । सूत्र जु लीला सेस कौ सुनौ भक्त गण ताहि ॥
नीलाचल आये जवैं वृन्दावन तें जोय । वरष अठारह रहि तहाँ कहुठाँगये न सोय ॥
सवै भक्तगण गौड़ के तहाँ वरष प्रति आय । चारि मास सव रहे प्रभु संग मिले भरि माय ॥
नृत्य गीत औ कीरतन ताकौ सदा विलास । तिहि करि किय प्रभु सुपचलौं प्रेमभक्ति परकास ॥
नित्यानन्द अद्वैत जू औ मुकुन्द श्री वास । विद्यानिधि जु मुरारी वसु और जिते प्रभुदास ॥
प्रतिवत्सर आय जु करें चारिमास सह वास । लै के तिनहि संवन कौं प्रभु कें विविध-विलास ॥
कासीस्वर भगवान पुनि गोविंद जगदानन्द । दामोदर जु स्वरूप श्री पुरी जु परमानन्द ॥
किय पंडित गोस्वामी जू लीलाचल मधि वास । वक्रेसुर दामोदर जु संकर पुनि हरिदास ॥
प्रभु जु संग इन सवन ही कीनौं नित्य निवास । रामानन्द प्रभू तजे कासी क्षेत्र सु रास ॥
सिद्धि प्राप्ति हरिदास की अति अद्भुत रस आहि । आपुन ही श्री महाप्रभु कीयो महोत्सव जाहि ॥

तवें रूप गोस्वामि कौं फेर आगमन जोहि। कियौ शक्ति संचार प्रभु तिनके हिय मधि सोइ ॥
तब ही लघु हरिदास कौं कियौ दंड प्रभु आइ। दामोदर पंडित कियौ वाक्यदन्ड प्रभु ताय ॥
तवें सनातन कौ तहाँ फेरि आगमन आहि। जेठ मास मधि महाप्रभु करी परीचा ताहि ॥
वृन्दावन कौं तुष्ट ह्वै, फेरि पठायौ नाहि। प्रभु कौं श्री अद्वैत करि अद्भुत भोजन आहि ॥
नित्यानँद सँग युक्ति करि प्रभु एकांतहि जोइ। कृष्न प्रेम परचार हित गौड पठाये सोइ ॥
तव ही वल्लभ भट्ट श्री प्रभु कौं मिले जु आहि। कृष्न नाम कौ अर्थ प्रभु कह्यौ कृपा करि ताहि ॥
प्रभु प्रद्युम्नहि मिश्र कौं श्री रामानँद पास। श्रवन कराई हरि कथा कहि तिनके गुण रासि ॥
रामानन्द भ्राता यहै गोपीनाथ जु आहि। राजा मारण लायौ तिहि प्रभु रचक हो जाहि ॥
पुरी रामचँद भय जु करि भिचा दई घटाय। प्रभु दुख लखि वैष्णवन कौं आधिक राखी आय ॥
है जु एक ब्रह्मांड मधि भुवन चतुर्दस सोय। जितेक चौदह भुवन में वसें जीवगण जोय ॥
ते सब मानुष वेस धरि यात्रा मिस जु बनाय। श्री प्रभु कौ दरसन करैं लीलाचल मधि आय ॥
जिते भक्तगन एक दिन श्री वासादिक जोय। प्रभु जू के गुण गाय कैं करैं कीरतन सोय ॥
भक्त गननि सौं कहैं प्रभु कछू क्रोध मन पागि। करौ कहा तुम कीरतन कृष्ननाम गुण त्यागि ॥
जाने उद्धतता करण भयौ सवन मन जोय। जय जय श्री चैतन्य करि करैं कुलाहल सोई ॥
तिही समैं दस दिसनि में कोटि कोटि जन जोय। जय श्री कृष्नचैतन्य कहि करैं कुलाहल सोइ ॥
जय जय जय श्री महाप्रभु जय व्रजराज कुमार। तारण हित सब जगत कें प्रभु तुम्हारौ अवतार ॥
आये हम अति दूर ते ह्वै वहु आरत जोइ। करौ कृतारथ सवन कौं दरसन दै प्रभु सोय ॥
सुनि लोकनि कौ दैन्य प्रभु भयौ आर्द अति हीय। बाहिर आय जु दयामय तिनकौं दरसन दीय ॥
बोलौ हरि हरि कहैं प्रभु दोऊ भुजा उठाय। श्री हरि हरि धुनि उठी अति रही चहूँ दिस छाय ॥
प्रभु लखि प्रेम जु लोक कौं आनन्दित मन आहि। प्रभु कौं ईश्वर बोलि कें करें स्तवन सब ताहि ॥
तव सुनि कैं प्रभु सौं कह्यौ श्री निवास रस रास। घर में दुरि किनि रहे क्यौं बाहिर होहु प्रकास ॥
लोक सिखाये किन कहैं कौंन बात ये आहि। इन सब को मुख ढापि तुम दै निज हाथ हि ताहि ॥
ज्यौं सूरज करि कैं उदौ चाहै दुरयौ जु सोय। तैसैं बूझि सकै नही तुम चरित्र है जोय ॥
श्री निवास सौं प्रभु कह्यौ तजौ विडम्बन सोय। सब मिल कैं क्यौं करौ मम महालांछना जोय ॥
ऐसैं कहि करि लोक कौं दृष्टिदान शुभधाम। प्रभु भीतर भौ लोक कें भये सुपूरण काम ॥
गये दास रघुनाथ तब श्री नित्यानँद पास। चिरवा दधि कौ महोत्सव कियौ तहाँ जु प्रकास ॥
आये प्रभु के पद निकट लै कैं आज्ञा ताहि। श्री स्वरूप के हाथ प्रभु तिनकौ सोंपौं आहि
भारथि ब्रह्मानन्द कौं चर्माम्बर जु छुड़ाय। लीला किय षट वरष प्रभु इहि बिधि भरे सुभाय ॥
कह्यौ सुलीला मध्य कौ यहै सूत्रगण सार। सूचन लीला सेस कौं करें जित क विस्तार ॥

रूप ओर रघुनाथ पदरज निवास हैं जाहि। चरितामृत चैतन्य कौ कृष्नदास कहि ताहि ॥
रूप सनातन जगतहित सुवल स्याम् पद आस। चरितामृत कौं कहत सौ व्रजभाषा हि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखंडे व्रजभाषायां मध्यलीलासूत्रवर्णनं नाम प्रथम परिच्छेदः ॥

द्वितीयपरिच्छेदः

गौरस्य कृष्णविच्छेद प्रलापाद्यनुवर्ण्यते। विच्छेदेस्मिन् प्रभोरंत्यलीला सूत्रानुवर्णने ॥ १ ॥

जय जय जय श्री गौर ससि जयश्री नित्यानन्द। जय जय श्री अद्वैत विधुजय भक्तनके वृन्द ॥
प्रभु जू के वारह वरस रहे सेष जे आहि। अनुभव कृष्नवियोग कौ होय नितन्तर ताहि ॥
राधा जू की गति भई जो उद्धव लखि नेंन। इंही भांति प्रभु की दसा होय सदा दिन रैन ॥
श्री प्रभु जू कें रेंन दिन रहे विरह उन्माद। चेष्टा सदा जु भ्रममई औ प्रलापमय वाद ॥
चलैं रोम कूपनि रुधिर दसन हले सव आहि। अंग छीन छिन होय प्रभु प्रफुलित छिन में ताहि॥
गंभीरामधि रेंन कौ नहि निद्रा बल सोय। घसे सीस मुख भीत सौं सव अंगन छत होय ॥
द्वार कपाटहि तीन लंघि प्रभु जू वाहिर जांहि। सिंध–द्वार कबहूं परें सिंधु नीर के मांहि ॥
उपवन कौ उद्यान लखि श्री वृन्दावन ज्ञान। गावैं नाचैं जाहि तंहिं छिन मूर्छा कौं भांन।
हाथ पाय की संधि सव एक वितस्ति प्रमान। होय पृथक सँधि छाडि कैं चर्म रहें स्वस्थान ॥
जिनि जिनि भावन कौ कहूं नहि सुनियें जुविचार। तिन तिन भावन कौ रहैं प्रभुके अंगप्रचार॥
हस्त पद सिर देह मधि सवै अचिंत्य स्वरूप। जाहि पैठि तत्र देखियै प्रभू कौं कूरम रूप ॥
ऐसें अद्भुत भाव जो होय सरीर प्रकास। मनहु सून्यता वचन मधि हा हा हा जु हुतास ॥
कहां करौ पाऊ कहां श्री ब्रजराजकुमार। हा हा मेरे प्राणपति वंशी वदन सुचार ॥
काहि कहौं जाने जु को मेरे दुःख अपार। हिय फाटे मेरो सखी विना व्रजराजकुमार ॥
इंहिं विधि करें विलाप प्रभु अन्तर विहवल आहि। श्लोक राय नाटक जु मधि पढ़े निरंतर ताहि॥

तथाहि जगन्नाथवल्लभनाटके।—

प्रेमच्छेदरुजोऽवगच्छति हरि र्नायं न च प्रेम वा, स्थानास्थानमवैति नापि मदनो जानति नो दुर्व्वलाः।
अन्यो वेद न चान्यदुःखमखिलं नो जीवनं वाश्रवं द्वित्रीण्येव दिनानि यौवनमिदं हा हा विधे का गतिः ॥

राग बिहागरौ

आलवाल हिय माहि सखी री उपज्यौ अंकुर प्रेम ।
दीय तोरि दुख पूरि ताहि नहि पीय कृष्न हिय नेम ॥टेक॥

बाहिर नागर नृप जु सखीरी अन्तर अति सठ राज ।
परनारी वध करन किय मधि सावधान विन काज ॥

नही जानियें क्यौं हूँ सजनी विधि घटना की रीति ।
प्रीति करी सुख हेत सखी जी भई सुगति विपरीति ॥

प्रेम कुटिल अजान सखी नही जानें थान अथान ।
भलो बुरो न विचार करैं सो नहि माने अपमान

महाक्रूर सठ के औगुन तिन गुन की फासि वनाय ।
बांधी जु मम कंठ कर गाढ़ें सकै न इत उत धाय ।

परद्रोह में निपुन सखी सो जो मनसिज तनुहीन ।
पांचवान सौंधे छिन छिन नहिं समझै तनु दुख दीन ॥

चूर चूर करि वेधि सखी री सो अवलानि सरीर ।
लेय न हीये प्राण देय दुख जीये न मरें अधीर ॥

जो दुख मन में होय ओर कैं सो नहि जानें आंन ।
यहै जगत विख्यात शास्त्र की सो सांची जु निदान ॥

किहि गिनती मधि और कोउ जन प्राण सखी जो आहि ।
जाते कहि धीरज करिवे कौं सोउ न जानें ताहि ॥

कृष्न कृपा के उदधि है कवहुँ करि हैं अंगीकार ।
यहै वचन तुम व्यर्थ सखी यौं भयौ जु अव निरधार ॥

कमल पत्र जल ज्यौं अति चंचल जीव कौ जीवन जोय ।
आसा लगि जन जीयें सखि री तितनें दिन लौं कोय ॥

सत वत्सर लगि होय सखी री जीव कौ जीवन नास ।
याहू बचन हि करि विचार हिय जिन कहि सुनि इकगास ॥

जिंहिं रुचि करें कृष्न जुवती कौं जो जोवन धन सार ।
सो जोवन अति चंचल सजनी रहै दिना द्वै चारि ॥

ज्यौं दीपक अभिराम धाम निज पहिलैं ताहि दिखाय ।
करि जु पतंगी कौ आकर्षन फिरि तिंहिं देहि जराय ॥

ऐसें ही कृष्न दिखाय गुन निजमन हरे नेह लगाय।
पाछें तहां समुद्र में डारे परूयौ तहां बिललाय ॥
इतेक करि जु विलाप गौरहरि ह्वै कें विविध बिसाद।
खोले हिय के दुखकपाट यौं तोरि लाज मरजाद ॥
नाना भाव तरंग रंग बस रह्यौ न मन इक ठौर।
रस निर्वेद भावमय प्रभु जू श्लोक पढ़यौ इत और ॥

तथाहि श्लोकः—

श्रीकृष्ण रूपादिनिषेवनं विना व्यर्थानि मेऽ हान्यखिलेन्द्रियाण्यलं।
पाषाणशुष्केन्धनभारकाण्यहो विभर्म्मि वा तानि कथं हतत्रपः॥

मम हत वित जन्मभूमि मधु वंशीनाद सु ऐंन।
सो नहि देख्यो बदन चंद जिनको न काज ते नैंन ॥
तिंहिं माथें किन परौ बज्र सखि जरि बरि होहु सुछार।
कारण कौं नव हे सो सजनी इन नैंननि कौ भार ॥
कृष्ण मधुर बानी सो सजनी अमृत धुनि की धार।
जिन श्रवननि न प्रवेस कियौ तिहि अहि-बिलनिरधार ॥
तिन कौं श्रवणेंद्रिय करि कैं सखि जाकें है हिय ज्ञान।
जनम अकारण हैगौ ताकौ सो है निपट अयान ॥
मृगमद नील कमल दोउ मिले जो परमल है आहि।
कृष्न अंग कौ गंध सु ऐसै हरे मान मद ताहि ॥
ऐसौ कृष्न अँग परिमल कोउ जाकी नहीं सयान।
जिहि नासा संबन्ध न ताकौ सो भस्त्रा सम जान ॥
ऐ कृष्णा धरामृत सव रस अरु गुण चरित्रहो जोय।
सुधासार कौ मधुर स्वाद तिहिं है सुविर्निदिक सोय ॥
जानै नहि स्वाद जिंहिं तिंहिं भयौ जनमत ही किन नास।
जिह्वा भेक समान है सोई रसना वचन प्रकास ॥
कोटि चन्द्र सम सीतल हरि के करपदतल सुकुमार।
पारस मनि ज्यौं परसि जिन्हौं कौं हरे ताप हिंय मार ॥
परस भयौ नहि तिनकौ जाकौ छारखार तिंहिं गैंन।
सोई वपु लोहा सम जानौ अति कठोर दुख दैंन ॥

इतनौ कैरि विलपतु जु महाप्रभु सचिनन्दन भरि भाय।
सो कहिये कौ प्रगट कियौ यौं विवस महा अकुलाय ॥

भाव दैन्य अति बढ्यौ हिये में अरु निर्बेद विसाद।
श्लोक एक पढ़ैं जू तवै यह हिय में अति अवसाद ॥

तथाहि—श्रीजगन्नाथवल्लभनाटके श्रीराधायाः वाक्यं—

यदा जातो दैवान्मधुरिपुरसौ लोचन पथं तदास्माकं चेतो मदनहतकेनाहृतमभूत्।
पुनर्यस्मिन्नेषक्षणमपि दृशोरेति पदवीं विधास्यामस्तस्मिन्नखिल घटिका रत्नखचिताः ॥४॥

हारयौ मेरौ मन मैंन सखी री हारयौ मेरो मन मैंन।
देखनन हि पाये मैं प्रीतम एकौ छिन भरि नैंन ॥

जिहीं समैं सुपने में देखे बंशीवदन सुचारु।
तिही समैं आये द्वै वैरी अति आनँद अरु मार

पुनि कोऊ छिन दरसावैं ये घरी छितु पल आहि।
माला चन्दन दै आभूषन करौं अलंकृत ताहि ॥

छिनेक वाह्य भयौ मन देखे तब आगें जन दोइ।
पूछें तवै कहा हौं चैतन्य कहा स्वप्न लख्यौ सोइ ॥

कियौ कहा जु प्रलाप हमनि अब नहि ताकौ जु विचार।
सुनौं जु कछु तुम दैन्य हमारौ कहा ताहि निरधारु ॥

प्राननि के बांधव मेरे सुनों कृष्न प्रेम धन नाहि।
जीवन मेरौ दिन सु वृथा सब दे हैं दुख जग माहि ॥

सुनि करि करौं बिचार यहै यों है किन ही क्यौ सार।
श्लोक उचारयौ ऐसैं कहि कें श्री प्रभु प्रेम अधार ॥

श्लोक—कइ अवरहिदं प्रेम्मं नहि होइ मानुसे लोय।
जइ होय कस्सविरहो विरहे होन्तस्मि को जियइ ॥

जो इक श्री ब्रजराज कुमार कौ बिन कैतव है प्रेम।
सो अति ही अद्भुत निर्मल है ज्यों जांबूनद हेम ॥

सो प्रेम नरलोकनि न होई जौ काहू कै होय।
जौ होइ ताहि वियोग तिंही कौं सो जीवै नहि कोय ॥

इतनौ कहि पुनि तिहीं समें श्री सचिनंदन भरि भाय।
श्लोक पढ़ै अदभुत जाकौ सुनौ दोऊ ए मनलाय ॥

जो कहियै अपनैं मन की कछु लेय जु लाज दवाय।
इतनैं पैं कहियै तउ ताकौं लाजवीज कौं खाय ॥

अति ही दुर्लभ दूरि हैं जु सो जो सुप्रेम कौ गंध ।
सो नहि पाव कृष्न हमारे कपट प्रेम सनवन्ध ॥

तऊजु इतनो क्रन्दन कीजै निज सोभाग्य प्रकास ।
करियै यह जानौं तुम निश्चै हिये प्रतिष्ठा आस ॥

वंसीनाद सुधा सुधारास व सुख तिनकौ ऐंन ।
देखियै नही सो वदन चन्द्रमा जिहि उजास दिन रेंन ॥

जद्यपि न है आलंवन तऊ निजदेहमें कीजै प्रीत ।
प्रानकीट कौ धारण करियैं केवल निजसुख रीति ॥

कृष्नप्रेम निर्मल अति सुचिसो गंगाजल के भाय।
सो प्रेमा है सिंधु अमृत कौ छिन २ अति अधिकाय ॥

निर्मल तिहि अनुराग में क्यौं हूं दुरै न कोऊ दाग ।
स्वेत वसन में छिपै न जैसैं मसी विन्दु कौ राग

सुद्ध प्रेम सुख सिन्धु जो ताकी एक विन्दु मिलै आय ।
सोई विंद आनंदके निधि में जगतहिं देय बुडा

जो गन ही इहि वात कहन कौं राखियै हिये दुराय ।
बावरे ह्वै कैं कहैं तउ तिहिं कहेंउ को पतिर ॥

इहि विधि दिन-दिन श्री स्वरूप अरु श्री रामानँद संग ।
करें विदित निज भाव हिये कौ हृदय भरें रस ॥

वाहिर विष ज्वाला वलि जो हैं अंतर आनँद रूप ।
कृष्न प्रेम कों कथन कोऊ अदभुत चरित अ ॥

तप्त ऊख चर्वन कीयें ज्यौं आस्वादन है जाहि ।
जरें वदन तऊ जाय न छाड्यौ छिन २ बढ़े रुचि ताहि

सो प्रेमा जिहि हिय राजै तिहिं ताके वल को ज्ञान ।
विष अमृत कौ मेलि एक ठां चन्द्र कोटि अरु भान ॥

तथाहि विदग्धमाधवे:—

पीडाभिर्नवकालकूटकटुतागर्व्वस्य निर्व्वासनो, निःस्यन्देन मुदां सुधामधुरिमाहंकारसंकोचनः ।
प्रेमा सुन्दरि नन्दनन्दनपरो जागर्ति यस्यान्तरे ज्ञायन्ते स्फुटमस्य वक्रमधुरास्तेनैव विक्रान्तयः ॥

कवित्त–

महावड़े दुखनि समूह करि डारे नव कालकूट कटुता कें गर्व हूं कौं दूर है ।
आनन्द कौ उर लाय तापय सिराय हिय करैं सुधा माधुरी कौं मान मद चूर है ।
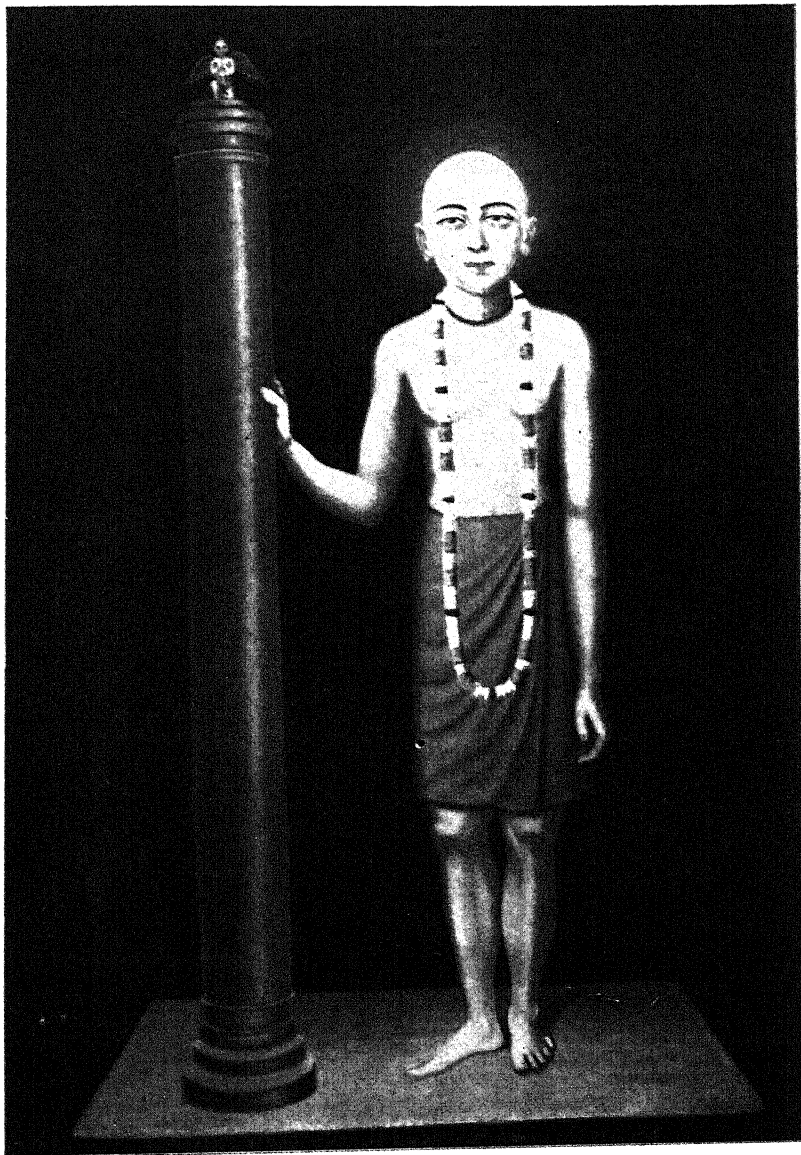
गरुड़स्तम्भ के पीछे

जगन्नाथदर्शनकारी प्रेम के ठाकुर श्रीकृष्णचैतन्य महाप्रभु

गरुड़ समीप ठाड़े रहे करें दरसन जे आनंद समूह सो कैसे जात गाये हैं।
ताही थंभतरें एक नीकौ नीम्नगर्त्त रहैं भरें सोई अश्रुजल ऐसे भाव छाये हैं॥

प्रेम नन्द नन्दन कौ जाकैं हिय राजैं सखी ताकैं वल वक्र अति जानें साई सूर है ।
जाकी विपरीति रीति नीति कौं न लेस जहां उठै विष ज्वाला तहां सुधाही कौ पूर है ।

जवैं देखें जगन्नाथ राम श्री सुभद्रा साथ तवैं प्रभु जानें हम कुरुखेत आये हैं ।
जीवन सुफल भयौ देखे ए कमल नेंन तन मन नेत्र मेरे अति ही सिराये हैं ।
गरुड समीप ठाढे रहे करें दरसन जे आनंद समूह सो कैसें जात गाये हैं ।
ताही थंभ तरें एक नीकौ नीम्न गर्त्त रहै भरें सोई अश्रु जल ऐसे भाव छाये हैं ।

तहां तें निवास आय वैठें जब मृतिका पैं नख करि लिखैं भूमि चिंता कौ प्रकास है ।
हा हा कंहा वृन्दावन कहां नंद नन्दन सो कहां वंशीवदन जो छवि कौ निवास हैं ।
ललित त्रभंगी कहाँ कहाँ वेनु गान वह जमुना पुलिन कहां कहां उह रास है ।
कहां नृत गीत हास कहा वें विलास प्रभु मोहन मदन कहां सुख को उजास है ।

दोहा

नाना भावनि कौ तहाँ उठयौ महा अति वेगि । छिनहूं सकै वितायं नहि भो मन में उद्वेग ॥
भो विरहानल प्रवल करि धीरज चंचल ताहि । श्लोक पढ़न लागे सु प्रभु ऐसैं नाना आहि ॥

तथाहि कृष्णकर्णामृते—

अमून्यधन्यानि दिनान्तराणि हरे त्वदालोकनमन्तरेण ।
अनाथवन्धो करुणैकसिन्धो हाहन्त हाहन्त कथं नयामि ॥

राग विहागरौ

कृपा करि दीजै दरसन दान । करुणासिंधु अपार वड़े तुम दीनवन्धु मम प्राण ॥
तुम दरसन विन अति अधन्य ए रेन द्यौसहै जोय ।
कटै नही ए काल घरी छिनु पल इक युग सम सोय ॥
उठ्यौ भाव चापल्य महा तव मन चंचल भयौ ताहि ।
जानी न जाय भाव गति क्यौं हूँ विन लखि हिय जरि आहि ॥
क्यौं करि पाऊ अब दरसन तुब हीय वढ़ो अति चाय ।
तवै कृष्न जू सौं पूछें यों देखन कौ जु उपाय ॥

तथाहि तत्रैव—

त्वच्छैशवं त्रिभुवनाद्भुतमित्यवेहि मच्चापलञ्च तव वा मम वाधिगम्यं ।
तत्किं करोमि विरलं मुरलीविलासिमुग्धं मुखाम्बुजमुदीक्षितुमीक्षणाभ्याम् ॥

अहो कहा करौं कहां जांऊ। आपुन ही अहो कहो मोहि तुम जिहि उपाय तुम्हैं पाऊ।
माधुरि कौ वल जो तुम तातें मेरे चापल जोय।
इन दोनौं कौं तुम अरु हौ ही जानत हैं जन दोय॥
नाना भावनिकौं प्रभु जू कौ भयौ अति हि प्रावल्य।
भाव भाव कौं भयौ महारण भयौं संधि सावल्य॥
उत्कंठा चापल्य तिही छिनु भयौ जु दैन्य विषाद।
रोषामर्षादिक सेंना तिहि सव कारण उन्माद॥
मत्त द्विरदगण भाव औ प्रभु कौ देह पवन सम सोय।
जैसैं महामत्त गज रण में वन कौ दलन जु होय॥
भयौ उन्माद दिव्य प्रभु जु कौं तन मन में अवसाद।
करें संवोधन भाववेस में हियें जु प्रेम प्रमाद॥

तथाहि तत्रैव—

हे देव ! हे दयित ! हे भुवनैकबन्धो ! हे कृष्ण ! हे चपल ! हे करुणैकसिन्धो ॥
हे नाथ ! हे रमण ! हे नयनाभिराम ! हा हा कदानु भवितासि पदं दृशोर्म्मे ॥

कवित्त

लछन उनमाद कौं करायें प्रकट कृष्ण भावावेस मध्य उठें प्रेम कौं जुमान हैं।
बोलन की बक्ररीति नाम मध्य व्याज स्तुति कहुं प्रिय निन्दा करैं कहू सनमान है।
देव तुम क्रीडा रत जीती नारि लोकनि में जाहू करौ क्रीडा सोई सुख कौ निदान हैं।
दई होत मेरे तुम वढ़े वसें चित्र तुव आये मेरे भाग्य वस उदै भयैं भान है॥

लोक में जे नारी गन सवन बुलावै जाय नेह करि सवन कौं करौं समाधान हैं।
कृष्ण तुम चित्त चोर ऐसौ कौन पामर है करि कैं असूया करै तुम सौं जु मान हैं।
चंचल तुम्हारी मति नाहि एक ठांह थिति तामें दोस नाहि कछू तुम्हारों निदान हैं।
करुणा के सिन्धु मेरे प्राननि के वंधु हौ जु तुम सौं न रोस मेरे कवहूं अजान हैं।

तुम ब्रज प्राणनाथ करौ सव रछ्या ब्रज तातें वहु काज वस नाहि अवकास हैं।
रमन हमारे तुम आये सुख देंन हेत यहै जु तिहारौ चतुराई कौ विलास हैं।
वाक्य मेरे निन्दा मानि गये छाडि कृष्नचंद्र सुनौंहो वचन जामें स्तुतिकौ निवास हैं।
आखिन कौ अभिराम मेरे तुम प्राण धन हा हा फेरि देहु दरसन सुख रास हैं।

स्तंभ कंप औ प्रसेद नेंन अश्रु सुर भेद वैवर्ण पुलक अंग अंग व्याप भये हैं।
हसें यौं हुंकारें नाचें गावैं इत उत चलैं धाय कभूँ गिरें भूमि मूर्छा सुख छये हैं।

प्रगट भये मूरछा में करें उठि हुँकार, कहें आये महाशय दुख सब गये हैं।
कृष्न माधुरीकौ गुण नाना भ्रम होय मन श्लोक पढ़ि करें ऐसें निश्चै हिय लये हैं ॥

तत्रैव—मारः स्वयं नु मधुरद्युतिमण्डलं नु, माधुर्य्यमेव नु मनो नयनामृतं नु।
वेणीमृजो नु मम जीवितवल्लभो नु कृष्णोऽयमभ्युदयते मम लोचनाय ॥

किधौं यहै कामरूप द्युति कौ स्वरूप किधौं किधौं सब माधुरी सुरूप धरि आई हैं।
उत्सव किधौं हैं यहै मेरे मन नैंननि कौ किधौं प्राण प्यारे मेरे हियें सुख दाई हैं।
एतौ सांच कृष्ण आयें आखिन के भये भाये अति ही सुहाये मानौ रंकनिधि पाये हैं।
ऐसें नाना भाव शुरु सिष्य तन मन होय सदाई नचावें नाना रीति मन भाई हैं ॥

निर्वेद बिसाद दैन्य चापलता हर्ष धैर्य्य कोप इन नाचनि में बीते प्रभु काल है।
चंडीदास विद्यापति गान राय नाटक कौ कर्णामृत और गीत गोविन्द रसाल है।
श्री स्वरूप रामानंद संग प्रभु रैंन दिन गावैं सुनि होय हियें आनन्द विसाल है।
महा भाव पगे इही भांति रहैं रैंन दिन एक मन मीन परयौ बहु प्रेम जाल है ॥

श्री पुरी गुसाई जू के मुख्य रस वत्सल है रामानन्द जू कें सुद्ध सौख्य रस जानियें।
भक्त जे गाविंद आदि तिनकैं है सुद्ध दास्य रसही की सेवा हियें और नही आंनियें।
पंडित गदाधर जू और श्री जगदानन्द श्री स्वरूप जू कें हिय मुख्य रस सानियें।
एई चार मुख्य भाव तिन ही कें सदा बस रहैं महाप्रभु कहौ कहां लौं वखानियें ॥

दोहा

लीला सुक जे मृत्यु जन भावोद्गम भौ ताहि। ये ईश्वर तिन कें जु सो कहा अचंभौ आहि ॥
जाते आश्रय मुख्य रस भये महाप्रभु जोय। सब भावन की प्रगटता ताही तें तिन होय ॥
व्रज विलास मधि प्रथमजे तीनि मनोरथ आहि। जतन कियेंहूं नहि भयौ तव आस्वादन ताहि ॥
आपुन अंगीकार करि श्री राधा की भाय। तीन वस्तु कौ स्वाद किय जिनको होय अचाय ॥
आपुन करि आस्वाद तिहि सिखयौ भक्तन जोइ चिंतामनि जो प्रेम धन श्री प्रभु धनी जु सोय ॥
तातें पात्रापात्र नहिं जिंहिं तिहि कियौ सुदान। प्रभु जू दाता मुकुटमनि है रतननि की खान ॥
दिय लुटाय संसार कौं ऐसौ धन है जोय। नहि अवतार दयाल इम दाता कोऊ न सोय ॥
ऐसै जो अति गुप्त है भाव उदधि जो आहि। ब्रह्मा हू पावै नहीं एक विन्दु हूं ताहि ॥
वरनि सकै नहीं कोऊ तिनकें गुणगण जोय। कहि वे की नहिं कथा है कहैं न समझै कोय ॥
ऐसें श्री चैतन्य कौ है अति चित्रबिहार। सो रसकी है जानि तुम जापैं कृपा अपार ॥
ताही पै चैतन्य की ह्वै है कृपा अभंग। तिहि दासन के दास कौ ह्वै है जा कौ संग ॥
रत्न सार लीला जु प्रभु श्री स्वरूप भंडारैं। तिन्हौ ताहि रघुनाथ कौं कण्ठ धरयौ निरधार ॥

तिनि सों कछु जो सुन्यौं तिहि किय विवरण यह सोध। भक्तगनन कौं भेट यह यथा सक्ति दी सोय।।
ग्रंथ किये हम श्लोकमय जु ऐसैं कहैं कोय। कैसैं ताकौ इतर जन जानि सकैंगौ सोय।।
प्रभु जू कौ आचरण जो कीनौ विवरण ताहि। सकै नहीं आराधिकें चित्त सवन कौ आहि।।
राग द्वेष जो हो तिहिं ताही मधि आवेस। सहज वस्तु के लिखन में होय नही परवेस।।

कवित्त

जो पै हैं न जाने कोऊ सुनत सुनत सोऊ अद्भुत चैतन्य जू कौ चरित अपार है।
ह्वै कैं कृष्न विषें प्रीति जानि है सो रस मुनें बड़ी भांति ह्वै है हित ताकौ निरधार है।
श्लोकमय भागवत टीका देव वानी तऊ कैसैं जानें ताहि सब किये तें विचार है।
श्लोक इहां दोय चारि अर्थ भाषा कियौ तऊजानी हें न कैसैं सब जन तिहि सार है।।

सेस लीला सूत्रगण विवरण कियौ कछू कियौ चाहै मन मेरौ तिनकौ विस्तार है।
जो पै आयु अब सेस करौं व्यास लीला सेस जो है महाप्रभू जु की करुणा अपार है।
हौं तौ जीर्ण वृद्ध तऊ लिखत में कंपै कर होहि नही मेरे कछू मन में विचार है।
देखौं नही नैन कान सुनौ नही तऊ कछू लिख्यौ चाहौं ताहि अचिरज निरधार है।।

यहै सेस लीला सार ताकै सूत्र बीच कहूं वर्णन कियौ है कछू करिकैं विस्तार है।
जौ पै याही बीच मरौं सकौं नही ताहि कहि तौ पै यह लीला भक्तगण धन सार है।
कीयौ है संक्षेप यहै सूत्र इहां जो न लिख्यौ नीकी भांति ताकौ आगें करेंगे विचार है।
तित दिन जीये जो पैं होय प्रभु कृपा यहै करि है विस्तार निज हीय अनुसार है।।

दो०

छोटे बड़े जु भक्तगण वंदो सब पद आहि। मो पै तुम सन्तुष्ट सब होहु कृपा अबगाहि।।
श्री स्वरूप मत जितौ कछु कह्यौ रूप रघुनाथ। सोई लिख्यौ न दोस मम तिन के पद धरि माथ।।
श्री प्रभु नित्यानन्द मम श्री अद्वैत जु ईस। और भक्तगण जिते सब तिनके पद धरि सीस।।
श्री स्वरूप गोस्वामि जू रूप सनातन जोइ। वंदौ श्री हरिदास पद तिन में मुख्य हैं सोइ।।
श्री चैतन्य विलास निधि पुनि तरंग जो ताहि। कृष्णदास कहि यथा मति इक कन कोऊ जाहि।।
रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस। चरितामृत कौं कहत है व्रज भाषा हि प्रकास।।

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे व्रजभाषायां मध्यलीला अंत्यलीला सूत्र कथन
प्रेमोन्मादप्रभाववर्णनो नाम द्वितीयपरिच्छेदः।।

———

तृतीय परिच्छेद:

न्यासंविधायोत्प्रणयोऽथ गौरो वृन्दावनं गन्तुमना भ्रमाद्यः ।
राढ़े भ्रमन् शांतिपुरी मयित्वा ललास भक्तैरिह तं नतोऽस्मि ॥१॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैताचार्य ससि जय प्रभु भक्तन वृन्द ॥
बरस सेस चौबीस ये माघ मास है जोय । शुक्लपक्ष तिहिं तहां प्रभु किय सन्यास जु सोय ॥
प्रेम मगन वृन्दा विपिन चले जु करि सन्यास । राढ़ देस में तीन दिन भ्रमन कियौ रस रास ॥
पढ़े श्लोक इहिं महाप्रभु भावावेश हि जोइ । भ्रमत पवित्र कियौ सवैं राढ़ देश है सोइ ॥

तथाः – एतां समास्थाय परात्मनिष्ठामध्यासितां पूर्व्वतमैर्महर्षिभिः ।
अहन्तरिष्यामि दुरन्तपारं तमो मुकुन्दांघ्रिनिषेवयैव ॥ २ ॥

कहै महाप्रभु साधु यह भिक्षु वचन है जोय । हरि सेवा ही कें जुयौं किय निर्धारन सोय ॥
जो परात्मनिष्टा सु इक वेस मात्र है सोय । भव सागर तरिवो जु हरि सेवा ही सौं होय ॥
कियौ वेस सोई अवें वृन्दावन मधि जाय । करि हैं सेवन कृष्न कौं वसि इकांत सुख पाय ॥
ऐसैं कहि कें चले प्रभु प्रेममत्त अति सोय । ज्ञान नहीं दिस विदिस कौं कहां रैंन दिन जोय ॥
नित्यानन्द मुकन्द औ रत्नाचारज जोइ । प्रभु कें पीछें गमन ए करें तीन जन सोइ ॥
जेई जेई प्रभु लखें तेइ तेइ सब लोक । प्रेम मगन हरि हरि कहैं नास होय दुख सोक ॥
तहां गोप बालक सवैं प्रभु कौ लखि भरि माय । बोलि उठैं अति उच्च सुर हरि हरि अति हिय चाय ॥
सुनि कें तिन सब के निकट गये गौर हरि जोय । तिनकें सिर कर धरि कहैं कहौ कहौ पुनि सोय ॥
स्तुति इन सब की करें तुम भाग्यवान अधिकाय । किय कृतार्थ मो कौं जु तुम हरि हरि नाम सुनाय ॥
ठाकुर नित्यानन्द जू दुरि तिन सब कौं लाय । यहै सिखायौ सवन कौं हिय में जतन बनाय ॥
वृन्दावन पथ प्रभु तुन्है पूछैंगे भरि भाय । तब तुम गंगातीर पथ दीजौं तिन्हैं बताय ॥
तब प्रभु पूछें तिनैं तुम सुनौं जु सिसु समुदाय । वृन्दावन कौं जाइये सो पथ देवु वताय ॥
सिसु सब गंगातीर पथ प्रभु कौं दियौ दिखाय । कियो गमन आवेस में तिन्हों तिही पथ धाय ॥
करैं जु रत्नाचार्य सौं नित्यानन्द प्रभु राह । श्री अद्वैताचार्य के वेगि जाहु तुम गेह ॥
प्रभु कौं लै हम जाहिंगे तिन के मन्दिर जोइ । सावधान नौका हि लै रहैं तीर मधि सोइ ॥
तब तुम फिर कीजौ गमन नवद्वीप सुनिवास । सची सहित सब भक्तगण लै ऐहौ प्रभु पास ॥
श्री नित्यानन्द महाप्रभु तिनकौ दियौ पठाय । प्रभु ऐहैं आय जु तिन्हौं आगें दीयौ जताय ॥
कहें जु प्रभु श्री पाद जू कहा गमन तुम जोय । तुम सँग वृन्दा विपिन कौं जांहिं कहैं यों सोय ॥
कितक दूर है प्रभु कहैं वृन्दावन रस कंदै । यह यमुना दरसन करौ कहैं जु नित्यानंद ॥

ऐसैं कहि लाये तिन्हें गंगा निकट सुजान। गंगा मधि आवेस में भौ प्रभु यमुना ज्ञान ॥
अहो भाग्य रविसुता कौ पायौ दरसन जोय। स्तुति श्री जमुना की करैं ऐसैं कहि कैं सोय।

तथाहि चैतन्यचन्द्रोदयनाटके—

चिदानन्दभानोः सदानन्दसूनोः परप्रेमपात्री द्रव ब्रह्मगात्री।
अघानां लवित्री जगत् क्षेमधात्री पवित्री क्रियान्नो वपुर्मित्रपुत्री ॥

यह पढ़ि करि कै दन्डवत कियौ जु गंगास्नान। इक ही है कोपीन अंग नही दूजौ परिधान ॥
तिंही समै आचार्य जू नवका चढ़ि कैं जोय। आये लै कोपीन नव बहिर्वास हू सोय ॥
आगें ठाढ़े आय भौ नमस्कार करि सोय। तिन्हें देखि बोले प्रभु करि मन संसय जोय ॥
तुम तौ श्री अद्वैत ह्यां कैसैं पहुँचे आनि। हम वृन्दावन में तुम जु कैसैं लीनैं जानि ॥
श्री अद्वैत कहैं जहां तुम वृन्दावन जोय। गंगातट मम भाग्य तुम भयौ आगमन सोय ॥
प्रभु कहैं नित्यानँद जू हमें छलौ है जोय। लायैं गंगा कौ हमें कहिकें जमुना सोय ॥
अद्वैताचारज कहैं हिय तब हरषित होय। वचन कह्यौ श्री याद जो नाहिन मिथ्या सोय ॥
प्रभु जु तुम कियौ जहां स्नान तरनिजा सोय। एक धार ह्वै यहां बहै गंगा यमुना दोय ॥
जमुना धार पछिम बहै पूरव गंगा होय। पछिम यमुना धार मधि तहां स्नान किय जोय ॥
अब छाड़ौ कोपीन यह जो भीजी है आहि। सूकी औ नूतन कछू प्रभु जू पहिरौ ताहि ॥
तीन चारि दिन तें जु तुम जो कीनौ उपवास। चलौ आज मम घर करौ भीक्षा और निवास ॥
मुठी एक कछु अन्न कौ करवायौ है पाक। व्यंजन सूकौ रूछ कछु एक दार अरु साक ॥
यौं कहि नाव चढाय कैं लाये निज गृह सोय। कियौ प्रछालन पदकमल अन्तर हरषित होय ॥
श्री ठकुरानी प्रथम ही पाक कियौ है जोय। कियौं आप आचार्य जू विष्नु समर्पन सोय ॥
भोग उसारयौ तीन ठां करि कें एक समान। धातु पात्र मधि कृष्न कौ भोग धरयौ रसखान ॥
अति उत्तम कदली दलनि पनवारे जु सवार। भोग उसारयौ दोय ठां करि कैं भलैं विचार ॥
मध्य पीत घृत सिक्त अति भात जु विविध प्रकार। व्यंजन दोना चहु दिसनि हरित मूंग की दार॥
अदरक जुत किय साक के पाक अनेक प्रकार। पलवल पेठा करु बरी तरकारी जु अपार ॥
सूक्ता राई मिरच दै कीनैं बहु फलमूल। तिक्त झोल किय पंच विध सुधा न जिहिं समतूल ॥
कोमल दल है नीव के वेंगन कीये बनाय। फूलवरी भाजी विविध मानचक्र अधिकाय ॥
नारिकेलि के मधुर फल भोगन की धरि पाँति। व्यजन कदली फूल के पेठा किये बहु भांति ॥
वरा मूग के उरद के कदली के अति मिष्ट। पूरी श्री फल दूध की अरु प्रभु कौं जे इष्ठ ॥
कदली दल मूल के दौंना बड़े बड़े जोय। दोना चलै हलै नही दृढ़ विसाल है सोय ॥
दोना लै लै अर्ध सत व्यंजन भरि बहु भांति। धरे सु तीनौ भोग के आस पास करि पांति ॥
घृत पायस भरि कुंडिका माटी की जु नवीन। दूध अधावट सौ जु भरि धरे पात्र तहि तीन ॥

पय चिरवा दधि दूध के सामिग्री वहु भाय । धरि मृत कुंडीकाहि में ये जु चाय अधिकाय ॥
कदली के व्यंजन सु बहु धरे भोग तिहि ठांय । मिश्री बूरा दधि मधुर कहे न क्यौ हू जांय ॥
सब पाकनि उपरी तवे तुलसि मंजरी धार । धरे तीन जलपात्र तहां भरि जु सुवासित वार ॥
तीन पीढ़ तिन पर परम सुभ्र वसन जु विछाय । भोग महा श्री कृष्न कौं करि रख्यौ भरि भाय ॥
समें आरती के दोऊ प्रभु लीनैं जु बुलाय । देखी सवन सुआरती प्रभु जू के सँग आय ॥
करी आरती कृष्न कौं सज्या सयन कराय । भोजन कौं भाई दोऊ लीनें तवैं बुलाय ॥
तब मुकुन्द हरिदास विव प्रभु जु बुलाये जोइ । दौऊ जन कर जोरि तव कहन लगे यों सोइ ॥
कहैं मुकुन्द जु मम कछू कृत्य भयौ है नाहि । हौं पीछे सों पाय हों तुम जु उठौ गृह मांहि ॥
तब हरिदास कहैं जु हौं बड़ो अधम पापिष्ठ । करि हौं भोजन इक मुठी पाछें वाहिर तिष्ट ॥
आचारज घर मधि गये दोऊ प्रभु जू संग । प्रभु कें देखि प्रसाद कौं हिय आनन्द अभंग ॥
भोजन करवायौ तिन्हौ प्रभु कौं इहि विधिआहि । जनम जनम सिर पर धरौं चरण कमल हौं ताहि॥
तीनौ भोग जु कृष्न कौं प्रभु जानैं इहि बात । आचारज के हीय की प्रभु नहि जानें घात ॥
प्रभु जू कहैं तीनौ करें भोजन बैठौ आय । करि हैं परिवेसन जु हम आचारज कहैं ताय ॥
कौंन ठौर वैटें कहौ अरु लावौ द्वै पात । देहु आनि तिंहिं अल्प करि कछु व्यंजन अरु भात ॥
आचारज कहैं पटा पर बैठौ दोऊ साथ । वैठायो दोऊन कौं यौं कहि गहि के हाथ ॥
प्रभु कहैं भोजन इतेक नहि सन्यासी जोग । कैसैं इन्द्री बस करैं करि कैं इतनौ भोग ॥
श्री आचार्य कहत जो अपनी चोरी जोय । हम जाने संन्यास की टाराटारी सोय ॥
भोजन करौ जु जो जु तुम वचन चातुरी भाय । प्रभु जु कहैं हँस एकले कितेक सकि है खाय ॥
श्री आचार्य कहैं करौ कपट छाडि आहार । जो नहि सकि हौ खायकछु रहि है कहा विचार ॥
इतेक न हम प्रभु जु कहैं खाय सकैं नहिं जोय । राखियें जो उच्छिष्ट नही धर्म यती कौ सोय ॥
ते जु कहैं लीलाचलहि खावौ चौंवन वार । एक एक वारहि लगें अन्न जु सत सत भार ॥
तीन तीन जन भख जो एक ग्रास तुम सोइ । तिहि लेखें यह अन्न तुम पंचग्रास नहि जोइ ॥
मम घर मेरे भाग्य वस भयौ आगमन जोय । तजौ गुसांई चातुरी भोजन करौ जु सोय ॥
यौं कहि तिन्हौं जल दियौ दोऊ प्रभु के हाथ । हसि भोजन लागे करण प्रभु नित्यानन्द साथ ॥
न्यौते मधि आचार्य कें आजु हु भौ उपवास । उदर भरचौ नही अर्ध हू इही अन्न इक ग्रास ॥
श्री आचार्य कहैं तुम्है है तीर्थक संन्यास । कबहूं खावौ मूल फल करौ कभू उपबास ॥
दरिद्री द्विज घर लह्यौ अन्न मुठी इक जोय । ताही में सन्तोष करि तजो लोभ मन सोय ॥
नित्यानन्द कहैं जवैं कियौ निमंत्रण सोइ । तव ही ते यह चारु है करियैं भोजन सोइ ॥
तुम जु भ्रष्ट अवधूत हौ उदर भरण के काज । कीनैं हैं द्विज दंड हित यह दंडी कौ साज ॥

चावर के दस भार जो सकों खाय तुम आहि । हम दरिद्र द्विज कहौ तुम पावै कहां जु ताहि ॥
पायौ मुठि यक अन्न जो उठौ खाय कें ताहि । अब ह्यां करौ न मत्तता तजो न भूठन जाहि ॥
इहि बिधि नाना हास्य रस करैं जु भोजन भाय । व्यंजन जब छोडैं प्रभू आधो आधौ खाय ॥
सो व्यंजन आचार्य जू करें पूर्ण हिय चाय । गौर हरी बोले यहै पूर्ण भये हम पाय ॥
श्री आचार्य कहैं दियौ जो छाडौ जिनि ताहि । आधौऊ खाबौ अवैं जो हम परसौ जाहि ॥
नित्यानंद कहै जु मम पेट भरचौ नहि आहि । अन्न तिहारौ लियो जो नहि कछु खायौ ताहि ॥
ऐसें कहि करि भात कों एक ग्रास लै जोय । दियौ चलाय उछारि कें कछुक क्रोध जुत होय ॥
लगे भात द्वै चारि कन श्री आचारज अंग । आचारज जिहि अंग लै नाचौ भरि बहु रंग ॥
भूठन लगी अवधूत की मेरे सबही अंग । कीनौं परम पवित्र मो यहि मिस दया अभंग ॥
करिबे कौं मो आप सम यह उपाय किय जोइ । भूठन दई न भय कियौ विप्र जानिकें सोइ ॥
नित्यानन्द कहैं यहैं प्रभु प्रसाद है जोइ । ताकौं तुम भूठन कहौ किय अपराध जु सोइ ॥
संन्यासी सत एक कौ करौ निमन्त्रन जोइ । तब ही यह अपराध कौ निहचैं खंडन होइ ॥
आचारज कहैं कभु नहिं करौं निमन्त्रन ताहि । नास्यौ है स्मृति धर्म सब संन्यासी मम आहि ॥
करवायौ तब आचमन ऐसैं कहि कें बेंन । करवायौ पुनि दुहुनि कौ उत्तम सय्या सेंन ॥
एला बीज लवंग पुनि अति उत्तम जु सुवास । तामें तुलसी मंजरी दियो दुहुन मुखवास ॥
मलयज कुंकुम गंध पुनि कियौ लेप वपु आहि । अति सुगंध माला कुसुम पहिराई हिय ताहि ॥
कियौ चहैं आचार्य जू पद संवाहन ताहि । हिय में अति संकुचित ह्वै कहैं वचन प्रभु आहि ॥
बहुत नचायौ नाच हम अब तुम छाड़ौ सोय । भोजन करौ मुकुन्द हरिदास संग लै दोय ॥
तब तौ श्री आचार्य जू तिन दोऊ लै संग । किय भोजन जो हिय हुती इच्छा भरि रस रंग ॥
सुनिकें प्रभु कौ आगमन सांतीपुर के लोक । देखन कौं आये सबै प्रभु के पद सुख ओक ॥
हरि हरि बोलैं लोक सब अति आनन्दित होय । प्रभुकी सुन्दरता सु लखि अति विस्मों भो सोय॥
गौर देह की दुति जनौं उज्जल रविकी कांति । अरुण वसन सोभा तहां झिलि मिलाय बहु भांति ॥
आवैं जाय सु लोक सब समाधान नहिं होय । भयौ जनन की भीर में दिन अबसान सु सोय ॥
कीर्त्तन कौ आरंभ किय तिन्हौ सांझते आहि । निर्त्त करें आचार्य जू प्रभु देखत हैं ताहि ॥
बोले धरि आचार्य जू श्री नित्यानँद जोय । पाछें श्री हरिदास जू नाचैं हरषित होय ॥
कैसें कहियै आजु कौ आनँद उर न अछेह । बहुत दिनन में कृष्न विधु उदै भये मम गेह ॥
याही पदहि गवाइ कें नाचै हरषित होय । स्वेद कम्प आँसू पुलक गर्जन गुंजन सोय ॥
फिरि फिर कें कबहूँ धरें प्रभु के पद सुख ऐंन । आलिंगन करि कैं कभू कहैं मधुर यौं बेंन ॥
दिन अनेक मेरे जु तुम फिर किय वंचित जोय । अब पाये हौं गेह मधि बाँधि राखि हौं सोइ ॥

करें नृत्य आचार्य यों कहि भीजें आनन्द । एक जाम निसि किय तिन्हौं संकीर्तन स्वछंद ॥
उत्कण्ठा प्रभु प्रेम कौ नहि न कृष्न कौ संग । वढ़ी विरह में प्रेम की ज्वाला की जु तरंग ॥
विहवल ह्वै कैं महाप्रभु गिरे भूमि मधि जोय । प्रभु कौं लखि आचार्य जू नृत्य समेट्यो सोय ॥
तहँ मुकुन्द प्रभु हृदै की नीकें जोनें सोय । सरस भाव है एक पद गावतु संग जु सोय ॥
प्रभुहि उठायौ नृत्य हित श्री अद्वैत गुसांइ । प्रभु कौं तिहि पद सुनतहि अंग धरे नहि जाँइ ॥
अश्रु कम्प रोमांच जू स्वेद कंप सुर भंग । करें रुदन अति उच्च छिन गिरें उठे हिय रंग ॥
श्रीमुकुन्द अतिमधुर सुर यह पद गावैं सोय । प्रभुकौ अन्तर हृदय तिहि सुनि विदीर्न अति होय॥

क०—निर्वेद विषादामर्ष चपलता गर्व दैन्य भाव सैन्य युद्ध ए ई करैं प्रभु संग हैं ।
भाव के प्रभाव प्रभु भये जर जर ऐसैं गिरे मधि भूमि स्वास रह्यौ नही अंग है ।
देखि सब भक्तगण भये अति चिन्तायुत औचुका उठैं हैं करि गर्जन अभंग है ।
कहौ कहौ कहि नाचें आनन्द विवस महा जानी नहीं जाय महाभाव की तरंग है ॥

नित्यानन्द संग वोले श्री आचार्य गहैं प्रभू पाछें हरिदास वोलैं नाचें भरे रंग है ।
याही भांति एक जाम महाप्रभु नृत्य कियौ कबहूं विषाद हर्ष भाव की तरंग है ।
पांच दिन पाछें करि भोजन यौ कीयौ नृत्य महाश्रम भयौ उर आनन्द अभंग है ।
भावाविष्ट जाते तिन्हैं श्रमकौ न ज्ञान राख्यौ प्रभुजूकौं प्रभु नित्यानन्द गहि अंग है ॥

आचरज गोस्वामि तव राख्यौ कीर्त्तन जोय । नाना सेवा करि तिन्हौ सयन करायौ सोय ॥
इही भांति दस द्यौस लौं भोजन कीतन जोइ । प्रभु जू कौ सेवन कियौ तिन्हौ एक रस सोइ ॥
भोर ही रत्नाचार्य जू दोला मांझ चढ़ाय । आये माता सची लै संग भक्त समुदाय ॥
लोग सु नदिया नगर के वाल वृद्ध लौं जोय । भयौ महा संघट्ट अति आये सव ही सोय ॥
करि कें सब निज कृत्य प्रभु करें कीरंतन नाम । आये रत्नजु सची लै श्री अद्वैत जु धाम ॥
शचि आगें गोस्वामि जू परे दंडवत होय । लीय उठाय क्रन्दन करि सची गोद निज सोय ॥
भये दुहुन के दरस मधि दोऊ विहवल आहि । भई विकल अति सची तव केश न देखे ताहि ॥
अंग पौंछें चूमे वदन करैं निरीक्षण जोइ । नैंन भरें जल अश्रु करि देखि सकें नहि सोइ ॥
कहैं सची क्रन्दन सु करि वत्स निमाइ होई । विश्वरूप सम निठुरता तुम जिन करियौ सोइ ॥
संन्यासी ह्वै कैं जु मुहि दिय दरसन नहि फेरि । तुम तैसैं जो करौ मम मरन होय इहि बेरि ॥
प्रभु जु कहैं तव रोय कें सुन तुम मेरी मात । यामें मेरौ नहि कछू यह तुमरौही गात ॥
तुम ही ते या देह कौ जन्म जु पालन जोय । कोटिजन्म लौं हौं जु तुव सकौ जु अऋणी होय ॥
जानें अनजानें कहा किय यद्यपि संन्यास । तऊ तुम सौं ह्वै हैं नहीं हौं कबहू जु उदास ॥
कहौं जहां ही तुम तंही हों करि हौं जु निवास । जो आज्ञा तुम देहु सो करि हौं हृदय हुलास ॥

नमस्कार फिरि फिरि करें ऐसैं कहि कैं सोय । वार वार करि गोद में माय तुष्ट हिय होय ॥
आचारज जू सची लै गौ अभ्यंतर जोय । भक्त यूथ के मिलन कौ भो प्रभु सत्वर सोय ॥
एक एक करि मिले प्रभु सवैं भक्त समुदाय । सव कौ मुख देखैं करैं आलिंगन दृढ़ चाय ॥
केस न देखे भक्तसव यदपि लह्यौ दुख आहि । तऊ लह्यौ हिय मांझ सुख लखि सुन्दरता ताहि॥

कवित्त

श्री निवास रमाई जु विद्यानिधि गदाधर शुक्लांवर वक्रेश्वर औरु गंगादास हैं ।
श्री मुरारि बुद्धिमंत खान अरु नंदन जू श्रीधर विजय वासुदेव रसरास हैं ।
दामोदर श्री मुकुंद संजय जू कहां लगि नाम लेंहु जिते जिनि नवद्वीप वास हैं ।
सव ही सौं मिले प्रभु हँसे करि कृपा दृष्टि आनन्द में नाचैं सव सुख के उजास हैं ॥

अरु हरि हरि वोलैं सवैं करैं उच्च स्वर गान । मंदिर श्री आचार्य कौ भौ वैकुण्ठ समान ॥
जिते लोक आये तहां प्रभु कौं देखन जोइ । अरु जे नाना ग्राम ते नवद्वीप तें सोय ॥
तिन सव कौं जु निवास दिय भच्च अन्न वहु पान । वहु दिन लौं आचार्य जू किय सव कौ सनमान ॥
श्री अद्वैत भंडार जो घटैं नसैं नहिं सोय । तामें जे खरचें जितौ तितनौ पूरण होय ॥
ताही दिन तें सची जू करें रसोई आहि । सव भक्तन कौं संग लै प्रभु आरोगें ताहि ॥
प्रभु कौ दरसन प्रीति ही दिन में लखैं जु जोय । प्रभु कौ अद्भुत कीरतन देखे निसि में सोय ॥
प्रभु कौ कीर्तन करत ही सव भावोदय आहि । कंप जाड्य पुलकाश्रु यों गदगद प्रलय सु ताहि ॥
वार वार प्रभु धरनि जव गिरें पछारनि खाय । देखि सची माता कहैं करि रोदन अधिकाय ॥
भई निमाई की अवै दैया चूरण देह । हा हा करि तव विष्नु पैं मागें यह देह ॥
सेवा वालक काल तें कियौ तुम्हरौ जोय । हो नारायण देहु मम यहै सुफल तिहि सोय ॥
गिरैं निमाई जिह समें धरौं करहि निज सोय । अहो निमाई देह में जैसैं व्यथा न होय ॥
सचि देवी वत्सल कहैं ऐसैं विहवल सोय । हर्ष दैन्य भय भाव करि भई विकल अति जोय ॥
श्री निवास आदिक जिते विप्र भक्तगण आहि । प्रभु कौं भिक्षा देन हित सव कौ मन भौ ताहि ॥
करें जु सुनि माता सची सब की विनती जोइ । मोकौं कहा जु और ठां दरस निमाई होइ ॥
तुम सब कौ अन्यत्र हूँ ह्वै है मिलनौ आहि । हों अभागिनी कौ यहै दरस मात्र है आहि ॥
जौ लौं श्री आचार्य गृह वास निमाई होय । मोहि देहु भिक्षा सवै मागौं दान जु सोइ ॥
नमस्कार करि कैं कहैं सुनि कें जन गन ताहि । जोई इच्छा मात की सव की सनमति आहि ॥
माता कौं अति व्यग्र लखि भयौ व्यग्र मन ताहि । इकठां करिकें भक्तगण कहैं वचन यों आहि॥
तुम सव आज्ञा विन चलौ हों वृन्दावन जोइ । विघ्न जु लायो फेरि कें जाय सकैं नहि सोइ ॥
यद्यपि सहसा ही जु हम कीनौ है जु सन्यास । तऊ जु हूं तुम सबन सौं सकौं न होय उदास ॥

तुम सबकौं नहि तजौं हौं जौ लौं जीयौ जाहि । तबै लगि छाडि सकौं न हौं माता हू कौं आहि ॥
संन्यासी कौ धर्म नहि ऐ पैं करि सन्यास । जन्म भूमि के मधि रहै निज कुटंब के पास ॥
ऐसैं याही बात करि करै न निन्दा कोय । कहो युक्ति सोई जु तुम रहै धर्म जिहिं दोय ॥
प्रभु जू के ऐसे तबै मधुर वचन सुनि सोय । सची पास कीनौ गमन आचारज दिक जोय ॥
प्रभु जू कौ सब ही जु सौ कह्यौ निवेदन ताहि । जग माता सुनि सची जू कहन लगी यौं आहि॥
रहै निमाई जौ इहां तबै मोहि सुख आहि । सो दुख हमकौं दुसह जो निन्दा करै जु ताहि ॥
युक्ति यहै तातें भली मम हिय कहै जु सोय । दोऊ कारज होहि जो रहैं नीलगिरि जोय ॥
नीलाचल नवद्वीप में दोऊ घर जिमि आहि । लोग गतागत है सदा सुधि हम पैं है ताहि ॥
गमनागमन सकौ जु करि तुम सब तहां जु आहि । आवौ गंगास्नान हित कबहूं ह्वै है ताहि ॥
अपनौ जो दुखसुख महा गन्यौ नही तिहि आहि । निज सुख मानै हैं वही जो सुख है गो ताहि॥
सुनि कें सबही भक्तगण करैं वड़ाई ताहि । माता ऐसे वचन तुय आज्ञा वेदसु आहि ॥
कह्यौ सबन सब हि जु सौं प्रभु के आगें आहि । सो सुनि कें प्रभु के हियें मधि आनंद समाय ॥
नवद्वीप वासी जु लै जिते लोक समुदाय । सब कौ करि सनमान प्रभु कहैं वचन इहि भाय ॥
परम वन्धु मेरे जु तुम सबै लोक सुनि लेहु । मागौं भिक्षा एक सो मोहि सबै मिलि देहु ॥
सदा कृष्न संकीर्तन जु करौ गेह निज जाय । कृष्न नाम अरु कथा तिनि आराधन में चाय ॥
आज्ञा दीजै जाहु हौं लीलाचल कों धाय । तुम कौं दरसन देउंगो बीच बीच में आय ॥
ऐसैं कही सब सौं प्रभु मंद मंद मुसिकाय । करि सबकौ सनमान प्रभु विदा किये हिय लाय ॥
प्रभु चलिवे कौ मन कियौ करि कें विदा जु आय । कहैं रोय हरिदास जू करुणा वचन सु ताहि॥
लीलाचल कौं चले प्रभु मेरी गति है कौन । लीलाचल निज सक्ति करि हौं तो जाय सकौंन ॥
दरसन ही पैं हौ जु तुम हौं अति अधम जु सोय । यहि पापी कहि जीव कौं काहें धरि हौं सोय ॥
करौ दैन्य तुम संवरन यौं प्रभु कहैं जु ताहि । होय हमारौ विकल मन देखि दैन्य तुव आहि ॥
जगन्नाथ सौं बीनती हम करि हैं तुम हेत । तुम कौं हम लै आय है श्री पुरुषोत्तम खेत ॥
तव तौ श्री आचार्य जू कहैं विनय करि जोय । रहौ दिना द्वै चारि प्रभु करि कें कृपा जु सोय ॥
प्रभु जु कवहुँ नहि करें वचन अवज्ञा ताहि । रहे गेह आचार्य कें कियौ गमन नहिं आहि ॥
आनन्दित आचार्य भौ सची भक्त सर्व सोय । प्रतिदिन आचारज करें महा महोत्सव जोय ॥
दिन में कृष्न कथा सुरस करें भक्तगण संग । महामहोत्सव रैन में प्रभु संकीर्तन रंग ॥
करें रसोई शची जू अति आनन्दित होय । सुख सौं भोजन प्रभु करैं भक्त गनन लै सोय ॥
गृह संपद धन भक्त यौं श्रद्धादिक जे ताहि । प्रभु के आराधन किये सकल सफल भौ आहि ॥
देखि पुत्रमुख सची कें आनन्द उर न समाय । पूर्ण कीयौ निज सुख सबै भोजन तिन्हैं कराय ॥
इहि विधि श्री अद्वैत घर भक्तगनन के संग । बितये कितेक दिन प्रभू नाना कौतुक रंग ॥

कहैं और दिन महाप्रभु सब भक्तन सौं जोय ॥ निजनिज गृह कौं सबै तुम करौ गमन अब सोय॥
करौ कृष्न संकीरतन सब अपने घर जाय। मिलन तुम्हारौ फेरि हूं ह्वै है हम सँग आहि ॥
कब हूँ करि हौ गमन तुम लीलाचल सुख खेत। कबहूँ हम हूँ आय है स्नान सुरधुनी हेत ॥
नित्यानन्द गोस्वामी जू पंडित जगदानन्द। रामोदर पंडित तृतिय अरु श्रीदत्त मुकुन्द ॥
प्रभु सँग दिय आचार्य जू एई चार जन जोय। माता कौं समझाय कें किय पद वंदन सोय ॥
तिनकी करी जु परिक्रमा कियौ गमन प्रभु जोय। इहां गेह आचार्य कें क्रंदन उठ्यौ जु सोय ॥
चले महाप्रभु बेग ही निरपेचा सौं पागि। क्रन्दन करि आचार्य जू लीने पाछें लागि ॥
हाथ जोरि कें महाप्रभु केतिक दूरहि जाय। मिष्टबात आचार्य कौं कहैं कछू समझाय ॥
करो जननि समझाय जन समाधान है जोय। ज्यौं तुम ही व्यग्रजु भये जीवेंगे नहि कोय ॥
ऐसैं कहि कें महाप्रभु किय आलिंगन ताहि। इहिविधि फेरि विदा जु करि गमन कियौ तब आहि॥
गंगातीर हि तीर प्रभु संग चारि जन सोय। लीलाचल कौं चले प्रभु छत्र-भोग पथ होय ॥
प्रभु कौ लीलाचल गमन तिहि भागवत प्रकास। किय वर्णन विस्तार करि श्री बृन्दावन दास ॥
प्रभु विलास अद्वैत कौ घर जो जन सुनि जाहि। कृष्न प्रेमधन वेगही निहचैं मिलि है ताहि॥
रूप सनातन पद कमल रज की करि हैं आस। चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्न कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस। प्रभु चरितामृत कौं कहै बृज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे ब्रजभाषायां सन्यास ग्रहणं नाम तृतीय परिच्छेदः ॥

चतुर्थ परिच्छेद

तथाहि—यस्मैदातुं चोरयन् क्षीरभांडं गोपीनाथः क्षीरचोराभिधोभूत्।
श्रीगोपालः प्रादुरासीद्वसः सन् यत् प्रेम्ना माधवेंद्रं नतोऽस्मि ॥

जय जय जय प्रभु गौर समि जय श्रीनित्यानन्द। जय जय श्री अद्वैत ससि जय प्रभु भक्तनबृन्द॥
लीलाचल कौ गमन भो दरसन श्री जगन्नाथ। श्री प्रभु जू कौ मिलन पुनि सर्वभौम के साथ ॥
ए सब लीला अति मधुर श्री बृन्दावन दास। नीकैं वर्णन करी सब करि तिनकौं बहु व्यास ॥
मधुर विचित्र हि सहज ही श्री चैतन्य विहार। पुनि बृन्दावन दास मुख मधुर अमृत की धार ॥
याही तें वर्णन जु तिंहिं किये होय पुनरुक्ति। तऊ दम्भ करि वर्णियै तैसी नाहि न सक्ति ॥
श्री प्रभु मंगल ग्रंथ मधि वर्णन कियौ जु ताहि। सूत्ररूप सूचक करैं तिहि लीला कौ आहि ॥
जो नीकें वर्णन कियौ नहि न सूत्र मधि ताहि। यथा तथा सोई करैं लीला वर्णन ताहि ॥

याही तें तिन चरणमधि प्रणत कोटि करि आहि। क्यों होय न अपराध मम पदपंकज मधि ताहि॥
ऐसें श्री प्रभु जू चलें लीलाचल भरि रंग। कृष्न कीरतन हरष हिय चारि भक्त तिन संग॥
भिचा हित इक द्योस प्रभु एक ग्राम मधि जाय। आपु न लाये मांगि कें बहुत अन्न समुदाय॥
विघन करें नही पथ बड़े बड़े जगाती जोय। आये तिन पै कृपा करि ग्राम रेमुना सोय॥
सुन्दर गोपीनाथ ह्यां प्रगट विराजें आहि। श्रीप्रभु जू अति भक्ति करि कीनौ दरसन ताहि॥
तिनके चरणकमल सुढिंग करत प्रणामहि आहि। पर्यो सु जूडा कुसुम कौ प्रभु माथें पर ताहि॥
जूडा पाय महा प्रभू अति आनन्दित होय। कियौ भक्तगण संग लै नृत्य गान बहु सोय॥
प्रम रूप लखि गौर के अरु प्रभाव लखि ताहि। सेवक गोपीनाथ के बिस्मित भये जु आहि॥
कियौ जु प्रभु कौं प्रीति करि सेवक नाना रीति। सोई निसि श्री प्रभु तहां ऐसें करी वितीति॥
महा प्रसाद जु चीर तहां लोभ रहै प्रभु आहि। पहिलें ईश्वर पुरी जू कही कथा है जाहि॥
गोपीनाथ प्रसिद्ध यह खीर चोर जिहि नाम। भक्त गनन सौं प्रभु कहैं सो प्रसंग सुखधाम॥
पहिलें माधवपुरी हित खीर चुराई जोय। चीरचोर यह नाम सव यातें कहैं जु सोय॥

कवित्त

पहिलें श्री माधवेन्द्रपुरी आये वृन्दावन देखि वन सोभा दृग छके भाव छये हैं।
मत्त भये फिरें सब रेंन दिन नाही सुध कभूं गिरें मूरछा ह्वै कभू उठि धाये हैं।
अपथ औ पथ ऊँचे नीचे कौ विचार नाहि ऐसें ही भ्रमत गिरि गोवर्धन आये हैं।
करिकें प्रदच्छिण सु बैठे श्री गोविंद कुंड स्नान करि वृच्च तरें ध्यान मन लाये हैं॥

तहां गोप बालक सु आयौ दूध पात्र लैकें धरि इन आगें हँसि बोल्यौ मृदु बैंन है।
अहो यती दूध इह पियौ किनि मांगि खावौ भूखे करौ ध्यान कहौ यामें कहा चैंन है।
सुनि कें वचन हिये बड़ोई जु विस्मै भयौ देखी रूप माधुरी सु कहन वनें न है।
वेंन सुधा प्याय सब तृषा छुधा लीनी हरि दूध देंन आयौ किधौं आयौ मन लेंन है॥

पूछी सब बात इन्हौ कौन के कुमार तुम रहौ कहां बास कैसै जान्यौ उपवास है।
बोल्यौ तब बालक सु गोपसुत मोकौं जानौ रहौं सदा वन याही ग्राम में निवास है।
रहें जे विरक्त सब मांगि खांय अन्न दूध भूखौ न रहै हमारे ग्राम आसपास है।
ताकौ मैं अहार देंनहार भार मेरे सिर रहै जो विरक्त भूखौ भिचा सौं उदास है॥

आई जल भरिवे कौं बैठ्यौ तुम्हें देखि गई तिन्हौ मेरे हाथ दूध दियौ है पठाय कें।
मेरौ गाय दुहिवे कौ समै ताते वेगि जैवो लेहु तुम पीवौ पात्र लैहौं फेरि आय कें।
ऐसें कहि गये उठि जात जान्यौ नाहि इन भयौ बड़ौ चमत्कार हियें गयौ छायकें।
पी कें पयपात्र धोय धर्यौ वह आवै कब बालक के पथ नैंन राखे हैं बिछाय कें॥

भई बड़ी बेर तऊ आयो सो न फेरि तब लगी है औसेर नींद गई है पलाय कें।
वाही रूप पगे लगे नाम धुनि करिवे कौं चेंन कौन लेस रेन डारी है बिताय कें।
रही निसि सेस कछु तामें निद्रा लेस भयौ स्वप्न में दरस दियौ बालक ने आयकैं।
हाथ धरि हाथ इन्हें ले गये निकुंज मध्य बोले मृदु बेंन घन कुंज कौं दिखाइ कैं॥

रहौं याही ठौर घाम वर्षा सीत सहौ सब कष्ट बहु सह्यौ कहौं कौंन सौं पुकार है।
ग्राम के मनुष्य लाय हम कौं कढावौ ह्यां तें पर्वत पै राखौ करौ मंदिर सवार है।
सीतल सुगंध जल सौं न्हवाय मोहि करौ अभिषेक मेरौ अब ऐसैं ही विचार है।
बहु दिन बीते मोहि तेरौ मग जोवत ही तो बिन न नींद लगी तेरी यै संभार है॥

तवै नही आज्ञा दीनी कीनी निठुराई मेंने दियौ तुमें कष्ट ताकीगास सुनि लीजियै।
जैसे एक रैन बीती तोहि मोहि दिन रेंन बीतें ऐसै हुँ हमारी पीर कौं पतीजियै।
जैसैं दियै पट पुट खुलैं रंग सौ गुर्यौ त्यों आरति के बढै प्रिय मिलै रस भीजियै।
तेरे प्रेम वस ह्वै कें सेवा कीनी अंगीकार दियौ दरसन जग भव पार कीजियै॥

नाम श्री गुपाल गिरीधारी मेरौ वज्र नाभ प्रगटत जानौ मोकौं ह्या कौ अधिकारियै।
सेवक है मेरे ते छिपाय गिरि कुंज मध्य गये भाजि भयौ जब म्लेच्छ डर भारियै।
रह्यौ यातें याही कुंज जन कौ बैठायौ बैठ्यौ जन ही उठावै तव उठौं जिय धारियै।
बांध्यौ जसुमति तब नंद बिन छोडै कौन भक्त ही के बस भक्त बसता जियारियै।

हुतौ अभिलाष यहै माधवेंद्र पुरी आवैं करें वे प्रकट तुम आये भली भई है।
करौ अब सावधान ह्वै कें मेरी सेवा आप कहि अंतरीछ भये नीद छुटि गई है।
तवै जागि परे खरे अर बरे अरे उर लाल भरे नेंन नीर चिंता अति दई है।
अहो कृष्न देखे हम तऊ पहिचानें नाहि कभू भूमि गिरें भई मूरछा सुनई है॥

छिन एक रोय उठैं धरैं छिन धीरताई आज्ञा वलबान प्रभु धीर तिन कियौ है।
भोर भये न्हाय तब गये ग्राम बीच पुरी लोक इक ठौरै करि बोले भीजे हिये हैं।
अधिकारी या ग्रामके नाम गिरिधारी ते विराजै या निकुंज तिन्हैं काढौ हम जीजि है।
कुंज है सघन तहां द्वारन प्रवेस कौ हैं लीजिये कुल्हारे सो जतन कहि दीये है॥

सुनि सब लोक सुख सिंधु में मगन ह्वै कैं चले इन संग उहां जाय कुंज देख्यौ है।
घनौ काटि द्वार करि कियौ है प्रवेस तामें तहां तृण माटी ढक्यौ प्रभु रूप पेख्यौ है।
देखि हियें हर्ष भयौ आवरण दूरि कियौ सबनि प्रणाम करि निज भाग्य लेख्यौ है।
गिरिधारी रूप भारी कैसैं कै उठावै ताहि सब रहे हारि तब जन अब रेख्यौ है॥

बड़े बड़े बलबान भये इक ठौरे सब लै आये उठाय सैल सिला पै विठाये हैं।
और एक सिला ही कौ दीनौ अवलंब पाछै आछे ह्वै विराजें देखि नैंन चैंन पाये हैं।
जिते सब ग्राम द्विज माथैं लै लै नव घट श्रीगोविन्द कुंड नीर छानि स्वछ लाये हैं।
नव सत घट भरे धरे आनि आगें तव नाना वाद्य वजें नाद चहूं दिस छाये हैं॥

नारी गण गावैं गीत कोऊ नाचैं रंगे प्रीति कीनी है उछाह रीति सुख कौ न पार है।
दधि दूध घृत सब जितौ ग्राम बीच हुतौ और अभिषेक द्रव्य लाये ये सभार है।
घृत पकवान भोग योग सव आंनि धरे तुलसी कुसुम वास सुगन्ध अपार है।
नाना द्विज मंत्र पढ़ें आप माधवेंद्र पुरी कीनौं विधि पूर्व अभिषेक कौ विचार है॥

प्रथम न्हवाय अंग मैल दूरि कियौ सब सरस सुगंध तेल अंग चिकनायौ है।
पंचगव्य पंचामृत सौं न्हवाय पुनि घट सत लै कैं तब महा स्नान हू करायौ है।
सरस फुलेल लैकैं पुनि चिकनाय अंग गंगाजल संखोदक फेरि अंग नायौ है।
अंग अंगुछाय वस्त्र नीकें पहिराय आछें तुलसी कुसुम हार पाछे पहिरायौ है॥

धूप दीप नाना भांति दूध दधि मिश्री आदि भोग सब लाय नव जलपात्र धर्यौ है।
आचमन दै कै दीनी वीरी हूँ बनाय तव आरती उतारि वहु विधि स्तव कर्यौ है।
करिकें प्रणाम कीनौं आत्मा समर्पन तब जितौ ग्राम अन्न हूतौ लाय गिरि भर्यौ है।
गृह में न सीधौ रह्यौ न कुलाल गृह पात्र रहै आये प्राण सबै स्याम मन हर्यौ है॥

भये प्रात पाक चढ्यौ द्विज दस भात करैं पांच विप्र दाल कैऊ कीनी तरकारी है।
नाना भांति विंजन यौं वरा कढ़ी कीनै नीकैं पांच सात रोटी रासि कीनी अति भारी है।
वसन विछाय नव पातरि सुधारि तापै रांधि रांधि भात सैल रचे सुखकारी है।
आसपास रोटी उपसैल कीनौ चहु ओर विंजन औ सूप पात्र धरे मनुहारी है॥

दूध दधि मठा खीर फैना और शालापात्र पांति कीनी आस पास अन्नकूट कीनौ है।
पुरी गोस्वामि जू गुपाल कौं समर्पन करि सीतल सुगंध जल घट बहु दीनौं है।
वहु दिन रहे भूखे पायो श्रीगुपाल सब जान्यौं नही काहूएक इन्हौ जानि लीन्हौ हैं।
जैयौं सब तऊ तहां रह्यौ ज्यौं कौ त्यौं ही करको प्रताप यहै बढ़ै पै न होय हीनौं है॥

अनुभव कीनौं सब श्री गुसांई पुरी जू नें दास ते न दुरै प्रभु प्रभु ते न दास है।
एक दिन उद्यम में ऐतौ भयौ उछव सो हरि कौ प्रताप यह काहूं न प्रकास है।
आचमन बीरी दै कैं आरती करन लागे करैं लोक जै जै कार मन में हुलास है।
ल्याय नव सज्या वस्त्र तकियां सुधारि उचैं प्रभु खाय दीनैं तृण टाटी आसपास है॥

द्विजनि कौं आज्ञा दीनी श्री गुसांई पुरीजू नें भोजन करायौ जिते बालवृद्ध जन है।
आज्ञा पाय बैठे सब भोजन करण लागे आंगें द्विज पांति ज्याय सुखी भये मन है।
सुनि सुनि ग्रामनिते आये सब लोक जिते तिन्हौं भात खायौ और देखे स्याम घन हैं।
देखिकें पुरी प्रभाव चमत्कार भयौ कहैं सुन्यौ अन्नकूट सोई देख्यौ हम धन है॥

कीनें द्विज भक्त जिते सेबा पै नियुक्त करैं रहै दिन सेस में उठाये प्रभु फेर है।
भोग पुनि लगाय जल शीतल अचवाय हीयें चेंन पाय मुख माधुरी रंगे रहै।
प्रगटे गुपाल धुनि धाई देस देसनि में आये देखवे कौं ग्राम आस पास जे रहैं।
एक एक ग्राम जन लीनौं मांगि एक दिन करैं अन्नकूट अन्न लाये बहु टेर है॥

देखन कौं भीर भई आधी रैंन बीति गई पौढ़े गिरिधारी इन्हौ दूध कछु लीनौ हैं।
भोर भये सेवा करी एक ग्रामजन सीधौ ल्यायौ वाही रीति भांति अन्नकूट कीनौ हैं।
अति ही प्रसन्नता सौं जैंये गिरिधारी बृजबासीनि की साहजिक प्रीति सुख दीनौ है।
पाय के महाप्रसाद देखि कें गुपाल रूप सब कें आनंद बढ्यौ हिये रंग भीन्हौ है॥

देस देस बात गई आये लोक प्रीति छई ल्याये बहु भेट धन वसन अपार है।
मथुरा के बड़े बड़े धनी भक्ति पूर्व लाये नाना स्वर्ण रौप्य पात्र द्रव्य के भंडार हैं।
एक बड़ौ धनी छत्री मंदिर करायो तिन काहू नें भंडार रचे खरिक सुधार है।
बृजवासी एक एक धेनु भेट दीनी भई श्री गुपाल धाम धेनु संख्या न सम्हार है॥

दिन दिन याही भांति सेवाकौ प्रचार बढ्यो तबै गौड देससौं जु दोय द्विज आये हैं।
जत्न करि राखौ तिन्है श्रीपुरी गुसांई जीनें सिष्य करि सेवा दीनी भये मन भायै हैं।
तब तौ विस्तार राज सेवा कौ अपार देखि बूडि सुख सिन्धु ऐसें वर्ष द्वै बिताये हैं।
स्वप्न बीच स्याम कह्यौ ताप मेरौ जाय नाहि मलय कपूर लाय कीजिये जुडाये हैं॥

सोतौ हैगौ लीलाचल वेगि जाय लावौ तुम और कौंन काम ऐसैं बोले सुखकारी है।
सुनत ही बेंन नेंन खुले चेंन भयौ प्रेम सिन्धु बढ़ि गयौ तामें बूड़े अति भारी है।
आज्ञा बलवान प्रभु ताके पालि वे कें लियें चले देश पूरब कौं बात न बिचारी हैं।
आज्ञा मांगि चले आपु सबनि कौं सावधान कीनौ सेवा बीच तीन्हौ हुते अधिकारी हैं॥

चले चले गौड देस आये पुनि सांति पुर रहे आय श्री अद्वैताचार्य जू के धाम है।
देखि पुरी प्रेम श्री आचार्य सुख मग्न भये जल करि मंत्र लीनौ पूजे हिय काम है।
दिक्षा तिन्है दै कैं पुनि चलि कें तहां ते आये रेमुना में देखे प्रभु गोपीनाथ नाम है।
देखि रूप प्रेमावेस ह्वै कैं नृत्य गान करि बैठे जगमोहन में अति अभिराम है॥

देखि सेवा रीति अति मन में मगन भये कियो अनुमान इहां भोग लगे नीके हैं।
जे जे इहां लागे तिन्है सुनिकैं गुपालजू कौं तैसें ही लगावैं भोग प्यारे जेई जीके हैं।
मन में विचार यह पूछन पुजारी लगे कहैं भोग सवै जिते प्यारे हरि ही के हैं।
सय्या भोग लगै खीर अमृत केलि नाम मधुर तें मधुर अति देव भोग फीके हैं ॥

दोय दस अटका सु भरे भोग लागे नित ऐसौ भोग लोक में न ताकौ समौ आयौ है।
सुनि कें विचार कियौ मन में गुसाई जी नें मागे विन मिलै जो पैं थोरोई सुहायो है।
स्वाद जानि तैसैं भोग लावैं श्रीगुपाल जूकौं पाछे हिय लही लाज विष्नु नाम गायौ है।
ताही समें भोग लायौ आरती दरस करि प्रनाम आये वचन कछु न सुनायौ है ॥

यामें लोक सिछा यहै है विरक्त धर्म विना भायौ नहीं खाय नहीं करैं उपवास है।
प्रेमामृत तृप्ति ताहि तृषा छुधा बाधै नाहि काहू की न चाह रहै जग सौं उदास है।
इच्छा प्रभु हेत भई तऊ अपराध मान्यौ येह दास धर्म या में और हू विलास है।
भक्ति अभिलाष होय ताकौ प्रभु जानि लें हि ताहि प्रतिपालैं विनु किये ही प्रकास है ॥

आय ग्राम बीच तहां एक सूनी हाट बैठे नाम धुनि करिवे कौं नित्य नेम वही है।
वहां तौ पुजारी प्रभु स्वाय निज कृत्य करि सोयौ स्वप्न बीच ऐसैं गोपीनाथ कही है।
उठौहौ पुजारी द्वार खोलौ वेगि राख्यौं एक अटका संन्यासी हेत जाकौ प्रेम सही है।
राख्यौं तकियासौं ढांकि जान्यौनही तुम्हौ यातैं जातें मेरी मायानें तुम्हारी मति लही है॥

माधवेंद्र पुरी जती वैठ्यौ एक हाट बीच यहै छीर लैंके तिन्है देहु वेगि जाय कें।
स्वप्न देखि जाग्यौसो विचारकरि न्हायौ खोल द्वार ताहीतर छीरपात्र देख्यौ आय कें।
लीयौंहै उठायताही चौका दैकैं द्वार मूदि आयौ चल्यौ वेगि ग्राम हिये भर्यौ चाय कें।
हाट हाट टेरें लेहु माधवेन्द्र पुरी खीर तेरे हित गोपीनाथ राख्यौ है चुरायकें ॥

दियौ है प्रसाद आय लेहु पुरी पावै तुम सम भाग्यवान तीन लोक में न कोय है।
सुनि कें यौं पुरी मिले आय हियें रंग भिले करिकें प्रणाम तिनि दियौ खीर सोई है।
कही सव रीति सुनि पुरी प्रेमाबस भयौ देखि कें पुजारी मति अचिरज भोई है।
कहैं बार बार नेह अधिक अपार इतौ तिनकें जो स्याम वस होय जोग्य जोई है ॥

कहि यौं पुजारी गयौ करिकै प्रणाम तव इन्हौ प्रेमावेस हीयें सो प्रसाद पायौ है।
धोय हू कें पियौ पात्र फोरि टूक टूक करि राख्यौ बांधि वहिर्वास हियौ रंग छायौ है।
प्रति दिन एक खंड खाय प्रेम बूडि जाय अंग न समाय भाव कापैं जात गायौ है।
दीनी है चुराय छीर हमैं गोपीनाथ सुनि ह्वै है भोर भीर तातें चलिवौ सुहायौ है।

चलैंहैं प्रतिष्ठा स्वपचीसौं भय भीत ह्वैकैं ह्वांई ते प्रणाम गोपीनाथ जू कौं करिकें।
चले चले लीलाचल आये देखि जगन्नाथ रूप प्रेम मत्त भये नेंन नीर भरि कें।
कभूँ गिरें कभूँ उठें हसै नाचैं गावै कभूँ रूप माधुरी तें सब लीनी सुधि हरि कें।
आये माधवेन्द्र पुरी यहै लोक ख्याति भई देखि वे कौं भक्ति पूर्व आये सब ढ़रि कें॥

प्रतिष्ठा की नीति है जोईन चाहै ताहि चहै भजै यासौं जोई ताहि भजै रीति नई है।
याके भय पुरी भजै तजैं कैसैं भक्ति दासी एतौ इहां छाड़ि गये आगें वह गई है।
डरै तब तहां कहां जाहि भांजि तासौ बँधे प्रभु काज है तब हूं सुख रूप मई है।
आये लै महांत वृन्द सभा मधि बोले तब चंदन गुपाल मागै रीति कहि दई है॥

सुनि सब हर्ष पाय लगें जत्न करि वे कौं निज निज द्वार ह्वै कैं जाच्यौ राज द्वार हैं।
जाकौ जहां पर चैंहौ तहां तहां मागि लाभ कीनौ सबनि सबै मलय घनसार हैं।
एक मन बीस तोला दोऊ दिये एक द्विज एक दास संग दियौ खरच सभार हैं।
घाट घाट लागै कर राजपत्र हूं लिखाय तातें दीनौ पुरी हाथ करि के विचार है॥

चले लै गुसाई ताहि आये पुनि रेमुना में देखि गोपीनाथ पर कीनौ नमस्कार है।
प्रेमावेस ह्वै कें नृत्य गान बहु कीनौ सब देखि कें पुजारी कीनौ आदर अपार है।
दीनौ है प्रसाद क्षीर पाय ताहि मंदिर में सोये स्वप्न देख्यौ निसि रहे घटि चार है।
आय कें गुपाल कह्यौ सुनौ माधवेन्द्र पुरी पायौ हम चंदन औ सबैं घरसार है॥

चंदन कपूर घसि लावौ गोपीनाथ अंग दोऊ हम एक रूप ताप मेरौ जाय है।
हठ मति ठानौं अब दुख मन में न मानौं विसवास हियें आनौं कह्यौ मैं सुनाय कैं।
ऐसैं कहि अंतरीक्ष भये प्रभु जागे पुरी टेरि कें पुजारिन सौं कह्यौ वेगि आइकैं।
कही सब स्वप्न रीति प्रभु है स्वतन्त्र सदा आज्ञा वलवान तासौं कछु न वसाय है॥

ग्रीसम की रितु गोपीनाथ अंग लेप ह्वै है सुनि यौं पुजारी वात हरषित भये हैं।
पुरी कहैं दोय जन संग हैं हमारे और दोय जन देहु तुम हमैं करि नये हैं।
दैंहैं तिहैं द्रव्य घसें चारौं जन ऐसें प्रतिदिन चढ़ाय मलय इष्ट सुख दये हैं।
चंदन सहित रितु ग्रीषम विताय ऐसें अति सुख पाय फेरि लीलाचल गये हैं॥

दो०

चातुर्मास रहे पुरी लीलाचल मधि जाय। आनँद में भीजे रहैं सो बरनौ नहि जाय॥
श्री मुख माधव पुरीकौ चरित अमृत अधिकाय। आस्वादन प्रभु करें सब भक्तनकौं जु सुनाय॥

क०—प्रभु कहैं नित्यानंद पुरी सस नाहिं कोऊ दूध देन मिस कृष्न जाहि दर्श दिये हैं।
तीन बेर स्वप्न माझ आज्ञा प्रभु दई जाहि प्रगटे सु प्रेम वस देखि जीव जीये हैं।

सेवा अंगीकार करी अति रिझवार स्याम सँगत उधार नीकी भांति करि कीये हैं ।
दूध दधि चोर मन माखन के चोर हुते पायस के चोर गोपीनाथ जिन्हौं किये हैं ॥

घसि घसि मलय कपूर जिहिं ग्रीषम रितु जु अभंग । लायौ अपने करनि करि श्री गुपाल के अंग ॥
जवन देस तैं ल्याय वौ तिनकौं है जंजाल । पुरी दुखी ह्वै है यहै जानी श्री गोपाल ॥
महादयामय प्रभु जु सो भक्त वछल है आहि । निज अँग चंदन पहिरि कें कियौ सफल श्रम नाहि ॥
पराकाष्ठासु प्रेम की तिहि जु विचारौ जोय । प्रेम अलौकिक तें हियें चमत्कार अति होय ॥
मौनी परम विरक्त जो उदासीन सब ठौर । ग्राम वार्त्ता के जु डरनि संग नहीं जन और ॥
इमि जन जो गोपाल की आज्ञा अमृत हि पाय । सहस कोस लौं धाय कैं चंदन माग्यौ जाय ॥
भूखे रहें तऊ नही भिचा मांगि जु खाय । ऐसे जन जौ मलय कौ भार वहैं मग जाय ॥
यह चंदन मण एक जौ तोला वीस कपूर । श्री गुपाल कैं लाय हौं यौं हिय आनंद पूर ॥
दानी उत्कल देस के गहि चंदन लखि ताहि । छैंडायल नृप-पत्र तब खोलि दिखावौं ताहि ॥
जवन देस पुनि दूर पथ दानी तहां अपार । कैसैं कै लै जाहिंगे चंदन यह न विचार ॥
दानिन कौं कर दैंन हित एक दाम संग नाहि । चंदन के लै जान हित तऊ उछाह हिय मांहि ॥
है जु प्रगट हिय प्रेम कौ यह सुभाव आचार । निज दुख विघ्नादिकनि कौ करै नहीं जु विचार ॥
प्रगट लोक में करण कौं तिहि प्रेमा जु विसाल । चंदन लावन हित दई आज्ञा तिन्है गुपाल ॥
ल्याये चंदन रेमुना बहु श्रम हूं कें जोय । अति आनंद मन बढ्यौ गन्यौ नहि दुख सोय ॥
करण परीचा हेत प्रभु कीनौ आज्ञा दान । करि जु परीचा हृदय की भौ फिरि दया जु वान ॥
भक्ति भक्त प्रिय कृष्न को यह सहज व्यवहार । हम सब कौ तिहिं समुझिवें है नाहिन अधिकार ॥
घसत घसत जैसैं मलय बढ़ै सुगंध अपार । त्यौं नाना भाव जु बढ़ै याके कियें विचार ॥
रतन गननि के बीच ज्यौं मनि कौस्तुभ है जोय । तैसैं ही रस काव्य मधि श्लोक गनौ है सोय ॥
राधा ठकुरानी कह्यौ है श्लोक यह जोय । माधवेन्द्र वाणी फुरयौ तिहीं कृपा करि सोय ॥
कै इहिं जाने गौरससि करै आस्वादन ताहि । चौथे को अधिकार नहि आस्वादन कौ याहि ॥
पढ़त पढ़त या श्लोक कौं शेष काल मधि जोय । श्लोक सहित भइ पुरी कौं सिद्धि प्राप्ति तहँ सोय ॥

तथाहि पद्यावल्यां—

अयि दीनदयार्द्र नाथ हे मथुरानाथ कदावलोक्यसे । हृदयं त्वदलोककातरं दयित भ्राम्यति किं करोम्यहम् ॥२॥

याही कौं प्रभु पढ़त ही भये मूरछित जोय । परे तहां तब भूमि मधि प्रेम विवस अति होय ॥
अस्त व्यस्त तब अंक मधि करि लिय नित्यानन्द । क्रन्दन करि कें उठें तब गौर चंद्र रस कंद ॥
भयौ प्रेम उनमाद तिहि चलें जु इत उत धाय । हसैं कबहुं हुंकार करि कबहूं नाचैं गाय ॥
कहैं जु अयि अयि दीन पुनि प्रभु जू बारंबार । बानी कंठ न उचरें रोके असुवन धार ॥

पुलक अंग वैवर्ण औ स्थंभ कंप प्रस्वेद। जाड्य दैन्य कबहूं गरव औ विषाद निर्वेद ॥
इहीं श्लोक करि महाप्रभु खोले प्रेम कपाट। सेवक गोपीनाथ के लखै प्रेम कौं नाट ॥
लखि लोकनि की भीर कौं भयौ वाह्य प्रभु सोय। श्री ठाकुर कौं भोग सरि वजी आरती जोय ॥
भये पुजारी वाहिरे प्रभु कौं भोग लगाय। द्वादस खीर प्रसाद दिय प्रभु के आगे आय ॥
टाकुर कौ लखि खीर सो भौ हिय आनंद सोय। सब भक्तन के हेत प्रभु पंच क्षीर लिय जोय ॥
दिये पुजारी कौं वहुरि सात खीर प्रभु जोय। पांच खीर मिलि पंच जन पाये बांट जु सोय ॥
गोपीनाथ स्वरूप करि जद्यपि पायौ ताहि। किय प्रसाद भक्षण प्रभू भक्त दिखावन आहि ॥
नाम कीरतन करि प्रभू वितई रैंन जु सोय। मंगल आरति देखि कें चले प्रभात हि जोय ॥
महिमा कही दुहुन की आख्यान जु मधि आहि। प्रेम जु सेवा भक्ति की भक्त बछलता ताहि ॥
गोपीनाथ गुपाल के पुरी जु गुण गण जोय। भक्तनि सँग प्रभु श्री मुखहि करें स्वाद तिहिं सोय ॥
इहि प्रसंग कौ जो सुने जन श्रद्धा जुत होय। कृष्न चरण मधि प्रेम धन निहचै पावै सोय ॥

क०—भक्त कृत प्रगटताई हरि की भक्ति वस्यताई दास प्रेम सरसाई यामें गाई है।
जन मन जान ताई अभिलाष सफलताई स्वरूप एकताई कही सुख दायी है।
विवेकहरताई प्रकृति नेह की दिखाई करि कें परीक्षा पाछे कृपा अधिकाई है।
श्री मुख सुनाई प्रभु लीला मन भाई कविराज राज दरसाई नातें सुखपाई है ॥

रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहिं आस। प्रभु चरितामृत कौं कहैं कृष्न दास तिहि दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवलस्याम पद आस। प्रभु चरितामृत कौं कहैं व्रजभाषा हि प्रकास ॥

इति श्री चरितामृते मध्यखण्डे व्रजभाषायां श्री माधवेन्द्रपुरीक्षीरअमृतवर्णनं नाम चतुर्थ परिच्छेदः

पञ्चमपरिच्छेदः

तथाहि—पद्भ्यां चलन् यः प्रतिमास्वरूपो ब्रह्मण्यदेवो हि शताहगम्यं।
देशं ययौ विप्रकृतेऽद्भुतेहं श्री साक्षिगोपालममुं नतोऽस्मि ॥

जय जय श्री चैतन्य जय जय श्री नित्यानन्द। जय अद्वैताचार्य जय गौर भक्त के वृन्द ॥
इही भांति आये चले प्रभु जाजपुर ग्राम। प्रभु वराह कौं देखि कैं किय तिनकौं जु प्रणाम ॥
नृत्य गान किय प्रेम करि वहु स्तुति पुनि ताहि। रहिकें तिहिनिस जाजपुर कियौ गमन तब आहि ॥
नृत्य गान आवेस में कितिक वार लौं जोय। कियौ स्तबन गोपाल कौ प्रेमाविष्ट जु होय ॥
तहां तिंही निसि प्रभु रहे भक्त गनन के संग। पूर्व कथा गोपाल की सुनी भरे बहु रंग ॥

गमन कियो जब तीर्थ हित श्री नित्यानंद जोय ।श्री गुपाल के दरस ही आये कटकहि सोय ॥
सुनि साच्छि गोपाल की कथा लोक मुख जोय । प्रभु आगे आनन्द सौं कहैं नित्यानन्द सोय ॥

कवित्त–

दोय द्विज वासी विद्यानगर के चले तिन्हौं तीरथ के करिवे की हीयें चाह धारी हैं ।
गया कासीऔ प्रयाग करि आये मथुरामें देखि दोऊ भीजे हीये आनन्द में भारी हैं ।
करि वन जात्रा देखे गोवर्द्धन सबै वन पाछे आये बृन्दावन जीवन जियारी हैं ।
बृन्दावन धाम जहां श्री गोविन्द मन्दिर है राजें श्री गुपाल तामें सेवा सुख कारी हैं ॥
केशीतीर्थ कालीदह आदि सब न्हाय तब श्री गुपाल देखि तहां वसे दोऊ आय कें ।
श्री गुपाल सुन्दरता हरचौ मन दोऊ न कौं रहे दिन दोय चारि तहां सुख पाय कें ।
दोऊ द्विज बीच एक विप्र बृद्धि पाय और दूजौ द्विज जुवा रहै ताही कौं सहाय कें ।
छोटै द्विज सेवा ताकी कीनी सवनीकी भांति तासौं तुष्ट ह्वैकें बडौ वोल्यौ यौं सुनायकें ॥
कहै बडौ विप्र तुम कीनी बडी सेवा मेरी तेरौ ही सहाय पाय तीर्थ बहु कीये हैं ।
पुत्र हू न पिता की जु करै ऐसी सेवा कोऊ तेरी कृपा सौं न कछू पायौ श्रम जिये है ।
हूजियै कृतघ्नी तुव कीजिये न सनमान देहौं कन्यादान तोहि मोहि सुख दिये हैं ।
छोटौ द्विज कहै सुनौ महायश विप्र काहे कहौ भौ अयुक्त वात आवें जे न हिये हैं ॥
तुम तौ महाकुलीन धनी विद्या में प्रवीन हौ तौं सब हीन दीन नाही कुलाचार है ।
हौं तौ तुम कन्यादान कौ न पात्र कृष्न प्रीति कियौ मैं तुम्हारौ यहै सेवा व्यवहार है।
विप्र सेवा कियें होय हरि कें संतोष तिंहिं तुष्ट भयें वाढ़ें भक्ति संपति अपार है ।
कहैं बडौ विप्र तुम संसै जिनि करौ यामें देहैं तुम्है कन्या हम कियौ निरधार है ॥
कहैं लघु विप्र अहो है तुम्हारें नारी पुत्र ज्ञाति वहु बंधु सभा सजन अपार हैं ।
तिनके विचार बिना होय नही कन्यादान रुक्मिनी के पिता यामें साखि निरधार है ।
भीषम कें चाह कन्या कृष्न कौं समर्पिये जू पुत्र के विरोध राजी रहै बैठि हार है ।
कहैं वडौ विप्र कन्या मेरौ निज धन ताहि देत मनैं करैं कौंन जन अविचार है ॥
दैं हौं तोहि कन्या सब ही कौ करि तिरस्कार संसै जिनि हियैं आनौं करौ अंगीकार हैं ।
छोटौ विप्र कहै जौपें कन्या दियौ चाहौ कहौ श्रीगुपाल आगें सत्य वचन संभार हैं ।
श्रीगुपाल आगें विप्र लाग्यौ कहिवेकौं प्रभु जानौ निज कन्या याहि दीनी मैं विचार है ।
कहैं लघु विप्र मेरे श्री गुपाल साखी तुम कौं बुलैहौं जौ पै यह ढरचौ और ढार है ।
ऐसैं कहि दोऊ जन चले निज देश छोटौ करैं वहु सेवा हियें गुरु बुद्धि भोई हैं ।
आय देस बीच दोऊ निज निज गेह गयौ कछू दिना वीतें द्विज भई चिंता जोई हैं ।

तीरथ में विप्रवाक्य दियौं कैसें साचौं होय नारी पुत्र बंधुनतें कैसें बात गोई है ।
एक दिन लोक निज करि इक ठौर सब तिनहू के आगें द्विज कही बात सोई है ॥

सुनि तब सभा सब करैं हा हा कार ऐसी बात जिनि फेरि कहौ मुख में प्रकास है ।
नीच कौं सु कन्या देवैं जाय कुलनास ह्वै कैं सुनि सब लोक करैं महा उपहास है ।
विप्र कहै तीर्थ वाक्य कैसें हिय औंर आनौं होंइ सोइ होय कन्यादान दै हौं तास हैं ।
ज्ञाति सब कहैं हम तुम्हें छाडि दै हैं नारी पुत्र कहैं खाय विस करैं प्राण नास हैं ॥

विप्र कहैं धर्म मेरौ जै है वृथा न्याय करि लैहै वह कन्या जीति साखी कौं बुलाय कैं ।
पुत्र कहैं साखी प्रतिमा है सोऊ दूर देस चिंता जिनि करौ कौंन दै है साखि आय कें ।
नाहि कहि मिथ्या जिनि कहौ अहौ नाहिकछू मोहि सुधि ऐसैं भाखौ सबनि सुनायकें ।
तुम जब कही हम जानैं नही कछू तब लैहैं हम जीति द्विज पंचनि बुलाय कैं ॥
ऐसैं सुनि विप्र मन भई बड़ी चिंता कियौ हिये में गुपाल जू कौ कीनौं नीकैं ध्यान हैं।
धर्म मेरौ जाय नाही मेरे निज लोक दोऊ रत्ता प्रभु करौ तुव सरण निदान है ।
ऐसैं हिय करैं चिंता औंर दिन सोई विप्र आय तिहि गेह बोल्यौ विनै कौ निधान है ।
कहै कर जोरि तुम मोहि कन्या दैंन कही रहे अब मौन धरि कहा तुम ज्ञान है ॥

ऐसैं सुनि विप्र सोई रह्यौ धरि मौन तिहि पुत्र लै कैं लाठी लग्यौ मारवे कौं जोई है ।
अरे तू अधम चहै मेरी स्वसा व्याहिवे कौ जैसें वौना चांद कर गह्यौ चाहै कोई है ।
देखि लाठी गयौ भजि औंर दिन ग्राम लोक सभा करि सबनि बुलायौ विप्र सोई है ।
तबई सों छोटौ विप्र कहै इन मोहि कन्या दैन कही पूछो याही हियें कहा गोई है ॥

मिलि सबलोक तब पूछ्यौ वाही विप्रसौं जु जोपैं कियौ बोल कन्या देहु काहे नही है।
विप्र कहै सुनौ पंच मेरी एक विनती जू मोहि सुधि नाहि कछू कबै कहा कही है ।
एतौ सुनि पुत्र ताहि वाकछल पाय आय सामुहै कहन लाग्यौ धृष्टता सु गही है ।
तीरथ के जात्रा हेत पिता संग हुतौ धन देखि इहि दुष्ट मन लोभ भयौ सही है ॥

औंर कोऊ संग नाहि एकलोई साथ इहै बाबरौ कियौ है तात कनक खवाय कैं ।
सब धन लै कैं कह्यौ लियौ धन चोरन नें कन्या दैंन कही झूटैं कहैं इहाँ आइ कैं ।
कहौ तुम पंच सब करिकैं विचार यहै मेरे तात सुता कहाँ पाहि दैंन लाय कैं ।
एसैं सुनि लोक हिय संकै भयौ संभवैजु लोक छाडै धर्म भय धन लोभ पाय कैं ॥

कहैं तब छोटौ विप्र महाजन सबै सुनौ कह्यौ यहै मिथ्य न्याय जीति वे कौ चाय कैं ।
यहै द्विज मेरी सेवा सौं संतुष्ट भयौ जबै तोहि कन्या दैहौं ऐसैं कहयौ निज भाय कैं ।

कियौ मैं निषेध तव सुनौ द्विज मुख्य तुम हौं तुम्हारी सुता कौ जु नाहीं वर लाय कैं ।
कहां तुम पंडित औ धनी बड़ेई कुलीन कहां हौं कुलादि हीन देख्यौ अनुमाय कैं ॥

तऊ इन बिप्र फेरि कह्यौ मो सौं बार बार दई कन्या तोहि तुम करो अंगीकार है ।
मैं तौ पुन कह्यौ तुम सुनौ द्विज महा मत्ति तेरे नारी पुत्र ज्ञाति करेंगे विचार है ।
दै न सकि हौ जु कन्या वचन असत्य ह्वै है मो सों इन विप्र कह्यौ वचन संभार है ।
कन्या तोहि दई करौ द्विविधा न हीय मनै सकै करि कौन धन निज निरधार है ॥

कह्यौ तव यासौं तब तेरे दृढ़ यहै बात कहौ श्री गुपाल आगें वचन सुनाय कैं ।
मैं तौं कन्या दई याहि जानौ तुम साखि ऐसें कहां इनि प्रिय श्री गुपाल आगें जायकैं ।
हौंहूँ तब श्रीगुपाल जूकौं करि साखी तहां वोल्यौं तिंहीं धाद पद्म माथै निज नायकैं ।
जो पै यह बिप्र मोहि कन्यादान दै है नही साखि कौं बुलैं हौं तुम्है तव अकुलाय कैं ॥

या में मेरे साखी है जु बड़ेई प्रमान जग तीनों लोक जाकौ वाक्य मानें सत्य सार है ।
कहै बडौ विप्र पुत्र यहै जो पै साखि देहैं प्रभु आय कन्या याही दै हैं निरधार है ।
विप्र जानें कृष्न दयावान करि है प्रमान प्रतिमा न ऐहै ऐसें पुत्र कें विचार है ॥
याही बुद्धि दोऊ जन भलैं मानी सोई बात छोटौ विप्र कहै हिये आनन्द अपार है ॥

सुनौ सब लोक एक पत्र कौ लिखन करौ जैसें फेरि चलैं नाहि बचन प्रकाश है ।
तब तौ सवनि एक पत्र लिख्यौ तामें साखि दोऊ पै लिखाय राख्यौ आपनेई पास है ।
कहै छोटौ विप्र सव सुनौ महाजन द्विज सत्य वादी धर्म रूप हरि विसत्रास है ।
वाक्य निज फेरिवे कौं नाही कभू याकौ मन तऊ कह्यौ यौ सुजन करिवे कें त्रास है ॥

याहीके प्रताप पुण्य कृष्न लाय साखि धाय द्विजकी प्रतिज्ञा सांची करिहौं वजाय कैं ।
इतनौ सुनि विमुख जन करै उपहास कहैं कोऊ कृष्न दयावान सकै ल्याय कैं ।
तवै सोई छोटौ विप्र गयौ छिप्र वृन्दावन करि कैं प्रणाम कह्यौ सबही बनाय कैं ।
तुम हौ ब्रह्मण्य देव बड़े दया रूप दोऊ द्विजनि कौ राखौ धर्म दया निज छाय कैं ॥

पाऊ द्विज सुता यह नाहीं सुख मेरे मन द्विज की प्रतिज्ञा जाय इहै दुख कारी है ।
यहै जानि देहु साखि धाय तुम दयामय जानि साखि देय नाहि ताय पाय भारी है ।
कृष्न कहै विप्र तुम जाहु निज गेह तहां सभा करि कीजौ सुधि मन में हमारी है ।
ह्वै कैं तहां प्रगट हौं दैहौं साखि प्रतिमा के रूप कहूं गयौ नहि अव लौं हौं धारी है ।
विप्र कहै जो जु तुम चतुर्भुज रूप होहु तब तुम बेंन की प्रतीत होय कोई है ।
इही रूप जाय जौ पै याहि मुख साखि देहु तौ पै सब लोक मानें बात साच सोई है ।

कृष्न कहैं प्रतिमासु चलै कहूं सुनी नाहि कहै द्विज वोल्यौ क्यौं जु याही रूप जोई है ।
प्रतिमा न होहु आप ब्रजेन्द्रनन्दन तुम करौ हौ अकाज द्विज काज मेंड खोई है ।

हँसि कें गुपाल कहैं सुनौ द्विज मेरी वात करि हों गमन तुम पाछें पाछे चाय कें ।
फिरि कें न हमैं तुम देखियौ जो देख्यौ मोहि रह्यौ ताही ठौर यहै कहत सुनाय कें ।
धुनि मग्न नूपुर की परि है तुम्हारे कान ताही सों प्रतीत कीजौ आवैं प्रभु भाय कें ।
एक सेर अन्न रांधि कीजियौ समर्पन हौं ताही पाय संग तुव चलि हौं अघाय कें ।।

और दिन आज्ञा मांगि चल्यौ द्विज ताके संग चले लगि भक्तिवस आय श्री गुपाल हैं ।
धुनि सुनि नूपुर की हरषित हियें महां भोग लायौ पाक करि उत्तम रसाल है ।
ऐसै चलि विप्र निज देस ग्राम आय पास मन में विचारें जाकौं आसय विसाल है ।
होंतौ अव ग्राम आयौ जै हौं निजगेह तिन्हें कहौंगौ जु आये साखि दैनकौ कृपाल हैं।।

देखैं नहीं आप नैंन तातें झूठें ह्वै हैं वैंन एक बार देख्यौ रहैंगे तौ कहा डर है ।
यौं विचारि चाह्यौ फिरि हसिकें तहाई रहें द्विजसौं कह्यौ है तुम जावौ निज घर है ।
रहि हौं इहां ही हौं तौ चलौ नाहि ह्यां तें पैंड तवै तिनि विप्र कह्यौ जायकें नगर है ।
सुनि सब लोक आये साखी प्रभु देखि वे कौं छायौ हिय जीवकें अचिरज कौ भर है ।।

देखि कें गुपाल जू कौं करें सब दंडवत देखि तिहि सुन्दरता हर्षि मन भोई है ।
प्रतिमा सु आई चलि सुनि कें चकित भये आनन्द में बूढ्यौ तवै वडौ विप्र सोई है ।
आय कें गुपाल आगैं दंडवत गिरयौ भूमि सब जन आगे प्रभु दई साखि जोई है ।
ताकौं तिहिं कन्या दई रोंम रोंम भक्ति भई तब कही द्विजनि सौं प्रभु वात गोई है ।।

जन्म जन्म मेरे तुम दास दोऊ सत्यता सौं भयौ हौ प्रसन्न तातैं मागौ हिय काम है ।
दोऊ द्विज मांगै वर आनंद कौ हियें भर जौ पै वर देहु तौ पै रहौ याही धाम है ।
दासनि पै दया तुव देखैं सव लोक ऐसैं सुनि के तहांई रहे भक्ति वस स्याम हैं ।
श्री गुपाल जू की सेवा करें वेई दोऊ द्विज देखिवे कौं देस जन आये सुनि नाम हैं ।।

सुनि अचिरज आयौ तिंही देस कौ नरेस देखि श्री गुपालजी कौ हिये हर्ष छायौ है ।
मंदिर सुकरवायौ राजसेवा चित्तलायौ तिहि देस ख्याति भई साखीनाम पायौ है ।
ऐसें विद्यानगर में साखी श्री गुपाल सेवा करि अंगीकार समें बहुत वितायौ है ।
उतकल कौ राजा पुरुषोत्तम देव नाम तंही देस जीतिवे कौं एक समैं आयौ है ।।

करिकें संग्राम सोई देस जीति लीनौ कीनौ नृप हू अधीनता कौ सिंहासन लियौ है ।
नाम है मानिक्य तिहि लागे हैं अनेक रत्न भक्तराज राजा ऐसौ और नाहि वीयौ है ।

मांगे सो गुपाल जू सौं चलौ मेरे राज ताहि, हसिकें गुपाल जू नैं सो निदेस दियौ है।
तिहि लैंकें आयौ नृप कटक में सेवा थापी जगन्नाथ जू कौं सोई ल्याय भेंट कियौ है ॥

आई तिहिं रानी श्री गुपाल जू के देखिवे कौं भक्ति पूर्व भेट वहु अलंकार किये हैं।
ताके एक नासिका में मोती सो अमोल रहै ताहि दीयौ चाहै सोच उपजे सुनिये हैं।
सोचैं प्रभु नासिका में जौ पै हो तौ वेह यह दासी पहिरावती जु इन्है देखि जिये हैं।
यौं विचार नमस्कार करिकें भवन गई रेंन सेस स्वप्न आय प्रभु कहि दिये हैं ॥

वाल समें नासा मेरी छेदि कें जसोदा जू ने मोती पहिरायौ हुतौ वहुजत्न करिकें।
सोई छिद्र अजहूं लौ हैगौ मेरी नासा मधि करौ अभिलाष जोई हियें राख्यौ धरिकैं।
स्वप्न देखि रानी सोई नृप सौं कही है जोई राजा संग मोती लैंकें आये तहां टरिकें।
देखि नासा वेह वेगि मोती पहिरायौ तिन्है कीनौ है उछाह हिय आनंद में भरिकें ॥

दोहा

तब ही तें गोपाल कौ कटक वास भौ जोय। यौं साखी गोपाल की नाम ख्याति भई सोय ॥
सुचरित श्री गोपाल कौं नित्यानँद मुख आहि। सुनि कैं तुष्ट भये प्रभू संग भक्त गण ताहि ॥
आगें जव गोपाल कें प्रभु जू की स्थिति होय। देखें सव ही भक्त गण एक मूर्ति है सोय ॥
गौर वरण है दुहुन कौं विवै प्रकांड शरीर। अरुण वसन है दुहिन कें औ सुभाव गंभीर ॥
महातेजमय रूप दुहु नेंन कमल है जोइ। भावावेस दुहून मन चंद वदन है दोइ ॥
नित्यानँद प्रभु दुहुनि कौं देखि भरे अति रंग। सेंना वेंनी करि हसैं भक्तगणनि के संग ॥
वितई सोई निस तहां भरे रंग इमि हीय। मंगल आरति देखि कें प्रात गमन प्रभु कीय ॥
भुवनेश्वर के मार्ग में जो दरसन किय आहि। श्री वृन्दावन दास जू कह्यौ व्यास करि ताहि ॥
स्नान कियौ भार्गी नदी प्रभू कमल पुर आय। सौ यौ नित्यानंद कर दंड हियें भरि भाय ॥
गये कपोतेश्वर दरस हित प्रभु गन जन संग। ह्यां ही नित्यानंद प्रभु कियौ दंड कौं भंग ॥
तीन टूक करि दंड कौ दियौ वहाय जु ताहि। भक्तनि संग आये प्रभु देखि महेसहि आहि ॥
जगन्नाथ मंदिर सुलखि प्रेमाविष्ट जु होइ। प्रभु जू करिकें दंडवत नाचन लागे जोइ ॥
प्रेम मगन सव भक्तगण नाचैं गावैं सोय। प्रेमावेसित प्रभु जु संग जाय राजपथ सोय ॥
हसैं नाचैं रोवैं प्रभु गर्जन करें हुँकार। तीन कोस जो पथ भयौ जोजन सहस अपार ॥
चलत चलत आये प्रभू खार अठारह पास। तहां आय कें कछू प्रभु कीनौ वाह्य प्रकास ॥
कहैं जु नित्यानंद सौं दीजै मेरौ दंड। नित्यानन्द कहैं भये ताके तीन जु खंड ॥
तुम्है प्रेम भौ गिरत में हों राखत हौ जोइ। गिरयौ जु तिरछै दंड पर हों तुम सहित जु सोइ ॥
हम दोऊन के भार सौं टूक टूक भौ दंड। सोऊ हम जानें नही कहां गिरे वे खंड ॥

खंड खंड भौ दंड तुव मम अपराध हि जोइ। जैसौ उचित जु होय मम देहि दंड जिहि सोइ ॥
सुनि कें प्रभु मन में कछू दुख प्रकास्यौ ताय। रंचक कोपहि प्रगट करि कहै सवनि सौं आय ॥
कीनौ मेरौ हित सवनि लीलाचल मधि आय। सब धन दंड हुतौ वहू राखौ नहि मन लाय ॥
कै तुम सब आगें चलौ प्रभु दरसन के काज। कै हम आगें जाय तुम चलै संग समाज ॥
आगें तुमही चलौ प्रभु कहैं मुकुँद यौ ताहि। हम सब पाछें जाहिंगे चलैं न तुव सँग आहि ॥
ऐसैं कहि आगें प्रभू चले वेगि गति धाय। दोऊ प्रभु हिय को कोउ समझि सकै नहि भाय ॥
इन्हौं दंड तोरचौ जु क्यौं तिन्हौ तुरायौं काहि। कुपित भये जु तुराय क्यौं इन्हौ दुरायौ ताहि ॥
दंड भंग लीला यहै परम अगाध जु सोइ। सोई समझैं दुहुनि कौ चरण भक्ति दृढ होइ ॥
विप्र भक्त गोपाल की यह महिमा अति धन्य। वक्ता नित्यानंद जिहिं श्रोता श्री चैतन्य ॥
श्रद्धा जुत ह्वै कें सवै सुनौ भक्तगण याहि। श्री चैतन्य गुपाल पद वेगि हियें हौं आहि ॥
रूप सनातन पद कमल रजकी है जिहिं आस। प्रभु चरितामृत कौं कहैं कृष्न दास तिहि दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस। प्रभु चरितामृत कौं लिखैं व्रज भाषाहि प्रकास ॥
इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखण्डे व्रजभाषायां साखीगोपाल चरित्र वर्णनं नाम पंचम परिच्छेदः ॥

षष्ठ परिच्छेदः

नौमि तं गौरचंद्रं यः कुतर्ककर्कशाशयं। सर्व्वभौमं सार्वभूया भक्ति भूमानमाचरत् ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्रीनित्यानन्द। जय जय श्री अद्वैत जू जय प्रभु भक्तनि वृन्द ॥
गये जु चलि आवे समें मंदिर प्रभु जगन्नाथ। जगन्नाथ लखि प्रेमवस सरचौ न तन मन हाथ ॥
जगन्नाथ के मिलन हित चलै धाम प्रभु जोय। परे जु प्रेमाविष्ट ह्वै मंदिर के मधि सोय ॥
सार्वभौम तहां दैव गति करैं जु दरसन ताहि। प्रतीहार मारत तिन्है कियौ निवारण आहि ॥
प्रभु की सुन्दरता निरखि अरु तिंहि प्रेम विकार। सार्वभौम जू कैं भयौ अचिरज हियै अपार ॥
वहु छिन वीतें सुधि नहीं भोग समय जु विचार। प्रतीहार निज द्वारह्वै ल्याये भरि अंक वारि ॥
राखे स्वाय पुनीत ठां निज गृह प्रभु कौं लाय। स्वास चलै नहि नेंक हू उदर न चलत लखाय ॥
चिंता जुत भौ देखि कें आचारज मन आहि। रंचक तूल जव धरचौ नासा आगें ताहि ॥
कछुक कंप जुत तूल लखि मन में करें विचार। ए श्री कृष्न जु प्रेम के हैं सात्विक सुविकार ॥
वर सुदीप्त सात्विक यहै प्रलय नाम कहि जोय। नित्य सिद्ध हरि भक्त कैं भाव सुदीप्तसु होय ॥
है अधिरूढ़ जु भाव सो ताकौ यहै विकार। लखिये मानुष देह में अचिरज यहै अपार ॥

भट्टाचारज रहै यौं बैठि सु मनैं विचार। नित्यानन्दादिक रहै आय जु सिंह सु द्वार ॥
बात कहैं सब लोक तहँ सुनी परस पर जोय। आयौ सन्यासी जु इक जगन्नाथ लखि सोय ॥
भयौ मूरछित देह में रही चेतना नाहि। सार्वभौम तैसैं जु तिहिं गौ लैं कै घर माँहि ॥
सुनिकैं जानी सवनि यह श्री प्रभु ही कौ कार्य्य। तिही समें आये तहां गोपीनाथाचार्य ॥

कवित्त

नदीया के निवासी श्री विसारद के जामात भक्त महाप्रभु जू के तत्व ज्ञाता सोई है।
श्री मुकुंद जू सौं जिहिं नीकें पहिचान आगें तातें तिन्हैं देखि मति अचिरज भोई है।
देखिकें मुकुंद जू नें कियौ नमस्कार तिन्है तिन्हौ हिय लाय पूछी प्रभू बात सोई है।
तिन्हौ कह्यौ प्रभु जू कौ भयौ इहां आगमन हम सब आये तिनहीं के संग होई हैं॥
नित्यानंद जू कौं कियौ गोपीनाथ नमस्कार मिलि सबही सौं पूछी प्रभुजू की गाथ हैं।
कहैं श्री मुकुंद महाप्रभु जू संन्यास करि आये अब लीलाचल हमें लैं के साथ हैं।
पाछें हम आये तिनही के हेत हमें छाड़ि प्रभु आगें आये देखिबेकौं जगन्नाथ हैं।
सुनी कथा लोक मुख तातें अनुमान कियौ सार्वभौम गेह प्रभु गये धरें हाथ हैं॥

भये अचेतन प्रेम प्रभु जगन्नाथ लखि आहि। सार्वभौम लै कैं गये भवन आपनैं ताहि ॥
भयौ तिहारे मिलनकौ जबही हम हिय जोय। दैव योग करि तिही छिन लह्यौ दरस तुव सोय ॥
सार्वभौम जू के सदन चलौ सबै हम जाहिं। करि हैं प्रभु कौं देखि कैं पीछें दरसन आहि ॥
इतनौ सुनि सब संग लै गोपीनाथ जु सोइ। सार्वभौम जू के सदन गौ अति हरषित होइ ॥
तिनके गृह सब जायकैं प्रभुकौ दरसजु कीय। प्रभु कौं लखि आचार्य कें सुख दुख विव भौ हीय॥
सब कौं लै भीतर गये पहिलैं तिन्है जताय। नित्यानँद जु कौं तिन्हौं नमस्कार किय आय ॥
सार्वभौम सबसौं कियौ मिलन यथोचित जोय। प्रभुकौं लखि सबके भये हियमें दुख सुख सोय ॥
तिन्हौं पठाये सबनि कौं दरसन हित जगनाथ। चंदनेश्वर पुत्र निज दीनौं तिन के साथ ॥
जगन्नाथ लखि सबनि कैं भौ अति ही आनंद। आवेसित भौ भाव में प्रभु श्री नित्यानंद ॥
मिलि कें सबही भक्त गण सुस्थिर कीनौ ताहि। दिय प्रसाद माला जु लै ईश्वर सेवक आहि ॥
आनंदित मन सबनि कें भये प्रसाद जु पाय। आये वेगि तहां जहां हैं प्रभु भरे जु भाय ॥
कियौ सबनि मिलि उच्चसुर नाम कीरतन जोय। प्रभु जू कें चेतन भयौ पहर तीसरें सोय ॥
हरी हरी कहि उठे प्रभु करि हुंकार जु आहि। सार्वभौम आनंद करि लई पाद रज ताहि ॥
करौ वेगि मध्यान्ह तुव प्रभु सौ कहैं जु सोय। दैहौं भिक्षा आजु हौं महाप्रसाद दहि जोय ॥
प्रभु जू आये वेगि ही उदधि न्हाय कें जोय। सार्वभौम परसाद प्रभु करैं जु भोजन सोय ॥
भात जु सुवरन थार कौ उत्तम व्यंजन सोय। भक्त गनन के संग प्रभु कौ जु भोजन जोय ॥

सार्वभौम आपुन करें परिवेशन सुख भोय । कहैं प्रभु जु मुहि देहु तुम सफरा व्यंजन सोय ॥
इनि सब कौं तुम देहु जो पीठा पणा जु आहि । जोरि होइ कर कहैं तब भट्टाचारज ताहि ॥
जगन्नाथ भोजन किये कौंन कौंन विधि जोय । महाप्रसाद जु आजु सब आस्वादौ तुम सोय ॥
ऐसैं कहि पीठा पना सबहि खवायौ चाय । करवायौ तब आचमन यौं भिच्छाजु कराय ॥
गोपीनाथाचार्य गौ आज्ञा लै कैं जोय । आये प्रभु जू के निकट भोजन करिकें सोय ॥
नमस्कार कीनौ नमौ नारायन कहि ताहि । मति रति होहु जु कृष्ण में कह्यौ महा प्रभु आहि ॥
सुनिकैं भट्टाचार्जजू मन में कियौ विचार । जान्यौ वैष्णव यती यह इहि बोलनि निरधार ॥
गोपीनाथाचार्य सों सार्वभौम कह जोय । जान्यौ चहै, कहौ इनहि पूर्बाश्रम है सोय ॥
कहै जु गोपीनाथ जू नवद्वीप घर आहि । जगन्नाथ द्विज ख्याति है मिश्र पुरंदर ताहि ॥
जान्यौ तिन के तनय ए विश्वभर यह नाम । नीलाम्बर के दोहिने दया रूप गुण धाम ॥

कहैं तब सार्वभौम नीलाम्बर चक्रवर्ती विसारद के साध्याई ख्याति यह तास है ।
तिनके हैं मान्य मिश्र पुरंदर जाने हम पिता नाते हैं हमारे मान्य मति जास है ॥
नदिया संबन्ध सार्वभौम हरषित भये श्री गुसाई जू कों कहैं बचन प्रकाश हैं ।
सहज ही पूज्य हो हमारे तुम तामें जती यातें हमें जानौं आपु करि निज दास है ॥

कियौ जु विष्णु स्मरन तहां श्री प्रभु सुनि के सोय । भट्टाचारजि सौं कहैं विनय वचन कछु जोय ॥
तुम तौ हो सब जगत गुरु हितकारी अधिकाय । संन्यसिनि कों हित करौ तिनु वेदांत सुनाय ॥
संन्यासी बालक जु हौं भलौ बुरौ नहि जान । लियौ तिहारौ आसरौ करि गुरु कौ अभिमान ॥
भयौ तिहारौ संग हित ह्यां ऐसौ मम जोय । पालन मेरौ करौ तुम सब प्रकार करि सोय ॥
भई हमारें आजु ही बड़ी बिपति जो आहि । तुम ही मो पै कृपा करि कीनी रच्छा ताहि ॥
सार्वभौम कहैं जाहु जिनि इकले दरसन सोइ । जावौ मेरे संग कै मेरौ जन लै कोइ ॥
मंदिर बीच न हौं कभूं जैहौ कहौं जु सोय । रहि कें पाछें गरुड़ के दरसन करि हौं जोय ॥
गोपीनाथाचार्य जू सार्वभौम कहि जोय । करवावो दरसन जु तुम इनकौं लैकै सोय ॥
बहन हमारी मात की निर्जन गृह में ताहि । करौ तहाँ जु निवास दै समाधान सब आहि ॥
प्रभु कौं गोपीनाथ लैं तहाँ वास दै सोय । जल जलपात्रादिकनि कौ समाधान किय जोय ॥
गोपीनाथ जु और दिन गये जु प्रभु के पास । दरसन सज्या उठनिकौ करवायौ लै तास ॥
आये संग मुकुन्द लै सार्वभौम के गेह । तिनसौं भट्टाचार्य जू कहैं वचन तब एह ॥
सुंदर आकृति जती ए अरु है प्रकृति पुनीति । इनके ऊपर अधिक ही बढ़ै हमारी प्रीति ॥
संप्रदाय कहु कौंन में कियौ ग्रहन संन्यास । कहा नाम इनकौ हियें सुनिवे कौ जु हुलास ॥
गोपीनाथ कहै जु इन नाम कृष्ण चैतन्य । गुरु हैं केशव भारती इन के अति ही धन्य ॥

ते बोले यह नाम जो सर्वोत्तम है याहि ।।संप्रदाय जो भारती इह मध्यम हैं आहि ।।
गोपीनाथ कहैं न इह लोकापेचा जोय । संप्रदाय यौं अधिक की करी उपेचा सोय ।।
भट्टाचारज कहैं इह यौवन प्रौढ़ जु आहि । कैसैं जती जु धर्म की ह्वै है रचा याहि ।।
इनकौं सदा सुनाय हैं हम वेदांत असेस । पथ वैराग्य कराय हैं औ अद्वैत प्रवेस ।।
कहैं जु जो हम फेरि कैं जोग्य पट्ट दै आहि । संस्कार करि आनई संप्रदाय बड़ याहि ।।
गोपीनाथ मुकुंद यौं दुखी भये सुनि आहि । गोपीनाथाचार्य कछु कहन लगे तब ताहि ।।
इनकी महिमा कौं तुम्हैं सार्वभौम नहि ज्ञान । भगवत्ता लचणनि कौ ह्यां सीमा जु प्रमान ।।
ताही तें विख्यात ये परमेश्वर हैं सोय । गोचर कछु सर्वज्ञ कौ अज्ञ पास नहिं होय ।।
कहैं सिष्य गन कहौ जु तुम ईश्वर कौन प्रमान । कहैं जु अनुभव सिद्ध ये ईश्वर लचण जान ।।
सु कहैं ईश्वर तत्त्व तुम साधौ करि अनुमान । तिनतें होइ न एक जो ईश्वर तत्त्व हि ज्ञान ।।
जा जन पर श्री कृष्न कौ कृपा लेस जो होय । ईश्वर के निज तत्व कौं जान सकै भल सोय ।।

तथाहि श्रमद्भागवते दशमस्कन्धे ।—

तथापि ते देव पदाम्बुजद्वय प्रसादलेशानुग्रहीत एव हि ।
जानाति तत्वं भगवन्महिम्नो न चान्य एकोऽपि चिरं विचिन्वन् ।।

जद्यपि तुम हौ जगदगुरु छहो शास्त्र मधि ज्ञान । पृथिवी में नाहिन कछू पंडित तुम जु समान ।।
तुम पर ईश्वर कौ नहै कृपा लेस कौ भांन । याही तें प्रभु तत्त्व कौ सकै न क्यौ हूं जानि ।।
यामें तुम्हारौ दोस नहिं कहैं शास्त्र यह जोइ । ईस तत्व पांडित्य करि कबहूं जानि न होइ ।।
आचारज तिहि कहै तुम कहौ सभरिकैं जोय । तुम पर तिन की कृपा है को प्रमान ह्यां सोय ।।
ये तब कहैं जु वस्तु में होय वस्तु कौ ज्ञान । होय कृपा तें तत्व कौ ज्ञान इहै सु प्रमान ।।
इनके वपु में सर्व हैं ईश्वर लचण जोइ । महा सु प्रेमावेस तुम पायौ दरसन सोइ ।।
तऊ तुम्हारें होय नहि ईस ज्ञान निरधार । देवी माया जवनिका कौ जु यहै व्यवहार ।।
देखें ऊ देखै नहीं लोक वहिर्मुख ताहि । सार्वभौम यौ सुनि कहैं हसि कैं वचन जु आहि ।।
इष्ट गोष्टी जु वारता करैं करौ जिनि रोस । शास्त्र दृष्टि सौं कह्यौ कछु नहीं हमारौ दोस ।।
गोस्वामी चैतन्य जू महा भागवत सोइ । होय विष्णु अवतार नहि इहि कलि कालहि जोय ।।
सुनि जु मन दुखी ह्वै कहैं जु आचार्य सुजान । शास्त्रज्ञ करि सु आपकौं करौ जु तुम अभिमान ।।
भारत पुनि भागवत ए दोऊ शास्त्र प्रधान । तिन दोऊ के वाक्य में नही तुम्है अवधान ।।
विष्णु नाम त्रियुगी कहैं याही तें सतु कोय । कलि जुग में अवतार नहि शास्त्र ज्ञान इस सोय ।।
ते दोऊ कलि काल में कहैं प्रगट अवतार । यातें त्रियुगी नाम करि है तिनकौ जु प्रचार ।।
प्रति जुग ही श्री कृष्ण जू करैं जु जुग अवतार । तर्क निष्ठ है हृदय तुम तातैं नहीं विचार ।।

तथाहि तत्रैव ।—

आसन् वर्णास्त्रयो ह्यस्य गृन्हतोऽनुयुगं तनूः । शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः ॥ ३ ॥

तत्रैव एकादशस्कन्धे ।—

कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णं सांगोपांगास्त्रपार्षदं । यज्ञैः संकीर्त्तनप्रायै र्यजन्ति हि सुमेधस : ॥ ४ ॥

तथाहि महाभारते दानधर्म्मे ।—

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरागंश्चन्दनांगदी । सन्यासकृत् समः शान्तो निष्ठा शान्तिपरायणः ॥ ५ ॥

तुम आगें इह कथा कौ नहि प्रयोजन कोय । जैसैं ऊषर भूमि मधि वीज बोय बो होय ॥
तुम पै तिन ही की जवै ह्वै है कृपा जु सोय । ए सब ही सिद्धांत तब तुम ही कहि हौ जोय ॥
कहैं सबै ये शिष्य तुम जो कुतर्क बहु वाद । इनहूं कौ कछु दोष नहीं एह माया जु प्रसाद ॥

तथाहि भागवते षष्ठस्कन्धे ।—

यच्छक्तयो वदतां वादिनां वै विवादसंवादभुवो भवन्ति ।
कुर्व्वन्ति चैषां मुहुरात्ममोहं तस्मै नमोऽनन्तगुणाय भूम्ने ॥ ६ ॥

भट्टाचारज कहैं तब जाहु गुसाई धाम । करौ निमंत्रण गण सहित लेय हमारौ नाम ॥
भिक्षा करवायौ प्रथम ल्याय प्रसाद हि ताहि । हमैं भक्ति सिक्षा सु ये पाछें करियौ आहि ॥
सार्वभौम सारे जु तिहि भगनी पति हैं सोय । स्तुति निन्दा अरु हास्य करि सिक्षा करैं जु जोय ॥
आचारज सिद्धांत करि भौ मुकुंद संतोष । सार्वभौम के वचन करि भौ हिय में दुख रोष ॥
आचारज किय आगमन गोस्वामी ढिंग आहि । सार्वभौम के नाम लै कियौ निमंत्रण ताहि ॥
सार्वजु भौम की कथा ते कहैं मुकुँद सँग आय । निंदा भट्टाचार्य की करैं विथा हिय पाय ॥
सुनि कें श्री प्रभु जू कहैं ऐसैं जिनि कहु सोय । हम पर भट्टाचार्य कौ है जु अनुग्रह जोय ॥
धर्म हमारौ जती कौ राख्यौ चाहै आहि । दया करें वात्सल्य करि कहा दोस ह्यां ताहि ॥
श्री जु महाप्रभु और दिन भट्टाचारज संग । जगन्नाथ कौ दरस किय हिय आनंद अभंग ॥
भट्टाचारज संग प्रभु आये मंदिर ताही । प्रभु जू कौं आसन दियौ आपुन बैठे आहि ॥
तब वेदांत पढाय वे कौ आरंभ जु कीय । लगे कहन कछु प्रभु जु सौं नेह भक्ति करि हीय ॥
श्रवन सदा वेदांत कौ जती धर्म यह आहि । तुम जु श्रवन वेदांत कौ करौ निरंतर ताहि ॥
प्रभु जु कहैं मो पै करौ परम अनुग्रह सोय । जोई कछु तुम कहौ मम है कर्त्तव्य जु सोइ ॥
सात दिवस लौं श्रवण किय ऐसैं तिहि गृह मांहि । बैठे सुनिबोई करैं भलौ बुरौ कहि नाहि ॥
सार्वभौम सातें दिवस प्रभु सौं कही जताय । सात दिवस लौं तुम सुन्यौ मत वेदांत बनाय ॥
भलौ बुरौ नाही कह्यौ रहे मौंन धरि जोय । जान्यौ नही जान्यौ किधौ जानी परत न सोय ॥
मूरख हम प्रभु कहैं नहि पढ़यौ ग्रंथ जो कोय । इक तुम आज्ञा मात्र करि कियौ श्रवण मधि सोय ॥
संन्यासी के धर्म हित श्रवन मात्र किय ताहि । तुम जे अर्थ कहे तिनैं समझि सकै नहि आहि ॥

भट्टाचार्य कहैं नहीं समभ्भौ जिहि यह ज्ञान । सो फिर बूझै समझि हित तिहिं आगे जु अयान ॥
तुम तौ सुनि सुनि कें रहे मौंन मात्र करि जोय । हियें तुम्हारे है कहां समझि सकैं नहि सोय ॥
अर्थ सूत्र कौ प्रभु कहैं निर्मल समुझ्यौ जाय । तुम व्याख्या के सुनत मन होइ विकल अधिकाय ॥
व्यास सूत्र के अर्थ कौ कहैं जु भाष्य प्रकास । अर्थ हि ढकि कें सूत्र कैं भाष्य कह्यौ तुम तास ॥
मुख्य अर्थ जो सूत्र कौं सो न करौ विख्यान । तिंहि किय कल्पित अर्थ अरू आछादन सुनिदान ॥
सबै उपनिषद ए जु हैं मुख्य अर्थ जो जान । व्यास सूत्र करि कहैं सो मुख्य अर्थ परमान ॥
मुख्य अर्थ तजि कल्पना जौ न अर्थ कौं धारि । तज़ि अभिधा कौं शब्द की लक्षण वृत्ति विचारि ॥
सबै प्रमाननि के जु मधि वेद प्रमान प्रधान । मुख्य अर्थ जे श्रुति कहैं तेई अर्थ प्रमान ॥
विष्ठा अस्थि जु जीव के गोमय संख जु दोय । वेद वचन करिकैं भये महा पवित्र सु सोय ॥
वेद प्रमान जु सहज ही कहैं सत्य सो जान । कियें लक्षणा वृत्ति सो निज प्रमानता हानि ॥
व्यास सूत्र कें अर्थ जे सूरज किरण समान । तुम करि कल्पित भाष्य घन ते छाये जु प्रमान ॥
वेद पुराणनि में कियौ ब्रह्म निरूपन जोय । बृहद बस्तु जो ब्रह्म है ईश्वर लक्षण सोय ॥
परि पूरण ऐश्वर्य सब एक स्वयं भगवान । निराकार करि कें जु तिंहिं करौ आप व्याख्यान ॥
निर्विंशेष ताकौं कहैं श्रुति समूह ते जानि । प्राकृति कौं जु निषेध करि अप्राकृति थिति मानि ॥

तथाहि चैतन्यचन्द्रोदयनाटके—

या या श्रुति र्जल्पति निर्व्विशेषं सा साभिधत्ते सविशेष मेव ।
विचारयोगे सति हन्त तासां प्रायो वलीयः सविशेषमेव ॥

जन्म ब्रह्म ते विश्व को ज्याव तु ब्रह्म निदान । ब्रह्म बीच पुनि जाय कें होत लीन यह जान ॥
अपादान अधिकरण पुनि करण कारकैं तीनि । भगवान जु सविशेष कें एई तीनौ चीन ॥
बहुत होंहु भगवान मैं जबै कियौ मन आहि । तब ही प्राकृति शक्तिकौं कियौ विलोकन ताहि ॥
जातें प्राकृत नेंन मन जनम तास में है न । याही तें अप्राकृतें पर ब्रह्म मन नेंन ॥
ब्रह्म शब्द जो कहत हैं पूर्ण स्वयं भगवान । सो जु स्वयं भगवान है कृष्ण शास्त्र परमान ॥
गूढ़ अर्थ है वेद कौ जो समझ्यौ नहि जाय । सो पुरान वचनि कह्यौ निहचैं अर्थ बनाय ॥

तथाहि श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे—

अहो भाग्यमहोभाग्यं नन्दगोप व्रजौकसां । यन्मित्रं परमानन्दं पूर्णं ब्रह्म सनातनम् ॥

बरजै प्राकृति पानि पद कहि अपान पद वेद । फेरि कहैं सीघ्र हि चलैं सब ही गहैं अस्वेद ॥
जिनकौ षट ऐश्वर्य में पूर्णानंद शरीर । तुम ऐसे भगवान कौं निराकार कहु धीर ॥
कहैं ब्रह्म सविशेष कौं याही ते श्रुति आहि । निर्विशेष करि लक्षणा मानत तजि मुख्याहि ॥
स्वाभाविकि जो ब्रह्मकी तीनि शक्तिहै आहि । तुम पांडित्य निशक्ति करि निश्चै करौजु ताहि ॥

तथाहि विष्णुपुराणे—

विष्णुशक्तिः परा प्रोक्ता क्षेत्रज्ञाख्या तथापरा । अविद्या कर्म्मसंज्ञान्या तृतीया शक्तिरिष्यते ॥
यया क्षेत्रज्ञशक्तिः सा वेष्टिता नृप सर्व्वगा । संसारतापानखिलानवाप्नोत्यत्र सन्ततान् ॥
तया तिरोहितत्वाच्च शक्तिः क्षेत्रज्ञसंज्ञिता । सर्वभूतेषु भूपाल ! तारतम्येन वर्त्तते ॥

तथाहि तत्रैव—

ल्हादिनी सन्धिनी सम्वित् त्वय्येका सर्वसंश्रये । ल्हादतापकरी मिश्रा त्वयि नो गुणवर्ज्जिते ॥

सत चित अरु आनंद मय है ईश्वर जु स्वरूप । तीन अंस चित शक्ति ही धरै तीन ये रूप ॥
हर्ष अंस आल्हादिनी संधिन है सत अंस । चित अंसै संवित भई ज्ञान कहैं जु प्रसंस ॥
अंतरंग चिछक्ति है जीव तटस्था शक्ति । वहि रंग माया शकति तीन करैं प्रभु भक्ति ॥
षट विधि है ऐश्वर्य प्रभु तिहि चितशक्ति विलास । नहि मानौ ऐसी सकति सहस परम प्रकास ॥
मायाधिप मायावस हि ईश्वर जीवहि भेद । ऐसैं जीवहि ईश्वर हि तुम जो कहत अभेद ॥
जीवरूप गीता हि मधि कह्यौ शक्ति करि ताहि । कह्यौ अभेद जु जीव इम ईश्वर कें संग आहि ॥

तथाहि गीतायां—

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे परां । जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्य्यते जगत् ॥

प्रभु कौ श्री विग्रह जु सतचिदानंद आकार । तिहि विग्रह कौं तुम कहौ सतगुण कौ जु विकार ॥
श्री विग्रह मानत न जे हैं पाखंडी सोय । ते अस्पृश्य अदृश्य हैं यम दंडी वे होय ॥
वेद न मानत बौद्ध जे ते नास्तीक वखानि । वेद आसरे नास्तिक जु वाद बौध वढ़ि जानि ॥
जीवनि के निस्तार हित किये सूत्र पुनि व्यास । मायावादी भाष्य सुनि भयौ सवनि कौ नास ॥
मत परिणाम सुवाद जौ व्यास सूत्र अनुरूप । प्रभु अचिंत्य शक्ति जु भयौ परिणत ह्वै जगरूप ॥
मनि जैसैं अविकृति रहै प्रसवै सुवरन भार । जगत रूप ईश्वर भये तऊ सदा अविकार ॥
व्यास भ्रांति करि दोसदिय ताही सूत्र मझार । मत वितर्क स्थापन कियौ करि कल्पित सुविचार ॥
आत्म बुद्धि तव मानिकैं सोई मिथ्या जानि । जगत यहै मिथ्या नही नस्वर मात्र वखानि ॥
महावाक्य जो प्रणव है ईश्वर मूरति सोय । सकल वेद अरु जगत की उतपति तातें होय ॥
जो प्रादेशिक वाक्य हैं तत्वमसी जिय हेत । प्रणव न मानत ताहि करि महावाक्य ही लेत ॥
इहि विधि कल्पित भाष्य मधि दिय सत दोस सभारि । भट्टाचारज पूर्वपछ किये अपार विचारि ॥
उठे वितंडा लछ तहां निग्रह आदि अनेक । प्रभु ने सब खंडन किये निज मन थापी टेक ॥
भगवानहि संवंध अभिधेय भक्ति कौं जानि । प्रेम प्रयोजन वस्तु तिहि वेदन कही वखानि ॥
और कछू जो जो कह्यौ कल्पित है सब सोइ । सहज प्रमान जु श्रुति वचन कल्पित लछता जोइ ॥
आचारज कौ दोस नहि प्रभु आज्ञा भई जानि । यही ते करि कल्पना नास्तिक शास्त्र वखानि ॥

Sarbhug Gauranga

तथाहिपद्मपुराणे—

स्वागमैः कल्पितैस्त्वञ्च जनान् मद्विमुखान् कुरु । माञ्च गोपय येन स्यात् सृष्टिरेषोत्तरोत्तरा ॥

तथाहि तत्रैव—

मायावादमसच्छास्त्रं प्रच्छन्नं वौद्धमुच्यते । मयैव विहितं देवि कलौ ब्राह्मणमूर्त्तिना ॥

भट्टाचारज सुनि भये विस्मित परम बनाय । स्तंभित ह्वै कै रहे सो मुख बोल्यौ नहि जाय ॥
कहै जु प्रभु आचार्यसों करौ न अचिरज सोय । श्री प्रभु जू की भक्ति है पर पुरुषारथ जोय ॥
अवधि आत्माराम लौं करत भक्ति प्रभु जोय । अस अचिंत्य कल्यान गुण गण प्रभु के हैं सोय ॥

श्री मद्भागवते—

आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था अप्युरुक्रमे । कुर्व्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थंभूतगुणो हरिः ॥

सुनि भट्टाचारज कहैं सुनौ महाशय ताहि । अर्थ सुनन कौं चाव मुहि इही पद्य कौ आहि ॥
प्रभु बोले तुम अर्थ इहि कहा करौ सुनि ताहि । पाछें करि हैं हम अरथ जो जानत हैं आहि ॥
सुनि भट्टाचारज तवै करचौ पद्य विख्यान । लै लै ते ते शास्त्र मत कीनौं विविध विधान ॥
लै कैं ते ते शास्त्र मत नव विधि अर्थ वखानि । सुनिकें प्रभु वोलै कछू तिन सौं करि मुसक्यान ॥
भट्टाचारज तुम गनें गुरु साक्षात जु सोय । करत शास्त्र विख्यान अस काहू सकति न होय ॥
ऐ पै कह्यौ तुम अर्थहि पांडित्य प्रतिभाय । अभिप्राय या पद्य कौ इन विन और लखाय ॥
भट्टाचार्य प्रार्थन सौं प्रभू कियौ विख्यान । मधि तिनके नव अर्थ के एकौ छुयौ न जान ॥
आत्मारामहि आदि दै पद एकादस जान । पृथक पृथक पद के करें निहचै अर्थ विख्यान ॥
सो सो पदहि प्रधान करि और मिलाय मिलाय । अष्टादस अरथ जु करै अभिप्राय लैं आय ॥
प्रभुके अरु तिहिभक्तिके पुनि तिहि गुणगण जोय । तीन अचिंत्य प्रभावहै कहे जाय नहि सोय ॥
अन्य साध्य साधन जिते करि आछादन ताहि । सिध्य साधकनि के मनहि हरे तीनि ये आहि ॥
सनकादिक सुकदेव जू ये ई तहा प्रमान । इनही मत नाना अरथ करैं जु प्रभु विख्यान ॥
सुनिके भट्टाचार्य्य के चमत्कार भौ हीय । प्रभु कौं कृष्णहि जानि कें धिक सु अपनपौ कीय ॥
प्रभु साक्षात सु कृष्ण हैं मैं यह जानी नाहिं । अपराध जु बहुत करचौ गर्वित ह्वै मन मांहि ॥
लई जु प्रभुकी सरण तव निज निंदा करि आहि । प्रभुजू कौ मन भयौ तव कृपा सुकरिये ताहि॥
तिन आगें जु दिखाय यौ चारु चतुर्भुज रूप । पाछे वंशीवदन निज कियौ जु स्याम स्वरूप ॥
देखि सार्वभौम सु परे करी दण्डवत जोय । फिरि उठिकें स्तुति करी युग हाथ जोरि कैं सोय ॥
प्रभु की कृपा प्रताप तें फुरें सकल तिहि तत्व । नाम प्रेम दानादि दै वरन्यौ सकल महत्व ॥
तुरत पद्य शत करि लिये एक घरी जु विताय । सुरगुरु इमि सुपद्यन कौ सकैं न किहूं वनाय ॥
सुनि प्रभु सुखसौं कियौ तिंहिं आलिंगन करि हेत । भट्टाचारज भये तब प्रेमावेस अचेत ॥
अश्रु पुलक अरु स्वेद अंग कंप थरथरी ताहि । नाचि गाय क्रंदन कियौ परे जु प्रभुपद आहि ॥

गोपीनाथाचार्य कौं लखि हरषित भौ हीय । भट्टाचारज नृत्य लखि प्रभुगण हास्य जु कीय ॥
गोपीनाथाचार्य जू प्रभु प्रति कहैं सुनाय । तिहीं जु भट्टाचार्य की यह गति किय तुम आय ॥
बड़े भक्त तुम प्रभु कहैं तुम संगहि तें आहि । जगन्नाथ जू की कृपा मति नीकी किय ताहि ॥
तबैं जु भट्टाचार्य कौं प्रभु जु सुस्थिर कीन । भट्टाचारज थिर भये स्तुति बहु करी नवीन ॥
जग निस्तारयौ आप तुम सोऊ कारज अल्प । हों जु उधारयौ आप ये अचिरज शक्ति अनल्प ॥
तर्क शास्त्र करि जड जु हम जैसें आयस पिंड । हमैं द्रवायौ आप कौ यहै प्रताप प्रचंड ॥
स्तुति सुनि प्रभु आये जु उठि निज निवास करि कार्य । आचारज द्वारा दई भीक्षा भट्टाचार्य ॥
जगन्नाथ के दरस हित गये जु प्रभु दिन आन । जगन्नाथ के दरस किय समयौं सज्योत्थान ॥
माला अन्न प्रसाद दिय तिन्हैं पुजारी आय । प्रसादान्न माला लहैं भौ प्रभु सुख अधिकाय ॥
प्रसादान्न माला सु प्रभु बांध्यौ आंचर जोय । आवैं भट्टाचार्य गृह त्वरायुक्त ह्वै सोय ॥
अरुणोदय के समय में भौ प्रभु आगम जोय । जागे ताही काल मधि भट्टाचारज सोय ॥
जागे भट्टाचार्य जू कृष्ण कृष्ण कहि आहि । बाढ़्यौ आनंद प्रभु हिये कृष्ण नाम सुनि ताहि ॥
बाहिर प्रभु जू कौ तिन्हौ पायौ दरसन आहि । अस्तव्यस्त ही आय कें पद वंदन किय ताहि ॥
बैठन कौं आसन दियौ बैठे दोऊ आय । प्रसादान्न प्रभु खोलि कैं कर मधि दीयौ ताय ॥
पाय प्रसाद हि मुद भयौ सार्वभौम हिय माहि । जद्यपि संध्या न्हायबौ दांतुनि कीनी नाहि ॥

पद्मपुराणे ।— प्राप्तमात्रेण भोक्तव्यं नात्रकाल विचारणा ॥ १७ ॥

यही पद्य पढ़ि कै कियौ भक्षन अन्न जु आहि । आनंदित लखि कें भयौ प्रभु जू कौ मन ताहि ॥
ह्वै करि प्रेमावेस में आलिंगण किय ताय । दोऊ जन धरि कैं दुहुनि कीनौ नृत्य सु आय ॥
स्वेद कंप अरु अश्रु दुहुं आनंद उमग्यौ जोय । श्री प्रभु जू लागे कहन प्रेमावेसित होय ॥
आजु मैं जु अनयास ही त्रिभुवन जीत्यौ जोय । आजु हि हम वैकुण्ठ पद आरोहन किय सोय ॥
पूरण सब अभिलाष मम भये आजु निरधार । सार्वभौम बिश्वास भौ महाप्रसाद मंझार ॥
आजु भये निसकपट करि कृष्णाश्रय तुम जोय । कृष्ण भये निसकपट करि तुम पर सदय जु सोय ॥
देहादिक बंधन कटे आजु तुम्हारे जोय । माया कौ बंधन जु तुम काढ़्यौ आजु ही सोय ॥
कृष्न प्राप्ति कौ जोग भौ तुम मन आजु हि सोय । किय भक्षण सु प्रसाद कौ वेद धर्म लंघि सोय ॥

श्रीमद्भागवते—येषां स एव भगवान् दययेदनन्त : सर्व्वात्मनाश्रितपदो यदि निर्व्यलीकं ।
ते दुस्तरामतितरन्ति च देवमायां नैषां ममाहमिति धीः श्वशृगालभक्ष्ये ॥ १८ ॥

ऐसैं कहि कैं महाप्रभु आये निज घर जानि । तब ही तें खंडन भयौ सार्वभौम अभिमान ॥
विना जु श्री चैतन्य पद नाही जानैं आन । भक्ति बिना नहि शास्त्र मधि करत और व्याख्यान ॥

गोपीनाथाचार्य जू लखि वैष्णवता ताहि। हरी हरी कहि नृत्य किय दै कर ताली आहि ॥
भट्टाचारच और दिन चले जु दरसन हेत। जगन्नाथ देखे नही आये प्रभु जु निकेत ॥
करी दंडवत बहुत करि स्तुति फिरि बहुविधि ताहि। निज पहली दुरमति कही करिजु दैन्य बहुआहि॥
साधन मुख्य जु भक्ति कौ सुनि वे मन भौ ताहि। प्रभु उपदेश कह्यौ तिन्है नाम कीरतन आहि ॥

श्री हरिभक्तिविलास धृत वृहन्नारदीये।—

हरेर्नाम हरेर्नाम हरेर्नामैव केवल। कलौ नास्त्येव नास्त्येव नास्त्येव गतिरन्यथा ॥ १६ ॥

प्रभु जु करी विस्तार इंहि अर्थ सुनायौ ताहि। सुनि भट्टाचारज मन हि चमत्कार भौ आहि ॥
कहैं जु गोपीनाथ जू कही प्रथम हम जोइ। भट्टाचारज जू सुनौं भई तुम्हारें सोइ ॥
भट्टाचारज जू कहैं नमस्कार करि ताहि। आपुही के संबंध मुहि कृपा करी प्रभु आहि ॥
महाभागवत तुम जु हौ हौं तर्कनि करि अंध। प्रभु कीनी मो पै कृपा आपुही के संबन्ध ॥
विनय सुनत संतुष्ट प्रभु आलिंगन किय ताहि। कही जाय दरसन करौ जगन्नाथ के आहि ॥
दामोदर जगदानन्द लैं करि कैं सँग दोय। आये भट्टाचार्य घर जगन्नाथ लखि सोय ॥
ताल पत्र के वीच में लिखि निज पद्य जु दोय। प्रभु कौं दीजौ कहि दियौ जगदानँद कर सोय ॥
आये पत्र प्रसाद लै दोऊ प्रभु जु निवास। मुकुंद दत्त पत्रि पढ़ी लहि करि तिनके पास ॥
लिखि राखे विवि पद्य कें वाहिर भीत मझार। जगदानंद जु पत्र लै प्रभु कौं दिय तिहि वार ॥
प्रभु पढ़ि पद्य हि पत्र कौं फारि फेंकि तिहि दीन। सब भक्तनि लखि भीत मधि कंठ पद्य करि लीन ॥

श्री चैतन्यचन्द्रोदयनाटके।—

वैराग्यविद्यानिजभक्तियोगशिक्षार्थमेकः पुरुषः पुराणः।
श्रीकृष्णचैतन्यशरीरधारी कृपाम्बुधि र्यस्तमहं प्रपद्ये ॥ २० ॥

कालान्नष्टं भक्तियोगं निजं यः प्रादुष्कर्तुं कृष्णचैतन्यनामा।
आविर्भूतस्तस्य पादारविन्दे गाढ़ं गाढ़ं लीयतां चित्तभृंगः ॥ २१ ॥

येई दोऊ पद्य हैं भक्ति कंठ मनिहार। सार्वभौम जस घोषकौं ढ़क्का वाद्याकार ॥
भट्टाचारज जू भये प्रभु के भक्त अनन्य। सेव्य महाप्रभु जू बिना जानत नाही अन्य ॥
श्री चैतन्य सची तनय गौर धाम अभिराम। इहैं ध्यान औ जय यहै लेत यहै नित नाम ॥
भट्टाचारज एक दिन आये प्रभु के पास। नमस्कार करि पद्य कौ लागे पढ़न प्रकास ॥
मध्य भागवत ब्रह्मनुति पद्य पढ़्यौ इक ताहि। पद्य सेस द्वै अच्छर हि पढ़ैं फिराय जु ताहि ॥

श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे।—

तत्तेऽनुकम्पां सुसमीक्ष्यमाणो भुञ्जान एवात्मकृतं विपाकं।
हृद्वाग्वपुभिर्विदधन्नमस्ते जीवेत यो भक्तिपदे स दायभाक् ॥ २२

श्री प्रभु जू बोले इहां मुक्ति पदे यह पाठ। भक्ति पदे क्यौं पढ़ौ तुम कहा जु आसय ठाठ ॥

सार्वभौम कहि मुक्ति जौं नहीं भक्ति फल सोय। भगवत विमुखनीकै यहै केवल दंडै जोय ॥
जे विग्रह श्री कृष्ण कौ सत्य न मानै ताहि। एई निंदा करत हैं बौद्ध तुल्य ते आहि ॥
तिनि द्वै ही कौ दंड है यह साजुज्य जु मुक्ति। ताकौ भल नहि मुक्ति सौं करत रहै जे भक्ति ॥
यद्यपि मुक्ति जु पंचधा इक सालोक्य जु आहि। सामीप्य जु सारूप्य पुनि सार्ष्टि एकता ताहि॥
सालोक्यादिक चारि जो होय जु सेवाद्वार। तबै कदाचित भक्त जन करै जु अंगीकार ॥
सुनि साजुज्य हि भक्ति कें होत ग्लानि भय आहि। चाहै कबहूं नरक कौं तऊ लेय नहि ताहि ॥
ब्रह्म सु ईश्वर में भये साजुज्य दोय प्रकार। करत ईस साजुज्य कौं तातें जन अधिकार ॥

श्री मद्भागवते तृतीयस्कन्धे।—

सालोक्य सार्ष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्वमप्युत। दीयमानं न गृन्हन्ति विना मत्सेवनं जना: ॥२३॥

अरथ और है प्रभु कहैं मुक्तिपदे कौ आहि। साक्षात ईश्वर जू हैं मुक्ति पदै कहि ताहि ॥
मुक्ति पदहि जाकैं रहै वहै मुक्ति पद होय। नवम पदारथ मुक्ति कौ कै जु समाश्रय होय ॥
कहैं अथ बिवि कृष्ण कौं कही जु पाठ पिराय। सार्वभौम कहि शब्द यह तऊ कह्यौ न जाय ॥
जद्यपि अरथजु आपकें शब्द कहै यह ताहि। तदपि दोस असलीलकरि कह्यौ जाय नही आहि ॥
यदपि मुक्ति या शब्द की पंच मुक्ति मधि वृत्ति। रूढ़ वृत्ति तौऊ करै साजुज भान प्रसक्ति ॥
मुक्ति शब्द के कहतही होति ग्लानि अरु त्रास। भक्ति शब्द के कहत ही होत जु हियें हुलास ॥
यह सुनिकें प्रभु जू हँसे आनंदित मन होय। भट्टाचारज कौं करयौ दृढ़ आलिंगन सोय ॥
जिहिं भट्टाचारज पढ़े सिखये मायावाद। तन के ऐसे वचन यह श्री चैतन्य प्रसाद ॥
लखि कैं भट्टाचार्य की सब जन बैष्णवताहि प्रभु कौं जान्यौ आपु ए नँद नंदन है आहि ॥
काशीमिश्रहि आदि दै लीलाचल जन आहि। सब ही प्रभु पद आय कै सरन लई तब ताहि ॥
आगें सब ऐही कथा वर्णन करि हैं जोइ। सार्वभौम जैसैं करें प्रभु कौ सेवन सोइ ॥
भिक्षा परपाटी करैं ज्यौं निरवाह जु आहि। सोई जन करि है श्रवन श्रद्धा करि कें याहि ॥
ज्ञान कर्म के पास तें होय बिमोचन ताहि। सोई श्री चैतन्य पद वेगि हियै है आहि ॥
श्री जु रूपरघुनाथ के चरण कमल जिहि आस। चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्न कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस। सो प्रभु चरितामृत कहै व्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चरितामृते मध्यखण्डे व्रजभाषायां सार्वभौमोद्धारो नाम षष्ठपरिच्छेद: ॥

सप्तमपरिच्छेदः

धन्यं तं नौमि चैतन्यं वासुदेवं दयार्द्र धीः । नष्टकुष्ठं रूपपुष्टं भक्तितुष्टं चकार यः ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय जय श्री अद्वैत शशि जय प्रभु भक्तनिवृन्द ॥
इही भांति कैं प्रभु कियौ सार्वभौम निस्तार । दच्छिन दिस के गमन कौं उपज्यौ प्रभुहि विचार ॥
माघ शुक्लपछ में कियौ श्री प्रभु जू संन्यास । फागुण में किय आय कैं लीलाचल मधि वास ॥
दोल सु जात्रा प्रभु लखी तहां फागुण के सेस । नृत्य गीत वहु किय तहां ह्वै करि प्रेमावेस ॥
सार्वभौम मोचन करयौ प्रभु रहि चैत्र सुमास । किय वैशाख हि लगत मन जैवे दच्छिण आस ॥
कहैं महाप्रभु विनय करिनिज जन वोलि संभारि । करि आलिंगन सबनिकौं श्रीकर कमलजु धारि॥
तुम सब कौं जानें जु हम प्राणनि तें अधिकाय । छाडि सकत नहि तुम हि हम प्राण तज्यौउ जाय ॥
तुम सब मेरे बंधु हौ बंधु कृत्य किय आहि । जगन्नाथ मधि आनि मुहि दरस दिखायौ ताहि ॥
हौं मांगत इकदान कौं अब सबहिन के पास । आज्ञा सब मिलि देहु मुहि जैवे दच्छिण आस ॥
निहिचैं हम कौं जायबौ विश्वरूप के काज । एकाकी ही जांहिगे काहू संग न साज ॥
सेत बंध ते आगमन जब लगि मेरौ होय । तब लगि तुम सबही रहौ लीलाचल मधि जोय ॥
सिद्धि प्राप्ति जानें सकल विश्वरूप की आहि । दच्छिण देस उद्धारि वे यह छल कीनौ ताहि ॥
सुनि सब ही के हृदय में भयौ महादुख जोय । वज्र परयौ मानौ सिर झुकि गये मुख सोय ॥
नित्यानंद प्रभु जु कहैं ऐसैं कैसै होय । एकाकी तुम जायवौ यह सहि सकि है कोय ॥
एक दोय संगहि चलै नाहि परौ हठ रंग । जाहि कहौ सो एक द्वै आवै प्रभु के संग ॥
दच्छिण पथ के तीर्थ जे हम सब जानें सोय । आवै हम ही संग प्रभु जौ तुम आज्ञा होय ॥
हम नर्तक प्रभु जू कहैं सूत्रधार तुम सांच । जैसैं तुम जु नचाय है सोई नचि है नाच ॥
करि सन्यास जु हम चले वृन्दावन अभिराम । लै हम कौं आये जु तुम श्री अद्वैत जु धाम ॥
लीलाचल पथ आवतें दंड भंग किय सोय । तुम सब के दृढ़ नेहसौं कार्य भंग मम होय ॥
जगदानँद चाहै विषय भुगतायौ हम पास । जो कहै सोइ हम कियौ चाहैं उनके त्रास ॥
कबहूं जौ उनकौ वचन करियै और प्रकार । तीन दिवस लौं कथा मम कहत न कोप अपार ॥
हम तौं संन्यासी जु है दामोदर बहु सोय । रहै जु शिच्छा दंड धरि मम ऊपर नित जोय ॥
इनकें आगें हम कछू जानत नहीं व्यौहार । मेरौ नहि भावते इन्हैं चरित स्वतंत्र अपार ॥
कृष्ण कृपा तें नहि इन्हैं लोक उपेच्छा आहि । लोक अपेच्छा हम कभू छाड़ि सकै नहि ताहि ॥
देखि धर्म संन्यास के दुखी मुकुंद जु होय । जाड़े न्हैवौ बार त्रय भूमि सयन हूं जोय ॥
अंतर दुख ज्वाला कछू मुख ते कहत जु नांहि । इनकौ दुख कौं देखिकें हम दुगुनौ जु दुखाहि॥

तातें तुम सब ह्यां रहौ लीलाचल के माहि। दिन केतिक हम तीरथनि एकाकी जु भ्रमाहि ॥
जेते गुण इन सबनि के प्रभु तिनके बस होय। छल करि दोषारोप सौं आस्वादैं गुण सोय ॥
अकथ कथन चैतन्यकौ है जु भक्ति वात्सल्य। आप सहत बैराग्य करि निसिदिन दुख प्राबल्य ॥
सोई दुख कौ देखि कैं भक्त रहत दुख पाय। सोई दुख तिनकौं तनक सह्यौ न प्रभु पै जाय ॥
उनि दोसनि उद्धार छल बरजि सबनि कौं आहि। तीरथ भ्रमबे एकले किय बैराग्य जु ताहि ॥
तबैं चारि जन बहुत कछु विनती तिनसौं कीन। हैं स्वतंत्र ईश्वर प्रभु सो कबहूं मानी न ॥
नित्यानंद कहै तबै जो आज्ञा तुम होय। दुख सुख नित ह्वैबौ करौ करि बै हमें जु सोय ॥
एक निवेदन ही करौं ऐयें और जु वार। प्रभु जू ताहि बिचारि कैं करौ जु अंगीकार ॥
बहिर्वास कौपीन है जो जलपात्र जु सोय। इतनौई जैवै जु संग और कछू नहि सोय ॥
नाम गणन के बीच तुम हाथ बंधे हैं दोय। बहिर्बास जलपात्र औ कैसैं रहिवै सोय ॥
पथ में प्रेमावेस करि ह्वै हौ तुम जु अचेत। बहिर्बास जलपात्र कौ को धरि है करि हेत ॥
कृष्णदास इह नाम है सरल ब्राह्मण आहि। हम विनती कौ धारि कैं लेहु संग करि याहि ॥
बहिर्बास जलपात्र धरि चहै तुम्हरे साथ। जो तुम इच्छा करौ सो नहि कहि है कछु गाथ ॥
अंगीकृत प्रभु जु करयौ तब तिहि बचन जु सोय। तिनि सब कौं लैकैं गये सार्वभौम घर जोय ॥
करि प्रणाम आसन दियौ सार्वभौम जु ताहि। बैठारे सब कौ जु मिलि तब ही आसन आहि ॥
नाना कृष्ण कथाहि करि प्रभु जु बोले ताहि। हम आये तुम पास हैं आज्ञा मागन जाहि ॥
विश्वरूप संन्यास करि गये जु दक्षिण आहि। करि हैं हम जु अवस्य करि अन्वेषण अब ताहि ॥
निहचै दक्षिण चलैंगे आज्ञा दीजैं सोय। सुभ पूर्व ऐवौ ऊलटि तुम आज्ञा ते होय ॥
सार्वभौम सुनिकै भये कातर बहुतैं आहि। धरि कैं चरण बिसाद सौं कहै जु उत्तर ताहि ॥
बहु जन्मनि के पुण्य सौ पायौ प्रभु तुम संग। मोकौ ऐसे संग सौं विधि करि हैं जु विभंग ॥
वज्र परै जो सीस पै और पुत्र मरि जाय। ताहि सह्यो जाहि नही तुम विछोह अधिकाय ॥
तुव स्वतंत्र ईश्वर गमन करिवैं निहचैं जोय। दिन केतिक रहियै लखैं चरण कमल तुम सोय ॥
सिथिल भयौ तिहि विनय करि प्रभु जु कौ मन सोय। रहे दिवस केतिग तहां गमन कियौ नहि जोय ॥
सार्वभौम आग्रह जु करि करैं निमंत्रण ताहि। करवावैं भोजन तिन्हैं करि घर पाकहि आहि ॥
साठी माता नाम जिहि है जु ब्राह्मणी ताहि। रांधि देहि भिक्षा जु तिहि अचिरज कथा जु आहि ॥
आगें तिनकी कथा कौं कहि हैं करि बिस्तार। अब प्रभु कौ दक्षिण गमन ताकौ कहैं विचार ॥
दिवस पांच रहि कैं जु प्रभु सार्वभौम घर आहि। चलिवे के हित आपु प्रभु मागी आज्ञा ताहि ॥
सार्वभौम संमत भयौ प्रभु के आग्रह आहि। जगन्नाथ मंदिर गये प्रभु जू लै करि ताहि ॥
दरसन करि ठाकुर निकट मांगी आज्ञा ताहि। प्रसादान्न माला प्रभुहि दियौ पुजारी आहि ॥

आज्ञा माला पाइ कैं कीने हरषि प्रणाम। आनंदित श्री गौरहरि चले जु दच्छिण धाम ॥
भट्टाचारज संग अरु निज गन जितनौ आहि। जगन्नाथ परिदच्छिणा करि किय गमन जु ताहि ॥
पथ आलालनाथ चले उदधि तीर ही तीर। कहैं जु गोपीनाथ सौं सार्वभौम मति धीर ॥
बहिर्वास कौपीन के गेह धरे जुग दोय। लै आवौ द्विज द्वारते और प्रसाद हुं सोय ॥
सार्वभौम जू तब कहैं प्रभु के चरननि जोय। करि हौं तुम निरधार मम इहै निवेदन सोय ॥
है गोदावरि तीर मधि राय जु रामानन्द। ते हैं विद्यानगर के अधिकारी सुख कन्द ॥
नाहि उपेछा करौगे विषयी सूद्र जु जानि। मिलि हौ तिनहि अवश्य करि मेरे बचनहि मानि ॥
तेई है तुव संग कौ जोग्य एक जन जोइ। रसिक भक्त तिंहिं सम नही धरणी तल में कोइ ॥
पांडित्य अरू भक्ति रस है सीमा इन दोइ। वतराये तुम जानि हैं तिनकी महिमा जोइ ॥
चेष्टा वचन अलौकिक जु तिहि नहि बूझें आहि। कीनो है परिहास हम वैष्णव कहि कहि ताहि ॥
अब प्रभु के जु प्रसाद करि जान्यौ है तिहि तत्व। संभाषन करि जानि हैं तिनकौ जितक महत्व ॥
अँगीकार करयौ जु प्रभु तिनकौं बचन जु आहि। विदा जु तिनकौं दैंन हित आलिंगन किय ताहि॥
गेह कृष्ण भजि करौ मम आसिर्वाद हि ताहि। लीलाचल आवैं जु हम जिमि तुम आसिस पाहि ॥
गमन महाप्रभु जु करयौ इतनौ कहि कें ताहि। होय मूर्छित तहां परे सार्वभौम जु आहि ॥
गमन कियौ प्रभु वेग ही करि जु उपेछा ताहि। श्री प्रभु जू कौ चित्त मन कौंन सकै अवगाहि ॥
महानुभाव कौ चित्त कौ यहै सुभाव जु होय। कोमल है बहु कुसुम तें कठिन बज्र तें सोय ॥

तथाहि भवभूतिवाक्यं—

वज्रादपि कठोराणि मृदुनि कुसुमादपि। लोकोत्तराणां चेतांसि कोनु विज्ञातुमीश्वरः ॥

वेगि भक्तगण आयकै लीनौं प्रभु कौ साथ। तब लगि वस्त्र प्रसाद लै आये गोपीनाथ ॥
तब आलालनाथहि महाप्रभु आये सब संग। नमस्कार करि कैं जु तिहि बहु करी सरंग ॥
प्रेम बिवस ह्वै कितिक छिन नृत्य गीत किय आहि। तहां वसत जन जितिक जे देखन आये ताहि ॥
चहुं दिस लोग सवैं कहैं हरी हरी यह नाम। करें जु प्रेमावेस मधि नृत्य गौर अभिराम ॥
अरुण वसन कंचन सदृश देह महाप्रभु आहि। स्वेद कंप पुलकाश्रु औ भूषण ते हौं ताहि ॥
देखत सिगरे लोक मन चमत्कार भो सोय। जितिक लोक आये तहां घर नहि जात जु कोय ॥
नाचत कोऊ गावत जु कहैं कृष्ण गोपाल। प्रेम प्रवाह वहे जु नर त्रिया वृद्ध औ बाल ॥
कहत भक्तगण सौं जु लखि नित्यानँद अभिराम। आगैं नृत्य जु भांति इहि ह्वै है ग्रामहि ग्राम ॥
भयौ तहाँ अति कालहै लोक छाडि नहि जाहि। नित्यानँद गोस्वामि जू सूज्यौ तहां जु उपाय ॥
लै कैं श्री प्रभु कौ गये करिवे कौं जु मध्यान। धाये आये दरस हित चहुँ दिसतें नर जान ॥
देव सदन आये तहां करि कें प्रभु मध्यान। निज गण कौ जु प्रवेस दिय द्वार कपाट निदान ॥

करवाई द्वै प्रभुनि कौ भीक्षा गोपीनाथ। प्रभु कौ शेष प्रसाद जौ लियौ बाटि सब साथ ॥
सुनि सुनि लोक सबै तहां आये वाहिर द्वार। करै कुलाहल लोक सब हरी हरी जु पुकार ॥
तबै महाप्रभु जू तहां द्वार दियौ खुलवाय। आनन्दित आये जु नर दरसन करि हिय चाय ॥
संध्या लौं इहि भांति सौं लोक जु आवै जाय। भये जु वैष्णव लोक सब नाचत कृष्ण हि गाय ॥
इही भांति उहि ठौर प्रभु भक्त गननि के संग। सोई राति वितीति किय कृष्ण कथा के रंग ॥
स्नान प्रात समये जु करि कियौ गमन प्रभु आहि। भक्तवृन्द कौ दिय विदा करि आलिंगन ताहि॥
होय मूरछित धरणि पर परे सबै जन जोइ। भक्त वृन्द की ओर प्रभु उलटि न चाह्यौ सोइ ॥
प्रभु व्याकुल विछेद करि चले दुखित मन सोय। कृष्णदास पाछै चलै पात्र वसन लै जोय ॥
भक्त वृन्द उपवास करि रहे जु ताही ठोर। दुखित होय लीलाचल हि आये ते दिन ओर ॥
मत्त सिंह ज्यों महाप्रभु गमन कियौ पथ मांहि। करत नाम संकीरतन प्रेमावेसित जाहि ॥

तथाहि श्रीकृष्ण चैतन्यवाक्यं—

कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे। कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण हे ॥
कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण रक्ष मां। कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण कृष्ण पाहि माम् ॥
राम राघव राम राघव राम राघव रक्ष मां। कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव पाहि माम् ॥

यही पद्य पढ़ि कै चलैं गौर हरी अभिराम। लखि लोकहि पथ में कहैं हरी हरी कहूं नाम ॥
प्रेम मत्त ते लोक ह्वै बोलत हरि हरि कृष्ण। प्रभु के पाछे संग चलत दरसन के जु सतृष्ण ॥
कितक दूर हरि प्रभु तिनहि आलिंगन किय धारि। करी विदा तिनकौं तिनहि बीच भक्ति संचारि ॥
करयौ गमन चित चायसौं तेई जन निज ग्राम। छिन छिन क्रंदन नचत हसि बोलत कृष्ण जुनाम॥
जाकौं देखें तिहि कहैं कहौ कृष्ण कौ नाम। इनि भांतिनि वैष्णव कियौ तिन्हौ सबै निज ग्राम ॥
ग्रामांतर तें देव करि आवैं जे जन आहि। तिनके दरसन कृपा करि होय समान जु ताहि ॥
जाहि वहै निज ग्राम में करैं सु वैष्णव आहि। अन्य ग्राम के आय कें भये भक्त लखि ताहि ॥
ग्राम ग्राम मधि जन वहै करत जाय उपदेस। इनि भांतिनि वैष्णव भयौ सब दक्षिण कौ देस ॥
इनि भांतिनि पथ चलतमें सत सत जनकौं आहि। करत वैष्णव महाप्रभू करि आलिंगन ताहि ॥
जिहिं ग्राम जु जाके घरहि भिक्षा प्रभु किय आय। तिंही ग्राम के लोक सब देखन आये ताय ॥
भये महाप्रभु की कृपा महाभागवत सोय। ते सब आचारज भये तारयौ जग सब जोय ॥
इही भांति जब लौं गये सेतुबंध प्रभु सोय। प्रभु नातें नातौ भयौ भयै भक्त सब जोय ॥
किय प्रकास नहि सक्ति जिहि प्रभु नवदीप मझार। सोई शक्ति प्रकासकैं दक्षिण किय निस्तार ॥
जो प्रभु जू कौं भजतहैं जिहिं तिहिं कृपा जु सोय। इनही सब लीलानि कौ सत्य मानि हैं सोय ॥
लोक रहित लीलानि तैं जौ उपजै न विस्वासु। इही लोक परलोक कौं नास होय है तासु ॥

कह्यौ प्रथमहि रीति जिहिं प्रभुकौ गमनजु आहि । इंही भांति सब जानिहौ दच्छिण भ्रमनजु आहि ॥
चलत चलत इंहि भांति प्रभु गयेजु कूर्म स्थान । देखि कूर्मजू कौं करी स्तुति प्रणाम सनमान ॥
प्रेम विवस क्रंदन हसन नृत्य गीत किय आहि । सब लोकन के चित्तभौ चमत्कार लखि ताहि ॥
दरसन करि बैष्णव भये कहैं कृष्ण हरि सोय । प्रेम विवस नाचैं जु नर उर्द्ध बाहु करि जोय ॥
सुनि जु निरंतर लोक मुख कृष्ण नाम अभिराम। तिंही लोक नै बैष्णवजु किये अन्य सब ग्राम ॥
इंहि बिधि सौं जु परंपरा देस भक्त भौ सोय । कृष्ण नाम पीयूषनदि लोक वहाये जोय ॥
जब प्रभु जू ने कितक छिन वाह्य कियौ जु प्रकास । तब कूरम सेवक हुते किय सनमान जु तास ॥
जिहिं जिहिं छेत्रन जात प्रभु तहां यहै व्योहार । एक ठांव वर्णन कियौ कहै नही बहु वार ॥
कूर्म नाम तिहि ग्रामकौ बैदिक द्विज इक जोइ । वहु श्रद्धाजुत भक्ति करि किय प्रभु न्योतौ सोइ ॥
प्रभु कौं गृह मधि लाय कैं पद प्रछालन कीन । सहित बंस सोई जु जल कीनौ पान प्रवीन ॥
बहु प्रकार करि नेह सौं भिछा दई प्रसंस । प्रसादान्न प्रभु कौ रह्यौ सो पायौ सु सबंस ॥
जिनि तुव पद पंकजनिकौ ध्यान करत विधि जोय । साछात पद कमल जुग आये मम गृह सोय ॥
सीमा मेरे भाग्य की क्यौंहूं कही न जाय । श्लाघ्य भयौ मेरे जनम कुल धन आजु बनाय ॥
प्रभु बोले अस बात नहिं कबहुं कहिहौ आहि । कृष्न नाम लै वौ सदा गृह मधि रहि निरवाहि ॥
जाकौं देखौ ताहि तुम करौ कृष्ण उपदेस । मम आज्ञा करि गुरु भये तारौ याही देस ॥
कबहूं नाहीं वाधि है तुम कौं विषय तरंग । फेरि जु याही ठौर में लहिहौ मेरौ संग ।
इंही भांति भिछा करैं प्रभु याके गृह आहि । सोई ऐसैं कहत अस सिछा करैं जु ताहि ॥
पथहि चलत देवालये जिंही ग्राम मधि वास । जाके गृह भिछा करैं सोई महाजन रास ॥
जैसी रीति जु कूर्म में ऐसी किय सब ठाम । प्रभु जौ लौं आये जु फिरि श्री लीलाचल धाम ॥
याँही तें ह्यां ही सबै कह्यौ जु करि विस्तार । जानौगे इहि भांति सौं सब ठां प्रभु व्योहार ॥
इही भांति तिही रैंन में रहे तहां ही सोय । स्नान तहां करि कें चले प्रात समय प्रभु सोय ॥
आये कूरम दूरि बहु पहुँचावन प्रभु आहि । श्री प्रभु जू ने जतन करि घर कौं पठयौ ताहि ॥
एक महाशय द्विज तहां वासुदेव अभिधान । गलित कुष्ट सब अंग में सोऊ कीट प्रधान ॥
जोई कीट जु अंग तें भूमि गिरि परे ताहि । तिहिं ठौर ता कीट कौं राखै सो जु उठाय ॥
तिंहिं द्विजने प्रभु आगमन सुन्यौं रैंन मधि जोइ । प्रातहि आयौ दरस हित भवन कूर्म कें सोइ ॥
कूरम के मुख ते सुन्यौ तिहि प्रभु गमन जु सोइ । दुखित होइ धरणी परयौ ह्वै जु मूरछित जोइ ॥
लाग्यौ करण बिलाप सो बहु प्रकार करि आहि । ताही छिनमें आय प्रभु किय आलिंगन ताहि ॥
कुष्ठ दूर गौ दुख सहित प्रभु के परसैं आहि । सुन्दर भौ आनँद सहित तब हि अंग सब ताहि ॥
देखि महाप्रभुकी कृपा भौ विस्मय मन ताहि । पद सिर मधि धरि पद्य पढि स्तुति बहु करी जु आहि॥

तथाहि श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे—

क्वाहं दरिद्रः पापीयान् क्व कृष्णः श्रीनिकेतनः । ब्रह्मबन्धुरिति स्माहं बाहुभ्यां परिरम्भितः ॥

स्तुति बहु करि प्रभु सौं कहै सुनौ दयामय ताहि । येई गुण नहिं लोक में तेई तुम मधि आहि ॥
मोहि देखि मम गंध तें भाजत पामर जोय । तुम स्वतंत्र ईश्वर बड़े अस हम परसत सोय ॥
ऐपैं अति उत्तम भयौ भलौ अधम हौं जोय । अहंकार यह जारि है मो कौं उठि कैं सोय ॥
प्रभु बोले तुम कौ कभू नहि ह्वै है अभिमान । कहौ निरंतर तुम सदा कृष्ण कृष्ण अभिधान ॥
कृष्ण कृष्ण उपदेस करि करौ जीव निस्तार । कृष्ण जु तुम कौ वेगही करि हैं अंगीकार ॥
कहि कै इतनौ ताहि प्रभु कियौजु अंतर ध्यान । किय दोऊ द्विज गरें लगि क्रंदन प्रभु गुणगान ॥
बासुदेव उद्धार कौं याही कह्यौ आख्यान । वासुदेव अमृत पद जू भौ श्री प्रभु अभिधान ॥
गमन महाप्रभु कौ कहयौ यही प्रथम है जोय । वासुदेव मोचन कियौ कूरम दरसन सोय ॥
जोई श्रद्धा करि करै श्रवन हि लीला याहि । चरण कमल चैतन्य के वेगि ही मिलि हैं ताहि ॥
जान्यौ लीला गौर कौ आदि अंत नहि जोय । सुनि महंतनि के मुखनि लिखी वहै मम सोय ॥
भक्त वृन्द अपराध मम याते लीजौं नाहि । मो कौं एकहि सरण है तुम चरणन के मांहि ॥
श्री जु रूप रघुनाथ के चरण कमल जिहिं आस । चरितामृत चैतन्य कौं कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौं कहैं वृज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखण्डे बासुदेवोद्धारो नाम सप्तम परिच्छेदः ॥

अष्टम परिच्छेदः

संचार्य रामाभिधभक्तमेघे स्वभक्तिसिद्धान्तचयामृतानि ।
गौराब्धिरेतैरमुना वितीर्णैं स्तज्ज्ञत्वरत्नालयतां बिभर्त्ति ॥१॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय जय नित्यानन्द । श्री अद्वैत हिमांशु जय जय भक्तनि के वृन्द ॥
पूर्व रीति सौ प्रभु गमन आगें कीनौ जोइ । जियड नरसिंह क्षेत्र कौं गये कितिक दिन सोइ ॥
किय नृसिंह लखि दंडवत स्तुति श्रीप्रभु जूआहि । गीत नृत्य वहु स्तुति करी प्रेम विवसह्वै ताहि ॥
श्री नृसिंह नरसिंह जय जय नृसिंह भय भंग । जय जय प्रल्हादेश श्री वदनकंज के भृंग ॥

तथाहि श्री मद्भागवते—

उग्रोऽप्यनुग्र एवायं स्वभक्तानां नृकेशरी । केशरीव स्वपोतानामन्येषामुग्रविक्रमः ॥

नाना विधिके पद्य पढ़ि कीनी स्तुति इहि भाय । श्री नृसिंह सेवक दियौ स्रक प्रसाद प्रभु आय ॥
पूर्व रीति प्रभु कौं कियौ किहूं निमन्त्रण विप्र । वाही रीति तहां रहे गमन प्रात किय छिप्र ॥
पूर्व रीति किय वैष्णवजु सब नर गन प्रभु धीर । आये चलिकें कितक दिन श्री गोदावरि तीर ॥
लखि गोदावरि कौं भइ सुधि यमुना अभिराम । सुरत भयौ लखि तीर वन श्री वृन्दावन धाम ॥
केतिक छिन तिहिवन कियौ नृत्य गीत सुख सार । स्नान तहां कीनौ जु प्रभु ह्वै गोदावरि पार ॥
घाट छाडि जल के निकट केतक दूर जु आहि । कृष्ण नाम संकीर्त्तन जु वैठि करत तट ताहि ॥
तिही समें दोला चढें श्री रामानन्द राय । स्नान करन आये तहां वाजे वहुत वजाय ॥
वैधिक द्विज तिहि संगलै आये हैं अधिकाय । स्नानजु तर्पन विधि सहित निति सब यौ वनाय॥
एई रामानंद हैं जान्यौ प्रभु लखि ताहि । प्रभु कौ मन उठि धाय कै तिहि मिलिवे कौं आहि ॥
तऊ धैर्य करि कें रहे वैठि महाप्रभु चंद । लखि श्री पाद अपूरवहि आये रामानन्द ॥
रवि सत सम सोभा सरस अरुण वसन प्रभु आहि । देह सुवलित प्रकांडहै कमल सुलोचन ताहि॥
प्रभु कौं देखत तिहि मन हि चमत्कार भौ आहि । किये आयकें दंडवत नमस्कार तिन ताहि ॥
उठि कैं वोले महाप्रभु उठौ कृष्ण कहु कृष्ण । तिहिं आलिंगण करणकौं प्रभुकौं हियौ सतृष्ण ॥
तुम रामानँद राय हौ इमि तउ पूछ्यौ ताहि । वोले सो सोई जु हो दास सूद्र मद आहि ॥
उदय भयौ स्वाभाविकजु प्रेम दुहुनि कौ जोय । दोऊ आलिंगनहि करि परे धरणि मधि दोय ॥
स्तंभ स्वेद औ अस्रु है कंप पुलक वैवर्ण । सुनि यें दोऊनि के मुखनि गद्गद कृष्ण जु वर्ण ॥
विप्र गननि के मन भयौ चमत्कार लखि ताहि । वैदिक सव विप्रजु तहां करत विचार जु आहि ॥
यह संन्यासी तेज करि लखियतु ब्रह्म समान । क्यौं सूद्रहि आलिंग करि क्रंदन करत निदान ॥
महाराज पंडित महा यहू परम गंभीर । संन्यासी के परस सौं मत्त भयौ जु अधीर ॥
इहिविधि द्विजगन मनहि मन करत भावना जोय । देखि विजाती लोक प्रभु आछादन भौ सोय ॥
वैठे दोऊ स्वस्थ ह्वै तिही नदी तट आहि । महाप्रभू हसिकैं तवै कहन लगे यौं ताहि ॥
हम सौं भट्टाचार्य जू कहे जु तुव गुण आहि । तुम मिलिवे के हेत किय हमसौं जतन जु ताहि ॥
मिलन हेत तुव हम भयौ इहां आगमन सोय । भली भई अनयास ही पायौ दरसन जोय ॥
राय कहैं आचार्य मम करें भृत्य कौ ज्ञान । मम हित में जु परोच्छ हूं सावधान सुनिधान ॥
पाये हैं तिनकी कृपा तुम पद दरसन सोय । आजु सफल मेरौ भयौ मानस जन्म सु जोय ॥
सार्वभौम पर जो कृपा येई चिह्न जु ताहि । परस्यो भो अस्पृश्य तिंहिं कृपाधीन ह्वै आहि ॥
कहां स्वयं भगवान तुम नारायण हौ जोय । नृप सेवक विषई अधम सूद्र कहां हों सोय ॥
तुम कौं मेरौ देखिवौ वेद निषेधै आहि । परस कियौ मेरौ नही करी घृणा भय ताहि ॥
तुम हि करायौ तुम कृपा निंद्य कर्म है जोय । ह्यां मेरे निस्तार हित तुव आगमन जु सोय ॥
यहै महंत स्वभाव है दीन हि तारण हेत । नही प्रयोजन निज तऊ चलि तिंहि जांहि निकेत ॥

तथाहि श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे—

महद्विचलनं नृणां गृहिणां दीनचेतसां । निः श्रेयसाय भगवन् कल्पते नान्यथा क्वचित् ॥ ३ ॥

विप्रादिक जन सहस इक है जु हमारे संग । तुम दरसन सब कौं भयौ द्रवीभूत मन रंग ॥
सुनि ये सब के वदन मधि कृष्ण कृष्ण इह नाम । सब के अँग पुलकित नयन अश्रु धार अभिराम ॥
अप्राकृति तुव प्रकृति सो ईश्वर लक्षण जोय । नही संभवै जीव कें अप्राकृति गुण सोय ॥
महा भागवत मुख्य तुम प्रभु जू कहै जु ताय । तुव दरसन भौ सवन कौ द्रवीभूत मन आहि ॥
गाथा कहा पर की जु हौं मायावादी हंस । तुव परसैं हम हूं चहै कृष्ण प्रेम परसंस ॥
जानत यही कठोर मम हिय सोधन हित जोय । तुम सौं मिलिवे कौ कह्यौ सार्वभौम जू सोय ॥
दोऊ गुण दोऊनिके स्तुति जु करैं इंहि भाँइ । आनंदित मन दुहुनि के दरस परस पर पाइ ॥
तिही समें वैदिक जु इक वैष्णव ब्राह्मण जोइ । प्रभु कौ करि कैं दंडवत कियौ निमंत्रण सोइ ॥
न्यौतौ मानौ महाप्रभु जानि वैष्णव ताहि । रामानन्द जू सौं कहैं कछु मृदु हँसि कै आहि ॥
कृष्ण कथा तुव वदन तें सुनिवे कौ मन जोय । पांवहिगे हम फेरि कें तुम्हारौ दरसन सोय ॥
राय कहैं आये सु तुम पावर सुद्धि निमित्त । दरस मात्र ह्वै है नहीं शुद्ध दुष्ट मम चित्त ॥
पांच सात दिन रहि इहां सोधन करि हौ याहि । तव ही ह्वै है शुद्ध मम यहै दुष्ट मन आहि ॥
जदपि वियोग दुहूनि कौ सह्यौ न क्यौंहू जाय । तऊ दंडवत करि चले श्री रामानंद राय ॥
तिही विप्र के गेह में किय भीक्षा प्रभु आय । विवि उत्कंठा सांझ ह्वै लीनौ भान दुराय ॥
स्नान कृत्य करि महाप्रभु बैठे हैं भरि रंग । मिले राय जू आय कें एक भृत्य लै संग ॥
नमस्कार किय राय प्रभु आलिंगन किय ताय । कहैं जु दोऊ जन कथा बैठि निवास हि आय ॥
श्लोक पढ़ौ प्रभु जू कहैं निर्णय साध्य जु ताहि । राय कहैं निज धर्म किय यहै भक्ति हरि आहि ॥

तथाहि श्री विष्णुपुराणे—

वर्णाश्रमाचारवता पुरुषेण परः पुमान् । विष्णुराराध्यते पन्था नान्यत्तत्तोषकारणम् ॥ ४ ॥

कहैं जु प्रभु यह वाह्य है आगें कहौ विचार । राय कहैं हरि अर्पिये कर्म साध्य है सार ॥

तथाहिगीतायां—यत्करोषि यदश्नासि यज्जुहोसि ददासि यत् । यत्तपस्यसि कौन्तेय तत्कुरुष्व मदर्पणम् ॥५॥

वाह्य यहू प्रभु जु कहैं आगें कहौ विचार । राय कहै तजि कर्म सब भक्ति साध्य कौ सार ॥

तथाहि श्री मद्भागवते—

आज्ञायैवं गुणान्दोषान्मयादिष्टानपि स्वकाम् । धर्म्मान् सन्त्यज्य यः सर्व्वान् मां भजेत् स च सत्तमः ॥६॥

तथाहि श्रीगीतायां—

सर्वधर्म्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज । अहं त्वां सर्व्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ ७ ॥

वाह्य यहू प्रभु जू कहैं आगें कहौ जु ओरु। राय कहैं ज्ञानहि मिली भक्ति साध्य सिरमौर ॥

तथाहि तत्रैव—

ब्रह्मभूत: प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति। समः सर्व्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ८ ॥

यहू वाह्य प्रभु जू कहैं आगें कहौ विचार। ज्ञान अनावृत भक्ति जो राय कहैं तिही सार ॥

तथाहि श्री मद्भागवते—

ज्ञाने प्रयासमुदपास्य नमन्त एव जीवन्ति सन्मुखरितां भवदीयवार्त्तां।

स्थानस्थिताः श्रुतिगतां तनु वाङ्मनोभि र्ये प्रायशोऽजित जितोऽप्यसितैस्त्रिलोक्याम् ॥९॥

प्रभु जू कहै एहु जु है आगे कहौ जु और। राय कहै प्रेमा भक्ति है साध्य सार सब सोर ॥

तथाहि पद्यावल्यां—

नानोपचारकृतपूजनमार्त्तबन्धोः प्रेम्नैव भक्त हृदयं सुखविद्रुतं स्यात्।

यावत् क्षुदस्ति जठरे जरठा पिपासा तावत् सुखाय भवतो ननु भक्ष्यपेये ॥१०॥

तथाहि तत्रैव—

कृष्णभक्तिरसभाविता मतिः क्रीयतां यदि कुतोऽपि लभ्यते।

तत्र लौल्यमपि मूल्यमेकलं जन्मकोटिसुकृतै र्न लभ्यते ॥११॥

प्रभु जू कहैं यहू जु हैं आगें कहौ विचार। दास्य प्रेम राय जु कहै सर्व साध्य कौ सार ॥

तथाहि श्री मद्भागवते—

यन्नामश्रुति मात्रेण पुमान्भवति निर्म्मलः। तस्य तीर्थपदः किंवा दासानामवशिष्यते ॥१२॥

तथाहि यामुनमुनिविरचित स्तोत्ररत्ने—

भवन्तमेवानुचरन्निरन्तरः प्रशान्तनिःशेषमनोरथान्तरः।

कदाहमैकान्तिकनित्यकिंकरः प्रहर्षयिष्यामि सनाथ जीवितं ॥१३॥

प्रभु जू कहैं यहू जु हैं कछु है अरु निरधार। सख्य प्रेम राय जु कहैं सर्व साध्य कौ सार ॥

तथाहि श्री मद्भागवते दशमस्कन्धे—

इत्थं सतां ब्रह्मसुखानुभूत्या दास्यं गतानां परदैवतेन।

मायाश्रितानां नरदारकेण सार्द्धं विजह्रुः कृत पुण्यपुञ्जाः ॥१४॥

प्रभु जू कहैं यहू जु है आगे कहौ सु और। राय कहै वात्सल्य प्रिति सर्व्व साध्य को सार ॥

दशमस्कन्धे—

नन्दः किमकरोद्ब्रह्मन् श्रेय एवं महोदयं। यशोदा वा महाभागा पपौ यस्याः स्तनं हरिः ॥ १५ ॥

तथाहि तत्रैव—

नेमं विरिञ्चो न भवो न श्रीरप्यंगसंश्रया। प्रसादं लेभिरे गोपी यत्तत्प्रापविमुक्तिदात् ॥ १६ ॥

प्रभु जू कहैं उत्तम यहू आगें और विचार। कांत भाव राय जु कहैं सर्व साध्य कौ सार ॥

तथाहि तत्रैव—नायं श्रियोऽगं उ नितान्तरतेः प्रसादः,स्वर्योषितां नलिनगन्धरुचां कुतोऽन्याः ।
रासोत्सवेऽस्य भुजदण्डगृहीत कण्ठ लब्धाशिषां य उदगाद् व्रजसुन्दरीणां ॥ १७ ॥

तत्रैव—तासामाविरभू च्छौरिः स्मयमानमुखाम्बुजः । पीताम्बरधरः स्रग्वी साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥ १८ ॥

बहुत प्रकार उपाय है कृष्ण प्राप्ति कौ जोय । तारतम्य बहुते जु हैं कृष्ण प्राप्ति को सोय ॥
ऐसैं जिहि जोई जु रस सर्वोत्तम है सोय । किये विचार तटस्थ ह्वै तारतम्य हैं जोय ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—
यथोत्तरमसौ स्वादविशेषोल्लासमय्यपि । रति र्वासनया स्वाद्वी भासते कापि कस्यचित् ॥ १९ ॥

पूर्व पूर्व रस कौ जु गुण पर पर रस मधि होय । एक दोय यौं पांच लौ क्रम करि बाढ़ै सोय ॥
गुणाधिक्य करि बढ़तुहै प्रतिरस स्वाद उजास । सांतादिक रस गुनिनिकौ कांत भाव मधि वास ॥
जैंसै आकासादि गुण पर पर भूतहि होय । दोय तीन इहि क्रमजु बढ़ि पांच धरनि मधि सोय ॥
परिपूरण श्री कृष्ण की प्राप्ति इही रस होय । इहीं प्रेम के कृष्ण बस कहैं भागवत सोय ॥

तथाहि श्रीमद्भागवते—
मयि भक्ति र्हि भूतानाममृतत्वाय कल्पते । दिष्ट्या यदासीन्मत्स्नेहो भवतीनां मदापनः ॥ २० ॥

सुदृढ़ प्रतिज्ञा कृष्ण की सर्व काल यह आहि । जो जैसै कृष्णहि भजै कृष्ण भजै त्यौं ताहि ॥

तथाहि गीतायां—
ये यथा मां प्रपद्यन्ते तांस्तथैव भजाम्यहं ॥ २१ ॥

इही प्रेम अनुरूप जौ सकै न भजि कै सोय । याही ते है सो ऋणी कहै भागवत जोय ॥

श्रीमद्भागवते—
न पारयेऽहं निरवद्यसंयुजां स्वसाधुकृत्यं विविधायुषापि वः ।
या मा भजन् दुर्ज्जयगेहशृंखलाः संवृश्च्य तद्वः प्रतियातु साधुना ॥२२॥

जदपि कृष्ण सौंदर्य हैं सबै माधुरी धूर्य्य । वृजदेवीनु के सँग तिहि बाढ़ै अति माधूर्य्य ॥

तथाहि तत्रैव—
तत्राति शुशुभे ताभि र्भगवान् देवकीसुतः । मध्ये मणीनां हैमानां महामारकतो यथा ॥ २३ ॥

साध्यावधि निःश्रेय है कहैं महाप्रभु सोइ । कहौ कृपा करि राय तुम जौं कछु आगें होय ॥
राय कहैं यातें परें पूछैं इमि जन जोय । जान्यौं नहीं इतिक दिननि है त्रिभुवन में सोइ ॥
राधा प्रेम इही जु मधि साध्य सिरोमनि आहि । कही जु सब ही शास्त्र मधि महिमा अद्भुत याहि॥

तथाहि पद्मपुराणे—
यथा राधा प्रिया विष्णोस्तस्याः कुण्डं प्रिय तथा । सर्व्वगोपीषु सैवैका विष्णोरत्यन्तवल्लभा ॥२४॥

कहैं जु प्रभु आगें कहौ सुनत महासुख होय। सुधानदी अद्भुत वहै तुव श्री मुख तें जोय ॥
चोरी करि श्री कृष्ण जू श्री राधा लै सोय। गोपीगण के डर जु करि गये इकौसे जोय ॥

तथाहि दशमे—

अनया राधितो नूनं भगवान् हरिरीश्वरः। यन्नो विहाय गोविन्दः प्रीतो यामनयद्रहः ॥ २५ ॥

जहां जु प्रीतम के हियें अन्यापेक्षा होइ। स्फुरै नही तहां प्रेम की अति सुगाढ़ता जोइ ॥
राधा हित गोपीन कौ करै प्रगट जो त्याग। राधा मधि तब कृष्ण कौ जातैं दृढ़ अनुराग ॥
राय कहैं सोऊ सुनौ प्रेमहि महिमा ताहि। उपमा त्रिभुवन में नहीं राधा प्रेमहि आहि ॥
गोपी गण मधि रास सुख नृत्य मंडली त्यागि। राधा हित बन बन फिरे करि विलाप दुख पागि ॥

तथाहि गीतगोविन्दे—

कंसारिरपि संसारवासनाबद्धश्रृंखलां। राधामाधाय हृदये तत्याज व्रजसुन्दरीः ॥

तथाहि तत्रैव—

इतस्ततस्तामनुसृत्य राधिकामनगंबाणव्रणखिन्न मानसः।
कृतानुतापः स कलिन्दनन्दिनीतटान्तकुञ्जे विषसाद माधवः ॥

अर्थ सुइनि विवि पद्य कौ जानै किये विचार। किये विचार उठे मनौं अमृतखानि रस सार ॥
सत कोटिक गोपीन सँग करैं जु रास विलास। तिनि मधि एक जु मूर्त्ति तिहिं रहै जु राधा पास ॥
साधारण प्रेमा सु लखि सब ठां समता जोय। कुटिल प्रेम राधा जु कौ भयौ वक्र अति सोय ॥

तथाहि उज्वलनीलमणौ—

अहेरिवगतिः प्रेम्णः स्वभावकुटिला भवेत्। अतोहेतोरहेतोश्च यूनोर्मान उदञ्चति ॥

गई रास तजि क्रोध करि प्रेम मान धरि हीय। तिन्हैं न देख्यौ ह्यां भये हरि अति व्याकुल जीय ॥
सम्पक सार सुवासना रास जु इच्छा ताहि। एक राधिका श्रृङ्खला तिही चाहि की आहि ॥
तिन विन लीला रास जो भावै नहि चित चेत। रास मंडली तजि गये राधा ढूढ़न हेत ॥
जहां तहां कीनो भ्रमण कहूँ न पायौ ताहि। मदन बान करि खीन ह्वै करै विषाद जु आहि ॥
शत कोटिक गोपीन करि सांत होय नहि काम। याही तें अनुमानियै राधागुण अति बाम ॥
कहैं जु प्रभु याही लियें हौं आयौ तुम पास। सबै वस्तु कौ तत्व जो सब जान्यौ अनयास ॥
अब ही जान्यौ है हमनि सेव्य साध्य निरधार। औ आगै कछु सुनन कौ मम हिय चाह अपार ॥
कहौ स्वरूप जु कृष्ण कौ औ राधाहि स्वरूप। कौन तत्व रस प्रेम कौ कौंन तत्व है रूप ॥
एई तत्व कृपाहिं करि कहौ जु हम सौ आहि। तुम विन कोऊ कहन कौं नहि समर्थ है याहि ॥
राय कहै जाने जु हम रंचक हू नहि याहि। जो जू तुम कहवाय हौ कहैं वाक मम ताहि ॥

तुम सिच्छा करि हौं पढ़ौं ज्यों सुक पाठ जु होय । ईश्वर तुम साक्षात हौ लहै नाव्य तुव कोय ॥
हृदय प्रेरि करि जीभ ह्वै वचन कहावौ जोय । कहियै कहा भलौ बुरौ कछु नहि जानत सोय ॥
हम संन्यासी प्रभु कहै मायावाद प्रधान । मायावाद वहै न हम भक्ति तत्व कौ ज्ञान ॥
सार्वभौम के संग मम मन निर्मल भो आहि । कृष्ण भक्ति तत्वहि कहौ यौं हम पूछ्यौ ताहि ॥
कृष्ण कथा जानें न हम कह्यौ तिन्हौ जोय । रामानँद जानैं सबै इहां नाहि है सोय ॥
तुम महिमा सुनि कै जु हौं तुम पै आयौ जोइ । स्तुति मेरी तुम करौ श्रीपाद जानि कै सोइ ॥
कहा विप्र दंडी कहा सूद्र होहु किन जोय । जोई कृष्ण जु तत्व कौ ज्ञाता है गुरु सोय ॥
संन्यासी करि कें जु मम करौ न वंचन सोइ । राधा कृष्ण जु तत्व करि पूर्ण करौ हिय जोइ ॥
यदपि राय प्रेमी वडे महा भागवत आहि । सकै न माया कृष्ण की आवृत करि मन ताहि ॥
तऊ जु इच्छा कृष्ण की परम प्रवल है जोय । जानन हित मन राय कौ चंचल भयौ जु सोय ॥
राय कहैं हम नट जु हैं सूत्रधार तुम सांच । ज्यौं जाकौ जु नचाय हौं सो नचि है तिहि नाच॥
यहै जीय मम वीन तुम वीणाधारी याहि । जोई कछु तुम हृदय मधि उठि है गाय ज ताहि ॥
परम ईश्वर जु कृष्ण हैं आप स्वयं भगवान । अवतारी हैं सवनि के औ कारण जु प्रधान ॥
श्री वैकुंठ अनंत अरु जे अनन्त अवतार । औ अनंत ब्रह्मांड इन सब के हैं आधार ॥
सत चित आनँद तनु सु हैं श्री वृजराज कुमार । सर्वैश्वर्य सु शक्ति सब पूरण सब रससार ।

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः । अनादिरादिर्गोविंदः सर्व्वकारणकारणम् ॥२६॥

वृन्दावन के नवमदन अप्राकृत जो आहि । स्मरण गायत्री वीज तिहि है जु उपासन ताहि ॥
पुरुष और युवती तथा थावर जंगम जोइ । सव चित्ताकर्षक प्रगट मन्मथमन्मथ सोइ ॥

तथाहि श्री भागवते—साक्षान्मन्मथमन्मथः ॥३०॥

नाना भक्तनि रस अमृत नाना विधि है जोय । तिन सव ही रस अमृत के विषय आश्रय सोय॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

अखिलरसामृतमूर्त्तिः प्रसृमररुचिरुद्धतारकापालिः । कलितश्यामाललितो राधाप्रेयान् विधुर्जयति ॥३१॥

है रस राज शृँगार मय मूरति धरै जु सोय । याही तें सब चित हरें आपुन हूनौं जोय ॥

तथाहि गीत गोविंदे—शृंगारः सखि मूर्त्तिमानिव मधौ मुग्धो हरिः क्रीडति ॥३२॥

लक्ष्मीकांत हि आदि दै है अवतार जु जोय । तिन सब ही कौ मन हरै कह्यौ भागवत सोय ॥

तथाहि दशमे—

द्विजात्मजा मे युवयोर्दिदृक्षुणा मयोपनीता भुवि धर्म्मगुप्तये ।
कलावतीर्णाववनेर्भरासुरान् हत्वेह भूयस्तरयेतमन्ति मे ॥ ३३ ॥

विष्णुकांता आदि दै नारी गण है जोय। करैं जु निज माधुर्य करि आकर्षण सब सोय ॥

तथाहि तत्रैव—यद्वाञ्छया श्रीललनाचरत्तपो विहाय कामान् सुचिरं धृतव्रता ॥ ३४ ॥

हरे जु निज माधुर्य करि अपनों ही मन जोय। आलिंगन चाहै कियौ अपनौ आपुहि सोय ॥

तथाहिललितमाधवे—

अपरिकलितपूर्व्वः कश्चमत्कारकारी स्फुरति मम गरीयानेष माधुर्य्यपूरः।
अयमहमपि हन्त प्रेक्ष्य यं लुब्धचेताः सरभसमुपभोक्तुं कामये राधिकेव ॥३५॥

यही कह्यौ श्रीकृष्ण कौ करि संक्षेप स्वरूप। सुनौ कहैं संक्षेप करि राधा तत्व अनूप ॥
शक्ति अनंत जु कृष्ण की तिनमें तीनि प्रधान। चिच्छक्ति जु माया सकति जीव शक्ति इक जान॥
अंतरंग वहिरंग पुनि औ तटस्था सोइ। इन तीनन के कहत है तीन नाम ये जोइ ॥
अंतरंग जिहि नाम है सो है सक्ति स्वरूप। सब शक्तिन की मुकुटमनि जो है परम अनूप ॥

तथाहि विष्णुपुराणे

विष्णुशक्तिः परा प्रोक्ता क्षेत्रज्ञाख्या तथापरा। अविद्या कर्म्मसंज्ञान्या तृतीया शक्तिरीष्यते ॥३६॥

है स्वरूप श्री कृष्ण कौ सतचित आनंद जोय। है स्वरूप शक्ति हि जु के तीन रूप यौं सोय ॥
हर्ष अंस आल्हादिनी संधिनि है सत अंस। चित अंसे संवितु सु जिहि होय ज्ञान परसंस ॥

तथाहि तत्रैव—

ल्हादिनी सन्धिनी सम्वित् त्वय्येका सर्व्वसंश्रये। ल्हाद तापकरी मिश्रा त्वयि नो गुणवर्ज्जिते ॥३७॥

आल्हादै श्री कृष्ण कौं नाम ल्हादिनी ताहि। आस्वादै सुख आप हरि तिंही सक्ति है आहि ॥
सुख स्वरूप श्री कृष्ण जू आस्वादै सुख ताहि। भक्तनि के सुख दैन कौं ल्हादिनि कारण आहि॥
ल्हादिनि कौ सारांस जो प्रेम नाम तिहि जान। आनँद चिन्मय रस जु है प्रेमा कौ आख्यान ॥
परम सार जो प्रेम कौ महाभाव तिहि जान। श्री राधा सोई महाभाव रूप गुण खान ॥

तथाहि उज्वलनीलमणौ—

तयोरप्युभयोर्म्मध्ये राधिका सर्व्वथाधिका। महाभावस्वरूपेयं गुणैरति वरीयसी ॥ ३८ ॥

प्रेमा कौ जु स्वरूप वपु प्रेम विभावित ताहि। कृष्णप्रेयसी श्रेष्ठ सब जगत विदित है आहि ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

आनन्दचिन्मयरस प्रतिभाविताभिस्ताभि र्य एव निजरूपतया कलाभिः।
गोलक एव निवसत्यखिलात्मभूतो गोविन्दमादिपुरुषं तमहं भजामि ॥ ३९ ॥

महाभाव सोई जु है चिंतामणि गण राज। पूरण ईछा कृष्ण की करें यही जिहि काज ॥
महाभाव चिंतामणि सु राधा कौ जु स्वरूप। ललितादिक सहचरी तिहि कायव्यूह जु रूप ॥
कृष्ण नेह राधा जु प्रति उबटन अंग सु बास। प्रति सुगंध तातें जु वपु उज्वल किरण प्रकास ॥

कारुण्यामृत धार कौं स्नान प्रथम किय आहि। तारुण्यामृत नदी कौं स्नान द्वितीय निज ताहि॥
लावण्यामृत पूर मधि ताऊ पर सुस्नान। निज लज्या स्यामहि करण पट सारी परिधान॥
औ अनुराग जु कृष्ण कौं अरुण वसन विवि सोइ। प्रणयमान उर कंचु की आछादन है जोइ॥
सौन्दर्य सुकुंकुम सखी प्रणय सु चंदन आहि। स्मित सोभा व कपूर त्रय अंग विलेपन ताहि॥
उज्ज्वल रस श्री कृष्णकौं मृग मद भरहै सोय। सबै विचित्रित अंग तिहिं तिही सु मृग मद होय॥
वाम्यमान प्रच्छन्न ह्वै केश पास विन्यास। धीराधीरात्महि जु गुण वहै अंग पटवास॥
रागहि वीरा रंग करि अधर मधुर अति लाल। प्रेम कुटिलता नेत्र युग अंजन परम रसाल॥

कवित्त—

सुदीप्त सात्विक भाव हर्षादि संचारी येई सब भाव अंग सबै भूषण उजास है।
किलिकिंचितादि भाव विंशति भूषित सदा गुण गन फूल माला अंगनि प्रकास है।
अलक तिलक चारु उज्वल सौभाग्य प्रेमवैचित्य रत्न तरल हिये छबि रास है।
मध्यावय थितिसोई सखी स्कंध करन्यास कृष्णलीला मनोवृत्ति आली आसपास है॥

सौरभ निवास निज अंगनि सौभाग्य गर्व पलका विराजि सदा चाहै कृष्ण संग है।
कृष्णनाम गुण जस तेई श्रवणावतंस कृष्ण नाम गुण यश वचन तरंग है।
कृष्ण कौं करावै स्याम रस मधु पान सदा पूर्ण करै कृष्ण के जु सबै काम रंग है।
कृष्ण कौं विशुद्ध प्रेम रतन तिहिं आकर है अनुप गुणगण पूर्ण सर्व अंग है॥

तथाहि गोविन्दलीलामृते—

का कृष्णस्य प्रणयजनिभूः श्रीमती राधिकैका, कास्य प्रेयस्यनुपमगुणा राधिकैका न चान्या॥
जैह्मयं केशे दृशि तरलता निष्ठुरत्वं कुचेऽस्या, वाञ्छापूर्त्यै प्रभवति हरे राधिकैका न चान्या॥

जिनके गुण सौभाग्यकौं सत्यभामा हिय काम। जिनपै कला बिलास सब सीखैं व्रज की वाम॥
वांछै श्री गिरिजा गुणहि सौन्दर्यादिक जाहि। वांछै सदा अरुंधती धर्म पतिव्रत ताहि॥
जिनके सद्गुण गुणनि कौं कृष्ण न पावै पार। कैसैं तिहि गुणगणि सकैं जीव तुच्छ अतिसार॥
बोले प्रभु जान्यौ जु हरि राधा प्रेमहि तत्व। चाहैं सुन्यौ दुहुनि कौं है जु विलास महत्त्व॥
राय कहैं श्री कृष्ण जू धीर ललित हैं आहि। क्रीडा काम निरंतर हि यहै चरित है ताहि॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

विदग्धो नवतारुण्यः परिहासविशारदः। निश्चिन्तो धीरललितः स्यात्प्रायः प्रेयसीवशः॥

कुंजनि क्रीड़ा रेन दिन श्री राधा के संग। सफल करैं कैशोर वय विविध विलासनि रंग॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

वाचा सूचितशर्व्वरी रतिकला प्रागल्भ्यया राधिकां, व्रीड़ाकुञ्चितलोचनां विरचयन्नग्रे सखीनामसौ ॥
तद्वक्षोरुहचित्रकेलिमकरीपाण्डित्यपारं गतः, कैशोरं सफली करोति कलयन् कुञ्जे विहारं हरिः ॥

कहैं महा प्रभु है यही आगें कहौ जु सोय । राय कहैं याते परें मम बुधि गति नहि जोय ॥
अरु है प्रेम बिलास कौ इक विवर्त्त जो आहि । हर्ष होय के होय नहि तुम्हरें सुनें जु ताहि ॥
ऐसें कहि अपनौ कियौ गायौ इक पद जोय । प्रभु निज कर तिहि मुख ढकौ प्रेमावेशित होय ॥

प्रथमहि राग भयौ दृग सेन ।
　　सो अनुदिन वाढ्यौ री सजनी अवधि न गो दुख दैन ॥
सो न रमन अरु हम नहि रमनी दुहुँ मन मनसिज पीस्यौ आहि ।
　　हे सखी ये सब प्रेम कहानी भूले हरि अब कहियौ ताहि ॥
नही जतन कीनौ दूती कौ नहि जान्यौ अरु कोय ।
　　यहूं मिलन मध्यस्त भयौ इक पंच बाण ही सोय ॥
तुहूँ मिली दूती अब जब तिन्हौं तजी हियें तैं प्रीति ।
　　उत्तम पुरुष प्रेम की सजनी है कहा ऐसी रीति ॥

तथाहि उज्ज्वल नीलमणौ—

राधाया भवतश्च चित्तजतुनी स्वेदैर्विलाप्य क्रमाद्, युञ्जन्नद्रिनिकुञ्जकुञ्जरपते निर्धूतभेद भ्रमं ।
चित्राय स्वयमन्वरञ्जयदिह ब्रह्माण्डहर्म्योदरे, भूयोभिर्नवरागहिंगुलभरैः शृंगारकारुः कृती ॥

साध्य वस्तुकौ अवधि यह है प्रभु कहैं जु आहि ।, जान्यौ हमतुम कृपा करि निहिचैं करि कैं ताहि ॥
साध्य वस्तु साधन विना नाहिन पावै कोय । इहि पैबै जु उपाय तुम करौ कृपा करि जोय ॥
राय कहैं जु कहा यहौ कहि हैं बाणी सोय । कहिये कहायहै जु हम जानत नहि कछु जोय ॥
ऐसौ धीर महा बड़ौ त्रिभुवन में है कोय । तुम माया के नाट्य मधि होइ न चंचल जोय ॥
मेरे मुख वक्ता जु तुम तुम ही श्रोता जोय । साधन की जु सुनौ कथा अति रहस्य है सोय ॥
लीला राधाकृष्ण की अति निगूढ तर सोय । वात्सल्यादिक भाव कहि नहि गोचर है जोय ॥
एक सखीगण कौ जु है सब में ह्यां अधिकार । होत सखी ही तें जु इह लीला कौ जु विस्तार ॥
एक सखीगण बिन जु यह लीला पुष्ट न होय । विस्तारैं लीला सखी आस्वादैं ऊ सोय ॥
तिहि लिला मधि सखी बिन नही अन्य गति जोय । तिनहीकी अनुगति करैं सखी भाव जो होय॥
दंपति सेवा कुंज की साध्य पाय है सोय । पैवे कौ तिहि साध्य के नहि उपाय अरु कोय ॥

तथाहि गोविन्दलीलामृते—

विभुरपि सुखरूपः स्वप्रकाशोऽपि भावः, क्षणमपि नहि राधाकृष्णयो र्या ऋते स्वाः ।
प्रवहति रसपुष्टिं चिद्विभूती र्विवेश, श्रयति न पदमासां कः सखीनां रसज्ञः ॥

एक स्वभाव सखीनकौ अकथ कथा तिहि आहि । निज लीला श्रीकृष्ण सँग सखि मन चहै न ताहि ॥
करवावें जो कृष्ण संग राधा लीला आहि । निज लीला हू ते लहै कोटि गुणो सुख ताहि ॥
कल्पलता हरि प्रेम की राधा कौ जु स्वरूप । सखि गण तिहि पल्लव सुवन ऐहैं पत्र अनूप ॥
लीलामृत करि जब तिन्हैं सीचै लता जु सोय । निज सींचन हू ते तिन्हैं कोटि गुणो सुख होय ॥

तथाहि तत्रैव—

सख्यः श्री राधिकाया व्रजकुमुदविधोर्ल्हादिनी नाम शक्तेः ।
सारांशप्रेमवल्ल्याः किसलयदल पुष्पादितुल्याः स्वतुल्याः ।
सिक्तायां कृष्णलीलामृतरसनिचयैरुल्लसन्त्याममुष्यां
जातोल्लासाः स्वसेकाच्छतगुणमधिकं सन्ति यत्तन्न चित्रम् ॥

जदपि सखिन कौं कृष्ण के संगम मधि नहिं रंग । तऊ जतन करि राधिका करवावै तिंहिं संग ॥
हरि हि प्रेरि नाना छलहि करवावै तिहि संग । होय जु निज हरी सँगतें कोटि कोटि सुख रंग ॥
सुद्ध प्रेम करि परसपर करैं जु रस कौ पुष्ट । तिन सबके प्रेमहि लखि जु कृष्ण होय अति तुष्ट॥
सहज प्रेम गोपीनकौ है नहि प्राकृत काम । काम क्रिया सम ताहि करि कहैं काम तिहि नाम ॥

तथाहि गोतमी तन्त्रे—

प्रेमैव गोपरामाणां काम इत्यगमत्प्रथां । इत्युद्धवादयोऽप्येतं वाञ्छन्ति भगवत्प्रियाः ॥

तातपर्य है काम कौ निज इंद्रिय सुख हेत । अभिप्राय कृष्ण सुख कौ गोपिन भाव अहेत ॥
निज इंद्रिय सुख चाह नहि गोपिनकौ निरधार । श्री कृष्ण हि सुख देन हित करेंजु संग विहार ॥

तथाहि दशमे—

यत्ते सुजात चरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधिमहि कर्कशेषु ।
तेनाटवीमटसि तद्व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषांनः ॥

लोभ जु ताही गोपिका भावामृत कौं जाहि । वेद धर्म सब छाडि सो कृष्ण हि भजि है आहि ॥
रागानुगा जु मार्ग करि तिन्है भजै जन जोइ । श्री व्रजराज कुवार कौं व्रज में पैहै सोय ॥
भजै सु जो व्रजलोक कौ लैकैं कोऊ भाइ । व्रज में पावै कृष्ण सो भाव जोग्य बपु आइ ॥

तथाहि भागवते—

निभृतमरुन्मनोऽक्षदृढयोगयुजो हृदि यन्मुनय उपासते तदरयोऽपि ययुः स्मरणात् ।
स्त्रिय उरुगेन्द्रभोगभुजदण्डविषक्तधियो वयमपि ते समाः समदृशोऽङ्घ्रिसरोजसुधाः ॥४७॥

सम दृश सब्द कहैंजु तिहि भावजु अनुगत आहि । गोपीगण प्रापति कहै समा शब्द श्रुति ताहि ॥
अंघ्रि सरोज सुधा कहै कृष्ण संग आनन्द । विधि मारग पैये नहीं व्रज में श्री नँदनंद ॥

तथाहि तत्रैव दशमे—

नायं सुखापो भगवान् देहिनां गोपिकासुतः । ज्ञानिनाञ्चात्मभूतानां यथा भक्तिमतामिह ॥

यातें गोपीभाव कौं करि कैं अंगीकार। करैं चिंतवन रैंन दिन राधा कृष्ण विहार ॥
सिद्ध देह निज चिंत करि करें जु सेवन ताहि। सखी भाव करि पायहैं जुगल चरण सो आहि ॥
गोपिन की अनुगति विना करि जु ईशता ज्ञान। भजन किये हुं ना मिले व्रजनृपसुत रस खानि॥
है लक्ष्मी दृष्टांत तिहि कियौ भजन बहु आहि। व्रज में श्री व्रजराज सुत पाये तऊ न ताहि ॥

तथाहि तत्रैव—

नायं श्रियोऽगउ नितान्तरतेः प्रसाद इति ॥

यह सुनि कें प्रभु जू कियौ तब आलिंगन ताहि। दोऊ जन हिय लागिकैं क्रंदन कियौ जु आहि ॥
इहि विधि प्रेमावेश करि करी विनीति जु राति। निज निज कारजकौं गये दोऊ भये प्रभाति ॥
विदा समैं प्रभु के चरण धरि कैं भरे जु भाय। कहैं जु करि कैं वीनती श्री रामानँद राय ॥
मो पैं करिवें कृपा प्रभु किय आगमन सोय। दिन दस रहि सोधौ जु मम यहै दुष्ट मन जोय ॥
तुम बिन जीव उधार हित और नहीं जग मांहि। कृष्ण प्रेम निज देंनकौं तुम विन और जु नाहि॥
गौर कहै आयौ जु हौं सुनि तुम गुण अभिराम। सुनि कें कृष्ण कथा मनहि सुद्ध करैवें काम ॥
जैसी तुव महिमा सुनी तैसी लखी जु आहि। जुगल प्रेम रस ज्ञान जो सीमा तुम हौ ताहि ॥
कहा कथा दस दूयौस की जब लगि जीवौं होय। तब लगि तुम्हरौ सँगहौं छाडि सकौं नहि सोय ॥
लीलाचल मधि रहेंगे हम तुम एकहि संग। करिहैं काल वितीति मिलि कृष्ण कथा के रंग ॥
ऐसैं कहि दोऊ गये अपने अपने काज। संध्या समय जु आय फिरि मिले राय सुख साज ॥
दोऊ वैठि एकांत मधि मिलि जु परस्पर सोइ। प्रश्नोत्तर वार्ता करैं अति आनन्दित होइ ॥
प्रभु पूछें उत्तर करैं रामनन्द जु आहि। कथा परस्पर रस मई इंही भांति निसि ताहि ॥
गौर कहैं विद्यानि मैं विद्या सार जु कोय। रांय कहैं हरि भक्ति विन विद्या और न होय ॥
कीरति गण मँधि जीवकी कौन कीर्त्ति वड आहि। कृष्णहि प्रेमी भक्त कहि यहै ख्यात है जाहि॥
सब सम्पति मधि जीव कैं संपति गणियै काहि। वडौ धनी कहियैं वही जुगल प्रेम धन जाहि ॥
दुःखनि मधि को दुःख है महा वडौ निरधार। कृष्ण भक्त के विरह विन और न दुःख अपार ॥
मुक्तिनि मधिको मुक्ति करि गणिए जनसो कोइ। जिहि प्रेमा श्रीकृष्ण मधि मुक्ति सिरोमणिसोइ ॥
सो०—गाननि मधि है गान कौन धर्म निजजीव कौ। सोई गान प्रधान प्रेम केलि जो युगल की॥
श्रेयनि के मधि जीव कौ कौन श्रेय है सार। कृष्न भक्त सँग विनु नहीं और श्रेय निरधार ॥
सुमिरन करैजु कौंन कौ अनुछिन जीव अजान। कृष्ण नाम लीलागणनि सुमिरण है जु प्रधान ॥
धेयनि मधि को जीव कौ हौ कर्त्तव्य जु ध्यान। जुगल चरण पंकजनिकौ ध्यान वही जु प्रधान॥
सब तजि कैं कर्त्तव्य है कहां जीव कौ वास। श्री व्रज वृन्दावन जहां है निज लीला रास ॥
सब ही श्रवनिनि के जु मधि मुख्य श्रवनहै कोय। प्रेम जु लीला जुगलकी कर्ण रसायन होय ॥
कहौ उपास्यनि मध्य है कौंन उपास्य प्रधान। नाम जु राधाकृष्ण जुग मुख्य उपास्य निदान ॥

मुक्ति भुक्ति चाहैं सु जे गतिजु दुहुनि की कोइ। थावर देव सु देह की ज्यौं जु अवस्थिति होइ॥
नीरस वायस चाखई ज्ञान नीव फल भाइ। प्रेम रसालहि मुकुल कौं रसिक सुकोकिल खाय॥
सुस्क ज्ञान आस्वादई ज्ञानी नर बिन भाग। कृष्ण जु प्रेमामृत पियें भाग्यवान करि राग॥
इंही भांति दोऊ जनहि कृष्नकथा आवेस। नृत्य गीत रोदन जु करि भयौ रेनि कौ सेस॥
अपने अपने काज हित दोऊ चले बिहान। संध्या सभय जु राय जू मिले आप दिन आन॥
प्रिय चर्चा कृष्णहि कथा करि कोऊ छिन आहि। प्रभु कें पद धरि राय जू करैं निवेदन ताहि॥
तत्व जु राधा कृष्ण कौ प्रेम तत्व कौ सार। रस तत्व जु लीलानिकौ तत्व अनेक अपार॥
इते तत्व मम हृदय मधि कीने तुमहि प्रकास। वेद पढ़ाये अजहि ज्यौं नारायण प्रभु तास॥
अतंरयामी ईस ज्यौं यहै रीति हैं तास। वाहिर कहैं न बस्तु कौं हिय मधि करै प्रकास॥

तथाहि भागवते—

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेस्वभिज्ञः स्वराट् तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।
तेजो वारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यंपरं धीमहि॥

बड़ौ एक अचिरज भयौ मेरे हिय मधि आहि। कहौ कृपा करि कैं जु तुम मोसौं निहचैं आहि॥
पहिलैं देख्यौ प्रभु तुमैं सन्यासी के रूप। अब तुम कौं देख्यौ जु हौं स्याम गोप के रूप॥
तुम सन मुख लखियै जु इक सुवरन प्रतिमा आहि। तुम स्वरूप महिमा ढकी गौर कांति करि ताहि॥
वदन सु वंसी मात्र इक लखियै तिनकौं आहि। चंचल नाना भाव करि कमल नयन पुनि ताहि॥
इही भांति तुम कौं निरखि चमत्कार भौ आहि। कपट छाडि प्रभू जु कहौ जो है कारण याहि॥
कहैं जु प्रभु तुव कृष्ण मधि गाढ़सु प्रेमा आहि। यहै सुभाव सु प्रेम कौं जानौं निहचैं ताहि॥
महाभागवत ज्यौं लखैं थावर जंगम मांहि। इष्ट देव अपनौ फुरै सब ठां ताकौ आहि॥

तथाहि तत्रैव—

सर्वभूतेषु य : पश्येद् भगवद्भाव मात्मनः। भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः॥

तथाहि तत्रैवदशमे—

वनलतास्तरव आत्मनि विष्णुं व्यञ्जयन्त्य इव पुष्पफलाढ्या :।
प्रणतभारविटपा मधुधाराः प्रेमहृष्टतनवो ववृषुः स्म॥

श्रीयुत राधाकृष्ण मधि महाप्रेम तुव जोइ। राधकृष्ण फुरै तुमैं देखौ जोई सोइ॥
राय कहै प्रभु तजौ तुम टारी टोरी याहि। मम आगे निज रूप की करौ न चोरी आहि॥
श्री राधा कौ भाव द्युति करि कें अंगीकार। निज रस के आस्वाद हित कीनौ है अवतार॥
निज निगूढ़ ह्वै कार्य तुव प्रेमास्वादन जोय। अनुसंगिक सब प्रेम मय कीनौ त्रिभुवन सोय॥
प्रभु आपुन आये जु तुम मम करिवे उद्धार। करौ कपट अब कौन यह है तुम्हरौ व्यहार॥
तिन्है दिखायौ तबहि प्रभु हसि अपनौ जु स्वरूप। महाभाव रसराज विवि मिलि कैं एकहि रूप॥

भये सु आनँद मूरछित लखि रामानँद जोय। सकै न धरि वै देह कौं परे भूमि मधि सोय ॥
प्रभु तिनकौं करसौं परसि कीनौं चेतन आहि। तब संन्यासी वेष लखि विस्मित भौ मन ताहि ॥
आस्वासन प्रभु जू कियौ करि आलिंगन ताहि। तुम विन कोऊ जन नही देखै रूपहि याहि ॥
लीला रस कौ तत्व मम तुव गोचर सब जोय। याही तें यह रूप हम तुम्हैं दिखायौ सोय ॥
राधा अंगस्पर्श मम गौर देह नहि जोय। तेऊ ब्रज नृप सुत विना नहि देखैं जन कोय ॥
भावित करि तिहि भाव कौं हौं आत्मा मन जोय। करौं कृष्ण माधुर्य्यरस तब आस्वादन सोय ॥
तुम सौं नहि कछु ही दुरचौ है जु हमारौ कर्म। कियौ गोप्य हूँ प्रेम वल जानत तुव सब मर्म ॥
यहै राखियौ गुप्त करि कीजौ कहुँ न प्रकास। हम बौरनि की क्रिया कौं करैं लोक उपहास ॥
हम इक बौरा और तुम दूजौं बौरा जोय। याही ते सम तूलता है हम सौं तुव सोय ॥
इंही भांति रजनी जु दस श्री रामानँद संग। सुख सौं करी वितीति प्रभु कृष्ण कथा के रंग ॥
अति निगूट ब्रज कौ जु रस लीला कौ जु विचार। किय अनेक ते कौं तऊ पायौ नही जु पार ॥
तांम्र कांस्य रु रजत रतन चिंतामणि सुख दानि। कोऊ जन जैसैं कहूं गडी लहै इक खानि ॥
क्रम करि खोदत ज्यौं लहै उत्तम वस्तु हि जोय। तैसैं प्रश्नोत्तर कियौ प्रभु रामानँद सोय ॥
राय पास तें और दिन विदा जु मागी आहि। विदा समै प्रभु जू यहै आज्ञा दीनी ताहि ॥
विषय छाडि कैं तुम चलौ श्री लीलाचल ताहि। हम तीरथ करिकें तहां वेगहि ऐहैं आहि ॥
दोऊ जन लीलाचलहि रहि हैं एक हि संग। सुख सौं समैं विताय हैं कृष्ण कथा के रंग ॥
एतक कहि रामानँदहि करि आलिंगन आहि। कियौ गमन प्रभु जू तबै घर पठाय कैं ताहि ॥
प्रात समें उठि कें जु प्रभु लखि कैं श्री हनुमान। नमस्कार करि कें तिन्है दक्षिण कियौ प्रयाण ॥
नाना मत जन जन बसैं विद्यापुर मधि जोय। प्रभु दरसन भौ वैष्णवनि निज निज मत जिहि सोय ॥
विह्वल भौ प्रभु के विरह श्री रामानंद जोय। रहे जु प्रभु के ध्यान मधि सकल विषय तजि सोय ॥
मिलनजु रामानन्दकौ कह्यौ कछु करि सार। सहस वदन कहि सके नहि करिकैं तिहि विस्तार ॥
चरित महाप्रभु सहजहि घन पय पूर सु आहि। भाग्यवान सोई करें जो आस्वादन ताहि ॥
श्रवण द्वार ह्वै पियें जो एक बार जिहि आहि। श्रवणजु ताके लोभ करि छाडिसकै नहि ताहि ॥
सब तत्वनि कौ ज्ञान सो याके सुने जु होय। चरण कमल मधि जुगलकें प्रेम भक्ति तिहि होय ॥
गूढ़ तत्व चैतन्य कौ यातैं जानै जोय। करि विश्वास सुनौ करै नही तर्क हिय होय ॥
लीला परम निगूढ़ यह है जु अलौकिक सोय। यह विश्वास हि पाइयै दूर तर्क करि जोय ॥
नित्यानंद चैतन्य जू श्री अद्वैत जु आहि। जाकौ ए सर्वस्व है इह धन मिलै जु ताहि ॥
श्री रामानँद राय कौं कोटि प्रणति मम आहि। रस कौ किय विस्तार प्रभु बदन कमल करि ताहि ॥
दामोदर जु स्वरूप के पत्रन के अनुसार। लीला रामानँद मिलन ताकौ कियौ प्रचार ॥

मुक्ति भुक्ति चाहैं सु जे गतिजु दुहुनि की कोइ। थावर देव सु देह की ज्यौं जु अवस्थिति होइ॥
नीरस वायस चाखई ज्ञान नीव फल भाइ। प्रेम रसालहि मुकुल कौं रसिक सुकोकिल खाय॥
सुस्क ज्ञान आस्वादई ज्ञानी नर विन भाग। कृष्ण जु प्रेमामृत पियें भाग्यवान करि राग॥
इंही भांति दोऊ जनहि कृष्नकथा आवेस। नृत्य गीत रोदन जु करि भयौ रेनि कौ सेस॥
अपने अपने काज हित दोऊ चले विहान। संध्या समय जु राय जू मिले आप दिन आन॥
प्रिय चर्चा कृष्णहि कथा करि कोऊ छिन आहि। प्रभु के पद धरि राय जू करैं निवेदन ताहि॥
तत्व जु राधा कृष्ण कौ प्रेम तत्व कौ सार। रस तत्व जु लीलानिकौ तत्व अनेक अपार॥
इते तत्व मम हृदय मधि कीने तुमहि प्रकास। वेद पढ़ाये अजहि ज्यौं नारायण प्रभु तास॥
अतंरयामी ईस ज्यौं यहै रीति हैं तास। बाहिर कहैं न वस्तु कौं हिय मधि करै प्रकास॥

तथाहि भागवते—

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेस्वभिज्ञः स्वराट् तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः।
तेजो वारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यंपरं धीमहि॥

बडौ एक अचिरज भयौ मेरे हिय मधि आहि। कहौ कृपा करि कैं जु तुम मोसौं निहचैं आहि॥
पहिलैं देख्यौ प्रभु तुमैं सन्यासी के रूप। अब तुम कौं देख्यौ जु हौं स्याम गोप के रूप॥
तुम सन मुख लखियै जु इक सुवरन प्रतिमा आहि। तुम स्वरूप महिमा ढकी गौर कांति करि ताहि॥
वदन सु वंसी मात्र इक लखियै तिनकौं आहिं। चंचल नाना भाव करि कमल नयन पुनि ताहि॥
इही भांति तुम कौं निरखि चमत्कार भौ आहि। कपट छाडि प्रभू जु कहौ जो है कारण याहि॥
कहैं जु प्रभु तुव कृष्ण मधि गाढ़सु प्रेमा आहि। यहै सुभाव सु प्रेम कौं जानौं निहचैं ताहि॥
महाभागवत ज्यौं लखैं थावर जंगम मांहि। इष्ट देव अपनौ फुरै सब ठां ताकौ आहि॥

तथाहि तत्रैव—

सर्वभूतेषु य : पश्येद् भगवद्भाव मात्मनः। भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः॥

तथाहि तत्रैवदशमे—

वनलतास्तरव आत्मनि विष्णुं व्यञ्जयन्त्य इव पुष्पफलाढ्या :।
प्रणतभारविटपा मधुधाराः प्रेमहृष्टतनवो ववृषुः स्म॥

श्रीयुत राधाकृष्ण मधि महाप्रेम तुव जोइ। राधकृष्ण फुरै तुमैं देखौ जोई सोइ॥
राय कहै प्रभु तजौ तुम टारी टोरी याहि। मम आगे निज रूप की करौ न चोरी आहि॥
श्री राधा कौ भाव द्युति करि कें अंगीकार। निज रस के आस्वाद हित कीनौ है अवतार॥
निज निगूढ़ ह्वै कार्य तुव प्रेमास्वादन जोय। अनुसंगिक सब प्रेम मय कीनौ त्रिभुवन सोय॥
प्रभु आपुन आये जु तुम मम करिवे उद्धार। करौ कपट अब कौन यह है तुम्हरौ व्यहार॥
तिन्है दिखायौ तबहि प्रभु हसि अपनौ जु स्वरूप। महाभाव रसराज विवि मिलि कैं एकहि रूप॥

भये सु आनँद मूरछित लखि रामानँद जोय। सकै न धरि वे देह कौं परे भूमि मधि सोय॥
प्रभु तिनकौं करसौं परसि कीनौं चेतन आहि। तव संन्यासी वेष लखि विस्मित भौ मन ताहि॥
आस्वासन प्रभु जू कियौ करि आलिंगन ताहि। तुम विन कोऊ जन नही देखै रूपहि याहि॥
लीला रस कौ तत्व मम तुव गोचर सव जोय। याही तें यह रूप हम तुम्हैं दिखायौ सोय॥
राधा अंगस्पर्श मम गौर देह नहि जोय। तेऊ व्रज नृप सुत विना नहि देखैं जन कोय॥
भावित करि तिहि भाव कौं हौं आत्मा मन जोय। करौं कृष्ण माधुर्य्यरस तव आस्वादन सोय॥
तुम सौं नहि कछु ही दुर्यौ है जु हमारौ कर्म। कियौ गोप्य हूँ प्रेम वल जानत तुव सव मर्म॥
यहै राखियौ गुप्त करि कीजौ कहुँ न प्रकास। हम वौरनि की क्रिया कौं करैं लोक उपहास॥
हम इक वौरा और तुम दूजौ वौरा जोय। याही ते सम तूलता है हम सौं तुव सोय॥
इंही भांति रजनी जु दस श्री रामानँद संग। सुख सौं करी वितीति प्रभु कृष्ण कथा के रंग॥
अति निगूट व्रज कौ जु रस लीला कौ जु विचार। किय अनेक ते कौं तऊ पायौ नहीं जु पार॥
तांम्र कांस्य रु रजत रतन चिंतामणि सुख दानि। कोऊ जन जैसैं कहूं गडी लहै इक खानि॥
क्रम करि खोदत ज्यौं लहै उत्तम वस्तु हि जोय। तैसैं प्रश्नोत्तर कियौ प्रभु रामानँद सोय॥
राय पास तें और दिन विदा जु मागी आहि। विदा समै प्रभु जू यहै आज्ञा दीनी ताहि॥
विषय छाडि कैं तुम चलौ श्री लीलाचल ताहि। हम तीरथ करिकैं तहां वेगहि ऐहैं आहि॥
दोऊ जन लीलाचलहि रहि हैं एक हि संग। सुख सौं समैं विताय हैं कृष्ण कथा के रंग॥
एतक कहि रामानँदहि करि आलिंगन आहि। कियौ गमन प्रभु जू तवै घर पठाय कैं ताहि॥
प्रात समें उठि कें जु प्रभु लखि कैं श्री हनुमान। नमस्कार करि कें तिन्है दक्षिण कियौ प्रयाण॥
नाना मत जन जन वसैं विद्यापुर मधि जोय। प्रभु दरसन भौ वैष्णवनि निज निज मत जिहि सोय॥
विहवल भौ प्रभु के विरह श्री रामानंद जोय। रहे जु प्रभु के ध्यान मधि सकल विषय तजि सोय॥
मिलनजु रामानन्दकौ कह्यौ कछु करि सार। सहस वदन कहि सके नहि करिकैं तिहि विस्तार॥
चरित महाप्रभु सहजहि घन पय पूर सु आहि। भाग्यवान सोई करें जो आस्वादन ताहि॥
श्रवण द्वार ह्वै पियें जो एक बार जिहि आहि। श्रवणजु ताके लोभ करि छाडिसकै नहि ताहि॥
सव तत्वनि कौ ज्ञान सो याके सुने जु होय। चरण कमल मधि जुगलकें प्रेम भक्ति तिहि होय॥
गूढ़ तत्व चैतन्य कौ यातैं जानै जोय। करि बिश्वास सुनौ करै नही तर्क हिय होय॥
लीला परम निगूढ़ यह है जु अलौकिक सोय। यह विश्वास हि पाइयै दूर तर्क करि जोय॥
नित्यानँद चैतन्य जू श्री अद्वैत जु आहि। जाकौ ए सर्वस्व है इह धन मिलै जु ताहि॥
श्री रामानँद राय कौं कोटि प्रणति मम आहि। रस कौ किय विस्तार प्रभु वदन कमल करि ताहि॥
दामोदर जु स्वरूप के पत्रन के अनुसार। लीला रामानँद मिलन ताकौ कियौ प्रचार॥

श्री जु रूप रघुनाथ के चरणन की जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत सो लिखै ब्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे ब्रजभाषायां श्रीरामानन्द संगमो नामोऽष्टमोऽध्यायः ॥

नवम परिच्छेदः

नानामतग्रहग्रस्तान् दक्षिणात्यजनद्विपान् । कृपारिणा विमुच्यैतान् गौरश्चक्रे सवैष्णवान् ॥

जय जय जय श्री गौर विधु जय श्री नित्यानन्द । जय अद्वैत हिमांसु जय प्रभु भक्तनि के वृन्द ॥
श्री प्रभु कौ दक्षिण गमन अति सु विलक्षण सोय । सहस्र सहस्र तीर्थ कौ की जै दरसन जोय ॥
जे ई सब तीरथ परसि महातीर्थ किय सोय । तिहि छल करि तिहि देस के जन निस्तारे जोय ॥
तिन सब तीरथकौ जु क्रम कहत सकौंहौं नाहि । दक्षिण दिस तीरथनि तिहि गमन गतागत माहि ॥
नाम मात्र याही जु तैं करियै लिखन सु आहि । करिवे नाहि समर्थ हौ यथा अनुक्रम ताहि ॥
पूर्व रीति पथ चलत जे पावै दरसन ताहि । जाही ग्राम रहैं प्रभू वही ग्राम जन आहि ॥
वासी दक्षिण देस के लोक अनेक प्रकार । कर्मी कोउ ज्ञानी दृढ़ पाखंडी जु अपार ॥
प्रभु के दरस प्रभाव करि तेई सब जन आहि । निज निज मत कौं छाड़ि कैं भये जु वैष्णव ताहि ॥
वैष्णव मधि रघुनाथ कें सर्व उपासक जोइ । श्री वैष्णव कोऊ कहैं तत्व हि बादी कोइ ॥
श्री प्रभु दरस प्रताप तें भक्त सबै अभिराम । भये उपासक कृष्ण के लेत कृष्ण कौ नाम ॥

राम राघव राम राघव राम राघव पाहि माम् । कृष्ण केशव कृष्ण केशव कृष्ण केशव रक्ष माम् ॥२॥

इही पद्य कौं पढ़त पथ किय पयान प्रभु जोय । जाय जु गंगा गौतमी स्नान करयौ प्रभु सोय ॥
मल्लिकार्जुन तीर्थ में देखे जाय महेस । नाम लिवायौ कृष्ण कौ तहां जु लोक असेस ॥
दास राम त्रिपुरारि कें करिकें दरसन ताहि । अहोबल नरसिंह कौ कीनौ गमन जु आहि ॥
लखि के श्री नरसिंहकौ नुति स्तुति करीजु ताहि । गये सिद्ध बटकौं तहां श्री सीतापति आहि ॥
लखिकें श्री रघुनाथकौं करी प्रणति स्तुति ताहि । तहां एक द्विज ने कियौ प्रभुकौ न्यौतौ आहि ॥
सोई विप्र निरंतर हि लेत राम कौ नाम । वानी अन्य कहै न विन राम नाम अभिराम ॥
सोई दिन तिहि घर रहे भिक्षा करि कें आहि । गौर हरि आगे सु चले करि कें कृपा जु ताहि ॥
स्कन्दक्षेत्र तीरथ तही स्कन्द दरस किय सोय । त्रिमठ तीर्थ मधि जायकें लखैं त्रिविक्रम जोय ॥
आये फेरि जु सिद्ध बट तिही विप्र के गेह । सोई विप्र सु कृष्ण कौं नाम हि लेत अछेह ॥
भिक्षा करिकें महाप्रभु कीनौं प्रश्न जु ताहि । कहौ विप्र इह तुव दसा भई कहा पुनि आहि ॥
प्रथम निरंतर कहत हे राम नाम तुम बाम । अब काहे तें लेत हौ सदा कृष्ण कौं नाम ॥

विप्र कहैं हैंगौ यही तुम दरसन हि प्रभाव । तुमहि देखि मेरौ गयौ सब आजन्म स्वभाव ॥
बाल्यावधि मेरे ग्रहण रघुवर नाम अपार । कृष्ण नाम तुम कौं लखें आयौ एकहि बार ॥
तब ही ते या जीभ मधि बस्यौ कृष्ण कौ नाम । स्फुरत कृष्ण कौ नाम है दुरि गौ नाम सुराम ॥
बाल्य समय ही तें जु मम है स्वभाव इक सोइ । नामहि महिमा शास्त्र कौ करियै संचै जोइ ॥

तथाहि पद्मपुराणे—

रमन्ते योगिनोऽनन्ते सत्यानन्दे चिदात्मनि । इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥

परब्रह्म ही है जु ये दोऊ नाम समान । और शास्त्र मधि फेरि कछु लह्यौ विशेष प्रमान ॥

महाभारते—

कृषि भूवाचकः शब्दो णश्च निर्वृतिवाचकः । तयोरैक्यं परं ब्रह्म कृष्ण इत्याभिधीयते ॥

कृष्ण नाम महिमा अतुल यही वाक्य करि आहि । तऊ जु लेय सकौ नहीं सुनौ हेतु अवताहि ॥
इष्ट देव श्री राम जू सुख पायौ तिहिं नाम । सुख लहि सोई नाम निसि दिन गायौ अभिराम ॥
स्वयं कृष्ण सोई जु तुम यहै कियौ निरधार । यह कहि विप्र पर्यौ तहां प्रभु के पद सुख सार ॥
चले महा प्रभु और दिन करिकें कृपा जु ताहि । वृद्ध सुकामी आयकें किय शिव दरसन आहि ॥
चले महाप्रभु तहां तें गये अग्र इक ग्राम । विप्र समाज हि आय प्रभु तहां कर्यौ विश्राम ॥
प्रभु प्रभाव करि लोक सब आये दरसन ताहि । लक्षार्बुद गणना नहीं आवै लोक जु आहि ॥
श्री प्रभु कौ सौन्दर्य लखि अरु तिहि प्रेमावेस । कृष्ण कृष्ण सबही कहैं भौ वैष्णव सब देस ॥
तार्किक मीमांसक जु गण मायावादी जोय । स्मृति पुराण पातंजलहि संख्यागामी जु सोय ॥
निज निज सास्त्रहि मत सबनि किय उद्ग्राह प्रचंड । सबही मतकौ दूषि प्रभु करैं खंड ही खंड ॥
प्रभु वैष्णव सिद्धान्त कौं सब ठां थाप्यौ सोइ । श्री प्रभु के सिद्धान्त कौं सकै खंडन हि कोइ ॥
हारि हारि सब हि कर्यौ प्रभु के मतहि प्रवेस । श्रीप्रभु ने इहि भांति सौं किय वैष्णव सबदेस ॥
धाये सुनि पांडित्य प्रभु पाखंडी गण सोय । आये करि कें गर्व लै संग सिष्य गण जोय ॥
पंडित बौधाचार्य अति निज नब मत में जोय । प्रभु आगे उद्ग्राह करि लाग्यौ बोलन सोय ॥
अंस भाष्य बौध सु जदपि दरस अयुक्त जु ताहि । तऊ जु बोले आप प्रभु गर्व खंडिबै आहि ॥
बौध शास्त्र नव मत जिते सब ही तर्क प्रधान । प्रभु ने खंड़े तर्क करि सकै न थापि निदान ॥
बौद्धाचार्य नये जु मत सबै उठाये आहि । तर्क मध्य दृढ युक्त प्रभु खंड खंड किय ताहि ॥
पंडित सब ही दार्शनिक लह्यौ पराजय सोय । लोक हसत सब बौद्ध कैं भई लाज भय जोय ॥
प्रभु कौं वैष्णव जानिकें गयौ बौध घर जोय । सद बौद्धनि मिलि कें तबै कियौ कुमंत्र जु सोय ॥
महा असुच जो अन्न इकथार माहि करि आहि । प्रभु आगें आन्यौजु कहि विष्णु प्रसाद हि ताहि ॥
महाकाल पच्छी जु इक आयौ तिहि सुकाल । चोंच बीच करि लै गयौ सहित अन्न सो थाल ॥

बौद्ध वृन्द ऊपर परयौ अन्न अमेध्य जु होइ। सिर पर बौद्धाचार्य कैं परयौ थार वजि सोइ ॥
तिरछौं परयौ सु थार वह कटि गौं माथौं ताहि। भूमि परयौ है मूरछित बौधाचारज आहि ॥
रोवत हा हा कार करि सबैं सिष्यगन ताहि। श्री प्रभु पद कौ शरण लिय सबनि आयकें जाहि ॥
ईश्वर तुम साक्षात हौ क्षमा करौ अपराध। गुरु जीवैं हम सबनि कौं करौ प्रसाद आगाध ॥
कहैं जु प्रभु सब ही कहौं कृष्ण कृष्ण हरिनाम। गुरु के कान पुकारि कें कहौ कृष्ण श्री राम ॥
तब तुम सब कौ गुरु यही ह्वै है चेतन सोय। सबैं बौद्ध मिलि कैं करैं कृष्ण कीरतन जोय ॥
गुरु के कान कहैं कहौ कृष्ण हरी श्री राम। आचारज चेतन लह्यौ उठ्यौ बोहि हरिनाम ॥
आचारज मिनती करैं प्रभुहि कृष्ण कहि जोय। सकल लोक के देखतें भयौ जु विस्मित सोय ॥
करि कौतुक इहि भांति सौं सची सूनु जु आहि। अंतर्ध्यान करयौ किंहूं लह्यौ न दरसन ताहि ॥
तब त्रिमल्ल त्रिपदी प्रभू चलिकें आये सोय। विष्णु चतुर्भुज जू लखे विंकटाद्रि में जोय ॥
श्री त्रिपदी मधि आय कैं किय दरसन श्री राम। आगैंश्री रघुनाथकें किय स्तुति औरु प्रणाम ॥
करिकें विस्मित लोक सब निज प्रभाव अभिराम। प्रभु पाना नरसिंह तब आये करुणा धाम ॥
किय नति तुति नरसिंह की प्रेम विवसह्वै सोय। प्रभु प्रभाव करि लोककौं चमत्कार भो जोय ॥
शिवकांचीमें आय किय शिवहि वंदना आहि। निज प्रभाव वैष्णव करैं सबैं सैव गण ताहि ॥
लक्ष्मी नारायण लखे विष्णुसु कांची आय। श्री प्रभुजू करिकें प्रणति कीनी स्तुति बहु भाय ॥
प्रेम विवसह्वै प्रभु करयौ नृत्य गीत बहु सोय। दिनद्वै ही रहि वैष्णवनि कृष्ण भक्त किय जोय ॥
गौ त्रिकाल हस्ती तलहि तृणामल्ल कौं देखि। महादेव जू कौं निरखि करी प्रणाम विशेषि ॥
पक्षी तीरथ जाय किय शिव के दरसन जोय। वृद्ध काली तीरथ हि तब किय गमन जु सोय ॥
लखि कें स्वेत बराह कौं नमस्कार किय ताहिं। शिवस्थान श्वेतांवर हि गए गौर हरि आहि ॥
भैरव देखि शिवालई कीनौं दरसन ताहि। आये कावेरी तटहि सची सूनु जु आहि ॥
आये वेदारण्य तहां गो सभाज शिव देखि। महादेव जू कौं जु लखि तिन किय प्रणति विशेषि ॥
अमृत लिंग शिव आय कैं करी बन्दना ताहि। सबैं शिवालय शैवगण वैष्णव कीनें आहि ॥
देवस्थान जु आयकैं विष्णु दरस किय जोइ। श्री वैष्णव गण सह तहीं गोष्टी अनुछिन जोइ ॥
कुंभ करन की खोपरी लख्यौ सरोवर सोइ। सिव के क्षेत्र हि आय प्रभु निरखे शिव जू जोइ ॥
पापहि नासक विष्णु के कीनें दरसन जोइ। श्री रँग क्षेत्रहि तब प्रभू कियौ आगमन जोइ ॥
कावेरी में न्हाय करि रंगनाथ कौं देखि। मान्यौ आप कृतार्थ प्रभु तुति नति करी विशेषि ॥
वैंकट भट्ट जु नाम है श्री वैष्णव इक जान। तिन प्रभु कौ न्यौतौ कियौ करि कैं बहु सनमान ॥
भिक्षा तिन्हैं कराय कछु कियौ निवेदन चाय। प्रभु अब चातुर्मास यह पहुच्यौ निकटसु आय ॥
चातुर्मास रहौ जु मम गेह कृपा विस्तार। कृष्ण कथा कहि करि कृपा करौ मोहि निस्तार ॥

कृष्ण कथा रस करि प्रभु जु रहे गेहमें ताहि। चारि मास प्रभु भट्ट सँग सुखसौं वितये आहि ॥
श्री रंग के दरसन करें कावेरी में न्हाय। प्रति दिन प्रेमावेस सौं करें नृत्य बहु भाय ॥
प्रेमावेस स्वरूप ता लखि कें सिगरे लोक। आवैं देखन काज जौं नासैं तिहि दुख सोक ॥
आवै नाना देस तें लाख लाख नर जोइ। कृष्ण नाम सब ही कहैं श्री प्रभु कौं लखि सोइ ॥
कृष्ण नाम बिन और कछु बोलत नाही कोइ। कृष्ण भक्त सब ही भये लोक चमत्कृत सोइ ॥
जितेक श्री रंग क्षेत्र मधि बसैं विप्रगण आहि। एक एक दिन सबन ही कियौं निमंत्रण ताहि ॥
एक एक दिन करि भयौ पूरन चातुर्मास। केतिक विप्रनि नहि लह्यौ भिक्षा कौ दिन तास ॥
रहैं एक तिंहिं क्षेत्र में वैष्णव ब्राह्मण सोइ। देवालय के मधि करें गीता पाठहि जोइ ॥
अष्टादस अध्याय कौं पढ़ै हर्ष आवेस। लोक करें परिहास कौं पढ़ै असुद्ध विसेस ॥
कोऊ हँसि निन्दा करें तिन हि न मानैं सोय। तन्मय ह्वै गीता पढ़ै आनन्दित मन जोय ॥
स्वेद कंप पुलकाश्रु तनु जब लगि पठन जु आहि। भयौ महाप्रभु कौ हियौ आनंदित लखि ताहि ॥
कह्यौ महासय विप्र जु श्री प्रभु पूछ्यौ ताहि। कौंन अर्थ कौ जानि तुव सुख इतनौ है आहि ॥
विप्र कहैं मूरख जु मैं सब्द अर्थ नहि ज्ञान। सुद्धासुद्ध पढ़ौं तिंहिं गुरु की आज्ञा मानि ॥
अर्जुन के रथ के भये कृष्ण सारथी सोय। बैठे सुन्दर स्याम जू कर गहि तोत्रहि जोइ ॥
करि वो कौं श्री कृष्ण जू अर्जुन हित उपदेस। तितिनही कौं लखि होत है मम आनन्द विशेष ॥
जब लगि पढ़ौं जु तब लगहि पांऊ दरसन ताहि। याही तें तिहिं पाठ कौं तजै न मम मन आहि ॥
कहैं जु प्रभु तिहि पठन में तुम्हारौ ई अधिकार। तुम ही जान्यौ है यही गीता अरथ सुसार ॥
एतिक कहि तिंहिं विप्र कौं किय आलिंगन सोय। प्रभु के पद धरि सीस मधि विप्र करी स्तुति जोय ॥
तुम्हैं देखि दुगुणित भयौ तिनहूं ते सुख सोइ। तुम प्रभु सोई कृष्ण यौं मम हिय भासैं जोइ ॥
तिहि हिय कृष्ण स्फूर्ति करि निरमल भयौ जु आहि। याही तें प्रभु तत्व सब जान्यौ द्विजवर ताहि ॥
तबहि महाप्रभु प्रीत सौं कीनौं बरजन ताहि। यही बात नाहिन करौ कहूं प्रकास जू आहि ॥
महाभक्त प्रभु कौ भयौ सोई विप्र जु आहि। चारि मास छाड्यौ नही प्रभु कौ संगनिवाहि ॥
इही भांति तिहि भट्ट गृह रहे गौर सुख कंद। होत निरंतर भट्ट संग कृष्ण कथा आनन्द ॥
लक्ष्मी नारायण भजैं श्री वैष्णव भट्ट आहि। प्रभु मन तुष्ट भयौ जु लखि भक्ति निष्ठासु ताहि ॥
सदा निरंतर संग तिंहिं भयौ सख्य रस भाव। करैं हास्य परिहास्य कौं दोऊ सख्य सुभाव ॥
कहैं महाप्रभु भट्ट तुम श्री ठकुरानी सोइ। प्रिय के निति वक्षस्थिती सती सिरोमनि जोइ ॥
मम प्रभु कृष्ण सु गोप हैं गाय चरावन हार। साध्वी ह्वै चाहै जु क्यौं तिंहि संगम सुख सार ॥
इंही हेत सुख भोग तजि बहुत काल निरधार। लक्ष्मी जू व्रत नेम धरि कीनौं तप सु अपार ॥

श्री भागवते—कस्यानुभावोऽस्य न देव विद्महे तवाङ्घ्रिरेणु स्पर्शाधिकारः।
यद्वाञ्छया श्रीर्ललना चरत्तपो विहाय कामान् सुचिरं धृतव्रता ॥

भट्ट कहैं नारायण जू कृष्ण सु एक स्वरूप। लीला औ वैदग्ध पुनि अधिक कृष्ण में रूप॥
तिहिं परसैं नहि जात है पाति व्रत कौ धर्म। कौतुक करि लक्ष्मी चहैं कृष्ण संग कौ सर्म॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ

सिद्धान्ततस्त्वभेदेऽपि श्रीशकृष्ण स्वरूपयोः। रसेनोत्कृष्यते कृष्ण रूप मेषा रसस्थितिः॥

कृष्ण सँग करि पतिव्रतता धर्म नाश नहि होइ। अधिक लाभ पुनि पाइयै रास विलास जु सोइ॥
श्री लक्ष्मी जु विनोदिनी तिहि कृष्णहि अभिलास। याकौ दोस कहा प्रभू करौं क्यौं जु परिहास॥
कहै जु प्रभु तिहि दोस नहि यह हम जानैं जोइ। लक्ष्मी पायौ रास नहि सास्त्र सुनी यौं सोइ॥

श्री भागवते—नायं श्रियोंऽग उ नितान्तरतेः प्रसादः स्वर्योषितां नलिनगन्धरुचां कुतोऽन्याः।
रासोत्सवेऽस्य भुजदण्डगृहीतकण्ठ लब्धा शिषां य उद्गात्रजसुन्दरीणाम्॥

क्यों लक्ष्मी रास न लह्यों को इंहिं कारण आहि। तप करि कैसें कृष्ण कौ पायौ श्रुतिगण ताहि॥

तथाहि श्री मद्भागवते—

निभृतमरुन्मनोक्षदृढयोगयुजो हृदि यन्मुनय उपासते तदरयोऽपि ययुः स्मरणात्।
स्त्रिय उरुगेन्द्रभोग भुजदण्ड विषक्तधियो वयमपि ते समाः समदृशोंऽघ्रि सरोजसुधाः॥

श्रुति पायौ लक्ष्मी नही ह्यां कारण कहि कोइ। भट्ट कहैं ह्यां मम हियौ पैठि सकै नहिं सोइ॥
छुद्र बुद्धि हम जीव हैं सहज हि आहि अधीर। ईश्वर की लीला अपार कोटि समुद्र गंभीर॥
साक्षात ते कृष्ण तुम जानत हौ नित कर्म। जाहि जनावौ सो लसै तुव लीला कौ मर्म॥
अद्भुत कृष्ण सुभाव इक कहैं जु प्रभु जू सोय। करैं सदा माधुर्य करि सर्व आकर्षण जोय॥
ब्रज लोकनि कें भाव करि पै है चरण जु ताहि। तिन कौं ईश्वर करि नहीं जानैं ब्रज जन आहि॥
कोऊ तिहि सुत ज्ञान करि करैं उलूखल बंध। कोऊ सखा जु ज्ञान करि जीति चढ़ै तिहि कंध॥
श्री ब्रजेन्द्र नंदन जु करि जानैं ब्रज जन ताहि। मनन इही संबंध कौ ईस ज्ञान करि आहि॥
करैं भजन ब्रज लोक के भावहि करिकें जोइ। सोई ब्रज में पाई है सुद्ध नंद सुत सोइ॥

तथाहि तत्रैव—

नायं सुखाप भगवान् देहिनां गोपिकासुतः। ज्ञानिनां चात्मभूतानां यथा भक्तिमतामिह॥

श्रुति सबही गोपीन के अनुगत निहचै होय। श्री ब्रज रानी सुत भजै लै तिहि भावहि सोय॥
व्यूहांतर मधि गोपिका देह लही ब्रज सोय। कृष्ण संग तिहि देह किय रास क्रीड़ा सु जोय॥
गोप जात श्री कृष्ण जू गोपी प्रेयसी ताहि। देवी अथवा और त्रिय कृष्ण न चाहैं आहि॥
तिही देह लक्ष्मी चहै कृष्ण संगमहि सोइ। गोपीरागानुग जु व्है कियौ भजन नहि जोइ॥
अन्य देह करि नहीं कहूँ पै यै रास विलाश। याते नायं पद्य यह कह्यौ जु वेद व्यास॥
मन में पहिलें भट्ट कैं हुतो एक अभिमान। जानैं श्री नारायणहि है जु स्वयं भगवान॥

सर्वोपर ऊंचा जु है करियें भजन जु ताहि । श्री वैष्णव कौं भजन यह है सर्वोपरि· आहि ॥
यही गर्व ताकौं जु प्रभु करिवे खंडन सोइ । परिहास द्वारा इतिक वचन उठाये जोइ ॥
कहैं जु प्रभु जु भट्ट तुम करौ न संसय सोइ । कृष्ण स्वयं भगवान कौ यही स्वभाव जु जोय ॥
है विलास श्री कृष्ण कौ श्री नारायण सोइ । याही नें लक्ष्मी प्रभृति मनहिं हरें ते जोइ ॥

तथाहि तत्रैव—

एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान् स्वयं । इन्द्रारिव्याकुलं लोकं मृडयन्ति युगे युगे ॥

कृष्ण असाधारण गुण जु नारायण हू तें जु । यातें श्री के कृष्ण मधि तृष्णा अनुछिन में जु ॥
तुम जो पढ्यौ जु पद्य हैं सोई परम प्रमान । आये ताही पद्य में कृष्ण स्वयं भगवान ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—"सिद्धान्ततस्त्वभेदेऽपि" इत्यादि

कृष्ण स्वयं भगवत्व करि हरें रमा मन जोइ । गोपिनु कौ मन हरि सकें नहिं नारायण सोइ ॥
दरसाई गोपी गणहि मूर्ति चतुर्भुज जोइ । गोपीनकौ अनुराग नहिं तिहिं कृष्ण मधि होइ ॥

तथाहि ललित माधव नाटके—गोपीनां पशुपेन्द्रनन्दनजुषो भावस्य कस्तां कृती
विज्ञातुं क्षमते दुरुहपदवी सञ्चारिणः प्रक्रियाम् ।
आविष्कुर्व्वति वैष्णवीमपि तनुं तस्मिन्भुजैर्जिष्णुभि
र्यासां हन्त चतुर्भिरद्भुतरुचिं रागोदयः कुञ्चति ॥

एतिक कहि प्रभु तिहिं गरव कीनों चूर्ण बनाय । कहैं ताहि सुख दें न हित सो सिद्धांत फिराय ॥
दुख नहिं मानौ भट्ट जू कीनों हरि परिहास । सुनौ शास्त्र सिद्धांत जिहिं वैष्णव कौ विश्वास ॥
कृष्ण और नारायण जु ज्यौं इक ही जु स्वरूप । गोपी लक्ष्मी भेद नहिं है जु एक हि रूप ॥
कृष्ण संग आस्वाद श्री करें गोपिका द्वार । भेद गणत प्रभु तत्व में है अपराध अपार ॥
इक ईश्वर ही भक्त के ध्यानहिं के अनुरूप । इक ही विग्रह ते करैं नाना आकृति रूप ॥

तथाहि लघुभागवतामृतधृत नारदपञ्चरात्रवचनं——

मणिर्यथा विभागेन नील पीतादिभिर्युतः । रूप भेदमवाप्नोति ध्यानभेदात्तथाच्युतः ॥

भट्ट कहै यों हों कहां जीव जु पामर सोइ । कहां जु तुम साक्षात हौ ईश्वर कृष्ण सु जोइ ॥
प्रभुलीला जु अगाध है कछु नहिं जानी सोइ । तुम प्रभु नें जोई कही सांची मानी सोइ ॥
मो कौ पूर्ण कृपा करी श्री नारायण आहि । तुव चरणन पायौ दरस कृपा जु करिकें ताहि ॥
कही कृपा करि कृष्ण की महिमा मो सों सोइ । जिहिं ऐश्वर्य स्वरूप गुण सीमा लहैं न कोइ ॥
कृष्ण भक्ति सर्वोपरि जु अब जानी निरधार । किय कृतार्थ मो कों कह्यौ करिकें कृपा अपार ॥
एतक कहि भट्ट जु परे श्री प्रभु के पद आहि । श्री प्रभु जू करिकें कृपा किय आलिंगन ताहि ॥
चातुर्मास्य जु पूर्ण भौ भट्ट हि आज्ञा पाय । श्री प्रभु दक्षिण कौ चले लखिके श्री रँग राय ॥

संग चल्यौ सो भट्ट है मगन जात नहिं आहि । प्रभु अनेक करिकें जतन दीनी विदा जु ताहि ॥
प्रभु वियोग में भट्ट भौ तबै अचेतन सोइ । इही रंग लीला करें शची सु नुजू सोइ ॥
चलि आये ऋषभाद्रि कौं गौर हरी जु आहि । नारायण कौं देखि कैं नुतिनति करी जु ताहिं ॥
परमानंद पुरी तहां रहे जु चातुर्मास । सुनि के श्री प्रभु जू गये पुरी गुसाईं पास ॥
पुरी गुसांई के चरण प्रणत करी प्रभु आहि । पुरी गुसांई प्रेम सौं किय आलिंगन ताहि ॥
दिन त्रय दोऊ प्रेम मधि कृष्ण कथा के रंग । तिही विप्र गृह में रहे दोऊ एकैं संग ॥
पुरी कहै जैवौ हमें श्री पुरुषोत्तम सोइ । लखि तिहिं जैवौ गौड़ कौं न्हैवौ गंगा जोइ ॥
कहै जु प्रभु तुम आय हौ फिरि लीलाचल सोइ । सेतुबंध ही तें जु हम वेगि आइ हैं जोइ ॥
रहौं तिहारे निकट में यह वांछा है सोइ । श्री लीलाचल आय हौ मो पै सदय जु होइ ।
एतिक कहि तिहि पास तें आज्ञा लीनी जोइ । चले जु दक्षिण देश कौं प्रभु जू हरसित होइ ॥
परमानन्द पुरी तबै चले नीलगिरि धाम । चले चले आये प्रभु श्री शैलहि अभिराम ॥
तहां रहे द्विज भेष धरि शिव दुर्गा जू सोइ । लखि प्रभु कौं दोऊ न कैं भौ उल्लास जु जोइ ॥
तीन दिवस भिक्षा दई करि जु निमंत्रण ताहि । दुरि बैठे वार्ता गुपत कहैं दोउ जन आहि ॥
तिन सौं गोष्ठी इष्ट की करी महाप्रभु सोइ । आज्ञा लै आये जु तिहिं काम कोष्ण पुरि जोइ ॥
आये श्री प्रभु जू जहां दक्षिण मथुरा जोइ । तहां देखि वौ भयौ प्रभु एक विप्र सँग सोइ ॥
श्री प्रभु कौं तिहिं विप्रनें कियौ निमंत्रण जोय । विप्र विरक्त महाजन जु रामभक्त है सोइ ॥
कृत माला नदि न्हाय कें आये घर मधि ताहि । भिक्षाकरिहौं कहा द्विज पाक करौ नहिं आहि॥
कहैं महाप्रभु विप्र जू सुनौ महाशय जोय । भौ मध्यान जु पाक क्यों भयौ नहीं है जोय ॥
विप्र कहै श्री गौर हरि मम बसिबौ वन मांहि । पाक सौज वन बीच में संप्रति मिलै जु नाहिं ॥
वन्य अन्नफल शाक कछु लै है लक्ष्मण जोय । तब करि हैं श्री जानकी पाक प्रयोजन सोय ॥
श्री प्रभु तुष्ट भये तहां सुनि उपासना ताहि । अस्त व्यस्त तिहि विप्र नें करी रसोई आहि ॥
दिन के तीजे प्रहर में प्रभु भिक्षा किय जोय । करें तहां उपवास कौं ह्वै उदास द्विज सोइ ॥
कहै महाप्रभु विप्र क्यौं तै जु करचौ उपवास् । काहे एतिक दुखित ह्वै तुम दीसत जु उदास ॥
कहैं विप्र नहि काज मम जीवे कौ है सोय । अग्नि अंबु परि वेस करि तजि हौं जीवन जोय ॥
सीता ठकुराणी महालक्ष्मी जग माता हि । राक्षस ने परस्यो तिहि कांन सुनी यह आहि ॥
इंहिं शरीर के धरण कौं नहि समरथ अकुलाय । यही दुख करि जरति है देह प्राण नहिं जाय ॥
कहै जु प्रभु इहि भावना करि हौ और न बार । पंडित ह्वै कैं करत नहि कहै तु मंजु विचार ॥
सीता ईश्वर प्रेयसी चिदानंद तनु आहि । प्राकृति इंद्रिय देखि वे समरथ नाही ताहि ॥
रहौ कार्य तिहि परस कौ लहै न दरसन कोय । माया आकृति सिय हरी दस कंधर नें सोय ॥

रावण आवत जानकी कीनौं अंतर्ध्यान। माया सिय पठई तहां रावण अग्र निदान ॥
अप्राकृत जो वस्तु है प्राकृत गोचर नाहि। यही निरंतर है कही वेद पुराणन मांहि ॥
करि कें तुम विश्वास कौं बचन हमारे माहि। कबहूं फेरि कुभावना मन में करि हौ नाहि ॥
श्री प्रभु जू के बचन तें कियौ विप्र विस्वास। ह्वै प्रसन्न भोजन करयौ भौ जीवन की आस ॥
श्री प्रभु जू ने गमन किय करि आस्वासन ताहि। दुर्बेसन आये तहा ह्वै कें कृतमाला हि ॥
दरसन करयौ रघुनाथ कौं दुर्बेसन मधि सोइ। परसराम कौं प्रणत किय गिरि महेन्द्र मधि जोइ ॥
स्नान धनुष तीरथ कियौ सेतबंध में आय। तहां कियौ विश्राम प्रभु रामेश्वर लखि भाय ॥
विप्र समाज तहां सुनें श्री कूरम जु पुराण। आयौ ताके मध्य में पतिव्रता आख्यान ॥
माया सिय रावण लई तहां सुन्यौ विख्यान। भयौ महाप्रभु कौ हियौ आनंदित सुनि कान ॥
पतिव्रतानि सिरोमनी जनक नंदिनी सोइ। गृहिणी श्री रघुनाथ की जग माता सिय जोइ ॥
रावण लखिकें अगनिकी सरण लई सिय सोय। अगनि कियौ आवरण सिय रावण हीतें जोय ॥
लें राखी जनकात्मजा गिरिजा के जु निवास। माया सिय दै अगनि नें करी बंचना तास ॥
आये श्री रघुनाथ जब रावण मारि जु आहि। दैंन परीक्षा अगनि मधि तब आन्यौ सीताहि ॥
तब माया सिय अगनि नें करी जु अंतरध्यान। सत्य सिया दिय आनि कैं रघुवर के विदिमान ॥
ए सिगरे सिद्धांत सुनि प्रभु आनंद भौ जोइ। विप्र पास तें मांगि कैं लीनौं पत्र जु सोइ ॥
नयौ पत्र लिखि पुस्तक हि दै आये प्रभु सोय। पत्र पुरातन आप लिय तिहि प्रतीत हित जोइ ॥
आये लेकैं पत्र पुनि दक्षिण मथुरा जोइ। रामदास द्विज कौं दियौ पत्र आनि कैं सोइ ॥

तथाहि कूर्मपुराणे—

सीतयाराधितो वन्हिश्छायासीतामजीजनत्। तां जहार दशग्रीवः सीता वन्हिपुरं गता ॥१६॥
परीक्षा समये वन्हिं छायासीता विवेश सा। वन्हिः सीतां समानीय तत्पुरस्तादनीनयत् ॥१७॥

पत्र पाय द्विज के हियें भयौ जु परमानन्द। प्रभु चरणनि मधि सीस धरि रोदन करें अमंद ॥
विप्र कहै साक्षात तुम श्री रघुनंदन नाम। संन्यासी के वेस मुिः दियौ दरस अभिराम ॥
महादुख ही तें करयौ मेरौ तुम निस्तार। मम घर भिक्षा आजु प्रभु करौ जु अंगीकार ॥
मन दुख करि भिक्षा भलै दीनी नहि दिन सोइ। मम भाग्यनि करि फेरिहू पायौ दरसन जोइ ॥
एतिक कहि सुख पूर्व द्विज तुरत पाक किय जोइ। करवाई भिक्षा प्रभुहि उत्तम रीतिन सोइ ॥
तिहीं रात्रि रहि कैं तहां कीनी कृपा जु ताहि। पांड्य देस आये जु प्रभु ताम्र पर्णि नदि आहि ॥
स्नान ताम्र पर्णी कियौ ताम्रपर्ण कें तीर। नय त्रिपदी लखि कैं प्रभु जु बोले कौतुक धीर ॥
तीर्थ चियर ताला लखे राम सुलक्ष्मण सोय। विष्णु कांचि में आय कैं शिव कौं देख्यौ जोय ॥
गजमोचन तीरथ लखे विष्णु मूर्ति जू सोय। आय तीर्थ पानागडी लखे सियापति सोय ॥

आये चामड़ापुर मधि लखे जु लक्ष्मण राम । श्री वैकुण्ठहि आय किय विष्णु दरस अभिराम ॥
मलयाचल मधि वंदना करी अगस्त्य हि सोय । तहां कुमारी कन्य कौ दरसन कीनौ जोय ॥
धाम आमली तल लखे राम गौर हरि सोय । आये देस मलार मधि जिहि भटमारी होय ॥
श्रीतमाल कार्तिकहि लखि आये तारा पानि । श्री रघुनाथहि लखि तहां बितई निसि सुखसानि ॥
श्री गोस्वामी संग मधि कृष्णदास द्विज आहि । भटमारी के संग सौं भयौ जु दरसन ताहि ॥
उपजायौ हिय लोभ तिहि त्रिय धन कौं दरसाय । आरज सरल जु विप्र मति कीनी नास बनाय ॥
आयौ विप्र जु प्रात उठि भटमारी घर आहि । श्री प्रभु आपुन वेगि ही आये देखन ताहि ॥
प्रभु जु आय कह्यौ सबनि भटमारी गण जोय । तुम जु हमारौ विप्र क्यौं राख्यौ कारण कोय ॥
तुम हौ संन्यासी लखौं हमहूं संन्यासी सोय । हम कौं दुख क्यौं देत हौ तुम्हरे न्याय न होय ॥
सुनि कें भटमारी सकल उठे शस्त्र लै सोय । आये मारण कौं सकल दौरि चारि दिस जोय ॥
तिन के शस्त्र जु तिंहिं अंगनि परे हाथ तें सोय । खंड खंड तेई भये भजे चारि दिस जोय ॥
हा हा कार उठ्यौ जु तब भटमारिनि के गेह । कियौ गमन प्रभु केस धरि लैद्विज कौं करि नेह॥
तिहि दिन चलि आये जु प्रभु तीर पयस्विनि सोय । आदि केशव सु मंदिर हि गये न्हाय प्रभु जोय ॥
श्री केशव कौं निरखिकैं प्रेम विवस भौ सोय । नति नुति नृत्यजु गीत तब कीनौ प्रभुजू जोय ॥
निरखि प्रेमकौं लोक सब चमत्कार भौ सोय । सकल लोक प्रभु कौं करयौ अति सतकार जु जोय ॥
श्री प्रभु सौं गोष्ठी भयी महाभक्त गण संग । ब्रह्म संहिता ध्याय इक लह्यौ तहांई रंग ॥
पुस्तक लखि श्री प्रभु हियें भौ आनंद अपार । भयौ पुलक कंपाश्रु औ स्तंभ स्वेद विकार ॥
ब्रह्म संहिता सम नहीं सकल सास्त्र मत सार । गोविंद महिम ज्ञान कौ कारण पर निरधार ॥
थोरे आंकनि मधि कहयौ है सिद्धांत अपार । सकल सु वैष्णव शास्त्र मधि येही है अति सार ॥
पोथी लई लिखाय कै बहु जतननि करि सोय । अनंत पद्मनाभहि प्रभु आये हरषित होइ ॥
पद्मनाभ कौं देखि करि श्री प्रभु जू दिन दोय । संकर नारायण लखे आय पयस्वनि सोय ॥
आचारज संकर घरहि सिंहारी मठ आय । स्नान तुंगभद्रा कियौ मत्स्य तीर्थ लखि सोय ॥
आये मध्वाचार्य गृह जहां जु वादी तत्व । उडुपि कृष्ण कौं लखि तहां भये प्रेम उनमत्त ॥
श्री नर्त्तक गोपाल जू कृष्ण परम अभिराम । मध्वाचार्य हि स्वप्न दै आये तिन के धाम ॥
गोपी चंदन डेल मधि है नौका में जोय । मध्वाचार्य निकट हरि आये इच्छा कोय ॥
मध्वाचारज ल्याय तिहिं कीनौं आपन आहि । तत्व हि वादी गण सबै अबहूं सेवत ताहि ॥
कृष्ण मूर्ति लखि सुख महाप्रभुकैं भयौजु सोइ । प्रेम विवसह्वै बहुत छिन नृत्य गीत किय जोय ॥
तत्व बादी गण श्री प्रभु हि मायावादी जान । प्रथम दरस मधि नहि कियौ संभाषण सनमान ॥
पाछें प्रेमावेश लखि चमत्कार भौ जोय । कीनौ वैष्णव ज्ञान करि बहु सतकार जु सोय ॥
गौर चंद्र जू जानि कें गर्व सबनि के हीय । गोष्ठी करिवे सबनि सँग आरंभ जु तब कीय ॥

तत्व वादिनु आचार्य सौं शास्त्रनि में जु प्रवीन । तिन सो प्रश्न करीजु प्रभु ह्वै करि जैसैं दीन ॥
भली भांति जानें न हम साध्य जु साधन भाइ । श्रेष्ठ साध्य साधन जु तुम हमकौं देहु जनाइ ॥
करि निज धर्म समर्पिये हरि कौं कहैं जु सोइ । यही कृष्ण की भक्ति कौ साधन श्रेष्ठ जु होइ ॥
गमन होय वैकुंठ कौं मुक्ति पंच विधि पाय । साध्य श्रेष्ठ है गौ यही कहैं जु शास्त्र सुनाय ॥
गौर कहैं शास्त्र जु कहैं श्रवण कीर्त्तन जोय । हरि रति सेवाफल जु कौ साधन परम जु सोय ॥

तथाहि श्री मद्भागवते—

श्रवणं कीर्त्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनं । अर्च्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम् ॥
इति पुंसार्पिता विष्णौ भक्तिश्चेन्नवलक्षणा । क्रियेत भगवत्यद्धा तन्मन्येऽधीतमुत्तमम् ॥

श्रवण कीर्त्तन ही जु है कृष्ण प्रेम की नींव । पंचम पुरुषारथ वही पुरुषारथ की सींव ॥

तथाहि एकादश स्कन्धे—

एवंव्रतः स्वप्रियनामकीर्त्या जातानुरागो द्रुतचित्त उच्चैः ।
हसत्यथो रोदिति रौति गायत्युन्मादवन्नृत्यति लोकवाह्यः ॥

कर्म त्याग निंदा जु तिंहि कही सास्त्र सब माहि । कबहूं प्रेमा कृष्ण मधि होय कर्म तैं नांहि ॥

तथाहि श्री भागवते—

आज्ञायैवं गुणान् दोषानितिश्लोकं

तथाहि भगवद्गीतायां—

सर्व्वधर्म्मान्परित्यज्य मामेकमितिश्लोकं ॥

मुक्ति पंच विधि भक्तगण त्याग करैं जु निदान । जानें मुक्ति हि तुच्छ करि देखें नरक समान ॥

तथाहि श्रीमद्भागवते एकादश स्कन्धे—

तावत् कर्म्माणि कुर्व्वीत न निर्व्विद्येत यावता । मत्कथाश्रवणादौ वा श्रद्धा यावन्न जायते ॥

तथाहि तत्रैव तृतीयस्कन्धे—

सालोक्य सार्ष्टि सामीप्य सारूप्यैकत्वमप्युत । दीयमानं न गृन्हन्ति विना मत्सेवनं जनाः ॥

कर्म मुक्ति द्वै वस्तु ये तजैं भक्तगण जानि । सोई द्वै थापे तुमनि साधन साध्य बखानि ॥
यही सकल वैष्णवन कौ साधन साध्य न होय । संन्यासी लखि वंचना करौ हमारी जोय ॥
सुनि तत्वाचारज भये अंतर लज्जित आहि । लखिकें अति विस्मित भये प्रभुकी वैष्णवता हि ॥
तत्वाचारज कहैं तुम जु कह्यौ सत्य है सोइ । सकल सास्त्र वैष्णवनि कैं यही सुनिश्चै होय ॥
तऊ जु मध्वाचार्य जू जैसैं कर्‌यौ निबंध । सोई सब आचरण है संप्रदाय संबन्ध ॥
भक्ति हीन बिब प्रभु कहैं कर्मी ज्ञानी दोय । संप्रदाय मधि आय कैं चिन्ह लखै द्वै सोय ॥
सब मधि लखियै एक गुण संप्रदाय तुव जोइ । करौ जु विग्रह सत्य करि ईश्वर निश्चै सोइ ॥
इहि विधि तिहि घर रहि कर्‌यौ गर्व चूर्ण प्रभु सोइ । आये फाल्गुण तीर्थ तब कृष्ण गौर हरि जोइ ॥
करि जु विशाला दरस पुनि लखि कें तहँत्रित कूप । तीरथ पंचाप्सर तबै आये प्रभु सुख रूप ॥

लखि आर्य्या द्वैपायिनी सिवगोकर्ण्ण हि चाहि। सूर्पारक आये तवै जती सिरोमनि आहि॥
कोला पुर लच्मी लखी खीर भगवती चाहि। लखि गणेस नांगा लखी चोर भगवती आहि॥
पांडुर पुर तिहिं ठौर ते आये प्रभु सुख चंद। विठ्ठल ठाकुर देखि कें हिय पायौ आनंद॥
प्रभु जु प्रेमावेस मधि नृत्य गान वहु कीय। प्रभु प्रेमा लखि लोग सब चमत्कार भौ हीय॥
तहां एक द्विज भक्त सो कियो निमन्त्रण ताहि। भिच्चा करि सुभ वात इक पाई तहां जु आहि॥
सिष्य जु माधव पुरी कौ श्री रँगपुरी जु नाम। तिही ग्राम मधि विप्र घर करैं आय विश्राम॥
सुनि कें चले प्रसन्न मन प्रभु दरसन हित ताहि। विप्र गेह बैठे तहां देख्यौ तिनकौं आहि॥
प्रेम विवस ह्वै कैं करयौ तिनकौं दंड प्रणाम। अश्रु पुलक औ कंप भौ अंग स्वेद अभिराम॥
लखि विस्मित मन में भये श्री रँग पुरी जु नाम। उठौ उठौ श्रीपाद कहि कहे बचन अभिराम॥
तुम श्री पाद धरौ जु मम गोस्वामी संबंध। तिन विन और कहूँ नही यही प्रेम कौ गंध॥
एतिक कहि परि रंभ करि पुरी जु प्रभु हि उठाय। रुदन करैं दोऊ तहां कंठहि कंठ लगाय॥
छिनक छाडि आवेस कौ दुहुनि धैर्य भौ सोय। नातौ ईश्वर पुरी कौ प्रभु जु जनायौ जोइ॥
निसि दिन दोऊ जन कहैं कृष्ण कथा चित लाय। पांच सात वासर तहां किय वितीत इहिं भाय॥
करि कौतुक श्री पुरी तिहिं पूछयौ जन्म स्थान। प्रभु कौतुक करि कैं कह्यौ नवद्वीप अभिधान॥
माधवेन्द्र पुरी सँग करि श्री रँग पुरी जु सोइ। ते आये आगें हु ते नदिया नगरी जोइ॥
जगन्नाथ मिश्र जु घरहि भीच्चा कीनी जोइ। केरा की भाजी तहां पाई अद्भुत सोइ॥
जगन्नाथ की ब्राह्मणी पतिव्रता अति जोइ। वात्सल्य करि कैं जू हैं जगमाता जिमि सोइ॥
तिहि सम निपुन जु पाकमधि नहि त्रिभुवनमें कोइ। दै भिच्चा श्रीपाद कौं सुत सम हितकरि जोइ॥
तिनके इक सुत जोग्य वहु किय संन्यास जु आहि। नाम संकरारण्य तिहि अलप वैस हौ ताहि॥
सिद्धि प्राप्ति तिनकौं भई इंही तीर्थ मधि आहि। पूर्व वृत्त श्री रँग पुरी एतिक कह्यौ जु ताहि॥
गौर कहैं पूर्वाश्रम ही ते हमरे हे भ्रात। जगन्नाथ मिश्र जु हु ते मम पूर्वाश्रम तांत॥
करी इष्ट गोष्ठी दुहुनिजन मिलि कें इहि भाय। श्री रँगपुरी जु द्वारका चले देखिवें चाय॥
राख्यौ प्रभुकौं चारि दिन तहां विप्र तिहि जोय। भीमरथी मधि न्हाय किय बिठ्ठल दरसन सोय॥
तव जु कृष्ण वेनातट हि आये प्रभु रस रूप। नाना तीरथ लखि तहां मंदिर देव अनूप॥
सदा वैष्णवाचरण हैं सकल सु द्विजन समाज। पढ़ैं कृष्ण करणामृतहि वैष्णव सव सुख साज॥
करणामृत सुनि गौरकैं हिय सरस्यौ आनंद। लिय लिखाय आग्रहजु करि पुस्तक सो सुखकंद॥
करणामृत सम वस्तु नहिं तीन भुवन मधि आन। यही ते है कृष्ण कौ सुद्ध प्रेम कौ ज्ञान॥
हरि लीला माधुर्य औ सुदंरतावधि आहि। कर्णामृत निरवधि पढै सो जानैगौ ताहि॥
कर्णामृत ब्रह्मसँहिता पोथी पाई दोय। दोऊ महा जु रत्न सम लै आये संग सोय॥
आये पुरि माहिष्मती तापी न्हाय जु सोय। नाना तीर्थ लखे तहां तीर नर्मदा जोय॥

न्हाय निर्विंध्या नदी मधि मनु तीरथ कौं देखि । आये दंडक बन तबै ऋष्य मूक गिरि देखि ॥
सप्तलाल इक वृत्त है कानन भीतर सोय । महावृत्त अति स्थूल है बहुत उच्चतरु जोय ॥
सप्तलाल लखि कैं प्रभु जु किय आलिंगन ताहि । सप्तताल ससरीर भौ अंतरध्यान जु आहि ॥
सून्य स्थल लखि लोक कें अचिरज भयौ अपार । लोक कहैं श्री पाद ये रघुवर के अवतार ॥
गयौ ताल तनु सहित सौं श्री बैकुंठ जु धाम । काहि होय ऐसी सकति विना एक श्रीराम ॥
न्हाये पंपासरवरहिं आय गौर अभिराम । पंचवटी मधि आयकें करयौ तहां विश्राम ॥
नासिक त्रंबक लखि गये ब्रह्मगिरि जु अभिराम । कुशावर्त्त आये तहां भव गोदावरि नाम ॥
निरखि तप्त गोदावरी तीरथ बहुतर जोइ । प्रभु जू आये फेरि हूँ विद्यानगर सु सोइ ॥
श्री प्रभु कौ आगमन सुनि श्री रामानँद राय । प्रभु कौ मिलन करयौ तिन्हौं आनंदित ह्वै आय॥
परयौ दंड ज्यौं राय जू चरण कमल धरि आहि । प्रभु जू नें जु उठाय कैं किय आलिंगन ताहि ॥
तहां जु प्रेमावेस मधि रुदन करत जन दोय । प्रेमानन्द भये सिथल विंव जन के मन सोय ॥
दोऊ जन केतिक छिनहि मन में सुस्थिर होय । विविध इष्ट गोष्ठी करी बैठि एक ठां सोय ॥
तीरथ जात्रा की कथा प्रभु सब कही जु सोइ । करणामृत ब्रह्मसंहिता पोथी दीनीं दोइ ॥
पुस्तक लखि आनंद भौ श्री रामानंद राय । प्रभु सँग आस्वादन कियो राखी तें जु लिखाय॥
आये प्रभु जू ग्राम मधि भौ कोलाहल सोइ । प्रभु दरसन हित लोक ते सब ही आये जोइ ॥
लोकहि लखि रामानंद जु गौ निज घर मधि जोय । उठे गौर मध्यान्ह में भिक्षा करिवैं जोय ॥
फेरि राय जू निसि समैं आगम कीनौ सोय । कृष्ण कथा करि जागरण करैं तहीं जन दोय ॥
दोऊ जन कैं राति दिन कृष्ण कथा ही होय । परमानँद करि कें गये पांच सात दिन सोय ॥
रामानन्द कहैं प्रभू तुमरी आज्ञा पाय । नृप कौं हम जु लिखीं हुती करि विनती चित चाय ॥
जैवैं लीलाचल हमैं दिय निदेस नृप ताहि । चलिबे कौं उद्यम जु हम करिवे लागे आहि ॥
कहैं जु प्रभु ह्यां आगमन हमरौ यही निमित्त । लै तुम कौं लीला चलहि करि हैं गमन सुचित्त ॥
राय कहैं आगैं प्रभु जु चलौ नीलगिरि सोइ । मेरे संग हाथी तुरंग सैन्य कुलाहल जोइ ॥
दिन दस इन सब के जु करि समाधान सनमान । तुम पाछे पाछे जु हम करि हैं वेगि पयान ॥
तव प्रभु जू नैं आय वैं तिहिं आज्ञा दिय सोइ । श्री लीलाचल कौं चले परमानंदित होइ ॥
जिहीं गैल ह्वै पूर्व प्रभु कियौ आगमन सोइ । चले तिही पथ में लखैं सब वैष्णव जन जोइ ॥
जहां जाय जन करि उठैं कृष्ण कृष्ण धुनि वाम । लखि कैं बहु आनँद लह्यौ गौर हरी अभिराम ॥
नाथ अलालहि आय कैं पठयौ कृष्ण जु दास । नित्यानंदहि आदि निज गण बुलवाये पास ॥
श्री प्रभु कौ आगमन सुनि श्री नित्यानँद राय । उठि कें चले उछाह सौं आनँद अँग न माय ॥
जगदानंद दामोदर पंडित श्री जु मुकुंद । नाचत चले जु भाय सौं मातं न अँग आनंद ॥
गोपीनाथाचार्य जू चले जु हरसित होय । सब ही श्री प्रभु कौं मिले मग में आये जोय ॥

भट्टाचारज जू चले मन में करि आनंद । उदधि तीर में आयकें मिले प्रभु सुख कंद ॥
सार्वभौम प्रभु के चरण परे प्रीत सौं आय । प्रभु नें आलिंगन कियौ तवै उठाय जु ताय ॥
प्रेमावेस करैं रुदन सार्वभौम जू सोय । प्रभु ईश्वर के दरस हित सब सँग आये जोय ॥
जगन्नाथ कौं लखि प्रभुहि भयौ जु प्रेमावेस । कंप स्वेद पुलकाश्रु में मग्न सरीर असेस ॥
गीत नृत्य तब तें कियौ प्रेमाविष्ट जु होय । सब आये पसुपाल हैं लैं प्रसाद सृक सोय ॥
सृक प्रसाद लखि कें भये सुस्थिर प्रभु रस कंद । जगन्नाथ सेवक सकल मिले जु करि आनंद ॥
काशी मिश्र जु आयकें परे गौर पद आहि । श्री प्रभु जू नें मान्य करि किय आलिंगन ताहि ॥
पूजक श्री जगनाथ कौ प्रभु कौं मिल्यौ आय । सार्वभौम निज घर गये श्री प्रभु कौं जु लिवाय ॥
मेरे घर भिज्ञा कही कियौ निमंत्रण जोय । दिव्य दिव्य परसाद बहु ल्याये तब ही सोय ॥
करि मध्यान्ह शची तनय लैं करि निज गन जोय । भिज्ञा करी जु बैठि करि सार्वभौम गृह सोय ॥
भिज्ञा तिनहि कराय पुनि सयन करायौ ताहि । सार्वभौम अपने करनि पायनि दावत आहि ॥
प्रभु जू तिहि पठयौ तवैं भोजन करिवे आहि । तिही राति ताके घरहि रहे प्रीत करि ताहि ॥
सार्वभौम कौं संग लैं औ निज गण कौं जोय। तीरथ जात्रा कथा कहि किय जागरण जु सोय ॥
इतने तीरथ प्रभु कहे किय पर्यटन जु सोय । तुम सम वैष्णव नहि लखे कहूं एक जन जोय ॥
इक रामानँद राय जू बहुत दियौ सुख आहि । भट्ट कहैं याही लियें कह्यौं मिलन हित ताहि ॥
तीरथ जात्रा कथा इह पूर्ण भई इहि भाय । कही कछू संक्षेप करि विस्तर कही न जाय ॥
तीरथ जात्रा गौर की कथा सुनें जन जोय । पावै पद चैतन्य मधि गाढ़ प्रेम धन सोय ॥
सुनें चरित चैतन्य कौ श्रद्धा करिकें जोय । मत्सरता तजि वदन मधि कहै हरी हरि सोय ॥
यही जानि कलिकाल में अरु नाही औ कर्म । वैष्णव वैष्णवशास्त्र मधि यही कह्यौ है मर्म ॥
लीला गौर हिमांशु की है अगाध गंभीर । पैठन कौं समरथ नही रहै परसि कें तीर ॥
श्रद्धा करि चैतन्य कौ चरित सुनें जन जोय । जितिक विचारें तितिक ही लहै महाधन सोइ ॥
श्री जु रूप रघुनाथ के चरनन की जिहिं आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौं लिखैं व्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखंडे व्रजभाषायां दक्षिण देस तीर्थ भ्रमणं नाम नवम परिच्छेदः ॥

दशम परिच्छेदः

तं वंदे गौरजलदं स्वस्य यो दर्शनामृतैः । विच्छेदावग्रहम्लस्तान् भक्तसस्यान्यजीवयत् ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
पूर्व जबै दक्षिण चले श्री प्रभु जू सुखदाय । नृप प्रतापरुद्र जु तबै भट्टाचार्य बुलाय ॥
बैठन कौं आसन दियौ नमस्कार करि ताहि । श्री प्रभु की वार्त्ता तबै राजा पूछी आहि ॥
सुन्यौ तुम्हारे गेह में एक महासय जोय । आये गौड देस तें महाकृपामय सोय ॥
तुम पर बहुत कृपा करी कहत सकल जन आहि । मो कौं अब करि हैं कृपा दरस करावौ ताहि॥
भट्टाचार्य कहैं सुनी सबै सत्य हैं जोय । तिहिं दरसन कौं आप को जोग बनें नहिं सोय ॥
वे विरक्त श्री पाद जू रहें विपिन के मांहि । ते प्रभु दरसन नृपति कौ करैं स्वप्न हूं नांहि ॥
किहूँ भांति तो ऊ तुमहि दरस करैं हैं ताहि । अब तौ प्रभु जु ने करयौ दक्षिण गमन जु आहि ॥
नृपति कहैं काहें गये जगन्नाथ तजि सोइ । भट्ट कहैं लीला यहू इक महंत कौ सोइ ॥
पावन करिवै तीरथनि भ्रमैं तीरथनि सोइ । ताही मिस निस्तार सब संसारिक जन होइ ॥

तथाहि श्री मद्भागवते प्रथमस्कन्धे—

भवद्विधा भागवतास्तीर्थीभूताः स्वयं प्रभो । तीर्थी कुर्व्वन्ति तीर्थानि स्वान्तः स्थेन गदाभृता ॥ २ ॥

निहचैं श्री वैष्णवनि कौ यही स्वभाव जु होइ । हैं स्वतंत्र ईश्वर सदा जीव नाहिने सोइ ॥
नृपति कहैं काहे तुमनि जैबै दीयौ ताहि । पांयनि परिकैं जतन करि राखे क्यौं नहि आहि ॥
भट्टाचारज जू कहैं ते ईश्वर जु स्वतंत्र । साक्षात श्री कृष्ण हैं ते जु नाहिं परतंत्र ॥
तौ ऊ बहुतें राखिबै कीनौ जत्न जु ताहि । ईस स्वतंत्र स्वभाव है राखि सकै नहि आहि ॥
नृपति कहैं तुम भट्ट जू विज्ञ सिरोमनि आहि । तातें मानी सांच हम कृष्ण कहत तुम ताहि ॥
इहां आगमन फेरि हूँ ह्वै है कबहूं ताहि । एक बार तिहि देखि करि करैं सफल चख आहि ॥
भट्टाचारज जू कहैं वेगि आय हैं सोइ । रहिवे कौं इक धाम तिहिं चहियै निर्जन जोइ ॥
होय जु ठाकुर कैं निकट निर्जन पुनि वह होय । ऐसौं निर्णय करि जु तुम देहु धाम इक सोय ॥
ऐसैं कासी मिश्र कौ नृपति कहैं हैं जोय । जगन्नाथ जू कें निकट है अति निर्जन सोय ॥
यौं कहि राजा रहे ह्वै उतकंठित अधिकाइ । भट्टाचार्य सबै कह्यौ काशीमिश्रहि जाइ ॥
काशी मिश्र कहैं जु हम भाग्यवान बहु जोइ । प्रभु पद कौ जु निवास मम घर मधि ह्वै है सोइ ॥
पुरुषोत्तम वासी सकल जन जितनें इहि भाय । प्रभु के मिलिबे कौं सकल उतकंठित मन चाय ॥
उत्कंठा सब लोक कैं जब अति बाढी सोय। दक्षिण ही तें श्री प्रभु जु तब ही आये जोय ॥

सुनि कें आनन्दित तबैं भयौ सबनि कौ हीय। सार्वभौम जू सौं सबनि आनि निवेदन कीय ॥
प्रभु के संग हम सबनि कौ मिलन करावौ सोइ। तुव प्रसाद करि कें लहैं प्रभु कौ दरसन जोइ ॥
भट्टाचारज जू कहैं कालि मिश्र घर सोइ। प्रभु जैहैं तब तुम सबनि तिन्हैं मिलै हैं जोइ ॥
आन दिवस मधि श्री प्रभु जु भट्टाचारज संग। जगन्नाथ दरस कियौ करि कैं महा जु रंग ॥
महाप्रसाद दियौ तहां मिले जु सेवक वृन्द। सब कौं आलिंगण करयौ सची तनय सुख कंद ॥
दरसन करि बाहिर चले श्री प्रभु जू अभिराम। भट्टाचारज लै तिन्हैं काशी मिश्र हि धाम ॥
कासी मिश्र जु आय कें प्रभु पद परे जु आहि। गेह सहित सब आतमा कियौ समर्पण ताहि ॥
श्री प्रभु जू ने चतुर्भुज मूर्त्ति दिखाई ताहि। प्रभु तिन्हैं अपनाय कैं किय आलिंगण आहि ॥
आसन मधि बैठे तहां श्री प्रभु जू सुख रासि। नित्यानन्द हि आदि जनगण बैठे चहु पास ॥
सुखी भये प्रभु देखि कें बसिबे कौ जु निवास। समाधान प्रभु कौ सकल इंही गेह सुख रास ॥
भट्टाचार्य कहैं जु प्रभु है तुम जोग्य निवास। तुम स्वीकार करौ अवैं यही मिश्र की आस ॥
कहैं जु प्रभु यह देह मम तुम सब ही कौं जान। जोई तुम सब ही करौ हम कौ सोइ प्रमान ॥
सार्वभौम बैठे तबैं प्रभु दच्छिण दिस जोय। पुरुषोत्तम वासी सबनि लगे मिलावन सोय ॥
प्रभु जू एई लोक सब बसैं नीलगिरि धाम। उतकंठित हैं ए सबैं तुव मिलवे अभिराम ॥
जैसे चातक तृषित ह्वैं घन की चाह अपार। ऐसैं एई सब तिन्हैं करौ जु अंगीकार ॥
जगन्नाथ कौ सेवक जु इही जनार्दन नाम। औसर बिन प्रभु की करैं अँग सेवा अभिराम ॥
कनक वेत्र धारी यही कृष्णदास अभिराम। अधिकारी है लिखन कौ सिखी माहिती नाम ॥
श्री प्रद्युम्न जु मिश्र ए वैष्णव मध्य प्रधान। जगन्नाथ के पाक कृत ए जु दास अभिधान ॥
यही मुरारि जु माहती सिखी माहती भ्रात। तुव चरणन बिन गति इन्हैं नाहि आन दिन रात ॥
चंदनेश्वर हंसेश्वर जु द्विज मुरारि जू नाम। विष्णु दास यह तुव चरण ध्यान करत अभिराम ॥
प्रहर राज परमानँद जु महापात्र ए दोइ। परम महामति है प्रथम तिनके संगी सोइ ॥
आभूषण इहि च्छेत्र के एई वैष्णव वृन्द। भजैं निरन्तर भाव सब तुम्हरे पद सुख कंद ॥
तब सब ही पायनि परे तहां दंडवत होइ। सब कौ आलिंगण करयौ प्रभु प्रसाद करि सोइ ॥
आये ऐसे समय में तहां भवानँद राय। चारि पुत्र कौं संग करि परे जु प्रभु के पाय ॥
भट्टाचारज जू कहैं ए भवानन्द राय। इनके जेठे पुत्र हैं रामानँद सुख दाय ॥
तबजु महाप्रभु प्रीति करि किय आलिंगन ताहि। स्तुति करि रामानन्द कौ विवरन कहैं जु आहि ॥
रामानँद जू सौं रतन जिहि कें तनय सु आहि। कहत बनें नहिं लोक मधि जैसी महिमा ताहि ॥
साच्छात जु तुम पांडु हो तुव तिय कुंती जोय। पांडव पांचौ पुत्र तुव है जु महामति सोय ॥
राय कहैं हम सूद्र औ विषई अधम जु आहि। ईश्वर कौ लच्छण यही परस कियौ तुव ताहि ॥
निज गृह धन जन पंच सुत इनके संग चितचाय। किय हम आत्मसमर्पन जु तुमरे पद सुख दाय ॥

रहि है वाणीनाथ यह प्रभु कें चरणनि जोइ । जोई आज्ञा जब करौं करि हैं सेवन सोइ ॥
करि हौं नहि संकोच कछु कहैं महाप्रभु ताहि । मेरे तुम किंकर सकल जनम जनम के आहि ॥
पांच सात हि दिवस मधि ऐहैं रामानन्द । निहि सँग पूरण होय गौ मेरौ जो आनन्द ॥
एतिक कहि कें श्री प्रभु जु किय आलिंगण ताहि । भवानंद के सुतनि के सिर पद धरे जु आहि ॥
घर हि पठायौ तिनही तब तहां महाप्रभु सोय । पट नायक राखे निकट बानीनाथ जु जोय ॥
भट्टाचारज जू सबै विदा कराये लोय । कृष्णदास काला तबै प्रभु जु बुलायौ सोय ॥
कहैं जु प्रभु सब ही सुनौं इंहि चरित्र की गाथ । इही विप्र दच्छिण दिसहि गयौ हमारे साथ ॥
भटमारी के संग गयौ मोहि छाडि कें आहि । आन्यौ जु हम उधारि कें भट्टमार तें याहि ॥
अब हम याकौं आनि कैं कीनौं विदाय सुनाय । जहां तहां उठि जाहु यह हम संग नाही दाय ॥
कृष्णदास एतिक जु सुनि रोवन लाग्यौ सोइ । मध्यान्ह जु करिवें गये उठि श्री प्रभु जु जोइ ॥
नित्यानँद जगदानँद जु दामोदर जु मुकुंद । चारि जननि हिय में करी जुक्ति तबै सुख कंद ॥
गौड देस कौं भेजिवे चहिये इक जन जोय । कहिवें जाय सु मात सौं प्रभु आगमन सोय ॥
श्री अद्वैत निवास जू आदि भक्त के वृन्द । आवैगे सुनि कें सबै प्रभु आगम सुख कंद ॥
दीजै गौड पठाय कैं कृष्णदास यह आहि । एतक कहि राख्यौ तबै समाधान करि ताहि ॥
आन दिवस श्री प्रभु निकट कियौ निवेदन आहि । आज्ञा दीजै गौडकौं इक जन दैहिं पठाय ॥
तुम्हरो दच्छिण दिस गमन सुनि के सची जु माय । अद्वैतादिक वैष्णव जु सवैं रहैं दुख पाय ॥
समाचार सुभ सब कहैं इक जन जाइ जु सोय । कहैं जु प्रभु सोई करौ तुम इच्छा है जोय ॥
गौड देस पठयौ तबै कृष्णदास द्विज सोइ । देवैं सब ही जननि कौं दियौ प्रसाद सु सोइ ॥
गौड देस आयौ तबै काला कृष्ण जु दास । नवद्वीप में सो गयौ शची मात के पास ॥
महाप्रसाद दियौ तबै नमस्कार करि ताहि । दच्छिण तें आये प्रभू समाचार दिय जाहि ॥
सुनि आनंदित भयौ श्री सची मात कौ सोय । श्री निवास जू आदि औ जितिक भक्तगण जोय ॥
भयौ जु सुनिके सवनि कें तबै परम उल्लास । गौ अद्वैताचार्य गृह कृष्णदास सुख रास ॥
दिय प्रसाद आचार्य कौं नमस्कार किय ताहि । भली भांति प्रभु के कहे समाचार सब आहि ॥
गोस्वामी आचार्य कें भयौ जु परमानन्द । हुँ कृति प्रेमावेस किय गीत नृत्य सुख कंद ॥
ठाकुर श्री हरिदास के परमानँद भौ जोय । गुप्त मुरारि सिवानन्द जु वासुदेव दत सोय ॥
रत्नाचार्ज औ पंडित जु बक्रेश्वर अभिराम । आचारज निधि और पुनि पँडित गदाधर नाम ॥
पंडित श्री दामोदर जु औ पंडित श्री राम । पुनि पंडित श्री मान औ विजय जु श्रीधर बाम ॥
आचारज नंदन जु औ राघव पंडित नाम । केतिक कहियै औ जिते प्रभु के गण अभिराम ॥
सुनि सब भक्तनि के हियें भयौ परम उल्लास । सब मिलि कें आये तबै श्री अद्वैतहि पास ॥

सुनि कैं आनन्दित तबैं भयौ सबनि कौ हीय । सार्वभौम जू सौं सबनि आनि निवेदन कीय ॥
प्रभु के संग हम सबनि कौ मिलन करावौ सोइ । तुव प्रसाद करि कैं लहैं प्रभु कौ दरसन जोइ ॥
भट्टाचारज जू कहैं कालि मिश्र घर सोइ । प्रभु जैहैं तब तुम सबनि तिन्हैं मिलौ हैं जोइ ॥
आन दिवस मधि श्री प्रभु जु भट्टाचारज संग । जगन्नाथ दरस कियौ करि कैं महा जु रंग ॥
महाप्रसाद दियौ तहां मिले जु सेवक वृन्द । सब कौं आलिंगण करयौ सची तनय सुख कंद ॥
दरसन करि बाहिर चले श्री प्रभु जू अभिराम । भट्टाचारज लै तिन्हैं काशी मिश्र हि धाम ॥
कासी मिश्र जु आय कें प्रभु पद परे जु आहि । गेह सहित सब आतमा कियौ समर्पण ताहि॥
श्री प्रभु जू ने चतुर्भुज मूर्त्ति दिखाई ताहि । प्रभु तिन्हैं अपनाय कैं किय आलिंगण आहि ॥
आसन मधि बैठे तहां श्री प्रभु जू सुख रासि । नित्यानन्द हि आदि जनगण बैठे चहु पास ॥
सुखी भये प्रभु देखि कें बसिबे कौ जु निवास । समाधान प्रभु कौ सकल इंही गेह सुख रास ॥
भट्टाचार्य कहैं जु प्रभु है तुम जोग्य निवास । तुम स्वीकार करौ अबै यही मिश्र की आस ॥
कहैं जु प्रभु यह देह मम तुम सब ही कौं जान । जोई तुम सब ही करौ हम कौं सोइ प्रमान ॥
सार्वभौम बैठे तबैं प्रभु दच्छिण दिस जोय । पुरुषोत्तम वासी सबनि लगे मिलावन सोय ॥
प्रभु जू एई लोक सब बसैं नीलगिरि धाम । उतकंठित हैं ए सबैं तुव मिलवे अभिराम ॥
जैस चातक तृषित ह्वै घन की चाह अपार । ऐसैं एई सब तिन्हैं करौ जु अंगीकार ॥
जगन्नाथ कौ सेवक जु इही जनार्दन नाम । औसर विन प्रभु की करैं अँग सेवा अभिराम ॥
कनक वेत्र धारी यही कृष्णदास अभिराम । अधिकारी है लिखन कौ सिखी माहिती नाम ॥
श्री प्रद्युम्न जु मिश्र ए वैष्णव मध्य प्रधान । जगन्नाथ के पाक कृत ए जु दास अभिधान ॥
यही मुरारि जु माहती सिखी माहती भ्रात । तुव चरणन बिन गति इन्हैं नाहि आन दिन रात ॥
चंदनेश्वर हंसेश्वर जु द्विज मुरारि जू नाम । विष्णु दास यह तुव चरण ध्यान करत अभिराम ॥
प्रहर राज परमानँद जु महापात्र ए दोइ । परम महामति है प्रथम तिनके संगी सोइ ॥
आभूषण इहि क्षेत्र के एई वैष्णव वृन्द । भजैं निरन्तर भाव सब तुम्हरे पद सुख कंद ॥
तब सब ही पायनि परे तहां दंडवत होइ । सब कौ आलिंगण करयौ प्रभु प्रसाद करि सोइ ॥
आये ऐसे समय में तहां भवानँद राय । चारि पुत्र कौं संग करि परे जु प्रभु के पाय ॥
भट्टाचारज जू कहैं ए भवानन्द राय । इनके जेठे पुत्र हैं रामानँद सुख दाय ॥
तबजु महाप्रभु प्रीति करि किय आलिंगन ताहि । स्तुति करि रामानन्द कौ विवरन कहैं जु आहि ॥
रामानँद जू सों रतन जिहि कें तनय सु आहि । कहत बनें नहिं लोक मधि जैसी महिमा ताहि ॥
साक्षात जु तुम पांडु हो तुव तिय कुंती जोय । पांडव पांचौ पुत्र तुव है जु महामति सोय ॥
राय कहैं हम सूद्र औ विषई अधम जु आहि । ईश्वर कौ लक्षण यही परस कियौ तुव ताहि ॥
निज गृह धन जन पंच सुत इनके संग चितचाय । किय हम आत्मसमर्पन जु तुमरे पद सुख दाय ॥

रहि है वाणीनाथ यह प्रभु कें चरणनि जोइ । जोई आज्ञा जब करौ करि हैं सेवन सोइ ॥
करि हौं नहि संकोच कछु कहैं महाप्रभु ताहि । मेरे तुम किंकर सकल जनम जनम के आहि ॥
पांच सात हि दिवस मधि ऐहैं रामानन्द । जिहि सँग पूरण होय गौ मेरौ जो आनन्द ॥
एतिक कहि कें श्री प्रभु जु किय आलिंगण ताहि । भवानंद के सुतनि के सिर पद धरे जु आहि ॥
घर हि पठायौ तिनही तब तहां महाप्रभु सोय । पट नायक राखे निकट बानीनाथ जु जोय ॥
भट्टाचारज जू सबै विदा कराये लोय । कृष्णदास काला तबै प्रभु जु बुलायौ सोय ॥
कहैं जु प्रभु सब ही सुनौ इंहि चरित्र की गाथ । इही विप्र दच्छिण दिसहि गयौ हमारे साथ ॥
भटमारी के संग गयौ मोहि छाडि कें आहि । आन्यौ जु हम उधारि कें भट्टमार तें याहि ॥
अब हम याकौं आनि कैं कीनौ विदाय सुनाय । जहां तहां उठि जाहु यह हम संग नाही दाय ॥
कृष्णदास एतिक जु सुनि रोवन लाग्यौ सोइ । मध्यान्ह जु करिवें गये उठि श्री प्रभु जु जोइ ॥
नित्यानँद जगदानँद जु दामोदर जु मुकुंद । चारि जननि हिय में करी जुक्ति तबै सुख कंद ॥
गौड देस कौं भेजिवे चहिये इक जन जोय । कहिवें जाय सु मात सौं प्रभु आगमन सोय ॥
श्री अद्वैत निवास जू आदि भक्त के वृन्द । आवैंगे सुनि कें सबै प्रभु आगम सुख कंद ॥
दीजै गौड पठाय कैं कृष्णदास यह आहि । एतक कहि राख्यौ तबै समाधान करि ताहि ॥
आन दिवस श्री प्रभु निकट कियौ निवेदन आहि । आज्ञा दीजै गौडकौं इक जन देंहि पठाय ॥
तुम्हरो दच्छिण दिस गमन सुनि के सची जु माय । अद्वैतादिक वैष्णव जु सवैं रहैं दुख पाय ॥
समाचार सुभ सब कहैं इक जन जाइ जु सोय । कहैं जु प्रभु सोई करौ तुम इच्छा है जोय ॥
गौड देस पठयौ तबै कृष्णदास द्विज सोइ । देवैं सब ही जननि कौं दियौ प्रसाद सु सोइ ॥
गौड देस आयौ तबै काला कृष्ण जु दास । नवद्वीप में सो गयौ शची मात के पास ॥
महाप्रसाद दियौ तबै नमस्कार करि ताहि । दच्छिण तें आये प्रभू समाचार दिय जाहि ॥
सुनि आनंदित भयौ श्री सची मात कौ सोय । श्री निवास जू आदि औ जितिक भक्तगण जोय ॥
भयौ जु सुनिके सबनि कें तबै परम उल्लास । गौ अद्वैताचार्य गृह कृष्णदास सुख रास ॥
दिय प्रसाद आचार्य कौं नमस्कार किय ताहि । भली भांति प्रभु के कहे समाचार सब आहि ॥
गोस्वामी आचार्य कें भयौ जु परमानन्द । हुँ कृति प्रेमावेस किय गीत नृत्य सुख कंद ॥
ठाकुर श्री हरिदास के परमानँद भौ जोय । गुप्त मुरारि सिवानन्द जु वासुदेव दत सोय ॥
रत्नाचार्ज औ पंडित जु बक्रेश्वर अभिराम । आचारज निधि और पुनि पँडित गदाधर नाम ॥
पंडित श्री दामोदर जु औ पंडित श्री राम । पुनि पंडित श्री मान औ विजय जु श्रीधर बाम ॥
आचारज नंदन जु औ राघव पंडित नाम । केतिक कहियै औ जिते प्रभु के गण अभिराम ॥
सुनि सब भक्तनि के हियें भयौ परम उल्लास । सब मिलि कें आये तबै श्री अद्वैतहि पास ॥

आचारज के चरण कौं प्रनत करी सब आय । आचारज गोस्वामी किय सब परि रंभण चाय ॥
आचारज दिन दोय त्रय कियौ महोत्सव सोय । जगन्नाथ जैवैं सवनि भई जुक्ति दृढ जोय ॥
सब मिलि नदिया ग्राम तें तवैं जु इक ठां होय । लीलाचल चलिवे लई आज्ञा सचि सौं सोय ॥
बासी ग्राम कुलीन के सुनि प्रभु आगम चाय । सत्यराज रामानँद जु मिले जु सब ही आय ॥
रघुनंदन नरहरि मुकुँद खंड देस तें धीर । आये जैवे नीलगिरि आचारज के तीर ॥
दच्छिण तें ताही समें पुरी जु परमानंद । आये नदिया सुर सरित तीर तीर सुख कन्द ॥
सचीमात के सदन में सुख करि किय विश्राम । मात तिन्हैं भीच्छा दई किय आदर अभिराम ॥
श्री प्रभु जू के आगमन सुन्यौं तहां तिहि आहि । शीघ्र नीलगिरि जाइवें इछा भई जु ताहि ॥
श्री प्रभु कौं इक भक्त द्विज कमलानँद अभिधान । तिहिं लै लीलाचलहि तब कीनौ वेग पयान ॥
वेगि तहां आये जु ते मिले जु प्रभु कौं आहि । श्री प्रभु कौं आनंद भौ तबै जु पायें ताहि ॥
कीनी प्रेमावेस मधि चरण वंदना ताहि । तिन हूँ प्रेमावेस किय प्रभु आलिंगन आहि ॥
कहैं जु प्रभु तुम संग में रहिबैं वांछा सोय । मेरे ऊपर करि कृपा वसौ नील गिरि जोय ॥
रहिवे की बांछा जु करि पुरी कहैं तुम संग । आये चलि के गौड तें नीलाचल बहु रंग ॥
सुनि कैं दच्छिण देस तैं तुम आगम सुख कंद । आनँद भौ सचि कैं जु औ जेतिक भक्तनि वृन्द॥
सबहि आवतहैं तुम्हैं देखन हित चित चाय । तिन सबकौ जु विलंव लखि हमआये चलिधाय ॥
श्री स्वरूप दामोदर जु आये वासर आन । प्रभु के अति ही मर्म रससागर परम सुजान ॥
काशीमिश्र निवास में एक निभृत घर आहि । सेवा कौं किंकर दियौ श्री प्रभु जू ने ताहि ॥
पुरुषोत्तम आचार्य्य जू पूर्वाश्रम तिहि नाम । नवद्वीप में ते जु हैं प्रभु चरननि अभिराम ॥
प्रभु जू कौ संन्यास लखि तव उन्मत्त जु होय । कियौ ग्रहण संन्यास कौं काशी जाय जु सोय ॥
चैतन्यानंदहि गुरू आज्ञा दीनी ताहि । पढ़ि वेदांत पढ़ाय पुनि सकल लोक कौं आहि ॥
परम विरक्त जु ते सदा पंडित परम विचित्र । मन वच क्रम करि आसरौ है श्री कृष्ण चरित्र ॥
निहिचैं कृष्णहि भजेंगे यही जु कारण जोइ । कियौ ग्रहण संन्यास कौ करि उन्माद जु सोय ॥
सिखा सूत्र के त्याग मय किय संन्यास अनूप । योग पट्ट नाहीं लियौ नाम भयौ जु स्वरूप ॥
आये श्री लीलाचलहि आज्ञा लै गुरु पास । आनंद विहवल रैंन दिन कृष्ण प्रेम रस रास ॥
अवधि महापांडित्य की बात न किहि संग आहि । निर्जन माहि रहैं जु सब लोक न जानें ताहि॥
तत वेता श्री कृष्ण रस देह प्रेम कौ रूप । श्री प्रभु कौ साच्छात ये हैंगे दुतिय स्वरूप ॥
ल्यावें प्रभु तट ग्रंथ औ पद्य गीत कों कोइ । करैं परीच्छा ते जु प्रभु पाछें सुनें जु सोय ॥
बिरुद्ध भक्ति सिद्धांत औ और जु रस आभास । सुनत होत कवहूँ नहीं प्रभु कैं हिय उल्लास ॥
याही तें जु स्वरूप जू करें परिच्छण आहि । सुद्ध होय तौ श्री प्रभुहि श्रवण करावै ताहि ॥
चंडीदास विद्यापति और गीतगोविन्द । इनही तीनौं गाय कें करैं जु प्रभु आनंद ॥

गान माहि गांधर्ब सम सास्त्र हि सुरगुरु रूप । दामोदर सम और नहिं महा सुबुद्धि अनूप ॥
नित्यानँद अद्वैत के परम पियारे प्राण । श्री निवास जू प्रभृति जन गण के प्राण समान ॥
सो दामोदर जू तहां भये दंडवत आइ । चरणनि परि कें पद्य कौं लगे पठन सुख दाइ ॥

तथाहि चैतन्यचन्द्रोदयनाटके—

हेलोद्धूलितखेदया विशदया प्रोन्मीलदामोदया, शाम्यच्छास्त्रविवादया रसदया चित्तार्पितोन्मादया ।
शश्वद्भक्तिविनोदया समदया माधुर्य्यमर्य्यादया, श्रीचैतन्यदयानिधे तव दया भूयादमन्दोदया ॥३॥

प्रभु जू तबै उठाय कैं किय आलिंगन ताहि । विविजन प्रेमावेस करि भये अचेतन आहि ॥
केतिक छिन में थिर भये दोऊ जन तब आहि । तबै महाप्रभु जू तहां लागे कहन जु ताहि ॥
तुम आगम जौ आजु हम लख्यौ स्वप्नमें सोय । भली भई अब अंध जिमि द्वै चख पाये जोय ॥
कहै स्वरूप जु गौर जू छमि मेरौ अपराध । तुम तजि और हि ठौर गौ करयौ प्रमाद अगाध ॥
मेरे श्री प्रभु पदनि मधि नही प्रेम कौ लेस । तुम्है छाडि पापी जु हौं गयौ और ही देस ॥
मैं तुम कौं छाडयौ तुमनि मो कौं छाड्यौ नाहि । नित्यानँद प्रभु जू कियौ प्रेमालिंगन ताहि ॥
सार्वभौम जगदानँद जु संकर और मुकुंद । यथा योग्य सब सौं कियौ तिन्हौ मिलन सुख कंद ॥
परमानंद पुरी चरण करी बंदना आहि । पुरी गुसांई जू कियौ प्रेमालिंगन ताहि ॥
प्रभु जू नें एकांत घर वसिवे कौं दिय ताहि । जल आदिक सेवा टहल हित इक किंकर आहि ॥
सार्वभौम जू आदि जन संग और दिन सोइ । वैठे हैं श्री प्रभु तहां कृष्ण कथा रँग जोय ॥
इही समें गोविंद कौ भयौ आगमन जोय । कहैं बचन करैं विनय करि जु दंडवत सोय ॥
पुरी जु ईश्वर कौ अनुग गोविंद मेरौ नाम । तिनकी आज्ञा तें जु मैं आयौ तुम्हारे धाम ॥
सिद्धि प्राप्ति के समय तिहिं आज्ञा किय मुहि आहि । निकट कृष्ण चैतन्य कें रहि सेवौ जे ताहि ॥
आवैंगे काशीश्वर जु तीरथ देखि सु भाय । प्रभु की आज्ञा पाय मैं तुम पद आयौ धाय ॥
कहैं जु प्रभु ईश्वर पुरी वात्सल्य किय मोहि । कृपा करी मो पास अब तिहिं पठयौ है तोहि ॥
सार्बभौम जु एतिक सुनि प्रभु कौं पूछ्यौ सोइ । पुरी गुसांई शूद्र जन कितनें राख्यौ जोइ ॥
कहैं जु प्रभु ईश्वर सदा हैंगे परम स्वतंत्र । ईश्वर की जु कृपा नही वेदनि के परतंत्र ॥
ईश कृपा कुल जाति कौं नेंक हुँ मानत नाहि । कृष्ण कियौ भोजन रुचिर विदुर गेह के मांहि ॥
नेह लेह की चाह इक ईस कृपा को सोइ । करै स्वतन्त्र जु आचरण नेह लेस वस होइ ॥
मर्य्यादा तें कोटि सुख नेह आचरन माहि । परम आनँद जु होत है श्रवन सुनें तें ताहि ॥
गोविंदकौं श्रीप्रभु कियौ आलिंगन चित चाय । गोविंद ने सबकौं करी चरण प्रणति सुख पाय ॥
सार्वभौम मन में करौ प्रभु जू कहैं विचार । गुरु कौ किंकर है हमैं मान्य सदा निरधार ॥
समरथ नहि करवाइबैं अपनी सेवा ताहि । गुरु दीनी आज्ञा यहै कहा उपाय जु याहि ॥
भट्टाचारज जू कहैं गुरु आज्ञा वलबान । गुरु आज्ञा नहि लंघिये शास्त्र यहै जु प्रमान ॥

तथाहि रघुवंशे—

स शुश्रु दान्मातरि भार्गवेण पितु र्नियोगात् प्रहृतं द्विषद्वत्।
प्रत्यग्रहीदग्रजशासनं तत् आज्ञा गुरुणां ह्यविचारणीया ॥ ४ ॥

तबै महाप्रभु जू कियौ तिहि कौ अंगीकार। सेवा अपने अंग की ताकौं दिय अधिकार ॥
प्रभु जू कौ प्रिय भक्त करि सब ही करैं जु मान। सब जन कौं गोविंद करैं समाधान है मान ॥
कीर्त्तनिया छोटे बड़े दोऊ ए हरिदास। रामाई नन्दाई पुनि रहैं जु गोविंद पास ॥
श्री प्रभु कौ सेवन करैं गोविंद जू के संग। सीमा वरनी जात नहि गोविंद भाग्य अभंग ॥
और दिवस प्रभु के निकट कहै जु दत्त मुकुंद। आये तुम्हरे दरस हित भारति ब्रह्मानन्द ॥
श्री प्रभु आज्ञा दीजियै जो ह्यां ल्यावै ताहि। कहैं जु प्रभु गुरु ते जु तिहि पास जायबैं आहि ॥
सब भक्तनि कौं संग करि एतिक कहि प्रभु धीर। चलि आये ब्रह्मानँद जु भारति जू कें तीर ॥
पहिरें ब्रह्मानंद जू मृग चर्माम्बर आहि। दुखित भये अंतर महा प्रभु जू लखि कें ताहि ॥
लखि कैं हूँ कीनौ छल जु जानौ लख्यौ न ताहि। गोस्वामि भारती कहाँ पूछें मुकुँद हि आहि ॥
कहैं मुकुंद लखो इन्हैं आगें हैं विदमान। कहैं जु प्रभु ते नाहिनें तुम्हरे है अज्ञान ॥
नहीं ज्ञान तुब और कौ कहौ और ही नाम। गोस्वामी श्री भारती क्यौं पहिरैंगे चाम ॥
सुनि कैं ब्रह्मानन्द जू करैं हिये जु विचार। मेरौ चर्मांवर यही नहि इनकौं सुख सार ॥
भलैं कहैं चर्माम्बर जु पहिरचौ दंभ विचार। चर्मांवर के पहिरवें तरि हैं नहि संसार ॥
पहिरौंगौ नहि आजु तें यह चर्माम्बर सोय। मगवायौ हिय जानि प्रभु वहिर्वास तब जोय ॥
चर्म छाडि ब्रह्मानंद पहिरचौ बसनजु आहि। श्रीप्रभु जू नें आय किय चरण वन्दना ताहि ॥
कहैं भारती तुब चरित लोक सीख कौं जोइ। फेंरि न करिहौ नति हमें चित्त लहै भय सोइ ॥
इहां चलाचल जु श्री प्रभु संप्रति ब्रह्म जु दोय। जगन्नाथ जू अचल तुम सचल ब्रह्म हौ सोइ ॥
गौर ब्रह्म हौ तुम प्रभू ते जु वरण है स्याम। दोऊ ब्रह्म किय सब जगत तारण अति अभिराम ॥
कहैं प्रभु सत्य जु कह्यौ तुमरौ आगम सोइ। श्री पुरुषोत्तम धाम में प्रगट ब्रह्म जु दोइ ॥
गौर ब्रह्म तुम प्रभु जु चल ब्रह्मानंद जु नाम। जगन्नाथ बैठे अचल ब्रह्म है जु अँग स्याम ॥
सार्वभौम सौं भारती कहैं बीच तुम होय। इन संग मेरौ न्याय तुम मम दै बूझौ सोय ॥
व्याप्यजु व्यापक भाव मधिजीव ब्रह्महै जानि। जीव व्याप व्यापक दुतियकहैं जुशास्त्र वखानि ॥
कियौ जु चर्म छुडाय कैं सोधन मेरौ जोइ। व्याप जु व्यापक दुहुनि कौ यहै जु कारण सोइ ॥

तथाहि महाभारते दानधर्म्मे—

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी। सन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शांतिपरायणः ॥ ५ ॥

इन सब नामनि के जु ये निज निवास है जोय। चंदन मिल्यौ प्रसाद गुण श्री भुज अंगद सोय ॥
भट्टाचार्य कहैं जू तुम भारति लखियै जीति। कहैं जु प्रभु जोई कहौ सो जु सत्य इह नीति ॥

है गुरु शिष्य जु न्याय मधि सत्य सिष्य की हार। कहैं भारती यही नहीं हेतु और निरधार ॥
भक्त पास हेरौ जु तुम यह तुमरौ जु स्वभाव। औरौ एक सुनौ जु तुम आपन कौ जु स्वभाव ॥
हम आजन्म करौं सदा निराकार कौ ध्यान। तुम देखे तें कृष्ण कौ भौ मो कौं विदिमान ॥
कृष्ण नाम मुख में फुरैं मन नैननि श्री कृष्ण। तुम प्रभु कौ तद्रूप लखि मेरौ हृदय सतृष्ण ॥
कही बिल्व मंगल जु जिमि दसा आपनी जोय। इन्हें देखि करिकैं भई मेरी दशा जु सोइ ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धुधृतविल्वमंगल कृत श्लोकं—

अद्वैतवीथीपथिकैरुपास्याः स्वानन्दसिंहासन लब्धदीक्षाः।
हठेन केनापि वयं शठेन दासीकृता गोपवधूविटेन ॥ ३॥

कहैं जु प्रभु श्री कृष्ण मधि तुव दृढ़ प्रेम जु सोइ। परैं नयन जितही तहां कृष्ण स्फूर्ति जू होइ ॥
भट्टाचारज जू कहैं विवि के सांचे वैंन। आगें जो साक्षात दिय दरस कृष्ण रस ऐंन ॥
प्रेम बिना तब हूं नहीं प्रगट दरस तिहि जोय। इन ही की इक कृपा तें इनकौ दरसन होय ॥
कहैं जु प्रभु हरि हरि कहौ सार्वभौम जू सोय। अति स्तुति है जानौ यही निंदा लक्षण जोय ॥
एतिक कहि लैं भारती आये अपने धाम। रहैं भारती गौर कैं निकट तहां अभिराम ॥
राम भद्र आचार्य औ आचारज भगवान। प्रभु पद में दोऊ रहैं तजि कैं कारज आन ॥
काशीश्वर गोस्वामि जू आये वासर आन। प्रभु राखे निज धाम में करि कैं बहु सनमान ॥
श्री प्रभु कौ करवाय लिय ईश्वर दरसन सोइ। आगे लोक जु भीर सब करि जु निवारण जोइ ॥
जैसैं जेतिक नदनदी मिलत समुद्र हि जाय। तैसैं प्रभु कौं भक्त सब जहां तहां ते आय ॥
सब ही आय मिले तहां श्री प्रभु पद अभिराम। श्री प्रभु जू करिकैं कृपा सब राखे निज धाम ॥
श्री प्रभु कौ यही कह्यौ वैष्णव मिलन जु आहि। पावैं श्री चैतन्य पद जोई सुने जु याहि ॥
श्री जु रूप रघुनाथ के चरणन की जिहि आस। चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस। चरितामृत प्रभु कौ लिखै व्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे व्रजभाषायां वैष्णव मिलनं नामो दशमोध्यायः ॥

एकादश परिच्छेदः

अत्युद्दंडं तांडवं गौरचंद्रः कुर्वन् भक्तैः श्रीजगन्नाथगेहे।
नानाभावालंकृताङ्गः स्वधाम्ना चक्रे विश्वं प्रेमवन्यानिमग्नं ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानन्द। जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
सार्वभौम प्रभु के निकट कहैं और दिन जोय। अभै दान मम देहु तब करौ निवेदन सोय ॥

कहैं जु प्रभु तुम कहौ कछु भय न करौ हिय माहि। करिहैं हम जो जोग्य है करैं आजोग्य जु नाहि ॥
भट्टाचारज जू कहैं यह गजपति नृप सोय। तुम सौं मिलवे कौं चहैं उत्कंठित है सोय ॥
दै कर्णन कर प्रभु रहत नारायण अभिराम। सार्वभौम काहे कहौ बचन अजोग्य अकाम ॥
संन्यासी जु विरक्त हम तिहि नृप दरसन सोइ। त्रिय दरसन सम है यहै विष कौ भक्षन जोइ ॥

श्री चैतन्यचन्द्रोदयनाटके —

निष्किञ्चनस्य भगवद्भजनोन्मुखस्य, पारं परं जिगमिषोर्भवसागरस्य।
सन्दर्शनं विषयिणामथ योषिताञ्च, हाहन्त ! हन्त ! विषभक्षणतोऽप्यसाधु ॥२॥

भट्टाचार्य कहैं जु तुम सत्य बचन यह जोय। जगन्नाथ सेवग तऊ नृप भक्तोत्तम सोय ॥
कहैं जु प्रभु तौऊ नृपति काल सर्प आकार। दारमयी नारी परसि जिमि उपजतु जु विकार ॥

तथाहि तत्रैव—

आकारादपि भेतव्यं स्त्रीणां विषयिणामपि। यथाहेर्मनसः क्षोभस्तथा तस्याकृतेरपि ॥३॥

ऐसी बात हि फेरि हूं ल्यावौ नहि सुख माहि। कहि हौ तुम जौ तब हमैं इहां देखि हौ नाहि ॥
सार्वभौम भय पाय कैं गौ निज घर अभिराम। इही समैं आयौ नृपति श्री पुरुषोत्तम धाम ॥
श्री रामानँद राय जू आये गजपति संग। आय प्रथम हि श्री प्रभु हि मिले जु करि वहु रंग ॥
राय प्रणति कीनीं प्रभुहि किय आलिंगण ताहि। बिवि जन प्रेमावेस मधि क्रंदन करैं जु आहि ॥
श्री प्रभु जू कौ राय संग निरखि नेह व्यवहार। सकल भक्तगन मन भयौ चमत्कार सुख सार ॥
राय कहैं आज्ञा जु तुव नृप कौं कही जु सोइ। तुम इछा करि नृपति मम विषय छुडायौ जोइ ॥
कह्यौ जु हम हम तैं जु अब विषय होत है नाहि। तुव आज्ञा जौ होय तौ रहौं गौर पद माहि ॥
राजा आनन्दित भयौ सुनि कैं तुम्हारौ नाम। आसन तें उठि मम कियौ आलिंगण अभिराम ॥
अति ही प्रेमावेस मधि भौ सुनिकैं तुव नाम। मम मस्तक कर धरि कहै हित विशेष अभिराम ॥
तुम्हरी जो है जीवका तुम ही खावौ सोइ। सेवौ श्री प्रभु के चरण तुम निश्चिंत जु होइ ॥
हम हैं छार जु जोग्य नहि तिनके दरसन आहि। जीवौ ताकौ सफल है जोई सेवै ताहि ॥
प्रभु जु परम कृपाल तें हैं व्रजराज कुमार। देहैं दरसन अवसि मम काहू जन्म मझार ॥
जो तिंहिं की प्रेमार्ति हम देखी तुम में आहि। सो हम में नहि प्रीति है एक लेस हूं ताहि ॥
कहैं महाप्रभु जू तबै तुम हरि भक्त प्रधान। तुम सौं जो प्रीति हि करै भाग्यवान सो जान ॥
तुम सौं एतिग प्रीति जो भई नृपति कें आहि। करि हैं अंगीकार हरि याही गुण करि ताहि ॥

तथाहि आदिपुराणे—

ये मे भक्तजनाः पार्थ नमे भक्ताश्च ते जनाः। मद्भक्तस्य च ये भक्ता स्ते मे भक्ततमामताः ॥४॥

पुरी गुसाई भारती नित्यानन्द स्वरूप। चार गुसाई के चरण नुति किय राय अनूप ॥
जगदानन्द मुकुन्दजू आदि जितिक जनवृन्द। यथा जोग्य सब सौं कियौ मिलन महा सुखकन्द ॥

कहैं जु प्रभु तुम राय जू कौन कर्म किय सोइ। ईश्वर नहीं देखे प्रथम क्यौ ह्यां आये जोय ॥
हृदय सारथी चरण रथ कहैं तहां यौं राय। जहां जाय लैं कैं तहां जीव रथी पहिराय ॥
करियै कहां जु मन इहां लैं आयौ सुख सार। जगन्नाथ के दरस मधि कीनौ नाहि विचार ॥
वेगि जाव प्रभुजू कहैं करौ जु दरसन ताहि। करौ कुडम्ब मिलाय ज्यौं घरमधि जाय जु आहि ॥
चले राय जू दरस हित आज्ञा ले कें ताहि। प्रेम भक्ति की रीति तिहिं को जन समुझै आहि ॥
बुलये भट्टाचार्य जू चेत्र आय नृप आहि। नुति करि भट्टाचार्य की पूछ्यौ तिति पुनि ताहि ॥
प्रभु पद मधि विनती करी मम हित लगि निरधार। भट्टाचारज जू कहैं कीनैं जतन अपार ॥
तेऊ नाहि करैं जु ते नृप कौ दरसन आहि। छाडै चेत्र जु फेरि कें करिये विनती ताहि ॥
सुनि कें राजाके मनहि उपज्यौ अति दुख सोय। करि विषाद तवही कछु लाग्यौ कहिवैं जोय ॥
पापी नीच उधार हित कीनौं तिंहिं अवतार। सुने जगाई तिन करैं माधाई उद्धार ॥
तजि प्रताप रुद्र जु सकल करि है जग उद्धार। यही प्रतिज्ञा करि कियौ जान्यौ है अवतार ॥

तथाहि श्रीचैतन्यचन्द्रोदयनाटके—

अदर्शनीयानपि नीचजातीन् स वीक्षते हन्त तथापि नो मां।
मदेकवर्ज्जं कृपयिष्यतीति निर्णीय किं सोऽवततार देवः ॥२॥

करि हैं मेरौ दरस नहि यही प्रतिज्ञा ताहि। तिन विन छाडौं जीव मम यहै प्रतिज्ञा आहि ॥
श्री प्रभु जू कौ जो नही लहौं कृपाधन सोइ। कहा राज देह सु कहा सवै अकारण जोइ ॥
भट्टाचारज इतिक सुनि चिंता जुत भौ जोइ। राजा कौ अनुराग लखि भये जु विस्मित सोइ ॥
भट्टाचारज जू कहैं देव करौ न विषाद। तुम पर निहचैं होयगौ श्री प्रभु कौ जु प्रसाद ॥
ते आधीन जु प्रेम कें तुम्हरें प्रेम अपार। कृपा करावैंगौ यहै तुम ऊपर निरधार ॥
रथ जात्रा के दिवस प्रभु सकल भक्त लै सोइ। रथ आगैं नृत्य हि करैं प्रेमाविष्ट जु होइ ॥
प्रेम विवस करि पुष्पवन करैं जु प्रभु परिवेस। तिही काल तुम एकले तजि कें नृप कौ वेस ॥
कृष्ण नाम कौ रटत पुनि पंचाध्याई चाय। श्री प्रभु जू के चरण सिर धरौ एक लै जाय ॥
वाह्यज्ञान नहिं तिंहिं समैं सुनत कृष्ण कौ नाम। आलिंगन करि हैं तुम हि जानि भक्त अभिराम ॥
आजु तिहारे प्रेम गुण श्री रामानँद राय। प्रभु जु कौ मन है फिरयौ प्रभु सौं कह्यौ बनाय ॥
सुख उपज्यौ अतिही सवै सुनिकैं गजपति हीय। श्री प्रभु जू के मिलन हित यही मंत्र दृढ़ कीय ॥
स्नान जु जात्रा होय कब पूछी भट्ट हि जोय। जात्रा के दिन तीन हैं भट्ट कहैं यों सोय ॥
स्नानजु जात्रा देखि प्रभु पायौ अति सुख सोय। प्रभुजू कौं अनसमयमें भयौ विरह दुख जोय ॥
विरह गोपिका भाव करि प्रभु जू बिहबल होय। गये जु नाथ अलालकौं सव कौं तजि कैं सोय ॥
पाछें जनगण सव गये प्रभु के चरणनि सोम। भक्त जु आये गौड तें कियौ निवेदन जोय

सार्वभौम लीलाचल हि आये प्रभु लै जोइ । प्रभु आये राजा निकट कह्यौ जाय कैं सोइ ।।
इहीं समें आये तहां गोपीनाथाचार्य । नृप कौं आसिष करि कहैं सुनौ जु भट्टाचार्य ।।
गौड देस तें वैष्णव जू आये हैं सत दोय । श्री प्रभु जू के भक्त महा भागवत सोय ।।
कहैं नृपति अति कृतहि हम करि हैं आज्ञा जोय । गेह आदि जो चाहियै दै हैं अधिकृत सोय ।।
प्रभु के गण आये जितिक गौड देस तें जोय । इक इक भट्टाचार्य जू मोहि दिखावौ सोय ।।
भट्ट कहैं अट्टालिका चढि कैं सब कौं चाहि । चिन्हत गोपीनाथ सब दरस करावैं आहि ।।
हम काहू जानत न हैं जान्यौ चाहत जोय । गोपीनाथाचार्य जू सब हि चिन्हावैं सोय ।।
एतिक कहि तीनौं जने चढ़े अटारी जाय । इही समें सब भक्तगण निकटहि निकसे आय ।।
दामोदर जु स्वरूप जू औ गोविन्द जन दोय । स्रक प्रसाद लैं जात हैं जहां भक्तगण सोय ।।
श्री प्रभु जू नें प्रथमहि दुहुनि पठायौ सोइ । नृपति कहैं चिनबौं हमें ए जु कोन हैं दोइ ।।
भट्टाचार्य कहैं जु ए दामोदर जु स्वरूप । श्री प्रभु जू के ए जु हैं दुतिय रूप अनरूप ।।
दुतीय गोविंद भृत्य ये सब कौं दे कैं आहि । माला पठइ हैं जु प्रभु गौरव करि कैं याहि ।।
प्रथमहि स्रक अद्वैत कौं पहराई जु स्वरूप । पाछें गोविद दुतिय स्रक तिहिं दिय आनि अनूप ।।
आचारज कौं प्रणति तब किय गोविंद अनूप । जानत नहि अद्वैत तिहि पूछ्यौ तब जु स्वरूप ।।
श्री दामोदर जू कहैं ए गोविन्द अभिधान । श्री जुत ईश्वर पुरी के सेवग अति गुणवान ।।
प्रभु सेवा करिवें दई पुरी जु आज्ञा याहि । याही ते प्रभु जू इन्हैं निकट हि राख्यौ आहि ।।
नृपति कहैं जिन कौं दई माला सो जन दोय । कहि आचारज है जु ये महामहंत जु कोय ।।
कही आचारज नाम यहू श्री अद्वैताचार्य । पूज्यपात्र श्री गौर के सब ही के सिर धार्य ।।
वक्रेश्वर श्री वास ए पंडित नामा दोय । विद्या निधि आचार्य ए पँडित गदाधर सोय ।।
श्री युत रत्न पुरंदर जु आचरज ए दोय । ए श्री गंगादास ए पंडित संकर सोय ।।
पंडित गुप्त मुरारि ए श्री नारायण नाम । ठाकुर श्री हरिदास ए पावन तीनौ धाम ।।
है गे ये हरि भट्ट ए श्री नरसिंहानंद । वासुदेब दत्त ये जु हैं सिवानंद सुख कंद ।।
गोविंद माधौ और श्री वासुदेव जु घोष । इन तीननि के कीरतन प्रभु पावत संतोष ।।
आचारज नंदन जु ए राघव पंडित जान । नारायण श्री कांत ए पंडित हैं श्री मान ।।
ए शुक्लांवर ए जु हैं श्रीधर विजय जु दोय । पुरुषोत्तम संजय जु ए वल्लभ सेन जु सोय ।।
वासी ग्राम कुलीन के सत्यराज श्री खान । रामानंद जु आदि सब ए देखौ विदिमान ।।
मुकुँद दास नरहरि जु औ रघुनंदन अभिराम । चिरंजीव वासी खंड और सुलोचन नाम ।।
केतिक कहिये देखिये जेतिक जन हैं जोय । सब ही श्री प्रभु गणनि के श्री प्रभु जीवन सोय ।।
नृपति कहैं लखि कैं भयौ अचिरज मो हिय माहि । जिनकौ ऐसौ तेज औ देख्यौ कहूं जु नाहि ।।
कोटि सूर्य सम सबनि कौं उज्वल बरन जु सोय । कबहूं नहि देख्यौ जु यह मधुर कीरतन जोय ।।

ऐसो प्रेम जु नृत्य औ अस हरि धुनि जग माहि । कहूं नही देखी जु अस सुनी कहूं पुनि नाहि ॥
भट्टाचारज जू कहैं ए सत तुम्हरे बैंन । गौर सृष्टि यह प्रेम मय संकीर्त्तन रस ऐंन ॥
श्री प्रभु जू अवतार करि कीनौ धर्म प्रचार । कृष्णनाम संकीर्त्तन जु कलि जुग धर्म सुसार ॥
जग्य कीरतन करि करैं आराधन पुनि ताहि । वहै सुमेधा साधु जन औ कलिहत जन आहि ॥

तथाहि श्रीमद्भागवते एकादशस्कन्धे—कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णमिति श्लोकः ॥

नृपति कहैं सब शास्त्र करि गौर हैं जु श्री कृष्ण । तब काहे पंडित जु सब तिनतें हैं जु वितृष्ण॥
भट्ट कहैं तिनकी कृपा लेस होत हैं जाहि । सोई-तिनकौं कृष्ण करि जानि सकैं जन आहि ॥
तिनकी कृपाजु नाहि जिंहिं पंडितही किन होय । लखिकें सुनिकैं तिन्हैं नहि ईश्वर मानें सोय ॥

तथाहि तत्रैव दशम स्कन्धे—तथापि ते देव पदाम्बुजद्वयमितिश्लोकः ॥

कहैं जु नृप सब बिन लखें जगन्नाथ कौं जाइ । शची तनय के वासगृह सब ही चले जु धाय ॥
भट्ट कहैं यह प्रेम की स्वाभाविक हैं रीति । सब प्रभु जू के मिलन हित उत्कंठित हिय प्रीति ॥
पहिलैं तिनकौं मिलि सबै आगे लै कैं ताहि । तिहि सँग श्री जगनाथ कौं लखिबे ऐहैं आहि ॥
कहै नृप भवानंद के पुत्र जु वाणीनाथ । महाप्रसाद हि हाथ लै नर संग पांच जु साथ ॥
श्री जु महाप्रभु के सदन कीनौ गमन जु सोय । इतनौ महाप्रसाद यह चाह्यौ कारण कोय ॥
भट्ट कहैं बहु भक्तगण आये जानें आहि । प्रभु इछा जु प्रसाद कौं लैं जात जु ताहि ॥
नृपति कहै व्रत छोर विधि तीरथ कौ जु विधान । ताहि नाहि काहे करें करैं अन्न कौ पान ॥
भट्ट कहैं तुम जो कहौ सोई हैं विधि धर्म । यही राग मग कौ जु हैं सूक्ष्म धर्म कौ मर्म ॥
प्रभु परोक्ष आज्ञा जु है छोर उपोषण सोइ । आज्ञा प्रभु आगें यहै लेहु प्रसाद हि जोय ॥
तहां आहि उपवास विधि जहां नही परसाद । प्रभु आज्ञा तिहिं त्याग मधि है अपराध विषाद ॥
अधिक यहै श्री हस्त करि प्रभु जू परोसत सोय । एतिक लाभ हि छाड़ि कैं करैं उपोषण जोय ॥
पहिलें प्रभु मो कौं दियौ आनि प्रसाद हि जोय । प्रात सेज तें उठि कियौ अन्न पान मैं सोय ॥
श्री प्रभु जु करि कें कृपा प्रेरैं हियौ जु जाहि । वेद लोक तजि धर्म सों कृष्ण आसरैं आहि ॥

तथाहि श्री मद्भागवते चतुर्थस्कन्धे—

यदा यस्यानुगृन्हाति भगवानात्मभावितः । स जहाति मतिं लोके वेदे च परिनिष्ठिताम् ॥८॥

उतरि अटारी तें तबें तब आये नृप सोय । काशी मिश्र हि अधिकृत हि दुहुनि बुलायौ जोय ॥
गजपति जू आज्ञा दई तिनहि दुहुनि जन सोइ । आये श्री प्रभु के निकट श्री प्रभु के गण जोय ॥
सब ही कौं स्वच्छंद गृह और प्रसाद जु सोइ । करवायौ दरसन स्वछँद जैसैं अटक न होय ॥
श्री प्रभु की आज्ञा करी सावधान ह्वै दोइ । नहि आज्ञा तबहूं करैं इंगित जानि जु सोइ ॥

तिन दोऊन कौं किय विदा एतिक कहि नृप आहि। सार्वभौम आये तहां देखन भक्त मिलाहि॥
गोपीनाथाचार्य जू सार्वभौम जू सोइ। देखैं ठाढ़े दूर तें प्रभु जन संगम जोइ॥
सिंहद्वार के दाहिनें तजि सब वैष्णव वृन्द। गृह पथ काशी मिश्र कें कियौ गमन सुख कंद॥
इंही समें श्री गौर जू निजगण जन के संग। मिले आय कें वैष्णवनि मारग मधि बहु रंग॥
कीनौ तब अद्वैत जू प्रभु पद वंदन आहि। कियौ महाप्रभु जू तबै प्रेमालिंगन ताहि॥
दोऊ प्रेमानंद करि भये जु परम अधीर। समय देखि कें गौर जू भये कछू चित धीर॥
श्री निवास जू आदि किय प्रभु पद वंदन जोय। एक एक कौं प्रभु कियौ प्रेमालिंगन सोइ॥
एक एक सब भक्त कौं किय संभाषण जोइ। सब कौं लै कैं गेह मधि कीनौं गमन जु सोइ॥
गेह जू काशी मिश्र कौ लघुस्थान है सोइ। तहां जु अनगन भक्त गण भये प्रमान हि जोइ॥
श्री प्रभु अपने निकट में सब कौ दीनौ बास। आपुन श्री कर सबनि दिय चंदन कुसुम सुवास॥
आये भट्टाचार्य औ आचारज प्रभु पास। जथा जोग्य सब सौं कियौ मिलन महासुख रास॥
गौर कहैं अद्वैत सौं मीठे वचन जु सोइ। पूरण भये जु आजु हम तुव आगम करि जोइ॥
श्री अद्वैत कहैं यहै ईस सुभाव निदान। यद्यपि पूरण आप हैं सब ऐश्वर्य प्रधान॥
भक्त संग करि तिंहिं तदपि है सुख कौ उल्लास। भक्त संग मधि नित्य प्रभु करें जु विविध विलास॥
वासुदेव कौं देखि प्रभु आनंदित ह्वै आहि। कहैं कछू तासौं तबै अंग हाथ दै ताहि॥
सिसु हीतें जु मुकुंद जू यदपि हमारे संग। ताहू तें तुमकौं लखैं हमरे सुख जु अभंग॥
वासुकहैं जु मुकुन्द तुव प्रथम लह्यौ संग जोय। तुव पद पंकज प्राप्ति जो पुनर्जन्म है सोय॥
छोटौ हौ जु मुकुन्द अब भौ मम जेठौ सोय। कृपापात्र तुव सब गुणनि तातें उत्तम जोय॥
फेरि कहैं श्री गौर जू हम जु तिहारे काज। ल्याये दक्षिण देस तें पुस्तक द्वै सुख साज॥
श्री स्वरूप के पास हैं लीजैं लिखि कें ताहि। वासुदेव कैं हरष भौ लखि जुग पुस्तक आहि॥
एक एक सब वैष्णवनि लिखि कैं लीनी जोइ। क्रम क्रम करि पुस्तक जगत व्यापि गई द्वै सोइ॥
श्री वासादिक कौं कहैं प्रभु करि बहु हित जोय। तुम चारौं भाइन जु कर हम जु बिकाये सोय॥
कहैं तहां श्री वास जू क्यौं जु कह्यौ विपरीति। कृपा मोल करि भ्रात सब हैं जु तुम्हारे क्रीति॥
संकर लखि दामोदर हि श्री प्रभु कहैं दयाल। मेरी गौरव सहित हैं तुम पर प्रीति रसाल॥
संकर ऊपर प्रेम है केवल सुद्ध अभंग। राखौगे संकर सुखद याही तें मो संग॥
हम तें लघु संकर कहैं दामोदर जु स्वरूप। अब मेरो भाई बड़ौ तुमरी कृपा अनूप॥
सिवानन्द सौं ते कहैं प्रभु कौं तुम पर आहि। हम हूं तें अनुराग दृढ़ है जानत है ताहि॥
सिवानंद सेन जू सुनि प्रेमावेस जु होय। परि धरणी मधि दंडवत पढ़त पद्य रस भोय॥

श्री चैतन्यचन्द्रोदयनाटके—निमज्जतोऽनन्त भवार्णवान्तश्चिराय मे कूलमिवासि लब्धः।
त्वयापि लब्धं भगवन्निदानीमनुत्तमं पात्रमिदं दयायाः॥ ६॥

गुप्त मुरारि जू प्रथम ही प्रभु कौं मिल्यौं न सोय । मंदिर ते वाहिर पर्यौ है जु दंडवत होय ॥
देखत नाहि मुरारि कौं ढूढ़त प्रभु सुख साज । दौरे लैन मुरारि कौं आये साधु समाज ॥
श्री मुरारि जू दसन मधि धरि तृण गुछा दोय। गयौ महाप्रभु जू के निकट दीन दैन्य करि होय ॥
लखि मुरारि कौं गौर जू आये मिलि वे चाय । लागे कहन मुरारि जू भजि पाछें कौं धाय ॥
महा अधम औ नीच हौं मम न छुवौ प्रभु धीर । तुव छुवने के जोग्य नहि यह पापीष्ठ सरीर ॥
गौर कहैं जु मुरारि जू ढाकौं दैन्य जु सोय । तुम्हरौ दैन्य लखैं जु मम हीय विदीरण होय ॥
एतिक कहि कैं श्री प्रभु जु किय आलिंगण ताहि । करत अंग संमारजन निकट वसाइ जु सोइ ॥
रत्नाचारज गदाधर औ पुरंदराचार्य । विद्यानिधि हरि भट्ट पुनि गंगा दासाचार्य ॥
एक एक प्रति सवनि कौं प्रभु कीनौ गुणगान । फेरि फेरि आलिंगि करि कर्यौ वहुत सनमान ॥
सब जन कौ सनमान करि प्रभु कैं भौ उल्लास । देख्यौ नहि हरिदास कौं कहत कहां हरिदास ॥
सची तनय जू दूर तें लखि हरिदास हि जोय । राजमार्ग के एक दिस पर्यौ दंडवत होय ॥
मिलन धाम में आय कें प्रभु कौं मिले न जोय । प्रांत राज पथ के परे रहै दूरि ही सोय ॥
आये तिनके लैन कौं सर्व भक्तगण धाय । प्रभु तुम कौं चाहैं मिल्यौ चलौ वेगि चित चाय ॥
श्री हरिदास कहैं जु मम नीच जात हौं छार । मंदर के तट गमन कौं मो कौं नहि अधिकार ॥
जगन्नाथ सेवक परस मो कौं नाही सोय । पर्यौ तहां ही हौं रहौं यह मम बांछा होय ॥
यहै कथा प्रभुकौं कही सब लोकनि तब जाय । सुनिकैं श्रीप्रभु जू तब हि पायो सुख अधिकाय ॥
काशी मिश्र तिही समैं औ अधिकृत ये दोय । तहां आय कीनौं जु श्री प्रभु पद वंदन सोइ ॥
सब वैष्णव कौं देखि कैं सुखी बहुत भौ हीय । यथा जोग्य सबसौं मिलन आनंद करिकैं कीय ॥
कीयौ निवेदन गौर कें पायन मधि जन दोय । समाधान जन कौं करैं आज्ञा दीजै सोइ ॥
सब साधन कौं है कर्यौ गृह निवास सुस्थान । सब कौं कर्यौ प्रसाद करि समाधान मनमान ॥
प्रभु कहैं गोपीनाथ जू वैष्णव वृन्द मिलाय । जहां जहां वसिवे कहैं तहां तहांई जाय ॥
प्रसादान्न दीजै निकट वाणीनाथ हि जोय । करि है ए सब जननि कौ समाधान है सोय ॥
यही जु मेरे निकट है पुष्पन कौ उद्यान । एक ओर में गेह है निर्जन परम निदान ॥
कछु प्रयोजन है हमें दीजै गेह जु सोय । निभृति तहां बसि कै जु हम करि हैं सुमिरण जोय ॥
मिश्र कहैं सब आप कौ मागौ कारण कोय । अपनी इछा लीजियै चाहौगे हैं जोय ॥
आज्ञाकारी दास हैं तुम्हरे हम जन दोय । आज्ञा देहु जु करि कृपा जोई चाहौ सोय ॥
तहां तवै कीनी बिदा एतिक कहि जन दोय । संग लै गोपीनाथ औ वाणीनाथहि सोय ॥
दिखये गोपीनाथ कौं सब निवास के धाम । दीनौ गोपीनाथ कौं प्रसादान्न अभिराम ॥
आये वाणीनाथ अन्न पिठा पनो लै धाय । आये गोपीनाथ गृह संसकार करवाय ॥
कहैं महाप्रभु जू तवै सुनौ सकल जन वृन्द । सब ही निज निज वास कौं करिहौ गमन स्वछंद ॥

करौ जु चूडा दरस कौं जलनिधि वीच जु न्हाय। करि हौ भोजन आज सो तवै इहां ही आय ॥
नमस्कार करि प्रभु हि सब चले गेह अभिराम। गोपीनाथाचार्य जू सब निवास दिय धाम ॥
आये श्री हरिदास तब मिलिवे प्रभु सुखरास। करत नाम संकीर्तन हि हित करि श्री हरि दास ॥
प्रभु लखि कें आगें परे दंडरीति ह्वै आहि। प्रभु जू आलिंगण कियौ तव उठाय कैं ताहि ॥
रोवत प्रेमावेस मधि तवै तहां जन दोय। प्रभु गुण सेवक विकल ह्वै प्रभु सेवक गुण सोय ॥
कहैं जु श्री हरिदास जू प्रभु न छुवौ मम देह। मैं अस परस जु नीच हौं पामर परम अछेह ॥
कहैं जु प्रभु तुमकौं छुवै पावन ह्वै वैं जोय। तुम्है पवित्र करैं जु जिहि धर्म न हम मधि सोय ॥
छिन छिन माहि करौजु तुम सर्वतीर्थ मधि न्हान। छिन छिन मांहि करौजु तुम जज्ञ और तप दान॥
पढौ निरंतर रैंन दिन चारचौ वेद निदान। द्विज संन्यासी से जु तुम पावन परम सुजान ॥

श्री मद्भागवते तृतीयस्कन्धे—

अहो बत ! श्वपचोऽतो गरीयान् यज्जिह्वाग्रे वर्त्तते नाम तुभ्यं।
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्य्याः ब्रह्मानूचु र्नाम गृणन्ति ये ते ॥

गये पुष्प उद्यान मधि एतिक कहि लै ताहि। सोई गृह दिय अति निभृति वसिवै स्थानजु आहि ॥
करौ नाम संकीरतन रहिकैं धामजु याहि। हमकौ प्रति दिन आय कैं करि हौ मिलनजु आहि ॥
मंदिर के लखि चक्र कौं करि हौ तुम जु प्रणाम। इंही ठौर ऐ है तुम्हैं प्रसादान्न अभिराम ॥
नित्यानँद जगदानन्द दामोदर जु मुकुन्द। मिलि कैं सब हरिदास कौं पायौ वहु आनंद ॥
उदधि न्हाय कैं श्री प्रभु आये अपने धाम। अद्वैतादि गए जु सब उदधि न्हाय अभिराम ॥
जगन्नाथ जू कौ कियौ चूडा दरसन आय। आये श्री प्रभु के घरहि भोजन करचौ वनाय ॥
वैठारचौ सबकौं प्रभु जु जोग्य क्रम धरि धाम। परि वेषन किय श्री करजु गौर हरी अभिराम ॥
अल्प अन्न आवै नहीं देत जु प्रभु कर सोय। इक इक पातर मधि दियौ भोजन त्रय जन दोय ॥
श्री प्रभु जू पायौ नहीं भोजन करत न कोय। उर्द्ध हस्त बैठे रहै सवै भक्त गण सोय ॥
श्री स्वरूप जू ने कियौ प्रभु हि निवेदन सोय। तुम नहि वैठौ गौर जू भोजन करैं न कोय ॥
तुम सँग जेतक रहत हैं संन्यासी जन सोय। गोपीनाथ आचार्य तिहिं कियौ निमंत्रण जोय ॥
भिक्षा हेत प्रसाद लै वैठे हैं आचार्य। बैठि रहे तुम हेत करि पुरी भारती आर्य्य ॥
भीक्षा नित्यानंद लै करौ वैठि तुव सोय। जन परि वेषण करिहिगे हम तव लगि ह्यां जोय ॥
प्रसादान्न तब गौर दिय गोविंद के कर लाय। ठाकुर श्री हरिदास कौं पठयौ जतन बनाय ॥
लै करि सव श्री पाद कौं वैठे आपुन सोय। हरषित ह्वै आचार्य जू सब ही परोसत जोय ॥
श्री स्वरूप दमोदर जु औ श्री जगदानंद। जन परिवेषण कौं करैं त्रय जन ए सुख कंद ॥
बहु विधि पीठा औ पना किय भोजन भरि कंठ। हरि हरि वोले उच्च करि बीच वीच उतकंठ ॥
भयौ समापन भोजन जु कियौ आचमन चाय। पहिराणै सब कौं प्रभु जु चंदन माल्य बनाय ॥

करिवें सब विश्रामकों गये जु अपने धाम । संध्या समय जु आय फिरि प्रभुहि मिले अभिराम ॥
लै करि सब कौं प्रभु गये जगन्नाथ के धाम । तहां महाशय कीरतन किय आरंभ अभिराम ॥
संकीर्तन आरंभ किय लखि कें संध्या धूप । अधिकृत सब कौं आनि दिय चंदन माल्य अनूप ॥
करत कीरतन चारि दिस संप्रदाय जे चारि । शची तनय प्रभु गौर जू विच नाचत सुखधार ॥
द्वात्रिंशत करताल औ बाजत अष्ट मृदंग । भलैं भलैं कहि हरि धुनि हि करैं भक्त भरि रंग ॥
उठी कीरतन की महा मंगल धुनि तब जोय । ब्रह्म अंड भेद्यौ जु भरि लोक चतुरदस सोय ॥
आये देखन हित सबै लीलाचल के लोय । अचिरज भौ उडिया नगनि निरखि कीरतन सोय ॥
बैठे तब श्री गौर जू जगन्नाथ के धाम । करि जु प्रदच्छिण नृत्य करि बोले अति अभिराम ॥
संप्रदाय चारौं करैं आगै पाछे गान । गिरत समैं प्रभु कौं धरैं नित्यानंद सुजान ॥
अश्रु पुलक सब अंग में कंप स्वेद हुंकार । चमतकार सब लोक कें लखि कैं प्रेम विकार ॥
जिमि पिचका धारा चलैं नयन अश्रु की धार । स्नान कराये लोक सब चारि दिसा सुख सार ॥
नृत्य चक्रवत गौर जू करि केतिक छिन जोय । मंदिर के पाछें जु रहि करैं कीरतन सोय ॥
संप्रदाय चारयौ दिसा चारि उच्च स्वर गाय । तांडव नृत्य करैं जु विच नवद्वीप के राय ॥
करि कें बहु छिन नृत्य कौं भौ थिर प्रभु सुख रूप । चारि महंतनि नृत्य कौं आज्ञा दई अनूप ॥
संप्रदाय एक हि नचैं श्री अद्वैताचार्य । संप्रदाय दूजैं नचैं श्री नित्यानँद आर्य ॥
पंडित वक्रेश्वर नचैं संप्रदाय मधि आन । श्री निवास नाचत और संप्रदाय मधि जान ॥
करैं महाप्रभु दरस तब रहि कैं बीच जु आहि । तबै तहां ऐश्वर्य इक भयौ प्रगट ही ताहि ॥
नृत्य गीत दिस चारि में करें जितिक जन जोय । सबैं लखैं हमरौ करैं प्रभु जू दरसन सोय ॥
नृत्य देखिवें चारि जन प्रभु जू कैं अभिलास । बहु अभिलाष करैं तहां सो ऐश्वर्य प्रकास ॥
दरसन मधि आवेस लखि जानत केवल ताहि । काहे तें चहुदिस लखैं यह नहि जानत आहि ॥
जैसैं भोजन पुलिन मधि करत कृष्ण सुख रूप । चहु दिस सखा कहैं चहैं हम ही ओर अनूप ॥
नृत्य करन हित जो सुजन आये निकट जु आहि । सबैं महाप्रभु जू करें दृढ़ आलिंगण ताहि ॥
महानृत्य संकीरतन महा प्रेम पुनि सोय । लखि प्रेमानँद में बहै लीलाचल के लोय ॥
सुनि महिमा संकीरतन गज पति धरणी पाल । चढ्यौ अटारी तें लखै सेवक सहित रसाल ॥
देखि कीरतन नृपति कैं अचिरज भौ सुखसार । उत्कंठा प्रभु मिलन हित बाढ़ी सबनि अपार ॥
नृत्य पूर्ण करि प्रभु लखे पुष्पांजलि अभिराम । आये चलि सब जननि लै श्री प्रभु जू निजधाम ॥
अधिकारी दिय आनि कें बहु प्रसाद ततकाल । दियौ सबनि कौं बाटि कैं तहां जु ईस रसाल ॥
सब ही कौं दीनी बिदा करिवे सयन जु आहि । करैं शचीनंदन सदा इही भांति लीलाहि ॥
जब लगि सब जन गण रहैं श्री जु महाप्रभु संग । प्रति दिन याही भांति करि करैं कीरतन रंग ॥
एतिक कह्यौ सु गौर कौ नृत्य सुगीत विलास । जोइ याकौं नर सुनैं होय गौर कौ दास ॥

श्री जु रूप रघुनाथ के पायन की करि आस। चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस। प्रभु चरितामृत सो लिखे व्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे वेड़ा कीर्त्तन विलासो नाम एकादस परिच्छेदः ॥

द्वादश परिच्छेद

श्रीगुंडिचामंदिरमात्मवृंदैः संमार्जनक्षालनतः सगौरः।
स्वचित्तवच्छीतलमुज्वलं श्रीकृष्णावेसोपयिकंचकार ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद। जय अव्दैत हिमांसु जय दास वर्ग सुखकंद ॥
पहिलें दच्छिण देस तें जब प्रभु आये सोय। गजपति तिनके मिलन हित उतकंठित भो सोय ॥
पत्री दीनी कटक तें सार्वभौम के ठांह। जौ प्रभु आज्ञा होय तौ दरसन के हित जांह ॥
भट्टाचार्य लिख्यौ प्रभु आज्ञा भई न जोइ। राजा तिनकौं फेरि कैं पत्री पठई सोइ ॥
श्री प्रभु जू के निकट हैं जिते भक्तगण ताहि। तिन सब सौं विनती करौ मेरे हित तुम चाहि ॥
तेई मोपै सदय ह्वै सब दयाल अधिकाय। मेरे हित प्रभु के चरण करि हैं विनय वनाय ॥
तिन सब के जु प्रसाद करि मिलि हैं प्रभु पद सोय। विन प्रभु कृपा न भावही मोहि राज्य इहजोय ॥
जौ मोपैं करि हैं नही कृपा गौर हरि सोय। प्राननि देहौं राज तजि ह्वैहौं भिच्छुक सोय ॥
सार्वभौम पत्रीहि लखि हिय अति चिंतित होय। गये भक्तगण कें निकट लैकैं पत्री सोय ॥
पहिलैं सब सौं मिलि कह्यौ विवरण नृपहिय आहि। पाछें कें पत्री वही सबकौं दई दिखाहि ॥
सबके मन विस्मय भयौ लखिकैं पत्री ताहि। गजपति नृप के भक्ति है इतीक प्रभु पद आहि ॥
सब ही भक्त कहैं जु प्रभु क्यौ न मिलि हैं ताहि। जो हम सबही कहैंगे दुख मानेंगे जाहि ॥
भट्टाचारज जू कहैं चलौ जु सब इक वार। मिलिवे कौं कहियौ सुजिनि कहियौ नृप व्यवहार ॥
ऐसैं कहि लै सबनि कौं गये जु प्रभू के पास। कहिवे कौं सन्मुख सवैं करैं न वचन प्रकास ॥
गौर कहैं कहिवे कहा भौ सब आगम जोइ। दीसत कछु चाह्यौ कह्यौ कहौ न कारण कोइ ॥
नित्यानँद कहैं कह्यौ चाहैं तुमसौं जोय। सकै न रहि बिन कहैं पुनि कहैं हिये भय होय ॥
कियें निवेद चहैं तुव जोग्य अजोग्य जु होय। जोगी भयौ चहै नृपति विना मिलैं तुव सोय ॥
प्रभु कौ कोमल मन भयौ जद्यपि सुनि कें ताहि। तऊ कहैं वाहिर कछुक निठुर बचन पुनि आहि ॥
तुम सब की इच्छा यहै हम सब कौं लै सोय। एऊ राजा कौं मिलें कटक जाय कें जोय ॥
परमारथ जावौ जगत निदंन करि है जोय। जगहूं रह दामोदर-जु करि है भर्त्सन सोय ॥
हौं तुम सब आज्ञा जु करि नृपसौं मिलौं न आहि। दामोदर जब कहै तब हौं मिलि हौं नृप ताहि ॥

दामोदर तब कहै प्रभु ईस स्वतन्त्र सु होय। करिवौ अन करिवौ सबै गोचर तुम्हरे जोय ॥
कौन छुद्र हौं जीव तुम देहूँ आज्ञा आहि। देखैंहिगे हम सौं वह जु आपन मिलि हौ ताहि ॥
तुम सौं करैं सनेह नृप तुम सनेह बस आहि। तिहि सनेह करवाय है तुमकौं पर बस ताहि ॥
ईश्वर सब के तुम जु हौ जद्यपि परम स्वतन्त्र। हौ अपनें जु सुभाव करि तऊ प्रेम परतन्त्र ॥
कहैं जु नित्यानंद जू ऐसौ जन है कोय। नृप सौं मिलन करौ कहैं तुम सौं ऐसें जोय ॥
ऐसैं एक स्वभाव हैं अनुरागी जन जान। विन पायें निज इष्ट कैं तजैं सु अपने प्राण ॥
जाज्ञिक द्विज पतनी तहां है ताकौ जु प्रमान। पति आगें तिहिं कृष्ण हित छाड़े अपने प्रान ॥
तैसें ही कछु युक्ति करि करौ कछू जु विचार। तुम हूँ मिलौ न ताहि तिहिं रहै प्राण निरधार ॥
वहिर्वास इक देहु जो हिय कृपाल अति होय। प्राननि राखै पाय तिहिं तुम आसा करि जोय ॥
कहैं महाप्रभु तुम सबै परम विवेकी सोय। समाधान सोई करौ जोई भलै जु होय ॥
तब गोविन्द के पास तें प्रभु नित्यानँद आहि। एक जु लीनौं मांगि कैं बहिर्वास प्रभु ताहि ॥
वहिर्वास सोप्यो वहै सार्वभौम के पास। नृप कौं दियौ पठाय कैं सार्वभौम वह बास ॥
नृप कौ मन हरषित भयौ वसन पाय के ताहि। पूजन करै जु वस्त्र कौ प्रभुस्वरूप करि आहि ॥
दच्छिण ते आये जबै श्री रामानँद राय। प्रभु सँग रहिवे हित जबै नृप सौं कह्यौ बनाय ॥
नृप निदेस तिनकौं दियौ करि सन्तोष अपार। तबै कही मिलन हित की जौ प्रभु मनुहार ॥
श्री प्रभु-जू तुम पर करैं कृपा महाअधिकाय। मोहि मिलावनहित अवसि कहि हो हियहि द्रवाय ॥
प्रेम भक्ति प्रभु चरण मधि नृप की दई जनाय। बार बार ऐसैं कहैं समय प्रसंग हि पाय ॥
दोऊ जन आये जबै क्षेत्र एक ही संग। श्री रामानँद राय तब प्रभु सौं मिले सरंग ॥
महा निपुन व्यौहार मधि नृप मन्त्री श्री राय। नृप की कहि-कहि प्रीति दिय प्रभु कौ हियौ द्रवाय ॥
रुद्रप्रताप न रहि सकै उत्कंठा करि आहि। रामानँद साधे प्रभु हि मिलिवे के हित ताहि ॥
रामानँद प्रभु चरण मधि कियौ निवेदन सोय। एक वार गजपति नृपहि चरण दिखाओ जोय ॥
रामानँद विचारि तुम कहौ कहैं प्रभु ताहि। नृप सौं कैसैं मिलि सकत है सन्यासी आहि ॥
नृप के मिलें विरक्त के दुहूँ लोक कौ नास। रहौ बात पर लोक की करैं लोक उपहास ॥
रामानँद कहैं जु प्रभु तुम होई स्वतन्त्र। तुम कौं भय है कौन कौ तुम नहीं परतन्त्र ॥
प्रभु जू कहैं मनुष्य हौं है आश्रम संन्यास। मन बच क्रम व्यौहार मधि भै कौ हियें निवास ॥
मसी बिन्दु उज्वल बसन दुरै न जैसैं सोय। अल्प छिद्र हूँ जती कौ गावै सब ही लोय ॥
राय कहैं पापी किते किये शुद्ध तुम जोय। ईश्वर सेवक भक्त तुम गजपति राजा सोय ॥
कहैं जु प्रभु ज्यौं पूरण कलस दुग्ध कौ सोइ। सुराविंद के गिरत ही करै परॅस नहि कोय ॥
है प्रताप रुद्र सु जदपि सकल गुणनि कौ धाम। ताकौ कीनौ मलिन है एक राज इहि नाम ॥
है जु तुम्हरे तऊ जो महा आग्रह याहि। मिलिवौ हम सौं आनि कै तौ तुम तनय जु ताहि ।

आपु ही उपजैं पुत्र ह्वै वेद बचन यह जोइ। जानौं आपुन नृप मिल्यौ मिलै पुत्र कै सोय ॥
तब तौ सब श्री राय जू कह्यौ जु नृप सो जाय। लै कें आये तनय तिहि प्रभु की आज्ञा पाय ॥
नृपकौ सुत सुन्दर महा स्याम वरण छविऐंन। बय किशोर दीरघ चपल अरुण कमल छलनैन ॥
पीत वसन धारैं जु अँग रत्न अलंकृत जोय। प्रभु कौं कृष्ण समरण कौ उद्दीपन भौ सोय ॥
श्रीप्रभु जू कौं कृष्णकी भई जु सुधि लखि ताहि। तिहि मिलि प्रेमावेसमें कहन लागे प्रभु आहि ॥
परम भागवत है यही दरसन देखें जाहि। व्रज नृप सुत की होय सुध सकल जननि कें आहि ॥
भये कृतार्थ हम अबै कीनैं दरसन आहि। ऐसैं कहि कैं फेरि तब आलिंगण किय ताहि ॥
नृप सुतकौं प्रभु परसि करि भयौजु प्रेमावेस। जाड्य स्वेद कंपाश्रु पुनि अरु सात्विक जुविशेस ॥
कृष्ण कृष्ण कहि नाचई करैं जु रोदन आहि। श्लाघा करैं जु भक्तगण देखि भाग्य बड़ ताहि ॥
धैर्य करायौ श्री महाप्रभु जू तवैं जु ताहि। नित्य आय मिलि हौ हमें आज्ञा दीनी जाहि ॥
विदा दई आये तवैं नृप सुत लै कैं राय। सुत चेष्टा राजा निरखि सुख पायौ अधिकाय ॥
करि आलिंगण पुत्र कौं प्रेम मगन भौ जोय। सात्तात जु प्रभु कौ परस मनु तिहिं पायौ सोय ॥
तबही तें नृप कौ तनय भाग्यवान बड जोय। प्रभु जू के जन गणनि मधि भयौ एकजन सोय ॥
इहीं भांति श्री महाप्रभु भक्त गणनि के संग। क्रीडा करैं निरंतर हि संकीर्त्तन के रंग ॥
प्रभु कौं करैं निमंत्रणहि आचार्यादिक जोय। तिन तिन की भिच्छा करैं भक्त गणनि लै सोय ॥
इहीं भांति नाना रंगनि गये किितक दिन सोय। आयौ श्री जगन्नाथ कौ रथ जात्रा दिन जोय ॥
प्रभु जू काशी मिश्र कौं पहिलैं ई जु बुलाय। अधिकृत भट्टाचार्य औ बोलि लिये अति चाय ॥
हसि कैं श्री प्रभु जू कह्यौ तीन जननि सौं एह। गुंडिचा मंदिर मार्जन सेवा मांगी देहु ॥
कहैं जु अधिकारी सवै हम तुम सेवक जोय। हम कौं करनौ है वही जो तुम इच्छा होय ॥
भयौ निदेस विशेस करि नृप कौ हम कौं जोय। प्रभु की इच्छा होय जौ वेगि ही कीजै सोय ॥
सेवा मंदिर मारजन नहीं जोग्य तुव सोय। यह एक लीला करौ है मन मैं तुम जोय ॥
अपैं घट औ मार्जनी चहियै बहुतैं ताहि। आनि देहु सब आजि ह्यां आज्ञा दीजै आहि ॥
तब इक सत घट मार्जनी इक सत नूतन जोइ। अधिकृत दीनीं आनि कें प्रभु जु आगें सोइ ॥
प्रभु प्रभात हि और दिन लै करि निज गण संग। श्री निज करिकैं सवनिकैं लेप्यौ चंदन अंग ॥
दई सवनि कौं मार्जनी एक एक निज हाथ। आपुन श्री प्रभु जू चले लै निज गण सब साथ ॥
गये जु मंदिर गुंडिचा करिवे मार्जन ताहि। लै करि पहिलै मार्जनी कीनौ सोधन जाहि ॥
मंदिर मधि ऊपर सकल कीनौ मार्जन जोय। सिंहासन कौं मार्ज पुनि भीति चंहुधा सोय ॥
भीतर मंदिर के कियौ मार्जन सोधन जोय। तैसैं फिरि सोधन कियौ श्री जगमोहन सोय ॥
लीयें चहूधां भक्त सत करनि मार्जनी जाहि। आपुन प्रभु सोधन करैं सवनि सिखावैं आहि ॥

सोधें प्रेम हुलास करि गृह लै कृष्णहि नाम । कहैं कृष्ण सब भक्तगण करैं सु निज निज काम ॥
रज धूसर तनु देखि ये अति ही सोभित आहि । कहूं कहूं जल अश्रु कौं करैं सुमार्जन ताहि ॥
कांकर कूरौ धूलि सब करि एकत्र बनाय । बहिर्वास मधि लेय कैं बाहिर डारैं जाय ॥
इहीं भांति सब भक्तगण करि कें निज निज वास । बाहिर डारैं धूरि त्रन ह्वै कैं परम हुलास ॥
प्रभु जू कहैं कितौ कियौ किन्हौ मार्जन जोय । तृण रज के परिमाण करि जानैं परिश्रम सोय ॥
सब के कूरे के किये बोझ एक ठां जोय । बोझ सबनि के तें भयौ प्रभु कौ अधिक जु सोय ॥
अभ्यंतर इहिं भांति करि कियौ मार्जन सोय । दुयौ सबनि कौं फेरि कैं करि कैं बांटि जु जोय ॥
सूक्ष्म रज तृण कांकरी सबै दूरि करि जोय । प्रभु कौ अंतर पुर सबै सोध्यौ भलैं जु सोय ॥
सब जन संग लैं दूसरैं जब फिरि सोध्यौ आहि । मन में अति संतोष भौ प्रभु जु लै लखि ताहि॥
और भक्त शत नीर के शत घट भरि कें आहि । लै आये हैं प्रथम ही रहे समैं को चाहि ॥
ल्यावौ जल जबही कह्यौ श्री प्रभु जू सुख भोइ । तबही शत घट आनि प्रभु आगें धरैं जु सोइ ॥
प्रभु जू मंदिर कौ प्रथम किय प्रछालन जोय । ऊपर नीचैं भीत गृह मधि सिंहासन जोय ॥
खपरा भरि भरि नीर के ऊपर कौ जु चलाय । तिहिं जल करि उचैं सबै धोई भीत बनाय ॥
प्रच्छालन आपुन करैं सिंहासन कौं आहि । श्री निज करि कैं महाप्रभु करैं मारजन ताहि ॥
करैं भक्तगण गेह मधि कौं प्रछालन जोय । करैं मारजन मंदिरहि निज निज करि कैं लोय ॥
दें हि महाप्रभु कें करहि केऊ जल घट आहि । कैऊ छल करि देत हैं चरणनि ऊपर ताहि ॥
कैऊ दुरि करि करत हैं ताही जल कौ पान । मांगि लैं हि कैऊ करैं कैऊ और निदान ॥
गेह धोय जल छोडि दिय मोरी ह्वै कैं जोय । रह्यौ जु ताहि नीर करि भरि कें आंगण सोय ॥
कियौ मारजन गेहकौं निजनिज वसनहि ताहि । माज्यौ प्रभु निज वसन करि सो सिंहासनआहि॥
सत घट जल करि धोयवौ भयौ जु मंदिर ताहि । कीनौ मंदिर धोय कें मानौ निज मन आहि ॥
नीर्मल सीतल चीकनौं कीनौ मंदिर जोय । जानौ हृदय स्व आपनौ बाहिर धरयौ जु सोय ॥
आवैं पूरण कुंभ लैं इक शत जन जू ताहि । रीते घट लैं जाहि इक और भक्त शत आहि ॥

कवित्त

नित्यानन्द औ अद्वैत भारती पुरी स्वरूप बिना इन और सब नीर भरि लावई ।
धका धकी भीर लगि गये किते फूटि घट नये घट लैं कैं सत और जन आवई ।
जल भरैं धोवैं गृह करैं हरिनाम धुनि सुनि ये न आन कछु कृष्ण नाम गावई ॥
मागें घट कृष्ण कहि दैंहिं कृष्ण कृष्ण कहि प्रेम में मगन सब प्रभु मन भावई ॥

जोई जोई कहैं सो कहैं कृष्ण अभिराम । सब कामनि मधि भौ तहा संकेत जु हरिनाम ॥
कहैं जु प्रेमावेस मधि कृष्ण कृष्ण प्रभु नाम । करैं एक ले प्रेम करि प्रभु सत जन कौ काम ॥

प्रज्ञालन मार्जन करैं मनु सत हाथनि सोइ । करैं जाय प्रति जन निकट सिज्ञा नीकें जोइ ॥
भलौ काम देखें सु जिहिं करैं प्रसंसा ताहि । मन मानैं नहि करैं तिहिं पंडित भर्छ्न आहि ॥
भलौ कियौ है तुम जु यह और हि सिखवौ जोय । भलौ काम याही सु विधि जैसै करै जु सोय ॥
यहै बात सुनि कैं तबै सबैं ससंकित होय । मन दै कर्म करैं सबैं भली भांति करि जोय ॥
प्रच्छालन कीनौं तबै श्री जग मोहन जोइ । कियौ भोग मंडप जु कौ पुनि प्रच्छालन सोइ ॥
धोय नाट साला जु पुनि धौयौ आंगन चौक । विंजन साला आदि दै धोये सब लै ओक ॥
चहुधां मंदिर के कियौ प्रज्ञालन प्रभु जोय । सब अंत पुर भली विधि धोयौ सब मिलि सोय ॥
तिहीं समैं इक गौडिया सरल बुद्धि अति आहि । प्रभु जू के पद जुगल मधि दीनौ घट जलताहि॥
सोई जल लैकैं जु तिहि आपु न पान जु कीय । प्रभु जू कें तिहि देखिकें भयौ क्रोध दुखहीय ॥
प्रभु कैं यद्यपि भयौ है सब ही पर संतोष । सिज्ञा हित कीनौं तऊ बाहिर तापर रोष ॥
श्री स्वरूप गोस्वामी जू आनि कह्यौ प्रभु ताहि । यह देखौ तुव गौडिया कौ व्यौहार जु आहि ॥
प्रभु के मंदिर बीच मम चरण धोय कैं जोय । आपुन पान कियौ जु इन लै करि कैं जल सोय ॥
ह्वै है मेरी कौंन गति यही पाप करि जोय । एतिक करै विडंब मम तुम गौडिया जु सोय ॥
तब स्वरूप गोस्वामि जू ग्रीव हाथ दै ताहि । राख्यौ मंदिर बाहरे दै करि धका जु ताहि ॥
फेरि आय प्रभु चरण मधि कीनौ विनय अगाध । ज्ञमा सु करिवैं जोग्य है मूरख कौ अपराध ॥
तब तौ प्रभु जू के मन हि भौ संतोष जु सोय । पंकती करि कैं दुहुंघा बैठाये सब जोय ॥
आपुन प्रभु बसी मधि कैं अपने करि कैं आहि । तृण कांटौ कूरौ जु सब बीनन लागे ताहि ॥
कौंन कितौ कूरौ सु सब करि है इक ठौ आहि । लैहै पेठापना रस तापैं थोरौ जाहि ॥
इही भांति सब पुरी प्रभु कीनी सोधन जोय । सीतल निर्मल अति करी जानौं निजमन सोय ॥
जब ही छोडि प्रनालिका पानी दियौ वहाय । मानौ एक नई नदी मिली उदधि कौ आहि ॥
इही भांति पुर द्वार औ जितौ अग्रपथ आहि । सब ही सोधैं कौंन करि सकै जु वरनन ताहि ॥
भीतर बाहिर सुद्ध किय श्री नृसिंह कौ धाम । कीनौ नृत्यारंभ तब छिन इक करि विश्राम ॥
करैं कीरतन चहुँधां भक्त वृन्द जे ताहि । मध्य नृत्य श्री प्रभु करैं मत्तसिंह सम आहि ॥
स्वेद कंप वैवर्ण पुनि पुलकि और हुंकार । निज अंग ध्वै आगैं चलै महा अश्रु की धार ॥
चहुं ओर जे भक्तगण धोये तिनके अंग । जानौ सांवन मास मधि वरषैं मेह अभंग ॥
महा उच्च संकीरतन पूरित नभ किय ताहि । प्रभु के उद्भट नृत्य करि भूमि कंप भौ आहि ॥
श्री स्वरूप कौ गान अति उच्च सदा प्रभु भाय । नृत्य करैं उद्दंड अति गौर राय सुख छाय ॥
इही भांतिकैं कितिक छिन नृत्य जु करिकैं जोय । प्रभु जू ने विश्राम किय समय जानिकैं सोय ॥
प्रभु जू श्री आचार्यकौ श्री गुपाल अभिधान । नृत्य करण हित ताहि दिय आज्ञा श्रीभगगान ॥
नाचत प्रेमावेस मधि भयौ मूरछित जोय । गिरयौं भूमि मधि ता समैं होय अचेतन सोय ॥

हरवराय आचार्य जू लियौ अंक भरि ताहि। स्वास बिना तिहिं देखि कैं भये विकल अति आहि ॥
पढि कैं मंत्र नृसिंह कौ जल छीटें दे सोय। फाटि जाहि ब्रम्हांड जिहिं शब्द सुहुंकृत होय ॥
कीनैं जतन अनेक हूं भई तउ न संभार। आचारज क्रंदन करैं अरु सब भक्त अपार ॥
तवहि महाप्रभु तिहि हियें दीनौ हाथ जु आहि। उठि गुपाल यौं उच्च सुर करि कैं बोले ताहि ॥
भौ गोपालदास जु तवै चेतन सुनत ही सोय। हरि हरि कहि नृत्यहि करैं सबै भक्तगण जोय ॥
यह लीला वरणी सुवहु श्री वृंदावन दास। याहीतें संछेप करि कियौ कथन हम तास ॥
छिन इक करि विश्राम प्रभु हियें भरे रस रंग। जाय सरोवर करी जल क्रीडा भक्तनि संग ॥
तीर आय पहिरे सवनि सूके वसन जु सोय। करि प्रणाम नरसिंह कौं गये जु उपवन जोय ॥
बैठे प्रभु उद्यान मधि लै भक्तनि की पांति। आये वानीनाथ तव लै प्रसाद बहु भांति ॥
तुलसी कासी मिश्र पुनि एजन दोय प्रधान। जितनौ भक्षण करि सकैं जन सै पांच प्रमान ॥
अन्न तितौ पेठा पना सब ही दियौ पठाय। ताहि देखि संतोष भौ प्रभु के हिय अधिकाय ॥
पुरी गुसांई महाप्रभु भारति ब्रह्मानन्द। आचारज अव्दैत औ प्रभु श्री नित्यानंद ॥
रत्नाचारज गदाधर निधि श्री वासाचार्य। राघव वक्रेश्वर जु पुनि संकर न्यायाचार्य ॥
बैठे भट्टाचार्य जू प्रभु की आज्ञा पाय। प्रभु ऊंचे बैठे इतौ लै करि जन समुदाय ॥
ताके तर ताकें तरैं इंही अनुक्रम जोय। बैठे जन उद्यान भरि भोजन करिवैं सोय ॥
प्रभु जू कहि हरिदास तव छिन छिन टेरैं ताहि। रहि सुदूरि हरिदासयौं करैं निवेदन आहि ॥
प्रभु प्रसाद भक्तनि सहित करौ जु अंगीकार। जोग्य नय न सँग वैठिवैं हौं जु तुच्छ अतिछार ॥
पाछें मोहि प्रसादलै दैहैं गोविंद आहि। फिरि न बुलायौ ताहि प्रभु जानि हिये कौ भाय ॥
श्री स्वरूप गोस्वामि जू पुनि जगदानँद साथ। दामोदर काशीश्वर जु अरु पुनि गोपीनाथ ॥
संकर वाणीनाथ जे परसे सातहि भक्त। बीच बीच हरि धुनि करैं भक्त जूथ अनुरक्त ॥
पहिलैं कृष्ण कियौ पुलिन भोजन जैसैं आहि। प्रभु के मन में सुधि भई सोई लीला ताहि ॥
जद्यपि प्रेमावेस करि भौ अधीर प्रभु सोय। कीनौ थिर प्रभु मन तऊ समय जानि कैं सोय ॥
हमैं देहु प्रभु कहैं यौं लफरा व्यंजन जोय। पिठापना गुटिका अमृत जनगण देहु सोय ॥
जानें प्रभु सर्वज्ञ जिहिं जाही में रुचि जोय। श्री स्वरूप द्वारा जु तिहि पावैं तिंहिं तिहिं सोय ॥
चहुंघा जगदानँद फिरै सबनि परोसत जोय। प्रभु पातर मधि जौ भलौ देय अचानक सोय ॥
देवें मधि यद्यपि करैं प्रभु जू तापर रोस। तौऊ छल करि देंन मधि दियें तिन्हैं संतोस ॥
फेरि आय तिहिं द्रव्य कौं करै निरीच्छण सोय। तिंहिं भयकरि प्रभु जू करें भच्छन कछु इक सोय ॥
विन पाये करि है जु यह जगदानंद उपवास। ताकें आगें खाय कछु मन में यही जु त्रास ॥
श्री स्वरूप मीठौ भलौ लै प्रसाद करि जोय। आगें करिकें दंडवत करैं निवेदन सोय ॥
थोरो आस्वादन करौ यह प्रसाद जो आहि। जगन्नाथ कैसैं कियौ देखौ भोजन याहि ॥

ऐसैं कहि आगें करैं कछुक समर्पन जोय। तिहि सनेह करि प्रभु कछू करैं जु भोजन सोय ॥
इहीं भांति दोऊ जनें करें जु बारंबार। अचिरज दुहुँ जु भक्त कौ यह सनेह व्यौहार ॥
प्रभु जू भट्टाचार्य्य कौं बैठायौ निजपास। लखि सनेह दुहुँ भक्त कौ सार्वभौम हिय हास ॥
लै उत्तम जु प्रसाद प्रभु सार्वभौम कौं जोय। भोजन करिवावैं जु फिरि फिरि सनेह करि सोय ॥
गोपीनाथाचार्य जू लै प्रसाद रस ऐंन। दैकें भट्टाचार्य्य कौं कहैं जु मधुर वेंन ॥
कहां जु भट्टाचार्य्य कौ पहिलैं जड व्योहार। कहां यहै आनँद परम करि देखौ जु विचार ॥
भट्टाचार्य्य कहैं जु हौं तार्किक महा कुबुद्धि। तुव प्रसाद करि भई मम इहिं संपति की सुद्धि ॥
एक महाप्रभु विन कहूं नही दयामय कोय। ऐसौ कौंन जु हैं करैं काकहिं गरुड़ जु सोय ॥
सँग सृगाल तार्किकनि कैं हाव हाव किय याहि। कहि यें कृष्ण हरी सदा ताही मुख अब आहि ॥
कहां बहिर्मुख तार्किक जु सिष्य गणनि के संग। कहां यहै सत संग सुख सुधा समुद्र तरंग ॥
कहैंजु प्रभु तुव कृष्ण मधि प्रीति सदा की जोय। हम सबके तुव संग करि भई कृष्ण मति सोय ॥
महिमा भक्त वढ़ायवें अरु भक्तनि सुख दैंन। और महाप्रभु की जु सम है जु त्रिलोकी में न ॥
एक एक सब भक्त के तव प्रभु लै लै नाम। द्यावौ पिठापना सबनि करि प्रसाद अभिराम ॥
नित्यानँद अद्वैत जू बैठे इक ठां जोय। दोऊ जन क्रीडा कलह लागे करबें सोय ॥
श्री अद्वैत कहैं जु अवधूत संग इह पाति। भोजन कियें जु कौंन गति ह्वै है जानि न जाति ॥
प्रभु तौ संन्यासी तिन्हैं हानि नाहि नें कोय। अन्न दोस करि जती कौं दोस नाहि कछु होय ॥
अन्न दोस नहि जती कौं कहूँ न यहै प्रमान। हौं गृहस्त द्विज मोहि यह दोसस्थान निदान ॥
सीलाचार सु जन्म कुल नहि जानियें जाहि। इक पंकति ताके जु सँग अनाचार वड़ आहि ॥
नित्यानंद कहै जु तुम हौ अद्वैताचार्य्य। सो अद्वैत जु बाधई सुद्धि भक्ति कौ कार्य्य ॥
तातें तुव सिद्धान्त कौ संग करै जन कोय। एक वस्तु विन दुतिय कौं मानें नाहिन सोय ॥
ऐसैं तुम सँग मम भयौ इक ठां भोजन जोय। नहि न जानियैं इह जु मम तुम सँग कैसैं होय ॥
दोई जन इहि विधि करैं बोला बोली जोय। गारा गारी जिमि करैं व्याज स्तुति ही होय ॥
तव प्रभु सव वैष्णवनि कौं लै लै नाम जु जाहि। द्याय प्रसाद कृपा अमृत सीचे सवहीं आहि ॥
हरि हरि धुनि करिकैं सबै उठे प्रसादजु पाय। मर्त्य लोक अरु स्वर्गहूं गयेजु तिहि धुनि छाय ॥
तबै महाप्रभु सबै निज भक्तनि कौ गण जोय। निज करिकैं दीनी सबनि चंदन माला सोय ॥
तब स्वरूप जू आदि दै परसैया जन सात। गृह मधि बैठि प्रसाद किय भोजन आनँद गात ॥
प्रभु जू कौं अवसेस धरि राख्यौ गोविंद जोय। दीनौं लै हरिदास कौं तामें तें कछु सोय ॥
गोविंद पैं तैं मागि लिय सबै भक्तगण जोय। पायौ गोविंद आप तब अन्न प्रसाद जु सोय ॥
प्रभु स्वतंत्र ईश्वर करैं नाना लीला वाम। धोबा पखाला सु कीय इही लीला कौ नाम ॥
जगन्नाथकौ और दिन नयनोत्सव जिहिं नाम। भयौ महोत्सव जननिकौ प्राननि सम अभिराम ॥

प्रभु विन देखे दुखी जन पन्द्र दिवस सौं सोय। जगन्नाथ दरसन भयें आनँद भयौ जु जोय ॥
लै कैं प्रभु सब भक्तगण हिय आनँद अधिकाय। जगन्नाथ दरसन हि हित चले वेगि अकुलाय ॥
आगें काशीश्वर चलैं भीर निवारन सोय। पाछें गोविंद पात्र जल लै कैं चलै जु सोय ॥
पुरी भारती विवि चले प्रभु के आगें सोय। श्री स्वरूप अद्वैत जू आस पास जन दोय ॥
चले जाय पाछें निकट और भक्त समुदाय। जगन्नाथ के भवन मधि गये भरे हिय चाय ॥
मरजादा लंघन करें दरसन लोभी होय। करें भोग मंडप हि जे श्री मुख दरसन सोय ॥
प्रभु जू के आतुर तृपित नयन भ्रमर जुग जोय। पीवैं अति आसक्ति सौं हरि मुख पंकज सोय ॥
सोभित प्रफुलित कमल से मेंन ऐंन जुग नेंन। मणि दर्पनलौं झलमलैं गंडनि दुति छवि ऐंन ॥
जानौ कुसुम बंधूक से सुन्दर अधर सुरंग। मंद हसनि दुति की लसनि तामें अमृत तरंग ॥
श्री मुख सुन्दर माधुरी छिन छिन बढ़ै जु सोय। कोटि कोटि जन नेंन अलि करें पान रस जोय॥
ज्यौं ज्यौं पीवैं त्रिपासौं बाढ़ै छिनछिन आहि। अनतन जाहि नेंन अली तजि मुख अम्बुज ताहि॥
इहीं भांति श्री महाप्रभु लै कें जन गण संग। कीन्हौ है मध्यान्ह लौं श्री मुख दरसन रंग ॥
स्वेद कम्प अरु अश्रु जल वहैं निरंतर आहि। करैं सु दरसन लोभ करि प्रभु संवरन सु ताहि ॥
मधि मधि लागे भोग जब मधि मधि दरसन होय। करें प्रभु संकीरत समैं भोग कैं जोय ॥
दरसन के आनदं मधि प्रभु सब विसरैं आहि। लै आये मध्यान्ह लखि प्रभु कौं जन गण ताहि ॥
ह्वै है प्रातः काल हीं रथयात्रा निज सोय। भोगलगायौ सेवकनि करि कैं दूनौ जोय ॥
कह्यौ गुँडिचा मार्जनहि करि संक्षेप जु आहि। कृष्ण भक्ति कौं अधम हूं पावैं लखि सुनि ताहि ॥
रूप सनातन और रघुनाथ चरण रज आस। चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस। सो प्रभु चरितामृत लिखैं ब्रजभासाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे बृजभाषायां गुंडिचागृहमार्जनं नाम द्वादस परिच्छेदः॥

———

त्रयोदश परिच्छेदः

सजीयात् कृष्णचैतन्यः श्रीरथाग्रे ननर्त्त यः। येनासीज्जगतां चित्रं जगन्नाथोऽपि विस्मितः॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानन्द। जय अद्वैत हिमांशु जय प्रभु भक्तनि के वृन्द ॥
जय सब स्रोता गण सुनौं करिकैं इक मन सोय। रथयात्रा कौ नृत्य प्रभु परम मनोहर जोय ॥
महा प्रभू जू और दिन सावधान हिय होय। गण सँग उठि किय रैन मधि कृत्य स्नान सुजोय ॥
पांडु विजै के देखिवें कीनौ गमन सु जोय। जगन्नाथ जात्रा करी तजि सिंहासन सोय ॥

आपुन रुद्रप्रताप नृप सेवक गण लै आय । करवायौ दरसन विजय प्रभु के जन समुदाय ॥
नित्यानन्द अद्वैत जू सँग सब जन समुदाय । देखें ईश्वर गमन प्रभु हिये महा सुख पाय ॥
पंडा गण सुबलिष्ठ अति जानौ मद गज सोय । करैं बिजय जगनाथ जू कर सौं कर गहि सोय ॥
तिहिं अँस अवलंबन करैं कितेक पंडा आहि । कितेक पंडा धरत हैं श्री पद पंकज ताहि ॥
मोटी दृढ़ कटि तट बंधि डोरी रेसम आहि । दुहुँ दिसि तें जु उठांवही धरि पंडा गण ताहि ॥
ऊंचे दृढ़ तकिया सुसब ठांव ठांव धरि जोय । तकिया तें तकिया जु इक गमन करावैं सोय ॥
तकिया प्रभु पद घात करि टूक टूक ह्वै सोय । जाय तहां उडि रुई तिहिं सब्द चंड अति होय ॥
विश्वंभर जगनाथ तिंहि सकै चलाय जु कोय । अपनी इच्छा सौं चलैं करत विहार जु सोय ॥
महा प्रभो जय जय सुकहि कहैं भक्त धुनि जोय । कोलाहल वाजे नवहु कछु नहि सुनियें सोय ॥
तव प्रताप रुद्र जु करैं आपन सेवन जोय । लै सुवर्ण मार्जन करैं पथि सो मार्जन सोय ॥
पुनि मारग कौं छिर कई लै चन्दन जल आहि । राज्यासन वैठे करैं घटि सेवा इमि ताहि ॥
करैं सुसेवन तुच्छ यह ह्वै कैं उत्तम जोय । याहि तें जगन्नाथ की कृपा हि भाजन होय ॥
पायौ सुख श्री महाप्रभु सो सेवा लखि ताहि । ताही सेवा करि लही तिंहिं प्रभु कृपा सु आहि ॥
अचिरज लोकनिकौं भयौ लखि रथ रचना ताहि । रथ आकार सुमेर की सबै हेम मय आहि ॥
सत सत लागे चौंर जिहि दर्पन उज्वल आहि । उपर पताका सत लगी विमल चदौंवा ताहि ॥
बाजें किंकिनि घूघूरु घंटा नाद सुहोय । नाना चित्रित पटबसन रथ जु विभूषित होय ॥
रथ ऊपर लीलाहि करि चढ़े जु ईश्वर सोय । चढ़े सुभद्रा हलधर सु ओर दिव्य रथ दोय ॥
पंद्रह दिन ईश्वर महा लच्मी लै कें संग । तिहि सँग रहि एकान्त मधि करैं सुक्रीड़ा रंग ॥
श्री संमति लै भक्त सुख देवैं कौं जु अपार । रथ चढ़ि आये वाहिरें करिवे कौं जु विहार ॥
सुच्छिम उज्ज्वल वालुका मारग पुलिन समान । दुहुँधा पंकति सघन तरु जनु वृन्दावन भान ॥
जगन्नाथ कीनौ गमन रथ पर चढ़ि कै जोय । दुहूं ओर देखत चलैं आनन्दित मन होय ॥
रथहि चलावे गौड सब करिके अति आनन्द । चलै वेगि रथ एक छिन चलै एक छिन मंद ॥
ठाढ़ौ ह्वै कैं रहै नहि चलैं चलायैं सोय । प्रभु ईछा सौं रथ चलै चलै न बल करि कोय ॥
तबै महाप्रभु आय सब लै निज गण समुदाय । श्री कर पहिराई सबनि माला चंदन लाय ॥
परमानन्द पुरी जु औ भारति ब्रह्मानन्द । श्री कर के चन्दन हि लगि वाढ्यौ अति आनन्द ॥
आचारज अद्वैत जू अरु प्रभु नित्यानन्द । श्री कर पंकज परस रस भये दुहूं आनन्द ॥
कीरतनीया गण दई माला चन्दन जोय । श्री स्वरूप श्री वास जू जहां मुख्य जन दोय ॥
संप्रदाय भौ चारि चौवीस गवैया जोय । द्वै द्वै तहां मृदंगिया भये आठ जन जोय ॥
तबै महाप्रभु जू तहां करि मन में जु विचार । मुख्य गवैया बांटिकैं संप्रदाय किय चारि ॥

नित्यानँद अद्वैत औ वक्रेश्वर हरिदास। चारि जननि आज्ञा दई करिवै नृत्य विलास ॥
संप्रदाय पहिलौ तहां कियौ स्वरूप प्रधान। और पांच जन पास तिहिं गायन दिये सुजान ॥
श्री नारायण दत्त तहां दामोदर गोविन्द। राघव पंडित और पुनि श्री गोविन्दानंद ॥
आज्ञा दी तब नृत्य हित श्री अद्वैतहि जान। संप्रदाय कीनौ दुतिय अरु श्री वास प्रधान ॥

कवित्त

गंगादास हरीदास श्री मान औ शुभानंद श्री राम पंडित तहां नाचैं नित्यानन्द हैं।
वासुदेव गोपीनाथ गावें है मुरारि जहां कियौ है मुकुन्द मुख्य तीजौ सो अमंद हैं।
श्री कान्त वल्लभ सेन और जन दोय तहां नाचैं ब्रह्म हरिदास नाम सुख कंद हैं।
गोविन्द घोष प्रधान कियौ और संप्रदाय हरिदास विष्णुदास राघव सो चंद है ॥
माधव औ वासु दोऊ भाई और तहां नाचैं पंडित वक्रेश्वर जू भक्त रस कन्द है।
कुलीन ग्राम के गवैया तिनकौ है समाज एक न्यारौ नाचैं तहां राय रामानन्द है।
और एक सम्प्रदाय सांति पुर वासिनि कौ तहां मुख्य श्री आचार्य भक्त उड्चंद हैं।
तहां श्री अचुतानन्द नृत्य करैं और सव गावैं सुख सिंधु भीजे सुरनि अमंद है ॥

दोहा

संप्रदाय जो खंड कौ न्यारौ कीर्तन ताहि। नरहरि तहां जु नाँचई श्री रघुनन्दन आहि ॥
संप्रदाय जगनाथ कें आगैं गावैं चारि। संप्रदाय द्वै दुहूवाँ इक पीछे रस सार ॥
संप्रदाय संतनि सुमधि चौदह वजें मृदंग। जिहि धुनि सुनि सब वैष्णव भये मत्त रस रंग ॥
भक्त वादरनि मिलि भई मेघ घटा रससारैं। वरसैं कीरंतन अमृत संग नैंन जल धार ॥
उठी कीरतन धुनि महा त्रिभुवन छायौ जाहि। वाद्यादिक जौ और धुनि कछू न सुनियें आहि ॥
हरि हरि कहि बोलै जु प्रभु कीनी सक्ति प्रकास। एक समें ही में करैं सातौ ठां जु विलास ॥
संप्रदाय मधि इही प्रभु हैं सब कहैं विचार। और ठौर जाय जु नहीं हम पर दया अपार ॥
प्रभु की शक्ति अचिन्त्य करि सकै न लखि तिंहिं कोइ। अंतरंग जानैं भगत सुद्ध भक्ति जिहिंहोय ॥
जगन्नाथ हरषित महा देखि कीरतन ताहि। रथ राख्यौ ठाढ़ौ सुकरि लखि संकीर्तन आहि ॥
श्री प्रतापरुद्रहि भयौ अचिरज परम सुजोय। देखत ही राजा विवश भयौ प्रेम मय सोय ॥
काशी मिश्रहि नृप कहैं प्रभु की महिमा ताहि। काशी मिश्र कहैं जु तुव भाग्य सीम नहिं आहि॥
सार्बभौम सँग नृप करैं सेंना बेंनी जोय। चोरी श्री चैतन्य की और न जानै कोय ॥
जाके ऊपर कृपा तिंहिं जानि सकै सो ताहि। ब्रह्मादिक हूँ कृपा बिन जानि सकें नहि जाहि ॥
नृप कैं सेवा तुच्छ लखि प्रभु मन हरषित जोय। पायौ तिही प्रसाद करि दुरौ जु दरसन सोय ॥
प्रगट मिलै न करैं इती पीछें कृपा जु सोय। यह माया चैतन्य की बूझि सकैसौ कोय ॥

कवित्त

सार्वभौम काशी मिश्र दोऊ महाशय राजा पै प्रसाद देखि भये चकित निदान हैं।
इहीं भांति लीला प्रगटाई कोऊ छिन निज भक्तनि नचावैं तहां करैं आप गान हैं।
कभू एक मूर्त्ति होय कभु बहुमूर्ति प्रभु शक्ति कौ प्रकासैं करि कार्य अनुमान है।
लीला वेस मांझ रहैं प्रभु कौं न आप सुधि जानि इच्छा लीला शक्ति करैं समाधान हैं ॥

पहिलैं जो रासादिक लीला करी वृन्दावन यौं अपूर्व लीला करैं गौर वार वार है।
भक्त गण देखें ताहि जानें नहीं और यामें है प्रमान भागवत शास्त्र बेद सार है।
याही भांति महाप्रभु करि नृत्य रंग सब दिये हैं बहाय लोक प्रेम रस धार हैं।
यहै कह्यौ कृष्ण रथ चढ़िवौ सु आगें जिहिं प्रभु जू नचाये भक्त गण ये अपार हैं ॥

दोहा

जगन्नाथ गुँडिचा गमन आगें सुनौ सुआहि। नृत्य कियौ जिहिं भांति कैं प्रभु जू आगें ताहि ॥
जब प्रभु जू कौ मन भयौ आप नृत्य हित जोय। संप्रदाय सातौं तवै किये एक ठां सोय ॥
श्री निवास रामाइ रघु गोविंद और मुकुंद। गोविंदानँददास हरि माधव अरु गोविंद ॥
भौ उद्दंड जु नृत्यहित जव प्रभु जू कौ हीय। श्री स्वरूप जू के जु सँग तव ये नव जन दीय ॥
एई गावैं दशौ जन प्रभु जू के सँग धाय। अरु चहुँ दिसि गावें खरे संप्रदाय भरि भाय ॥
करैं दंडवत जोरि कैं प्रभु जू दोऊ हाथ। स्तुति करैं ऊचें वदन देखें श्री जगनाथ ॥

तथाहि—नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्राह्मण हिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः ॥१॥
जयति जयति देवो देवकीनन्दनोऽसौ जयति जयति कृष्णो वृष्णिवंशप्रदीपः।
जयति जयति मेघश्यामलः कोमलांगो जयति जयति पृथ्वीभारनाशो मुकुन्दः ॥
जयति जन निवासो देवकी जन्मवादो यदुवरपरिषत्स्वैर्दोर्भिरस्यन्नधर्म्मं।
स्थिरचरवृजिनघ्नः सुस्मित श्री मुखेन व्रजपुरवनितानां वर्द्धयन्कामदेवं ॥
तथाहि—नाहं बिप्रो नच नरपति र्नापि वैश्यो न शूद्रो नाहं वर्णी न च गृहपति र्नो वनस्थो यतिर्वा।
किंतु प्रोद्यन्निखिलपरमानन्दपूर्णामृताब्धे र्गोपीभर्त्तुः पदकमलयो र्दासदासानुदासः ॥

इतनौं पढ़ि कैं फेरि हूं किय प्रणाम रसवान। हाथ जोरि कें भक्तगण वन्दे श्री भगवान ॥
प्रभु उद्दंड सुनृत्य मधि करिकैं अति हुंकार। फेरी फिरैं जु चाकलौं जिमि आलात अकार ॥
नृत्य समैं जहँ जहँ परै प्रभु कौ पद तल जोय। डग मग ही जु करैं तहां सागर गिरि जुत सोय ॥
स्तंभ स्वेद वैवर्णता कंप पुलक दृग नीर। गर्व हर्ष औ दैन्य इन नाना भाव अधीर ॥
गिरैं पछारई खाय कैं जाय भूमि गड़ि जोय। जानौं लोटे भूमि मधि सुवरन परवत सोय ॥
प्रभु श्री नित्यानन्द जू हांथ पसारैं दोय। आस पास दौरें फिरैं प्रभु कौं धरिवे सोय ॥

पार्षदगणों के बीच संकीर्तननृत्योन्मत्त रसराज श्रीगौरांगदेव

जनु धारा जलयन्त्र की बहै अश्रुजल सोय ।
सब के भीजें अङ्ग सकल आस पास जे लोय ॥

प्रभु पाछें अद्वैत जू फिरैं जु करि हुंकार। हरि बोलो बोलो हरी कहैं जु वारंवार ॥
लोक निबारण हित भये मंडल तीन प्रसान। एक प्रथम मंडल भये ये नित्यानँद वलवान ॥
काशीश्वर गोविंद दें आदि भक्त गण जोय। कर सौं कर गहि भये द्वितिय आवरण सोय ॥
वाहिर रुद्र प्रताप नृप लैं अधिकृत गण जोय। करैं निवारण जननि कौं करिकें मंडल सोय ॥
हरि चंदन के अंस करि करि आलंवन सोय। देखैं प्रभु कौ नृत्य नृप अति आवेसित होय ॥
श्री निवास ताही समैं प्रेम मगन मन सोय। देखैं प्रभु कौ नृत्य नृप आगैं ठाढ़ौ होय ॥
नृप के आगें देखि तिहिं तव हरि चंदन सोय। कर सौ परसि तिन्हैं कहैं एक ओर किनि होय ॥
श्री निवास जानें न कछु मगन तिंही सुख आहि। बार बार पेलैं सुकरि भयौ क्रोध मन ताहि ॥
ताहि थपेरहि मारि तिहि किये निवारन जोय। खाय तमाचौ क्रोध भौ तव हरिचंदन सोय ॥
क्रोध होय तव कछु तिन्हैं चाहै कह्यौ जु आहि। आपुन रूद्रप्रताप तिहिं कियौ निवारण ताहि ॥
पायौ इनकौ कर परस भाग्यवान तुम सयो। नही हमारौ भाग्य तुम भये कृतारथ जोय ॥
लखि प्रभु जू के नृत्य कौं अचिरज भयौ जु लोय। और रहौ जगन्नाथ कें आनँद अमित जु होय॥
रथ ठाढौ करि अगमनें गमन करैं नहिं सोय। दरसन करैं जु नृत्य कौं अनमिष अँखियन होय ॥
हृदय सुभद्रा राम कैं वाढ़यौ अति उल्लास। नृत्य देखि कैं दुहुनिकैं श्री सुख पंकज हास ॥
प्रभु के उद्भट नृत्य मधि अद्भुत आहि विकार। आठौं सात्विक भाव जे उदै भयौ इकवार ॥
माँस छिद्र सह रोम के वृदं सुपुलकित सोई। जानौं सेहड़ कौ सुतरु कंटक आवृत होय ॥
एक एक रद कंप लखि लागै हिय भय जोय। खसि परिहैं सव रदन यौं जानैं सवही लोय ॥
सवै अंग प्रस्वेद करि चलै रक्त की धार। जज कृकृ जज ज गग दगद सुवचन जु कंठ मझार ॥
जनु धारा जल जंत्र की वहै अश्रु जल सोय। सबके भीजें अँग सकल आस पास जे लोय ॥
गौर कांति वपु देखियै कवहूँ अरुण निदान। कवहुं कान्ति सुदेखिये मल्ली कुसुम समान ॥
स्तब्ध होय कवहूं सुप्रभु परे भूमि पर सोय। हाथ पांव नाहिन चलैं सुष्क काष्ठ सम जोय ॥
कवहूं परिकैं भूमि प्रभु होय स्वास विन आहि। प्राण छीन सब जननि के होय देखि करि जाहि ॥
कवहूं नासा नेत्र जल परै वदन-तैं फैन। अमृत धार मानौ वहै चन्द्रविम्ब तें ऐन ॥
सुभानन्द तव पान किय लैकैं फेंन जु सोय। कृष्ण सुप्रेमावेस मधि भाग्यवान वड़ जोय ॥
नृत्य जु तांडव इंही विधि किती वार लौं कीय। प्रभु कौ भाव विशेष मधि भयौ प्रवेसित हीय ॥
नृत्य जु तांडव छाड़िकैं आज्ञा दई स्वरूप। श्री स्वरूप गावन लगे जानि हृदय अनरूप ॥

तथाहि :—

पाये प्राणनाथ मैं सोय। जिहिं हित मनमथ वान करि गई पजरि हों जोय ॥ध्रु०॥

गावैं दामोदर यहै धुवा मात्र अति टेरि। मधुर नृत्य ईश्वर करैं हिय आनन्द सकेरि॥
धीरैं धीरैं गमन किय जगन्नाथ मधि जोय। नृत्य करत आगें चलैं शची जु नंदन सोय॥
गावैं नाचैं मन दियें नेंन रूप मधि ताहि। सहित गवैयनि प्रभु चलैं पीछें पीछें आहि॥
आगैं आवैं गौर जब होय श्याम थिर बाम। चलैं गौर आगैं चलैं धीरे धीरे स्याम॥
गौर श्याम प्रभु कें जु यौं खैंचातानी होय। राखैं रथ जुत श्याम कौ गौर बली अति सोय॥
भावन्तर प्रभु कैं भयौ नाचत नाचत चाय। पद्य पढ़ैं सुर उच्च करि दोऊ भुजा उठाय॥

तथाहि—

य: कौमारहर: स एव हि वरस्ता एव चैत्रक्षपा स्तेचोन्मीलित मालती सुरभय: प्रौढ़ा:कदम्बानिला:।
साचैवास्मि तथापि तत्र सुरतव्यापारलीलाविधौ रेवारोधसि वेतसी तरुतले चेत:समुत्कराठते॥

बारंबार यहै पढ़ैं पद्य महा प्रभु जोय। समुझै याकें तत्व कौं बिन स्वरूप नहि कोय॥
पहिलैं याके अर्थ कौ करि आये विस्तार। करिये अब संक्षेप करि इहि भावारथ सार॥
पहिलैं ज्यौं कुरुखेत मधि सब गोपीगण आहि। पाय जु दरसन कृष्ण कौ आनन्दित मन ताहि॥
जगन्नाथ कौं लखि उठ्यौं प्रभु कें भाव जु जोय। ताही भावाविष्ट ह्वै ध्रुवा गवायौ सोय॥
करैं निवेदन कृष्ण कौं राधा पीछे ताहि। सोई तुम सोई जु हम सो नव संगम आहि॥
तऊ हमारौ मन हरै बृन्दावन निज धाम। तातैं तहीं उदैं करौ अपनें चरण सुवाम॥
ह्यां लोकनि कौ वन सुगज रथ घोरनि धुनि सोय। तहां कुसुम वन भृंग पिक नाद सुसुनियैं सोय॥
राज वेस ह्यां और पुनि चत्री गण सब संग। तहां गोप गण संग औ मुरली वदन सुरंग॥
ब्रज मधि तुम सँग सरस सुख आस्वादन किय जोय। ह्यां ताही सुख उदधि कौ नही एक कण कोय॥
हम कौं लै लीला करौ फिरि वृन्दावन ताहि। मन वांछा पूरण तबै होय हमारी आहि॥
ऐसै हैं मधि भागवत वचन राधिका आहि। पहिलैं वर्णन सूत्र मधि करि आये हैं ताहि॥
श्लोक यहै प्रभु जू पढ़ै भावावेस जु ताहि। अर्थ सुइन सब पद्य को लोक न जानैं आहि॥
जानै एक स्वरूप जू कहैं न अर्थ हि ताहि। रूप गुसाईं जू कियौ अर्थ प्रचारहि याहि॥
आस्वादन जिंहिं अर्थ कौ करै स्वरूप जु संग। करै पठन इहिं पद्य कौं नृत्य मध्य करि रंग॥

तथाहि—आहुश्चते नलिननाभ पदारविन्दं, योगेश्वरै र्हृदि विचिन्त्यमगाध बोधै:।
संसारकूपपतितोत्तरणावलम्बं, गेह जुषामपि मनस्युदियात् सदा न:॥

सूही रागे—

प्राणपति कृष्ण तुम सुनौ अब कांन दै कैं करैं हम विनती सांच यौंहीं।
ब्रज हमारौ सदन तहां तुव संग सुख लहैं विन जीवन हि रहैं क्यौं हीं॥ध्रु०
आन मन हृदय आन मम मन सु बृन्दाविपिन मन वनहि दुहुनि करि एक जानें।

तहां तुम पद जुगल करौ जौ उदै अब तौ तुम्हारी पूर्ण दया मानैं ॥
प्रथम ऊद्धो द्वार अब हमारें प्रगट जोग औ ज्ञान साधन बताये।
तुम चतुर कृपामय जानि मम हृदय की हमें ऐसैं कहत लजायें ॥
काढ़ि चित तुमहि ते विषैलायौ यहै जतन करि करि सकत तिहि न न्यारौ।
ध्यान सिखवौ तिन्है लोक मारत हँसे स्थान अस्थान नहिं हिय विचारौ ॥
नहीं जोगेस गोपी जु संतोष हिय लहै तुव पद कमल ध्यान कीयें।
तुव वचन रीति मधि ताहि छल छिद्र वहु सुनै तिन अरु बढ़ै रोस हीयें ॥
देह सुधि नाहिं जिहि कूप संसार कहां तहां तें लेंन चाहै उधारा।
विरह के उदधि मनमथ तिमिंगिलि गिलै तहां तै पिया गण करौ पारा ॥
गिरि सुवृन्दाविपिन वन सु जमुना पुलिन कुंज रासादि लीला जु वेई।
वहै ब्रज ब्रज सुजन मात पित मित्र गण वडौ अचिरज मनहि विसरे तेई ॥
चतुर मृदु सद्गुण सुसील नेही करुणा तुम जु कछु दोस नहीं है हमारौ।
तऊ तुव हृदय सुमिरें नहिं ब्रज जन हिय है दुर्दैव विलसित हमारौ ॥
गनैं नहिं निज दुखहि देखि जसुधा मुखहि फटै ब्रज जन हृदय वे आवौं।
कै हतौ ब्रज जनहि कै जिवावौ आय दुखनि सहिवै इन्हैं क्यौं जिवावो ॥
और जो वेस तुव और संग देस औ ब्रज जनहि कभू सो नहिन भावैं।
तजि सकैं नाहि ब्रज भूमि तुव लखैं विन मरै को जतन जिहिं जीय आवैं ॥
तुम सुजीवन ब्रजहि प्राणधन ताहि तुम सकल संपति ब्रजहि प्राणप्यारे।
दया इव तुव हृदय ब्रज जन ज्याय करौ निज पद उदय ब्रज हमारैं ॥

सुनि प्रिया वचन ब्रज प्रेम मन में सुमिर भयौ व्याकुल हियौ भाव सानैं।
ब्रज जनहि प्रेम सुनि मानि आपुन रिणी कृष्ण जू करैं तिहि समाधानैं ॥
प्राण प्यारी प्रिये सुनौ मम वचन तुम कहौ हौं सांच करि तेरि आनैं।
तुम सवनि कौं सुमरिहौं झुरौं रेन दिन मम हृदय दुखहि जन कौंन जानैं ॥
जिते ब्रज वासि जन मात पित मित्र गण सबै मम प्राण सम देह धारी।
तिही मधि गोपी गण मम सुजीवन प्रगट तुम सु मेरी जीवन जियारी ॥
तुम सवनि प्रेम रस कियौ मोकौं जु बस हौं तुम्हारौ सदा वचन कारी।
तुम सवनि सौं छुटै मोहि दिस दूरि लै वसयौ दुर्दैव अति प्रवल भारी ॥
प्रिया प्रिय संग बिन प्रिया संग हीन प्रिय नहीं जीवै सांच इह प्रमाना।
सुनि है जब मम दसा यहै है है जु तिहिं इहिं भाय दुहूँ जन धरै प्राना ॥

चहै तिय प्रेम वति प्रेम जु तब है पति बिछुरें ही प्रिय हित हि चहै जोयी ।
गनैं नहि निज दुखहि चहै प्रिय जन सुखहि वेगिही मिलिहिगे दुहुँ सोई ॥
राखिवें जीव तुव सेय में रमापति अति सुदुर्घट शक्ति ताहि जानैं ।
करौ क्रीड़ा जु तुव संग निति प्रतिहि ये स्फूर्ति मेरी ताहि तुम जु मानौ ॥
भाग्य मेरें जु करि मम जु मधि प्रेम तुव है जु सोयी परम प्रवल जोही ।
ल्याय मोकौं दुरें तुव मिलावै वही प्रगट हूं ल्याय हैं वेगि मोही ॥
जादवनि के विपन्न दुष्ट जन कंस पच्छ किये संद्येय सबै हों जु तेई ।
रहैं द्वै चारि जन हति तिन्है विपन कौं आय हौं जानौं निरधार येई ॥
तिन जु अरिगणनि तें ब्रज जनहि त्राण हित रह्यौ बाहिर सदा ह्वै उदासी ।
जे त्रिया तनय धन वाहिरें संग्रहे जदुगणहि तोस हित भौ विलासी ॥
सो जु तुम प्रेम गुण ऐंचि मम ल्यायहै बीस दस द्यौस मधि करिजु विवसे ।
आय वृन्दाबनहि फिरि ब्रज बंधु तुम संग विलसि हौं रेन दिवसें ॥
इतौ कहि कृष्ण तिहिं ब्रज गमन तृष्णा जुत एक तव पद्य पढ़िकें सुनायौ ।
ताहि सुनि राधिका सकल वाधा नसी कृष्ण की प्राप्ति विश्वास आयौ ॥

तथाहि—

मयि भक्तिर्हि भूतानाममृतत्वाय कल्पते । दिष्ट्या यदासीन्मत्स्नेहो भवतीनां मदापनः ॥

कहैं जु एई सव अथर प्रभु स्वरूप के संग । करैं स्वाद घर बैठिकैं रैन द्यौस भरि रंग ॥
नृत्य समें प्रभु जू तिहीं भावाविष्ट जु होय । जगन्नाथ कौ मुख निरखि नाचैं पढ़ि कैं सोय ॥
श्री स्वरूपजू कौ सरस भाग न वरन्यौ जाय । प्रभुजू मधि आविष्ट जिहि मनऔ वाक्य सुकाय॥
प्रभु स्वरूप इन्द्रियनि मधि निज इंद्रियगण जोय । एक मेक करिकैं करैं गानास्वादन सोय ॥
कबहूं भावावेस मधि वैठि भूमि मधि सोय । भूमि तर्जनी सौं लिखैं प्रभु नीचैं मुख होय ॥
जब अँगुरी मधि होय छत जानि स्वरूप जु सोइ । भय करि निजकर प्रभु करहि करै निवारण सोइ॥
प्रभु हि भाव अनुरूप ह्वै श्री स्वरूप कौ गान । जब ही जोई रस तिंही करैं सु मूरति मान ॥
जगन्नाथ कौं निरखि कैं श्री मुख पंकज जोइ । ता ऊपर सुन्दर सरस नयन जुगल अलि सोइ ॥
रविकीकिरन सुमुखकरैंझिलिमिलिझिलिमिलि आहि । अलंकार परिमल बसन माल दिव्य सब ताहि ॥
उमँग्यौ आनँद सिंधु अति प्रभु के हिय मधि जोय । ताही छिन उन्माद की उठी सुआंधी सोय ॥
तब आनँद उन्माद नैं उठये भाव तरंग । नाना भावनि सैन्य मधि उपज्यौ जुद्ध सुरंग ॥
भावोदय पुनि सांति तिंहिं और संध्य सावल्य । संचारी सात्विक जु पुनि स्थाई सब प्रावल्य ॥
प्रभु शरीर जानौ महा सुद्ध हेम गिरि आहि । भाव कुसुम तरु सकल ही प्रफुलित भये जुताहि ॥
देखत लोकनि के जु मन चित आकरषै जोय । सींचैं प्रेमामृत सुकरि प्रभु सब कौ मन सोय ॥

जगन्नाथ सेवक सुगण नृप अधिकृत गण ताहि । जन जात्री लीला चलहि बासी जनजन आहि ॥
नृत्य प्रेम प्रभुकौ जु लखि अचिरज रहैजु मोय । कृष्ण प्रेम उपज्यौ तहां सबके हिय मधि जोय ॥
गावैं नाचैं जन करैं कोलाहल भरि भाय । यात्रा मंगल नृत्य प्रभु किय चौगुण अधिकाय ॥
कहा चली है और की जगन्नाथ वलराम । प्रभु नृत्यहि लखि हरख सौं चलैं मंद गति वाम ॥
कबहूँ सुख सौं नृत्य रँग लखैं राखि रथ आहि । सो कौतुक देख्यौ जु जिहि सोई साखी ताहि ॥
यही भांति नृत्यहि करत भ्रमत भ्रमत प्रभु जोय । आगें रुद्र प्रताप कैं लगे गिरन तब सोय ॥
तिहिं नृप संभ्रम सौं तबैं धार्यौ प्रभु कौं आहि । बाह्य भयें श्री महाप्रभु देखत ही तब ताहि ॥
तब राजा कौं देखिकें करैं जु प्रभु धिक्कार । छी छी विषई कौ परस भयौ हमैं निरधार ॥
नित्यानँद आवेस करि सावधान भौ नांहि । काशीश्वर गोविन्द प्रभु हूं ते और हि ठांहि ॥
यद्यपि नृप कौं देखिकैं सेवन नीचहि आहि । ह्वै प्रसन्न अति भयौ है मिलिवे कौ मन ताहि ॥
सावधान करिवे तऊ निज गण प्रभु सुखरास । कीनौं श्री भगवान कछु वाहिर रोसा भास ॥
नृप कें प्रभु के वचन करि भयौ हियें भय आहि । भट्टाचारज कहैं तुम करौ न संसै याहि ॥
प्रभु कौ मन सु प्रसन्न है तुम्हरे ऊपर जोय । सिखवैं हैं निज भक्त गण तुम्हैं लच्छ करि सोय ॥
हमजु निवेदन करहिंगे समय जानिकें ताहि । करियौ प्रभुकौ मिलन तुम जाय समैं तिहिं आहि॥
तबहि महाप्रभु रथहि कें होय दाहिनें आहि । माथौ दै तिंहिं पेलई रथ के पाछें जाहि ॥
पेलत ही रथ तब चल्यौ खरखराय कै सोय । उठे लोक तब चंहु दिसहि हरि हरि कहिं कें जोय ॥
तब प्रभु जू निज भक्त गण लै करि कैं सब संग । अग्र सुभद्रा राम के करैं नृत्य भरि रंग ॥
तहां नाचि जगन्नाथकें आगें आये सोय । नृत्य करत आगें चलै जगन्नाथ कें जोय ॥
चलिकें आयौ रथ तवैं वल गंडी इक धाम । जगन्नाथ रथ राखि कें देखैं दच्छिण वाम ॥
द्विज सासन वायें तहां नारिकेलिवन जोय । सुमन बाग दायें सवैं वृन्दावन सम होय ॥
गौर नृत्य आगें करैं लै भक्तनि गण आहि । जगन्नाथ रथ राखि कें करै जु दरसन ताहि ॥
लगे भोग तिहि ठाम मधि यहै नियम है जोय । कोटि भोग जगनाथ जू स्वादन करैं जु सोइ ॥
जगन्नाथ के लघु वड़े जिते दास गण आहि । निज निज उत्तम भोग सब करैं समर्पण ताहि ॥
नृप महिषी गण अधि कृत जु और मित्र गण जोय । लीलाचल वसी जिते छोटे बड़े जु लोय ॥
और जु नाना देश के यात्री गण समुदाय । तिन कौ निज निज भोग सब करैं समर्पण आय ॥
आगे पाछें दुहूँघा वन उद्यानहिं आहि । लहैं जिही जे लावहीं गणना नही सुताहि ॥
समय भोग के जनन की भीर महा अति होय । प्रभु जु नृत्य हि छाड़िके गये सु उपवन सोय ॥
प्रभु जू प्रेमावेस करि उपवन के मधि जाय । कुसुम बाग के चौतरहि रहे जु गिरि भरि भाय ॥
नृत्य परिश्रम करि भये घन श्रम कन प्रभु देह । सीतन अनिल सुगंध अति सेवन करें अछेह ॥
कीर्तनिया जे भक्त गन सवै आय अराम । एक एक तरु के तरें किय जु सवनि विश्राम ॥

यह कह्यौ प्रभु कौ महा संकीर्तन रस जोय । जगन्नाथ रथ अग्र जो किय जु नृत्य रस भोय ॥
लहै पास चैतन्य कौ यहै सुनैं जन जोय । प्रेम भक्ति पावै सुदृढ़ सँग बिश्वास हि सोय ॥
विवरण प्रभु के नृत्य कौ रथ के आगें आहि । प्रभु अष्टक मधि रूप जू वर्णन कियौ जु ताहि ॥

तथाहि—

रथारूढ़ास्याराद्धिपदविनीलाचलपते रदभ्रप्रेमोर्म्मिस्फुरितनटनोल्लासविवशः ।
सहर्षं गायद्भिः परिवृततनुर्वैष्णवजनैः स चैतन्यः किं मे पुनरपि दृशोर्यास्यति पदम् ॥

रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूपसनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत लिखै व्रज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्रीचैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे व्रजभाषायां रथाग्रनर्तनं नाम त्रयोदस परिच्छेदः ॥

———

चतुर्दश परिच्छेदः

गौरः पश्यन्नात्मवृन्दैः श्री लक्ष्मीविजयोत्सवं । श्रुत्वा गोपीरसोल्लासं हृष्टः प्रेम्णा ननर्त्त सः ॥

जय जय जय श्री कृष्ण जू गौर चंन्द्र चैतन्य । जय जय नित्यानंद जू जय अद्वैत सु धन्य ॥
जय जय श्रीवासादि जय गौर भक्त गण आहि । जय स्रोता समुदाय सब गौर प्राण धन ताहि ॥
हैं प्रेमहि आवेश में इहीं भांति प्रभु जोय । तिहीं समें गजपति नृपति किय प्रवेश तब सोय ॥
सार्वभौम उपदेश सौं तजि कें नृप कौ वेस । इक लौ वैष्णव वेस सौं आयो ताही देस ॥
जोरि हाथ आज्ञा लई सब भक्तनि की ताहि । पर्यौ जु प्रभुके चरण गहि साहस करिकें आहि ॥
आंखि मूंदि प्रभु प्रेम सौं रहे धरणि मधि सोय । परम निपुणता सौं करैं पद सुमर्दन जोय ॥
पद्यजु लीला रासकौ पढि जु करै स्तुति ठाट । जयति तेधि अध्याय कौ करण लग्यौ नृप पाठ ॥
सुनि सुनि कें प्रभु हृदय मधि भौ संतोष अपार । कहौ कहौ यौं उच्च स्वर कहै जु बारंवार ॥
श्लोक यह तव कथामृतं नृपनें पढ्यौ सु आहि । उठि कें प्रभु जु प्रेम करि दिय आलिंगण ताहि ॥
तुम मोकों बहुतै दिये रतन अमोलहि जोय । दैवे कौं मेरें न कछु दिय आलिंगण सोय ॥
इतनौ कहि ताही पदै पढ़ै सु बारम्बार । अंग कंप दोऊनिके चलै नैन जल धार ॥

तथाहि—

तव कथामृतं तप्तजीवनं कविभिरीडितं कल्मषापहं ।
श्रवणमंगलं श्री मदाततं भुवि गृणन्ति ये भूरिदा जनाः ॥

कहि सुभूरिदा भूरिदा हिय हि लगावै ताहि । अरु न्नाही जाने सु यह है जु कौन जन आहि ॥

पहिलें सेवा देखि तिहिं उपजी कृपा जु सोय । तिंही कृपा जु प्रसाद किय विनु सुधि प्रभुकौं सोय ॥
देखौ यह चैतन्य कौ कृपा महावल जोय । विनु अनुसन्धानहि करें कारज सवही सोय ॥
कहैं जु प्रभु तुम कौंन हौं कीनौं मोहित जोय । प्यायौ हरि लीला अमृत आय अचानक सोय ॥
नृप प्रताप रुद्र जु कहैं हौं तुव दासानुदास । करैं भृत्य निज नित्य कौं मोहि यहै हिय आस ॥
निज ऐश्वर्य महाप्रभू तव जु दिखायौ ताहि । यह काहूं कहियौं सु जिनि मनें कियौ तिहिं आहि ॥
नृप वाहिर इहि ग्यान कौं कीनौं नाहि प्रकाश । अंतर हिय जानैं सबै वाहिर रहे उदास ॥
गजपति नृप के भाग्य कौं देखि भक्त गण जोय । नृप कौं सबै प्रसंसई आनन्दित मन होय ॥
करिकें राजा दंडवत वाहिर चल्यौ जु सोय । सव भक्तनि कौं दंड़वत करी जोरि कर दोय ॥
किये मध्याह महाप्रभु लै भक्तनि गण साथ । लै प्रसाद तव आगमन कीनौं वाणी नाथ ॥
सार्वभौम रामानँद जु अरू दै वाणीनाथ । पठयौ राजा वहुत करि सो प्रसाद जगनाथ ॥
वल गंडी प्रभु भोग कौ सहज प्रसाद अनंत । प्रभु प्रसाद निखरौ जु सो आयौ जिहिं नहि अंत ॥
छना पना श्रीफल सुपय आंव नारियर जोय । कटहर नाना विधि कदलि ताल वीज पुनि सोय ॥
छौला नारंगी मधुर धरे विजोरा आय । अमृत फल मीठ सरस नींबू नाना भाय ॥
किसमिसि दाख वादाम पुनि मेवा वहु विधि सोय । सुमधुर पिंड खजूर वहु धरैं आनरस भोय ॥
नाम मनोहर आदि दै लाडू सतक प्रकार । अमृत गुटिका आदिलै खोवा मधुर अपार ॥
अमृत मँडा अरु सेबती पुनि कुपी कुपूर । दूध मलाई वहुत विधि रस पूपी रस पूर ॥
इक हरिवल्लभ सेबती पुनि मालती कपूर । लाडू मरिचा डालिमा अस पुनि मोती चूर ॥
कंद अमरती खांड के खाजे धरे बनाय । सावुनी तील सर्करी तिल खाजा वहु भाय ॥
और खिलौना खांड के फल फूलनि आकार । तक्र रसाला सिखिरणी वंध्यौ दही रस सार ॥
औ रस लौनें मूंग के अंकुर धरे सुधारि । नीबू परम रसाल पुनि अदरख मिंही वनारि ॥
आंव वेर फल आदि दै बहु प्रकार आचार । लिखे न जाय प्रसाद के तहां जितेक प्रकार ॥
पूरित भौ जु प्रसाद करि आधौ उँपवन जोय । देखि महाप्रभु के मनहि भो संतोष जु सोय ॥
इंही भांति जगन्नाथ जू करैं सुभोजन आहि । प्रभु जू के सीतल नयन भये देखि सुख याहि ॥
दौना कदली पत्र के पांच सात औ भार । इक इक जन दौंना दिये दस इक पात संभार ॥
कीरंतनयनिकौं जु प्रभु जानि परिश्रम आहि । चल्यो जिवावन कौं जु मन प्रभुकौ सवहि नु ताहि॥
वैठाये सब भक्तगण पांति पांति करि जोय । लगे परसनि आप प्रभु अति आनन्दित होय ॥
प्रभु के विन पायें नहीं करैं जु भोजन कोय । तब गोस्वामि स्वरूप जू कियौ निवेदन सोय ॥
भोजन करिवे तुम जु प्रभु आपुन बैठो आय । जव लौं तुम पायो नहीं सकै न कोऊ पाय ॥
बैठे तब श्री महाप्रभु निज गण सँग लै सोय । भोजन करवायौ सबनि भरि सुकंठ लौं जोय ॥
भोजन करि बैठे सु प्रभु करि सु आचमन आहि । पायौ वच्यौ प्रसाद प्रभु सहस एक जन ताहि ॥

गोविद प्रभु जु निदेसतें दीन हीन जन लाय । भोजन करवायौ दुखनि पाय रंक अधिकाय ॥
रंकन कौं प्रभु जू लखै भोजन रंग विशेष । हरि हरि बोलौ यौं तिन्हैं करै जु हित उपदेस ॥
हरि हरि बोलें दीन वे मगन प्रेम के सिंधु । इमि अद्भुत लीला करैं गौर दीन जन बंधु ॥
जगन्नाथ के रथ चल न समैं येहाँ सु जोय । पंडा सके न टारि रथ दियौ छाड़ि कैं सोय ॥
पंडा रथ टारैं सबैं आगें चलै न सोय । आयौ अधिकृत मित्र लै राजा व्याकुल होय ॥
महा मल्लगण संग लैं रथहि चलावन आहि । आपुन लाग्यौ नृप रथहि टारि सक्यौ नहि ताहि ॥
दुचितौ ह्वै नृप आनि कैं मत्त करी गण जोय । रथहि चलावन हेत तिहि दिये जोरि तब सोय ॥
मत्त करी गण टारिई जितनौं बल कछु ताहि । एक पैंड रथ नहि चलै भयौ अचल सम आहि ॥
सुनि कें आये महाप्रभु लै संग निज गण जोय । रथहि चलावै मत्त गज देखें ठाढ़े सोय ॥
करी अंकुस निघाय करि मारें अति चिंघार । चलै नही रथ सबनि कें भयौ जु हा हा कार ॥
तबै महाप्रभु जू सबै हाथी दिये छुटाय । रथ दुहुँघातें टारिबै दिय निज जन समुदाय ॥
रथ के पाछें आपु प्रभु पेलैं देक माथ । खर खराय कैं दौरि रथ चल्यौ श्री जगन्नाथ ॥
हाथ देत ही जन गणहि ताहि दुहूंघा आय । पेलन पाये ताहि नहि चल्यौ आपुहि धाय ॥
करैं लोक आनंद सौं धुनि जै जै भगवान । जगन्नाथ जय जय विना नाहीं सुनिये आन ॥
गयौ जु रथ इक पलक में द्वार गुंडिचा सोय । लखि प्रभाव चैतन्य कौ चमत्कार भौ लोय ॥
जय जु कृष्ण चैतन्य जू गौर चंद्र जय सोय । कोलाहल इहि विधि करैं धन्य लोक सब जोय ॥
लखि प्रताप रुद्र जु तबैं अधिकृत मित्रन संग । लखि प्रभु महिमा प्रेम करि भये जु प्रफुलित अंग ॥
पांडु विजय कीनौं सबै सब सेवक गण साथ । निज सिंहासन जाय कें बैठे श्री जगनाथ ॥
आये सिंहासन जु बलदेव सुभद्रा दोय । स्नानभोग हौनें लग्यौ जगन्नाथ कौ सोय ॥
आंगण मधि श्री महाप्रभु लै भक्तनि गण संग । आनँद सौं प्रारम्भ किय नृत्य कीरतन रंग ॥
प्रभु के अति आनंद करि उछल्यौ प्रेम तरंग । लखि सब जन प्रेमहि उदधि वहे नहीं सुधि अंग ॥
सो करि संध्या समय की लखी आरती ताहि । जाय बाग मधि बैठि प्रभु किये विश्राम जु आहि॥
अद्वैतादिक भक्त किय प्रभु कौं न्यौतौ जोय । मुख्य मुख्य कीनौ जननि पाये नौ दिन सोय ॥
चौमासे के दिन जिते औंर भक्त गण आहि । करिकें एकहि एक दिन परे बांट मधि ताहि ॥
मुख्य जनन लिय बाटिकें चारि मास दिन सोय । अवसर पायौ नाहिने औंर भक्तगण जोय ॥
करैं निमन्त्रण एक दिन दोय तीन मिलि ताहि । श्री प्रभु जूकी इंही विधि केलि निमंत्रण आहि ॥
प्रात काल ही स्नान करि देखै श्री जगनाथ । करैं नृत्य संकीरतन लै भक्तनि गण साथ ॥
प्रभु जू अद्वैतहिं कभू नित्यानंदहि जोय । कबहूं हरिदास हि कभूं अचुतानन्द हि सोय ॥
वक्रेश्वर जु कौं कभूं आन भक्तगण ताहि । प्रभु आगें जु नचावहीं भरे प्रेम रस आहि ॥
तहां गुंडिचा प्रांगणहि मधि प्रभु जू भरि भाइ । करैं दुहूं संध्यानि मधि कीरंतन अति चाय ॥

वृन्दावन आये जु हरि यह श्री प्रभु कौं ज्ञान । बिरह स्फुर्ति श्री कृष्ण की ताकौ भौ अवसान ॥
वृन्दावन लीला करैं जन सँग बहुवन सोय । इन्द्रद्युम्न सरोवरहि मधि जल क्रीड़ा होय ॥
सब भक्तनि कौं आप प्रभु सींचे जल करि सोय । सब गण जल सींचै तिन्हैं चहूँ ओर घिरि जोय ॥
कवहूं मंडल एक ह्वै कभूं अनेक जु सोय । जल मंडूक बजावई सबही करतल जोय ॥
द्वै द्वै जन मिल कैं करैं जल क्रीड़ा गण आहि । हारैं कोई जीतई प्रभु जू देखे ताहि ॥
नित्यानँद अद्वैत जल छींटा छीटी आहि । करैं हारि आचार्य फिरि गारा गारी ताहि ॥
विद्यानिधि स्वरूप संग करैं युद्ध जल सोय । गुप्तदत्त जू मिलि करैं जल जुद्धहि जन दोय ॥
खेलहि जलहि गदाधर जु श्री निवास के संग । राघव पंडित सँग करैं वक्रेश्वर जल रंग ॥
सार्वभौम सँग खेलई श्री रामानँद राय । गइ दुहूंनि गंभीरता भये प्राय सिसु भाय ॥
श्री प्रभु जू तिन दुहूनि की देखि चपलता सोय । गोपीनाथाचार्यहि कहैं जु कछु हँसि जोय ॥
दोऊ प्रामाणिक सुजन बहु पंडित गंभीर । बाल चपलता करैं क्यौं मनैं करौ तुम धीर ॥
गोपीनाथ कहैं जु तुम कृपा सिंधु अति आहि । प्रभु जू जब उछलित करौ एक बिंदहूं ताहि ॥
मंदरगिरि जु सुमेरहूं तिहि दुवाय दिय सोय । कहा बात इनकी जु ये गंड सैल सम दोय ॥
सुष्कतर्क खल खात ही गयौ जन्म ही जाहि । प्यायौ ताकौं तुव कृपा लीला अमृत जु आहि ॥
आपुन प्रभु जू तब सयन कीनौ ऊपर ताहि । सेस सयी लीला जु प्रभु कीनी प्रगट सुआहि ॥
श्री अद्वैत जु शक्ति निज करिकैं प्रगट जु ताहि । डोलत वहै जु नीर मधि लै प्रभु जू कौं आहि ॥
इंही भांति कौऊक छिन करि जल क्रीड़ा रंग । आये प्रभु जू बाग मधि लै भक्तनि गण संग ॥
पुरी भारती आदिये जिते मुख्य गण ताहि । न्यौते मधि आचार्य कें कीनों भोजन आहि ॥
ल्यायौ और प्रसाद जब वानीनाथ जु सोय । पायौ वहै प्रसाद सब प्रभु जू के गण जोय ॥
कियौ आप अपरान्ह मधि दरशन नर्त्तन चाय । निसा भयें उद्यान मधि कीनौ सयन जु आय ॥
कीनौ आय जु और दिन ईश्वर दरसन जोय । नृत्य गीत आँगण जु मधि कियौ कोउ छिन सोय ॥
प्रभु उद्यानहि आयकें भक्त संग सु अपार । लै तिनकौ प्रभु जु करैं वृंदा विपिन बिहार ॥
प्रफुलित प्रभु के दरस करि तरु वल्ली बनतीर । गान करैं पिक भृंग अति सीतल वहै समीर ॥
प्रति तरु तर प्रभु जु करें नृत्य हिये अति चाय । वासुदेवदत एक लै करैं गान भरि भाय ॥
एक एक तरु के तरें एक एक पद गान । नाचें परमावेस सौं एक एक रस खान ॥
तब वक्रेश्वर सौं कह्यौ नृत्य हेत भगवान । वक्रैश्वर नाचन लगैं करण लगे प्रभु गान ॥
प्रभु सँग दामोदर प्रमुख करैं गवैया गान । प्रेम धार के नाहिनें दिसि अस विदिसा ज्ञानि ॥
इंही भांति कौऊक छिन करि वन केलि समाज । गये नरेन्द्र सरोवरहि जल क्रीड़ा के साज ॥
जल विहार करिकें जु तब आये प्रभु उद्यान । भोजन लीला करी लै सँग जन गण भगवान ॥

नव दिन लौं ऐसें रहैं गुंडिया मधि जगनाथ। यौं प्रभु जू लीला करैं निज भक्तनि के साथ॥
जगन्नाथ बल्लभ सुतिंहिं नाम कुसुम आराम। अति विलास तिंहिं प्रभुकरैं नव दिनलौं विश्राम॥
राजा हेरा पंचमी कौ दिन आयौ जानि। कहैं जु काशीमिश्र सौं हिय उछाह सौं सानि॥
कालि जु हेरा पंचमी लक्ष्मी विजय सु आहि। कवहूं नही भयौ सुइमि उच्छव करौ सु ताहि॥
उच्छव मधि तैसैं करौ अधिक सौंज सब जोय। देखि महाप्रभु जू हियें चमत्कार अति होय॥
ठाकुर के भंडार अरु हमरे भरे भंडार। किंकिणि चामर छत्र सौं चित्रित बसन अपार॥
धुजि पताक घंटानि लैं रचना करी अपार। वहु विधि बाजे नृत्य पुनि दोला सजो संवार॥
करौ सबै उपहार अब करिकैं दूनैं जोय। रथ यात्रा हूं ते अधिक चमत्कार हिय होय॥
सोई कीजौ ज्यौं प्रभू लै निज भक्तनि वृन्द। जिही भांति ह्यां आय कैं दरसन करैं सुछंद॥
प्रात समें श्री महाप्रभु लै निज जन समुदाय। जगन्नाथ दरसन कियौ सुन्दर गिरिवर जाय॥
लीलाचल आये जु पुनि निज जन गण लै संग। लखिवे उत्कंठा हियें हेरा पंचमि रंग॥
प्रभु कौं काशीमिश्र जू करि वहु आदर जोय। भली ठौर सब गण सहित लै वैठाये सोय॥
रस विसेस सुनिवें भयौ प्रभु जु को मन चाय। पूछ्यौ श्री जु स्वरूप सौं तबै मंद मुसिकाय॥
करैं द्वारका कौ जदपि जगन्नाथ जु विहार। करैं प्रगट निज सहजहीं उत्छव बडौ अपार॥
तऊ जु तिनके वरस मधि होय हिये इक्क वार। वृन्दावन के दरस हित उत्कंठा जु अपार॥
समहै वृन्दाविपिन की यह उपवन गण आहि। उतकंठित हिय होय अति दरसनके हित ताहि॥
वाहिर निकसन मिस करैं रथयात्रा मिस जोय। सुन्दर गिरिकौं जाय प्रभु तजि लीलाचल सोय॥
रैंन दयौंस खेलें तहां नाना कुसुम उद्यान। लक्ष्मी देवी संग नहि लै किहि कारण जान॥
कहैं स्वरूप सुनौ जु प्रभु इहिं कारण निरधार। वृन्दावन क्रीड़ाहि मधि नहि लक्ष्मी अधिकार॥
गोपी गणजु सहाय इक वन लीला मधि ताहि। गोपी विन नहीं कृष्ण मन और हरि सकै आहि॥
कहैं जु प्रभु जात्रा छल हि गमन कृष्ण कौ सोय। बहिनि सुभद्रा राम जू लै ये सँग जन दोय॥
गोपी सँग लीला जिती करैं जु उपवन सोय। गूढ़ भाव अति कृष्ण के सो नहि जानें कोय॥
याही तें श्री कृष्ण को प्रगट नहीं कछु दोस। लक्ष्मी देवी क्यौं तऊ करैं जु इतनौ रोस॥
कहैं स्वरूप यहै जु है प्रेम वतीन सुभाव। प्रिय उदासता लेस लखि होय क्रोधमय भाव॥
तिहीं समय अद्भुत विविध रत्न लखै हैं जाहि। सुवरण कौ डोला परम करि आरोहन ताहि॥
ध्वजा पताका छत्र पुनि चारु चमर समुदाय। अग्रदेव दासी नचैं नाना वाद्य बजाय॥
तांबुल संपुट विजन अरु चामर डारी हाथ। दिव्य बसन भूषण रुचिर सत दासी जिहि साथ॥
ईश्वरता जु अनेक जिहिं संग वहुत परिवार। लक्ष्मी देवी क्रोध ह्वै आई सिंह जु द्वार॥
जगन्नाथ जू के जितै मुख्य भृत्य गण जोय। लक्ष्मी दासी गण करैं वन्धन तिनकौं सोय॥
डारैं लक्ष्मी चरण तर तिन्हैं बाधि कैं लाय। नाना धन लै दंडकरि चोरण कौ सौ भाय॥

काष्ठ अचेतन रथ जु तिहिं करैंजु ताडन ताहि । नाना विधि गारीनिदैं भंड वचन कहैं आहि ॥
लक्ष्मी दासी गणनि की लखि प्रगल्भता जोय । हसैं महाप्रभु जू तवैं सव निज गण लैं सोय ॥
श्री स्वरूप जू कहैं हम तीनौं लोक मझार । देख्यौ सुन्यौं न अरु कहूं ऐसो मान प्रकार ॥
विन उछाह ह्वै मानिनी तजैं विभूषण रंग । लिखैं चरण नख सौं धरणि मलिन वसन सव अंग ॥
कैं सतभामाकौ सुनौं पहिलैं इहि विधि मान । व्रज मधि सव गोपीनकौ मान जु रसहि निधान ॥
एऊ निज संपति सवैं करिकैं प्रगट जु ताहि । सजिकैं सेना जांय चढ़ि प्रिय के ऊपर आहि ॥
प्रभु जू कहैं कहौ जु तुम व्रज कौ मान प्रकार । कहैं स्वरूप जु मान तिन है जु नदी सम धार ॥
प्रेम वृत्ति बहु भेद हैं अरु नायिका स्वभाव । तिन भेदनि नाना विधिहि होय मान उद्भाव ॥
भली भांति गोपीन कौ मान कह्यौ नहि जाय । एक दोय भेदनि कहैं दिग दरसन हि कराय ॥
कोऊ धीरा मान मधि होय अधीरा कोय । धीराधीरा होय पुनि तीन भेद ये जोय ॥
धीरा पियकौं दूरि तें लखि उठि ठाढ़ी होय । आसन देय बिछाय कैं निकट हि आवत सोय ॥
हियें कोप मुखसौं कहैं मधुर वचन मुसिकाय । मिल्यौं चहैं प्रिय तिहि करैं आलिंगन हूँ धाय ॥
पोषन करैं जु मान कौ सहज सरल व्यौहार । कै प्रिय कौ निरसन करैं वक्र वचन अनुसार ॥
खिजैं अधीरा नायका कहि कटु वचन अपार । माला कर वंधन करैं कर्णोत्पल हि प्रहार ॥
पुनि धीराधीरा करैं वक्र वचन उपहास । स्तुति कवहूं निंदा कभूं कवहूं कहैं उदास ॥
मुगधा मध्या नायका और प्रगल्भा होय । मुग्धा नहिं जाने कछू मान चतुरई जोय ॥
निज मुख कौं ढपिकैं करैं केवल रोदन सोय । विनय वचन प्रियके सु सुनि वेगि प्रसन्न सु होय ॥
धीरादिक भेदनि धरैं मध्यादिक अरु दोय । तिन मधि सवनि सुभाव के तीन भेद ये सोय ॥
प्रखरा कोऊ मृदु समा ये तिनके जु सुभाव । रसकी सींव वढ़ावहीं प्रियके निज निज भाव ॥
प्रखर मार्दव साम्य पुनि सव सुभाव निर्दोष । तिहीं तिहीं जु सुभाव करि करैं प्रिय हि संतोष ॥
सुनत कथा एई भयो प्रभु कैं हर्ष अपार । कहौ कहौ दामोदर जु कहैं जु बारंबार ॥
कहैं स्वरूप जु कृष्ण जू रसिक मुकुट मणि आहि । रस आस्वादक रसहि मय हैं सुकलेवर ताहि ॥
प्रेमहि मय वपु कृष्ण कौ भक्त प्रेम आधीन । सुद्ध प्रेम रस गुणहि मधि है गोपिका प्रवीन ॥
गोपिनु के रस मधि नहीं रसाभास जो दोष । याही तें श्री कृष्ण के करैं परम संतोष ॥

तथाहि श्री भागवते—

एवं शशांकांशुविराजिता निशाः स सत्यकामोऽनुरतावलागणः ।
सिषेव आत्मन्यवरुद्धसौरतः सर्वाः सरत्काव्यकथाः रसाश्रयाः ॥

इक गोपी गण दच्छिणा इक वामागण ताहि । प्रियहि करावैं भाव बहु रस आस्वादन जाहि ॥
राधा ठकुराणी अधिक गोपीगण मनि जानि । निर्मल उज्वल मुख्य रस प्रेम रतन की खानि ॥
है जु मध्यमा वयस मधि समा सुभाव हि सोय । गाढ़ जु प्रेम सुभाव करि वाम्य निरंतर जोय ॥

तिन के बाम्य सुभाव करि उठै निरन्तर मान । तातैं बाढ़ै कृष्ण कैं आनँद सिंधु निदान ॥

तथाहि—

अहेरिव गतिः प्रेम्णः स्वभावकुटिला भवेत् । अतो हेतोरहेतोश्च यूनो मान उदञ्चति ॥

इतनौं सुनि प्रभु कौं बढ़ौं आनँद सिंधु अपार । कहौ कहौ अरु कहौ तब कहै स्वरूप विचार ॥
महाभाव अति गूढ़ है दशा जु राधा प्रेम । अति विशुद्ध निर्मल सु ज्यो बारहबानी हेम ॥
जबै अचानक कृष्ण कौ पावैं दरसन जोय । नाना भाव विभूषननि होय विभूषित सोय ॥
अष्ट सात्विक हर्षमुख संचारी ता मांहि । भाव अलंकृत वीश पुनि सहज प्रेम उपजांहि ॥
किलकिंचित अरु कुट्टमित ललित विलासजुसोय । मोट्टायित विब्बोक पुनि मौग्ध चकित अरुजोय ॥
इनि भावनि भूषनिनिकरि भूषित राधा अंग । सुख सागर की कृष्ण कें लखिकैं उठे तरंग ॥
किलकिंचितजु अलंकृतहि सुनौ जु विवरण ताहि । जिंहिं भूषण भूषित हरै राधा हरि हिय आहि ॥
जबहि कृष्ण राधाहि लखि चाहै छुयौ जु ताहि । दान घाट पथ जाति जब मनैकरैं गति आहि ॥
मनैं करैं जब आय कैं फूलन वीनत जोय । चाहैं आगैं सखिनु जब हिय कर धरिबैं सोय ॥
इनहि ठोर ही उपजई किलकिंचित जो आहि । संचारी हरष सु प्रथम कारण मूल जु ताहि ॥

तथाहि—

गर्वाभिलाषरुदितस्मितासूयाभयक्रुधाम् । संकरीकरणं हर्षादुच्यते किलकिञ्चितम् ॥

सात भाव अरु आयकैं सहजहि मिलैं जु सोय । तब इन आठौं भाव कैं मिलैं महारस होय ॥
गर्व और अभिलाष भय वृथा रुदन पुनि जानि । क्रोध असूया संग अरु होय मंद मुसकानि ॥
आठ भाव स्वाद जु पृथक इकठां मिलैं जु सोय । ताही के आस्वाद हित तृप्त कृष्णमन होय ॥
दधि मिश्रि घृत मधुर मिरच और कपूरजु सोय । एलादिकके मिलै ज्यौं मधुर सिखरणी होय ॥
इन भावन जुत जब लखैं प्रिया बदन अरु नैंन । संगम हू तें कोटि गुण लहै कोटि सुख ऐंन ॥

तथाहि—

अंतः स्मेरतयोज्वला जलकणव्याकीर्णपक्ष्मांकुरा,
किञ्चित् पाटलिताञ्चला रसिकतोत् सिक्ता पुरः कुञ्चति ।
रुद्धायाः पथि माधवेन मधुरव्याभुग्नतारोत्तरा
राधायाः किलकिञ्चितस्तवकिनी दृष्टिः प्रियं वः क्रियात् ॥

तथाहि—

बाष्पव्याकुलितारुणाञ्चलचलन्नेत्रं रसोल्लासितं,
हेलोल्लासचलाधरकुटलितं भ्रू युग्ममुद्यत्स्मितम् ।
कान्तायाः किलकिञ्चिताञ्चितमसौ वीक्षाननं संगमा
दानन्दं तमवाप कोटिगुणितं योभून्नगीर्गोचरः ॥

इतनौं सुनि प्रभुको भयौ आनन्दित मन जोय । आलिंगिण जु स्वरूप कौं कियौ हर्षमय होय ॥
भूषण भाव बिलास मुख कहौ सु लक्षण ताहि । जिहीं भाव राधा हरैं गोविंद कौं मन आहि ॥
तब स्वरूप गोस्वामिजू लागे कहनजु ताहि । सुनि प्रभुके सव भक्त गण लह्यो महासुख आहि ॥
राधावैठी होय कें विपन हि आवैं सोय । दरसन पावैं कृष्ण कौ तहां अचानक जोय ॥
देखत नाना भाव करि होय विलक्षण जोय । ताही सु वैलक्षण कौं नाम विलास जु होय ॥

तथाहि:—

गतिस्थानासनादीनां मुखनेत्रादि कर्म्मणां । तात्कालिकं तु वैशिष्ट्यं विलासः प्रियसंगजम् ॥

लाज हर्ष अभिलाप भय संभ्रम वाम्य जु होय । ए मिलि भाव जु राधिकहि करें जु चंचलजोय॥

तथाहि—

पुरः कृष्णालोकात् स्थगितकुटिलास्या गतिरभून् तिरश्चीनं कृष्णाम्वरदरवृतं श्री मुखमपि ।
चलत्तारं स्फारं नयन युगमाभुग्नमिति सा, विलासाख्यस्वालंकरणवलितासीत् प्रियमुदे ॥

हरि आगें राधा जवैं रहैं जु ठाड़ी होय । तीन अंग भंगी जु ह्वै भोंह नचाय जु सोय ॥
वहु भावनि उद्धारई मुख नेंननि मधि वाम । को ताके इहि भाव कौं ललित अलंकृत नाम ॥

तथाहि तल्लक्षणं—

विन्यास भंगिरंगाणां भ्रूविलासमनोहरा । सुकुमारा भवेद् यत्र ललितं तदुदाहृतम् ॥

ललित सु भूषित राधिकहि देखें जव ही कृष्ण । मिलिवैं कौं तब परसपर दोऊ होय सतृष्ण ॥

तथाहि:—

ह्रिया तीर्य्यग् ग्रीवा चरण कटि भंगी सुमधुरा, चलच्चिल्लीवल्लीदलितरतिनाथेर्ज्जितधनुः ।
प्रिय प्रेमोल्लासोल्लसितललितालालिततनुः प्रियप्रीत्यै सासीदुदित ललितालंकृति युता ॥

कंचुकि आकर्षन करे कृष्ण लोभ करि आहि । वाहिर मनें करें प्रिया हियें चाह अधिकाहि ॥
हिय कें भीतर सुख महा वाहिर क्रोध जु वाम । अलंकार कुट्टमित कहि इहीं भावकौं नाम ॥

तथाहि तल्लक्षणं—

स्तनाधरादि ग्रहणे हृत्प्रीतावपि संभ्रमात् । वहिः क्रोधो व्यथितवत् प्रोक्तं कुट्टमितं वुधैः ॥

कृष्ण चाह पूरण सु जिहिं करैं पान अवरोध । राधा कें आनंद हिय वाहिर वाम्य सु क्रोध ॥
करें वृथा रोदन प्रिया जानौं विथा सु पाय । करें कृष्ण की भर्त्सना कछुक मंद मुसकाय ॥

तथाहि—

पाणिरोधमवरोधितवाञ्छं भर्त्सनाश्च मधुरस्मितगर्भाः ।
माधवस्य कुरुते करभोरु र्हारि शुष्करुदितञ्च मुखेऽपि ॥

इही भांति सव और हूं भाव विभूषन आहि । हरैं कृष्ण के हीय कौं राधा भूषित आहि ॥
हरि लीला जु अनंत है वरणन करी न जाहि । आपुन जो वरनन करैं सहस वदन हूं आहि ॥

श्री निवास हसि कैं कहैं सुनि दामोदर जोय । लखौ हमारी रमाकी संपति बिस्मृत सोय ॥
वृन्दावन लखिवैं गये जगन्नाथ करि चाय । सुनि लछमी देवी मनहि भयौ जु कछु दुख आय ॥
इतनी संपति तजि गये क्यौं वृन्दावन ऐंन । तिनकी हासी करण हित लछमी सजै जु सेंन ॥
देख्यौ तुम्हरे प्रभु इती तजि संपति अभिराम । पात फूल फल लोभ करि गये कुसुम आराम ॥
चतुरणि जु कहाय कैं करैं कर्म यह जोय । लछमी आगें निज प्रभु हि देंहि लाय कैं सोय ॥
इतनौ कहि लछमी जु कैं सब दासी गण सोय । बांधि वेसन कटि आनई प्रभु के परिजन जोय ॥
ल्याय रमा के चरणमधि प्रणति करावै आहि । करवावैं विनती जु अरु लेहि भृत्यगण ताहि ॥
तिंहिं रथ के ऊपर करैं दंड प्रहार हि आहि । जगन्नाथ के भृत्य सब करैं चौर सम ताहि ॥
सबै भृत्य गण कहैं तब जोरि हाथ इहिं भाय । जगन्नाथ कौं काल्हि तुम आगें देहैं लाय ॥
लछमी जू निज गेह कौं जाय सांत तब होय । विभौ हमारी रमा की वचन अगोचर सोय ॥
पय औटावैं दधि मथें तुम गोपीगण आहि । वैठे ठकुराणी जु हम रतन सिंहासन ताहि ॥
श्री निवास नारद प्रकृति करैं जु बहु परिहास । सुनि कैं हसैं जिते महाप्रभु जू के निजदास ॥
कहैं जु प्रभु श्रीवास तुव नारद कौ जु सुभाव । तुम कौं भावै ईसता यह ईश्वर जु प्रभाव ॥
दामोदर जु स्वरूप ये शुद्ध व्रजवासि जान । रहैं शुद्ध प्रेमहि मगन नहि ईश्वरता ज्ञान ॥
सावधान श्री वास सुनि कहैं स्वरूप जु ताहि । बृन्दाबन संपति जु तुव कान परी नहि आहि ॥
वृन्दावन कौ साहजिक संपति सिंधु जु आहि । द्वारावति वैकुण्ठ श्री एक विंदु है ताहि ॥
है पुरुषोत्तम परम जौ आप स्वयं भगवान । कृष्ण धनी जिंहिं धाम सौं वृन्दावन रस खान ॥
चिंतामणि मय भूमि जिंहिं चिंतामणि गृह ताहि । दासिनुके भूषण चरण चिंता मणि गणआहि ॥
जहां सहाजिक विपिन जिंहिं लता कलपतरु ताहि । मागें नहि फल फूल विन अरु कोऊ धन आहि ॥
कामधेनु बन बन चरैं जहां अनंत जु सोय । देंहिं एक पय मात्र अरु धन नहि मागें कोय ॥
सहज कथा जो लोक ही वही दिव्य जिहि गीत । सहज गमन हूं जहां कौ करै नृत्य पर तीत ॥
जहां नीर जो सर्वठां सोहै अमृत समान । चिदानंद रस स्वाद जौ जहा सुमूरति मान ॥
लच्मी सम जिनके जु गुण सब लच्मीजु समाज । करैं कृष्ण मुरली जहां प्रियजु सखीकौ काज ॥

तथाहि ब्रह्म संहितायां—

श्रियः कांता कान्तः परम पुरुषः कल्पतरवः द्रुमाः भूमिश्चिन्तामणि गण मयी तोयममृतं ।
कथा गानं नाट्यं गमनमपि वंशी प्रियसखी चिदानन्दज्योतिः परमपितदा स्वाद्यमपिच ॥
चिन्तामणि श्चरण भूषणमंगनानां—शृंगार पुष्पतरवस्तरव सुराणां ।
वृन्दावनं व्रजधनं ननु कामधेनु वृन्दानि चेति सुखसिन्धु रहो विभूतिः ॥

सुनि कैं प्रेमावेश मधि नाचैं श्री निजुवास । काख ताल जु वजाय कैं करैं अट्ट अट हास ॥
प्रभु राधा कौ सुद्ध रस सुनि जु भयो आवेश । तव आरम्भ्यौ नृत्य तिंहि रसावेस सुविशेस ॥

रसावेस मधि नृत्य प्रभु श्रीस्वरूप कौ गान । कहौं कहौ प्रभु कहैं पुनि दियेंजु निज मन कान ॥
उमडौ व्रजरस गान सुनि प्रेमसिंधु अधिकाय । प्रभु जू पुरुषोत्तम नगर दीनौ प्रेम वहाय ॥
लक्ष्मी देवी निज समैं गई जु अपनें धाम । प्रभु जू कौं नृत्यहि करत भयौ तीसरौ जाम ॥
गान करत स्रम जुत भये संप्रदाय तव चारि । प्रभु जू कौ दूनौ वढ़ौ प्रेमावेस अपार ॥
राधा प्रेमावेस प्रभु भये जु मूरति सोय । नित्यानँद लखि कें तिंही करी दूरि थिति जोय ॥
नित्यानंद जू जानि कैं प्रभु कौ भावावेस । आवैं नहिन निकट तव रहैं दूरि कछु देस ॥
प्रभु कौं नित्यानँद बिन धारि सकैं जन कोय । प्रभु आवेस जु जाय नहि रहे कीरतन सोय ॥
स्रम जु जनायौ सवनिकौ करि रचनाजु स्वरूप । जन गणकौ श्रम देखि प्रभु भये बाह्य रसरूप ॥
सब भक्तन कौं लै प्रभू गये कुसुम उद्यान । करि कें कछु विश्राम प्रभु किय मध्यान्हस्नान ॥
तव प्रसाद जगन्नाथ कौ आयौ वहु उपहार । लक्ष्मी कौ जु प्रसाद पुनि आयौ विविध प्रकार ॥
लै सवकौं नाना रंगनि किय भोजन भगवान । जगन्नाथ कौं दरस किय करि कें संध्या स्नान ॥
जगन्नाथ कौं लखि कियौ नृत्य कीरतन रंग । जलक्रीडा जु नरेंद्र सर करें भक्त गण संग ॥
वन भोजन प्रभु जू करें उद्यान हि जव आय । आठ दयौस लौं प्रभु करी क्रीडा यही सुभाय ॥
जगन्नाथ कौ और दिन भीतर विजय सु होय । जगन्नाथ रथ चढ़ि चलैं निज आलय कौं सोय ॥
पहिलैं हीं जो महाप्रभु लै सब जन गण संग । करैं जु परमानंद करि नृत्य कीरतन रंग ॥
फेरि भयौ जगन्नाथ कौ पांडु बिजय हूँ जोय । इक कटि पट डोरी तहां गई टूटि कैं सोय ॥
पांडु विजय की तूलिका टूटि टूक भई सोय । जगन्नाथ के बोझ करि उडि भजि गई जु सोय ॥
बासी कुलिया गाम के सत्यराज अरु राय । करि सनमान तिन्हैं दई आज्ञा प्रभु इहि भाय ॥
या पट डोरी के जु तुम हो अव तें जुजमान । प्रति वत्सर ही ल्याय हौ डोरी करि निरमान ॥
टूटी पट डोरी दई ऐसैं कहि कें ताहि । करि हौ याकौं देखिकें डोरी अति दृढ़ आहि ॥
अधिष्ठान हैं शेष कौ यह पट डोरी जोय । सेवें श्री भगवान कौं दस मूरति धरि सोय ॥
सत्यराज बड़ भाग हैं अरु श्री रामानंद । सेवा आज्ञा पाय कें भयौ जु परमानंद ॥
गुंडिचा तें प्रति वरस ते सव भक्तनि लैं संग । पट डोरी लै आवई हिये भरे अतिरंग ॥
जाय सिहासन पै तवै वैठे श्री जगनाथ । घर आये तव महाप्रभु भक्तगणनि लै साथ ॥
जात्रा दरसाई जु सो भक्त गणनि इहिं भाय । वृन्दाबन क्रीडा करी पुनि लै जन समुदाय ॥
लीला प्रभु चैतन्य की है जु अनंत अपार । सहस बदन हूं करि नहीं पावै जाकौ पार ॥
रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगतहित सुबल श्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत लिखै व्रजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे हेरा-पंचमी यात्रा वर्णनं नाम चतुर्दशपरिच्छेदः ॥

पञ्चदसपरिच्छेद

सार्वभौम–गृहे भुञ्जन् स्वनिंदकममोघकम् ।
अंगीकुर्वन्स्फुटं चक्रे गौरः स्वां भक्तवश्यताम् ।।

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांसु जय प्रभु भक्तनि के वृन्द ।।
जय श्री प्रभु जू के चरित श्रोता जनके वृन्द । श्री प्रभु चरितामृत जिनहि प्राण वित्त सुखकंद ।।
इही भाँति श्री गौर जू भक्तगणनि के संग । लीलाचल रहिकैं करैं नृत्य गीत भरि रंग ।।
करैं दरस प्रथमावसर जगन्नाथ अभिराम । करैं गीत नुति नृत्य औ दंडरीति परणाम ।।
उपल भोग लागत करें वाहिर विजय जु नाम । श्री प्रभु मिलि हरिदास कौं आवैं अपने धाम ।।
करत नाम संकीरतन घर वसि प्रभु सुख रूप । करैं आय अद्वैत जू प्रभु पूजन अनुरूप ।।
देत सुगंधित सलिल करि पाद्य आचमन सोय । लेप्यौ सव अँग गौर कें सुगँधित चंदन जोइ ।।
माथें तुलसी मंजरी दै गल माल विसाल । चरण प्रणति कर जोरि कैं करैं जुनुति रसाल ।।
पूजा भाजन कुसुम श्री तुलसी सेस हौ जोय । किय पूजन अद्वैत कौं प्रभु जू सब लै सोय ।।
जो हो सो हो नम तुम्हैं बैठि मंत्र इहि आहि । श्रीप्रभुजू मुख वाद्य करि कहैं हास्य वहु ताहि ।।
इहि भांतिनि सौं परसपर करैं प्रणति सुखसार । करैं निमन्त्रण गौर कौं आचारज बहुवार ।।
न्यौतौ श्री आचार्य्य कौ अचिरज कहिवौ तास । बरनों है बिस्तार करि श्री वृंदावन दास ।।
तातें ह्यां पुनरुक्ति भय करयौ न वर्णन ताहि । करैं निमन्त्रण गौर कौं और भक्तगण आहि ।।
इक इक दिन इक भक्त घर होत महोत्सव रंग । तहां भक्त भोजन करें सवै महाप्रभु संग ।।
चारि मास भरिकें रहैं सवै महाप्रभु संग । जगन्नाथ जात्रा विविध देखें करि वहु रंग ।।
कृष्ण जन्मजात्रा दिवस नदंमहोत्सव रंग । गोपवेस भौ गौर जू सबभक्तनि लै संग ।।
भार दुग्ध दधि कौ सबनि निज निज अंसनि धारि । आये जु धाम महोत्सव हरि हरि कहैं पुकारि ।।
कानाई खुटिया तहां बैठे धरि बपु नंद । भई जसोदा माहिती जगन्नाथ सुख कंद ।।
आपुन रुद्र प्रताप पुनि कासी मिश्र जु आहि । सार्वभौम पुनि वार्जपय तुलसी अधिकृत ताहि ।।
इन सब कौ लै गौर जू करैं नृत्य वहु रंग । हरद दुग्ध दधि सलिल करि भरे सबनि के अंग ।।
श्री आचार्य्य कहैं कहत सांच न करि हौ कोप । लकुट फिराय सकौ तवै जानि परौगे गोप ।।
प्रभु तिनही की लकुट लै लगे फिरावन ताहि । वार वार आकाश मधि फेंकि लपकि लैं आहि ।।
सिरपर सन मुख पीठ पर इत उत ओर न दोय । लकुट फिराई संधि पद लखि जु हसैं सब लोय ।।
प्रभु ने चक्र अलात जौं लकुट फिराई सोय । चमत्कार भौ चितन मधि लखि कें सिगरे लोय ।।
इहि विधि नित्यानदं जू लकुट फिराई चाय । को जानैगो तिहिं दुहुनि गूढ़ गोप कौ भाय ।।

गजपति की आज्ञा जु करि अधिकृत तुलसी लाय । जगन्नाथ परसादि इक बस्त्रहि लैकैं आय ॥
श्री प्रभु जू के मस्तकहि बांध्यौ बस्त्र अमोल । आचार्य्यादिक गोपगण पहिराये जु अतोल ॥
कान्हाई खुटिया जु पुनि जगन्नाथ जन दोय । दिय लुटाय आवेस करि हुतो गेह धन जोय ॥
देखि महाप्रभु कें भयौ बहु संतोष जु सोय । मात तात के ग्यान करि दुहुनि प्रणति किय जोय ॥
तवैं परम आवेस मधि प्रभु आये निज धाम । इहीं भाति लीला करैं गौर अंग अभिराम ॥
विजय दसमि लंका विजय तिहिंकौ दिवस जु सोय । प्रभु लीनौ निज गणनि कौं बानर सैन्य जु होय ॥
हनुमान आवेस प्रभु जु भौ तरु साखानि वाहि । चढ़ि लंकागढ़ कौं दई फारि तोरि कें ताहि ॥
कितरे रावण प्रभु कहैं क्रोधावेश प्रशंस । हरी जगत माता अधम मारौं तोहि सवंस ॥
गोस्वामी आवेस लखि अचिरज लोक अपार । जय जय लोक सवैं कहैं तवै वारही वार ॥
दीपमाल जात्रा जु औ रासादिक इहिं भाय । जात्रा लखि उत्थान की द्वादसि सकल वनाय ॥
एक दिवस श्री गौर जू नित्यानँद लै सोय । करैं जुक्ति एकांत मधि वैठि सहोदर दोय ॥
कहा जुक्ति दोऊ करैं तिंहिं नहि जानैं कोय । अनुमानहिगे फलहि करि पीछें जन गण सोय ॥
तवै महाप्रभु जु तहां सगरे जनहि बुलाय । गौड देस कौं सव चलौ बिदा करी सुख पाय ॥
श्री प्रभु जु सबसौं कह्यौ प्रति वत्सर ह्यां आय । जैहौं लखि कैं गुंडिचा हमकौं मिलि सुख पाय ॥
आज्ञा दी आचारजहि करिकैं बहु सनमान । आचाण्डालजु तिहि करौ कृष्ण भक्ति कौ दान ॥
आज्ञा दी नित्यानँदहि जाहु गौड सुख रास । प्रेम भक्ति अर्गल रहित करिहौ तहां प्रकास ॥
आदि गदाधर कितिक जन रामदास सुख रूप । तुव सहाय करिहैं सदा दिय तुव साथ अनूप ॥
पँडित श्रीबासहि करयौ आलिंगन प्रभु आय । कहैं कंठ लगि कैं तवैं मीठे वचन सु ताहि ॥
बीच बीच तुमरे निकट आय हमजु निरधार । छिपि करि लखिहैं आपुकौ नृत्य महासुख सार ॥
तुमरे गृहमधि कीरतन हम निति नचि हैं सोय । तुमही देखौ गेह में औ लखि है नहि कोय ॥
वहै वसन दैहौ जननि सव प्रसाद जो आहि । छमा करैयौं प्रणति करि मम अपराध हि ताहि ॥
तिहिं सेवा तजि कें हम जु आय करयौ संन्यास । धर्म नहींहै हमजु निज करयौ धर्म कौ नास ॥
हम हैं तिन के प्रेमवस तिन की सेवा धर्म । तिन कौं तजि कें हम जु यह कीनौ वौरे कर्म ॥
मातकृपाल लहै नहीं बौरे सिसु के दोस । यही जानि कें मात मम मानैंगी संतोष ॥
कहा काज संन्यास सौ हमरें प्रेम जु वित्त । जिहीं समैं संन्यास किय भयौ छीन मम चित्त ॥
मैं लीलाचल में रहौं तिनकी आज्ञा आहि । विच विच आवैंगे जु हम चरण देखिवे ताहि ॥
देखौं तिन के चरण हौं नित्य जाय कें आहि । मानैं नाहीं सांच ते स्फूर्ति ज्ञान करि ताहि ॥
भाजी कदली मूल की कीनी सरस सुधार । अरु पुनि करी पटोल की नींवपात सुखसार ॥
नींबू आदौ खंड दधि दुग्ध खण्ड कौ सार । सालग्राम समर्पि दिय तवै बहुत उपहार ॥

लै प्रसाद कौं गोद में क्रन्दन करैं जु सोय। एसि गरे व्यंजन सु प्रिय लगै निमाई जोय ॥
मैं कैसें भोजन करौं इहां निमाई नाहि। आंसू जल मम ध्यान करि भरयौ जु नैननि मांहि॥
सबै करयौ भच्छण जु मैं तहां सिग्र ही जाय। रीती पातरि कौं निरखि पूछें अश्रु बनाय ॥
खाये व्यंजन अन्न किन काहे शून्य सुपात। कही बाल गोपाल नें खायौ सिगरौ भात ॥
कै मेरौ मन गाथ करि भ्रम ह्वै गयौ जु सोय। खायौ काहू जंतुनें किधौ आय सब जोय ॥
कैहौं भ्रम करि पात्रमधि अन्न परोस्यौ नाहि। जाय पाक पाकहि लख्यौ औविचार हिय माहि ॥
देख्यौ व्यंजन अन्न करि पूरण भाजन सोय। संसय भौ अचिरज कछू शचीमात मन जोय ॥
फिरि सेवक के हाथ करि चौकौ दयायौ ताहि। श्री गोपाल हि फेरि कैं अन्न समर्प्यौ आहि ॥
इंहीं भांति जब ही करैं उत्तम पाकहि जोय। मोहि खवावैं कौं करैं रुदन चाव करि सोय ॥
तहां जाय भोजन करौं मैं वस प्रेमहि ताहि। वेऊ सुख मानैं हियें बाहिर नाहीं आहि ॥
इहीं विजय दशमी दिवस यहै भई है रीति। करवावोंगे पूछि करि तिन कौ यहै प्रतीति ॥
एतिक कहि विहवल भये श्रीप्रभुजू रस भोय। किय धीरज हिय माँहि तव करिवैं विदा जु लोय ॥
राघव पण्डित कौं कहैं वचन जु सरस अनूप। हम हैं तुम्हरे वस जु तुव कृष्णप्रेम अनुरूप ॥
इनकी हरि सेवा कथा सुनौ जु सिगरे लोय। सेवा परम पवित्र है अति सर्वोत्तम सोय ॥
रहै कथा औ द्रव्य शुनि नारिकेलि की सोय। पंच गंडा करिकैं विकैं जैसौ तैसौ जोय ॥
बारी में सत कितिक तरु लच्छ लच्छ फल ताहि। तऊ सुनैं मीठे जहां नारिकेलि फल आहि ॥
इक इक फल कौ मोल दिय चारि चारि पण सोय। मगवावै दस कोस तें करिकैं जतनहि जोय ॥
प्रतिवासर में पांच छे फल छुलवाय बनाय। राखें सीतल करण कौं जल के बीच डुवाय ॥
भोग समैं दै संख जल फिरि छोल्यौ फल जोय। करैं समर्पन कृष्ण कौं वदन छिद्र करि सोय ॥
नारिकेलि जल कौं करैं पान कृष्ण जू सोय। राख कबहूं फल रितै कबहूं जल भरि जोय ॥
जल रीतौ फल देखिकैं पण्डित हरषित होय। पूरन किय सत पात्र मधि अन्न फेरि फल सोय ॥
करैं जु पाक समर्पिकैं वाहिर बैठे ध्यान। पाक खाय कैं हरि करैं भाजन शून्य निदान ॥
कबहूँ अन्न हि खाय पुनि भरैं अन्न सौं ताहि। पण्डित कें श्रद्धा बढ़ै मगन सिंधु हित आहि ॥
एक दिवस मधि दस फल जु संसकार करि जोय। लै आयौ सेवग तहां भोग लगावन सोय ॥
भौ बिलम्ब कछु भोग कौ हुतैं जु औसर नांहि। रह्यौ द्वार ही सेवक फल भाजन कर मांहि ॥
द्वारें ऊपर भीत मधि दियौ हाथ तिहि जोय। तिहीं हाथ करि फल छियौ पंडित देख्यौ सोय ॥
पण्डित कहै जु द्वार मधि करैं गतागति लोय। लागैं ऊपर भीत कैं तिहिं पद रज उड़ि सोय ॥
फल परसौ तिहिं हाथ सौ दियौ भीत के मांहि। भये अपावन हैं जु ये कृष्ण जोग्य फल नांहि ॥
इतनौं कहि फल फेकिदिय लंघिकैं भीत हि ताहि। इमि पवित्र इमि सेव करि जगतहि जीत्यौ आहि ॥
संसकार कीनौ जु तब नारिकेलि औ जोय। हरि कें पावन परम हों भोग लगायौ सोय ॥

इहीं भांति कटहर कदलि नारंगी सु रसाल। दूनैं दूरि हूँ गाम जिहिं हैं नीके जु विसाल ॥
आनें ते बहु मोल दै करिकें जतननि आहि। संसकार पावन जु करि करे निवेदन ताहि ॥
विंजन के हित इहीं विधि साक मूल फल सोय। ऐसैं चिरवा मुरमुरा खांड खील कछु सोय ॥
इनि भांतिनि पीठा पना ओदन सुंदर खीर। पावन परम जु और के सर्वोत्तमननि धीर ॥
आंब कसौदी आदि दै बहुत प्रकार अचार। गंध बसन भूषण बहुनि दिव्य सबै सुखसार ॥
हित सेवा इहिं भाति सौं करैं जु अनुपम आहि। सब लोकनि के सीतल जु नेंन होत लखिताहि ॥
एतक कहि श्रीराघव हि किय आलिंगन सोय। इन भांतिनि सनमान किय सबै भक्तगण जोइ ॥
सिवानंद सेनहि कहैं प्रभु करिके सनमान। वासुदेव दत कौं जु तुम करि हौ तोष निदान ॥
ऐ तो परम उदार हैं जिहि दिन आवै जोय। तिहीं दिवस खरचै जु तिहिं सेस न राखे कोय ॥
है जु कुटंबी यें तिन्है चहियै संचय जोय। संचय किये विना किहूँ कुडम्ब भरण सु होय ॥
इनके घर कौ लाभ व्यय सब तुमही तें आहि। लिख धर ह्वै कें करौगे समाधान तुम ताहि ॥
लै कै मेरे प्रति वरस सब भक्तनि के वृंद। गुँडिचा आवौगे सबनि करि पालन स्वछंद ॥
कुलिया वासिन सौं कहैं करि सनमान हि आहि। जा ता ऐहौ प्रति वरस पट डोरी लै ताहि ॥
श्री गुणराज सुखान जू कृष्ण विजय किय आहि। जहां ये कहैं प्रेममय सरस वचन अति आहि ॥
कृष्ण नंद नंदन जु मम प्राणनाथ जू सोय। इंही वचन करि हम विके तिंहिं कुडंब कर जोय ॥
कहा कथा तुवारी जु तुव ग्राम स्वान है सोय। सोऊ मोकौं प्रिय महा रहौ दूरि औ लोय ॥
सत्यराज खान तवै और जु रामानंद। प्रभु के चरणनि माहि कछू किय बिनती सुख कंद ॥
हम गृहस्थ बिसयी जु हैं हमकौं साधन कोय। श्री मुख सौं आज्ञा करौ किय पद बिनती सोय ॥
गौर कहैं श्रीकृष्ण औ जन सेवन निस काम। करौ निरन्तर कीरतन कृष्णनाम अभिराम ॥
सत्यराज जू तब कहैं करिकैं बिनती ताहि। जानहिंगे हम कौंन विधि है वैष्णव इह आहि ॥
कौन वैष्णव हैजू प्रभु कीजै सेवन जाहि। तिंहिं लछन सामान्य जे कहौ कृपा करि ताहि ॥
कहैं प्रभू जिहिं मुख सुनौ कृष्णनाम इकबार। वहै पूज्य हरिनाम करि श्रेष्ठ सबनि निरधार ॥
वहै करै हरिनाम करि सब पापनिछय ताहि। होत नाम हीतें सकल नवधा भक्ति जु आहि ॥
पुरश्चरण दीक्षा बिधिहि करै न नाम बिचार। करैं सबनि रसना परस आचांडाल उधार ॥
करैं जु छय संसार कौ आनुसंगिक फल तास। चित खेंचै श्रीकृष्ण मधि करै प्रेम परकास ॥

तथाहि—

> आकृष्टिःकृतचेतसां सुमहतामुच्चाटनं चांहसा
> माचाण्डाल ममूक लोक सुलभो वश्यश्च मोक्षश्रियः।
> नो दीक्षां नच सत्क्रियां नच पुरश्चर्यां मनागीक्षते
> मन्त्रो ऽयं रसनास्पृगेव फलति श्रीकृष्णनामात्मकः ॥ २ ॥

याही ते जाके बदन एक कृष्ण अभिधान। सोई है वैष्णव जु तिहि करौ परम सनमान ॥
दास मुकंद जु खण्ड के औ रघुनदंन नाम। श्री नरहरि जू मुख्य ये तीनौ जन अभिराम ॥
पूछत दास मुकुंद कौ सचीसुनु अभिराम। तुमहौ पिता जु पुत्र तुव कै रघुनदंन नाम ॥
के रघुनदंन तुव पिता तुम हौ तनय कि ताहि। निहिंचै करि मोसौ कहौ जाय जु संसे आहि ॥
रघुनदंन हमरे पिता कहै मुकुदं जु दास। है मेरें निहंचै यहै हम हैं पुत्र जु तास ॥
कृष्ण भक्ति हम सबनि कै रघुंनदंन हीतैं जु। याही तें सब के पिता रघु निश्चै किय मैं जु ॥
हरषैं सुनि कैं प्रभु कहैं कहै जु प्रभु निरधार। याही तैं हरि भक्ति करि लघु हूं गुरु सुखसार ॥
कहैं जु महिमा भक्त की प्रभु पावै सुखसार। कहत भक्त महिमा भये पांच वदन निरधार ॥
सुनौ कहैं जन गननि सौं श्री मुकुंद कौ प्रेम। गूढ़ प्रेम निरमल जु अति जैसैं सुद्ध जु हेम ॥
राजवैद्य बाहिर जु ये करैं जु सेबा ताहि। कृष्ण प्रेम अतंर जु इहि जानि सकै को आहि ॥
एक दिना नृप जवन की उच्च अटारी आहि। वात चिकित्सा की कहै आगें बैठे ताहि ॥
मोर पखनि कौ पंखा इक तिहीं समैं अति आहि। राजा के सिर पर धरौ लै इक सेवक ताहि ॥
प्रेमावेस मुकुंद भौ मोर पखा लखि चाय। अति जु अटारी उच्च ते परे भूमि मधि आय ॥
राजवैद्य कौ मरण भौ राजा कौं यह ज्ञान। करवायौ चेतन तिन्ह जु उतरि आय भय मानि ॥
राजा कहै व्यथा तुमनि पाई किंहिं अंग माहि। मुकुँद कहैं अति बहु व्यथा मैंतौ पाई नाहि ॥
राजा कहै मुकुन्द क्यौं गिरे अटा तें जोय। मुकुँद कहै मोकौं व्यथा घू कह मिरगी सोय ॥
सवैं बात जानैं नृपति वह है महासुजान। भौ मुकुंद मधि नृपति कैं महा सिद्धि कौ ज्ञान ॥
हरिमन्दिर सेवा करैं रघुनन्दन जू सोय। द्वारें एक सरोवरी तिहीं घाट पै जोय ॥
फूलै बारह मास की कदवं वृत्त इक सोय। हौंहि कृष्ण अवतंस तैं फूल नित्य ही दोय ॥
फिरि कैं कहैं मुकुन्द सौं मधुर बचन सुख साज। करैं उपार्जन धर्म करि धन तुम्हरौ यह काज॥
रघुनदंन कौ कार्य यह हरि सेबन कौ आहि। विना कृष्ण सेवा नहीं और ठौर मन आहि ॥
श्री नरहरि जू तुम रहौ मेरे जन गण संग। ये त्रय कारज तीन जन सदा करौ भरि रंग ॥
विद्या वाचस्पति जु औ सार्वभौम जुग भ्रात। दोऊ जन पर कृपाकरि कहैं गौर जू वात ॥
कृष्ण प्रगटे इहिं समैं दारु नीर वपु धारि। दरसन और जु स्नान करि करैं जीव निस्तार ॥
दारु ब्रह्म साक्षात हैं श्री पुरुषोत्तम नाम। हैं सु प्रगट भागीरथी जल ब्रह्महि अभिराम ॥
दारु ब्रह्म सेवन करैं सार्वभौम जू सोय। नीर ब्रह्म सेवन करैं वाचस्पति जू जोय ॥
प्रभु जू गुप्त मुरारि सौं करि आलिंगण आहि। कहैं भक्तगण सब सुनौ भक्ति निष्ठता याहि ॥
इन्हैं लुभायौ मैं प्रथम औ कहि वारंवार। परम मधुर हैं गुप्त जू श्री व्रजराज कुमार ॥
सर्वांसी सर्वाश्रय जु और स्वयं भगवान। निर्मल प्रेम विशुद्ध जो तिहि सरबसमय जानि ॥
सब सदगुण वृंद सुरतन रतनाकर हैं ताहि। चतुर विदग्ध सुधीर हैं रसिक मुकुटमणि आहि ॥

मधुर चरित श्रीकृष्ण कौ औ पुनि मधुर विलास । चतुरता जु वैदग्ध करि करैं जु लीलारास ॥
तिन ही कृष्ण हि तुम भजौकृष्ण आश्रय होय । कृष्णविना जु उपासना मन जिनि आनौ कोय ॥
बार बार इहि भांति सौं सुनि कैं वचन बिलास । मेरे गौरव करि कछू मन फिरि गयौ रसाल ॥
हम सौं वोले गुप्त तव हौं तुव किंकर आहि । हूं आज्ञा कारी जु तुव नहि स्वतंत्रता याहि ॥
यौं कहि कें निज घर गयौ निसिमें करैं विचार । भौ विह्वल रघुनाथकौ त्याग हिये मधि धार ॥
छाड़ौंगौ रघुनाथ कौं कैंसैं पद सुख साज । राम करौ मेरौ मरण याही निसि मधि आज ॥
इंही भाति क्रंदन करैं सिगरी निसि के माहि । कियौ रात कौं जागरण मधि चेतना जु नाहि ॥
आय भोर ही मम चरण मधि निज सिर कौं धारि । रोवत रोवत ही कछू विनती किय सुखसार ॥
मैं रघुपतिके चरण मधि वेंचि सीस निज दीय । छाडि सकौं नहीं रामकौं लहौं व्यथा अतिहीय ॥
चरण कमल रघुनाथ के छाड़े नैंकु न जाय । तुव आज्ञा भँग होय है कहा करौं जु उपाय ॥
तातें मो पैं दयामय करौ कृपा तुम एह । तुमरें आगैं मृत्यु मम होय न सो सन्देह ॥
एतिक सुनि कें सुख भयौ वहुतैं मेरैं हीय । तव तौ इनहि उठाय कैं मैं आलिंगन कीय ॥
साधु साधु श्री गुप्त जू तुव दृढ़ भजन निदान । तुमरौ मेरे वचन करि चलौ नहीं चित आन ॥
ऐसी ही प्रभु चरण मधि चहियै जन कैं प्रीति । चरण छुटावैं प्रभु तऊ सकै न तजि इहिं रीति ॥
भाव सु निष्ठा यहै तुव जानन हित निरधार । मैं तुम सौं आग्रह वहुत कीनौ वारंवार ॥
हनूमान साचात तुम रघुवर किंकर आहि । छाडोगे कैसैं जु तुम चरण सरोरुह ताहि ॥
सोई गुप्त मुरारि ए मेरे प्राण समान । सुनि लखि इन कौ दैन्य मम फाटै हीय निदान ॥
वासुदेव कौं तव प्रभू करि अलिंगण आहि । द्वै करिकैं जु सहस मुख कहैं सु गुण गण ताहि ॥
निज गुण सुनिकैं दत्त जू हिय अति लज्जित होय । धरिकैं प्रभु जू के चरण करैं निवेदन सोय ॥
जगत तारिवे हेत प्रभु है तुम्हरौ अवतार । मेरै एक निवेदन हि करौ जु अंगीकार ॥
करिवे कौं जु समर्थ तुम महादयामय जोय । तुव मन करौ तवैं प्रभू अनायास ही होय ॥
जीवन कौ दुख देखि मम टूक टूक हिय होय । सव जीवन कौ पाप प्रभु देहु सीस मम सोय ॥
हौं जीवन कौ पाप लै करौं नरक कौ भोग । सव जीवनि कौ तुम प्रभू दूरि करौ भव रोग ॥
यह सुनि श्री चैतन्य कौ द्रवौ हियौ भरि रंग । लागे श्री प्रभु जू कहन अश्रु कंप भरि भंग ॥
तुमरैं अचिरज यह नहीं हौ तुम तौ प्रहलाद । तुम पर है श्री कृष्ण कौ परिपूरण जु प्रसाद ॥
कृष्ण सत्य सोई कर जोयी मागै दास । निज जन की इच्छा विना और कृत्य नहि तास ॥
सकल जगत के जीव कौं तुम चाह्यौ निरतार । पाप भोग बिन होय गौ सव ही कौ उद्धार ॥
नहीं कृष्ण असमर्थ हैं धरैं सवै वल जोय । क्यौं भुगतैहैं और कौ तुम्है पाप फल सोय ॥
जाकौ हित चाहौ जु तुम भयौ वैष्णव सोय । पाप वैष्णव कौ जु हरि दूरि करैं सव जोय ॥

तथाहि— यस्त्विंद्रगोपमथवेन्द्रमहोस्वकर्म्म वन्धानुरूपफलभाजनमाननोति ।
कर्माणि निर्दहति किन्तु च भक्तिभाजां गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि ।।

तुम इच्छा ही मात्र करि ह्वै है जग उद्धार । मुक्त करत ब्रह्मांड सब नहि प्रभु कें कछु भार ।।
एक उदंवर तरु लगे कोटिक फल जिहि माहि । भासैं विरजा तीर मधि कोटि अंड समुदाय ।।
होय नास परिकैं जवैं कवहूं इक फल ताहि । तऊ न हानि जानैं नहीं कछू वृच्छ निज आहि ।।
तैसैं ही ब्रह्माण्ड इक होय मुक्त जो आहि । तऊ हानि कछु कृष्ण जू मन में धरें न आहि ।।
अमित ईसता कृष्ण कें वैकुण्ठादिक धाम । खाई ताके कोट की कारणाब्धि जिहि नाम ।।
माया लें भासैं तहां जे अनन्त ब्रह्माण्ड । गढ़खाई भासैं सु यौं राई पूरण भांड ।।
इक राई नासैं जु तिहिं हानि न मानैं सोय । नहीं हानि यौं कृष्ण कैं नसैं अंड इक होय ।।
जो सब ही ब्रह्माण्ड सह होय आज्ञा कौ नास । तऊ कृष्ण जू मानई नहीं हानि कछु तास ।।
कामधेनु कोटिक पति हि ज्यौं इक छेरी नास । षड गुण पति श्री कृष्ण कैं कौन काम है तास ।।

तथाहि—

जय जय जह्यजामजित दोषगृभीत गुणां त्वमसि यदात्मना समवरुद्धसमस्तभगः ।। इति ।।

सब भक्तनि कैं यौं कहै जे जे गुण हैं जाहि । सब कौं विदा दई जु प्रभु करि आलिंगण ताहि ।।
प्रभु वियोग करि भक्त सव रोदन करैं अपार । प्रभु कें भक्त वियोग करि खेद हिये जु मझार ।।
रहैं गदाधर पण्डित जु श्री प्रभु जू के पास । वाग जमेश्वर वीच प्रभु करवायौ तिहि बास ।।
पुरी गुसाई जू सरस अरु श्री जगदानंद । श्री स्वरूप दामोदर जु प्रभु स्वरूप सुख कंद ।।
दामोदर पण्डित निपुन काशीश्वर गोविंद । ये सव लीला चल वसैं प्रभु के संग आनंद ।।
जगन्नाथ कौ दरस सब निति प्रति प्रातः काल । करैं महाप्रभु संग मिलि हिय आनंद विसाल ।।
एक द्यौस प्रभु के निकट सार्वभौम जू आय । हाथ जोरि कें कछु करैं प्रभु हि निवेदन चाय ।।
गये वैष्णव अव सवै गौडदेस कौं जोय । भयौ निमन्त्रण कौ अवै प्रभु कौ औसर सोय ।।
करौ जु भीक्षा मास भरि प्रभु जू मेरें गेह । प्रभु जू कहैं न करि सकैं नही धर्म है एह ।।
भीक्षा दिन बीसहि करौ कहैं फेरि करि प्रीति । प्रभु जू कहैं यहू नहीं हंस धर्म की रीति ।।
भट्टाचारज तव चरण प्रभु के धरि कें सोय । करौ दिवस दस ही कहैं करि कैं विनती जोय ।।
दिवस घटाये पांच प्रभु क्रम क्रम करिकें आहि । नियम भयौ दिन पांच कौ भीक्षा करिवे ताहि ।।
सार्वभौम जू तव करैं और निवेदन ताहि । संन्यासी दस जन जु हैं प्रभु तुमरे सँग आहि ।।
पुरी गुसांई पांच दिन भीक्षा मेरें गेह । पहिलैं कीनी है प्रभू तुम जानत हौ एह ।।
मम स्वरूप दामोदर जु वांधव ईश्वर सोय । ऐहैं कबहूँ संग तुम कभूं एक ले जोय ।।
अरु संन्यासी आठ कौ दोय दोय दिन होय । इक इक दिन इक इक जती पूर्ण मास भौ सोय ।।
जौ इकठे ही आय है बहु संन्यासी जान । पावैंगे अपराध तिहिं कर न सकैं सनमान ।।

निज छाया सँग गेह मम ऐहौ तुम रस रूप। कबहूं ऐहैं संग तुव दामोदरजु स्वरूप ॥
प्रभु के हिय की जानि कें आनंदित भौ हीय। ताही दिन प्रभु कौ तहां तिन्हैं निमंत्रण कीय ॥
पतिनी भट्टाचार्य्य की साठी माता नाम। जननी है जै नेह की प्रभु भक्ता अभिराम ॥
भट्टाचार्य्य आय घर आज्ञा दीनी ताहि। साठी माता हरषि करि पाक चढ़ायौ आहि ॥
पाक गेह तें दाहिनें है भोगालय दोइ। इक घर सालग्राम कौ भोग लगै है सोइ ॥
भीक्षा हित श्री गौर कें अरु दूजौ गृह जान। कीनौं है एकांत इक आचारज निर्मान ॥
वाहिर कौं इक द्वार तिहि प्रभु प्रवेस हित साज। द्वार रसोई और इक पाक आयवे काज ॥
इक वत्तीसा कदलि कौं कोमल विपुल सुपात। परस्यौ मानी तीन मित ता मधि तंदुल भात ॥
पीत सुगंधित घीव करि सींच्यौ अन्न सुधार। पातरिके चारौ दिसा घृत वहि चलौ सुढार ॥
खोत्सा कदली के बरापात सुदौना पांति। नाना व्यंजन भरि धरें चहुंधा नीकी भांति ॥
दस विधि साकसु निंव पुनि तिक्तजु सुक्ता झोल। मिरच झाल छेनासु पुनि बड़ी बडा अरु घोर ॥
घीया पेठा दूध मधि लफला और विसार। केरा की भाजी विविध सकरा बहुत प्रकार ॥
पक्व सुपेठा वरिनु के विंजन किये अपार। फल बड़ी फल मूल की भई सु विविध प्रकार ॥
नींव पत्र नव भुंज के वेंगन किय मिलि ताहि। करी मानचाकी सुपुनि पलवल भाजी आहि ॥
भुंज उरद औ मूंगकी कीनी दारि सुधारि। वरा मधुर पाठे सुपुनि अंवल वहु परकार ॥
मुंग ऊरद के बरा पुनि मधुर कदलि के सोय। दूध नारियर पिष्ट की कीनी पूरी जोय ॥
दूध चिडा कांची बड़ा दुध लकलकी जु आहि। और जिते पेठा किये कह न सकैं सब ताहि ॥
घृत जुत पायस सघन अति भरि कुंडनि मधि ताहि। अद्भुत केरा दूध मधि करैं अमृत सम आहि ॥
मठा सिखरणि दधि वंध्यौ बूरौ मधुर अपार। गौडदेस उत्कल जु के भोजन जितक प्रकार ॥
श्रद्धा करि आचार्य्य जू सवे कराये सोय। सुन्दर चौकी पर सिंही वसन विछायौ जोय ॥
सीतल वासित जल भरी दुहुं दिसि झारी दोय। पाक व्यंजननि पर धरी तुलसी मंजरी सोय ॥
पिठा पना गुटिका अमृत ते सव लिये मंगाय। सव साद जगनाथ को न्यारौ धरयौ वनाय ॥
तिही समैं श्री गौर प्रभु करि मध्यान हि आहि। इकले ही आये तहां जानि हिये की ताहि ॥
भट्टाचार्य्य जू कियौ पद पंरछालन ताहि। घर भीतर प्रभु जू गये भोजन करिवें आहि ॥
पाकादिक सब देखि कें प्रभु जू विसमित होय। पूछें भट्टाचार्य्य सौं करि कछु भंगी सोय ॥
विंजन पाक जिते जु ए सबै अलौकिक आहि। दोय पहर भीतर भये कैसैं करिकैं याहि ॥
सौ चूल्है पर सौ जनै करैं रसोई जोय। तऊ पाक वेगहि इते रांधि सकैं नहि कोय ॥
भोग लगायौ कृष्ण कौं यौं कीजत अनुमान। तुलसी मंजरि देखि यें सब पै धरी सु आन ॥
भागवान तुम सफल हुव तुमरौ उदयम हेत। जातें राधा कृष्ण कौं भोग लगायौ एत ॥
वरण सु सौरभ अन्न कौ अति हि मनोहर मान। भोजन कीनौ प्रगट ही राधाकृष्ण सु जान ॥

जो तुम्हरौ यह भाग्य बड़ कहा प्रसंसैं ताहि। पावैंगे अब सेस इन भाग्यवान हम आहि ॥
आसन चौकी कृष्ण की राख्यौ याहि उठाय। न्यारौ करिकें देहु मम प्रभु प्रसाद कछु लाय ॥
भट्टाचार्य्य कहैंजु प्रभु करौ न अचिरज याहि। जिनि जेंयौ तिहि शक्ति करि भोग सिद्ध हुव आहि ॥
नहि घरणी के रांधि के नहि मम उद्यम जान। पाक सिद्धि जिहि सक्ति करि हुव तिहि ताकौ ज्ञान ॥
याही आसन बैठिकैं भोजन करौ सुसार। कहै गौर यह कृष्ण कौ आसन पूज्य हमार ॥
आसन अन्न प्रसाद सम कहैं भट्ट यों साध। अन्न पाइयै पटा पर बैठत क्यौं अपराध ॥
कहैं गौर नीकें कही शास्त्र सु आज्ञा आहि। सबै बैष्णव कौं सेसहि दास भोगबै ताहि ॥

तथाहि—

त्वयोपभुक्त स्रग्गन्ध वासोऽलंकारचर्चिताः। उच्छिष्टभोजिनो दासास्तव मायां जयेमहि ॥

तऊ जु खाय सकैं नही अन्न इतेक प्रमान। भट्ट कहैं जानत जितौ खाय सकौ भगवान ॥
लीलाचल मधि तुम करौ भोजन बावन बार। एक एक ही भोग मधि अन्न जु दश दश भार ॥
द्वारावति सोरह सहस महसिन घर अभिराम। मैया अठारह के घरनि अरु यादौं के धाम ॥
ब्रज में जितनें गोपगण ताऊ चाचा तात। सखा वृन्द सब के घरनि जेंवौ सांझ प्रभात ॥
गोवर्द्धन के यज्ञ मधि खाई अन्ननि रासि। ताके लेखें अन्न मम है नहि एकौ ग्रास ॥
तुम ईश्वर में दास दी छुद्राकार सुछार। एक ग्रास माधुकरी करौ जु अंगीकार ॥
यह सुनि हसिकैं गौर जू बैठे भोजन काज। भट्ट देंहि जगन्नाथ कौ सेस हरसि हिय साज ॥
जामाता आचार्य्य कौ सो अमोघ तिहि काल। कन्या साठी पति वहै निंदक कुलहि विसाल ॥
सो भोजन देख्यौ चहै आवन पावै नाहि। भट्टाचारज लै छरी बैठे द्वारे मांहि ॥
ते जब भये प्रसाद के देत आनमन चाय। आय अमोघ सु अन्न लखि निंदा करै बनाय ॥
तृपति होय इहि अन्न करि दसबारह जन सोय। एक लौ संन्यासी करै एतिक भोजन जोय ॥
सुनि भट्टाचार्य तब देख्यौ फिरि कैं आहि। भाज्यौ तबै अमोघ सो देखि सभारन ताहि ॥
भट्टाचारज लै छरी मारण दौरे आहि। सो अमोघ भजि कें गयौ सुधि पाई नहि ताहि ॥
आये भट्टाचार्य्य तिहिं देत गालि औ साप। निंदा सुनि लागे हसनि गौर महाप्रभु आप ॥
सुनि पीटैं छाती सिरहि साठी माता सोय। रांड हो हु साठी कहैं बारबार ही जोय ॥
दोऊन के दुख देखि प्रभु दोऊन कौं समझाय। भोजन कीनौ तुष्ट ह्वै दुहुँ इच्छा करि चाय ॥
अचवन तिनहि कराय कैं दियौ भट्ट मुख वास। तुलसि मंजरी लौंग पुनि एला और सुवास ॥
चंदन लेप्यौ अंग सब प्रभु माला पहिराय। होय दंडवत दैन्य मय कहै वचन भरि भाय ॥
तुम निंदा करवायबै लायौ तुम कौं गेह। छमा करौ श्री कृष्ण प्रभु मम अपराध जु एह ॥
कहैं गौर निंदा नहीं सहज कह्यौ तिहिं आय। यामें को अपराध हुव तुमरे औ पुनि ताहि ॥

अपनी निंदा बहुत किय परि प्रभू जु के पाय। तिनकौं सांति कराय प्रभु घरकौं दियौ पठाय ॥
भट्टाचारज आय घर साठी माता संग। करि अपनी निंदा कछू कहै वचन इहि रंग ॥
गोस्वामि चैतन्य की सुनी जु निंदा जाहि। सोधन याही पाप कौ होय किये वध ताहि ॥
अथवा अपने प्राण कौ करिये मोचन जोय। दोऊ नाही जोग्य ये ब्राह्मण तन है दोय ॥
तिहिं निंदक कौ फेरि मुख नहीं देखि है आहि। परित्याग कीनौं अबै नाम न लैहैं ताहि ॥
पुनि साठी सौं कहैं तिहिं तजौ पतित भौ सोय। पतित भयें पति कौ जु है उचित त्याग ही जोय ॥

तथाहि—पतिश्च पतितं त्यजेत्। इति ॥

सो अमोघ भजि कें कहूं रह्यौ तिहीं निसि आहि। भई जु व्याधि विसूचिका प्रात भयें ही ताहि ॥
सुनिकैं मरण अमोघ कौ कहै जु भट्टाचार्य। मार्यौ सहज ही देव नें कियौ हमारौ कार्य ॥

तथाहि—

महताहि प्रयत्नेन सन्नह्यगजबाजिभिः। अस्माभि र्यदनुष्ठेयं गन्धर्वैस्तदनुष्ठितम् ॥

दशमे—

आयुः श्रियं यशो धर्म्मं लोकानाशिष एवच। हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि पुंसो महदतिक्रमः ॥

गोपीनाथाचार्य्य गौ प्रभु दरसन हित आहि। ब्यौरौ भट्टाचार्य्य कौ प्रभु जू पूछौ ताहि ॥
गोपीनाथ कहै कियौ दोऊजन उपवास। छोडे प्राण अमोघ ने भौ बिसूचिका तास ॥
धाये आये सुनत हीं प्रभु करुणामय जोय। प्रभु जू कहैं अमोघ कौं हियें हाथ धरि सोय ॥
अति ही निर्मल सहज ही हृदय बिप्र कौ एह। बसिवे कौं श्री कृष्ण कौ यहै जोग्य है गेह ॥
मात्सर्य चांडालहि किति इहां बसायौ आंन। कीनौं हौ अपवित्र यह महापवित्र स्थान ॥
सार्वभौम के संग करि नास भये तुव पाप। करै जीव पापनि नसै कृष्ण नाम आलाप ॥
उठौ अमोघ कहो जु तुम कृष्ण नाम रसखान। करि हैं तुमपै वेगही कृपा आप भगवान ॥
सुनत हि उठ्यौ अमोघ तब कृष्ण नाम करि जोय। मत्त प्रेम उन्माद करि नांचन लाग्यौ सोय ॥
कंप अश्रु अरु जाडय अँग पुलक स्वेद सुरभंग। हसैं महाप्रभु देखिकैं ताकैं प्रेम तरंग ॥
श्री प्रभु जू के चरण धरि करै बिनती सोय। मम अपराध क्षमा करौ प्रभु करुणामय जोय ॥
यही छार मुख करि कियौ तुमरौ निंदन जोय। यह कहि निजहि कपोल मधि मारै निज कर सोय ॥
मारत मारत गल्ल निज दिये अमोघ फुलाय। कर गहि गोपीनाथ जू मनैं कियौं तव आय ॥
समाधान प्रभु जू करैं तवै परस अँग तास। सार्वभौम संबंध तुम मम नेह निवास ॥
जे आचारज गेह में दासी दास जु स्वान। तेऊ मेरे परम प्रिय रहौ दूर जन आन ॥
नाहिन तुव अपराध कछु लेहु सदा हरिनाम। इतनौ कहि आये प्रभु सार्वभौम के धाम ॥

सार्वभौम लखि गौर कौं परे चरण मधि आय । प्रभु आलिंगन करि तिन्है बैठे आसन माँय ॥
कहैं जु गौर अमोघ सिसु कहा दोस तिहि आय । काहे कौं तुम ब्रत करौ करत रोस क्यौं ताय ॥
उठौ न्हाय देखौ अबें जगन्नाथ मुख जाय । वेगि आय भोजन करौ तब मम सुख अधिकाय ॥
तबलौं ह्यां रहि हौं जु हौं बैठोई इहि चाय । पावौगे परसाद तुम जितनें लौं ह्यां आय ॥
भट्ट तबें प्रभु चरण धरि कहन लगे इहिं भाय । मरौ अमोघ जु ताहि तुम काहे लियौ जिवाय ॥
कहै गौर बालक जु तुब है अमोघ वह आहि । बालक दोस न लेय पित जातें पालक ताहि ॥
भयौ वैष्णव अब गयौ तिहिं अपराध विचार । अब ताके ऊपर करौ तुम प्रसाद निरधार ॥
भट्ट कहैं चलियै प्रभु ईश्वर दरसन चाय । आवत मैंहू वेगही तहां इंहीं छिन न्हाय ॥
प्रभु कहि गौपीनाथ ह्यां बैठे रहियौ चाय । इनौं प्रसाद लियौ यहै हमसौं कहियौ आय ॥
इतनौ कहि प्रभु जू गये ईस दरस हित धाय । भट्ट न्हाय दरसनहि करि किय भोजन घर आय ॥
उहीं अमोघ भयौ महाप्रभु को भक्त एकांत । लेय नाम हरि प्रेमसौं नाचै महासु सांत ॥
ऐसै लीला चित्र अति करैं सची सुत सोय । जेई देखैं सुनें जे तिन हिय अचिरज होय ॥
ऐसैं कीनें भट्टगृह प्रभु भोजन जु बिलास । ताही मधि नाना किये चित्र चरित्र प्रकास ॥
सार्वभौम घर कौ यहै भोजन चरित्र वखान । भयौ प्रेम आचार्य कौ जामें विदित निधान ॥
साठी माता की भगति प्रभु जु प्रसाद अगाध । जहां भक्ति सनवंध करि छमा कियौ अपराध ॥
सुनि है प्रभु लीला यहै श्रद्धा करि जन जोय । चरण कमल चैतन्य के वेगहि पैहै सोय ॥
रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल श्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत लिखैं ब्रजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखंडे व्रज भाषायां सार्वभौम घर भोजनं नाम पंचदश परिच्छेदः ॥

षोडशपरिच्छेदः

गोडोद्यानं गौरमेघः सिञ्चन्स्वालोकनामृतैः । भवाग्निदग्धजनतावीरुधः समजीवयत् ॥

गौरचंद जय जय सदा जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के बृन्द ॥
वृन्दावन के गमन हित भई चाह प्रभु जान । नृप प्रताप रुद्र जु भयौ सुनिकैं विमन निदान ॥
सार्वभौम अरु राय जू इन दोऊनि बुलाय । राजा दोऊन सौं कहै वचन विनय अधिकाय ॥
लीलाचल तजिऔर ठां चलिवैं प्रभु मन चाय । तिन के राखन हेत तुम करौ जतन वहु भाय ॥
मोहि सुहाय न तिन बिना यहै राज अधिकाय । प्रभु के राखन के लिये करौ अनेक उपाय ॥
राय जु भट्टाचार्य औ है इकठे जन दोय । करै जुगत जब ही प्रभू चलिवे कौं मन होय ॥

दोऊ कहैं करौं दरस रथजात्रा रस ऐंन। आये कातिक मास कें करियौं गमन सुखेंन ॥
कातिक आयें फिरि कहैं है अब हीं अति सीत। दोल जात्रा देखि प्रभू जैं हौं भक्त यह रीति ॥
विविध उपाय उठांवहीं आज काल्हि कहि जोय। संमत देहन चलन कौं विरह भीत जन दोय ॥
ईश्वर जदपि स्वतंत्र हैं नहि परवसता जाहि। तऊ भक्त इच्छा सु करि गमन करैं नहि आय ॥
वर्ष तीसरैं गौंड के सवै भक्तगण जोय। लीलाचल के चलन हित सब कौ मन भौ सोय ॥
श्री अद्वैताचार्य के गये सवै मिलि पास। सो प्रभु प्रभु के दरस हित चले जु परम हुलास ॥
प्रभु की आज्ञा है जदपि रहिवैं गौंड़ निकेत। अरु श्री नित्यानंद कौ प्रेम प्रकाशन हेत ॥
तऊ चले श्री गौर के दरस हेत प्रभु दोय। नित्यानँद के प्रेम की चेष्टा जानें कोय ॥
श्री आचार्य रत्न जू विद्यानिधि रस राज। श्री रामाई भक्त प्रभु प्रभु प्यारे श्री वास ॥
वासदेव जू भक्त वड श्री मुरारि जू सोय। अरु श्री गोविद घोष ए तीनौ भाई जोय ॥
निज झाली भरि लैं चलैं राघौ परम प्रवीन। पट डोरी लैं चलैं वें वासी ग्राम कुलीन ॥
नरहरि वासी खण्ड के श्री रघुनन्दन सोय। गणना को करि सकै तिन चले भक्तगणजोय ॥
समाधान घाटिन करैं सिवानंद जू सेंन। सवही कौ पालन करैं लैकैं चलैं सुखैंन ॥
सव के सव कारज करैं देहवास घरजान। सिवानंद जानें सवैं जे उडिया जु प्रधान ॥
प्रभु दरसन हित तिहि वरस सब ठकुराणी जात। चली संग आचार्य कें औ़र सची प्रभु मात ॥
श्रनिवास पण्डित हि सँग चली मालिनी आय। श्री आचार्य रत्न संग चली जु पत्नी ताहि ॥
सव ठकुरानी गौर कें भीक्षा देवैं काज। प्रभु प्रिय नाना द्रव्य जे लिय निज घरतें साज ॥
समाधान सव ही करैं सिवानंद रस ऐंन। घँटवारन सौं कहि करहिं देहि वास हि सऐंन ॥
किय दरसन गोपाल कौ तिन्हौ रेमुना आय। आचारज कीनौ तहां नृत्य कीरतन भाय ॥
परचै नित्यानंद कौ सब सेवक संग जान। तिन सेवक गण आय कैं कीनौ बहु सनमान ॥
रहे तहां हीं तिहिं निशा सब महंत सुखमान। वारह अटका खीर के सेवक धरे जु आन ॥
क्षीर वाटि सब कौं दई प्रभु श्री नित्यानंद। क्षीर प्रसादहि पाय कें बढ़ौ सवनि आनंद ॥
माधवेन्द्र जू की कथा स्थापन श्री गोपाल। जो माग्यौ तिन सौं मलय श्रीगोपाल रसाल ॥
तिन हित गोपीनाथ नें खीर चुराई सोय। प्रभु के मुख तें जो कथा प्रथम सुनी है जोय ॥
सभा वीच सोई कथा कहैं जु नित्यानंद। सुनि कैं श्री आचार्य कैं हियें बढ़ौ आनन्द ॥
चले चले इहिं भाति ही आये कटकहि माहि। लखि साखी गोपाल कौं रहें तहां दिन ताहि ॥
कथा साखीगोपाल की कहैं जु नित्यानंद। सुनि कें भक्तनि कैं हियें वाढ़्यौ अति आनन्द ॥
उत्कण्ठा सब के हिये प्रभु के मिलवे काज। आय सब मिलवेगिही लीलाचल सुखसाज ॥
नला अठारहि सुनि प्रभू आये जन के साथ। द्वै माला पठई तिन्है दै गोविद के हाथ ॥
गोविद विव माला जु लै पहिराई जन दोय। आचारज अवधूत जू सुख पायौ हिय सोय ॥

किय आरम्भ तिन्हौ तहां कृष्ण कीरतन सोय । नाचत नाचत चलि तहां आए ते जन दोय ॥
जे स्वरूप मुख जूथ निज दिय माला फिरि ताय । पठये आगे लैन कौं शचीसूनु जु आय ॥
मिले सबनि सों भाय करि ते नरेन्द्र मधि आय । माला पहिराई सबनि दई महाप्रभु भाय ॥
प्रभु जू नें आए सुनें सिंह द्वार ढिग जोइ । मिले सबनि सौं आय कें आप महाप्रभु सोय ॥
लै सब कौं जगन्नाथ कौ किय दरसन अभिराम । पुनि सब कौं लैके प्रभु आए अपने धाम ॥
आन्यौ काशीमिश्र औ वाणीनाथ प्रसाद । निज कर सौं प्रभु सबनि कौं करवायौ आस्वाद ॥
जो जाकौं पहिले बरस हो बसिवे को धाम । सब कौं तहां पठाय कैं करवायौ विसराम ॥
इहीं भांति सब भक्त गण रहे जु चातुर्मास । करें कृष्ण संकीर्तन प्रभु के संग विलास ॥
रथ जात्रा कौ समय जब आयौ प्रथमहि रीति । धोयो मंदिर गुंडिचा लै सब कौं करि प्रीति ॥
पट डोरी जगन्नाथ की दिय आनी जु कुलीन । रथ आगे प्रभु नृत्य किय प्रथम रीति रसलीन ॥
करि कैं प्रभु बहु नृत्य हू चले बहुरि उद्यान । जहाँ जाय वापी तटहि किय विश्राम सुजान ॥
राढ़ी द्विज इक है वहै नित्यानँद कौ दास । महा भाग जुत नाम तिहि कृष्णदास सुख रास ॥
प्रभु जू कौ अभिषेक तिन घट भरि भरिकैं कीय । प्रभु कौं तिहिं अभिषेक करि महातृप्त भौ हीय ॥
बलगंडी के भोग कौ आयौ तहां प्रसाद । पायौ महा प्रसाद प्रभु सबके सँग अति स्वाद ॥
रथ जात्रा कौ दरस किय प्रथम रीति भरि रंग । जात्रा हेरा पंचमी देखी लै जन संग ॥
कियौ निमंत्रन गौर कौ आचारज जू सोइ । ताही मधि जैसें कियौ पवन महा झर जोइ ॥
बरनन किय विस्तार कें तिहिं वृन्दावनदास । प्रभु जू कौं न्यौतो तबै कीनौ है श्रीवास ॥
नाना विंजन मालिनी कीनौ प्रभु पिय जोय । दासी भाव है भक्ति करि वत्सल जननी सोय ॥
रत्नाचारज आदि जन मुख्य भक्त गण ताहि । बीच बीच श्री गौर कौ करें निमंत्रण आहि ॥
बीते चातुरमास प्रभु लै सँग नित्यानंद । कछु विचार दुरि बैठि कें करैं नित्य सुख कंद ॥
आचारज प्रभु सौं कहैं सैंना बेंनी सोय । श्री अद्वैत प्रहेलिका पढ़ें न बूझै कोय ॥
तिनके मुख कों लखि हँसैं शची सुनु रस खान । आचारज नृत्तहि करैं अंगी कृत किय जान ॥
कहा विनति आज्ञा कहा समझौ काहु न जोइ । आलिंगन करिकैं प्रभू विदा दई तिहि सोइ ॥
कहैं जु प्रभु नित्यानँद हि अहो सुनो श्री पाद । हौं मांगत हों यहै तुम करौ बडौ परसाद ॥
लोलाचलकौं प्रति वरस ऐहौ नहि तुम जोइ । करि हौ इच्छा मम सफल गौड़हि रहिकैं सोइ ॥
और न ऐसौ देखिये करे सिद्धि तिहि जोइ । हम सों होय न काम जो सो तुम ही तें होइ ॥
नित्यानंद कहे जु प्रभु हौं हम देह तुम प्राण । देह प्राण न्यारे रहे यह नाही जु प्रमाण ॥
करौ अचिंतहि शक्ति करि तुम ही घटना ताहि । जो कराय हौ करैंगे सोई निज मन आहि ॥
तिन कों विदा दई प्रभू करि आलिंगन ताय । सब जन गण कौं दिय विदा इहीं भांति प्रभु आय ॥
कुलिया वासिन प्रथम ज्यों किय निवेदन सोय । आज्ञा करौ प्रभू हमें करिवें साधन कोय ॥

कहैं जु प्रभु वैष्णवन कौ सेवन कीर्तन नाम। वेगहि पैहौ यह कियें कृष्ण चरन अभिराम ॥
ते पूछें तिहि साधु कौ लच्छन कहा प्रमान। तब हंसिकें प्रभु जू कहैं तिनके मन की जान ॥
कृष्ण नाम नित ही वसे जाके मुख में आहि। वहै वैष्णव मुख्य है भजो चरन तुम ताहि ॥
बहुरि तिन्हौ अगिले वरस प्रश्न करी यौ ताहि। तार तम्य वैष्णवनि कौ सिखयौ प्रभु जू ताहि ॥
कृष्ण नाम आवै मुखहि जिहि देखतहि प्रमान। ताही कौं जानौ जु तुम हैं वैष्णव जु प्रधान ॥
क्रम करि प्रभु जू ने कहे वैष्णव लच्छन जोइ। वैष्णव वैष्णवतर जु पुनि वैष्णवतम हैं सोइ ॥
इही भांति वैष्णव सवै चलै गौड़ को आहि। विद्यानिधि लीलाचलहि रहे वरस मधि ताहि ॥
हैं तिनकें जु स्वरूप संग सख्य प्रीति अभिराम। दोऊ जन हरि कथा रस करें एक हीं ठाम ॥
तिन्हो गदाधर पँडितहि मंत्र दियौ पुनि जोइ। ओढ़न षष्ठी के दिवस देखी जात्रा सोइ ॥
जगन्नाथ कोरे बसन पहिरे जात्रा ताहि। घृणा भई तिहि देखकैं विद्याधर मन आहि ॥
ताही निस मधि आय कैं जगन्नाथ बलराम। तिनहि थपेरयौ प्रात विव हंसि हंसि कें अभिराम ॥
फूले जुगल कपोल तिहि हिय में भयौ हुलास। वर्णन कीय विस्तार करि यह वृन्दावन दास ॥
आवैं जन गन गौड़तें वरस वरस यहि भाय। प्रभु के संग रहैं करैं जात्रा दरसन चाय ॥
ताही मधि जिहिं जिहिं वरस है विशेष कछु जोइ। तिहि विचारि विस्तार करि करिहैं आगें सोय ॥
चारि वरस प्रभु के गए इहीं प्रकारहि जोइ। दच्छिन जात्रा मधि लगे दोय वरस तिहि सोइ ॥
चाहे वृन्दावन चलौ औरै वर्ष जु दोय। हठ करि रामानंद कै चलि न सके प्रभु सोय ॥
तव प्रभु रामानंद औ सार्वभौम के पास। आलिंगन करिकें करैं मधुर वचन सुखरास ॥
मेरे उत्कंठा अधिक विपिन गमन हित आइ। तुमरे हठ करि द्वै वरस कियौ गमन नहिं ताइ ॥
अव समंति दोऊ करौ हौं चलिहौं निरधार। तुम दोऊ बिन और नहिं गति मेरे सुविचार ॥
गौड़ देश के बीच हैं मेरे आश्रम दोय। एई दोऊ दयामय जननि जान्हवी सोय ॥
जितने गौड जू देश है देखि सबनिकौं जाहि। दोऊ आज्ञा देहु तुम हैं प्रसन्न मन माहि ॥
दोऊ प्रभु के वचन सुनि मन में करें विचार। प्रभु संग अति हठ भलौ कभूं नहीं निरधार ॥
अव वरसा नहिं चलि सको दोऊ कहैं विचार। आए दशमी विजया कें तव चलिहौ निरधार ॥
आनंदित है गौर प्रभु समाधान किय जान। कीनौ दशमी विजय दिन श्री प्रभु तवै पयान ॥
प्रभु प्रसाद जगन्नाथ कौ पायौ जेतिक जोइ। डोरी मलय करार सव लियौ संग निज सोय ॥
आज्ञा लै जगन्नाथ की चले प्रभात सुचाय। पाछें उड़िया भक्त गण सब आए चलि चाय ॥
आए निज गण संग प्रभु पुरहि भवानी आय। रामानंद डोला चढ़ि आए पाछें ताहि ॥
दीनौ वानीनाथ नें वहुत प्रसाद पठाय। सो प्रसाद भोजन जु करि रहे तहां सुख पाइ ॥
प्रात भए भुवनेश्वरहि चलिकें आए चाय। दरसन श्री गोपाल कौ कीन्हौ कटकहि आय ॥
स्वपनेश्वर द्विज ने कियौ प्रभु कौ न्यौतौ चाय। न्यौते प्रभु जन गण सवै श्री रामानंद राय ॥

किय आरम्भ तिन्हौं तहां कृष्ण कीरतन सोय । नाचत नाचत चलि तहां आए ते जन दोय ॥
जे स्वरूप मुख जूथ निज दिय माला फिरि ताय । पठये आगे लैन कौं शचीसूनु जु आय ॥
मिले सबनि सों भाय करि ते नरेन्द्र मधि आय । माला पहिराई सबनि दई महाप्रभु भाय ॥
प्रभु जू नें आए सुनें सिंह द्वार ढिग जोइ । मिले सबनि सौं आय कें आप महाप्रभु सोय ॥
लै सब कौं जगन्नाथ कौ किय दरसन अभिराम । पुनि सब कौं लैके प्रभु आए अपने धाम ॥
आन्यौ काशीमिश्र औ वाणीनाथ प्रसाद । निज कर सौं प्रभु सबनि कौं करवायौ आस्वाद ॥
जो जाकौं पहिले बरस हो बसिवे को धाम । सब कौं तहां पठाय कैं करवायौ विसराम ॥
इहीं भांति सब भक्त गण रहे जु चातुर्मास । करें कृष्ण संकीर्तन प्रभु के संग विलास ॥
रथ जात्रा कौ समय जब आयौ प्रथमहि रीति । धोयो मंदिर गुंडिचा लै सब कौं करि प्रीति ॥
पट डोरी जगन्नाथ की दिय आनी जु कुलीन । रथ आगे प्रभु नृत्य किय प्रथम रीति रसलीन ॥
करि कैं प्रभु बहु नृत्य हू चले बहुरि उद्यान । जहाँ जाय वापी तटहि किय विश्राम सुजान ॥
राढ़ी द्विज इक है वहै नित्यानँद कौ दास । महा भाग जुत नाम तिहि कृष्णदास सुख रास ॥
प्रभु जू कौ अभिषेक तिन घट भरि भरिकैं कीय । प्रभु कौं तिहिं अभिषेक करि महातृप्त भौ हीय ॥
बलगंडी के भोग कौ आयौ तहां प्रसाद । पायौ महा प्रसाद प्रभु सबके सँग अति स्वाद ॥
रथ जात्रा कौ दरस किय प्रथम रीति भरि रंग । जात्रा हेरा पंचमी देखी लै जन संग ॥
कियौ निमंत्रन गौर कौ आचारज जू सोइ । ताही मधि जैसें कियौ पवन महा झर जोइ ॥
बरनन किय विस्तार कें तिहिं वृन्दावनदास । प्रभु जू कौं न्यौतो तबै कीनौ है श्रीवास ॥
नाना विंजन मालिनी कीनौ प्रभु पिय जोय । दासी भाव है भक्ति करि वत्सल जननी सोय ॥
रत्नाचारज आदि जन मुख्य भक्त गण ताहि । बीच बीच श्री गौर कौ करें निमंत्रण आहि ॥
बीते चातुरमास प्रभु लै सँग नित्यानंद । कछु विचार दुरि बैठि कें करैं नित्य सुख कंद ॥
आचारज प्रभु सौं कहैं सैंना बेंनी सोय । श्री अद्वैत प्रहेलिका पढ़ें न बूझे कोय ॥
तिनके मुख कों लखि हँसैं शची सुनु रस खान । आचारज नृत्तहि करैं अंगी कृत किय जान ॥
कहा विनति आज्ञा कहा समझौ काहु न जोइ । आलिंगन करिकैं प्रभू विदा दई तिहि सोइ ॥
कहैं जु प्रभु नित्यानँद हि अहो सुनो श्री पाद । हौं मांगत हों यहै तुम करौ बडौ परसाद ॥
लोलाचलकौं प्रति बरस ऐहौ नहि तुम जोइ । करि हौ इच्छा मम सफल गौड़हि रहिकैं सोइ ॥
और न ऐसौ देखिये करे सिद्धि तिहि जोइ । हम सों होय न काम जो सो तुम ही तें होइ ॥
नित्यानंद कहे जु प्रभु हौं हम देह तुम प्राण । देह प्राण न्यारे रहे यह नाही जु प्रमाण ॥
करौ अचिंतहि शक्ति करि तुम ही घटना ताहि । जो कराय हौ करैंगे सोई निज मन आहि ॥
तिन कों विदा दई प्रभू करि आलिंगन ताय । सब जन गण कौं दिय विदा इहीं भांति प्रभु आय ॥
कुलिया वासिन प्रथम ज्यों किय निवेदन सोय । आज्ञा करौ प्रभू हमें करिवें साधन कोय ॥

कहैं जु प्रभु वैष्णवन कौ सेवन कीर्तन नाम । वेगहि पैहौ यह कियें कृष्ण चरन अभिराम ॥
ते पूछें तिहि साधु कौ लच्छन कहा प्रमान । तब हंसिकें प्रभु जू कहैं तिनके मन की जान ॥
कृष्ण नाम नित ही बसे जाके मुख में आहि । वहैं वैष्णव मुख्य है भजो चरन तुम ताहि ॥
बहुरि तिन्हौ अगिले बरस प्रश्न करी यौ ताहि । तार तम्य वैष्णवनि कौ सिखयौ प्रभु जू ताहि ॥
कृष्ण नाम आवै मुखहि जिहि देखतहि प्रमान । ताही कौं जानौ जु तुम हैं वैष्णव जु प्रधान ॥
क्रम करि प्रभु जू ने कहे वैष्णव लच्छन जोइ । वैष्णव वैष्णवतर जु पुनि वैष्णवतम हैं सोइ ॥
इही भांति वैष्णव सबै चलै गौड़ को आहि । विद्यानिधि लीलाचलहि रहे वरस मधि ताहि ॥
है तिनकें जु स्वरूप संग सख्य प्रीति अभिराम । दोऊ जन हरि कथा रस करें एक हीं ठाम ॥
तिन्हो गदाधर पँडितहि मंत्र दियौ पुनि जोइ । ओढ़न पष्ठी के दिवस देखी जात्रा सोइ ॥
जगन्नाथ कोरे बसन पहिरे जात्रा ताहि । घृणा भई तिहि देखकैं विद्याधर मन आहि ॥
ताही निस मधि आय कैं जगन्नाथ बलराम । तिनहि थपेरचौ भ्रात विव हंसि हंसि कें अभिराम ॥
फूले जुगल कपोल तिहि हिय में भयौ हुलास । वर्णन कीय विस्तार करि यह वृन्दावन दास ॥
आवैं जन गन गौड़तें बरस बरस यहि भाय । प्रभु के संग रहैं करैं जात्रा दरसन चाय ॥
ताही मधि जिहिं जिहिं वरस है विशेष कछु जोइ । तिहि विचारि विस्तार करि करिहैं आगें सोय॥
चारि वरस प्रभु के गए इहीं प्रकारहि जोइ । दच्छिन जात्रा मधि लगे दोय वरस तिहि सोइ ॥
चाहे वृन्दावन चलौ औरै वर्ष जु दोय । हठ करि रामानंद कै चलि न सके प्रभु सोय ॥
तब प्रभु रामानंद औ सार्वभौम के पास । आलिंगन करिकें करैं मधुर वचन सुखरास ॥
मेरे उत्कंठा अधिक विपिन गमन हित आइ । तुमरे हठ करि द्वै वरस कियौ गमन नहिं ताइ ॥
अब समंति दोऊ करौ हौं चलिहौं निरधार । तुम दोऊ बिन और नहिं गति मेरे सुविचार ॥
गौड़ देश के बीच हैं मेरे आश्रम दोय । एई दोऊ दयामय जननि जान्हवी सोय ॥
जितने गौड जू देश है देखि सबनिकौं जाहि । दोऊ आज्ञा देहु तुम हैं प्रसन्न मन माहि ॥
दोऊ प्रभु के वचन सुनि मन में करें विचार । प्रभु संग अति हठ भलौ कभूं नहीं निरधार ॥
अब वरसा नहिं चलि सको दोऊ कहैं विचार । आए दशमी विजया कें तब चलिहौ निरधार ॥
आनंदित है गौर प्रभु समाधान किय जान । कीनौ दशमी विजय दिन श्री प्रभु तबै पयान ॥
प्रभु प्रसाद जगन्नाथ कौ पायौ जेतिक जोइ । डोरी मलय करार सब लियौ संग निज सोय ॥
आज्ञा लै जगन्नाथ की चले प्रभात सुचाय । पाछें उड़िया भक्त गण सब आए चलि चाय ॥
आए निज गण संग प्रभु पुरहि भवानी आय । रामानंद डोला चढ़ि आए पाछें ताहि ॥
दीनौ वानीनाथ नें बहुत प्रसाद पठाय । सो प्रसाद भोजन जु करि रहे तहां सुख पाइ ॥
प्रात भए भुवनेश्वरहि चलिकें आए चाय । दरसन श्री गोपाल कौ कीन्हौ कटकहि आय ॥
स्वपनेश्वर द्विज ने कियौ प्रभु कौ न्यौतौ चाय । न्यौते प्रभु जन गण सबै श्री रामानंद राय ॥

प्रभु बाहिर उद्यान मधि वासा कीनौ आय । भये कोलाहल जननि कौ कीनौ वारण राय ॥
भिक्षा करिकें बकुलतर किय विश्राम सुजान । नृप प्रताप रुद्रहि निकट कीन्हौ राय पयान ॥
सुनि आनन्दित नृप भयो आयौ वेगहि सोइ । प्रभु कों लखि कें दंडवत परौ भूमि मधि जोय ॥
पुनि पुनि उठै गिरैंजु पुनि प्रणय विकल अति आहि । पुलक अंग अँसुवा परैं करै बहुत नुति ताहि ॥
प्रभु कौ मन संतुष्ट भो देखि भक्ति तिहि आहि । उठिकें श्री प्रभु ने कियौ आलिंगन तब ताहि ॥
फेर स्तुति राजा करे करै प्रणामहि आहि । गौर कृपा अंसुवान करि किय स्नान वपु आहि ॥
बैठायौ नृप सुस्थ करि श्री रामानँद आहि । ऐसैं मन वच कर्म करि करी कृपा पुनि ताहि ॥
ऐसे तिहि ऊपर करी कृपा गौर सुख धाम । रक्षक रुद्रप्रताप के भौ याही तें नाम ॥
राज लोक गण ने कियौ प्रभु कौ वंदन जोय । राजा को दीनी विदा शचीसूनु जू सोइ ॥
राजा बाहिर आइके आज्ञा पत्र लिखाय । जिते राजसी राज मधि दीनौ तिन्हैं पठाय ॥
ग्राम ग्राम मधि करौगे नये निवासु जु ठाम । भरि हौ सामग्रीन सों पांच सात नव धाम ॥
प्रभु कौं तहां उतारि हौ आपुन आय लिवाय । धरैं नेत्र करि रैंन दिन करिहौं सेवा भाय ॥
मंगराज हरिचंदन जु महापात्र ए दोय । तिन को नृप आज्ञा दई करो काज सब जोइ ॥
इक नवीन नौका नदी तीर राखिहौ आनि । नदी पार जैहें जहां करिहैं प्रभु जू स्नान ॥
तहां थंब रोपन करौ महातीर्थ धरि नाम । करिहौं नित्य स्नान तिहि जो मरिये तिहि ठाम ॥
चतुर्द्वार मधि तुम करौ उतरण हित नव वास । जावो रामानंद तुम श्री प्रभु जू के पास ॥
सन्ध्या करि प्रभु हैं चले सुनिकें नृप इहिं भाय । गज ऊपर पट ग्रहन मधि नारी गणहि चढाय ॥
प्रभु के चलिवें मार्ग मधि ठाडे पंगति वान । निज गण लै सन्ध्या समय चले गौर रस खान ॥
आय नदी चित्रोत्पला न्हाए घाटहि ताहि । देखत हीं जु प्रणाम किय सब महिषीगण आय ॥
प्रभु के दरसन करि सबै भए प्रेम के ऐंन । कृष्ण कृष्ण सबहीं कहें आंसू बरसें नैंन ॥
ऐसें परम कृपालु औ सुनें न त्रिभुवन में जु । कृष्ण प्रेमा होय जिन दरसे दूरहिं ते जु ॥
भये नदी के पार प्रभु चढ़िकैं नौका आहि । चतुर्द्वार आए जु चलि रैंन चांदनी तांहि ॥
तहां रैंन रहि प्रात ही नित्य कृत्य करि जोय । पायौ महा प्रसाद प्रभु तिहीं समै ही सोइ ॥
अधिकारी दिन दिन हि प्रति नृपकी आज्ञा पाय । देहि बहुत जन हाथ करि अधिक प्रसाद पठाय ॥
प्रभु प्रसाद निज गण सहित करिकें अंगीकार । चलै महाप्रभु उठि तवै हरि हरि बोलि पुकार ॥
मंगराज श्री राय जू श्री हरिचंदन सोइ । चले जु एइ तीन जन संग सेवा हित जोइ ॥
पुरी गुसाईं गौर संग श्री स्वरूप सुख कंद । जगदानंद मुकुंद औ काशीश्वर गोविंद ॥
ठाकुर श्री हरिदास पुनि वक्रेश्वर निधि आर्य । अरु पंडित दामोदर जु गोपीनाथाचार्य ॥
रामाई नंदाई पुनि बहुत भृत्य गण आहि । सब गणना को करि सकै कहे मुख्य गण ताहि ॥
श्री युत पंडित गदाधर चले संग जब आहि । तजौ क्षेत्र संन्यास जिनि मनै कियौ प्रभु ताहि ॥

पंडित कहे जहां तुम लीलाचल है सोय । जाहु क्षेत्र संन्यास मम अबै रसातल जोय ॥
कहैं महाप्रभु ह्यां करौ सेवन गोपीनाथ । ते बोले कोटिक हमें सेवा तुम पद साथ ॥
कहैं गौर सेवा तजौ हमें लागि है दोस । ह्यां हीं रहि सेवा करौं हमें यहै सन्तोष ॥
पंडित कहै जु दोष सब मेरे सिर पै सोइ । तुमरे संग जैहौं नही जैहौं इकलौ सोय ॥
मात दरस हित जात है नहि तुमरे हित आहि । सेव प्रतिज्ञा त्यागने दोष पात्र हौं ताहि ॥
इहि कहि आगेंई चले पंडित जू करि चाय । आय कटक मधि प्रभु तिन्हैं लीन्हौं संग बुलाय ॥
पंडित कौ जो गौर मधि प्रेम न समझौ जाय । निजहि प्रतिज्ञा सेव हरि त्याग दई तृन प्राय ॥
प्रभुकों तिनके चरित मधि हियमें अति संतोप । बोलौ तिनकौ हाथ गहि करि कछु प्रणय सुरोष ॥
सेव प्रतिज्ञा छाडिवो यहै जु तुव उद्देस । भयौ सिद्ध सो छाड़िकैं अए दूरहि देश ॥
चाहौ मेरे संग रहौ निज सुख चाहत सोइ । यहै हमारे दुख हिये जाय धर्म तुव दोइ ॥
जो चाहो मेरे सुखै चलौ नीलगिरि ताहि । जौ फिरि बोलौ और कछु शपथ हमारी आहि ॥
इतनौ कहि कै गौर प्रभु चढ़े नाव मधि जोइ । परे तंहाई मूरछित ह्वै पंडित जू सोय ॥
सार्वभौम कौ दिय विदा पंडित के संग हेत । भट्टाचारज कहैं उठौ यों प्रभु लीला चेत ॥
कृष्ण प्रतिज्ञा निज तजी तुम जानत हौं सोइ । भक्त कृपा भीषम करी धरी प्रतिज्ञा जोइ ॥

तथाहि श्री भागवते—

स्वनिगममपहाय मत्प्रतिज्ञामृतमधिकर्त्तुमवल्पुतो रथस्थः ।
धृतरथचरणोऽभ्ययाच्चलद्गुर्हरिरिव हन्तुमिभं गतोत्तरीयः ॥

ऐसें हीं तुव विरह दुख सह्यौ महा प्रभु जान । तव सु प्रतिज्ञा की करी रक्षा जतन हि वान ॥
यों कहि तिन्हें प्रबोधी सार्वभौम बड़ धीर । दोऊ जन लीलाचल हि आये शोक अधीर ॥
धर्म कर्म प्रभु के लिये तजै भक्त गण भाय । धर्म हानि जो भक्त कें प्रभु पै सहौ न जाय ॥
यहै प्रकार जो प्रेम कौ जोई सुनै जु याहि । चरन कमल चैतन्य कौ वेगहिं मिलि है ताहि ॥
राजपात्र दोऊ चले भावत जे प्रभु संग । रामानंद सँग रैन दिन कृष्ण कथा भरि रंग ॥
विदा देंहि प्रभु राय कौं तजे न ते प्रभु संग । रामानँद सँग रैन दिन कृष्ण कथा भरि रंग ॥
नृप आज्ञा करि भृत्यगण ग्राम ग्राम प्रति आहि । नव घर नाना द्रव्य करि करैं जु सेवन ताहि ॥
आये चलिकें रेमुना ऐसैं प्रभु सुख हीय । श्री रामानँद राय कौ विदा तहां तें दीय ॥
परे भूमि मधि राय जू नहि चेतना ताहि । प्रभु भरि अंक हि राय कौं क्रंदन करै जु आहि ॥
कथा राय के विदा की कही जाइ नहि जोइ । ताकौ वर्णन जो कछू कहि न सकै जन कोइ ॥
औड़ देस की सींव तव आये चलि प्रभु जोय । अधिकारी नृप के तहां मिले जु प्रभु सों सोय ॥
तिन्हौ दिना द्वै चारि प्रभु सेवा करी अपार । आगें चलिवे कौं तिन्हौ विवरण कहौ विचार ॥
एक जबन मदिप महा आगें तिहिं अधिकार । तिहिं भय कोऊ न पंथ हि जाय सकै निरधार ॥

है ताकौ पिछलदा लौं सब ठाई अधिकार। तिहिं भय कोऊ नदी के होय सकै नहि पार ॥
रहौ दिनन कछु करहिगे संध्य तिहीं ढिग जाइ। तव करिवे हैं गमन तुम सुख सौं नौका ल्याय ॥
तिही समैं तिहि जवन कौ सेवक इक चर जोइ। आयौ उडिया कटक मधि करि वेसांतर सोइ ॥
प्रभु कौ अद्भुत चरित सो देखि वहै फिरि जाइ। हिंदू चर सोई कहै तिहीं जवन ढ़िग आइ ॥
आयौ है जगन्नाथ तें इक संन्यासी आहि। सिद्ध सु पुरुष अनेक ही लोक साथ हैं ताहि ॥
सवैं कृष्ण संकीरतन करैं निरंतर जोइ। सब ही गावैं नाचई रोवैं हसैं जु सोइ ॥
लच्च लच्च जन आवही देखन के हित ताहि। ताही देखि फिरि कैं नहीं जाय सकैं घर आहि ॥
है गे तेई लोक सब संग बावरे प्राय। नाचैं रोवैं कृष्ण कहि लोटैं धर मुरझाय ॥
कहिवे की नही कथा सो लखैं जानिहौ आहि। ईश्वर करि कें मान हौं तिहिं प्रताप करि ताहि ॥
इतनौं कहि कैं चर वहै हरे कृष्ण हीं गाय। नाचै रोवै हसै पुनि भयो बावरे प्राय ॥
वंदे प्रभु के पद कमल तिहि अधिकारी आइ। कृष्ण कृष्ण कहि प्रेम करि भौ विह्वल अधिकाय ॥
कहि उड़िया सौ धीर धरि नमस्कार करि ताहि। पठयौ तुमरे निकट हौं जवन अधिपने आहि ॥
जो तुम आज्ञा देहु तौ इहां आयकैं सोइ। प्रभु कौ दरसन देखिकें जैहैं नृप जब सोइ ॥
कीनीं है बिनती अधिक अति उत्कंठा ताहि। यहै संध्य तुम संग हू अनही जुध्ध्य भय आहि ॥
महापात्र सुनि कैं कहै हिय अति विस्मित होय। ऐसौ मदयप जवन कौ हियौ करै सो कोय ॥
महाप्रभू हि प्रताप नें हियौ फिरायौ ताहि। जिनके दरसन श्रवण करि जगत तरौ सब आहि ॥
वचन कहे नृप दूत सौं औ विचार हिय आहि। प्रभु के दरसन आय कें करौ भाग्य है ताहि ॥
ह्यां आवौ विन अस्त्र ह्वै जो चह करै प्रतीति। पांच सात ही भृत्य संग लै ऐहै इहि रीति ॥
कह्यौ तवै तासौं सकल तिही अधिकारी जाय। आयौ तव ही सो जवन हिंन्दु वेष बनाय ॥
देखि दूरि हीते प्रभुहि परौ भूमि मधि धाय। करै दण्डवत अश्रुजुत ह्वै पुलकित अधिकाय ॥
महापात्र लायौ तवै ताकौ करि सनमान। प्रभु आगें कर जोरि कैं लेय कृष्ण अभिधान ॥
अधम जवन की जाति मैं जन्म भयौ क्यौ दीन। काहे हिंदू जात मधि विधि मुहि जन्म न कीन ॥
हिंदू भयें जु पाइये तुम पद कौ ढिग जान। वृथा देह मेरौ यहै छूटि जाहु अब प्राण ॥
महापात्र सुनि कैं इतौ प्रेमावेसित होय। प्रभु जू की अति स्तुति करै गहि कैं चरणनि सोय ॥
होय सुद्ध चांडाल हू नाम श्रवन करि जाहि। ऐसे तुम तिनकौ जु इन पायौ दरसन आहि ॥
याकी जो यह गति भई यामें अचरज कोइ। ऐसौ ही सुप्रभाव तुव है दरसन कौ जोइ ॥

तथाहि श्रीभागवते—यन्नामधेयश्रवणानुकीर्त्तनाद्यत्प्रह्वणाद्यत् स्मरणादपि क्वचित्।
स्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥

कृपा दृष्टि करिकें प्रभू समाधान करि ताहि। कहैं तवैं श्रीकृष्ण हरि कहौ निरंतर आहि ॥

बोल्यौ वह जो मोहि तुम कीनौ अंगीकार। देहु आज्ञा-यह जु इक करौं जु मैं निरधार ॥
गो द्विज साधुन की करी है हिंसा अपराध। तिहीं पाप तें होहु मम जैसें प्रभु निस्तार ॥
तब मुकुंद दत्त जु कहैं सुनौं महाशय जोइ। गंगा के तट जायबे है प्रभु कौ मन सोइ ॥
तहां जायबे हेत तुम करौ सहाय प्रकार। यहै आज्ञा बड़ी तुव यहै बड़ौ उपकार ॥
तबै महाप्रभु के चरण वंदन करिकैं सोइ। पुनि सब कौं करि वंदना चल्यौ हरषित होइ ॥
महापात्र तासौं करी भेटाभेटी आहि। सामग्री दै कैं बहुत करी मित्रता ताहि ॥
प्रात समैं तिनही तबै नौका बहुत सजाय। आन्यौ प्रभुकौं आपनें अधिकारी हि पठाय ॥
महापात्र आयौ सुचलि श्री प्रभु जू के संग। प्रभु कौ पद वंदन किये आय म्लेछ भरि रंग ॥
नौका एक नवीन जो ताकें मधि घर ताहि। ताके ऊपर गौर कौं सगण चढ़ायौ आहि ॥
महापात्र कौं गौर प्रभु बिदा करी यों जोइ। रोवत रोवत तीर मधि देख रहि गयौ सोइ ॥
चोरन के भय नीर मधि चल्यौ जवन हूँ सोइ। लई संग सेना बहुत दस नौका भरि जोइ ॥
मन्त्रेश्वर इक दुष्ट नद करि राखे तिहिं पार। जवन पिछलदा ग्राम लौं आयौ सो निरधार ॥
प्रभु जु ताही ग्राम तें बिदा दई तिहि आहि। कह न सकैं तिहिं समैं की प्रेम सु चेष्टा ताहि ॥
करैं अलौकिक ही सबै लीला प्रभु चैतन्य। जोई याहि सुनै जु तिहि जन्म देह अति धन्य ॥
आये पानीघाट प्रभु चढ़ि कैं नौका ताहि। नावक कौं निज सवन दिय करिकैं कृपा सु आहि ॥
प्रभु आये कहि लोक मधि भौ कोलाहल जोय। भरे मनुष्यन करि सबै जल अरु थल है सोय ॥
राघव पंडित आय लै गये प्रभू हि लिवाय। लोक भीर करि पथ चलत आये जिहिं तिहिं भाय ॥
एक दिना ही मात्र प्रभु कीनौं तहां निवास। प्रभु कुमारहाटहि गये प्रात जहां श्रीवास ॥
शिवानंद के घर गये आगैं तैसैं जोय। वासुदेव के घर प्रभू पीछैं आये सोय ॥
वाचसपति के गेह प्रभु रहे प्रकार जु जाहि। जैसैं लोकनि भीर भय आये कुलिया आहि ॥
तहां जु माधवदास गृह रहे सचीसुत आहि। लछ कोटि लोकनि तहां आये दरसन ताहि ॥
सात दिना रहि प्रभु तहां किये लोक निस्तार। सब अपराधी जननि कौं तारयौ जिहीं प्रकार ॥
आचारज के गेह जो गये सांतिपुर आहि। शची मात सौं मिलि तहां दुःख दूर किय ताहि ॥
रामकेलि ग्रामहि प्रभु गये तबै ज्यौं सोइ। रूप समातन कौं तहां मिलै जु जैसें सोइ ॥
सूत्र हि मधि ताकौं अधिक कीनौ बर्नन आहि। फेरि नाटसाला हि तैं जैसें ऐवौ ताहि ॥
फेरि सांतिपुर बीच प्रभु कीनौ दस दिन वास। बरन्यौ है विस्तार करि इह वृंदावन दास ॥
याही तें ताकौं इहां नहि कीनौ विस्तार। होय दोष पुनरुक्त ह्वै बाढ़ै ग्रंथ अपार ॥
ताही मधि तैसैं मिलै रूप सनातन दोय। करी नृसिंहानंद ज्यौं पथ की रचना सोय ॥

सूत्र मध्य लीला वहै मैं हूं बरणी आहि। याही तैं फिरि कैं इहां कियौ लिखन नहि ताहि॥

क०—हिररायदास आरज अनुज गोवर्धन है दोऊ भाई धनी अति बडौ अधिकार हैं।
सप्त ग्राम दोय दस लाख मुद्रा के अधीस दाता द्विज भक्त मुख्य धर्म सदाचार हैं।
नदिया निवासी भूमि देव तिन्हौ पोषैं सदा भूमि धन अन्न दै कैं करैं उपगार हैं।
नीलांवर चक्रवर्ति हैं आराध्य दुहुनि कैं चक्रवर्ती तिन्हौं करैं भ्रातृ व्यवहार हैं॥

दोहा

मिश्र पुरंदर कौ कियो पहिलैं सेवन जोय। याही तें प्रभु दुहुंनि कौं नीकैं जानैं सोइ॥

कबित्त

तिन ही गोवर्धन के पुत्र रघुनाथदास वाल काल हीतें सो तो विषय उदास हैं॥
करि कें सन्यास जब सांतिपुर आये प्रभु तिन्हौ तब मिले आय रघुनाथ दास हैं।
प्रभु के चरण गिरे प्रेमाविष्ट ह्वै कैं इन्हैं निज पद छायौ प्रभु करुणा की रास हैं।
तातहि हिरण्य सदा करचौ सेवा आचार्य्यकौ याहीतें आचार्य्य भये हरषित तास हैं॥

पायौ तिनकी कृपा करि प्रभु अवसेस जु सोइ। पांच सात दिना लौं तहां देखे प्रभु पद जोइ॥
प्रभु तिनकौं दैकैं विदा गये नीलगिरि चाय। भये प्रेम करि मत्त अति तेऊ निज घर आय॥
लीलाचल के गमन हित पुनि पुनि भाजे सोय। राखे पथतें आनि कैं वांधि पिता तिंहिं जोइ॥
रखवारे जन पांच निशि दिन राखे ढिग ताहि। द्वै द्विज सेवक चार औ रहैं संग तिहिं आहि॥
सदा सरवदा राखई एकादस जन ताहि। जान न पावै नीलगिरि लहै न अंतर ताहि॥
अव जब आये सांतिपुर महाप्रभु भर भाय। सुनि रघुनाथ पिता निकट करौं निवेदन आय॥
देह जु आज्ञा जाय कैं देखौं प्रभु पद चाय। नाही तौ रहि है नहीं मम. जीवन इहि काय॥
सुनि कें तिनकें तातनें वहु धन जन दै ताहि। विदा कियौ कहि कैं तिन्हैं वेगि आय हौ आहि॥
सात दिना लौं सांतिपुर रहे महाप्रभु साथ। रैंन दिना रघुनाथ जू कहैं यहैं मन गाथ॥
रखवारनि के हाथ तें हौं छुटि हौं किहिं भाय। जैहौं कैसैं लीलगिरि प्रभु जू के संग चाय॥
तिन के मन की जानि प्रभु सर्वहि ज्ञाता आहि। सिच्छारूप कहे.वचन समाधान करि ताहि॥
वौरे तौ तुम होहु जिनि जाहु गेह थिरि होय। कूल लहै भव जलधिकौ क्रम क्रमही जन जोय॥

कवित्त

मर्कट बैराग्य छाडौ लोकनि दिखायवे कौं जथा जोग्य विषै भोग करौ विन प्रीतिसौं।
अंतर बैराग्य धरौ बाह्य व्यवहार करौ वेगि हीं करेंगे कृष्ण अंगीकार रीति सौं।
वृंदावन ह्वै कैं जब लीलाचल ऐहैं हम पास तुम ऐहौ तव काहू छल नीति सौं।
ताही समैं कृष्ण तुम्है सो छल फुरैहैं आप प्रभु बिना कौन राखै काल व्याल भीत सौं॥

कृष्ण कृपा करै तब तिन्हौ कौन राखि सकै ऐसैं कहि महाप्रभु इन्हौं बिदा कियौ है ।
आये निज गेह प्रभु कही सोई रीति गही मर्कट वैराग्य छाडि गेह काज लियौ है ।
तत पर भये व्यवहार बीच जान्यौ जब देखि पिता माता भये हरपित हियौ है ।
छाडि रखवारी दई लई इन्हौ रीति नई भये प्राय विपई मे यौं दिखाय दियौ है ॥

ह्यां महाप्रभु इक ठां जु करि सब जन गन हैं सोइ । नित्यानंद अद्वैत मुख जिते भक्तगन जोय ॥
करि आलिंगन सबन सौं कहैं महाप्रभु सोइ । देहु जु आज्ञा सब हमैं जाहि नीलगिरि जोइ ॥
भयौ इहाइ सबनि सौं मिलन हमारौ जोय । लीलाचल अब कै बरष की जौं गमन न कोय ॥
हौं जु तहां तैं जाहु गौ बृन्दावन निरधार । देहु जु आज्ञा सब तबै एहौं विघ्न निवार ॥
शचीमातके चरण धरि वहुत विनय किय आहि । वृंदावनके गमन हित प्रभु आज्ञा लियताहि ॥
प्रभु जू तब नवद्वीप कौं दीनौ तिन्हौ पठाय । लै करि भक्तनि संग कै चले नीलगिरि चाय ॥
पथ महि तेई लोक सब करैं जु सेवन ताहि । सुख सौं आये नीलगिरि शचीसुनु जु आहि ॥
किय दरसन जगनाथ कौ तहां महाप्रभु आय । प्रभु आये सुनि ग्राम भौ कोलाहल अधिकाय ॥
मिले आयके भक्तगण हिये न हरष समाय । आलिंगन सबकौं कियौ श्री प्रभु जू भरि भाय ॥
आये काशी मिश्र जू पुनि श्री रामानन्द । परम भक्त प्रद्युम्न जू सार्वभौम रस कन्द ॥
वाणीनाथ प्रवीण अति प्रभु के प्यारे जोय । सिखी माहती आदि दै जिते भक्तगण सोय ॥
मिले गदाधर पण्डित जु श्री प्रभु जू सौं आय । तिन सब के आगें प्रभू कहन लगे इंहि भाय ॥
हौं वृंदावन जाउंगौ गौडदेस दिस होय । निजमाता अरु सुरधुनी तिनके पद लखि जोय ॥
गमन कियौ हौं गौड कौं मन में करि इहि भाय । संग भये निज भक्तगण सहस एक अधिकाय ॥
लछ लछ जन आवंई कौतिग देखन चाय । लोगन की अति भीर करि पथ मधि चलौ न जाय ॥
जहां रहैं चहुँघा तहीं भीत चूर ह्वै जाय । जितही नैंन परैं तितै लखियै जन समुदाय ॥
कष्ट कल्पना करि गये रामकेलि हम ग्राम । आये हमरे निकट तब रूप सनातन नाम ॥
कृष्णकृपा के पात्र विवं भाई भक्तनि भूप । राजपात्र व्यवहार मधि मंत्री बडे अनूप ॥
विद्या भक्ति सुबुद्धि के बलकरि परम प्रवीन । तई आप कौं मानई तृण हूतें अति दीन ॥
होय विदीर्न पखान हूं दैन्य देखि सुनि ताहि । हौं अतिही सन्तुष्ट ह्वै कहौ तिनैं तब आहि ॥
उत्तम ह्वैकैं आप कौं मानैं करिकैं हीन । वेगहि अब उद्धार तुम करिहैं कृष्ण प्रवीन ॥
इतनौं कहिकैं हौं तिनौं विदा दई जब जोइ । गमन समैं सुप्रहेलिका पढ़ी सनातन जोइ ॥
हैंगे जिनके संग ही लछ कोटि ए लोइ । नहीं वृंदावन गमन की इहि परिपाटी जोइ ॥
हौं न बिचारयौ ताहि तब श्रवण मात्र किय आहि । कान्हाई नटसाल इक ग्राम प्रात गौ ताहि॥
मन में कियौ बिचार हम रैंन समैं इहिं भाय । हम सौं कहा पहेलिका कही सनातन आय ॥

लक्षकोटि जन भीर यह है जिनके संग मांहि । वृंदावन के गमन की यहू परिपाटी नाहि ॥
भली बात है सो कही इते लोक मम संग । कहि हैं मोसों लोक लखि यहैं किये इक ढंग ॥
निर्जन वृंदाविपिन है दुर्लभ दुर्गम सोय । इकलेई जैयै तहाँ कै इक जन सँग जोय ॥
माधवेन्द्र जू एक ले गये तहां सुविचार । चले तहां हम कुहक कौं इन्द्र जाल बिस्तार ॥
धिक धिक हमकौं कहिय है प्रभु जु भये अधीर । ह्वै निवर्त्त हम फेरि कैं आये गंगा तीर ॥
आयो जनगण राखि कैं तिन तिनके निज वास । आये जन सब पांच छय हमरै सँग सुखरास ॥
अब कैसैं निरविघ्न हम वृंदावन कौं जांहि । देहु जुक्ति मिलकें सबै ह्वै प्रसन्न मन मांहि ॥
हौं तजि गयौ गदाधरहि इनै लहौ दुख जोइ । तिहीं हेत करि विपिन कौं जाय सकौं नहि सोइ ॥
तबैं गदाधर पण्डित जु प्रेमावेसित होय । श्री प्रभु पद धरि कें कहैं करकैं विनती सोय ॥
बह श्री वृन्दाविपिन है रहौ जहां तुम चाइ । गंगा जमुना सब तहां तहां तीर्थ समुदाइ ॥
जावौ वृन्दावन तऊ जन सिच्छा हित सोइ । जो है तुम्हरे हीय में करि हौ प्रभु जू सोइ ॥
यह आगे आयौ प्रभु वर्षा चातुर्मास । इनहिं चारौ मास मधि करौ लीलगिरि बास ॥
पाछें आचरि हौ उहै है तुम्हरे मन जोइ । चलौ रहौ इच्छा हि निज करै निवारण कोइ ॥
सुनि सब भक्त कहै तबै प्रभु पद मधि करि नेह । पण्डित किय जू निवेदन सबके इच्छा एह ॥
सबकी इच्छा करि प्रभू रहे महीना चारि । सुनि प्रतापरुद्रहि हियें भयौ सुहरष अपार ॥
कियौ गदाधर तिंहि दिवस प्रभु कौ न्यौतौ चाय । करी तहां भिक्षा प्रभु लै सब जन समुदाय ॥
पण्डित के भिक्षा हि मधि नेह स्वाद प्रभु ताहि । दोऊ मानुष शक्ति करि बरणे जाइ न आहि ॥
इंही भांति चैतन्य की लीला अनँत अपार । कही इन्है संक्षेप करि कहि न जाय विस्तार ॥
सहस बदन हूं करि कहैं जौपै आप अनंत । इक लीला हू कौ तऊ पावै नाहीं अंत ॥
रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस । सो प्रभु चरितामृत लिखै वृज भाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे—व्रजभाषायां पुन गौड गमनागमनं नाम षोडश परिच्छेदः ॥

सप्तदश परिच्छेदः

गच्छन्वृन्दावनं गोरो व्याघ्रभैणखगान् वने ।
प्रेमोन्मत्तान् सहोन्नृत्यान् विदधे कृष्ण जल्पिनः ॥ १ ॥

गौरचंद्र जय जय सदा जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौरभक्त के वृंद ॥
सरद समें आएं भई चलिवे प्रभु मंति जोय । रामानंद स्वरूप संग करैं जुगति दुरि सोय ॥

जो मेरौ जु सहाय अब करौ जु तुम जन दोय। तब हम देखें जायकें श्री वृन्दावन सोय ॥
हम तौ उठिके रैन मधि चलि हैं वन पथ धाय। इकले चलिहैं लेहिंगे काहू को न सहाय ॥
जे कोऊ हम संग हित पाछे चले जु धाय। तिन सबकौं तुम राखि हौ जो कोऊ नहिं जाय ॥
आज्ञा देहु प्रसन्न ह्वै मानेंगे दुख नाहिं। तुम सब के सुख में जु सुख ह्वै हैं सुख पथ माहिं ॥
तब ते दोऊ जन कहैं तुम ईश्वर जु स्वतंत्र। जो इच्छा करि हौ जु सो हो नाहिन परतंत्र ॥
ऐसे सुनो दुहूँन कौ एक निवेदन सोइ। हमरे सुख तुम सुख जु करि आप कहैं सो सोइ ॥
तब हिय में हम दुहूँन के होय महासुख आहि। करें वीनती एक जो धरौ सहाय हि ताहि ॥
संग चाहिये सर्वथा इक उत्तम द्विज सोय। भिक्षा करि भिक्षा हि दे पात्र ले चले जोइ ॥
नाहीं वन पथ जात द्विज भोज्य अन्न दे ताहि। आज्ञा करौ चले सु द्विज संग एक जन आहि ॥
कहैं जु प्रभु लहैं नहीं निज संगी जन कोय। इक जन लिए सु और कौ दुख ह्वै है हिय सोय ॥
संगी तौ तन ही भलौ स्निग्ध होय मन जाहि। जो ऐसौ पैये तबै लैहे इक जन ताहि ॥
कहैं स्वरूप यह जु बलभद्र जु भट्टाचार्य। तुम में है सुस्निग्ध अति पंडित साधु सु आर्य ॥
प्रथमहि आयौ गौड ते यह जु तिहारे संग। सब ही तीरथ करन हित याके हिय में रंग ॥
ह्वै गो याकौ संग मधि एक विप्र एक भृत्य। सोऊ पथ में रहि गयौ सेवा भिक्षा कृत्य ॥
इनको जो सँग लेहुगे तौ सब के सुख होय। तुम कौ वन पथ जात में दुख नहिं ह्वै है कोय ॥
यह द्विज लै चलि है बसन अरु जल भाजन जोइ। भट्टाचारज देहिंगे भिक्षा करिकें सोय ॥
प्रभु जू तिनके वचन कौ कीनौ अंगीकार। भट्टाचारज कौं जु सँग करि लीनौ निरधार ॥
प्रथम निशा जगनाथ की रहे जु आज्ञा पाय। रैन शेष उठि के प्रभू दुरिकें चले जु धाय ॥
भए प्रात सब भक्तगण प्रभु नहि देखे जोइ। प्रभु को ढूढौं चहे सब हिय अति व्याकुल होय ॥
किए निवारन सबन कौ तब स्वरूप जू सोइ। प्रभू के मन की जान सब रहे बैठि सब गोइ ॥
प्रभु तजि कें जु प्रसिद्ध पथ चले जु ऊतर होय। करिकें कटक हि दाहिने वन में पैठे सोय ॥
निर्जन वन में चले प्रभु लेत कृष्ण कौ नाम। हाथी केहरि पथ तजें लखिकें प्रभु अभिराम ॥
पास पास केहरि द्विरद गेंडा सूकर जोइ। तिनके मधि आवेस में करें गमन प्रभु सोइ ॥
लखिकें भट्टाचार कें होय महाभय सोय। तिनकी प्रभुहि प्रताप करि एकहि पंगति होय ॥
कीनौ है पथ में शयन इक दिन केहरि आइ। लाग्यौ है आवेस मधि प्रभु जू कौ पद ताइ ॥
कृष्ण कृष्ण कह प्रभु कहैं उठौ जु केहरि सोय। कृष्ण कृष्ण मुखते कहै नांचन लाग्यौ सोय ॥
इक दिन वन में महाप्रभु करैं नदी मधि स्नान। आयो मत्त गजेन्द्र गण करिवे को जलपान ॥
कृत्य करैं प्रभु नीर में आगे आये सोय। प्रभु जल मारयौ फैंकिकें कृष्ण कृष्ण कहि जोय ॥
सोई जल कौ विंदु कन लाग्यौ जाके गाय। कृष्ण कृष्ण कहि नाचई सोई भरौ सुभाय ॥
चीत्कार कोऊ करें परें धरनि में कोय। लखि लखि भट्टाचार्य कौ चमत्कार हिय होय ॥

करैं महाप्रभु पथ चलत उच्च कीरतन जोय। मधुर कंठ ध्वनि श्रवन करि आवैं मृगगन सोय॥

तथाहि श्री भागवते—

धन्याःस्म मूढमतयोऽपि हरिण्य एता, यानन्दनन्दनमुपात्तविचित्रवेशं।
आकर्ण्य वेणुरणितं सह कृष्णसाराः पूजां दधुर्विरचितां प्रणयावलोकैः॥

सिंह जु आए तिहि समें पांच सात मिलि जोइ। प्रभु जू के संगहि चलें सिंह मिरग मिल दोय॥

तथाहि—

यत्र नैसर्गदुर्वैराः सहासन्नृमृगादयः। मित्राणीवाजिता वास द्रुतरुट्तर्षणादिके॥

कृष्ण कृष्ण तुम कहौ यौं जब बोलें प्रभु ताहि। कृष्ण कृष्ण कहि व्याघ्र मृग नाचन लागे आहि॥
नाचें कूदें मिरगगण सिंह जूथ मिल संग। देखै भट्टाचार्य सो श्री प्रभु जू कौ रंग॥
करें परस्पर व्याघ्र मृग आलिंगन भरि भाय। दोऊ मिल चुंबन करें मुखसौं मुखहि लगाय॥
प्रभु जू कौतुक देखिकें लगे करन तब हास। आगे चले महा प्रभू तिन सब कौ तजि पास॥
शिखी आदि सब पच्छि गण प्रभु कौ लखि कें जोय। कहैं कृष्ण सब सँग चलें नाचें मत्त सु होय॥
हरि बोलो कहि के चलें महा उच्च धुनि जोय। वृच्छ लता प्रफुलित सबै तिहि धुनि कौ सुनि सोय॥
झार खंड पथ में जिते थावर जंगम आहि। किए प्रेम उन्मत्त सब कृष्ण नाम दे ताहि॥
जिहीं ग्राम ह्वै जाहिं प्रभु करें वास जिहि ग्राम। होय तहां सब जननि के प्रेम भक्ति अभिराम॥
कोऊ तिहि मुख लखि सुनें प्रभु के नामहि आहि। ताके मुख से और सुनि और सुनै मुख ताहि॥
सबै कृष्ण कहि कहि हँसें नाँचें कान्दें जोय। परंपरा संबंध सब देश भक्त भौ सोय॥
यद्यपि श्री गौरांग जू जन समूह के त्रास। प्रेम छिपावें करें नहि बाहिर ताहि प्रकाश॥
तऊ जु तिनके दरस औ श्रवन प्रभावन आहि। सकल देश कौ लोक सब भए वैष्णव आहि॥
गौड़ वंग उत्कल जु पुनि दच्छिन देसहि जाय। किय निस्तार जु लोक कौ आपन भ्रमि इहि भाय॥
मथुरा जैवे छल जु करि झार खंड मधि जाय। तहां परम पाखंड जन सब ही भील जु प्राय॥
तिन सब कौ उद्धार किय नाम प्रेम दे सोय। गूढ़ चरित चैतन्य कौ बूझ सकै तिहि कोय॥
वन लखि प्रभु के होय भ्रम इह वृन्दावन जोय। जिहि लखि प्रभु मानें यही गिरि गोवर्धन सोय॥
जहां नदी देखे जु तिहि माने जमुना सोय। नांचें गिरें पुकारईं तहां प्रेम वस होय॥
भट्टाचारज पथ चलत साक मूल फल सोय। जोई जहां लहै तहां लेय सकल ही सोय॥
ताही ग्राम रहें जहां जे जे द्विज समुदाय। पांच सात मिल द्विज करें प्रभु हि निमत्रंन आय॥
कोऊ अन्नहि आनि के वलभद्रहि दें सोय। कोऊ दधि पय खांड पुनि आनि देइ घृत कोय॥
जहां विप्र नाहीं तहां शुद्ध महाजन सोय। भट्टाचारज कौ करें आनि निमत्रंन जोय॥
पाक करें बलभद्र जू वन के व्यंजन जोय। वन व्यंजन करि प्रभु जु कौ आनंदित मन होय॥

झाड़िखण्ड (वनमार्ग) में वृन्दावनगमनोत्सुक सिंहव्याघ्रप्रेमोन्मत्तकारी
श्री गौरांग

अन्न दिना द्वै चार कौं राखें धारिकें ताहि। जहां शून्य वन जनन कौं होय निवास न आहि ॥
तहां अन्न सोई करें भट्टाचारज पाक। फल मूलन के विजंन ही करें वन्य बहु शाक ॥
प्रभु जू कें संतोष अति वन विजंन मधि होय। लहें महा सुख तादिना रहें सु निर्जन सोय ॥
सेवा करें सनेह करि वलभद्र जु जिमि दास। वहिवास जल पात्र औ लिए चलें द्विज तास ॥
निर्झर को जल उस्न करि न्हाय जु तीनों वार। दोऊ संध्या में अगनि तापें काष्ठ अपार ॥
निर्जन गमन निरतंर हि प्रेमावेश सुनाय। कहें वचन श्री महाप्रभु हिये सु अति सुख पाय ॥
भट्टचार्य सुनो जु हम फिरें जु नाना देश। वन पथ के सुख को कहूं पायौ नहिं लव लेश ॥
कृष्ण कृपालु कृपा बड़ी करौ जु हम पै जोय। मोकों वनपथ लायकें दियौ इतौ सुख सोय ॥
वृन्दावन के चलन को पहिले कियौ विचार। माता को हम अवस करि देखेंगे इकबार ॥
करि हैं मिलन अवश्य हम भक्त गनन सँग जाय। वृन्दावन जैहैं जु हम लै भक्तन समुदाय ॥
गौड़ देश कौ गमन किये यह बिचार के जोय। माता गंगा भक्त मिल पायौ आनँद सोय ॥
तव हों लेके भक्तगण चल्यौं हिये करि रंग। कोटि लच्छ जन ता समें भये हमारे संग ॥
कृष्ण हमें शिक्षा करी वदन सनातन सोय। तहां विघन करि पथहि में ले आये अव सोय ॥
दीन हीनपै दयामय उदधि कृपा के जोय। तिन हरि जू की कृपा बिन नहीं कहूं सुख होय ॥
वलभद्र हि हिय लायके कह्यौ महाप्रभु ताहि। पायौ तुम्हरी कृपा करि हम इतनौ सुख आहि ॥
भट्टाचारज कहें तुम कृष्ण दयामय सोय। अधम जीव हौं ता विषैं भये सदय तुम जोय ॥
कौन छार मैं तुच्छ जन संग लै आए ताहि। कृपा करी मेरे करहि भिक्षा कीनी आहि ॥
अधम काक कौ तुम कियौ छिन में गरुड समान। तुम ईश्वर जु स्वतंत्र हो आप स्वयं भगवान ॥

तथाहि—मूकं करोति वाचालं पंगुं लघंयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वंदे परमानन्दमाधवम् ॥

इहि विधि वलभद्र जु करें स्तुति प्रभु जू की चाय। तुष्ट कियौ प्रभु कौ जु हिय करि सेवा भरिभाय ॥
यों बहु सुख सों प्रभु चले आए काशी सोय। न्हाये तव मणि कर्णिका प्रभु मध्य दिन जोय ॥
तपन मिश्र ताही समय न्हाय सुरधुनी जोय। अचिरज ज्ञान भयौ कछू प्रभु कों लखिकें सोय ॥
प्रथम सुनी है प्रभु जु ने कीनौ है संन्यास। निहचै कियो भयौ तवै विनके हियहि हुलास ॥
प्रभु जू के पद जुगल धरि करें जु रोदन आहि। कीनौ आलिंगन तवै प्रभु उठाय के ताहि ॥
विश्वेश्वर के दरस हित गए जु प्रभु लै सोइ। चरण विंदु माधव जु के लखे आप तव जोय ॥
लै आए प्रभु को घरहि हिय आनंदित होय। सेवा करि नाचन लगे बसन फेरिकें सोय ॥
प्रभु कौ चरणोदक तवै कियौ वंस जुत पान। पूजे भट्टाचर्य जू करि के बहु सम्मान ॥
प्रभु न्यौतौ करि गेह निज भिक्षा दीनी ताहि। भाट्टाचार्य पास तव पाक करयौ है आहि ॥
करि के भिक्षा महाप्रभु रहे नेक तव सोय। मिश्र पुत्र रघु जू करें पद संवाहन जोय ॥
प्रभु जू कौ अवशेष सो पायो मिश्र सवंश। शशि शेखर आए जु प्रभु आये सुने प्रसंश ॥

ते हैं सखा जु मिश्र के प्रभु के पहले दास। वैद्य जाति लेखक विरति वारानसी सुवास ॥
आप चरण गिरि प्रभु जू के करेंसु रोदन आहि। प्रभु उठायके कृपा करि किय आलिंगन ताहि ॥
कहै चन्द्र शेखर प्रभो कृपा करी बहु जोय। आय आप ही दास कौं दीनौ दरसन सोय ॥
हम अपने प्रारब्ध करि काशी वसे अजान। माया ब्रह्म सुशब्द विन और न सुनिये कान ॥
षट दरसन व्याख्या विना कथा नहीं ह्यां कोय। मिश्र कृपा करि हरि कथा मोहि सुनाई सोय ॥
सदा दुहुनि के चित्त में तुम्हरे पद जुग आहि। तुम ईश्वर सर्वज्ञ हो दीनो दरसन ताहि ॥
सुनी महाप्रभु चलहिंगे श्री वृन्दावन जोय। तातैं कोऊ दिन रही ए जु भृत्य जन दोय ॥
मिश्र कहें जब लौं रहो प्रभु तुम कासी मांहि। मम न्यौते विन और कौ मानौगे तुम नांहि ॥
इही भांति श्री गुरु प्रभू दुइ दासन वस होय। इच्छा नहि तौऊ रहे काशी दिन दिस सोय ॥
महाराष्ट्र आयौजु द्विज प्रभु दरसन हित आहि। प्रभुको प्रेम स्वरूप लखि भयौजु अचरज ताहि ॥
सबै बिप्र न्यौतौ करें प्रभु नहि मानत ताहि। आज निमंत्रण भयौ है प्रभु यों कहें जु आहि ॥
याही भांति निति प्रति करें वंचन न्योते मांहि। सन्यासिन के संग भय न्यौता मानैं नाहि ॥
जती प्रकाशानंद इक बैठि सभा मधि जोय। नित वेदान्त पढ़ावही वहु शिष्यन लै सोय ॥
सोई इक द्विज गौर कौ लखि आयौ व्यौहार। कहे प्रकाशानंद ढिग तिनकौ चरित अपार ॥
आयौ सन्यासी जु इक जगन्नाथ ते आहि। महिमा वडौ प्रताप जिहि बरनि सके नहिं ताहि ॥
महा प्रचंड शरीर जिहि सुवरन वरन जु एन। लंवित भुज आजानु अरु कमल अरुन दल नैन ॥
जितने ईश्वर के कछू सबै सुलच्छन आहि। ते तिन में सब देखिए कथन सु अद्भुत ताहि ॥
ये नारायण जू अहैं होय ज्ञान लखि ताहि। जोई तिहि देखे करैं कृष्ण कीरतन आहि ॥
महा भागवत लच्छन जो सुने भागवत जोइ। ते सब लच्छन प्रगटई तिन में लखिए सोइ ॥
रसना जिनकी कृष्ण कौ लेत निरंतर नाम। नयन अश्रु जल है मनौ गंगा धार भिराम ॥
छिन नाचै गावै हँसे रोदन करे अपार। छिन हुंकार करे जनौ केहरि कौ हुंकार ॥
नाम कृष्ण चैतन्य जिहि जगत सुमंगलु आहि। नाम रूप गुण माधुरी है सब अनुपम ताहि ॥
सुनत प्रकाशानंद वह कियौ हास परकाश। लाग्यौ ताकौ कहन तव करि द्विज कौ उपहास ॥
गौड देश मधि सुन्यौं है भावुक जती जु सोय। केशव भारति कौ जु शिष्य लोक प्रतारक सोय ॥
नाम ताहि चैतन्य लै भावुक गण सँग आहि। गायक नचवैया कहे दिशि दिशि ग्रामजु आहि ॥
जोई तिहि देखे वही कहे जु ईश्वर आहि। इमि मोहन विद्या लखै जोई मोहित ताहि ॥
सार्वभौम पंडित प्रवल भट्टाचारज आहि। सोऊ मत वौरौ भयौ सुनी संग करि ताहि ॥
महा इन्द्रजाली जती नाम मात्र है जोइ। काशी में विकि है नहीं तिहि भावुकता सोइ ॥
करि श्रवन वेदान्त कौ जिनि जैये तिहि पास। उच्छृंखल जन संग करि दुहू लोक कौ नाश ॥
यह सुनि तिहि द्विजने महा दुख पायौ हिय जोय। कृष्ण कृष्ण कहि तँहां ते उठिके गयौ जु सोय ॥

प्रभु के दरशन करि भयौ है जु शुद्ध मन ताहि। प्रभु आगे ह्वै अति दुखी कहै जु विवरन आहि ॥
यह सुनि के तव महाप्रभु रहे कछू मुसकाय। प्रभु सों पूछें फेरि हू सोऊ द्विज करि भाय ॥
तिहि आगे जब मैं लियौ तुमरौ नाम जु आहि। सोऊ जाने नाम तब आपन कह्यौ जु ताहि ॥
कहत हेत तव दोष कै करेउ नाम उच्चार। कह्यौ जु फिरि चैतन्य पुनि ऐसे तीनहु वार ॥
आयौ तीनों वार नहि कृष्ण नाम मुख ताहि। नाम अवज्ञा करि कहे सुनि पायौ दुख आहि ॥
याकौ कारण कृपा करि कहौ जु मोसों जाहि। तुमैं देखि मेरौ वदन कहै कृष्ण हरि सोय ॥
यह सुनि के तव महाप्रभु लागे कहन जु ताहि। मायावादी कृष्ण के अपराधी हैं आहि ॥
ब्रह्म कहैं चैतन्य पुनि कहैं आतमा जोइ। मायावादी नाम ये भाँसें निरवधि सोइ ॥
कृष्ण नाम आवै नहीं याही ते मुख ताहि। कृष्ण स्वरूप जु नाम तिहि दोऊ इक सम आहि ॥
विग्रह नाम स्वरूप तिहि तीनों एकहि रूप। तीनों में नहि भेद ये चिदानंद सुख रूप ॥
हरि के देही देह अरु नामी नाम न भेद। जीव धर्म यह नाम वपु और स्वरूप विभेद ॥

तथाहि—

नाम चिन्तामणिः कृष्णश्चैतन्यरसविग्रहः। पूर्णः शुद्धो नित्यमुक्तोऽभिन्नात्मा नाम नामिनोः ॥४॥

याही ते श्री कृष्ण के नाम देही प्रकाश। प्राकृत इन्द्रिय ग्राह्य नहिं अहै स्वयं परकाश ॥
कृष्ण नाम गुण कृष्ण के लीला वृन्द जु ताहि। सम हैं कृष्ण स्वरूप के चिदानंद सब आहि ॥

तथाहि—

अतः श्रीकृष्णनामादि न भवेद्ग्राह्यमिन्द्रियैः। सेवोन्मुखे हि जिह्वादौ स्वयमेव स्फुरत्यदः ॥६॥

ब्रह्मानंद हुते अधिक सुख लीला रस जोय। ब्रह्म सु ज्ञानी कौ करैं खेंचि आप बस सोय ॥

तथाहि—स्वसुखनिभृतचेता स्तद्व्युदस्तान्यभावो ऽप्यजितरुचिरलीलाकृष्टसारस्तदीयं।
व्यतनुत कृपया यस्तत्वदीपं पुराणं तमखिलवृजिनघ्नं व्याससूनुं नतोस्मि ॥७॥

तथाहि—

आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्था अप्युरुक्रमे। कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थं भूतगुणो हरिः ॥८॥

यह रहो सब कृष्ण के चरणन कौ संबंध। हरे जु आत्माराम कौ मन तुलसी कौ गंध ॥

तथाहि—तस्यारविन्द नयनस्य पदारविन्द किञ्जल्क मिश्र तुलसी मकरन्दवायुः।
अन्तर्गतः स्वाविवरेण चकार तेषां संक्षोभमक्षरजुषामपि चित्त तन्वोः ॥९॥

कृष्ण नाम आयौ नहीं याही ते मुख ताहि। याते मायावादि गण सदा वहिर्मुख आहि ॥
भावुकता बेंचन जु हौं आयौ काशी आहि। गाहक बिन न विकाय है जैहों घर लै ताहि ॥
आए भारी बोझ लै कैसे तिहिं लै जाँय। ताकौ ह्याँही बेचि हैं मोल अलप हू पाय ॥
इतनौ कहिकें महाप्रभु ता द्विज कौं अपनाय। श्री मथुरा कौं प्रात उठि चले गौर हरिधाय ॥
ते तीनों जन संग लै मनै किए प्रभु जोइ। वे तीनौं जन दूर ते घरहि पठाए सोइ ॥

तीनों जन प्रभु विरह करि इकठें मिलि कै जोइ। गान करें प्रभु गुणन कौं बैठि एकठां सोइ॥
प्रभु जू आय प्रयाग में कीनौ बेनी स्नान। लखि के माधव प्रेम करि कियौ नृत्य अरु गान॥
जमुना को लखि प्रेम करि परे कूदि अकुलाय। अस्त व्यस्त बलभद्र जू लीनौ तिन्हैं उठाय॥
इहीं भांति दिन तीन लौं रहे प्रयागहि जोय। कृष्ण नाम प्रेमादि दे जन निस्तारे सोय॥
मथुरा चले जु मार्ग में रहैं जहांई जाइ। कृष्ण नाम अरु प्रेम दे लोक नचाए भाय॥
पहले दछिन जाय ज्यों जन निस्तारे जोइ। तैसे पच्छिम देश सब कीए वैष्णव सोइ॥
जहाँ तहां पथि जात में जमुना दरसन होय। तहां कूदि तामें गिरें प्रेम अचेतन सोय॥
आए मथुरा निकट जब दृगनि मधुपुरी जोइ। परे दंडवत होय के प्रेम मगन अति होइ॥
कीनौ मथुरा आइकै प्रभु विश्रांत जु स्नान। किए दंडवत देखिके केशव जन्म स्थान॥
नाचें गामें प्रेम वस करें सघन हुँकार। प्रभु कौ प्रेमावेश लखि अचिरज लोग अपार॥
परयौ एक द्विज आयके धरि प्रभु के पद जोय। नृत्य करे प्रभु के जु सँग प्रेम मगन अति होय॥
दोऊ नाचें प्रेम करि हिय सों हिय लिपटाय। बोलें हरि हरि कृष्ण कहि दोऊ भुजा उठाय॥
हरि हरि बोलें लोग सब भौ कौलाहल सोइ। माला पहिराई प्रभुहि केशव सेवक सोइ॥
लोक कहै प्रभु को जु लखि लहि अचरज हिय मांहि। यह प्रेमा यह रूप सो लौकिक कहिए नाहि॥
प्रेम मत्त जन होत है जिहि दरसन अभिराम। नाचें गावें हँसे वहु रोवें लै हरिनाम॥
तव तौ श्रीयुत महाप्रभु लै तिहि द्विजकौं आहि। न्यारे हो एकान्त मधि पूछयौ कछूक ताहि॥
तुम तो आरज सरल हिय वृद्ध विप्र हो सोइ। पायौ है तुम कहांते यहै प्रेम धन जोइ॥
विप्र कहे श्रीपाद श्री माधवेन्द्र पुरि जोइ। भ्रमत भ्रमत आए यहां मथुरा नगरी सोय॥
मेरे घर मधि कृपा करि ते प्रभु रहे रसाल। मोहि शिष्य करि हाथ मम भिक्षा करी कृपाल॥
कीनी सेवा महाशय करि के प्रगट गुपाल। गोवर्धन में है अजौं सेवा कहै रसाल॥
सुनि के प्रभु जू ने करी चरन वदंना ताहि। प्रभु के पद सो द्विज परयौ पाय महाभय आहि॥
कहें महाप्रभु गुरू जु तुम शिष्य प्राय हौं जोइ। नमस्कार गुरु ह्वै करौ शिष्य हि जो जन सोइ॥
सुनिके विस्मित द्विज भयौ हिए भावमय जोइ। ऐसे बात कहै जु क्यों तुम संन्यासी होय॥
ऐसौ तुमरो प्रेम लखि करौं हिय अनुमान। माधवेन्द्र संबंध तुम धरो जु मो मन ज्ञान॥
जहां प्रेम श्री कृष्ण कौ तहां जु तिहीं संबंध। तिहिं विना ही प्रेम कौ कहूँ नहीं है गंध॥
भट्टाचारज तव कह्यौ तिहि संबंध जु ताय। सुनि आनंदित द्विज लभ्यौ नाचत हिय भरिभाय॥
प्रभु कौं संग लै विप्र तव आयौ निज घर जोय। प्रभु की वहु सेवा करे निज इच्छा करि सोय॥
भिक्षा हित वलभद्र सों पाक करायौ आहि। तव हँसि के श्री महाप्रभु वोले वचन जु ताहि॥
तुम कर भिक्षा है करी पुरी गुसाई जोइ। हम कौ भिक्षा देहु तुम हमरे शिक्षा सोइ॥

तथाहि—

यद्यदाचरते श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः । स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते ॥१०॥

यद्यपि जाति सनोडिया हुतौ जु ब्राह्मण सोय । सन्यासी तिहि विप्र घर करे न भोजन जोइ ॥
तापै जब श्री महाप्रभु भिक्षा मांगी जोइ । तिहि द्विज ने प्रभु कौ कहौ यहै दैन्य करि सोइ ॥
भिक्षा तुम कौ दीजिए भाग्य हमारौ जोइ । तुम ईश्वर तुमरे नहीं विधि व्यवहार जु सोइ ॥
करि हैं दुर्मुख लोग जे तुमरौ निंदन आहि । सो दुष्टनको वचन हम सहि नहि सकि हैं ताहि ॥
कहे महाप्रभु है जिति ते श्रुति स्मृति ऋषिगण जोइ । सबै भिन्न मत है नहीं एक धर्म मत सोय॥
धर्म स्थापन हेत एक है जु साधु व्यवहार । पुरी गुसाईं आचरण सोई धर्म जु सार ॥

तथाहि—

तर्कोऽप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्नाः नासावृषिर्यस्य मतं न भिन्नं ।
धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायां महोजनो येन गतः स पन्था ॥११॥

भिक्षा करवाई तवै तिहि द्विज प्रभु को जोय । आए जन मधुपुरी के प्रभु कों देखन सोय ॥
हरी हरी वोलौ कहै प्रभु निज वाहु उठाय । प्रेम मत्त नाचें जु जन हरि हरि धुनि करि चाय ॥
जमुनाघाट चौवीस जे स्नान कियौ प्रभु ताहि । स्नान तीर्थ सब विप्र तिनु प्रभुहि दिखायौ आहि॥
दीर्घ विष्णु भूतेश्वर जु स्वयंभू जु विश्राम । महाविद्या गोकर्ण मुख सबै दिखाए धाम ॥
द्वादश वन के देखिवे जब प्रभु मन भौ रंग । तब ही सोई विप्र प्रभु लीनौ अपने संग ॥
गये जु मधुवन तालवन कुमुद सुवहुला जोइ । जहां जहां प्रभु न्हाय करि प्रेम विवस भौ सोइ ॥
प्रभु कौं लखि पथ में चरित धेनु घटा जु अपार । प्रभु चहुंधा आईजु घिरि सब करिकैं हुँकार ॥
धेनु घटा लखि थकि रहैं प्रभु जू प्रेम तरंग । धेनु सबै वात्सल्य करि चाटैं प्रभु के अंग ॥
स्वस्थ होय प्रभु जू करैं कंडू तिन के अंग + छाडें नाहिन धेनुगण चलै जु प्रभु के संग ॥
राखी ग्वालनि धेनु सब करिकैं बहुत प्रयास । आई सुनि कें कंठ धुनि मृगीमाल प्रभु पास ॥
देखैं मुख हरिणी हरिन प्रभु कौ चाटै अंग । करैं नहीं भय मार्ग मधि चली जांहिं तिहि संग ॥
पंचम गावैं भृंगि पिक प्रभुकौं लखि सुख पाय । नृत्य करैंजु मयूर गण प्रभुकौं लखि २ आहि ॥
वृन्दावनके तरु लता गण प्रभुकौं लखि आहि । मधु मिस वरषैं अश्रु जल पुलकसु अंकुर ताहि ॥
फल फूलनि के भार भरि परें डार प्रभु पाय । बंधु भेट लै आंवही वंधु हि लखि जिहि भाय ॥
थावर जंगम विपिन के प्रभु जू कौं लखि जोइ । देखि बंधुगण बंधु कौं ज्यौं आनन्दित होय ॥
तिन सब की प्रभु प्रीति लखि भावावेसित होय । सब के संग क्रीडा करें ह्वै तिन के वस सोय ॥
आलिंगन प्रभु जू करैं प्रति तरुलता सु जान । करैं समर्पण कृष्ण कौं सुमनादिक करि ध्यान ॥
अश्रु कंप औ पुलक प्रभु प्रेम अधीर शरीर । कृष्ण कृष्ण बोलौ कहैं ऊंचे सुर गंभीर ॥
थावर जंगम मिलि सबै करैं कृष्ण धुनि जोइ । प्रभु के स्वर गंभीर की जानौ प्रतिधुनि होइ ॥
प्रभु जू मृग कौ कंठ धरि रोदन करैं अपार । मृग के अँग में पुलक औ नयन अश्रु जलधार ॥

सुक सारी तरु डार पर बैठे दरसन दीय। तिन कौं लखि प्रभु कौ भयौ कछु सुनिवे कों हीय ॥
सुक सारी प्रभु हाथ पर उड़िकै बैठे आइ। श्लोक पढ़ैं शुक कृष्ण गुण प्रभु जू कौं जु सुनाय ॥

तथाहि गोविन्दलीलामृते—

सौन्दर्य्यं ललनालिधैर्य्य दलनं लीलारमास्तम्भिनी वीर्यं कन्दुकिताद्रिवर्यममलाः पारे परार्द्धं गुणाः।
शीलं सर्वजनानुरञ्जनमहो यस्यायमस्मत्प्रभुर्विश्वं विश्वजनीनकीर्तिरववात् कृष्णो जगन्मोहनः ॥१२॥

तव सुनिकैं सुक कौ वचन सारी करिकें रोस। राधा जू के वर्णनहि करै हियैं लहि तोस ॥

तथाहि तत्रैव -

श्री राधिकायाः प्रियता सुरूपता सुशीलता नर्तनगान चातुरी।
गुणालिसम्पत् कविता च राजते जगन्मनोमोहनचित्तमोहिनी ॥१३॥

वचन सारिका को जु सुनि सो सुक परम सुजान। कहै कृष्ण है मदन कैं मोहन रूप निधान ॥

तथाहि तत्रैव—

वंशीधारी जगन्नारीचित्तहारी स शारिके। विहारी व्रजनारीभिर्जीयान्मदनमोहनः ॥१४॥

फेरि कहै सारी शुक हि करिकें रस परिहास। यह सुनि प्रभु जू कें भयौ अचिरज प्रेम हुलास ॥

तथाहि तत्रैव—

राधा संगे यदा भाति तदा मदनमोहनः। अन्यथा विश्वमोहोऽपि स्वयं मदनमोहितः ॥१५॥

सुक सारी उड़िकैं गये फिरि ता तरु की डार। देखें नृत्य मयूर कौ प्रभु कौतुक जु अपार ॥
भई शिखी के कंठ लखि कृष्णकांति सुधि जोइ। परे भूमि मधि महाप्रभु प्रेमावेशित होइ ॥
तव प्रभु जी कौं मूरछित देखि ब्राह्मण जोइ। भट्टाचारज सँग करैं प्रभु संतर्पण सोय ॥
अस्त व्यस्त श्री प्रभु जु कौं वहिर्वास लै जोय। जल सौं छिरकैं अंग करैं पवन वसन करिजोय ॥
प्रभु श्रवननि में उच्च करि कहैं कृष्ण कौ नाम। एक वेर लहि चेतना फेरि गिरे तिहि ठाम ॥
कंटक दुर्गम वन हि मधि भये अंग क्षत ताहि। भट्टाचारज अंग धरि प्रभुहि स्वस्थ किय आहि ॥
प्रभु कें कृष्णावेश करि प्रेम मगन मन जोइ। कहौ कहौ यों कहि उठि जु करैं नृत्य तव सोइ ॥
भट्टाचारज विप्र सो गावैं कृष्णकौ नाम। नाचत नाचत पथ चले जाहि गौर रसधाम ॥
प्रभु कौ प्रेमावेस लखि अति विस्मित द्विज सोय। भट्टाचार्य विचार किय प्रभु इच्छाहित जोय ॥
जैसौ प्रेमावेस मन लीलाचल हो जोय। वृंदावन पथ जात में भयौ सो गुणो सोय ॥
सहस गुणो प्रेमा वढ़्यौ देखें मथुरा ताहि। लाख गुणो प्रेमा भयौ जव वन भ्रमैं जु आहि ॥
रहैं मगन रैंन दिन कृष्ण प्रेम रसरास। द्वै वो अरु भीक्षादिकनि निर्वाहैं अभ्यास ॥
जन्लौं द्वादस बन भ्रमैं प्रेमा इहीं जु भाय। लिख्यौ जु ताकौ एक ठां सव ठां कह्यौ न जाय ॥
वृन्दावन मधि भौ जितौ प्रभु कैं प्रेम विकार। कोटि ग्रंथ करि शेषजो लिखैं जु तिहिं विस्तार ॥
लिखिवे कौं नाहिन सकैं तऊ एक कन ताहि। करिवेकौं उद्देस तिहि दिग दरसन किय आहि ॥

वृन्दावन में मयूरालिंगनकारी राधाभावाविष्ट श्री गौरांग

प्रभु लीला के उदधिनें दीनौ जगत बहाय। जाकी जितनी शक्ति सो तरें उदधि में जाय ॥
रूप सनातन और रघुनाथ चरण जिहि आस। चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल श्याम पद आस। सो प्रभु चरितामृत लिखैं व्रजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखण्डे व्रजभाषायां वृन्दावन गमनं नाम सप्तदशपरिच्छेदः ॥

अष्टादस परिच्छेदः

वृन्दावने स्थिरचरान्नंदयन्स्वावलोकनैः। आत्मानञ्च तदालोकाद्गौरांगः परितोऽभ्रमन् ॥१॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद। जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
इही भांति श्री महाप्रभु नाचत नाचत भाय। भये अचानक वाह्य तव आरिठ ग्राम हि आय ॥
राधाकुंड अरिष्ट की पूछी लोकन वात। कोऊ कहे न जानई सोउ संग द्विज जात ॥
तीरथ लोपहि जानि प्रभु सव के ज्ञाता आहि। दोय धान के खेत में कछु जल न्हाए ताहि ॥
लखि कें ग्रामी जननि के मन अचिरज अधिकाय। स्तवन जु राधाकुंडकौ करैंसु प्रभु भरि भाय ॥
सब गोपिन तें कृष्ण की राधा प्रेयसि आहि। तैसैं राधाकुंड प्रिय सरसी प्रेयसि ताहि ॥

तथाहि पाद्मे—

यथा राधा प्रिया विष्णो स्तस्याः कुण्डं प्रियं तथा। सर्व गोपीषु सैवैका विष्णोरत्यन्त वल्लभा ॥२॥

जिहीं कुंड श्री कृष्ण नित श्री राधा के संग। जल क्रीडा जल में करैं तट मधि रास जु रंग ॥
तिहीं कुंड मधि जो करैं एकहि वार स्नान्। राधा के सम प्रेम तिहिं देहिं कृष्ण जू दान ॥
जैसी राधा मधुरिमा कुंड माधुरी सोय। महिमा राधा की सु तिमि महिमा कुंडहि जोय ॥

तथाहि—

श्रीराधेव हरेस्तदीय सरसी प्रेष्ठाद्भुतैः स्वैर्गुणैर्यस्यां श्रीयुत माधवेन्दुमनिशं प्रीत्या तया क्रीड़ति।
प्रेमास्मिन् वत राधिकेव लभते यस्यां सकृत्स्नानकृत् तस्या वै महिमा तथा मधुरिमा केनास्तु वर्ण्यः क्षितौ ॥

इहीं भांति नुति करें प्रभु प्रेम मगन हिय आहि। कुंड तीर नृत्यहि करैं लीला सुधि करि ताहि ॥
लै जु मृत्तिका कुंड की कियो तिलक भरि रंग। भट्टाचारज द्वार कछु लई मृत्तिका संग ॥
तव चलिकें आए प्रभू कुसुमोखर ढिंग जोइ। तहाँ देखि गोवर्द्धनहिं भए जु विह्वल सोइ ॥
गोवर्धन कों देखि कें करी दंडवत ताहि। एक सिला आलिंग कें महामत्त भौ आहि ॥
प्रेम मत्त आये जु चलि श्री गोवर्धन ग्राम। श्री हरिदेवहि देखि के करैं तिन्हें परणाम ॥
हैजु मधुपुरी पद्म के पच्छिम दल जिहि वास। नारायण हरिदेव जू है सो आदि प्रकाश ॥
प्रेम मत्त ह्वै कें जु प्रभु नाचें आगें ताहि। आए देखन लोग सव सुनि के अचिरज आहि ॥

प्रभु कौ प्रेम स्वरूप लखि जन अचिरज विस्तार। किय हरिदेव जु पूजकनि प्रभु कौ बहु सतकार॥
भट्टाचारज पाक किय ब्रह्मकुंड पर जाय। ब्रह्म कुंड प्रभु न्हाय कें भिक्षा कीनी आय॥
मंदिर श्री हरिदेव के रहे जु ताही रेंन। मन में करैं विचार प्रभु निशि में रस के ऐंन॥
हम गोवर्धन पैं कभू चढ़ि हैं नाहीं जोय। दरसन श्री गोपाल कौ कैसें पैहैं सोय॥
इतनौ मन में सुमिरि प्रभु रहे मौंन धरि सोय। जानि गुपाल तवै कछू जुगति उठाई सोय॥

तथाहि—

अनारुरुक्षवे शैलं स्वस्मै भक्ताभिमानिने। अवरुह्य गिरेः कृष्णो गौराय समदर्शयत् ॥४॥

गोधन नाम जु ग्राम में श्री गोपाल निवास। जन रजपूतन कौ जु हो तिहीं ग्राम में वास॥
इक जन ग्रामी जननि सौं कह्यौ आय तिहि रेंन। मारन हित तव ग्राम के तुरक सजी है सैन॥
आज भजौ निशि ग्राम में रहौ न इक जन कोइ। ठाकुर लै भाजौ जवन काल म्लेच्छ है सोइ॥
सुनिकें जन सब ग्राम के चिंतित भौ अधिकाय। रहे प्रथम गोपाल लै गाँठोली मधि आय॥
दुरि कें सेवन विप्र घर श्री गुपाल कौ होय। ऊजर ग्राम भयौ गए भजि के सवजन सोय॥
वार वार यों म्लेच्छभय करि कें भजें गुपाल। कुंज रहे कै ग्राम अरु तजि मंदिर करि ख्याल॥
प्रात भए श्री महाप्रभु मानसगंगा न्हाय। गोवर्धन परिदक्षिण हि गमन कियौ भरिमाय॥
गोवर्धन कौ देखि प्रभु प्रेमावेशित होय। आनंद में नाचत चले श्लोक पढत यह जोय॥

तथाहि—

हन्तायमद्रिरवला हरिदासवर्यो यद्रामकृष्णचरणस्पर्शप्रमोदः।
मानं तनोति सहगोगणयोस्तयोर्यत् पानीयसूयवसकन्दरकन्दमूलैः ॥५॥

तीरथ गोविद कुंड मुख प्रभु जु नहाए सोय। ग्राँठोली गोपाल हैं सुनी तहाँई जोय॥
किय दरसन गोपाल कौं तिही गाम में जाइ। करें नृत्य औ कीरतन महा भक्त भरि भाय॥
सुन्दरता गोपाल की लखि प्रभु को आवेश। नाचत याही पद्य पढ़ि भयौ तहां दिन शेष॥

तथाहि—

वामस्तामरसाक्षस्य भुजदण्डः स पातु वः। क्रीडाकन्दुकतां येन नीतो गोवर्द्धनो गिरिः ॥६॥

इहीं भांति दिन तीन लौं देखे प्रभु गोपाल। चौथे दिन गोपाल जू मंदिर चले कृपाल॥
मंदिर चले गुपाल सँग नृत्य करत प्रभु जोइ। आनँद कोलाहल भयौ वोलें हरि हरि लोय॥
मंदिर गए गुपाल जू तरे रहे प्रभु ताहि। प्रभु इच्छा ही सव पूर्ण करी गुपाल जु आहि॥
इहि विधि श्री गोपालकौ करुणानिधि जु सुभाव। जब ही जाही भक्तकौ होय दरस हित भाव॥
होय लालसा दरस की चढ़ें न गिरिवर सोइ। तव गुपाल काहू छलहि आपुन उतरे जोइ॥
कवहूं रहैं निकुंज में कवहू औरहि ग्राम। देखें तिनकों आयकें सोइ जन तिहि ठाम॥
गोवर्धन पर ना चढ़ें रूप सनातन दोय। दीनौ है दरसन तिन्हें इहीं भांति तिहि सोइ॥

वृद्ध समें श्री रूप जू जाइ सकें नहिं दूर । गिरिधर छल करि दरस हित भई लालसा भूरि ॥
आए करिकें मेच्छ भय मथुरा नगर गुपाल । विठलेश्वर के गेह इक मास रहे जु कृपाल ॥
रूप गुसांई तबै सब निज गण लै कें संग । मथुरा रहि दरसन कियौ एक मास भरि रंग ॥

कवित्त

संग श्री गुपाल भट्ट और रघुनाथ दास भट्ट रघुनाथ लोकनाथ रस रास हैं ।
भूगर्भ गुसांई और श्री जुत गुसांई जीव श्री यादवाचार्य स्वामी गोविंद प्रकाश हैं ।
ऊधौदास और माधोदास श्री गुपाल दास और दास नारायण कीरत उदास हैं ।
गोविंद भगत और वाणी कृष्ण दास पुंडरीकाक्ष ईशान और लघु हरि दास हैं ॥

भक्त मुख्य एई जु सब लैकें अपने संग । दरसन श्री गोपाल कौ कियो हिये बहु रंग ॥
निज स्थान गोपाल जू गए जु रहि इक मास । आए रूप गुसाई जू वृन्दावन रस रास ॥
कियौ गुपाल कृपा जु कौ वरणन पाय प्रसंग । तबै महाप्रभु काम वन गए भरे हिय रंग ॥
गमन रीति श्री गौर की लिखी जु पहिलें जोय । तिहीं भांति वृन्दाविपिन जब लौं देख्यौ सोय ॥
देखि तहां लीला थली गए जु प्रभु नँद गाम । भए जु विह्वल प्रेम करि लखि नंदीस्वर धाम ॥
पावन आदि जु कुंड सब तिन मधि प्रभु जू न्हाय । लोकनि कौं पूछौ तबै परवत ऊपर जाय ॥
कोऊ दैवत मूर्ति है परवत ऊपर जोय । लोक कहें मूरति जु है मध्य कंदरा सोय ॥
दुहूं ओर माता पिता पुष्ट कलेवर ताहि । वीच एक वालक परम ललित त्रिभंगी आहि ॥
सुनिकें मन में महाप्रभु आनँद पायौ जोय । तिन मूरति के दरस हित गुफा उघारी सोय ॥
व्रज नृप व्रज रानी जु के पद वंदन प्रभु कीय । हरिकौ सब अँग परस किय प्रेमावेशित होय ॥
सब दिन प्रेमावेश मधि नृत्य गीत किय जोय । चलि जु तहां ते खादिर वन आए प्रभु जू सोय ॥
गए सेस सायी तबै लखि लखि लीला ठौर । लक्ष्मी जू कौं देखि यह पद्य पढ़े प्रभु गौर ॥

तथाहि—

यत्ते सुजात चरणाम्बुरुहं स्तनेषु भीताः शनैः प्रिय दधीमहि कर्कशेसु ।
तेनाटवीमटसि तद् व्यथते न किंस्वित् कूर्पादिभिर्भ्रमति धीर्भवदायुषां नः ॥

आए वन भांडीर लखि खेलातीरथ सोय । गए भद्रवन फेरि प्रभु जमुना पार जु होय ॥
श्री वन देखि गए प्रभू फेरि लोहवन जोइ । जाय महावन लख्यौ हरि जन्म स्थान जु सोइ ॥
जमला अर्जुन भंग सुख लखि लीलाथल ताहि । प्रभुकौ प्रेमावेश करि भयौ विकल मन आहि ॥
आए गोकुल देखि पुनि मथुरा नगरी आहि । हरि कौ जन्म स्थान लखि रहे गेह द्विज ताहि ॥

सोरठा

देखि जननि समुदाय, तजिकें मथुरा महाप्रभु । रहे इकौसे आय, तबै तीर्थ अक्रूर मधि ॥

दोहा

वृन्दावर्न के दरस हित आए प्रभु दिन आन। कालियदह प्रस्कंदनहि कीनौ आप जु स्नान ॥
द्वादस आदित तीर्थ ते केशी तीरथ आय। रासस्थली निहारि प्रभु भये मूरछित भाय ॥
फेरि धरनि मधि लोटई प्रभू चेतना पाय। नाचें हँसें जु रोवई परे उच्चस्वर गाय ॥
सो दिन तहां वितीत किय याही रंग प्रवाह। आय सांझ अक्रूर मधि किय भिक्षा निर्बाह ॥
प्रात भए वृन्दाविपिन चीर घाट मधि न्हाय। श्री प्रभु जू विश्राम किय अवंरी तरै जु आय ॥
हरि लीला के समय कौ वृक्ष पुरातन सोय। तिहि तरु बंध सु चौतरी परम चीकनी जोय ॥
चले निकट जमुना सुरभि शीतल मंद समीर। वृन्दावन शोभा लखी मधि यमुना के नीर ॥
करैं बैठ अंमली तरैं नाम कीरतन भाय। भोजन अक्रूरहि करैं करि मध्यान्हहि आय ॥
आवें प्रभु के दरस हित अक्रूरहि जन वृन्द। लोक भीर करि कीरतन सकै न करि स्वछंद ॥
प्रभु वृन्दावन आयकें बैठि इकौसे सोय। करैं तहां मध्यान्ह लौं नाम कीरतन सोय ॥
पहर तीसरे दरस प्रभु पावें लोक अशेष। करें कृष्ण संकीरतन करैं सवनि उपदेश ॥
आयौ वैष्णव तिहि समय कृष्ण दास तिहि नाम। गृही जात रजपूत तिहिं जमुना पार जु गाम ॥
काली दह को जात सो केशी तीरथ न्हाय। देखे प्रभु अंवली तरहिं तिहिं जु अचानक आय ॥
प्रभु कौ रूप रु प्रेम लखि चमत्कार भौ ताहि। नमस्कार प्रभु कौं करें होय दंडवत आहि ॥
कहैं जु प्रभु तुम कौन हो कहां तुम्हारौ गेह। कृष्णदास तव कहै हौं विषयी पामर देह ॥
राजपूत हौं जाति कौ मेरौ पार निवास। मेरे हिय इच्छा यहै हौं हूँ बैष्णव दास ॥
आलिंगन करिकें जु तिहि कृपा करी प्रभु जोय। प्रेममत्त भौ नाचई हरि हरि कहि के सोय ॥
प्रभु के संग मध्यान्ह में आयो सो अक्रूर। प्रभु कौ पातर कौ लह्यौ तिन प्रसाद सुख मूर ॥
आवै जल कौ पात्रलै नित प्रति प्रभु सँग जोय। प्रभु सँग रहे जु गेह औ नारी सुत तजि सोय ॥
प्रगठ भये श्री कृष्ण जू वृन्दावन फिरि आय। जहां तहां सब लोग यों कहन लगे भरि चाय ॥
मथुरा के जन एक दिन भये प्रात ही सोइ। वृन्दावन तें आवई करत कुलाहल जोय ॥
प्रभु कौं लखि लोकन करी चरन वंदना जोइ। कहैं जु प्रभु तुम कहां ते कियौ आगमन सोइ ॥
कृष्ण प्रगटभौ जन कहैं काली दह जल जोय। अहि फन मनिगर्न रंग धरि नृत्य करतहै सोइ ॥
साक्षात हि देखे सवनि नहिं यामें संदेह। सुनि हंसिकैं प्रभु जू कहैं सबै सांच है एह ॥
इही भांति निशि तीन लौ लोक गमन भौ जोय। कहैं आय सब कृष्ण कौ पायौ दरसन सोय ॥
देखे कृष्ण कहें सबे प्रभु आये जन आहि। सत्य कहायौं सरस्वती यहै बचन मुख ताहि ॥
सांच कृष्ण दरसन महाप्रभु जू देखे जोय। निज आज्ञा नहिं सत्य तजि असति सत्य भ्रम सोय॥
भट्टाचारज तब कहें प्रभु चरनन मधि आय। देहु आज्ञा कृष्ण कौ करे जु दरसन जाइ ॥
मारि तमाँचे की कहें प्रभु तासों रिस भोइ। वचन मूरखन के भयौ मूरख पंडित होय ॥

कृष्ण कौन कौं देहि इहि अब दरसन कलि काल । मूरख कौ ताहल करें परि निज भ्रम के जाल ॥
बौरो जिनि हो रहु यहाँ बैठि गेह निज आय । दरसन कीजौ कृष्ण कौ काल्हि निशाकौं जाय ॥
प्रात समें जो शिष्ट जन आए प्रभुठां सोय । कृष्ण देखि आए तिन्हैं प्रभु जू पूछौ जोय ॥
लोग कहें धीवर जु निशि चढि कें नाव मझार । कालिय दह में मीन वे मारें दीवट वारि ॥
नौका में कालिय जु भ्रम दीपन रतन जु जान । मूढ़ लोक धीवर विषै करें कृष्ण अनुमान ॥
यहू सांच श्री कृष्ण जू आये या वन माँहि । लोकनि देख्यौ कृष्ण कौं यहू जु मिथ्या नाहिं ॥
आए निरखें हरि कहूँ कहूँ जु भ्रम अभिमान । होय ठूंठ औ पुरुष मधि ज्यों विपरीत जु ज्ञान ॥
कहें जु प्रभु पाए कहौ कृष्ण जु दरसन जोय । लोग कहें तुम हँस हो चर नारायन सोय ॥
वृन्दावन में भए तुम आप कृष्ण अवतार । भयौ जु तुम कौं देखिकें लोकनि को निस्तार ॥
विष्णु विष्णु प्रभु जू कहैं इमि कहिए नहिं जोय । जीवाधम में ज्ञान हरि कभू न करिए सोय ॥
संन्यासी चित्कण जु सौं जीव किरण कन तूल । षडभग पूरण कृष्ण हैं रवि प्रकाश के मूल ॥
जीव ईश जे तत्व विधि कबहूं नहीं समान । ज्वलित अगनिजु पतंग कन जैसें हीयें जान ॥
तथाहि—

ल्हादिन्या सम्विदाश्लिष्टः सच्चिदानन्द ईश्वरः । स्वाविद्यासंवृतो जीवः संक्लेशनिकराकरः ॥

जोई मूढ कहे जु है जीव ईश सम आहि । सोई पाखंडी जु है देय दंड जम ताहि ॥

तथाहि—यस्तुनारायणं देवं ब्रह्मरुद्रादिदैवतैः । समत्वेनैव वीक्षेत सपापण्डी भवेद्ध्रुवम् ॥

लोग कहें तुममें नहै कभूं जीव मति जोय । सदृश कृष्ण की हौ जु तुम आकृति प्रकृति जु सोय ॥
आकृति करि देखें तुम्हें व्रजपति नदंन जोय । पीत वसन करि वपुछटा ढकि राखी है सोय ॥
ज्यों कस्तूरी वसन सों बांधे दुरे न सोय । यों ईश्वर जु स्वभाव तुम ढकौ जाय नहिं जोय ॥
है जु अलौकिक प्रकृति तुम बुद्धि अगोचर जोय । तुम्हें देखि जग मत्त भौ कृष्ण प्रेम करि सोय ॥
नारी वालक वृद्ध औ कहा जवन चांडाल । एक बार जोई लहै दरसन तुव जु रसाल ॥
कृष्ण नाम लै नाचई सो उन्मत्त जु होय । ह्वै आचारज जगत कौ करै कृतारथ सोय ॥
दरसन की बातें रहें सुनै जु तुम्हरौ नाम । कहूं कृष्ण रस मत्त ह्वै तारे तीनौ धाम ॥
सुनि कें तुम्हरे नाम कौं सुपच सु पावन होय । है जु अलौकिक शक्ति तव कही जाय नहिं सोय ॥
तथाहि—

यन्नामधेयश्रवणानुकीर्तनात् यत्प्रह्वणात् यद्स्मरणादपि क्वचित् ।
श्वादोऽपि सद्यः सवनाय कल्पते-कुतः पुनस्ते भगवन्नु दर्शनात् ॥

तथाहि—

नमेभक्त श्चतुर्वेदी मद्भक्तःस्वपचः प्रियः। तस्मैदेयं ततोग्राह्यं सच पूज्यो यथाह्यहम् ॥

है लच्छन जु तटस्थ तव यहू जु महिमा जोय । करि स्वरूप लछन तव व्रजपति नदंन सोय ॥

तिन सब लोकनि पर कियौ प्रभु प्रसाद अभिराम। प्रेम नाम करि मत्त ह्वै लोग गए निज धाम ॥
इहीं भांति अक्रूर मधि रहे कितिक दिन सोय। कृष्ण नाम औ प्रेम दे निस्तारे सब लोय ॥
पुरी गुसांई कौ जु सिष वहै विप्र जो आहि। न्यौतौ करवायौ जु तिहि मथुरा घर घर आहि ॥
जितने मथुरा पुरी के द्विजवर सज्जन सोइ। आवें भट्टाचार्य ढिग मिलि दस बीसक सोइ ॥
एक द्यौस मधि बीस दस न्यौंते आवैं ताहि। भट्टाचारज एक ही न्यौतौ मानैं आहि ॥
अवसर पावत ताहिं नें न्यौते करिवें लोय। वहै विप्र साधे जु नित लोक निमत्रंन जोय ॥
कान्यकुब्ज वैदिक जु द्विज दाक्षिणात्य पुनि जोइ। आय करें करि दीनता गौर निमत्रंन सोय ॥
प्रात समें अक्रूर मधि करें पाक ते आय। सालग्रामदि अर्पि प्रभु भिक्षा देहि बनाय ॥
एक दिना अक्रूर के घाटहि पर सुख सार। बैठि महाप्रभु जू करें ऐसे कछू विचार ॥
देख्यौ श्री बैकुंठ कौं यही घाट अक्रूर। दरस लह्यौ गोलोक कौ व्रज वासी रस पूर ॥
परैं कूदि इतनौ जु कहि जल पर प्रेम अधीर। कितिक बार लौं महाप्रभु रहे बूड़ि मधि नीर ॥
कृष्णदास लखि रोयकें करी पुकार सुनाय। प्रभु जु उठाए वेगहीं भट्टाचारज आय ॥
तवतौ भट्टाचार्य जू लैकरि द्विजबर सोय। करें जुक्ति मिलि कें कछू बैठि इकौसे जोय ॥
हुतौ आजतौ मैं यहां प्रभुहि उठायौ आहि। वृन्दावन में जो गिरें कौन उठावे ताहि ॥
न्योंते को जंजाल नित लोकनि कें समुदाय। प्रभु आवेस रहे सदा भलौ न सो दरसाय ॥
वृन्दावन तें काढ़िए जब प्रभु जू कों जोय। तब हीं मंगल होय गौ है अस जुक्ति जु कोय ॥
विप्र कहैं जु प्रयाग कौं चलिए प्रभु लै सोय। जैयैं गंगा तीर पथ तबैं महा सुख होय ॥
पहिले गंगा न्हाइए सोरों तीरथ जाय। प्रभु कौं लै करिए गमन ताही पथ ह्वै धाय ॥
माघ मास आय जु लग्यौ अबही जैये जोय। स्नान जु मकर प्रयाग कौ पैयै वासर कोय ॥
अपने कछु दुख कौं कहैं प्रथम निवेदन ताहि। पहुचें मकर प्रयाग कौं करिए सूचना ताहि ॥
गंगा तट पथ कौ जु सुख दीजै तिन्हें जनाय। होड़ा होडी जन करैं न्योते हित भरि भाय ॥
प्रात समैं आवें जु जन तुम कौं पावैं नाहि। तुम विन सबही लोग ये मेरे प्राननि खाहि ॥
जो जैयें गंगा पथहि तौ सुख होय निदान। अब चलिए तौ पाइयै मकर प्रयाग स्नान ॥
भयौ चित्त उद्विग्न सो हमपै सह्यौ न जाय। आज्ञा प्रभु की होय जो सो सिर लेंहि चढ़ाय ॥
नहि प्रभु मन तजिवें जदपि वृन्दावन सुख ऐंन। करिबै जन इच्छा तऊ कहैं सु मधुरे बैन ॥
दरसायौ वृन्दावन जु तुम हम कौं ह्यां लाइ। इहिं रिन कौ हमपै कछू पलटौ कियौ न जाइ ॥
जो इच्छा तुमरे जु हिय हम करिहैं अब सोय। जहां हमें लै जाहु हम जैहैं ह्वाई जोय ॥
प्रात समैं श्री प्रभु कियौ प्रात स्नान जु नेम। वृन्दावन तजि हैं सुमिरि भौ आवेस जु प्रेम ॥
प्रभु कौ प्रेमाविष्ट मन है नहि वाह्य विचार। भट्टाचार्य कहैं चलौ जाइ महावन पार ॥
इतनौ कहिकें नाब पै बैठायौ प्रभु जोय। लैकें चले जु पार करि भट्टाचारज सोय ॥

कृष्णदास प्रेमी जु औ मथुरा कौ द्विज सोय। गंगा जैबें मार्ग के भेदी ये जन दोय ॥
चले जात इक तरु तरैं प्रभु सब कौं लै आहि। बैठे तहां जु सबनि कैं पथ कौ श्रम अब गाहि ॥
ताही तरु के निकट बहु चरें धेनु समुदाय। देखि तिन्हैं प्रभु को भयौ हुलसित मन अवगाय ॥
तहां अचानक मुरलि इक गोप बजाई आहि। प्रेमावेश महा भयौ प्रभु कौं सुनि कै ताहि ॥
होय अचेतन प्रभु गिरे धरनी पर रसरास। गिरै फेन मुख नासिका भौ अवरुद्ध जु स्वास ॥
जहाजु तब ताही समैं आयो दस असवार। उतरे जवन पठान वे घोरनि तैं तिहिं वार ॥
प्रभु कौं लखि कैं म्लेच्छ वे मन में करैं विचार। हुतौ पास या जती कें सुवरन धन जु अपार ॥
ये पांचो बटपार हैं याहि धतूरो खवाय। जती मारि डारौ जु है सब धन लियौ छिनाय ॥
बांध्यौ पांचौं जननि कौं तबै पठाननि जोय। सिर काट्यौ जु चहैं लगे सबै कांपिवें सोय ॥
राजपूत निर्भय महा कृष्णदास वह जोय। माथुर द्विज निर्भय महा वचन महा दृढ़ सोय ॥
विप्र कहैजु पठान तुम नृपहि दुहाई आहि। चलौं जाहि हम तुम निकट अधिकृत मंडल याहि ॥
हौं माथुर द्विज ए जती गुरु जु हमारे होय। पृथ्वीपति आगे सत कहैं जु हमारे लोय ॥
है जु व्याधि इहिं जती कैं कभू मूरछा होय। पैहैं अब ही चेतना ह्वै है ज्ञान सु जोय ॥
छिन इक ह्याँ बैठो सबनि राख्यौ बांधि संभार। इन्हैं पूछि कैं तुम तबै हमैं डारियो मार ॥
कहै पठान जु पछिमा तुम जु साधु जन दोय। ठग तीनौ जन गौडिया ए कांपत हैं सोय ॥
कृष्ण दास तब कहै मम घर इहि ग्रामहि जोइ। कमनेतीसत दोय ह्यां असवार जु सत दोय ॥
ऐसें सबहीं इही छिन जैहौं करौं पुकार। लूटि लैहिगे तुम सबनि और डारि हैं मार ॥
नहीं गौडिया ठग तुही है बटमार जु सोय। लूटौ पुनि मारन चहौ तीरथ वासिन जोइ ॥
सुनि तिनके मन में भयौ भय संकोच विचार। लही चेतना देह की श्री प्रभु जू तिहिंवार ॥
उठे जु हरि हरि बोलिकैं प्रभु जु करि हुंकार। नाचें ऊंचे भुजा करि प्रेमावेश अपार ॥
प्रभु जू प्रेमावेश करि करैं जबै चिंघार। लागें जवननि कें हियें जनौ सेल की धार ॥
छोड़े पांचौ जन तबे जवननि भय जुत होय। प्रभु जू देख्यौ नाहिने निज गण बंधन जोय ॥
प्रभु बैठाए गहि तबै भट्टाचारज आय। प्रभु कें बाह्य भयौ निकट लखि जवननि समुदाय ॥
आय जवन सब दूरितें पद वंदन किय ताहि। प्रभु के आगें कहै ये ठग पांचौ जन आहि ॥
तुम कौं इन पांचौं जु मिल कनक खवायौ सोय। करि कैं मतवारो तुमें लीनौ तब धन जोय ॥
कहें जु प्रभु ए ठग नहीं हैं मम संगी लोय। भिक्षुक सन्यासी नहीं कछुधन हमरें जोय ॥
मृगी रोग मेरें कभू होय अचेतन ताहि। येई पांचो दया करि करैं जु पालन आहि ॥
तिनही जवननि के जु मधि एक परमगंभीर। पहिरें कारे वसन तन लोग कहैं तिहि पीर ॥
भीजौ ताकौ हृदय श्री प्रभु कौ दरसन पाय। निराकार थापै बृहत मत निज शास्त्र उठाय ॥
तानें अद्वय वाद सो थापन कीनौ जोइ। तिहीं शास्त्र की जुक्ति करि प्रभु किय खण्डन सोइ ॥

जोई जोइ कह्यौ तिहिं प्रभु सब खंड्यौ आहि। भयौ महाजड उत्तर जु आवै नहि मुख ताहि॥
कहैं जु प्रभु तुव शास्त्र मधि निर्विशेष जो आहि। थाप्यौ है सविशेष करि खण्डन करिकें ताहि॥
अन्त तुम्हारे शास्त्र कौ कह्यौ एक प्रभु जोय। पूरण सब ऐश्वर्य्य करि स्याम कलेवर सोय॥
सतचित आनँद देह तिहिं पूरण ब्रह्म जु रूप। सर्वात्मा सर्वज्ञ नित है सर्वादि स्वरूप॥
सृष्टि स्थिति और प्रलय पुनि होइ तिहीं तें जोइ। स्थूल सूक्ष्म सब जगत कौ है जु आश्रय सोइ॥
कारण कौ कारण जु हैं श्रेष्ठ सर्व आराध्य। है भव तरिबौ जीव कें तिहीं भक्ति करि साध्य॥
तिहि सेवा विन जीव कें जाय नही संसार। तिन के पद मधि प्रीत जो है पुरुसारथ सार॥
आनँद मोक्षादिक जिते है जु एक कण जाहि। पूरण आनँद प्राप्ति पद पकंज सेवन ताहि॥
कर्म ज्ञान अरु जोग करि आगें थापन जोइ। थाप्यौ फिरि सब खण्डि कैं तिहि प्रभु सेवन सोइ॥
तुमरे सब ही पण्डितनि नहीं शास्त्र कौ ज्ञान। पूरव अरु पर विधि जु मधि है पर विधि बलवान॥
देखौ अपनें शास्त्र में तुम करिकें जु विचार। निरनें करिकैं अन्त में कहा लिखौ है सार॥
कहै जवन जौ तुम कह्यौ है जु सांच ही सोइ। लिखौ शास्त्र में है तऊ जानि सकै नहि कोइ॥
निराकार गोसांइयां लये करैं व्याख्यान। सेव्य गुसाइंयां रूप जुत नहि काहू तिहिं ज्ञान॥
हौ जु गुसैंया ईस वड तुम साक्षात ही सोइ। मोपै कृपा करौ जु तुम दीन अजोग्य हि जोइ॥
जवनशास्त्र में बहुत ही देखे करि जु विचार। वस्तु साध्य साधन जु कौ सकौं न करि निरधार॥
कहै तुम्है लखि जीभ मम कृष्ण नाम रसखान। हौं सब में ज्ञानी वडौ गयौ यहै अभिमान॥
मो सौं साधन साध्य तुम कहौ कृपा करि जोइ। प्रभु जू के चरननि गिरयौ इतनौ कहिकैं सोइ॥
कहैं जु प्रभु उठि तें लियौ कृष्ण नाम करि चाय। कोटि जन्म कौ पाप गौ भयौ पवित्र बनाय॥
कृष्ण कृष्ण कहु कृष्ण कहु कियौ तिन्है उपदेस। सब ही कृष्ण कहैं सवनि भयौ जु प्रेम विशेष॥
रामदास कहिकें प्रभू किय ताकौ अभिधान। एक पठान जु आय तिहिं बिजुरी खान सुनाम॥
राजा कौ जु कुमार सो अलप वयस है जोहि। हैं पठान पीरादि दै सब ही सेवक ताहि॥
परयौ जु प्रभु के चरण मधि कृष्ण कृष्ण कहि सोइ। श्रीप्रभु जू श्रीचरण दिय तिहि माथे पर सोइ॥
करि जु कृपा तिन सबनि पर चले गौर अभिराम। वे पठान सबही भये बैरागी तजि धाम॥
तिहि पठान वैष्णव जु कहि भई ख्याति जग जोय। कहैं जु सबठां गाय कैं प्रभु की कीरति सोय॥
सोई विजुरी खान हुव महा भागवत आहि। सब तीरथ कीने महंत सब ठां भयौ जु ताहि॥
ऐसैं लीला करत हैं प्रभु श्री हरि चैतन्य। कीनें पछिम आय कैं जवनादिक सब धन्य॥
स्नान कियौ गंगाहि मधि प्रभु जु सोरों आय। गंगा तट पथ ह्वै कियौ गमन प्रयागहि धाय॥
कृष्णदास अरु तिहि द्विज हि दइ विदा प्रभु जोइ। जोरि हाथ दोऊ जनें कहन लगे यों सोय॥
हम दोऊ जु प्रयाग लौं जैहैं तुमरे संग। तुम पद संग सुख जु यहै कहां पाइयै रंग॥
म्लेछ देस कोऊ कहूं करै कभूँ उतपात। भट्टाचारज सरल अति कहि नहि जानें बात॥

सुनि कें श्री प्रभु जू कछू लागे हसिवे जोइ। आये चलि श्री गौर कें संग सोय जन दोय ॥
जिन हीं जिन हीं जन लह्यौ प्रभु कौ दरसन जोइ। प्रेम भरे नाचैं करैं कृष्ण कीरतन सोइ ॥
तिन के सँग करि औंर अरु आन संग करि ताहि। भये वैष्णव इंही विधि देस ग्राम सब आहि ॥
ज्यौं प्रभु दच्छिण जात किय शक्ति प्रकासजु भाय। इहि विधि पछिम देससब प्रेमहि दिये बहाय ॥
इंहि भांति आये जु चलि प्रभु प्रयाग के तीर। मकर स्नान कियौ तहां दस दिन गंगातीर ॥
वृंदावन कौ गमन जो प्रभु कौ चरित अनंत। सहस वदन हूं जा सकौं पावैं नाहिन अंत ॥
क्षुद्र जीव ह्वै कैं कहा हौं कहि सकौं जु ताहि। करिकें दिग दरसन कछू कह्यौ सूत्र करि आहि ॥
लीला प्रभु हि अलौकिकी लोक रीति नहि जोइ। भाग्य हीन कें सुनैं हूं तिहिं प्रतीत नहि होय ॥
आदि अंत लौं गौर कौ चरित अलौकिक जान। श्रद्धा करिकें सुनौ जन याहि सत्य करि मान ॥
जोई तर्क करै इहां मूरख नृप है सोइ। अपनें शिर मधि आप हीं डारैं वज्र हि जोय ॥
चरित सिरीचैतन्य कौ अमृत सिंधु यह आहि। जगत मगन आनंद निधि करें एक कन जाहि ॥
श्री जु रूप रघुनाथ के चरण कमल जिहिं आस। चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस। सोप्रभु चरितामृत लिखैं व्रजभाषाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखण्डे श्रीवृन्दावनदर्शनं नाम अष्टादस परिच्छेदः

उनविंशपरिच्छेदः

वृन्दावनीयां रसकेलिवार्त्तां कालेन लुप्तान्निजशक्तिमुत्कः।
संचार्य्य रूपे व्यतनोत्पुनः सः प्रभु र्विधौ प्रागिव लोकसृष्टिं ॥

जय जय श्री चैतन्य जय जय श्रीनित्यानंद। जय अद्वैत हिमांशु जय प्रभु भक्तनि के वृंद ॥
रामकेलि ग्रामहि जु मधि रूप सनातन दोय। श्रीप्रभुकौं मिलिकें गये भवन आपन सोय ॥
विषय त्याग कौ जतन किय दोऊ भाइन जोय। दै बहुधन द्वै द्विजन कौं कीनौ वरन जु सोय ॥

कवित्त

कराये कृष्णमन्त्र के पुरश्चरन विवि जु तिन्हौं ताही मन्त्र कौ पुरश्चरन कर्‌यो है।
इहै अभिलाष वेगि प्रभु पद प्राप्ति होय देख्यौं गौरचंद रूप सोई हियें अर्‌यौ है।
रूप श्री गुसांई तव कछु मिस करि आये निजगेह लैंकैं धन एक नौका भर्‌यौ है।
ताके द्वै विभाग किये दिये द्विज भक्तनि कौं दियो घर एक राज दंड हेत धर्‌यो है ॥

दोहा

तिहि धन कौं तव रूप जू चौथो वांट जु सोय। भले भले विप्रन भवन धरी धरोहर जोय ॥

कवित्त

मुद्रा औ सहस्र दस सनातन के खरच हेत गौडदेस राखी करिकें विचार है।
गुसांई श्री रूप सुनी लीलाचल गये प्रभु वनपथ ह्वै कैं जैहैं व्रज रस सार है।
सुनी द्विज दोय तहां भेजे तव वन कौं पधारें प्रभु हमैं तव दीजियै संभार है।
सुनिकैं उचित जोई करि हैं व्योहार सोई तौं लौं श्री सनातन हूं ऐहैं निरधार है॥

इहां श्री सनातन जू मन में विचारें यहै बंधन हमारौ करै राजा नेह अति है।
कीजिये विचार सोई जामें याकें क्रोध होय तव तौ स्वतंत्र ह्वै कैं करैं निज गति है।
करि व्यवसाय यहै वैठे घर आय मिस रोग कौ बनाय छाड़ि राजद्वार कृति है।
कवहूं न नृप द्वार जाइं और काज करें आप घर वैठे रहै हियें कृष्ण रति है॥

वीस तीस पण्डित लै शास्त्र कौ विचार करैं धरैं हियें सोई कह्यौ श्री शुक विचार है।
और राजा एक जन संग आय कियौ तहाँ औचक प्रवेस इन सभा के मझार है।
देखि नृप संभ्रम सौं उठे श्रीगुसांई दियौ आसन पै वैठो वोल्यो नीति अनुसार है।
भेजो हम वैद्य तुम पास तिन कही हमैं रोग कौ न लेस कीनौ मिस निरधार है॥

जितौ राजकाज सव हाथ हौ तिहारौ तुम ताहि छाड़ि वैठि रहौ सो तौ नास भयौ है।
कहा है तिहारे मन ताहि क्यौंन कहौ वेगि पूछी जव राजा तिन्हौं ऐसैं कहि दयौ है।
अव तौ तिहारौ नेकु हम सौं न होय काज और सौं कराय लेहु सुनि क्रोध छयौ है।
कोप नृप फेरि कहै तेरो वड़ो भाई तिन देस धन नास कियौ चोर कर्म लियौ है॥

इहां तौ हमारौ तुम राजकाज खोयौ सव उहां बड़े भाई कियौ देस सब नास है।
बोले श्रीसनातन जू ईश्वर स्वतन्त्र तुम जाकौ अपराध जैसो देहु फल तास है।
यह सुनि क्रोध छयौ राजा निज गेह गयौ जानि भजि जैहै वांध्यौ राखे जन पास है।
मारण उडीसा देस जव चढ़यौ तव कह्यौ इन्हैं संग लैकैं चलैं तोपै सुख रास है॥

इन्हौ तव कही दुख देन देवतान चले तुम तौ तुम्हारे संग शक्ति न हमारी है।
तिन्हौ वांधि राजा चल्यौ इहां लीलाचलतें जु महाप्रभु ब्रजके सु जैवे की विचारी है।
तव द्विज दोय वेई भेजे हैं श्रीरूप जेई आय तिन्हौं कही वात वहै सुख कारी है।
सुनत ही पत्र इन्हौ लिख्यौ श्री सनातन कौं वृन्दावन चले प्रभु भयौ चैन भारी है॥

चलैं हम दोनौं भाई तिन के मिलन हेत ऐहो तुम जैसें तैसें आप कौं छुटाय कैं।
मुद्रा उहां अयुत मुदी धरी तिन्है दैकैं ताहि जा ता भांति छूटि ऐहो वृन्दावन धाय कैं।
ऐसैं लिखि पत्र आप तीर्थराज आये श्रीवल्लभ हैं अनुज तिन्हैं संग लै सहाय कैं।
तहां सुनी महाप्रभु आये इहां हर्ष पाय कहैं धाय जाय देखें पद सीस नायकैं॥

प्रभु चलि आये हैं तबैं माधव दरसन काज। आवैं प्रभु के मिलन हित लाखन लाख समाज ॥
रोवैं कोऊ हँसैं पुनि नाचैं गावैं कोय। कृष्ण कृष्ण कोऊ जु कहि लोटैं धरणी जोय ॥
गंगा जमुना नहि सकी देस प्रयाग बुडाय। कृष्ण प्रेम धाराहि मधि प्रभु सब दिये बहाय ॥
दोऊ भाई भीर लखि रहे इकौसे होय। प्रभु के प्रेमावेस भौं माधव दरसन जोय ॥
नाचैं प्रेमावेस करि प्रभु हरि धुनि अधिकाय। हरी हरी बोलौ कहैं उचैं बांह उठाय ॥
प्रभु महिमा लखि लोककैं चमत्कार अधिकाय। प्रभु लीलाजु प्रयाग मधि वरनन करीन जाय ॥
दाक्षिणात्य इक विप्र सँग है प्रभु परचैं जोय। प्रभुहि ले गयौ न्योंतिकैं अपने घर द्विज सोय ॥
बैठे द्विज घर आय कैं प्रभु जु इको से होय। आय रूप वल्लभ तहां प्रभु कों मिले जु दोय ॥
दोऊ दसननि बीच धरि पुंज तृणनि के दोइ। प्रभु जू कौं लखि दूरतें परे दंड़वत होइ ॥

कभूं भूमि गिरें कभूं उठें फेरि धीर धरि श्लोक नाना दीनता के पढ़ैं वार वार हैं।
देखि प्रभु दयासिंधु हियैं बडौ चैंन पाय बोले मृदु बैंन नैंन भीजे जलधार हैं।
उठौ उठौ रूप तुम आये भली भई सकैं कहि कौंन कृपा कृष्ण अति ही उदार हैं।
विषै कूप में तें काढ़े तुम दोऊ जन बांह गहि लाये प्रभु हियें ये तौ दवे भार हैं ॥

पाछें कछू कृष्ण कथा करी मिलि दोऊनि सौं ता में महाप्रभु जू के प्रेमावेस भयौ है।
ताही में कृपा कें आप पाद पद्म सीस धर्यौ देखि प्रभु दया दोऊ हियें प्रेम छयौ है।
हाथ जोरी दीन ह्वै कैं लागे स्तुति करिवे कों वडे ई दयाल तुम प्रेम दान दीयौ है।
महामोह मत्त जीव ताहि प्रेम मत्त कियौ निज रस प्यायौ जातें रोग मिटि गयौ है ॥

तथाहि—

नमो महावदान्याय कृष्णप्रेमप्रदायिने। कृष्णाय कृष्णचैतन्यनाम्ने गौरत्विषे नमः ॥

तथाहि—

जोऽज्ञानं मत्तं भुवनं दयालुरुल्लाघयन्नप्यकरोत् प्रमत्तं।
स्वप्रेमसम्पत् सुधयाद्भुतेऽहं श्रीकृष्णचैतन्यममुं प्रपद्ये ॥

कृपा करि प्रभु जू बेठाये ये समीप दोऊ तब श्री सनातन की पूछी सब बात हैं।
इनौ तब कही वेतौ बंधे राजा कारागृह आप ही उधारौ तबैं ह्वै है कुशरात हैं।
कहें प्रभु छूटें वे तौ वेग ही हमारे पास ऐहैं रस भीजैं दै कें विघ्न सिस लात हैं।
सुनि यह बात दुख लेस सोऊ दूर भयौ आनंद बढ़्यौ है सोतौ गात में न मात है ॥

भट्टाचारज दुहुनि कौं कियौ निमन्त्रन जोय। प्रभु कौ सेस प्रसाद विव भाइन पायौ सोय ॥
करिवे कौं मध्यान द्विज प्रभु सौं कह्यौ जु आहि। रूप गुसांई तिहिं ठां रहैं द्यौस जो ताहि ॥
प्रभु वसिवे की ठौर जो वेंनी ऊपर सोय। किय निवास भाई दुहुनि प्रभु समीप ही जोय ॥
रहे अड़ेला ग्राम में वल्लभ भट तिहि काल। प्रभु आये सुनि ठांव तिहिं आये सो ततकाल ॥

कियौ दंडवत भट्ट किय प्रभु आलिंगन ताहि। कृष्ण कथा दुहुं जन जु मधि भई कछुक छिन आहि ॥
कृष्ण कथा कहि गौर कैं उमग्यौ प्रेम सु हीय। करि संकोच हि भट्ट कें प्रभु संवरन जु कीय ॥
अंतर उमगनि प्रेम की दुरें न क्यौं हू आहि। भयौ जु वल्लभभट्ट मन चमत्कार लखि ताहि ॥
श्री प्रभु कौं तब भट्ट ने कियौ निमन्त्रण जोय। ताहि मिलाये महाप्रभु तब ये भाई दोय ॥
दोऊ भाई भूमि पर परे दूरितें जोय। भट्ट हिं कीनें दंडवत अति हीं दीन जु होय ॥
जाहि भट्ट तिन मिलन हित भजें दूरि ये दोइ। मैं पामर अस्पृस्य हौं छुवो न मोकों जोइ ॥
अचिरज भयौ जु भट्ट कें प्रभु कें आनंद हीय। तब तौ प्रभु जू भट्ट सौं तिनकौ विवरन कीय ॥
परसों जिनि इन कौं जु ये हैं जु जाति अतिहीन। वैदिक जाज्ञिक हौ जु तुम और कुलीन प्रवीन ॥
वदन निरंतर दुहूनि कें कृष्णनाम सुनि आहि। भट्ट कहैं प्रभु की कछू हिय भंगी अवगाहि ॥
कृष्णनाम इन के वदन नृत्य करत हैं जोय। ये तो अधम न ही जु हैं सब में उत्तम सोय ॥

तथाहि—

अहो वत श्वपचतो गरीयान् यज्जिह्वाग्रे वर्त्तते नाम तुभ्यं।
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नु रार्य्याः ब्रह्मानूचु र्नाम गृणन्ति ये ते ॥४॥

सुनि कें प्रभु जू नें करी बहुत प्रसंसा ताहि। प्रेम मगन ह्वै कें लगे पठन पद्य यह आहि ॥

तथाहि—

शुचिसद्भक्तिदीप्ताग्नि दग्ध दुर्जातिकल्मषः। श्वपाकोऽपि वुधैः श्लाध्यो न वेदज्ञोऽपि नास्तिकः ॥५॥
भगवद्भक्तिहीनस्य जातिः शास्त्रं जपस्तपः। अप्राणस्यैवदेहस्य मण्डनं लोकरञ्जनम् ॥ ६ ॥

प्रभु कौ प्रेमावेस लखि भक्ति सार सु प्रभाव। रुपादिक लखि भट्ट कें अचिरत हुव हिय भाव ॥
प्रभु कौं गणयुत भट्ट तब नौका पर जु चढ़ाय। लैकें निज घर कौं चले भीचा हित करि चाय ॥
यमुना जू कौं जल निरखि स्याम चीकनौं जोय। प्रभु जू प्रेमावेस करि भये मत्त अति सोय ॥
जमुना के जल में गिरे प्रभु जू करि हुंकार। प्रभु कौं लखि सब कौ भयौ हिय भय कंप अपार ॥
जैसें तैसैं सबनि मिलि प्रभु जू लिये उठाय। नाचन लगे जु गौर हरि नौका पर भरि भाय ॥
नौका प्रभु कें भार करि डगमगाय अधिकाय। डूबन लागी नाव जल भरि आयौ छलकाय ॥
जदपि आगें भट्ट कें प्रभु धीरज मन होय। दुर्निवार उद्भट तऊ प्रेम दुरे नहीं सोय ॥
देस पात्र लखि गौर कैं जब धीरज हुव जोय। नौका घाट अडैल कैं तब ही उतरी सोय ॥
करवायौ मध्यान्ह इहि भय करि भट्टजु संग। आयौ प्रभु कौं संग लै निज घर हिय भरि रंग ॥
दियौ भट्ट आसन परम अति आनंदित होय। आपन प्रभु जू कौ कियौ पद प्रक्षालन जोय ॥
धार्यौ मस्तक जल वहै भट्ट वंस जुत आहि। वर्हिवास कौपीन तब पहिराई प्रभु ताहि ॥
करी महापूजा कुसुम धूप दीप सुवास। पाक करायौ मान्य करि भट्टाचारज पास ॥
भीचा करवाई प्रभु हि नेह जतन करि जोइ। भोजन करवायौ सु फिरि रुप अनूज तिहि सोइ ॥

भट्टाचारज रूप कौं दीयौ प्रभु अवसेस। कृष्णदास पायौ तवै सो प्रसाद तिहि सेस ॥
दे मुखवास महाप्रभु हि सयन करायौ सोय। संवाहन प्रभु चरन कौ करें भट्ट निज जोय ॥
तवहि पठायौ महाप्रभु भोजन करिवै ताहि। प्रभु समीप आये जु सो भोजन करिकैं ताहि ॥
तिंहिं समै जु उपाध्याय रघुपति आये जोय। पंण्डित बड़े तिरोहिती भक्त महासय सोय ॥
तिन्हौ आय कीनौ तवै प्रभु पद वंदन जोय। रहो कृष्ण रति कृष्ण मति कहैं जु प्रभु जू सोय ॥
भयौ उपाध्या कौ हियौ सुनि आनंदित आहि। वर्णन करौ जु कृष्ण कौ यौं प्रभु कह्यौ जु ताहि ॥
निजकृत हरिलीला जु कौ पद्य पढ्यौ यह जोय। आगें कहु प्रभु वचन सुनि कह्यौ उपाध्याय सोइ ॥

तथाहि—

श्रुतिमपरे स्मृतिमपरे भारतमपरे भजन्तु भवभीताः। अहमिह नन्दं बन्दे यस्यालिन्दे परंब्रह्म ॥६॥

तथाहि—

कं प्रति कथायितुमीशे संप्रति कोवा प्रतीतिमायातु। गोपतितनया कुंजे गोपवधूटी विटं ब्रह्म ॥७॥

सुनि प्रभु जू कें भौ महा प्रेमावेस जु हीय। तवै उपाध्या रघुपति हि नमस्कार प्रभु कीय ॥
कहैं जु प्रभु बोलो पढैं ते हरिलीला भाय। प्रभु कौं प्रेमावेस करि तन मन अति अकुलाय ॥
रघुपति कें प्रभु प्रेमलखि अचिरज भयौ अपार। नहि मनुष्य ए कृष्ण हैं कीनौं यह निरधार ॥
गौर कहैं रघुपति जु तुम उत्तम मानौ काहि। परम रूप हैं स्याम की कहैं उपाध्या ताहि ॥
स्याम भक्त के वासगृह उत्तम मानौ काहि। पुरी मधुपुरी श्रेष्ट गृह कहै उपाध्या ताहि ॥
शिशु पौगण्ड किशोर वय उत्तम मानो काहि। ध्यान जोग्य कैशोर वय कहैं उपाध्या ताहि ॥
भलौ तत्व सिखयौ हमैं कहैं महाप्रभु सोय। पढ़ैं प्रेम गद गद सुरहि पद्य इतौ कहि जोय ॥

तथाहि—

श्याममेव परं रूपं पुरी मधुपुरीवरा। वयःकैशोरकं ध्येयमाद्य एव परो रसः ॥८॥

कियौ महाप्रभु प्रेम करि आलिंगन तिहि धाइ। तेऊ नाचन लगे ह्वै प्रेम मत्त अधिकाइ ॥
भयौ जु वल्लभ भट्ट हिय लखि अचिरज अधिकाय। डारे दोऊ तनय तब प्रभु के चरणनि ल्याय ॥
आय जन सब ग्राम के दरसन के हित चाय। प्रेममत्त सब ही भये प्रभु के दरसन पाय ॥
करैं निमन्त्रण गौर कौं तहां सवै द्विज सोइ। वल्लभ भट्ट तवै तहां करैं निवारण जोइ ॥
परैं प्रेम उन्माद करि प्रभु जमुना के माहि। इन्हैं प्रयाग चलाइहैं रहन दैंहि ह्या नाहि ॥
जिहिं इच्छा जु प्रयाग में कीजौ न्यौतौ जाय। इतनौ कहि प्रभु कौं जु ले गमन कियौ प्रभु धाय ॥
प्रभु बैठाये नाव मधि गंगा पथ कों जोय। आये भट्ट प्रयाग कौं लै प्रभु जू कौं सोय ॥
दशाश्वमेध हि जाय प्रभु लोक भीर भय भार। शिक्षा करै जु रूप कौं करि जु शक्ति संचार ॥
कृष्णतत्व औ भक्ति कौ तत्व भक्तिरस जोय। प्रेम भागवत फलित जो सब ही सिखयो सोय ॥

सुन्यौ जितौ सिद्धांत प्रभु रामानँद पै जोइ। करि जू कृपा श्री रूप पर सब संचारचौ सोइ॥
प्रभु श्रीरूप हिये जु मधि करि जु शक्ति संचार। सबै तत्व के कथन मधि किये प्रवीन उदार॥
शिवानंद के पुत्र कवि कर्ण पूर हैं जोय। दुहुनि मिलन निज ग्रंथ मधि प्रगट लिख्यौ है सोय॥

तथाहि चैतन्यचन्द्रोदय नाटके—

कालेन वृन्दावनकेलिवार्त्ता लुप्तेति तां ख्यापयितुं विशिष्य।
कृपामृतेनाभिषिषेच देवस्तत्रैव रूपञ्च सनातनञ्च ॥९॥

तत्रैव श्रीरुप अनुग्रहोयथा—

यः प्रागेव प्रियगुणगणैर्गाढ़बद्धोऽपि मुक्तो, गेहाध्यासाद्रस इव परो मूर्त्त एवाप्य मूर्त्तः।
प्रेमालापैर्दृढ़तरपरिष्वंगरंगैः प्रयागे तं श्रीरूपं सममनुपमेनानुजग्राह देवः॥१०॥

तत्रैव शक्तिसंचारो यथा—

प्रियस्वरूपे दयितस्वरूपे प्रेमस्वरूपे सहजाभिरूपे।
निजानुरूपे प्रभुरेकरूपे तनान रूपे स्वविलासरूपे॥११॥

कर्णपूर कवि यौं लिख्यौ ठांव ठांव ही जोय। जैसैं रूप सनातनहि करी कृपा प्रभु सोय॥
तिन प्रभु के जु बड़े बड़े जितने भक्त जु मात्र। रूप सनातन सबनिके कृपासु गौरव पात्र॥
कोऊ देशहि जाइ तौ लखि वृंदावन आहि। पूछैं प्रभु के पारषद गण सब ही मिलि ताहि॥
कहौ तहां कैसैं रहैं रूप सनातन दोइ। कैसैं है वैराग्य औ कैसैं भोजन होय॥
अष्टयाम कैसैं करैं भजन कृष्ण कौं जोय। तबै प्रशंसा करि कहैं वात भक्तजन सोय॥

कवित्त—

वृंदावन भूमि छवि देखि भूमि गिरैं कभूं उठें फिरि प्रेममत्त सुधि न शरीर हैं।
एक एक वृक्ष तर एक दिन वास करैं देखें कब राधाकृष्ण यहै जिय पीर है।
करवा कौपीन एक बहिर्वास संग राखैं भाखें हरिनाम सदा बहै नैंन नीर है।
जिते सुख भोग रोग तिनकौं न ठौर रही हियें अति भई कृष्णभक्ति रस भीर है॥
द्विज गृह भीक्षा कभूं माधूकरी चर्वन सौं उदरहि भरैं कभूं करैं उपवास है।
अष्टयाम नाम मुख कभूं कृष्ण कथा कहैं भक्ति रस शास्त्र लिखैं कभूं रस रास हैं।
चारि दंड सैंन करैं भाव पगें ताहूँ समें कृष्णलीला मानसी के हिय में प्रकास है।
प्रिया प्रिय धाम जिते आंखिन निहारि तिते किये है प्रगट सब जुगल प्रकास हैं॥

दोहा—

कहैं कथा चैतन्य की कभूं हियें भरि भाय। करैं चिंतवन गौर कौ कहि प्रसंग करि चाय॥
होय महन्तनि कौ यहै सुनिकें अति सुख सोइ। जिनपै कृपा सुगौर की तिनकें अचिरज कोइ॥

आप लिखी है रूप जू कृपा गौर की सोइ। भक्ति रसामृत सिंधु के मंगल मुख ही जोइ॥

तथाहि—

हृदि यस्य प्रेरणया प्रवर्त्तितोऽहं वराकरूपोऽपि। तस्य हरेः पदकमलं वन्दे चैतन्य देवस्य ॥१२॥

इही भांति दस द्यौस प्रभु रहि जु प्रयाग उदार। श्री रूपहि सीक्षा दई करि जु शक्ति संचार॥

सुनौ रूप हरि भक्ति रस लक्षण कहैं उदार। सूत्र रूप कहि यैं कियौं जाय नहीं विस्तार॥

है अथाह रससिंधु सो पारावार न जाहि। कहियैं तुम्हरे स्वाद हित कछुक एक कन ताहि॥

भरयौ अनंतनि जीवगण इह ब्रह्माण्ड विलास। चौरासी लक्ष जोनि मधि भ्रमैं जीव कालवस॥

केस अग्र सत भाग इक तिहिं शतांश फिरि जोय। तिहि सम सूक्षम जीव है भरि ब्रह्माण्डहि सोय॥

तथाहि—

केशाग्रशतभागस्य शतधाकल्पितस्य च। जीवः सूक्ष्मस्वरूपोऽयं संख्यातीतो हि चित्कणः॥ १३॥

थावर जंगम तिहूं मधि दोय भेद ये आहि। निरजक जल थल चरजु ये भेद जंगमहि ताहि॥

तिहूं मधि अति अलपतर जाति मानुषी जोइ। तिहि मधि आधे जवन पुनि बौद्ध भील है सोइ॥

वेद निष्ठ मधि अर्द्ध इक वेद सूत्त करि मान। निगम निसिध्य जु पाप सब करैं धर्म नहि ज्ञान॥

धर्माचारी मध्य बहु तप औ कर्म हि निष्ठ। कर्मनिष्ठ कोटिकनि मधि एक जु ज्ञानी सिष्ट॥

कोटिक ज्ञानी मध्य हूं एक मुक्तजन कोय। दुर्ल्लभ कोटिक मुक्त मधि कृष्णभक्त इक सोय॥

कृष्णभक्त निष्काम सो ताही तें है सांत। भुक्ति मुक्ति औ सिद्धि के काम सबै जु असांत॥

तथाहि—

मुक्तानामपि सिद्धानां नारायणपरायणः। सुदुर्ल्लभः प्रशान्तात्मा कोटिष्वपि महामुने॥ १४॥

भ्रमत भ्रमत ब्रह्मांड मधि जीव भाग्य जुत कोय। भक्तिलता बीजहि लहै गुरु हरि कृपा जु कोय॥

बोवे ताही बीज कौं ह्वै करि माली जोयँ। श्रवन कीरतन नीर करि सींचै ताही सोय॥

उपजि लता बाढ़े जगत अंडभेदि सब जाय। ब्रह्मलोक विरजा उलंघि फिरि वैकुण्ठ हि जाय॥

तब तिहि पर गोलोक पुनि वृंदावन मधि जाइ। कृष्ण चरण युग कल्पतरु तिन पर सो लपटाय॥

फलै प्रेमफल फैलि सो तिंह सुरतरु के तीर। ह्यां माली सींचै सदा श्रवण कीरतन नीर॥

जो हरिजन अपराध पुनि उठे मत्त मातंग। खोदि तोरि डारे लतहि सूक जाइ तिहि अंग॥

यातें माली जतन करि करै वारि चहुंधाहि। ज्यौं अपराध मतंग कौ होय उठन ही नाहि॥

जौ ताकौ अँग और हू उपशाखा उपजाहि। मुक्ति भुक्ति की चाह लगि है तिन संख्या नाहि॥

छल छिद्र जु पापाचरण जीव विहंसनि आहि। लाभ प्रतिष्ठादिक जु औ उपसाखा गण जाहि॥

सींचै जल कौं पान करि उपसाखा बढ़ि जांहि। थकित मूलसाखा जु ह्वै बढ़िवै पावै नांहि॥

करिये उपसाखा प्रथम छेदन कौ जु उपाय। बढि जु मूल साखा तवै श्री वृंदावन जाय॥

परै प्रेम फल पक्क करि माली स्वादहिं ताहि। माली लता अवलंब करि पावै सुरतरु आहि॥

तहां कल्पतरु कौ करै सेवन नित प्रति सोय। करैं जु सुख सौं प्रेम फल आस्वादन सब जोय॥

तथाहि—

ऋद्धासिद्धिव्रजविजयिता सत्य धर्मा समाधि ब्रह्मानन्दो गुरुरपि चमत्कारयत्येव तावत् ।
यावत्प्रेम्णां मधुरिपुवशीकारसिद्धौषधीनां, गन्धोप्यन्तः करण सरणी पान्थतां न प्रयाति ।। १५ ।।

सुद्ध भक्ति हीतें हियें प्रेम प्रकास जु होय । याही तें तिहिं भक्ति कौ करिये लच्छन जोय ।।
पूजा चाहसु औरकी तजिपुनि कर्म अरु ज्ञान । सब इन्दिय करि कृष्णकौ अनुसीलन हित जान ।।
सुद्ध भक्ति यह इही तें प्रेम भक्ति हिय होय । पंचरात्रि अरु भागवत किय लछन यह जोय ।।

तथाहि नारद पंचरात्रे—

सर्वोपाधि विनिर्मुक्तं तत्परत्वेन निर्म्मलं । हृषीकेण हृषीकेशसेवनं भक्तिरुच्यते ।। १६ ।।

तथाहि श्री भागवते—

अहैतुक्य व्यवहिता या भक्तिः पुरुषोत्तमे । सालोकय सार्ष्टि सामीप्य सारुप्यैकत्वमप्युत ।।
दीयमानं न गृन्हन्ति विना मत्सेवनं जनाः । स एव भक्तियोगाख्य आत्यन्तिक उदाहृतः ।। १८ ।।

तथाहि—

भुक्ति मुक्ति स्पृहा यावत् पिशाची हृदि वर्त्तते । तावद्भक्तिसुखस्यात्र कथमभ्युदयो भवेत् ।। १६ ।।

भुक्ति और पुनि मुक्ति की हियें चाह जो होय । प्रेमा साधन किये हूं उपजै ताहि न सोय ।।
साधन भक्तिहि जो हियें उदै करै रति जोय । बहै गाढ़ रति होय जब प्रेम नाम तिहिं सोय ।।
बहै प्रेम ज्यौं ज्यौं बढ़ै क्रम करियै तिहिं नाम । होय सनेह जु मान पुनि फेरि प्रणय अभिराम ।।
राग बहै अनुराग पुनि बहै भाव फिरि होय । बहै दशा आरुढ़ ह्वै महाभाव पुनि सोय ।।
जैसें पहिलें बीज ह्वै बहै ईख पुनि होय । बहै होय रस गुड जु पुनि खंड सार हूं सोय ।।
बहै फेरिकें सर्करा सिता जु मिश्री आहि । सितापला सब ते अधिक होय नाम फिर ताहि ।।
येई सब हरिभक्ति रस कहैं स्थाई भाव । स्थाई भाव हि मधि मिलै जो बिभाव अनुभाव ।।
सात्विक संचारी जु पुनि भावनि सौं मिलि सोइ । परम अमृत आस्वाद सौं कृष्ण भक्ति रस होइ ।।
जैसे दधि मिश्री जु घृत सहित मिरच कपूर । मिलै रसाला होत हैं अमृत मधुर रस पूर ।।
भक्ति भेद तें भेद रति होय पंच विधि सोय । प्रथम सांत रति दास्य रति और सख्यरति जोय ।।
वत्सल रति अरु मधुर रति पंच भेद ये आहि । कृष्ण भक्ति रस पंच विधि होय भेद रति ताहि ।।
सांत दास्य पुनि सख्य रस वत्सल मधुर जु नाम । कृष्ण भक्ति रस मध्य ये पंच मुख्य अभिराम ।।
हास्य और अद्भुत जु रस वीर करुण पुनि सोय । रौद्र और वीभत्स रस फेरि भयानक जोय ।।
कहैं जु पंच प्रकार के कृष्ण भक्ति रस जोय । तिनही मधि ये होत हैं गौण सप्त रस सोय ।।
रहैं व्यापि रसभक्ति हिय पंच स्थाई भाव । सप्तम गुण आगंतुक जु होय सु कारण पाव ।।
सांत ~~भक्त~~ योगेन्द्र नव अरु सनकादिक चार । दास्य भक्त ये सर्व ठां सेवग गण जु अपार ।।
श्रीदामादिक सख्य जन पुनि भीमार्जुन सोइ । मात तात वात्सल्य जन गुरु जन जितने जोइ ।।
भक्त मधुर रस मुख्यहै गोपीगणजो आहि । महिषी गण लक्ष्मी जु गण गणनि असंख्या जाहि ।।

यहै कृष्ण रस फेरि कें होय प्रकार जु दोय । ईस ज्ञान मिश्रा जु इक और केवला सोय ॥
व्रज मधि रति है केवला हीन ईसता ज्ञान । पुर द्वै वैकुण्ठादि मधि है ऐश्वर्य्य प्रधान ॥
ईस ज्ञान मुख्या जु ते होय संकुचित प्रीति । मानें नहि लखि ईसता यहै केवला रीति ॥
सांत दास्य रस कौ कहै उद्दीपन प्रभुताहि । वत्सल सख्य जु मधुर कौं करै संकुचित आहि ॥
देव कि अरु वसुदेव के पदवंदन हरि कीय । ईस ज्ञान करि दुहुनि कें भयौ जु भय तिन हीय ॥

तथाहि—

देवकी वसुदेवश्च विज्ञाय जगदीश्वरौ । कृतसंवन्दनौ पुत्रौ सस्वजाते न शंकितौ ॥ २० ॥

विश्वरूप लखि कृष्ण कौ भौ अर्जुन भय आहि । सख्यभाव की ईषता छमा कराई ताहि ॥

तथाहि गीतायां—

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति ।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रसादात् प्रणयेन वापि ॥२१॥

रुकमणी सौं श्रीकृष्ण जू कियौ जवै परिहास । कृष्ण छाड़ि हैं जानि यह रुकमणि कैं भौ त्रास ॥

तथाहि—

तस्याः सुदुःखभयशोक विनष्टबुद्धे हस्तात् श्लथद्वलयतो व्यजनं पपात ।
देहश्च विक्लवधियः सहसैव मुह्यन् रम्भेव वात विहता प्रविकीर्य्य केशान् ॥२२॥

केवल सुद्ध जु प्रेमिजन जाने ईस न गंध । देखें ऊ ऐश्वर्य्य सो माने निज संवन्ध ॥

तथाहि—

त्रय्या चोपनिषद्भिश्च सांख्ययोगैश्च सात्वतैः । उपगीयमानमाहात्म्यं हरिं सामान्यतात्मजम् ॥
तं मत्वात्मजमव्यक्तं मर्त्त्यलिंगमधोक्षजम् । गोपिकोलूखले दाम्ना ववन्ध प्राकृतं यथा ॥२३॥

कृष्ण निष्ठता वुद्धि की रूप सांत रस सोइ । सम जु वुद्धि में निष्ठता वचन कृष्ण यह जोइ ॥

तथाहि गीतायां—

समो मन्निष्ठता वुद्धे रिति श्रीभगवद्वचः । तन्निष्ठा दुर्घटा वुद्धेरेतां शान्ति रतिं विना ॥२४॥

तृष्णा त्याग जु कृष्ण विन मानि कार्य्य तिहि सोय । याही तें हरिभक्ति इक शान्त जानियें जोय ॥
स्वर्ग मोक्ष कौं नरक सम माने हरिजन जोय । हरि निष्ठा तृष्णा समित गुण जु सांत के दोय ॥

तथाहि—

नारायण पराः सर्वे न कुतश्चन विभ्यति । स्वर्गापवर्गनरकेस्वपि तुल्यार्थदर्शिनः ॥२५॥

व्यापे सव ही भक्तजन मध्य ये जु गुण दोय । जैसें नभ कौ शब्द गुण और भूत गण होय ॥
सांतरस हि जु स्वभाव हरि मधि ममतौ गंध हीन । परब्रह्म परमातमा ज्ञान मध्य परवीन ॥
सुद्ध स्वरूप जु ज्ञान जो सांत रस हि मधि होय । पूर्ण ईस प्रभु ज्ञान जो अधिक दास्य मधि हौय ॥
ईस ज्ञान करि अति प्रचुर संभ्रम गौरव होय । सेवा करि कैं कृष्ण सुख देहि निरंतर सोय ॥
गुण जु सांत कौ दास्य मधि है सेवन अधिकाय । याही तें है दास्य रस मधि गुण विवि इहिं भाय ॥

ममता गुण जो शान्त को दास हि सेवन जोइ । कृष्ण सख्य रस के जु मधि है ये ऊ गुण दोइ ॥
है सेवा रस दास्य मधि संभ्रम गौरव रूप । सो सेवा रस सख्य मधि है विश्वास स्वरूप ॥
चढ़ैं चढ़ावैं अंस पर करें युद्ध सुखरास । हरि सेवें निज सेवन हि करवावैं तिहिं पास ॥
है विश्रंभ प्रधान सखि संभ्रव गौरव हीन । याही तें है सख्य रस मध्य चिन्ह गुण तीन ॥
ममता अधिक जु कृष्णमधि है अपनें सम ज्ञान । याही तें रस सख्य के हैं अधीन भगवान ॥
है वत्सल मधि सांत गुण दास हि सेवन जोय । तिही जु सेवन कौ इहाँ नाम सु पालन होय ॥
असंकोच गुणसख्य कौ और अगौरव सार । ममताधिकता हु न करै और खिजन व्यौहार ॥
जाने पालक आप कौ पाल्य कृष्ण मधि ज्ञान । यामें चारों रसनि के गुण सो अमृत समान ॥
भक्त सहित आपन मगन तिहि अमृतानंद आहि । प्रभुता ज्ञानीगण कहैं गुण जु भक्त वस ताहि ॥

तथाहि—

इतीदृक् स्वलीलाभिरानंदकुण्डे स्वघोषन्निमज्जन्तमाख्यापयन्तम् ।
तदीयेशितज्ञेषु भक्तैर्जितत्वं पुनः प्रेमतस्त्वां शतावृत्ति बन्दे ॥

कृष्ण सुनिष्ठा मधुर रस सेवा अतिसय आहि । असंकोच सखि लालन सु ममता अधिक सु ताहि ॥
ज्यौं गुण आकासादि के पर पर भूतहिं जोय । एक दोय त्रय क्रम जु करि भूमि जु पांचौ सोय ॥
समाहार सव भाव कौ इहिं विधि मधुरहि होय । याहीतें आस्वाद अति करै जु अचिरज सोय ॥
यहै भक्तिरस कौ कियौ दिग दरसन हम आहि । करौ भावना हृदय मधि करि बिस्तारहि याहि ॥

ऐसैं करि सिख्या प्रभु कहैं हम करयौ ताकी भावना करत कृष्ण वेगि हिय आय हैं ।
कृष्ण कृपा ऐसी जातैं अज्ञ रस पार पावैं ऐसें कहि लिये रूप हिय सौं लगाय हैं ॥
प्रात प्रभु चले कासी विनै करि कह्यौ इन्हों चलें हम संग निज आप आज्ञा पाय हैं ।
आपकौ बियोग पल एक हूं न सह्यौ जाय जियौ जौलौ पियें मुख माधुरी अघाय हैं ॥

कहैं गौर करनौं तुम्हैं वचन हमारौ जोय । जाओ वृंदाविपिन तुम हों समीप ही सोय ॥
वृन्दावन ह्वै कैं जु तुम गौड देस मधि जाय । ऐहौ हम सौं मिलन हित लीलाचल मधि धाय ॥
तिनकौं आलिंगण जु करि चढ़े नाव प्रभु सोय । परे तहांई रूप जू धरनि मूरछित होय ॥
दाक्षिणात्य द्विज निज घरहि लैकैं गयौ जु ताहि । तब दोऊ भाई चले वृंदावन कौं आहि ॥
चले चले श्री गौर प्रभु आये कासी आहि । मिले आय ससिशेखर जु ग्रामहि बाहिर ताहिं ॥
तिनहुं सुपन लह्यौ जु निसि आये प्रभु निज धाम । प्रात समैं हीं आय कें रह्यौ बाहिर ग्राम ॥
देखि अचानक गौर कौं परचौ चरण मधि धाय । आनदिंत ह्वै निज घरहि लै आयौ करि भाय ॥
आपि प्रभु के मिलन कौं तपन मिश्र सुनि सोय । इष्ट गोष्टी करि कियौ प्रभु कौ न्यौतौ जोय ॥
भीक्षा करवाई तपन प्रभु कौं निज घर लाइ । न्यौतौ भट्टाचार्य कौ किय ससि सेखर वाँह ॥
भीक्षा मिश्र कराइ कैं कहै जु धरि प्रभु पाय । भीक्षा मागौं एक मुहि देहु कृपा करि भाय ॥

जब लौं तुमरी गौर प्रभु कासी मधि थिति होय । भीछा मेरे गेह विन कहूं न करि हौ सोय ॥
पाँच सात रहि हैं दिवस जानि गौर हिय माहि । भीछा संग जतीनके कहूं जु करि हैं नाहि ॥
यहै जानि तिहिं वचन कौं कीनौं अंगीकार । ससि सेखर के घर कियौ वसिवे कौ निरधार ॥
महाराष्ट्र द्विज आय कें प्रभु कौं मिलौ जु आहि । नेह प्रकास्यौ गौरहरि करि कैं कृपा जु ताहि ॥
आये सुनि कैं गौर हरि सिष्ट सिष्ट जन जोय । द्विज छत्री सब आय कैं करैं जु दरसन सोय ॥
प्रभु जैसैं श्री रूप पर करी कृपा निरधार । लिखी जु यह संछेप करि कथा जु अति विस्तार ॥
यह लीला जो जन सुने श्रद्धा करि कें कोइ । प्रेम भक्ति चैतन्य पद मधि पावै जन सोइ ॥
रूप सनातन चरण की जाके हिय मधि वास । चरितामृत चैतन्य कौ कहै कृष्ण कौ दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत सौं लिखैं व्रज भाषा हि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखंडे व्रजभाषायां श्री रूपानुग्रहो नाम उनविंशति परिच्छेद: ॥

विंशति परिच्छेद:

बन्देऽनन्ताद्भुतैश्वर्य्यं श्रीचैतन्यमहाप्रभुं । नीचोऽपि यत्प्रसादात्स्यात् भक्तिशास्त्रप्रवर्त्तक: ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांसु जय प्रभु भक्तति के वृंद ॥

हैं ह्यां श्री सनातन जू राजगृह वंधे तिहीं समै रूप जू की चीठी पहुँची सु आय कैं ।
देखि कें प्रसन्न भये गये ता जवन पास जाके हैं अधीनता सौं कही ऐसैं जाय कैं ।
तुम्हूं निज धर्मशास्त्र देखे सवनी की भांति तहां ठौर ठौर लिखी यही समझाय कैं ।
कोऊ जन एक वंदी धन दै छुटावै ताहि करै हैं गुसैंया मुक्ति भवतें छुटाय कैं ॥

जब है समर्थ हम कीनें उपकार तुम छोड़ि हमैं दीजै यहै अति उपकार है ।
मुद्रा ये सहस्र पांच लीजे पुन्य लाभ दोनौं कीजै सुनि कै जवन वोल्यौ यौ विचार है ।
सुनौं महासय तुम्हैं छोड़ैं ऐपैं राजभय नातौ छोडि देते याही छिन निरधार हैं ।
इन्हौं कही भय जिन करौ गयौ दछिण कौं उलटि जौ ऐहैं ताहि कहियौ सुधार है ॥

देह कृत्य हेत वह गंगा नीर गयौ हतौ वूड्यौ तहां ढूंढ्यौ जल तऊ नहि पायौ है ।
भय जिन करौ इहाँ देस में न रहौं वेस दरवेस मक्काहजु जाइवो सुहायौ है ।
तऊ न प्रसन्न देख्यौ मुद्रालै सहस्र सात आगे धरी वाके तव देखि लोभ आयौ है ।
वेरी पग काटि गंगा पार करि दिये निसि राजपथ छोड़ि चले भयौ मन भायौ है ॥

रैंन दिन चले चले आये ए पतोडा गिरि रहै एक भूमिपाल तासौं कही जाय कैं ।
हुतौ सौनी वाकें तिन कान लगि कही इह पास स्वर्ण मुद्रा आठ ऐसैं समझाय कैं ।

पर्वत के पार करि देहु सुनि बोल्यौ वह करि सनमान हिये अति सुख पाय कैं ।
रहौ आजु सीधौ लेहु राति तुम्हैं पार करौं देहौं तुम संग लोक अपने उठाय कैं ॥
ऐसैं कहि अन्न दियौ वहु सनमान कीयौ नदी न्हाय आय पाक कीनौ जु सुधार हैं ।
हुते व्रती दो दिना के भोजन कौं बैठे जब एतो राज मंत्री तातैं कीनौ यौं बिचार हैं ।
अति सनमान इन काहे कौं हमारौ कीयौ पूछी तव सेवक सौं करि निरधार हैं ।
तोपैं कछु है गौ धन ऐसैं सुनि वोल्यौ वह अचिरज तब भयौ भय हू अपार हैं ॥
मुद्रा सात पास कही लई तब जानि इन्हौ बोल्ये खिजि वासौं ग्रह काल संग जानिये ।
सातौं हाथ वीच लै कैं गये वाके पास तव आगें धरी बोले सुनि विनती सु मानियैं ।
राजवंदी वाम तातें सूधे मग जांहि कैसैं वडौ धर्म ह्वै है गिरि पार करौ छानियैं ।
मुहरें हमारे पास सात निन्हौ लेहु धर्म देखि हमैं पार करौ यहै जिय आनियैं ॥
सुनि वह हस्यौ मैं तौ पहिलैं ही जानी हुती मुद्रा आठ बंधी तुव सेवग के पास है ।
लेते तुम्है मारि राति भली भई कही तुम पाप तें मैं छुट्यौ भयौ हिय में हुलास है ।
लेंहुँ नहीं द्रव्य पुन्य हेत पार करौं सुनि तव इन्हौ कीयौ जानि वचन प्रकास है ।
जीव दान दै कैं धन करौ अंगीकार तुम नही लैहै और कोऊ हमैं करि नास है ॥
तव उन भूमिपाल चारिजन संग दै कैं वनपथ ह्वै कै करि दिये गिरि पार हैं ।
पार भये पाछें इन्हौं पूछी उनि सेवग सौं कछु धन सेस तुव पास निरधार हैं ।
कही उन एक मुद्रा रही तव कहै इन्हौ लै कैं वाही देस जावौ मेरौ यों विचार है ।
ऐसैं कहि विदा कीनौ चले इकलेई या में ब्रन्दावन जायवे कौ सिखयौ प्रकार हैं ॥
करवा लै हाथ एक फट्यौ वास निर्भय ह्वै चले चले हाजीपुर श्री गुसांई आये हैं ।
इन कौ वहिनोई तहां रहैं श्री कांत नाम करै राज काज तिन घोरा मगवायें हैं ।
बैठौ सो अटा के पर जात हैं उद्यान वीच देखे श्री गुसांई तिहिं यह सुख पायै है ।
मन में कियो बिचार अचिरज ह्वै कै पुनि कौंन कारज के हित एसो वेश लयैं है ॥

दोहा

आयौ इन कें निकट सो निसि कौं इक जन संग । इष्ट जु गोष्ठी मिलि करी दोऊ जन करि रंग ॥
करि कैं वहु सनमान तिहिं पूछी सब जब आहि । छुटिवेकी सव ही कथा कही गुसांई ताहि ॥

रहौ दिन दोय इहां करौ भद्र वेस नीकें मलिन वसन अंग सौ तो दूरि कीजियै ।
इन्हौं तव कही एक छिन हूं न रहैं इहां चलैं हम अवैं गंगा पार करि दीजियै ।
तव तिन जत्न करि दीनौ भोट एक भेट दीनौ करि पार तव चले रस भीजियै ।
द्यौस में कितेक कासी पहुंचे ये आय तहां सुनी प्रभु आये अव नेंन फल लीजियै ॥

तब प्रभु सुने चंद्रशेखर के गेह बैठे तहां श्री सनातन जू बैठे द्वार आय कैं।
जानि प्रभु गये तब चंद्रसेखर सौं बोले द्वारें भक्त बैठ्यौ ताहि लीजियै बुलाइकैं।
आये दौरि द्वार तहां भक्त कोऊ देख्यौ नाहि कही चंद्रसेखर जू प्रभु कौं सुनाइकैं।
कही प्रभु कोऊ बैठ्यौ कही दरवेस एक बोले प्रभु ताहि लावो वेगि तुम भाइकैं॥

तिन्हौं तब कही जाय तुमकौं बुलावै प्रभु सुनि उठि चले बढ्यौ आनंद अपार हैं।
दूर ही तें इन्हैं देखि आगें दौरि आये प्रभु हीये सौं लगायें रही नेकु न सम्हार हैं।
प्रभु के परस एऊ प्रेम बूड़े कंठ सुर भंग अंग कंप नैंन बहै नीर धार हैं।
बोले श्रीसनातन जू अंग मेरौ छियौ जिनि अति ही अशुचि याकौं नाहि अधिकार हैं॥

कण्ठ सौं लगाय कंठ मिले दोऊ रंग लैकैं देखि चंद्रसेखर चकित अति भये हैं।
इनकौं पकर हाथ भीतर लै गये प्रभु बैठे निज पास लैकैं हियें सुख छये हैं।
श्रीकर कमल करि अंग तिहिं पौछें जब छियौ जि न कहै ये जु दीनता सूं नये हैं।
यातें हम मिलैं तुम्है हम हूं पवित्र हों हि कह्यौ प्रभु ऐसैं एतौ लाज दवि गये हैं॥

तुम हौ जातें अति परम कृष्णभक्त बलवान। सब ब्रह्माण्ड पवित्र करि सकौ यहै जु प्रमान॥

तथाहि—तीर्थी कुर्वन्ति तीर्थानि स्वान्तस्थेन गदाभृतेति ॥२॥

तथाहि—

नमे भक्तश्चतुर्व्वेदी मद्भक्तः स्वपच प्रियः। तस्मै देयं ततो ग्राह्यं सच पूज्यो यथाह्ययम् ॥३॥

तथाहि—

विप्राद्विषड्गुणयुतादरविन्दनाभपादारविन्दविमुखात् स्वपचं वरिष्ठं इति ॥४॥

तुम्है परिसियै देखियै करियै तुव गुणगान। सब इन्द्रिय कौ फल यहै कह्यौ शास्त्र परिमान॥

तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—

अक्ष्णोः फलं त्वादृशदर्शनं हि तन्वाः फलं त्वादृशगात्रसंगः।
जिह्वाफलं त्वादृशकीर्त्तनं हि सुदुर्ल्लभा भागवता हि लोके॥ इति ॥५॥

इतनौ कहि प्रभु कहैं फिरि सुनौ सनातन जोय। बड़े कृपामय कृष्ण हैं पतित सु पावन सोय॥
जिन्हौं महा रौरव जु तें किय तुमरौ उद्धार। कृष्ण कृपा के उदधि हैं अति गंभीर अपार॥
कहै सनातन कृष्ण हम नहि जानत हैं आहि। मानें कारण तुव कृपा हमैं उद्धरयौ जाहि॥
कैसै तुम छूटो जु कहु प्रभु जू पूछयो जोय। और छोरते सब कथा तिन्हौ सुनाई सोय॥
तपन मिश्र बड महाशय अरु शसि सेखर जोय। मिले सनातन दुहुन कौं प्रभु निश्चै मन स्नेय॥
तपन मिश्र जू ता समें कियौ निमन्त्रन सोइ। जाहु सनातन प्रभु कहैं छौर करावो जोइ॥

चंद्रसेखर हि ता समैं प्रभु जु कह्यौ बुलाय। दूर करावौ वेस यह जाहु इन्हैं लैं धाय ॥
भद्र कराय तवै कियौ स्नान सुरधुनी आहि। शसिसेखर जू आनि कैं नयौ वसन दिय ताहि ॥
सो वह वसन सनातन जु कियौ न अंगीकार। सुनिकैं प्रभु जू के हियें भौ आनंद अपार ॥
भीक्षा हित मध्यान्ह करि गौर कृष्ण अभिराम। लैकैं संग सनातनहि गये मिश्र के धाम ॥
चरण धोय बैठे जु प्रभु भीक्षा हित करि नेह। देहु प्रसाद सनातनहि कह्यौ मिश्र सौं यह ॥
मिश्र कहैं जु सनातनहि है सु कृत्य कछु आहि। भीक्षा करौ प्रसाद तुम पाछे दैहैं ताहि ॥

कवित्त

भीक्षा करि तवै महाप्रभु जु विश्राम कियौ मिश्र प्रभु जू कौ पात्र शेष इन्हैं दीयौ है।
और पाछें मिश्र एक नयौ वस्त्र भेट कियौ लियौ नही इन्हौ ताहि हाथ हूं न छियौ है।
बिनै करी मिश्र सौं जु जौपै दियौ चाहौ मोहि अपनौ प्रसादी दीजै सुखी करौ हियौ है।
दीनी निज धोती मिश्र लैकैं श्रीगुसांई तब ताकी कौपीन औ बहिर्वास जुग कियौ है॥

द्विज महाराष्ट्र सो जु इनकौ मिलायौ प्रभु बोल्यौ श्री गुसांईजी सौं करि बिनै अति है।
जौलौं तुम कासी रहौ भोजन हमारें करौ सुनिकें गुसांई बोले रंगी स्याम मति है।
करि हैं मधूकरी न एक घर भिक्षा लेंहिं हियें है हमारे यहैं और नाहीं रति है।
देखि निरवेद इन आनंद अपार प्रभु भोट और चहैं कहैं हियें रोग हति है॥

इन्हौ तब जानी यह प्रभु मन मान्यौं नहिं लगे करिवे कौं ताको त्याग कौ उपाय है।
गंगा न्हायवे कौं गये तहां ही विरक्त एक गूदरी कौं धोय तिन दीनी जु सुखाय है।
तासौं इन कही भाई याहि हमैं देहु लेहु भोट सुनि बोल्यौ वह मुख मुसिकाय है।
ह्वै कैं बड़े प्रमानीक करौ तुम हांसी कोऊ देकें अति तुछ बहु मूल्य कैसैं पाइ हैं॥

इहौं कही हास्य नाही तातें हमैं देहु तुम ऐसैं कहि लीनी वह भोट ताहि दयौ है।
मन में प्रसन्न ह्वैकैं आये प्रभु पास तब पूछी भोट कहा भयौ कहां कैसैं गयौ है।
कही सब इन्हौ तब बोले महाप्रभु सुनौ पहिलें हमारें हियें यहै सोच भयौ है।
इतौ रोग सेस ताहि सहिहै वै कृष्ण कैसैं दया करि जिन्हौ तुम्हैं विषै रोग हयौ है॥

कोऊ रस वैद्यराज जैसैं रोग नास करै रहै ताकौ लेस सेस ताकी ताकौं लाज है।
भोट बहु मूल्य ओढ़ि मागें जो मधुकरी कौं हसैं लोक धर्म नास होय यौं अकाज है।
ये जु कहैं जिनौ विषै भोग रोग दूर कियौ तिनही की इछा सों जु गयौ सेस आज है।
सुनिकै प्रसन्न भये कृपा करि सक्ति दीनी कीनी प्रश्न जातें भयौ जीवन कौ काज है॥

जैसैं पहिलैं राय सौं करी प्रश्न प्रभु आहि। रामानँद ऊतर दियौ तिन्हैं शक्ति करि ताहि॥

प्रश्न जु यौं प्रभु शक्ति करि करैं सनातन जोय । आपुन श्री प्रभु जू करैं तत्व निरुपन सोय ॥

तथाहि—

कृष्णस्वरूपमाधुर्य्यैश्वर्य्यभक्तिरसाश्रयम् । तत्वं सनातनायेशः कृपयोपदिदेश सः ॥६॥

प्रभु जू के चरणनि परे तवै सनातन धाय । करैं वीनती दैन्य करि लै तृण दंत उठाय ॥
नीच जाति संगी जु हिय तिन अधम हौं जोय । विषयकूप गिरि आजु लौं जन्म गँवायो सोय ॥
अपनौ हित औ अहित कछु नहि जानत हौं आहि । पण्डित जग व्यवहार मधि सांचौ मान्यौं ताहि ॥
जौ मेरौ तुम कृपा करि कीनौ है उद्धार । आप कृपा करि तौ कहौ मम कर्तव्य विचार ॥
कौन जु हम क्यौं हमें त्रय ताप जरावै जोय । यह नांही जानौं हम कहा कियें हित होय ॥
साध्य जु साधन तत्व जो पूछि न जानौं ताहि । सवै तत्व आपुन कहौ करि कैं कृपा जु आहि ॥
कहैं जु प्रभु है हरि कृपा तुम पै पूरण जोय । सवै तत्व जानौ जु तुम नहि न ताप त्रय सोय ॥
कृष्ण शक्ति धरि कें जु तुम जानौ तत्व जु भाव । जानें पूछैं दाढ्य हित यह साधू जु सुभाव ॥

तथाहि—

सद्धर्मस्याविरोधाय येषां निर्व्वन्धिनी मतिः । अचिरादेव सर्व्वार्थः सिध्यत्येषामभीप्सितः ॥७॥

जोग्यपात्र हौ तुम बड़े भक्ति प्रचारण काज । कहैं जु तुम सौं सुनौ सब क्रम करि तत्व समाज ॥
है स्वरूप यह जीव कौ सदा कृष्ण कौ दास । शक्ति तटस्था कृष्ण की भेदाभेद प्रकास ॥
तपन किरन कन ज्यौं अगनि ज्वाला माला जोय । स्वाभाविक प्रभु शक्ति जो शक्ति त्रय यह होय ॥

तथाहि विष्णुपुराणे—

एकदेशस्थितस्याग्ने र्ज्योत्स्ना विस्तारिणी यथा । परस्य ब्रह्मणः शक्तिस्तथेदमखिलं जगत् ॥८॥

तथाहि तत्रैव—

शक्तयः सर्व्वभावानामचिन्त्यज्ञानगोचराः ।
यतोऽतोब्रह्मणस्तास्तु सर्गाद्याभावशक्तयः । भवन्ति तपतां श्रेष्ठ पावकस्य यथोष्णता ॥९॥

तीन शक्ति परिणति जु ये स्वाभाविक प्रभु ताहि । चिच्छक्ति जु मायाशक्ति जीवशक्ति पुनि आहि ॥

तथाहि तत्रैव—

विष्णुशक्ति परा प्रोक्तेति श्लोकः ॥१०॥

अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम् । जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्य्यते जगत् ॥११॥

तदुक्तं—

ययाक्षेत्रज्ञशक्ति सा वेष्टिता नृप सर्व्वगा । संसारतापानखिलानवाप्नोत्यत्र सन्ततान् ।
तया तिरोहितत्वाच्च शक्तिः क्षेत्रज्ञसंज्ञिता । सर्वभूतेषु भूपाल तारतम्येन वर्त्तते ॥ १२ ॥

जीव अनादि वहिर्मुख जु कृष्ण भूलि सो जोय । याही तें माया जु तिंहिं दे भव कौ दुख सोय ॥
कभूं चढ़ावै स्वर्ग पुनि वोरैं नर्क मझार । दंड्य जन हि जैसें नृपति डुववै नदी हि धार ॥

एकादशे—

भयं द्वितीयाभिनिवेशतः स्यादीशादपेतस्य विपर्य्ययोऽस्मृतिः।
तन्माययातो बुध आभजेत्तं भक्त्यैकयेशं गुरुदेवतात्मा ॥१३॥

शास्त्र साधु की कृपा करि जब हरि सनमुख होय। वहै जीव निस्तरे तिहि छोड़े माया सोय ॥
गीतायां च—

मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥१४॥

माया जड जीव हि नहीं आपु हि तें प्रभु ज्ञान। कीयें जीव पर कृपा करि कृष्ण जु वेद पुराण ॥
शास्त्र गुरु आत्मा रूप आप ही जनावैं कृष्ण त्राता प्रभु मेरे ज्ञान होय जीव के यहैं।
वेद और शास्त्र सब संबंध औ अभिधेय पुनि औ प्रयोजन जो इन्हीं तीन की कहैं।
संबंध प्राप्य कृष्ण औ पायवेकों द्वार भक्ति नाम अभिधेय प्रेम है प्रयोजन वहैं।
सबै पुरुसार्थ जिते तिन कौ सिरोमणि है प्रेम धन महा जीव कृष्ण की कृपा लहैं ॥
सेवानंद की प्राप्ति कौं हरि माधुर्य्य उपाय। करै कृष्ण वस कृष्ण रस आस्वादन अधिकाय ॥
याकौ है दृष्टांत ज्यौं गेह रंग के आहि। सर्वज्ञाता आय लखि दुखी जु पूछें ताहि ॥
तू काहे तें दुखित है धन घर मधि तुव तात। जीव तज्यौ तिहिं औरठां कही न तोसौं बात ॥
कहैं बचन सर्वज्ञ कौं तिहिं धन को ऊदेश। जीव हि वेद पुरान यौं करैं कृष्ण उपदेस ॥
सर्वज्ञाता वचन कौ मूल द्रव्य अनुवंध। सर्वशास्त्र उपदेस कौ श्री कृष्ण जु संबंध ॥
है धन पितु कौ जानि हौं नहि पावै धन चाय। तव सर्वज्ञ है जु तिहिं पैवे को सु उपाय ॥
इंही ठिकाने धन जु है खोदि है दच्छिण सोय। भ्रमराली उठि हैं तहां नहि धन पै है सोय ॥
पच्छिम खोदेगो तहां एक यच्छ है सोय। धन जु हाथ नहि परैगौ विघन करैगौ जोय ॥
उत्तर खोदेगौ जु है कारो अजगर जोय। धन नाहि पैहैं खोदतें सव कौं डसि है सोय ॥
तिहि पूरव दिसि अलप लहूँ माटी खोदत वार। धन की सब थैली जु तुव कर परि है निरधार ॥
कहै शास्त्र यौं कर्म औ ज्ञान जोग तजि आहि। होय कृष्ण वस प्रेम करि भजौ भक्ति करि ताहि ॥
तथाहि श्री भागवते—

न साधयति मां योगो न सांख्यं धर्म्म उद्धव। न स्वाध्यायस्तपस्त्यागो यथा भक्तिर्म्ममोर्जिता ॥१५॥

गीतायां—

भक्त्याहमेकया ग्राह्यः श्रद्धयात्मा प्रियः सताम् ॥१६॥

याही तें हरि प्राप्ति कौ भक्ति उपाय जु आहि। वेद शास्त्र गावे सबै कहि अभिधेय जु ताहि ॥
धन पायें सुख भोग फल पावत हैं जिहिं भाय। फल सुख भोग भये सहज दुःख आप भजि जाय ॥
तैसैं ~~फल~~ है भक्ति कौ हरि मधि प्रेम प्रकास। कृष्णास्वाद जु प्रेम करि भये होय भवनास ॥
फल नाहिन धन प्रेम के दारिद छय भवनास। भोग प्रेम सुख मुख्य यै है सु प्रयोजन तास ॥
वेद शास्त्र सम्बन्ध अभिधेय प्रयोजन कीन। कृष्ण कृष्ण की भक्ति औ प्रेम महाधन तीन ॥

शैवादिक सव शास्त्र कौ कृष्ण मुख्य सम्बंध। तिहिं ज्ञान हि अनुसंग करि जाय जु मायाबंध ॥

तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—

व्यामोहाय चराचरस्य जगतस्ते ते पुराणागमा स्तां तामेव हि देवतां परमिकां जल्पन्तु कल्पावधि।
सिद्धान्ते पुनरेक एव भगवान् विष्णुः समस्तागम व्यापारेषु विवेचनव्यतिकरं नीतेषु निश्चीयते ॥१७॥

गौण मुख्य विविवृत्ति करि कैं अन्वय व्यतिरेक। यहै प्रतिज्ञा वेद कें कहैं कृष्ण कौं एक ॥

तथाहि श्री भागवते—

किं विधत्ते किमाचष्टे किमनूद्य विकल्पयेत्। इत्यस्या हृदयं लोके नान्यो मद्वेद कश्चन ॥ १८ ॥

तथाहि तत्रैव—

मां विधत्तेऽभिधत्ते मां विकल्प्यापोह्यते ह्यहम् ॥१६॥

हरि जु स्वरूप अनंत अति है वैभव जु अपार। चिच्छक्ति जु माया शकति जीव शक्ति विस्तार॥
परमव्योम ब्रह्माण्डगण शक्ति काजहै सोय। निज शक्तिहि तिहिं कार्य्यके हरि सव आश्रय जोय॥

तथाहि—

दशमे दशमं लक्ष्यमाश्रिताश्रयविग्रहम्। क्रीड़द् यदुकुलाम्भोधौ परानन्दमुदीर्य्यते ॥ २० ॥

सुनो सनातन कृष्ण कौ अब जु स्वरूप विचार। अद्वय ज्ञान जु तत्व सो श्री व्रजराज कुमार ॥
सर्व आदि अंसी जु ह्यां वहै किशोर शिरमौर। चिदानंद वपु आश्रय सव के ईश्वर मौर ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहः। अनादिरादिर्गोविन्दः सर्व्वकारणकारणम् ॥२१॥

कृष्ण स्वयं भगवान को गोविंद दूजौ नाम। सर्व ईश्वरता पूर्ण जिहिं गोलोक जु निज धाम ॥

तथाहि श्री भागवते—

एते चांश कलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान्स्वयं। इन्द्रारिव्याकुलं लोकं मृड़यन्ति युगे युगे ॥२२॥

ज्ञान जोग हरि भक्ति औ त्रय साधन वस आहि। ब्रह्म आत्मा ईश्वर जु त्रिविध प्रकास जु ताहि॥

तथाहि श्रीभागवते—

वदंति तत्तत्वविदस्तत्वं यज् ज्ञानमद्वयम्। ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते ॥२३॥

ब्रह्म कांति तिहिं अंग की निराकार परकास। चर्म चक्षु कौं भानु कौ ज्यों ज्योतिर्मय भास ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

यस्य प्रभा प्रभवतो जगदण्डकोटि कोटिष्वशेषवसुधादिविभूतिभिन्नम् ॥२४॥

परमात्मा जोऊ वहू एक कृष्ण कौ अंस। आतमा के आतमा जु है कृष्ण सर्व अवतंस ॥

तथाहि श्री भागवते—

कृष्णमेनमवेहि त्वमात्मानमखिलात्मनां ॥२५॥

तथाहि गीतायां—

विष्टभ्याहमिदं कृत्स्नमेकांशेन स्थितो जगत् ॥२६॥

भक्ति जु करि भगवान कौ अनुभव पूरण रूप। एक हि विग्रह कृष्ण के है जु अनंत स्वरूप ॥

कवित्त

स्वयं रूप तदेकात्म रुप औ आवेस नाम प्रथमहीं तीन रुप रहे भगवान हैं।
स्वयं रूप की स्वयं प्रकास दोय रूप थिति स्वयं रूप एक कृष्ण गोपवेश वान हैं।
प्राभव वैभव रूप द्विविध प्रकास आहि लच्छण सुनौ जु अब कहियै बखान है।
एक वपु वहु रूप रास मधि भये जैसैं महिषी विवाह मधि भये जु प्रमान हैं॥

सवै शास्त्र परि सिद्ध यह कीनौ लच्छण तास। दुहूँ ठौर श्री कृष्ण कौ है प्रभाव जु प्रकास॥
सौभय्यादिक लौं नहीं कायव्यूह जू सोय। कायव्यूह भये नही नारद विषमय होय॥

तथाहि श्री भागवते—

चित्रं वतैतदेकेन वपुषा युगयत् पृथक्। गृहेषु द्वयष्टसाहस्रं स्त्रिय एक उदावहन्॥२७॥

सोई वपु वह आकृतहि ज्यौं न्यारौ तिहिं भास। भाव वेस करि भेद तिहि वैभव नाम प्रकास॥
कृष्ण प्रकास अनंत तिहि नाहिन मूरति भेद। आकृति वर्ण जु अस्त्र के भेदहि नाम विभेद॥

तथाहि तत्रैव—वहु मूर्त्यैक मूर्त्तिकमिति॥२८॥

है वैभव जु प्रकास ज्यौं हरि कौ श्री बलराम। वर्ण मात्र ही भेद सव कृष्णहि सम अभिराम॥
है बैभव जु प्राकास ज्यौं तनय देवकी जोय। कवहूँ द्विभुज स्वरूप सो कवहूं चतुरभुज होय॥
जिहि समैं हैं द्विभुज सो बैभव नाम प्रकास। होय चतुर्भुज तिहि समैं प्राभव नाम विलास॥
स्वयं रूप के गोप कौ वेश गोप अभिमान। वासुदेव के वेश हैं क्षत्रिय हौं यह ज्ञान॥
सुन्दरता माधुर्य्य प्रभुता बैदग्ध्य विलास। श्री व्रजराज कुमार मधि इन कौ अधिक प्रकास॥
जिहिं माधुरि लखि होत हिय वासुदेव कें क्षोभ। निज माधुरि के स्वाद हित हियमें उपजत लोभ॥
जैसैं चारन नृत्य लखि मथुरा के मधि सोय। द्वारावति मधि फेरि ज्यौं चित्र विलोकन जोय॥

तथाहि—

उद्‌गीर्णाद्भुत माधुरीपरिमलस्याभीरलीलस्य मे, द्वैतं हन्त समक्षयन्मुहुरसौ चित्रीयते चारणः।
चेतः केलिकुतूहलोत्तरलितं सत्यं सखे मामकं, यस्य प्रेक्ष्य स्वरूपतां व्रजबधूसारूप्यमन्विच्छति॥२९॥

अपारि कलिपपूर्व इत्यादि॥३०॥

भासे आकृति कछु पृथक वहै जु वपु अभिराम। भेद भाव वेशाकृति हि तदेकात्म तिहि नाम॥
तदेकात्म रुप हि जु द्वै भेद स्वांस जु विलास। स्वांस विलासहि भेद करि विविध भेद परकास॥
प्राभव बैभव भेदकरि दोय प्रकास विलास। भेद विलास विलास के है अनंत विधि तास॥
वासुदेव संकर्षण जु है प्राभव जु विलास। प्रद्युम्न अनिरुद्ध औ मुख्य चारि जन तास॥
गोप भाव ब्रज राजकें पुर मधि क्षत्रिय भान। वर्ण वेस कौं भेदयत तिहिं विलास अभिधान॥
है प्राभव जु प्रकास मधि अरु प्राभव जु विलास। एक मूर्ति वलदेव जू भाव भेद कौ भास॥

चतुर्व्यूह सब आदि ये इन सब नाही कोइ । चतुर्व्यूह गण अमित के प्रागटि कारण सोइ ॥
येई चारौं कृष्ण के हैं प्राभव जु बिलास । द्वारावति मथुरापुरी इन कौ सदा निवास ॥
इनहीं चारौं ते चतुर बीस मूर्ति परकास । अस्त्र नाम के भेद करि हैं प्राभव जु बिलास ॥
चतुर्व्यूह कौं लेय फिरि कृष्ण जु पूर्ण स्वरूप । मधि बैकुण्ठ विराजई श्री नारायण रुप ॥
तिनि हीतें फिरि चारि औ चतुर्व्यूह परकास । हैं आवारण जु रुप करि चारौं दिसि जिहिं बास ॥
तीन तीन मूरति पृथक पुनि चारौं जन हैं जु । केशव आदि बिलास की मूरति जिन ही तें जु॥

कवित्त

चक्रादिक धारण के भेद करि न्यारे न्यारे न्यारे न्यारे नाम भेद होय अति बाम हैं ।
बासुदेव जू की मूर्ति केशव औ नारायण माधव जू येई तीनों जानौं अभिराम हैं ।
मूरति संकर्षण की गोबिन्दजू और बिष्णु पुनि श्री मधुसूदन सब गुण धाम हैं ।
कहैं ये गोविन्द और नहीं हैं व्रजेन्द्र सुत करौ जिनिसंका जिय सुनि तिहिं नाम हैं ॥

प्रथम त्रिविक्रम बामन जु पुनि श्री धर जू सोय । ये हैं श्री प्रद्युम्न की तीनौं मूरति जोय ॥
पद्मनाभ दामोदरजु हृषीकेश भगवान । मूरति श्री अनिरुद्ध की एई तीनौं जान ॥
देवत बारह मास के ये द्वादस जन जोय । केशव नारायण अधिप मगसिर पूस हि सोय ॥
माघ और फागुण जु में माधब गोबिन्द देव । मधुमाधव में विष्णु औ श्री मधुसूदन सेव ॥
देव त्रिविक्रम बामन जु ज्येष्ठ असाढ़ हि दोय । श्री धर और हृषीक पति सांवन भादौं सोय ॥
पद्मनाभ दामोदर जु आस्विन कार्तिक मान । राधा दामोदर जु सो हैं व्रज पति सुत आन ॥
मंत्र जु द्वादस तिलक के एई द्वादस नाम । समैं आचमन परसियै इन नामन तें धाम ॥
इन चारन जु विलास औ मूर्ति अष्ट जन सोय । कहैं नाम तिन सबनि के सुनौ सनातन जोय ॥
पुरुषोत्तम अच्युत नृहरि और जनार्दन जान । श्री हरि कृष्ण अधोक्षज उपेंद्र अष्ट जन मान ॥
बासुदेव जू के जुहैं ए दोऊ जु बिलास । प्रथम अधोक्षज और पुनि पुरुषोत्तम सुखरास ॥
संकर्षण जू के जु हैं ए बिलास जन दोय । श्री अच्युत जू और पुनि हैं उपेन्द्र जू सोय ॥
हैं बिलास प्रद्युम्न के येई द्वै जन सोय । श्री नृसिंह जू दयामय और जनार्दन जोय ॥
हैं बिलास अनिरुद्ध के श्री हरि-कृष्ण जु दोय । आठ बिलास कहे जु ये चतुर्व्यूह के जोय ॥
ये चौबीसौं मूर्ति मुख हैं प्राभव जु बिलास । अस्त्र हि धारण भेद करि नाम प्रथक हैं तास ॥
इनहीं के मधि होय जिहि आकृति वेसहिं भेद । हैं वैभव जु बिलास कौ वहै वहै जु विभेद ॥
पद्मनाभ त्रैविक्रम जु नरहरि वामन जोय । हैं आकार बिलक्षण जु हरि कृष्णादिक सोय ॥
प्राभव बिलास जु कृष्ण कौ बासुदेव जन चार । इन चारौं जु विलास की गणना बीस प्रकार ॥
इन सब के न्यारे परम व्योम धाम मधि वास । पूर्वादिक आठौं दिसिनि तीन तीन क्रम तास ॥
परव्योम मधि जदपि है सब कौ नित्य जु धाम । तऊ किंहूं ब्रह्मांड मधि किंहूं धाम अभिराम ॥

परव्योम मधि नित्य है थिति लछमी पति जोय । परव्योम ऊपर बिभौ कृष्ण लोक की सोय ॥
एक कृष्ण कौ लो कहै त्रिबिध भांति अभिराम । सुरभिलोक मथुरा जु पुनि द्वारावति ये नाम ॥
मथुरा मधि केशव जु की नित्य थिति अभिराम । लीलाचल पुरुषोत्तम जु जगन्नाथ तिहिं नाम ॥

तीरथ प्रयाग मधि माधव कौ बास और श्री मन्दार बीच मधुसूदन निवास हैं ।
आनन्दारण्य मांहि श्री बासुदेव आपु राजै पद्मनाभ जनार्दन जन सुख रास हैं ।
विष्णुकांची बिष्णु हरि रहै मायापुरी ऐसैं और नाना मूर्ति अज अंड मधिबास हैं ।
ऐसैं हीं ब्रह्मांड मधि सब के प्रकास सप्त दीप नव खंड बीच करत बिलास है ॥

सब ठांही जु प्रकास तें सब भक्तनि सुख हेत । जगत अधर्म हि नास हित थपि वैं धर्महि सेत ॥
अवतारनि हूँ मधिगननि इनमें कहूं जु होय । विष्णु त्रिविक्रम श्री नृसिंह अरु ज्यौं बामन सोय ॥
कारण नामहि भेद कौ भेद अस्त्र धृति सोइ । चक्रादिक धृत भेद जो सुनो सनातन सोइ ॥
दच्छिण करतल तैं जु लै बास अधो परजंत । चक्रादिक के धरन की गणना कौ है अंत ॥
श्री सिद्धान्त जु संहिता आरस ग्रंथ प्रमान । चतुर्विंस मूरति गणन जिहिं मधि करौं बखान ॥
कहियतु है ताही जु मत आगें करि जु विचार । चाक्रादिक जे अस्त्र तिन धरिवे कौं जु प्रकार ॥
धरैं गदाधर अरि पदम बासुदेव जू सोय । गदा संख राजीव अरि संकर्षण कर जोय ॥
अरि दर कौमोदकि पदम धर प्रद्युम्न बखानि । चक्र गदाधर पद्मकर श्री निरुद्ध हि जानि ॥
बासुदेव जू आदि सब निज निज अस्त्रहि धारि । परव्योम में रहतु है यह तुम लेहु बिचारि ॥
पद्म संख अरि गदा पुनि श्री केशव के पाणि । श्री नारायण दर पदम गदा चक्र धर जानि ॥
गदा चक्र दर सरसिरुह श्री माधब के हस्त । अरि कौमोदकि पदम दर धर गोबिंद प्रसस्त ॥
गदा पद्म दर चक्रकर विष्णु मूर्ति निरधार । मधुसूदन अरि दर पदम गदा धरैं सुख सार ॥
पदम गदा अरि दर करनि धरें त्रिबिक्रम जानि । दर अरि गदासु पद्म धर श्रीवामनजू मानि ॥
पद्म चक्र कौमोदकी दर कर श्री धर नाम । धरैं गदा अरि पदम दर हृषीकेश अभिराम ॥
पद्मनाभ दर पदम अरि गदा हस्त हैं जोय । धरें पदम दर गदा अरि श्री दामोदर सोय ॥
पुरुषोत्तम अरि पद्म दर गदाहस्त धर जानि । अच्युत कौमोदकी पदम अरि दर धारें मानि ॥
श्रीनृसिंह अरि तामरस कौमोदकि दर पानि । धरैं जनार्दन पद्म अरि दर कौमोदकि जानि ॥
श्रीहरि दर तामरस कौमोदकि कर जोय । धारें हैं श्रीकृष्ण दर गदा पद्म अरि सोय ॥
धरें अधोक्षज कर पदम गदा संख अरि जोय । श्री उपेन्द्र दर गदा अरि पद्म हस्त धर सोय ॥
पंचरात्रि हयशीर्ष जन षोडस कहै जु सोय । धारण अब चक्रादि कौ तिहिं मत कहिये सोय ॥
केशव भेद सुकमल दर गदा चक्र कर जोय । माधव भेद जु अरि गदा संख पद्म धर सोय ॥
नारायण के भेद वहु भेद-अस्त्र करि तेजु । इत्यादिक वहु भेद मधि सबै अस्त्र धर एजु ॥
श्री लीला पुरुषोत्तम जु और स्वयं भगवान । ए बिब नाम धरें जु इक ब्रजपतिनंदन जान ॥

क्रियौ प्रकास विलास कौ यहै जु विवरण आहि। अब भेद जो स्वांस कौ सुनौ सनातन ताहि॥
संकर्षण मत्स्यादिक जु और भेद ए दोय। जैसें प्रभु जू करत हैं कहैं तिन्हैं अब जोय॥
श्री संकर्षण आप हीं हैं जु पुरुष अवतार। मत्स्यादिक भगवान के हैं लीला अवतार॥
अवतार जु श्री कृष्ण के हैं षडविध जु प्रकार। एक पुरुष अवतार पुनि इक लीला अवतार॥
एक जु गुण अवतार अरु मन्वंतर अवतार। जुग अवतार जु एक अरु शक्त्यावेस विचार॥
वाल्य और पौगण्ड जे विग्रह धर्म विचार। इन रूपनि लीला करें श्रीव्रजराज कुमार॥
है अनंत अवतार प्रभु नाहिन गनना आहि। साखा चंद्र जु न्याय करि किय दिगदरसन ताहि॥

तथाहि श्रीभागवते—

अवतारा ह्यसंख्येया हरेः सत्वनिधे द्विजाः। यथा विदासिनः कुल्याः सरसः स्युः सहस्रशः॥३१॥

पहिलैं हीं श्रीकृष्ण जू करें पुरुष अवतार। वहै पुरुष पुनि जानियैं है गो त्रिविध प्रकार॥

तथाहि सात्वततन्त्रे—विष्णोस्तु त्रीणि रूपाणि पुरुषाख्यान्यथो विदुः।
एकन्तु महतः स्रष्टृ द्वितीयं त्वण्डसंस्थितं।
तृतीयं सर्वभूतस्थं तानि ज्ञात्वा विमुच्यते॥३२॥

प्रभुकी शक्ति अनंत मधि तीन शक्तिसु प्रधान। इछा शक्ति जु ज्ञान पुनि क्रियाशक्ति इक जान॥

प्रभुकी अनंतशक्ति मध्य तीन शक्ति मुख्य इछाशक्ति ज्ञानशक्ति क्रियाशक्ति नाम हैं।
इच्छा शक्ति मुख्य कृष्ण इछाही सौं सर्व करैं ज्ञानशक्ति मुख्य वासुदेव चित्र धाम हैं।
इच्छा ज्ञानक्रिया बिना होय न सृजन तातें तीननिकी तीनशक्ति मिले सृष्टि काम हैं।
क्रियाशक्ति है प्रधान संकर्षण बलराम प्राकृत औ अप्राकृत सृष्टि रचैं भाम हैं॥

अहंकार के अधिप वे कृष्ण सु इच्छा लोक। चिच्छक्ति द्वारा सृजे वैकुण्ठ जु गोलोक॥
यद्यपि नित्य असृज्य तें हैं चिच्छक्ति विलास। संकर्षण इच्छा जु करि तिनकौ तदपि प्रकास॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

सहस्रपत्रं कमलं गोकुलाख्यं महत्पदं। तत्कर्णिकारं तद्धाम तदनन्तांशसम्भवम्॥३३॥

ते माया द्वारा सृजैं गण ब्रह्माण्डनि जोय। जड़ रूपा जो प्रकृति नहिं जगत सु कारण सोय॥
जड़तें सृष्ट न होय बिन प्रभु की शक्ति सु आहि। तातें संकर्षन करैं शक्त्याधान जु ताहि॥
करैं जु प्रभुकी शक्ति करि सृष्टि प्रकृति बहु जोय। अग्निसक्ति करि लोह ज्यों दाहक शक्तिसु होय॥

तथाहि भागवते—

एतौहि विश्वस्य च वीजयोनी रामो मुकन्दः पुरुषः प्रधानं।
अन्वीयभूतेषु विलक्षणस्य ज्ञानस्य चेशात इमौ पुराणौ॥३४॥

जेई मूरति अवतरें सृष्टि हेतु संसार। तेई प्रभु की मूर्ति सब धरे नाम अवतार॥

परव्योम माया रहित तिहिं मधि सब को धाम। जग मधि अवतरि कें धरैं ते अवतार जु नाम ॥
माया के अवलोक हित श्री संकर्षण जोय। प्रथम भये अवतीर्ण श्री पुरुष रूप करि सोय ॥
तथाहि श्रीभागवते -

जगृहे पौरुषं रूपं भगवान्महदादिभिः। सम्भूतं षोडशकलमादौ लोकसिसृक्षया ॥३५॥

सयन करैं सोई पुरुष विरजा के मधि जोय। कारनाब्धिशायी प्रथा जग कारण है सोय ॥
कारणाब्धि के पार इहि माया कौ नित वास। परव्योम विरजा परें तहां न गति है तास ॥
तथाहि भागवते—

न यत्र माया किमुता परे हरेरनुव्रता यत्र सुरासुरार्च्चिताः ॥३६॥

माया और प्रधान ये माया ही की वृत्ति। उपादान जग कौ प्रकृति माया हेतु निमित्त ॥
करैं पुरुष सोई जवैं माया दिस अवधान। करैं प्रकृतिकौं क्षुभित करि वीरज कौ आधान ॥
स्वांग विशेसाभास इक रूप प्रकृति छुवि ताहि। जीवरूप वीरज तहां करै समर्पण आहि ॥
तथाहि श्रीभागवते—

दैवात्क्षुभितधर्मिण्यां स्वस्यां योनौ परः पुमान्। आधत्त वीर्य्यं सासूत महत्तत्वं हिरण्मयम् ॥३७॥

महत्तत्व तें तव त्रिविधि अहंकार विस्तार। दैवत इंद्रिय पंच तन्मात्रा भूत प्रचार ॥
सव तत्वनि के मिले तें ब्रह्मांडनि गण होय। है अनंत ब्रह्मांड तिहिं गणना केहूं न होय ॥
एई महत्स्रष्टा पुरुष महाविष्णु जिहि नाम। है अनंत ब्रह्माण्ड के रोम कूप तिहि धाम ॥
ज्यौं गवाक्ष मधि रेनु उडि आवै औ फिरि जाय। यौं इहिं पुरुष निवास सँग ब्रह्मांडजु निकसाय ॥
फिरि हूं तिहि निस्वास संग भीतर करै प्रचार। है अनंत ऐश्वर्य्य तिहिं सब माया तें पार ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—यस्यैकनिश्वसितकालमथावलम्व्येतिश्लोकः ॥३८॥

गण ब्रह्माण्ड समस्त के अन्तरयामी जोय। कारणाब्धिशायी सवै जगत हि स्वामी सोय ॥
इतनौ यहै कह्यौ हम प्रथम पुरुष कौ तत्व। द्वितीय पुरुष कौ जो कछू सुनौ अवै जु महत्व ॥
स्रज अनन्त ब्रह्माण्ड गण कोटिक पुरुष जु सोय। प्रविशे इकइक मूर्ति करि सो वह मूरति होय॥
करि प्रवेस जो देख ई है केवल अँधियार। रहिवेकौं न निवास कछु तिहि तव कियौ विचार ॥
निज अंग स्वेद जु नीर करि भरयौ अर्द्ध अज अंड। सेसहि सज्या सयन किय ताही नीरप्रचंड॥
भयौ जु ब्रह्मा कौ जनम नाभि कमल तें ताहि। तिहीं पदमनालहि भये चौदह भवन सु आहि॥
ब्रह्मा विष्णु जू रुद्र जू तिन के गुण अवतार। सृष्टि स्थिति औ प्रलय कौ तीननिकौ अधिकार॥

एई हैं हिरण्यगर्भ अंतर्य्यामी गर्भोदक सायी सहस शीर्षादि करि गावैं वेद चार।
एई जु विवि पुरुष ईश्वर ब्रह्माण्ड के है माया के आधार तऊ रहैं सदा माया पार।
तृतीय पुरुष विष्णु गुण अवतार तिहि दोऊ अवतारनि में गणना सु निरधार।
विराट व्यष्टि जीवके तेई अंतर्यामी क्षिरोदकशायी पालन के कर्त्ता स्वामी ते विचार॥

यहै पुरुष अवतार कौ गणना कियौ जु आहि । अब लीला अवतार यह सुनौ सनातन ताहि ॥
कहियतु है जु प्रधान ये दिग दरशन करि सोय । अब लीला अवतार की नाहिन गनना जोय ॥
मत्स्य कूर्म रघुनाथ श्री नरहरि वामन आहि । संख्या वाराहादि की सेस न जानै ताहि ॥

तथाहि दशमे—

मत्स्याश्वकच्छपनृसिंह वराह हंसः राजन्य विप्र विबुधेषु कृतावतारः ।
त्वं पासि नस्त्रिभुवनञ्च तथाधुनेश भारं भुवो हर यदूत्तम वन्दनं ते ॥३६॥

इह लीला अवतार कौ कियौ दिगदरसन जोय । अब प्रभु गुण अवतार ए सुनौ सनातन सोय ॥
ब्रह्मा विष्णु महेस ये तीनौ गुण अवतार । करैं त्रिगुण लैंकें जु ये सृष्टादिक व्यौहार ॥
भक्ति मिश्र कृत पुण्य जुत जो जीवोत्तम कोय । ताकौ राजस गुणहि मधि मन जु विभावितहोय ॥
द्वितीय पुरुष द्वारा जु करि तहाँ सक्ति संचार । व्यष्ट सृष्टि श्री प्रभु करैं ब्रह्मा रूप हि पार ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

भास्वान्यथाश्मसकलेषु निजेषु तेजः स्वीयं कियत् प्रकटयत्यपि तद्वदत्र ।
ब्रह्मा य एव जगदण्डविधानकर्त्ता गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि ॥४०॥

किहूं कल्प नहि पाइयै योग्य जीव जो कोय । तब ईश्वर निज अंस करि आपुन ब्रह्मा होय ॥

तथाहि—ब्रह्मा भवोऽहमपि यस्य कला कलायाः ॥ इतिश्लोकः ॥४१॥

कृष्ण निजांस कला सु करि तम गुण अंगीकार । प्रलय हेतु माया संगी रुद्र रूप कौं धारि ॥
रुद्र विकारी प्रकृति सँग भिन्न अभिन्न रूप । जीव तत्व हूं नाहिने नहि कृष्णांस स्वरूप ॥
ज्यौं दधि अम्ल इ जोग करि धारे दधि जु स्वरूप । पयतें और न वस्तु सो ह्वै न सकै पयरूप ॥

तथाहि ब्रह्मसंहितायां—

क्षीरं यथा दधि विकार विशेष योगात् संजायते नतु ततः पृथगस्ति हेतोः ।
यः शम्भूतामपि तथा समुपैति कार्य्यात् गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि ॥४२॥

सिव संगी माया सकति औ तम गुण आवेस । माया तीत जु गुण रहित आप विष्णु परमेस ॥

तथाहि श्री भागवते—

शिवः शक्तियुतः शश्वत् त्रिलिंगो गुणसंवृतः । वैकारिकस्तैजसश्च तामसश्चेत्यहं त्रिधा ॥

पालनार्थ निज रूप करि होय विष्णु अवतार । है दृष्टान्त जु सत्व गुण तमगुण माया पार ॥
पूर्ण स्वरूपैश्वर्य्य करि प्राय कृष्ण सम जोय । अंसी कृष्ण सु अंस सो गावे वेद सु सोय ॥

तथाहि ब्रह्म संहितायां—

दीपार्च्चिरेव हि दशान्तरमभ्युपेत्य दीपायते विवृत हेतु समान धर्म्मा ।
यस्तादृगेव हि च विष्णुतया विभाति गोविन्दमादि पुरुषं तमहं भजामि ॥४४॥

आज्ञाकारी अज सिव जु तासु भक्त अवतार । पालनार्थ श्री विष्णु तिंहिं है स्वरूप आकार ॥

तथाहि श्री भागवते—

सृजामि तन्नियुक्तोहं हरो हरति तद्वशः। विश्वं पुरुषरूपेण परिपाति त्रिशक्तिधृक् ॥४५॥

मन्वन्तर अवतार अब सुनो सनातन जोय। है असंख्य गणना जु तिहिं कारण सुनौ जु सोय॥
ब्रह्मा के इक दिवस मधि मन्वंतर दस चारि। तिन में ईश्वर करत है चौदह हीं अवतार॥
ये चौदह इक दिवस मधि मास चार सै बीस। ब्रह्मा के इक दिवस मधि पंच सहस्र चालीस॥
अज को इक सत बरस लौं है जीवन निरधार। चारि सहस लख पंच तहां मन्वतर अवतार॥
है अनंत ब्रह्माण्ड इमि गणना करौ सु ताहि। महाविष्णु के स्वास इक अज कौ जीवन आहि॥
महा विष्णु को स्वास जो नहि तिन के पर्य्यन्त। मन्वंतर अवतार इक गणना कौ लहि अन्त॥

कवित्त

स्वायंभुव मन्वन्तर यज्ञ भगवान जानि स्वारोचिष माहि धरैं प्रभु विभु नाम है।
उत्तम में सत्यसेन तामस में हरिनाम रैवत मनु नाम वैकुंठ अभिराम है।
चाक्षुस में श्री अजित वैवस्वत वामन जू सावर्न में सार्वभौम नाम अति वाम है।
दक्षशावर्णी ऋषभ ब्रह्मसावर्न्य मनु में विश्वक्सेन सोई प्रभु जन सुखधाम है॥
धर्मसेतु नाम धर्मसावर्न मन्वन्तर में रुद्रसावर्ण्य मनु सुधामा भगवान हैं।
योगेश्वर भगवान दैव सावर्ण्य में इन्द्र सावर्ण्य मनु में बृहद्भानु अभिधान है।
चौदह मन्वन्तर ये चौदो अवतार नाम सुनौ सनातन अब जुग प्रभु ध्यान है।
सत्य त्रेता द्वापर औ कलियुग की गनना सुक्ल रक्त कृष्ण पीत चारि वर्ण वान है॥

क्रम करि इनि चारौं जुगनि धरें वर्ण ये चारि। चारिवर्ण धरि करैं हरि युग के धर्म प्रचारि॥

तथाहि श्रीभागवते—

आसन् वर्णा स्त्रयो ह्यस्य गृन्हतोऽनुयुगं तनूः। शुक्लो रक्तस्तथा पीत इदानीं कृष्णतां गतः॥४६॥

शुक्लमूर्ति धरि सत युगहि धर्म करावै ध्यान। कर्दम कौ वर दियौ जिहि कृपा जु करि भगवान॥
अधिकारी सब ज्ञान के करैं ध्यान हरि लोय। जज्ञ धर्म त्रेता करैं रक्तवर्ण धरि सोय॥
द्वापर युग कौ धर्म है हरि पादार्चन जोय। कृष्ण वर्ण प्रेरैं करैं जन कृष्णार्चन सोय॥

तथाहि श्री भागवते—

द्वापरे भगवान् श्यामः पीतवासा निजायुधः। श्रीवत्सादिभिरंकैश्च लक्षणैरुपलक्षितः॥४७॥

तथाहि तत्रैव—

नमस्ते वासुदेवाय नमः संकर्षणाय च। प्रद्युम्नायानिरुद्धाय तुभ्यं भगवते नमः॥४८॥

इहीं मंत्र द्वापर करैं कृष्ण समार्चन लोय। कृष्ण नाम संकीरतन कलि कौ धर्म सु सोय॥
पीत वर्ण धरि कैं जु हरि कियौ प्रवर्तन ताहि। प्रेमभक्ति लोकनि दई भक्तगननि लै आहि॥
श्री व्रजेन्द्र नदंन करें धर्म प्रवर्तन जोय। नाचैं गावैं प्रेम बस करैं कीरतन लोय॥

तथाहि तत्रैव—

कृष्णवर्णं त्विषाकृष्णं सांगोपांगास्त्रपार्षदं । यज्ञैः संकीर्त्तनप्रायैर्यजन्ति हि सुमेधसः ॥४६॥

और तीनजुग मध्यजो ध्यानादिक फल होय । कृष्णनाम करि पायहैं कलि जुग फल सब सोय ॥

तथाहि तत्रैव—

कृते यद्ध्यायते विष्णुं त्रेतायां यजतो मखैः । द्वापरे परिचर्य्यायां कलौ तद्धरिकीर्त्तनात् ॥५०॥

विष्णुपुराणे—

ध्यायन्कृते यजन्यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्च्चयन् ।
यदाप्नोति तदाप्नोति कलौ संकीर्त्य केशवम् ॥५१॥

युग अवतार समूह अब लिखे प्रथम ज्यौं आहि । है असंख्य संख्या कथन नहैं गनन हैं ताहि ॥
चारियुगनि अवतार कौ यह जु विवरण आहि । सुनि जु सनातन पूछई करिकैं भंगी ताहि ॥
नृप मंत्री ते बुद्धि करि सुरगुरु की सम जोय । पूछैं प्रभु की कृपा करि असंकोच मति होय ॥
जीव खुद्र अति नीच हौं पुनि अति नीचाचार । कैसैं करि हौं जानि हौं कलि में कौ अवतार ॥
प्रभु कहि शास्त्र द्वार अवतार जानियै आन । तैसैं कलि अवतार हूं सास्त्र वाक्य करि मान ॥
सर्वज्ञाता मुनि वचन सास्त्र वहै परमान । होय जीव हम सवनि कैं सास्त्र हि द्वारा ज्ञान ॥
कहै नहीं अवतार यह हम हैंगे अवतार । मुनि ही ये सब जानई करि लछन जु विचार ॥

तथाहि—

यस्यावतारा ज्ञायन्ते शरीरिष्वशरीरिणः । तैस्तैरतुल्यातिशयैर्वीर्य्यैर्देहिष्वसंगतैः ॥५२॥

इन लच्छण करि वस्तु कौ जाने मुनिगण रूप । आकृति प्रकृति स्वरूप कौ यह लच्छण जु स्वरूप ॥
है तटस्थ लच्छण जु इन अरु लच्छण जु स्वरूप । कारज द्वारा जानियें यह तटस्थहि रूप ॥
श्रीभागवतारंभ मधि मंगल करि मुनि व्यास । इन विवि लच्छण करि कियौ प्रभु कौ रूप प्रकास ॥

तथाहि—

जन्माद्यस्य यतोऽन्वयादितरतश्चार्थेष्वभिज्ञः स्वराट्,
तेने ब्रह्म हृदा य आदिकवये मुह्यन्ति यत्सूरयः ।
तेजो वारिमृदां यथा विनिमयो यत्र त्रिसर्गोऽमृषा,
धाम्ना स्वेन सदा निरस्तकुहकं सत्यं परं धीमहि ॥५३॥

इहि पद में पर शब्द किय कृष्ण निरूपण आहि । पुनि स्वरूप लच्छण कह्यौ सत्य शब्द करि ताहि ॥
कियौ जिन्हौं या शब्द कौ सृष्ट्यादिक त्रय सोय । ब्रह्मा कौ हिय प्रेरि कैं वेद पढ़ाये जोय ॥
कही जु अर्थाभिज्ञता जाकी जगत प्रसस्त । और स्वरूप जु शक्ति करि माया करी निरस्त ॥
है तटस्थ लच्छण जु ये सब ही कारज ताहि । ऐसैं अरु अवतार हू जाने मुनिगण आहि ॥
होय समैं अवतार के जगत सु गोचर सोय । इन ही सब लच्छण जु करि प्रभु कौं जानें कोय ॥

कहैं श्री सनातन जू जहां ईस लच्छण ये पीतवर्न कीरतन काज प्रेमदान हैं।
सोई अवतार कृष्ण निहचें कलिकाल में दृढ़ करि कहौ जाय संसय निदान है।
प्रभु कहैं चतुराई तजौ तुम सनातन सुनौ शक्त्यावेस अवतार भगवान हैं।
कीजियै जो विवरन शक्त्यावेस अवतार कृष्ण के असंख्य नाही तिन कौ प्रमान हैं ॥

कहैं दिग दरसन करि मुख्य मुख्य जन शक्त्यावेश दोय रूप मुख्य गौण जानियैं।
साक्षात् शक्ति करि जु धरैं अवतार नाम होय जु अभास केई विभूति ताहि मानियैं।
सनकादिक नारद पृथु औ परसराम जीव रूप अज आवेशावतार ठानियैं।
वैकुण्ठ में सेस धराधर श्री अनंत जेई जन मुख्यावेश अवतार सोई ठानियैं ॥

ज्ञान शक्ति सनकादि मधि नारद शक्ति सु भक्ति। अजमें सृजन अनंत मधि भूधारणकी शक्ति ॥
शक्ति स्व सेवन सेस मधि पालन पृथु पृथ्वीस। दुष्टनि नासक वीर्य्य को संचारण भृगु ईस ॥

तथाहि भागवते—

ज्ञान शक्त्यादि कलया यत्राविष्टो जनार्दनः। तत्रावेशा निगद्यन्ते जीवा एव महत्तमाः ॥५४॥

ज्यौं गीता एकादसहि कह्यौ विभूति जु सोय। कृष्णजु शक्त्याभास करि व्यापि रह्यौ जगजोय ॥

तथाहि गीतायां—

यद्यद्विभूतिमत् सत्वं श्रीमदूर्जितमेव वा। तत्तदेवावगच्छ त्वं मम तेजोंऽशसम्भवम् ॥ ५५ ॥

तत्रैव—एकांशेन स्थितो जगत् ॥५६॥

ये ई शक्त्यावेस करि कहें जु प्रभु अवतार। सुनौ वाल्य पौगण्ड इनि धर्मनि कौ जु विचार ॥
धर्मी नित्य किसोर मनि श्री व्रजराज कुमार। प्रगट सुलीला करन कौं जब मन करें विचार ॥
प्रगट करावै प्रथम जन तात मात गण जोय। जन्मादिक लीला करें पाछें प्रगट सु होय ॥

तथाहि रसामृतसिन्धौ—

वयसो विविधत्वेऽपि सर्व्वभक्तिरसाश्रयः। धर्म्मी किशोर एवात्र नित्यलीलाविलासवान् ॥

पूतनादि संहार ये लीला छिन छिन तास। करैं अनुक्रम करि सवै लीला नित्य प्रकास ॥
है अनन्त ब्रह्माण्ड तिहिं नाहि न गणना जोय। कोऊ लीला कब प्रगट किहिं ब्रह्मण्डहि होय ॥
इहिं विधि सब लीला अखँड ज्यौं सुरसरि की धार। ते ते सब लीला प्रगट करें व्रजेन्द्रकुमार ॥
वाल्य और पौगंड पुनि वय किशोरता ताहि। प्राप्ति होय क्रम ही जु करि समें ममें मधि आहि ॥
रासादिक लीला करें नित्य विहारी सोय। नित्यस्थिति तिन की रहै वय किशोर मधि सोय ॥
नित्यसु लीला कृष्णकी कहैं शास्त्र सव आहि। बूझ सकै नहि कौन विधि लीला नित्य जु ताहि ॥
कहियै जव दृष्टांत दै तव सब जानें जान। कृष्ण नित्यलीला जु कौ ज्योतिचक्र उपमान ॥
ज्यौं रवि ज्योतिश्चक्र मधि भ्रमें रैंन दिन जोय। सप्तदीप अम्बुधिनि लघि क्रम करि फिरै जु सोय ॥

होय रात्रि औ दिवस ये घटी जु साठि प्रमान। तीन सहस पटशत पल जु तिन के माही जान ॥
भानु उदैं तें साठि पल क्रम करि उदै जु सोय। एक घरी सोई घरी अष्ट प्रहर इक जोय ॥
एक दोय त्रय चारि मधि प्रहर अस्त रवि होय। चारि प्रहर निसि गयें फिरि रविकौ उदौ जु सोय ॥
यौं प्रभु लीला मंडल जु मन्वंतर दस चार। क्रम क्रम फिरै सुव्यापिकैं ब्रह्माण्डनि जु अपार ॥
बरस सवासै कृष्ण कौ रहै जु प्रगट प्रकास। ताही मधि तेई करें व्रज पुर माहि विलास ॥
फिरैं अलात जु चक्र ज्यौं लीला चक्र जु सोय। सब लीला ब्रह्माण्ड सब क्रम करि उदैं जु होय॥
जन्म बाल्य पौगंड पुनि वय कैशोर प्रकास। लीला बकी वधादिये मौशलांत जु विलास ॥
कोऊ लीला कब किहूं ब्रह्मांड स्थिति जान। तातें लीला नित्य ही कहैं जु वेद पुरान ॥
गोकुल औ गोलोकमधि कृष्णजु विभु सम आहि। तिहि इच्छा करि अंडगण मधि संक्रमहैं ताहि॥
याहीतें गोलोक मधि तिनकौ नित्य विहार। ब्रह्माण्डनि गण क्रमजु करि तिहिं प्रागट्य विचार ॥
व्रज के मधि श्री कृष्ण कौ सर्वैश्वर्य्य प्रकास। ताही तें हैं पूर्णतम तहां कृष्ण रस रास ॥
मथुरापुर द्वारावती परव्योम मधि जान। क्रम करिकें हैं पूर्ण तर जहां पूर्ण भगवान ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

हरिः पूर्णतमः पूर्णतरः पूर्ण इति त्रिधा। श्रेष्ठ मध्यादिभिः सर्व्वैर्नाट्ये यः परिकीर्त्तितः।
प्रकाशिताखिलगुणः स्मृतः पूर्णतमो बुधैः। असर्व्वव्यञ्जकः पूर्णतरः पूर्णोऽल्पदर्शकः॥
कृष्णस्य पूर्णतमता व्यक्ताभूत गोकुलान्तरे। पूर्णता पूर्णतरता द्वारका मथुरादिषु ॥

व्रज ही मधि है पूर्णतम कृष्ण स्वयं भगवान। अरु स्वरूप सब पूर्णतर पूर्ण नाम जिहिं जान ॥
यहै कह्यौ संक्षेप करि कृष्ण स्वरूप विचारि। कहन सकै जु अनन्त हूं इन कौ करि विस्तारि ॥
कृष्ण स्वरूप अनंतहै नाहिन गणना ताहि। साखा चंद्रजु न्याय करि दिग दरसन किय आहि ॥
पढ़ै सुनें जोई जु इह भाग्यवान है सोय। कृष्ण स्वरूपसु तत्व कौ कछुक ग्यान तिहिं होय ॥
श्री जु रूप रघुनाथ के पदरज की जिहिं आस। प्रभु चरितामृत कौं कहैं कृष्णदास तिहिं दास ॥
रूप सनातन जगत हित सुबल श्याम पद आस। प्रभु चरितामृतसो लिखै व्रजभासाहि प्रकास ॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखंडे व्रजभाषायां सम्बन्धतत्व भगवत्तत्व निरूपणं नाम विंशतिपरिच्छेदः ॥

एकविंशति परिच्छेदः

अगत्येकगतिं नत्वा हीनार्थाधिकसाधकं।
श्रीचैतन्यं लिखाम्यस्य माधुर्य्यैश्वर्य्यशीकरम् ॥१॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद। जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
परव्योम निज धाम में सब स्वरूप के धाम। पृथक पृथक वैकुण्ठ सब नहिं गणना कौ नाम ॥

सात सहसायुत लच्छ औ कोटिक जोजन आहि । एक एक वैकुण्ठ कौ विस्तृत वर्णन ताहि ॥
व्यापक आनन्द चिन्मय सब वैकुंठ सु आहि । पूरण षट ऐश्वर्य्य सब रहैं जु पारषद ताहि ॥
एक एक तिहि देस मधि है वैकुंठ अपार । परव्योम ऐसो जु तिहिं गनै जु को विस्तार ॥
है अनन्त वैकुण्ठ जे व्योम जाहि दल पांति । कृष्ण लोक सर्वोपरि जु है मधि कली सुकांति ॥

तथाहि—

को वेत्ति भूमन् भगवान् परात्मन्, योगेश्वरोतीर्भवतस्त्रिलोक्यां ।
क्काहो कथं वा कति वा कदेति, विस्तारयन् क्रीडसि योगमायाम् ॥२॥

ऐसैं षट ऐश्वर्य्य जिहि और धाम अवतार । ब्रह्मा सिव अंत न लहै कौन जीव यह छार ॥

तथाहि—

गुणात्मनस्ते गुणान् विमांतु हितावतीर्णस्य क ईशिरेऽस्य ।
कालेन यैर्व्वा विमिताः सुकल्पै भूपांशवः खे मिहिका द्युभासः ॥३॥

ऐसौ है श्री कृष्ण कौ षट गुण दिव्य अनंत । ब्रह्मा शिव सनकादि ये नहि पावैं तिहि अंत ॥
रहौ दूर ब्रह्मादिक जु बदन सहस्र अनंत । इतनें मुख गावै सदा लहैं न गुणगण अंत॥

तथाहि—

नान्तं विदाम्यहममी मुनयोऽग्रजास्ते मायाबलस्य पुरुषस्य कुतोऽवरा ये ।
गायन् गुणान् दशशतानन आदिदेवः शेषोऽधुनापि समवस्यति नास्य पारम् ॥४॥

सोऊ सेस रहौ महा विज्ञ शिरोमनि कृष्ण । निज गुण को अन्त न लहै तिन में रहै सतृष्ण ॥

तदुक्तं श्रुतिभिः—

द्युपतय एव तेन ययुरन्तमनन्ततया त्वमपि यदन्तराण्डनिचया ननु सावरणाः ।
ख इव रजांसि वान्ति वयसा सह यत् श्रुतयस्त्वयि हि फलन्त्यतन्निरसनेन भवन्निधनाः ॥५॥

सोऊ रहौ जु कृष्ण जब ब्रज में किय अवतार । तिनकौ चरित विचार तें मन नहि पावैं पार ॥
अप्राकृत प्राकृत सृजन किय इक छिन मधि रंग । ये वैकुण्ठ अजाण्ड गण निजरच्नाथनि संग॥
जैसौं सुन्यौं न और ठां अचिरत अद्भुत जानि । होय जु जाके सुनतही हिये वड़ी व्यौरानि ॥
वत्स असंख्य जु कृष्ण के शुक मुनि वानी आहि । कृष्ण संग कितने सखा संख्या नाहिन ताहि॥
इक इक गोप करै सु जिन बछरन चारन आहि । कोटिसु अर्बुद संख पुनि पदम सुगणना ताहि॥
वेत्र वेणु दल सृंग पुनि ये वस्त्रालकांर । गोप गननि के जिते तिन गनना को नहि पार ॥
सबै भये बैकुन्ठ पति और चतुर्भुज आहि । इक इक सब ब्रह्माण्ड मधि अज नुति करै जु ताहि॥
बपु हीते इक कृष्ण के तिन सब कौ जु प्रकास । छिन इक में तिन सबनि कौ भौ प्रवेस बपु तास॥
यह लखि कैं ब्रह्मा भयौ मोहित विस्मित सोय । नुति करकें पाछें कियौ यहैं जु निश्चै सोय ॥
हौं जानौं सब कृष्ण कौ वैभव कहैं जु कोय । सोई जानौ काय मन हों नहिं जानौं जोय ॥
वैभव सुधा समुद्र तुव यह जु अंत नहि आहि । मेरी बानी मनहि गनि नहीं विंदु इक ताहि ॥

रहौ सुमहिमा कृष्ण की तिहिं ज्ञाता है कोय। लखि वृन्दावन धाम की विभुता अचिरज सोय॥
श्रीवृन्दावन धाम निज सोरह कोस जु सोय। सब शास्त्रनि के मधि कियौ तिहि प्रमान यह जोय॥
बैकुंठ अजाण्ड ये जे इक प्रदेस मधि ताहि। बड़े बड़े अनगिन फिरैं यह महिमा तिहि आहि॥
है अपार श्री कृष्ण कौ प्रभुता सागर जोय। मन इंद्रिय प्रभु के मगन भये जु व्याकुल सोय॥
एक भागवत कौ जु पद कहिकें आपुन आहि। अर्थ स्वाद हित सुख सहित करें अर्थ यौं ताहि॥

तथाहि—

स्वयं त्वसाम्यातिशयस्त्र्यधीशः स्वाराज्यलक्ष्म्याप्तसमस्तकामः।
बलिं हरद्भिश्चिरलोकपालैः किरीटकोटीड़ितपादपीठः॥७॥

परम ईश्वर कृष्ण हैं आप स्वयं भगवान। तिन तें बडौ समान तिहिं नाहीं कोऊ आन॥

तथाहि—

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्दविग्रहेति श्लोक॥ ८॥

ब्रह्मा हरि हर ये जु हैं सृष्ट्यादिक के ईस। आज्ञा कारी कृष्ण के तीनौं कृष्ण अधीस॥

तथाहि—

सृजामि तन्नियुक्तोऽहं हरो हरति तद्वशः। विश्वं पुरुषरूपेण परिपाति त्रिशक्तिधृक्॥ ६॥

अर्थ सुनौ जु त्रिधीस कौ अरु सामान्य बिचार। हैं कारण सब जगत के तीन पुरुष अवतार॥
महाविष्णु नाभि जु पदम क्षीरोदक प्रभु चीन। स्थूल सूक्ष्म सब के जु ये अंतरजामी तीन॥
सब के आश्रय तीन ये येई जग के ईस। तेऊ कला जु अंस जिहिं सो श्री कृष्ण अधीस॥

तथाहि—

यस्यैकनिः श्वसितकालमथावलम्ब्येति श्लोकः॥१०॥

यह अर्थ मध्यम जु है सुनौ अर्थ अरु सार। कृष्ण निवास स्थान ये तीन जु सास्त्र प्रचार॥
अतंपुर गोलोक पुनि वृन्दावन रस सिंधु। जहां सु नित्य स्थिति करैं तात मात गण बंधु॥
परममधुर ऐश्वर्य्य जो पुनि माधुर्य्य अपार। सहज कृपादिक गुणनि के परि पूरण भंडार॥
शक्ति योगमाया जहां जिहिं दासी है सोय। जहां सु लीला सरस है रासादि कही जोय॥

तथाहि—

करुणानिकुरम्बकोमले मधुरैश्वर्य्यविशेषशालिनि। जयति व्रजराजनन्दने नहि चिन्ताकणिकाभ्युदेति नः॥

पर व्योम ताके तलें विष्णु लोक जिहि नाम। है नारायण आदि बहु जे स्वरूप तिहि धाम॥
मध्यम पुर श्री कृष्ण कौ षडैश्वर्य्य भंडार। जहां अनतं स्वरूप तिहिं करैं जु विविध बिहार॥

सोरठा

जिहिं बैकुंठ अनतं है भण्डार सु कोठरी। गण जु पारषद संत सुषडैश्वर्य्य भरी रहैं॥

तथाहि—

प्रधानपरमव्योम्नोरन्तरे विरजा नदी। वेदांगस्वेदजनितैस्तोयैः प्रस्नाविता शुभा॥१२॥
तस्याः पारे परव्योम त्रिपाद्भूतं सनातनं। अमृतं शाश्वतं नित्यमनन्तं परमं पदम्॥१३॥

बाह्य निवास जु तिहिं तलें है बिरजा के पार। जहां अनंत अजांड की है कोठरी अपार॥
दैवी धाम जु नाम तिहि जीव निवासी जाहि। जग लक्ष्मी जहां बसति है माया दासी ताहि॥
इन तीनौ धाम निजु के कृष्ण अधीस्वर सोय। है जु धाम गोलोक परव्योम प्रकृति पर जोय॥
नाम त्रिपादैश्वर्य्य चित शक्ति विभूति जू धाम। औ मायिक जु विभूतिसो एक पाद तिहिं नाम॥

तथाहि—

त्रियाद्विभूते धामत्वात् त्रिपाद्भूत हि तत्पदं। विभूतिर्मायिकी सर्व्वा प्रोक्ता पादात्मिका यतः॥१४॥

कृष्ण त्रिपाद विभूति जो बचन अगोचर आहि। है इक पाद विभूति प्रभु सुनि विस्तार जु ताहि॥
जिते अनंत अजांड मधि ब्रह्मा शिव गण आहि। लोक पाल बहु शब्द की गणना कहियत ताहि॥
द्वारावति मधि एक दिन कृष्ण देखिबे चाय। अज आयौ द्वाराधिपजु कह्यौ कृष्ण सौं जाय॥
कृष्ण कहै अज कौन सौ कहा नाम है ताहि। द्वारपाल फिरि आय कैं अज कौं पूछ्यौ आहि॥
द्वारपाल सौं जब कह्यौ ब्रह्मा बिस्मित होय। कह्यौ जाय आयौ सनकपिता चतुर्मुख सोय॥
द्वारप कृष्ण जनाय कैं अजहिं लै गयौ सोय। अज चरणन मधि कृष्ण के गिरचौ दंडवत होय॥
कृष्ण अतिथि पूजा करी प्रस्न करी पुनि ताहि। कौन हेतु तुमरौ इहां भयौ आगमन आहि॥
ब्रह्मा कहैं निवेदन सु पाछें करि हैं ताहि। यह संसै मन में जु तिहिं करौ सुछेदन ताहि॥
तुम पूछ्यौ अज कौन वह आशय कहा जु ताहि। मो बिन ब्रह्मा जगतमधि और कौन सो आहि॥
सुनिकें हँसै जु कृष्ण जू तबै कियौ कछु ध्यान। ब्रह्मा के गन अनगणत आये तिहिं छिन जान॥
दस औ बीस सहस्र पुनि अजुत लक्ष मुख सोय। कोटि सु अर्बुद बदन किहिं नाहिन गणना जोय॥
तहां जु आये रूद्रगण लक्षकोटि मुख ऐंन। और जु आये इंद्रगण लक्षकोटि जिहि नैंन॥
देखि चतुर्मुख अज भयौ अति ही विस्मित जोय। गजराजनि के गनन मधि रह्यौ ससा ज्यौं सोय॥
आप जु सब अज कृष्ण के पाद पीठ सौं लागि। करैं दण्डवत गिरि जु कें मुकुट चरण सौं पागि॥
शक्ति अचिन्त्य जु कृष्ण की पाय सकै न कोय। जितने अज मूरति तिति एकहि वस्तु करि सोय॥
मुकुट अग्र पद पीठ सौं घसैं उठै धुनि जोय। पाद पीठ की नुति करें मुकुट जानियें सोय॥
ब्रह्मा रुद्रादिक जु नुति करैं जोरि निज पानि। बड़ी कृपा कीनी जु प्रभु चरण दिखाये आनि॥
भागि हमारे सुधि किये दासननिकें आहि। कौन सु आज्ञा है हमैं सिर पर धरैं जु ताहि॥
कृष्ण कहै तुम सबनि के लखिबैं चित भौ जोय। ताके हित इकठे सबै हम जु बुलाये सोय॥
सुखी होहु सब ही कछू नहीं दैत्य भय आहि। सबठां जय तुब कृपा करि यौं सब कहैं जु ताहि॥
संप्रति जो अब कछु हुतो या पृथिवी कौ भार। अवतीरण ह्वै कै कियौ तुम ताकौ संहार॥
इक पुर की जु विभूति जो ताकौ इतौ प्रमान। कृष्ण जु ममब्रह्माण्ड के यह सबकौं भौ ज्ञान॥
कृष्ण सहित पुर वैभव जु भौ अनभव सब काहि। काहू काहू कौं लखौ इक ठां मिलन जु आहि॥
चारि बदन अज कैं भयौ चमत्कार लखि हीय। कृष्ण चरण मधि आयकैं नमस्कार तिन कीय॥

ब्रह्मा कहैं जु प्रथम हीं मैं निश्चै किय जोय। ताको आजु उदाहरण प्रगटहि देख्यौ सोय।

तथाहि—

जानंतु एव जानन्तु किं वहूक्तया न मे प्रभो। मनसो वपुषो वाचो वैभवं तव गोचरम् ॥१५॥

कृष्ण कहैं ब्रह्माण्ड यह जोजन कोटि पचास। जातें अति ही छुद्र तुव वदन चारि परकास ॥
कोऊ अज सत कोटि हैं लच्छ कोटि हैं कोय। कोऊ नियुत कोटि पुनि कोटि कोटि किहि जोय ॥
अज के बदन सरीर जो है अजांड अनुरूप। ब्रह्माण्डन के गण जु हौं पालो याही रूप ॥
हैं विभूति इक पाद इह नहि प्रमान यह जान। त्रिपद विभूतिसु व्योमकौ के करि सकै प्रमान ॥

तथाहि—त्रिपाद्भुतं सनातनमिति ॥१६॥

तव अज कौं श्रीकृष्ण जू विदा कियौ समुझाय। कृष्ण विभूति सरूप जो जान्यौं क्यौंहि न जाय॥
अर्थ अधीस सब्द कौ और गूढ़ है जोय। कहियत है जु त्रिशब्द करि तीन लोक प्रभु सोय ॥
गोकुल गोलोक मधुपुरी द्वारावती सु आहि। इन ही तीनौ लोकमधि सहज स्थिति नित ताहि ॥
अन्तरंग ऐश्वर्य्य करि पूर्णधाम त्रय जान। तीनौ धाम अधीश्वर जु कृष्ण स्वयं भगवान ॥
पूर्व उक्त ब्रह्माण्ड के जितेक दिगपति जोय। अनन्त बैकुण्ठावरण लोकपाल वहु सोय ॥
आगें हरि पद पीठ कैं मुकट सवनि कैं आहि। तिहिं मणि समै जु दंडवत पाद पीठ लगि ताहि ॥
धकाधकी मनि पीठकी उठै सु झन झनकार। करैं जु तुति पद पीठ कौं किय अनुमान विचार ॥
कृष्ण जु निज चिच्छक्ति करि राजमान नितिधाम। चिच्छक्ति हि संपतिकौ पट एश्वर्य्यसु नाम॥
तिहीं स्वाराज्य श्री जु करि पूर्न काम निति जाम। याही तें वेद जु कहैं कृष्ण स्वयं भगवान ॥
कृष्णैश्वर्य्य अपार यह अमृत सिंधु जो आहि। सकै नहीं अवगाह करि छियौ एक विंदु याहि ॥
कहत ईसता कृष्ण की भई स्फूर्ति तव ताहि। माधुरिमधि मन मगन भौ पढ़्यौ श्लोक इक ताहि॥

तथाहि—

जन्मर्त्यलीलौपयिकं स्वयोगमायावलं दर्शयता गृहीतं।
विस्मापनं स्वस्य च सौभगर्द्धेः परं पदं भूषणभूषणांगम् ॥

भैरवराग

सुनि हौ सनातन कृष्ण कौ मधुर रूप।
त्रिभुवन मगन करै हरैं सव जीन मन परम मादक जा कौ एक कण अनूप ॥
हरि लीला जिती घनी नर लीला मुकुटमनी नरवपु ह्वै सदा निज स्वरूप ताहि।
गोपवेस वेणु पाणि नव किशोर अति सुजान नटवर नर लीला है सोई अनुरूप आहि ॥
जोगमाया शक्ति चित्र विमलसत्व ही की विकृति, लोकनि दिखायवेकौं ताके वलकौ प्रमान।
यहै रूप महारतन भक्तनिकौ गूढधन, कीनौ नरलोक प्रगट नित्यलीला हीतैं आन ॥
अपनौं निज रूप देखि अचिरज हरिहिय विशेषि तासौं भोग करिवेकौ उपजै तिहिं हृदय काम।

जाको सौभाग्य नाम सुन्दरतादि गुणनि ग्राम यह रूप तिन के हैं सहज नित्य धाम ॥
भूषण के भूषण अंग जहां ललित अति त्रिभंग तापर भ्रू भंग धनुष जुग लरै लास ।
बान तिरछे नयन सुदृढ़ तिनकी चलन लक्ष हैं गोपिका गणनि मन जास ॥
कोटि ब्रह्माण्ड परव्यौम मधि जिति है मनहर स्वरूप तिन मन हि हरई ।
वेदवानी कहै जाहि सति मुकुटमनि तिहीं लक्ष्मीगनाकर्ष करई ॥
चढ़ि गोपीगण मनरथै मनमथ हि मन मथै मदन मोहन धरै तवै निज नाम ।
जीति कंदर्प कौ दर्प नव काम बपु गोपीगण लै करै रास अभिराम ॥
अपनें सब सखा संग धेनु चारण रंग मध्य वृन्दाबन हि बिहरें स्वछंद ।
वेणु धुनि जासु सुनि अश्रधारा वहै कंप औ पुलक धरैं चर अचर वृन्द ॥
हार वगपाति औ इन्द्र धनु पिछ तति बीजुरी पीत पट करै संचार ।
स्याम नव जलद बर जगत सस्य हि उपरि बरषई सुखद लीला अमृत धार ॥
माधुरी ईसता सार किय ब्रज प्रचुर ताहि सुक मुनि व्यास सुत ठांब ठांही ।
जीवन जनायवे कथन किय भागवत याहि सुनि भक्त मन मत्त ह्वै जांही ॥
कहत श्रीकृष्ण रस पद्य पढ़ि प्रेम बस नेह करि करि सनातनकें हीये धरिकें ।
गोपिका भाग्य गुण कृष्ण के जे कहे नगर नारि नु भाव हियें भरिकें ॥

तथाहि—गोप्यस्तपः किमचरनितिश्लोकः ॥

यथा पद्य—सखि है गोपीगण कौन तप कीनौं ।
कृष्ण रूप माधुरी नेत्र भरि भरि पीय श्लाघा करै जन्म तन मन रंग भीनौं ॥
तारुण्यामृत सिंधुआहि लावण्यसार बीची जाहि तामें काम भाव भौंर उठत अपार ।
वंशी धुनि चक्र बात नारीमन तृणपात तिन्है तहां बोरें फेर उठे न संभार ॥
नहि समान अधिक आन कोऊ तिहिं माधुरीसौं वैकुण्ठ के स्वरूपगननि मांही ।
सब के अवतारी बैकुण्ठहि अधिकारी जे तिनहूँ नारायण में मधुरता सुनांही ॥
ताकी साखि बहै रमा नारायण प्रियतमा प्रतिव्रता गणन की उपास्य सदाई ।
तिनहूं जिहि माधुरीके लोभ छाडि कामभोग करीहै तपस्या ब्रत धरिकें अधिकाई ॥
सोतौ माधूर्य्य सो रतिन कें नहि अन्य सिद्ध वेतो माधूर्य्य आदि गुणनकी खानि आही ।
और सब प्रकास आहि भाये गुण दियें ताहि जहां जितौ काज जानें प्रगट करें ताही ॥
गोपीभाव दर्पन जो छिनहीं छिन नयौ नयौ आगें तिहिं कृष्ण जू की माधुरी अपारा ।
कोऊ करि होड़ाहोड़ी बाढ़ें नहिं मौरैं मुख नव नव प्राचूर्य्य धरैं माने नहीं हारा ॥
कर्म सुतप यज्ञ दान वैधीभक्ति जोग ज्ञान करि माधुर्य्य वहै दुर्ल्लभ अति जानौं ।
शुद्ध राग पथहि भजैं कृष्ण हि अनुराग पगि माधुरी श्री कृष्णजू की ताहि सुलभ मानौं ॥

वहै रूप ब्रज निवास प्रभुता माधुर्य्य रास दिव्य गुण समूहन कौ रत्नालय सोय।
औरनि वैभव हि सत्ता कृष्णदत्त भगवत्ता सर्वांसी सर्वाश्रय नंद सुवन जोय ॥
श्रीलज्जा दया कीर्ति धैर्य्य मति विसारदी सु येई गुण नित्य सदा कृष्ण में निवासी।
मृदु सुसील औ वदान्य कृष्णकी न तुल्य अन्य जगतकौ हित करैं कृष्ण विविध रस विलासी ॥
नाना जन हरिहि देखि कीनें निंदन निमेष ब्रजहि मधि विधिहि निंदे गोगण सनेही।
तेई सब पद्य पढ़ि कैं करिकें अर्थ महाप्रभु करें वदन माधुरीकौ पान मगन जेही ॥

अथ तथाहि—

तस्याननं मकरकुंडलचारुकर्णभ्राजत्कपोलसुभगं सविलासहासं।
नित्योत्सवं न ततृपुर्द्दशिभिः पिवन्त्यो नार्य्यो नराश्च मुदिताः कुपिता निमेश्च ॥

पद्य—ज़सनि कृष्ण बदन राजै द्विजराज राजरी।
कृष्ण देह सिंहासन बैठि करैं राज तेज तैं सोई रंग भरयौ संग ससि समाजरी ॥
मनसिज गायत्री मंत्ररूप है स्वरूप कृष्ण साढ़े चौबीस बरण ताके है जेई ॥
इन्दुनकौ रूप धरि कैं कृष्ण देह उदै करिकैं काममय त्रिलोक कीनौ छाय हृदय तेई ॥
चीकनें कपोल जुग जीतें मनि मुकुर बिमल तेई बिबि पूर्णचंद्र जानौं सुखदाई।
अलिक अर्द्ध इंदु आहि चंदन कौ बिंदु ताहि सोऊ एक पूर्णचंद्र सीतल अधिकाई ॥
करनख रजनी सु ठाठ करैं बंशी उपरि नाट तिनकौ है गान मधुर मुरली की तानरी।
पद नख ससियूथ सोई तरें करें नृत्य जोई नूपुर की रुनक झुनक धुनि है तिनकौ गानरी ॥
नृत्य करैं मकर कुंडल नेत्र बिमल नील कमल सदाई न चावैं तिन्है तृपति अति विलासी।
भृकुटी धनु जैसैं बान ताके गुणजमल कान नारी मन लक्ष ताहि वेधे सुखरासी ॥
विधु कौ यह नृत्यधाट फैलाई ससिनि हाट अमृत निज लुटावै सबनि बिना लियें मोलहीं।
मुसकि चन्द्रिका सुधाहि काहूकौ अधरामृत प्याय तृप्तकरैं सबनि मधुर वचन बोल हीं ॥
आयत अनुराग ऐंन घूमरी मद छकी सेंन, यैसे जुग नैंन जाके मंत्री लागे कानरी।
क्रीड़ा लावण्य सदन रसके अयन नयन जहां सुखमय गोविंदवदन मधुररस निधानरी ॥
पुन्य पुंज फलै जाहि ताकौ दरस मिलै ताहि कहौ दोय नैंन ही सौं कितौ करैं पानरी।
बढ़ै दुनी तृषा लोभ पिय न सकै हियें क्षोभ, दुख करि तब निंदे कहैं विधिकौ नहि ज्ञानरी ॥
दिये नहि कोटि लक्ष सबसे किय दोय अक्ष, तिनहूं में दिय निमेष ओट दुख अपारा।
विधि जड़ धनसुतप जाहि रस के रहित हियो ताहि जानें नहि जोग्यसृजन कमल सुत बिचारा।
दरसि हैं जे कृष्णवदन तिनके कहां दोय नयन ह्वै कैं विधि अविधि करैं ऐसौ अविचारा।
मोहि जो बुलाय पूछें कोटि आंखिरचै तिन्हैं हैं उचितसृष्टि ताकी तव जानें निरधारा ॥

हरितनु माधुर्य्यसिंधु है सुमधुर बदनइन्दु अतिही मधुर स्मितकरन मन प्रकासा।
लागे ये तीन हियें स्वादै तीन लोभ कियें पढ़े हस्तचालन जुत पद्य हिय हुलासा॥

तथाहि

मधुरं मधुरं वपुरस्य विभो मधुरं मधुरं वदनं मधुरं। मधुगन्धि मृदु स्मितमेतदहो मधुरं मधुरं मधुरं मधुरं॥

यथाराग—

अहो हे सनातन कृष्ण मधुररस निधान।
मेरो मन संनपाती सबही पियौ चाहै ताहि अपनौ दुर्दैव बैद्य देय नही कन प्रमान॥
हरितन लावण्यपूर मधुरहूंते अतिसुमधुर तामें जो वदन सुधानिधि है सुखकी रासरी।
मधुरहूंतें परममधुर ताहूंते है अतिसुमधुर ताकी जो मुसकनि पर चन्द्रिका प्रकासरी॥
मधुरहूंतें सृष्ट मधुर ताहूंतें अधिकमधुर ताहूंतें अतिसय है अति सुमधुर जोई।
अपने इक कनहि करिकैं व्यापैं सब तीन लोक दसौंदिसा वहै जाकौं पूर अकथ सोई॥
हसनि किरनि सितकपूर अधरमधु प्रवाह पैठि त्रिभुवनकौ मत्त करैं वहै मधु सुवास जो।
वंशीकौ छिद्र सुनभ ताकें गुण सब्द प्रविस ध्वनि के स्वरूप ह्वै कैं तब पावै परिनाम सौ॥
सो धुनि चहु ओर धाय भेद जग वैकुण्ठ जाइ बल करि सब जगत हीके पैठि जाय कानरी।
सबकौं मतवारौ करिकैं आनें एंचि बलसौं धरिकैं धरिकैं ताहूमें अतिविशेष जुवतिगण सुजानरी॥
अतिही उद्धत धुनि है सोई सतिनुके ब्रत तोरै जोई, पतिनके निज अकंहूतें काढ़ि लेत नारी।
परव्योम लक्ष्मीगणहि जो करावै आकर्षण, आगें तिहि गोपीगण कौंन धौं बिचारी॥
पति ढिग निवी खिसावैं गृहके काजनि छुटावैं बलसौं गहि कृष्ण निकट जुवतिनिकौं लांवई।
लोक धर्म लज्या भय सबहि ज्ञान नास होय, नारीगण सबै जिती तिन्है ये नचांबई॥
श्रवननि में करै वास तहां सदा निज प्रकास, पैठन नहि देय जहां और सब्द कोई।
और न कछु सुनें कान कहतें कछु कहै आन, यहै कृष्ण वंशी कौ चरित जगत मोई॥
फेरि कहैं वाह्य ज्ञान आन कहतें कहैं आन, तुम पर श्री कृष्ण जू की कृपा अधिक आही।
मेर चित भ्रम कराय प्रभुता निज माधुरी पुनि, तुम ही श्रवन कराई मेरे मुख ताही॥
मैं तौ अति बड़ौ बौर और कहत और कह्यौ हरि की माधूर्य्यपूर लखि गयौ वहि कैं।
तब तौ प्रभु एक छिनहि मौन करिकें रहे फेरि कहैं यौं सनातन सौं मनहि धैर्य्य गहिकैं॥
कृष्ण माधुरी अपार पुनि किय प्रभु मुख प्रचार जोई सुनै लहै प्रेम सुख प्रकास।
रूप श्री सनातन रघुनाथ चरण जाको वास, गौरचन्द्र चरितामृत कहै कृष्णदास॥
कह्यौ गौरचंद्र चरित वृंदाबन दास जोई फेरि कैं उचारयौ कविराज राज जाहि।
इनहीं की चरण धूरि मूरि है सजीवन जिहिं भाषा निज प्रगट कियौ वेंनी कृष्ण ताहि॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे श्रीकृष्ण ऐश्वर्य्य माधुर्य्यवर्णनं नाम एकविंशति परिच्छेदः॥

द्वाविंशति परिच्छेदः

वंदे श्रीकृष्णचैतन्यदेवं तं करुणार्णवं । कलावप्यति गूढ़ेयं भक्तिर्येन प्रकाशिता ॥ १ ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृंद ॥
निज संबंध जु तत्व कौ यहै कह्यौ जु विचार । वेद शास्त्र उपदेस ई एक कृष्ण हैं सार ॥
कहियें अब अभिधेय कौ लक्षण सुनौ जु सोय । याते पैयै कृष्ण औ कृष्ण प्रेम धन जोय ॥
कृष्ण भक्ति अभिधेय है कहै शास्त्र सब ताहि । याही तें मुनि गननि यह कियौजु निश्चै आहि ॥

तथाहि मुनिवाक्यं—

श्रुतिर्माता पृष्टा दिशति भवदाराधनविधिं, यथा मातुर्वाणी स्मृतिरपि तथा वक्ति भगिनी ।
पुराणाद्या ये वा सहजनिवहास्ते तदनुगा, अतः सत्यं ज्ञातं मुरहर भवानेव शरणम् ॥ २ ॥

अद्वय ज्ञान जु तत्व जो कृष्ण स्वयं भगवान् । है स्वरूप शक्ति हि जु मधि अवस्थान तिहिं जान ॥

स्वांस विभिन्नांस रूप करि द्वै कैं विस्तार अनंत वैकुण्ठ ब्रह्माण्ड करैं जु बिहार हैं ।
स्वांस विस्तार है चतुर्व्यूह अवतार गण विभिन्नांस जीव तिहिं सक्तितें अपार हैं ।
सोई विभिन्नांस जीव हैं प्रकार दोय एक नित्य मुक्त, एक कैं जु निति ही संसार हैं ।
नित्यमुक्ति नित्य कृष्ण चरण के उन्मुख जे कृष्णपार्षद जु भोगें सेवा सुखसार हैं ॥

नित्यवद्ध श्रीकृष्ण तें नित्य वहिर्मुख जोय । नित संसारी भोगई नरकादिक दुख सोय ॥
अजा पिसाची दंडई तिहीं दोष करि ताहि । मारैं ताहि जराय कैं ताप त्रय करि आहि ॥
काम क्रोध कौ दास ह्वै तिनकी लाठी खाय । साधु वैद्य जो पावई भ्रमत भ्रमत अकुलाय ॥
तिहिं मंत्र जु उपदेस करि भजै पिशाची जोय । कृष्ण भक्ति लहि कृष्ण के निकट जाय तव सोय ॥

तथाहि भः रः सिन्धौ—

कामादीनां कति न कतिधा पालिता दुर्निदेशास्तेषां जाता मयि न करुणा न त्रपा नोपशान्तिः ।
उत्सृज्यैतानथ यदुपते साम्प्रतं लब्धबुद्धिस्त्वामायातः शरणमभयं मां नियुंक्ष्वात्मदास्ये ॥३॥

कृष्णचन्द्र की भक्ति जो अभिधेय प्रधान । मुख जु निरीक्षक भक्ति कैं कर्म जोग औ ज्ञान ॥
इन हीं सब साधननि कौ फल अतितुच्छ विचार । कृष्ण भक्ति विन तिनहुं कैं देवे कौ नहि सार ॥

तथाहि भागवते—

नैष्कर्म्यमप्यच्युतभाववर्जितं न शोभते ज्ञानमलं निरञ्जनं ।
कुतः पुनः शश्वदभद्रमीश्वरे न चार्पितं कर्म्म यदप्यकारणम् ॥४॥

तथाहि तत्रैय— क्षेमं न बिदन्ति विना यदर्पणं तस्मै सुभद्रश्रवसे नमोनमः ॥५॥

केवल ज्ञान न दे सकैं मुक्ति भक्ति बिन जोय । वहै जु मुक्ति हरि सनमुख विना ज्ञान ही होय ॥

तथाहि तत्रैव—

श्रेयः श्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये।
तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद् यथा स्थूल तुषावघातिनाम् ॥६॥

तथाहि गीतायां—

दैवी ह्येषा गुणमयी मम मायादुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥७॥

जीव दास नित कृष्ण कौ गयौ भूलि यह ताहि। तिंही दोस माया जु तिहिं बांधै गरौ जु आहि॥
तातें कृष्ण भजै करैं गुरू कौ सेवन जोय। छुटै जु माया जाल तें लहै कृष्ण पद सोय ॥
चारि वर्ण औ आश्रमी कृष्ण हि भजै जु नाहिं। ते स्वधर्म करि बूडई परि रौरव के मांहि ॥

तथाहि भागवते—

मुख बाहूरुपादेभ्यः पुरुषस्याश्रमैः सह। चत्वारो जज्ञिरे वर्णा गुणै र्विप्रादयः पृथक् ॥८॥
य एषां पुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरं। न भजन्त्यवजानन्ति स्थानाद् भ्रष्टाः पतन्त्यधः ॥९॥

ज्ञानी जीव दशा मुकति लहौ करैं अभिमान। वस्तु बुद्धि नहि शुद्धि तिहिं भक्ति बिना नहि जान॥

तथाहि तत्रैव—

येऽन्येरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः।
आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधो ऽनादृतयुष्मदंघ्रयः ॥१०॥

रवि समान श्री कृष्ण जू है माया अंधकार। जहां कृष्ण तहां अजा कौ है नाहिन अधिकार ॥

तथाहि तत्रैव—

विलज्जमानया यस्य स्थातुमीक्षापथे ऽमुया। विमोहिता विकत्थन्ते ममाहमिति दुर्धियः ॥११॥

कृष्ण तुम्हरौ हौं जु हौं जो भाषे इकबार। माया के बंधन जु तें कृष्ण करैं तिहि पार ॥

तथाहि रामायणे—

सकृदेव प्रपन्नो यस्तवास्मीति च याचते। अभयं सर्व्वदा तस्मै ददाम्येतद्व्रतं मम ॥१२॥

भुक्तिमुक्ति अरु भक्ति की चाह सुधी कें होय। जो दृढ़भक्ति जु जोग करि हरि कौं भजैजु सोय॥

तथाहि तत्रैव—

अकामः सर्वकामी वा मोक्षकामो उदार धीः। तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत पुरुषं परम् ॥१३॥

अन्य विषय कामी कभूं जो हरि भजन सुसार। नहि मांगै हरि तऊ तिहिं दै निज चरण विचार॥
कृष्ण कहै मोकौं भजै चहै विषय सुख जोय। अमृत छाड़ि विष मागई बड़ौ मूर्ख यह जोय ॥
हौं प्रवीन या मूर्ख कौं क्यौं विष दैं हौं आहि। दैकें निज चरणामृत हि विषय भुलैं हौं याहि ॥

तथाहि तत्रैव—

स्वयं विधत्ते भजतामनिच्छतामिच्छापिधानं निजपादपल्लवम् ॥१४॥

तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—

स्थानाभिलाषी तपसि स्थितोऽहं त्वां प्राप्तवान् देवमुनीन्द्रगुह्यम्।
काचं विचिन्वन्नपि दिव्यरत्नं स्वामिन् कृतार्थोऽस्मि वरं न याचे ॥१५॥

किहूं भाग्य कौऊ तरै भ्रमत भ्रमत संसार। ज्यौं तीर हि लागै तृण जु नदी प्रवाह सुढ़ार ॥

तथाहि तत्रैव— ह्रियमानःकालनद्यात् क्वचित्तरति कश्चन ॥१६॥

किहूं भाग्य भव किंहूँ के चय उन्मुख जब होय। साधु संग करि तब जु तिहिं हरि रति उपजै सोय॥

तथाहि तत्रैव—

भवापवर्गो भ्रमतो यदा भवेत् जनस्य तर्ह्यच्युत सत्समागमः।
सत्संगमो यर्हि तदैव सद्गतौ परावरेशे त्वयि जायते रतिः ॥१७॥

किहूं भाग्य जुत पर कृपा कियौ चहै हरि जोय। गुरू अतंर्यामी जु ह्वै आपुन सिखवै सोय ॥

तथाहि तत्रैव— आचार्य्यं चैत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्तीति ॥१०॥

जन सँग करि हरिभक्ति मधि जब दृढ़श्रद्धा होय। होय प्रेम फल भक्तिकौ भव नासै तिहिं सोय॥

तथाहि तत्रैव—

यदृच्छया मत्कथादौ जातश्रद्धस्तु यः पुमान्। न निर्विण्णो नातिसक्तो भक्तियोगस्य सिद्धिदः ॥१६॥

साधु कृपा विन कर्म जुत तिनतें भक्ति न होय। कृष्ण प्राप्ति अति दूर है भव नासै नहि सोय ॥

तथाहि तत्रैव—

रहुगणैतत्तपसा न याति न चेज्यया निर्व्वपणाद्गृहाद्वा।
न च्छन्दसा नैव जलाग्निसूर्य्यै र्विना महत्पादरजोभिषेकं ॥२०॥

तथाहि तत्रैव— महीयसां पादरजोऽभिषेकं निष्किञ्चनानां न वृणीत यावत् ॥२१॥

साधुसंग पुनि साधु सँग कहैं शास्त्र सब जोय। पलकमात्र जनसंग करि सबै सिद्धि तिहि होय ॥

तथाहि तत्रैव—

तुलायाम लवेनापि न स्वर्गं नापुनर्भवं। भगवत् संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ॥२२॥

कृष्ण कृपानिधि अर्जु नहि करिकैं लक्ष जु ताहि। राख्यौ है उपदेस दै सबै जगत कौं आहि ॥

तथाहि गीतायां—

सर्वं गुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः। इष्टोसि मे दृढ़मिति ततो वक्ष्यामि तेहितं ॥२३॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवेष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥२४॥

वेद कर्म आज्ञा प्रथम धर्म जोग कहि ज्ञान। सब सिक्षा करि अंत मधि यह निदेस बलवान ॥

इहिं निदेस वल भक्ति मधि जब श्रद्धा जिहि होय। वेद कर्म सव त्यागकरि कृष्णहि भजै जुसोय ॥

तथाहि भागवते—

धर्म्मान् संत्यज्य यः सर्व्वान् मां भजेत्स च सत्तमः। आज्ञायैव गुणान्दोषान् मयादिष्टानपि स्वकान् ॥

तथाहि तत्रैव—

तावत्कर्माणि कुर्वीत न निर्व्विद्येत यावता। मत्कथा श्रवणादौ वा श्रद्धा यावन्न जायते ॥ २६ ॥

कहियै श्रद्धा शब्द करि निश्चै दृढ़ विश्वास। भक्ति कियें सव कर्म हूं कियें होत है तास ॥

तथाहि तत्रैव—

यथा तरोर्मूलनिषेचनेन तृप्यन्ति तत्स्कन्धभुजोपशाखाः।
प्राणोपहाराच्च यथेन्द्रियाणां तत्रैव सर्व्वार्हणमच्युतेज्या ॥ २७ ॥

अधिकारी हरिभक्तिमधि हैं जन श्रद्धा सोय। उत्तम मध्यम लघु जु ये हैं श्रद्धा अनुजोय ॥

तथाहि तत्रैव—

श्रेयः श्रुतिं भक्तिमुदस्य ते विभो क्लिश्यन्ति ये केवलबोधलब्धये।
तेषामसौ क्लेशल एव शिष्यते नान्यद् यथा स्थूल तुषावघातिनाम् ॥६॥

तथाहि गीताया—

दैवी ह्येषा गुणमयी मम मायादुरत्यया। मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥७॥

जीव दास नित कृष्ण कौ गयौ भूलि यह ताहि। तिंही दोस माया जु तिहिं बांधै गरौ जु आहि॥
तातें कृष्ण भजै करैं गुरू कौ सेवन जोय। छुटै जु माया जाल तें लहै कृष्ण पद सोय॥
चारि वर्ण औ आश्रमी कृष्ण हि भजै जु नाहिं। ते स्वधर्म करि बूडई परि रौरव के मांहि॥

तथाहि भागवते—

मुख बाहूरुपादेभ्यः पुरुषस्याश्रमैः सह। चत्वारो जज्ञिरे वर्णा गुणै विप्रादयः पृथक् ॥८॥
य एषां पुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरं। न भजन्त्यवजानन्ति स्थानाद् भ्रष्टाः पतन्त्यधः ॥९॥

ज्ञानी जीव दशा मुकति लहौ करैं अभिमान। वस्तु बुद्धि नहि शुद्धि तिहिं भक्ति बिना नहि जान॥

तथाहि तत्रैव—

येऽन्येरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः।
आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधो ऽनादृतयुष्मदंघ्रयः ॥१०॥

रवि समान श्री कृष्ण जू है माया अंधकार। जहां कृष्ण तहां अजा कौ है नाहिन अधिकार॥

तथाहि तत्रैव—

विलज्जमानया यस्य स्थातुमीक्षापते ऽमुया। विमोहिता विकत्थन्ते ममाहमिति दुर्धियः ॥११॥

कृष्ण तुम्हरौ हौं जु हौं जो भाषे इकवार। माया के बंधन जु तें कृष्ण करैं तिहि पार॥

तथाहि रामायणे—

सकृदेव प्रपन्नो यस्तवास्मीति च याचते। अभयं सर्व्वदा तस्मै ददाम्येतद्व्रतं मम ॥१२॥

भुक्तिमुक्ति अरु भक्ति की चाह सुधी कें होय। जो दृढ़भक्ति जु जोग करि हरि कौं भजैजु सोय॥

तथाहि तत्रैव—

अकामः सर्वकामी वा मोक्षकामो उदार धीः। तीव्रेण भक्तियोगेन यजेत पुरुषं परम् ॥१३॥

अन्य विषय कामी कभूं जो हरि भजन सुसार। नहि मांगै हरि तऊ तिहिं दैं निज चरण विचार॥
कृष्ण कहै मोकौं भजै चहै विषय सुख जोय। अमृत छाड़ि विष मागई बड़ौ मूर्ख यह जोय॥
हौं प्रवीन या मूर्ख कौं क्यौं विष दैं हौं आहि। दैंकें निज चरणामृत हि विषय भुलैं हौं याहि॥

तथाहि तत्रैव—

स्वयं विधत्ते भजतामनिच्छतामिच्छापिधानं निजपादपल्लवम् ॥१४॥

तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—

स्थानाभिलाषी तपसि स्थितोऽहं त्वां प्राप्तवान् देवमुनीन्द्रगुह्यम्।
कांच विचिन्वन्नपि दिव्यरत्नं स्वामिन् कृतार्थोऽस्मि वरं न याचे ॥१५॥

किंहूं भाग्य कौऊ तरै भ्रमत भ्रमत संसार। ज्यौं तीर हि लागै तृण जु नदी प्रवाह सुढ़ार ॥

तथाहि तत्रैव— ह्रियमानःकालनद्यात् क्वचित्तरति कश्चन ॥१६॥

किंहूं भाग्य भव किंहूँ के क्षय उन्मुख जब होय। साधु संग करि तब जु तिहिं हरि रति उपजै सोय॥

तथाहि तत्रैव—

भवापवर्गो भ्रमतो यदा भवेत् जनस्य तर्ह्यच्युत सत्समागमः।
सत्संगमो यर्हि तदैव सद्गतौ परावरेशे त्वयि जायते रतिः ॥१७॥

किंहूं भाग्य जुत पर कृपा कियौ चहै हरि जोय। गुरू अतंर्यामी जु ह्वै आपुन सिखवै सोय॥

तथाहि तत्रैव— आचार्य्य चैत्यवपुषा स्वगतिं व्यनक्तीति ॥१८॥

जन सँग करि हरिभक्ति मधि जब दृढ़श्रद्धा होय। होय प्रेम फल भक्तिकौ भव नासै तिहिं सोय॥

तथाहि तत्रैव—

यदृच्छया मत्कथादौ जातश्रद्धस्तु यः पुमान्। न निर्विण्णो नातिसक्तो भक्तियोगस्य सिद्धिदः ॥१६॥

साधु कृपा विन कर्म जुत तिनतें भक्ति न होय। कृष्ण प्राप्ति अति दूर है भव नासै नहि सोय॥

तथाहि तत्रैव—

रहुगणैतत्तपसा न याति न चेज्यया निर्व्वपणाद्गृहाद्वा।
न च्छन्दसा नैव जलाग्निसूर्य्यै र्विना महत्पादरजोभिषेकं ॥२०॥

तथाहि तत्रैव— महीयसां पादरजोऽभिषेकं निष्किञ्चनानां न वृणीत यावत् ॥२१॥

साधुसंग पुनि साधु सँग कहैं शास्त्र सब जोय। पलकमात्र जनसंग करि सवै सिद्धि तिहि होय॥

तथाहि तत्रैव—

तुलायाम लवेनापि न स्वर्गं नापुनर्भवं। भगवत् संगिसंगस्य मर्त्यानां किमुताशिषः ॥२२॥

कृष्ण कृपानिधि अर्जुनहि करिकैं लक्ष जु ताहि। राख्यौ है उपदेस दै सवै जगत कौं आहि॥

तथाहि गीतायां—

सर्वं गुह्यतमं भूयः शृणु मे परमं वचः। इष्टोसि मे दृढ़मिति ततो वक्ष्यामि तेहितं ॥२३॥
मन्मना भव मद्भक्तो मद्याजी मां नमस्कुरु। मामेवेष्यसि सत्यं ते प्रतिजाने प्रियोऽसि मे ॥२४॥

वेद कर्म आज्ञा प्रथम धर्म जोग कहि ज्ञान। सब सिक्षा करि अंत मधि यह निदेस बलवान॥

इहिं निदेस बल भक्ति मधि जब श्रद्धा जिहि होय। वेद कर्म सब त्यागकरि कृष्णहि भजै जुसोय॥

तथाहि भागवते—

धर्म्मान् संत्यज्य यः सर्व्वान् मां भजेत्स च सत्तमः। आज्ञायैव गुणान्दोषान् मयादिष्टानपि स्वकान्॥

तथाहि तत्रैव—

तावत्कर्माणि कुर्वीत न निर्व्विद्येत यावता। मत्कथा श्रवणादौ वा श्रद्धा यावन्न जायते॥ २६॥

कहियै श्रद्धा शब्द करि निश्चै दृढ़ विश्वास। भक्ति कियें सब कर्म हूं कियें होत है तास॥

तथाहि तत्रैव—

यथा तरोर्मूलनिषेचनेन तृप्यन्ति तत्स्कन्धभुजोपशाखाः।
प्राणोपहाराच्च यथेन्द्रियाणां तत्रैव सर्व्वार्हणमच्युतेज्या॥ २७॥

अधिकारी हरिभक्तिमधि हैं जन श्रद्धा सोय। उत्तम मध्यम लघु जु ये हैं श्रद्धा अनुजोय॥

शास्त्र युक्ति मधि निपुन अति जिहि दृढ़ श्रद्धा होय । उत्तम अधिकारी वहै भवकौं तारैं सोय ॥
शास्त्र युक्ति जानैं नहीं हैं दृढ़ श्रद्धावान । मध्यम अधिकारी वहै भाग्यवान अति जान ॥
सो कनिष्ठ जन जानियें कोमल श्रद्धा जाहि । क्रम क्रम सोऊ भक्ति मधि ह्वै है उत्तम आहि ॥
तारतम्य रति प्रेम के भक्त तारतम होइ । सब के लत्तण किये हैं एकादश मधि जोइ ॥

तथाहि तत्रैव—

सर्वभूतेषु यः पश्येद्भगवद्भावमात्मनः । भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः ॥२८॥
ईश्वरे तदधीनेषु वालिशेषु द्विषत्सु च । प्रेम मैत्री कृपापेत्ता यः करोति स मध्यमः ॥ २६ ॥
अर्च्चायामेव हरये पूजां यः श्रद्धयेहते । न तद्भक्तेषु चान्येषु स भक्तः प्राकृतः स्मृत ॥ ३० ॥

सवै महागुणगण जिते जन सरीर मधि सोय । जन मधि सब गुण संचरैं कृष्ण भक्तिकरि जोय ॥

तथाहि तत्रैव—

यस्यास्ति भक्तिर्भगवत्यकिंचना सर्व्वैर्गुणैस्तत्र समासते सुराः ।
हरावभक्तस्य कुतो महद्गुणा मनोरथेनासति धावतो वहिः ॥ ३१ ॥

जितने सब गुण गणजुहै जनके लत्तण आहि । सवै जाय नहि कहैं दिग दरसन करियतु ताहि ॥
अद्भुत दोह कृपाल पुनि सत्य सार सम सोय । दोस रहित अरु दांत मृदु सुचिजु अकिंचन होय॥
सब उपकारक शांतपुनि एकशरण दुरिजाहि । होय अकाम अनीह थिर विजित सुखदगुणआहि ॥
अप्रमत्त मितभुक सदा मानन मानद जाहि । करण मैत्र गंभीर कवि दत्ता सु मौनी आहि ॥

तृतीयस्कंधे—

तितिक्षवः कारुणिकाः सुहृदः सर्व्वदेहिनां । अजातशत्रवः शान्ताः साधवः साधुभूषणाः ॥

पञ्चम स्कंधे—

महत्सेवा द्वारमाहुर्विमुक्तेस्तमोद्वारं योषितां संगिसंगं ।
महान्तस्ते समचित्ताः प्रशान्ता विमन्यवः सुहृदः साधवो ये ॥ ३३ ॥

कृष्ण भक्ति के जन्म कौ मूल साधु संग होय । कृष्ण प्रेम के जन्म कौ पूर्ण मुख्य अंग सोय ॥

तथाहि तत्रैव—

सत्संगमो यर्हि तदैव सद्गतौ परावरेशे त्वयि जायते रतिः ॥ ३४ ॥

तत्रैव—

अत आत्यन्तिकं क्षेमं पृच्छामो भवतोऽनघाः ।
संसारेऽस्मिन् क्षणार्द्धोऽपि सत्संगः सेवधिर्नृणाम् ॥ ३५ ॥

तथाहि तत्रैव—

सतां प्रसंगान्मम वीर्य्यसंविदो भवन्ति हृत्कर्णरसायनाः कथाः ।
तज्जोषणादाश्वपवर्गवर्त्मनि श्रद्धा रति र्भक्ति रनुक्रमिष्यति ॥ ३६ ॥

असत संग को त्यागिवौ यहै भक्त आचार । स्त्री संगी इक असत अरु कृष्ण अभक्त विचार ॥

तथाहि तत्रैव—

न तथास्य भवेन्मोहो वन्धश्चान्यप्रसंगतः । योषित्संगाद्यथा पुंसो यथा तत्संगिसंगतः ॥ ३७ ॥

तत्रैव—

सत्यं शौचं दया मौनं बुद्धिर्ह्रीः श्री र्यशः क्षमा । शमो दमो भगश्चेति यत्संगाद्याति संक्षयं ॥ ३८ ॥
तेष्वशान्तेषु मूढ़ेषु खण्डितात्मस्वसाधुषु । संगं न कुर्य्याच्छोच्येषु योषित्क्रीड़ामृगेषु च ॥ ३६ ॥

कात्यायन संहितायां

वरं हुतवहज्वालापञ्जरान्तर्व्यवस्थितिः। न शौरिचिन्ताविमुखजनसंवासवैशसं ॥ ४० ॥

गोस्वामिवाक्यं—

माद्राक्षीः क्षीणपुण्यान् क्वचिदपि भगवद्भक्तिहीनान् मनुष्यान् ॥ ४१ ॥

ए सब तजि अरु वर्ण पुनि आश्रम धर्मनि त्यागि। होइ अकिंचन लै रहै इक हरि शरण हि पागि॥

तथाहि गीतायां —

सर्व धर्म्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रजेति, श्लोक ॥ ४२ ॥

भक्ति वत्सल कृतज्ञ पुनि समरथ वड़े वदान्य। ऐसैं कृष्ण हि छाडि कैं पण्डित भजै न अन्य ॥

तथाहि भागवते—

कः पण्डितस्त्वदपरः शरणं समीयाद्भक्तप्रियादृतगिरः सुहृदः कृतज्ञात्।
सर्वान्ददाति सुहृदो भजतोऽभिकामानात्मानमप्युपचयापचयौ न यस्य ॥ ४३ ॥

परम विज्ञ जन कें जवै होय कृष्ण गुण ज्ञान। आनहि तजि हरि कौं भजैं उद्धव तहां प्रमान ॥

तथाहि तत्रैव—

अहो वकीयं स्तनकालकूटं जिघांसया पाययदप्यसाध्वी।
लेभे गतिं धात्र्युचितां ततोऽन्यं कंवा दयालुं शरणं व्रजेम ॥ ४४ ॥

शरणागति निस्पृह जु कौ एक जु लक्षण जोय। तिन के चरणनि मधि करैं आत्म समर्पन सोय ॥

तथाहि वैष्णवतन्त्रे—

आनुकूल्यस्य ग्रहणं प्रातिकूल्यस्य वर्जनं। रक्षिष्यतीति विश्वासो गोप्तृत्वे वरणं तथा ॥
आत्मनिक्षेप कार्पण्ये षड्विधा शरणागतिः ॥४५॥

तत्रैव—

तवास्मीति वदन् वाचा तथैव मनसा विदन्। तत्स्थानमाश्रितस्तत्वा मोदते शरणागतः ॥ ४६ ॥

आत्म समर्पण कृष्ण कौ करै शरण लै आहि। ताही छिन श्रीकृष्ण जू करैं आत्म सम ताहि ॥

तथाहि भागवते—

मर्त्यो यदा त्यक्तसमस्तकर्म्मा निवेदितात्मा विचिकीर्षितो मे।
तदामृतत्वं प्रतिपद्यमानो मयात्मभूयाय च कल्पते वै ॥ ४७ ॥

लक्षण साधन भक्ति कौ सुनो सनातन जोय। जिहि पैयै श्रीकृष्ण कौ प्रेम महाधन सोय ॥

तथाहि भ०र० सिन्धौ—

कृतिसाध्या भवेत्साध्यभावा सा साधनाभिधा ॥ ४८ ॥

तिहि स्वरूप लक्षण क्रिया श्रवणादिक है जोय। है तटस्थ लक्षण उपजि करै प्रेम धन सोय ॥
नित्य सिद्ध हरि प्रेमजो साध्य कभूं नहि होय। श्रवणादिक करि शुद्ध मन उदै करै तिहि सोय ॥
सोई साधन भक्ति है कहिये दोय प्रकार। है इक वैधी भक्ति अरु रागानुगा विचारि ॥
भजैं शास्त्र के भय हि करि राग हीन जन जोय। ताकौं वैधी भक्ति करि कहै शास्त्र सव सोइ ॥

तथाहि भागवते—

तस्माद्भारत सर्व्वात्मा भगवान् हरिरीश्वरः। श्रोतव्यः कीर्त्तितव्यश्च स्मर्त्तव्यश्चेच्छताभयम् ॥ ४९ ॥

तत्रैव—य एषां पुरुषं साक्षादात्मप्रभवमीश्वरं। न भजन्त्यवजानन्ति स्थानाद्भ्रष्टाः पतन्त्यधः ॥ ५० ॥

पद्मपुराणे च—

स्मर्तव्यः सततं विष्णुर्विस्मर्त्तव्यो न जातुचित् । सर्व्वे विधिनिषेधाः स्युरेतयोरेव किंकराः ॥ ५१ ॥

विविध अंग साधन भगति ताकौ बहु विस्तार । कहियै कछु संक्षेप करि साधनांग ये सार ॥
गुरु पादाश्रय प्रथम पुनि मंत्र सुदीक्षा ताहि । गुरु चरननिकौ सेयवौ मुख्य अंग ये आहि ॥
सुद्ध भक्ति कौ सीखिवौ और पूछिवौ ताहि । साधु मार्ग कै अनुगमन करिवैं निहचैं आहि ॥
भोग त्याग हरि प्रीत हित हरि तीरथ मधि वास । उदर मात्र जु परिग्रहै एकादसि उपवास ॥
धात्री अरु अश्वत्थ पुनि धेनु विप्र हैं जोय । और वैष्णव जननि कौ पूजन करिवौ सोय ॥
हरि सेवा हरि नाम के अपराधादिक जोय । करैं दूरही तें सुबुधि तिन कौ वरजन सोय ॥
संग अवैष्णव कौ नहीं करै सिष्य बहु जान । ग्रंथ कला अभ्यास बहु तजिवौ तिहि व्याख्यान ॥
सोकादिक के होत वस हानि लाभ सम होय । अन्य देव अरु शास्त्र की निंदा करै न सोय ॥
हरि हरि जन निंदा विषै वात न सुनियै आहि । जीव मात्र जे मन वचन नहि दुख दैवौ ताहि ॥
श्रवण कीरतन है स्मरण पूजन वंदन ताहि । परिचर्य्या सख दास्य पुनि आत्म निवेदन आहि ॥
नृत्य गीति विज्ञप्ति तिहिं आगें दंड प्रणाम । अभ्युत्थान अनुव्रजन अरु गमन तीर्थ तिहिं धाम ॥
परिक्रमा स्तवपाठ पुनि जप संकीर्तन नाद । धूप माल्य के गंध तिहि भोजन महा प्रसाद ॥
आरति उत्सव और श्री विग्रह दरसन जोय । ध्यान तदीय जन सेवन निज प्रिय अर्पण सोय ॥
तुलसी बैष्णव मधुपुरी अरु भागवत तदीय । इन चारनि कौ सेयवौ हरि कैं अभिमत हीय ॥
अखिल चेष्टासु कृष्णहित कृपावलोकन ताहि । जन्मदिनादि महोत्सवजु हरिजन गण लै आहि॥
सरणापत्ति जु सर्वथा कात्तिकादि व्रत जान । चौषठि अंग जु भक्ति कै सोई परम प्रधान ॥
नाम कीरतन साधु सँग श्रवण भागवत तास । श्रद्धा करि सेवन जु श्री मूरति मथुरा वास ॥
सव साधनि मधि श्रेष्ठ हैं एई पाँचौ अंग । उपजीवे हरि प्रेम इन पांचन कौ कछु संग ॥

तथाहि भ० र० सिन्धौ—

सजातीयाशये स्निग्धे साधौ संगः स्वतोवरे । श्रीमद्भागतार्थानामास्वादो रसिकैः सह ॥ ५२ ॥

श्रद्धा विशेषतः प्रीतिः श्रीमूर्त्तेरंघ्रिसेवने । नाम संकीर्त्तनं श्रीमन्मथुरामण्डले स्थितिः ॥ ५३ ॥

भक्तिरसामृत सिन्धौ—

दुरूहाद्भुतवीर्य्येऽस्मिन् श्रद्धा दूरेऽस्तु पञ्चके । यत्र स्वल्पोऽपि सम्बन्धः सद्धियां भावजन्मने ॥ ५४ ॥

कोऊ साधे अंग इक इक साधे वहु अंग । निष्ठा भये जु उपजई ताकें प्रेम तरंग ॥
सिद्धि लही इक अंगकरि वहुत भक्तगण आहि । अम्बरीष मुख्य भक्तये वहुअँग साधन ताहि ॥

तथाहि पद्यावल्यां—श्री विष्णोः श्रवणे परीक्षिदभवद् वैयासकिः कीर्त्तने,
प्रह्लादः स्मरणे तदंघ्रिभजने लक्ष्मीः पृथुः पूजने ।
अक्रूरस्त्वभिवन्दने कपिपतिर्दास्येऽथ सख्येऽर्जुनः,
सर्व्वस्वात्मनिवेदने वलिरभूत् कृष्णाप्तिरेषां परं ॥ ५५ ॥

तथाहि भागवते—

सवै मनः कृष्णपदारविन्दयोर्व्वचांसि वैकुण्ठगुणानुवर्णने ।
करौ हरेर्मन्दिरमार्जनादिषु श्रुतिञ्चकाराच्युतसत्कथोदये ॥

इत्यादौ द्रष्टव्यः । ५६ । ५० । ५८ ॥

कर्म त्यागि हरिकौं भजैं शास्त्रसु आज्ञा जान । देव ऋषि जु पितरादिकौं नहीं ऋणी सो मान ॥

तथाहि भागवते—

देवर्षिभूताप्तनृणां पितृणां न किंकरो नायमृणीच राजन् ।
सर्व्वात्मना यः शरणं शरण्यं गतो मुकुन्दं परिहृत्य कर्त्तम् ॥५६॥

भजे कृष्ण के चरण कौं तजि विधि धर्महिं जोय । पापाचार निसिद्धि मधि मन तिहि कबहूं न होय ॥
पाप कदाचि दज्ञान तें होय उपस्थित आहि । प्रायश्चित्त करैं न सो करैं सुद्धि हरि ताहि ॥

तथाहि भागवते—

स्वापादमूलं भजतः प्रियस्य त्यक्तान्यभावस्य हरिः परेशः ।
विकर्म्म यच्चोत्पतितं कथञ्चित् धुनोति सर्व्वं हृदि सन्निविष्टः ॥६०॥

ज्ञान और वैराग्य पुनि इन्है आदि दै जोय । अंग न कबहूं ह्वै सकै कृष्ण भक्त कैं सोय ॥

तथाहि तत्रैव—

तस्मान्मद्भक्तियुक्तस्य योगिनो वै मदात्मनः । न ज्ञानं न च वैराग्यं प्रायः श्रेयो भवेदिह ॥६१

जीव अहिंसा जम नियम इन्है आदि गुण जोय । कृष्ण भक्त के संग सदा हैं जु विसेस न सोय ॥

तथाहि स्कान्दे—

एते न ह्यद्भुता व्याध तवाहिंसादयो गुणाः । हरिभक्तौ प्रवृत्ता ये न ते स्युः परतापिनः ॥६२॥

साधन सब विधि भक्ति के कहैं कछुक करि प्रीति । रागानुगा जु भक्ति की सुनो सनातत रीति ॥
रागमई मुख्या भगति निति व्रजजन तिहिं धाम । तिनकी अनुगति भक्ति कौ रागानुगा जु नाम ॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

इष्टे स्वारसिकी रागः परमाविष्टता भवेत् । तन्मयी या भवेद्भक्तिः सात्र रागात्मिकोदिता ॥६३॥

तृष्णा गाढ़ जु इष्ट मधि यहै राग कौ आहि । है स्वरूप लच्छण यहै सुनो दूसरो ताहि ॥
ईष्ट मध्य आविष्टता हिये निरन्तर होय । तिहि तटस्थ लच्छण कहैं परम विज्ञजन सोय ॥
राग मई हरिभक्ति को रागात्मिका जु नाम । तिहि सुनि लोभी होय जन विरल भाग्य अभिराम ॥
व्रजवासी के भाव की अनुगति करै लुभाय । शास्त्र युक्ति मानें न इह रागानुगा सुभाय ॥

तथाहि तत्रैव—

रागात्मिकामनुसृता या सा रागानुगोच्यते । विराजन्तीमभिव्यक्तं व्रजवासिजनादिषु ॥६४॥

तत्रैव—तत्तद्भावादिमाधुर्य्ये श्रुते धीर्यदपेक्षते । नात्र शास्त्रं न युक्तिञ्च तल्लोभोत्पत्तिलक्षणम् ॥६५॥

वाह्य और अन्तर जु है याके साधन दोय । वाह्य करैं साधक बपु जु श्रवण कीरतन जोय ॥
हिय निज सिद्ध शरीर मधि करि जु भावना ताहि । व्रज मधि सेवन कृष्ण कौ करैं रैंनदिन आहि ॥

तथाहि तत्रैव—सेवा साधकरूपेण सिद्धरूपेण चात्र हि । तद्भावलिप्सुना कार्य्या व्रजलोकानुसारतः ॥६६॥

निज भावाश्रय भक्ति कौ पाछैं लगि कैं सोय। सेवा करैं निरंतरहिं अन्तरमना सु होय॥

तथाहि तत्रैव—

कृष्णं स्मरन्जनंचास्य प्रेष्ठं निजसमीहितं। तत्तत्कथारतश्चासौ कुर्य्याद्वासं व्रजे सदा॥६७॥

दास सख्य पित्रादि औ गण जु प्रेयसी ताहि। इन सब भावनि कौ गननि राग मार्ग मधि आहि॥

तथाहि तृतीय स्कन्धे—

न कर्हिचिन्मत्पराः शान्तरूपे नंक्ष्यन्ति नो मेऽनिषो लेढ़ि हेतिः।
येषामहं प्रिय आत्मा सुतश्च सखा गुरुः सुहृदो दैवमिष्टम्॥६८॥

हयशीर्ष पञ्चरात्रे च—

पति पुत्र सुहृद्भ्रातृ पितृवन्मित्रवद्धरिं। ये ध्यायन्ति सदोद्युक्तास्तेभ्योऽपीह नमो नमः॥६९॥

करैं भक्ति रागानुगा जोई जन इहिं रीति। चरनिनि मधि श्री कृष्ण के ताकें उपजै प्रीति॥
प्रेमांकुर के नाम बिबि है रति भावहि जान। जिन ही तें वस होत हैं कृष्ण आप भगवान॥
यहैं कह्यौ अविधेय कौ विवरण कछुक विचार। कह्यौ जु करि संक्षेप नहि कह्यौ जाय विस्तार॥
कृष्ण भक्ति महिमा यहै कही शचीसुत आहि। पावै पद श्रीकृष्ण के जो जन सुनै जु याहि॥
रूप जु श्री रघुनाथ के चरननि की जिहिं आस। प्रभु चरितामृत कहत सो कृष्णदास तिहिंदास॥
रूप सनातन जगत हित सुबल स्याम पद आस। प्रभु चरितामृत लिखे व्रजभाषाहि प्रकास॥

इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखण्डे अभिधेय वर्णनंनाम द्वाविंशति परिच्छेदः॥

त्रयोविंश परिच्छेदः

चिराददत्तं निजगुप्तवित्तं स्वप्रेमनामामृतमत्युदारः।
आपामरं यो विततार गौरकृष्णो जनेभ्यस्तमहं प्रपद्ये॥१॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद। जय अद्वैत हिमांसु जय गौरभक्त के वृन्द॥
सुनौ जु अब फल भक्ति कौ प्रेम प्रयोजन जानि। होय भक्तिरस कौ हियें जाकौं सुने सुज्ञान॥
होय गाढ़ रति कृष्ण मधि प्रेम नाम अभिराम। कृष्ण भक्ति रस कौ वहै स्थाई भाव जु नाम॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

शुद्धसत्वविशेषात्मा प्रेम सूर्य्यांशुसाम्यभाक्। रुचिभिश्चित्तमासृण्यकृदसौ भाव उच्यते॥२॥

ए बिबि लच्छन भाव के है स्वरूप तटस्थ। अब जो लच्छण प्रेम को सुनौ सनातन स्वस्थ॥

तथाहि तत्रैव—

सम्यङ् मसृणितस्वान्तो ममत्वातिशयांकितः। भावः स एव सान्द्रात्मा बुधैः प्रेमा निगद्यते॥३॥

नारद पञ्चरात्रे—अनन्यममता विष्णौ ममता प्रेम संगता। भक्तिरित्युच्यते भीष्मप्रल्हादोद्धवनारदैः॥४॥

श्रद्धा काहू भाग्य करि काहू जीवहि होय। करै संग तब साधु कौ जीव भाग्य जुत सोय॥
साधु संग तैं होय तब श्रवण कीरतन नित्त। होय जु साधन भक्ति करि सर्वानर्थ निवर्त्त॥
भये अनर्थ निवर्ति कें भक्ति सु निष्ठा होय। भयें जु तिहिं श्रवणादि मधि पुनि रुचि उपजै सोय॥

होय सु रुचितैं भक्ति मधि अति आसक्ति जु आहि। उपजैं हिय आसक्ति ते प्रीति सु अंकुर तौहिं॥
वहै भाव जब गाढ़ ह्वै धरै प्रेम जो नाम। है जु प्रयोजन प्रेम सों सब आनन्द कौ धाम॥

तथाहि भ० र० सिन्धौ—

आदौ श्रद्धा ततः साधुसंगोऽथ भजनक्रिया, ततोऽनर्थनिवृत्तिः स्यात् ततोनिष्ठा रुचिस्ततः।
अथासक्तिस्ततोभावस्ततः प्रेमाभ्युदञ्चति, साधकानामयं प्रेम्नः प्रादुर्भावे भवेत्क्रमः॥५॥

तथाहि भागवते—सतां प्रसंगान्मम वीर्य्यसंविदो भवन्त्येति श्लोकादौ द्रष्टव्यः॥६॥

जा हरि जन के हृदय मधि इह भावांकुर होय। ताके इतेक चिन्ह हैं कहैं शास्त्र सब जोय॥

तथाहि भ० र० सिन्धौ—

क्षान्तिरव्यर्थकालत्वं विरक्तिर्मानशून्यता, आशाबद्धः समुत्कंठा नामगाने सदारुचिः।
आसक्तिस्तद्गुणाख्याने प्रीतिस्तद्वसतिस्थले, इत्यादयोऽनुभावाः स्युर्जातभावांकुरे जने॥७॥

इह नव अंकुर प्रीति कौ जाके हिय मधि होय। ताके प्राकृत क्षोभ करि होय क्षोभ नहि सोय॥

तथाहि भागवते—

तं मोपयातं प्रतियंतु विप्रा गंगा च देवी धृतचित्तमीशे।
द्विजोपसृष्टः कुहकस्तक्षको वा दशत्वलं गायत विष्णुगाथाः॥८॥

विना कृष्णसम्बन्ध तिहि काल व्यर्थ नहि जाय। भुक्ति सिद्धि इन्द्रिय विषय तिहि नहि भावै चाय॥

तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—

वाग्भिस्तुवन्तो मनसा स्मरन्त स्तन्वा नमन्तोप्यनिशं न तृप्ताः।
भक्ताः स्त्रवन्नेत्रजलाः समग्रमायुर्हरेरेव समर्पयन्ति॥९॥

तथाहि भागवते—

यो दुस्त्यजान्दारसुतान् सुहृद्राज्यं हृदिस्पृशः। जहौ युवैव मलवदुत्तमः श्लोकलालसः॥१०॥

है सर्वोत्तम आपकौ दीन जानि यै जोय। कृष्ण कृपा करि है जु यह दृढ़ करि माने सोय॥

तथाहि पाद्मे—

हरौ रतिं वहन्नेष नरेन्द्राणां शिखामणिः। भिक्षामटन्नरिपुरे श्वपाकमपि वन्दते॥११॥

तथाहि भक्तिरसामृतसिन्धौ—

न प्रेमा श्रवणादि भक्तिरपि वा योगोऽथवा वैष्णवो,
ज्ञानं वा शुभकर्म्म वा कियदहो सज्जातिरप्यस्ति वा।
हीनार्थाधिकसाधके त्वयि तथाप्यच्छेद्यमूला सती,
हे गोपीजनवल्लभ! व्यथयते हाहा मदाशैव माम्॥१२॥

होय समुत्कंठा सदा हियौ लालसा धाम। नाम गान मधि रुचि सदा लेय कृष्ण कौ नाम॥

तथाहि कृष्णकर्णामृते—

त्वच्छैशवं त्रिभुवनाद्भुतमित्यवेहि मच्चापलञ्च तव वा मम वाधिगम्यं।
तत्किं करोमि विरलं मुरलीविलासी मुग्धं मुखाम्बुजमुदीक्षितुमीक्षणाभ्यां॥१३॥

तथाहि भ० र० सिन्धौ—

रोदनबिंदुमकरन्दस्यन्दिदृगिन्दीवराद्य गोविन्द।
तव मधुरस्वरकण्ठी गायति नामावलिं बाला॥१४॥

होय जु हरिगुण कथनमधि अति आसक्तिजु तास। कृष्ण जु लीला धाम मधि करैं निरन्तर वास ॥

तथाहि—मधुरं मधुरं वपुरस्य विभोरिति वाक्यं ॥१५॥

तथाहि भ० र० सिन्धौ—

कदाहं यमुनातीरे नामानि तव कीर्त्तयन्। उद्बाष्पः पुण्डरीकाक्ष रचयिष्यामि ताण्डवम् ॥१६॥

चिन्ह कृष्णरति के जु ये कियौजु विवरण ताहि। चिन्ह अवै हरि प्रेम के सुनो सनातन आहि ॥

कृष्ण प्रेम जाके हियें उदै करै जिमि भान। वचन क्रिया मुद्रा जु तिहि बूझि सकै न सुजान ॥

तथाहि भ० र० सिन्धौ—

धन्यस्यायं नवप्रेमा यस्योन्मीलति चेतसि। अन्तर्व्वाणीभिरप्यस्य मुद्रा सुष्ठु सुदुर्गमा ॥१७॥

तथाहि भागवते—

उन्मादवन्नृत्यति लोकबाह्य इति च ॥१८॥

प्रेमा क्रम चढ़ि स्नेह ह्वै मान प्रणय पुनि होय। राग अनुराग भाव पुनि महाभाव हू सोय ॥

बीज इक्षु रस गुड़ जु खण्डसार सर्करा होय। सिता जु मिश्री बहै पुनि सिद्धसितोपल सोय ॥

पै जैसैं क्रम करि अमल क्रम क्रम बाढ़ै स्वाद। त्यौं हीं रति प्रेमादि मधि बढ़ै स्वाद अल्हाद ॥

अधिकार जु के भेद करि सो रति पंच प्रकार। सांत दास्य औ सख्य पुनि वत्सल और सृङ्गार ॥

पंच स्थाई जु भाव ये होय पंच रस आहि। भक्त सुखी तिन रसनि करि रहै कृष्ण वस ताहि ॥

स्थाई प्रेमादिक मिलैं सामिग्री निज वाम। कृष्ण भक्ति रस रूप करि पावैं ते परिणाम ॥

इक विभाव अनुभाव अरु सात्विक संचारी सोइ। इन ही चारिन के मिलें थाई रति रस होइ ॥

जैसैं दधि मिश्री मिरच और मिलै घनसार। होय रसाला नाम रस अद्भुत स्वाद अपार ॥

सो विभाव द्वै प्रकार आलंवन उद्दीपन मुरलीनादादि जे हैं उद्दीपन जानियैं।
कृष्णादि आलम्बन हैं अनुभाव स्मित नृत्य गीत आदि जेई उद्भाश्वर तें मानियैं।
स्तम्भादिक सात्विकानुभावनि हूं के वीच ते निर्वेदादि व्यभिचारी तीनतीस मानियैं।
सवनि कें मिलै रस होय चमत्कारी महा पंचविधि रस पंच भक्त हिय सानियैं ॥

सांत दास्य रस सख्य पुनि वत्सल मधुर सु नाम। सब हीतें शृंगार रस परम अधिक अति वाम ॥

होय प्रेम परजंत रति सांति सांत रस माहि। बढ़ै दास रति राग लौं क्रम क्रम आगैं नाहि ॥

लहैं सींव अनुराग की सख्य जु वत्सल आहि। सुबलादिक के भाव लौं प्रेम सु महिमा ताहि ॥

सांत दास्य रस के जु विवि योग वियोग बिभेद। सख्य और वात्सल्य मधि जोगादिक बहु भेद ॥

इक केवल शृङ्गार मधि रूढ़भाव अधिरूढ़। गोपिनु गण अधिरूढ़ हैं महिसी गण मधि रूढ़ ॥

महाभाव अधिरूढ़ सो द्वै प्रकार कौ आहि। संभोगे मादन विरह मोहन नाम जु ताहि ॥

चुंवनादि मादन जु के है जु अनन्त विभेद। चित्रजल्प उद्घूर्णता मोहन के द्वै भेद ॥

चित्रजल्प के अंग दस जल्पादिक अभिधान। भ्रमर गीत के पद्य दस ते तिन कौ जु प्रमान ॥

उद्घूर्णा कहियैजु तिहिं विवस चेष्टासु जाहि। नाम दिव्य उन्माद करि ताकौ कहियतु आहि ॥

होय विरह मधि कृष्णकी स्फूर्ति नही सुधि आन । आपुन कौं इह जानई हौं श्री कृष्ण सुजान ॥
विप्रलंभ संभोग पुनि द्वै प्रकार शृंगार । है संभोग अनंत अँग तिन कौ नाहिन पार ॥
विप्रलंभ सो चारि विधि पूर्वराग अरु मान । है प्रवास इक नाम औ प्रेमविचित्य हि जान ॥
पूर्वराग अरु मान पुनि है प्रवाह जो सोइ । राधिकादि व्रज नायिका मधि प्रसिद्ध है जोय ॥
और प्रेम वैचित्य श्रीदसम भागवत आहि । महिषीगणके मधि प्रगट सुक मुनि कह्यौजु ताहि ॥

तथाहि भागवते—

कुररि विलपसि त्वमित्यत्र श्लोके द्रष्टव्यः ॥ १६ ॥

व्रजपति नंदन कृष्ण जू नाइक सिरमणि जोय । नाइकानिकी मुकुटमनि श्री राधा जू सोय ॥

तथाहि भ०र० सिन्धौ—

नायकानां शिरोरत्नं कृष्णस्तु भगवान् स्वयं । यत्र नित्यतया सर्व्वे विराजन्ते महागुणाः ॥ २० ॥

बृहद्गौतमीये—

देवी कृष्णामयी प्रोक्ता राधिका परदेवता । सर्व्वलक्ष्मीमयी सर्व्वकान्तिः सन्मोहिनी परा ॥

है अनंत श्रीकृष्ण के गुण चौसठिजु प्रधान । इक इक गुण सुनि कृष्ण के होय सुसीतल कान ॥

तथाहि भक्तिरसामृत सिन्धौ—

अयं नेता सुरम्यांगः सर्व्वसल्लक्षणान्वितः । रुचिरस्तेजसा युक्तो बलीयान् वयसान्वितः ॥
विविधाद्भुतभाषावित् सत्यवाक्यः प्रियंवदः । बावदूकः सुपाण्डित्यो बुद्धिमान् प्रतिभान्वितः ॥
विदग्धश्चतुरो दक्षः कृतज्ञः सुदृढ़व्रतः । देशकालसुपात्रज्ञः शास्त्रचक्षुः शुचिर्व्वशी ॥
स्थिरो दान्तः क्षमाशीलो गम्भीरो धृतिमान् समः । बदान्यो धार्मिकः शूरः करुणो मान्यमानकृत् ॥
दक्षिणो विनयी ह्रीमान् शरणागतपालकः । सुखी भक्तसुहृत् प्रेमवश्यः सर्व्वशुभंकरः ॥
प्रतापी कीर्त्तिमान् रक्तलोकः साधुसमाश्रयः । नारीगण मनोहारी सर्व्वाराध्यः समृद्धिमान् ॥
वरीयान् ईश्वरश्चेति गुणास्तस्यानुकीर्त्तिताः । समुद्रा इव पञ्चाशत् दुर्विगाह्या हरेरमी ॥
जीवस्वेते बसन्तोऽपि बिन्दु बिन्दुतया क्वचित् । परिपूर्णतया भान्ति तत्रैव पुरुषोत्तमे ॥

तत्रैव—अथ पञ्चगुणा येस्युरंशेन गिरिशादिषु ॥

सदा स्वरूपसंप्राप्तः सर्व्वज्ञो नित्यनूतनः । सच्चिदानन्दसान्द्रांगः सर्व्वसिद्धिनिषेवितः ॥
अथोच्यन्ते गुणाः पञ्च ये लक्ष्मीशादिवर्तिनः । अविचिन्त्यमहाशक्तिः कोटिब्रह्माण्डविग्रहः ॥
अवताराबलीबीजं हतारिगतिदायकः । आत्मारामगणाकर्षीत्यमी कृष्णे किलाद्भुताः ॥
सर्व्वाद्भुतचमत्कारलीलाकल्लोलवारिधिः । अतुल्यमधुरप्रेममण्डितप्रियमण्डलः ॥
त्रिजगन्मानसाकर्षी मुरली कूलकूजितः । असमानोर्द्धरूप श्रीर्विस्मापितचराचरः ॥
लीलाप्रेम्ना प्रियाधिक्यं माधुर्य्ये वेणुरूपयोः । इत्यसाधारणं प्रोक्तं गोविन्दस्य चतुष्टयम् ॥

एवं गुणाश्चतुर्भेदाश्चतुः षष्टिरुदाहृताः ॥३७॥

गुण अनंत श्री राधिका मधि पचीस प्रधान । जिन गुण करि बस हैं सदा कृष्ण आप भगवान ॥

तथाहि ऊज्वलनीलमणौ—

अथ वृन्दावनैश्वर्य्याः कीर्त्त्यन्ते प्रवरा गुणाः । मधुरेयं नववयाश्चलापांगोज्वलस्मिता ॥
चारुसौभाग्यरेखाढ्या गन्धोन्मादितमाधवा । संगीतप्रसराभिज्ञा रम्यवांनर्मपंडिता ॥
विनीता करुणापूर्णा विदग्धा पाटवान्विता । लज्जाशीला सुमर्य्यादा धैर्य्यगाम्भीर्यशालिनी ॥

सुविलासा महाभावपरमोत्कर्षतर्षिणी । गोकुल प्रेमवसतिर्जगत् श्रेणी लसद्यशाः ॥
गुर्व्वर्पितगुरुस्नेहा सखीप्रणयितावशा । कृष्णप्रियावलीमुख्या सन्तताश्रवकेशवा ॥

नायका जु नायक सु पुनि रस आलंवन दोय । श्रीराधा व्रजराजसुत दोय मुख्य ये सोय ॥
ऐसैं दास जु दास मधि सख्य सखागण जोय । वत्सल मधि पित मात आलंवन आश्रय सोय ॥
इन रस कौ अनुभव करैं जैसें जन गण आहि । होय जु रस जा भांति हिय सुनौ जु कारण ताहि॥

भक्तिरसामृतसिन्धौ—

भक्तिनिर्धूतदोषाणां प्रसन्नोज्वलचेतसां । श्रीभागवतरक्तानां रसिकासंगरंगिणाम् ॥
जीवनीभूतगोविन्दपादभक्तिसुखश्रियां । प्रेमान्तरंगभूतानि कृत्यान्यवानुतिष्ठताम् ॥
भक्तानां हृदि राजन्ती संस्कारयुगलोज्वला । रतिरानन्दरूपैव नीयमानानुरस्यतां ॥४५॥
कृष्णादिभि र्विभावाद्यैर्गतैरनुभावाध्वनि । पौढ़ानन्दचमत्कारकाष्ठामापद्यते पराम् ॥

यहै जु रस आस्वाद सों नहि अभक्त गण ताहि । कृष्ण भक्तगण करत हैं रस आस्वादन आहि॥

तथाहि भ० र० सिन्धौ—

सर्वथैव दुरुहोऽयमभक्तै र्भगवद्रसः । तत्पादाम्बुज सर्व्वस्वै र्भक्तै रेवानुरस्यते ॥४७॥

यहै प्रयोजन विवरन जु कह्यौ अल्प करि सोय । पंचम पुरुषारथ यहै कृष्ण प्रेम धन जोय ॥
हमनि प्रथम जु प्रयाग मधि यह रस कौ जु विचार । तुम्हरे भाई रूप कौं कीयौ शक्ति संचार ॥
तुम हूं दृढ़ करि करहुगे भक्ति शास्त्र जु प्रचार । तीर्थ लुप्त मथुरा जु के करौ तिनहि उद्धार ॥
वृन्दावन मधि कृष्ण की सेवा जन आचार । शास्त्र स्मृति वैष्णव जु करि करिहो इनहिं प्रचार॥
रहनि युक्त वैराग्य की सबै सिखाई आहि । सुष्क ज्ञान वैराग्य सबै कियौ निषेध जु ताहि ॥

गीतायां— अद्वेष्टा सर्व भूतानां मैत्रः करुण एवच ।
निर्म्ममो निरहंकारः समदुःखसुखःक्षमीत्यादीनि श्लोकानि ४८।५५

भागवते— चीराणि किमित्यादि च ॥५६

पूछो सब सिद्धान्त तव तिन्है सनातन आहि । कहै गूढ़ भागवत के प्रभु सिद्धान्त जु ताहि ॥
कही है जु हरिवंस मधि गोलोक स्थिती सोय । कृष्ण स्तुति जब आय कैं इन्द्र करी है जोय ॥
मौशल लीला और हरि अन्तर्ध्यान वखान । कहै केश अवतार जे जे विरुद्ध विख्यान ॥
महिषी हरणादिक चरित है माया के ऐंन । अर्थ सिखायें होय ज्यौं सब सिद्धांत सुखेन ॥
तवै सनातन गौर कें चरण सीस निज देय । कियौ निवेदन दीन ह्वै दांतनि मधि तृण लेय ॥
नीच जाति सेवी जुहौं अति पामर हम जोय । सिखये तुम सिद्धांत जे अजहि अगोचर सोय ॥
ये सिद्धांत अमृत उदधि मो मन तुच्छ जु आहि । ह्वै न सकै मेरौ हियौ एक विंदु हू ताहि ॥
पंगु नचै वै कौं प्रभू है तुम्हरो मन जोय । मम माथे पर चरण धरि मोहि देहु वर सोय॥
सकल फुरै तुव हृदय मधि हम जो सिखयो तोहि । ह्वै है प्रभु तुम्हरें इंही वर ही तें वल मोहि॥
तिहि सिर पर कर धारि कैं तवै महाप्रभु आहि । फुरौ तुम्हरे हृदय सब इह वर दीनौ ताहि ॥

प्रेम पयोधि कौ कह्यौ संक्षेप जु संवाद । कह्यौ जाय विस्तार नहि प्रभु जू कौ परसाद ॥
प्रभु उपदेशामृत सुनै जोई जन इक बार । वेगि मिलैं सो ताहि श्रीकृष्ण प्रेम धनसार ॥
श्री रूप जु रघुनाथ के चरननि की जिहि आस । प्रभु चरितामृत सौं कहै कृष्णदास तिहिं दास॥
रूप सनातन जगत हित सुवल स्याम पद आस । प्रभु चरितामृत कौं कहै व्रजभाषाहि प्रकास॥

इति श्रीचैतन्यचरितामृते मध्यखंडे प्रेम पयोजन वर्णनं नाम त्रयोविंशति परिच्छेदः ॥

———

चतुर्विंश परिच्छेदः

आत्मारामेति पद्यार्कस्यार्थांशून् यः प्रकाशयन् । जगत्तमो जहाराव्यात् स चैतन्योदयाचलः ॥

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
तबै सनातन जू महाप्रभु जू के पद धारि । लगे कहन कछु फेरहू करि विनती सु विचार ॥
सुनी है जु तुम प्रथम ही सार्वभौम सों जोइ । एक पद्य के अर्थ दस आठ किये हैं सोइ ॥

तथाहि—

आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्थाऽप्युरुक्रमे । कुर्वन्त्यहैतुकीं भक्तिमित्थंभूतगुणो हरिः ॥ २ ॥

सुनिकें आचरज हृदय मम उत्कंठित अति आहि। सुनैंजु श्रवन सिराय ज्यौं कहौ कृपाकरि ताहि॥
प्रभु बोलें हम बावरे बचन हमारौ जोय । सार्वभौम वौरो जु करि सांचहि मानें सोय ॥
कहा प्रलाप्यौ हम तहां नहि कछु सुधि है सोय । जो तुम संग प्रतापतें कछु सुधि ह्वै हैं जोय ॥
सहज हमारें होय कछु नहीं अर्थकौ भास । तुम सव संग के वल जु करि होय कछू सु प्रकास ॥
एकादस पद पद्य इहि है अति निर्मल जोय । प्रथक अर्थ नाना पदनि जग मगात हैं सोय ॥

तथाहि विश्वप्रकासे—

आत्मा-देह मनो ब्रह्म स्वभाव धृति बुद्धिषु प्रयत्ने च इति ॥ ३ ॥

ते हैं आत्मारामगण रमैं सात इन जोय । आगैं आत्मारामगण गणना करि हैं सोय ॥
मुनि आदि शब्द जैहैं सुनौ तिन्नि अर्थ तुम न्यारे न्यारे कहें पाछें मिलें होय जोयी हैं।
कहिये मुनिशब्द ये मौनी औ मनन सील औ तपस्वी व्रती जती ऋषि मुनि होयी हैं ।
निर ग्रंथ शब्द कहैं जो अविद्या ग्रंथहीन विधि निषेध शास्त्रादि ज्ञान जानौ सोई है ।
मूर्ख नीच म्लेछ आदि शास्त्ररिक्तगण धनी और निरग्रंथ होय धन बिन कोई है ॥
कहैं उरुक्रम शब्द करि जिहिं क्रम वड़ौजु होय । कहैंजु पुनि क्रम शब्द करि पद विक्षेपन सोय ॥

विश्वप्रकाशे—

निर्निश्चये निष्क्रमार्थे निर्निर्माणनिषेधयोः । ग्रन्थे धने च सन्दर्भे वर्णसंग्रहणेऽपि च ॥ ४ ॥

शक्ति कल्प जुत आक्रमण परिपाटी पुनि ताहि । एक चरण चालन कियें कंपित त्रिभुवन आहि ॥

तथाहि—त्रिसाम्यसदनादुरुकम्पयानं ॥ ५ ॥

विभु स्वरूप व्यापक शकति धारण पोषण वर्य्य । परव्योम ईश्वर सकति गोलोकहि माधुर्य्य ॥
करैं जु माया शक्ति करि ब्रह्मांडादिक जोय । परिपाटी तिन जननि की करे आप प्रभु सोय ॥
तथाहि—क्रमः शक्तौ परिपाट्यां क्रमश्चालनकम्पयोः ॥ ६ ॥
हेतु परस्मै पद यहै पद कुर्वंति सु जोय । हरि सुख हेतु सु भजन कौ कहैं जु आसय सोय ॥
तथाहि—स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ॥ ७ ॥
हेतु शब्द कहिये भुगति बाँछा जिती अपार । भुक्ति सिद्धि औ मुक्ति पुनि मुख्यसु तीन प्रकार ॥
एक भुक्ति पद करि कहैं भोग प्रकार अपार । सिद्धि कहैं अष्टादस जु मुक्ति जु पांच प्रकार ॥
सोइ अहेतुकि भक्ति है ये न होय जा मांहि । कृष्ण कौतुकी तिंही वस औरन के वस नांहिं ॥
भक्ति शब्द कौ अर्थ है दस प्रकार कौ जोय । इक साधन प्रेमा भगति नव प्रकार हैं सोय ॥
रति लक्षणा जु और पुनि प्रेम लक्षणा जोय । भाव लक्षणा औ महा भाव लक्षणा सोय ॥
सांत भक्त की रति जु सो बढ़ै प्रेम परजंत । दास भगति की है जु रति राग दसा जिहिं अंत ॥
सखा यूथ के रति जु अनुराग अवधि है जाहि । तात मात के स्नेह अनुराग सींव है ताहि ॥
महाभाव सींवा लहै प्रेयसि गण रति जोय । भक्ति शब्द के ये सबै अर्थ सु महिमा सोय ॥
शब्द जु इत्थंभूत गुण है ताके मधि जोय । व्याख्यान ताकौं करैं सुनौ अबै तुव सोय ॥
इत्थंभूत जु शब्द यह भिन्न अर्थ है ताहि । तैसैं हीं गुण शब्द कौ अर्थ भिन्न है आहि ॥
अर्थ जु पूर्णानंदमय इत्थंभूत हि आहि । आगें ब्रह्मानंद हूं त्रिण प्राय हैं जाहि ॥
तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—
त्वत्साक्षात् करणाल्हादविशुद्धाब्धिस्थितस्य मे । सुखानि गोष्पदायन्ते ब्राह्मण्यपि जगद् गुरो ॥ ८ ॥
सर्वाकर्षक सबनि कौ आल्हादक है जोय । सब ही के मन श्रवन कौ महारसायन सोय ॥
अपनें रस करि करैं जो सर्व विस्मरण आहि । भुक्ति सिद्धि औ मुक्ति सुख गंध छुटावैं जाहि ॥
जिन के गुण की है महाशक्ति अलौकिक जोय । करि राखें श्री कृष्ण कौं कृपा जु परवस सोय ॥
शास्त्रयुक्ति नाही इह्यां है सिद्धांत विचार । यह सुभाव गुण कौ तिहीं माधुरिता कौ सार ॥
अर्थ यहै गुण शब्द कौ हरि के गुण जु अपार । सत चित रूप जु गुण सबै पूर्णानंद विचार ॥
ऐश्वर्य्य माधुर्य्य तिहि औ कारुण्य स्वरूप । पूरणता निज जन विषै बत्सलता सु अनूप ॥
निज स्वरूप पर्य्यंतलौं हौ वदान्यता ताहि । और अलौकिक रूप रस सौरभदि गुण आहि ॥
क्यौंहूं एक गुण करि करैं आकर्षण मन काहि । सौरभादि गुण करि हरयौ सनकादिक मन ताहि॥
तथाहि—तस्यारविंदनयनस्य पदारविन्देति ॥ ६ ॥
हरयौ जु मन सुकदेव कौ लीला श्रवणजु ताहि । हरयौजु श्रीअँग रूप करि गोपीगणमन आहि ॥
तथाहि—अजितरुचिरलीलाकृष्टसारस्तदीयमिति, परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्य इति ॥ १० ॥
तथाहि—वीक्षालकावृतमुखं तव कुण्डलश्रिगण्डस्थलाधरसुधं हसिताबलोकं ।
दत्ताभयञ्च भुजदण्डयुगं बिलोक्य वक्षः श्रियैकरमणञ्च भवाम दास्यः ॥ ११ ॥

मधुर रूप गुण श्रवण करि रुक्मिण्यादिक जोय। आकर्षण तिनकौं कियौ जानतहैं सब कोय ॥

तथाहि—

श्रुत्वा गुणान्भुवनसुन्दर शृण्वतां ते निर्विश्य कर्णविवरैर्हरतोङ्गतापं।
रूपं दृशां दृशिमतामखिलार्थ लाभं त्वय्यच्युताविशति चित्रमपत्रपं मे ॥१२॥

हरैं जु मुरलीनाद करि लक्ष्म्यादिक मन जोय। भाव जोग्य जग में जिते जुवती जन हूं सोय ॥

तथाहि—यद्वांछया श्रीर्ललना इत्यादि १३

तथाहि—

कास्त्र्यङ्गं ते कलपदामृतवेणुगीत संमोहितार्य्यचरितान्न चलेत्रिलोक्याम्।
त्रैलोक्यसौभगमिदञ्च निरीक्ष्य रूपं यद्गोद्विजद्रुममृगा पुलकान्यविभ्रन् ॥ १४ ॥

निज गुरु जन के तुल्य हैं जे नारीगण आहि। वात्सल्य रस करि करैं आकर्षण गुण ताहि ॥

दास्य और सख्यादिक जु भावनि करि कैं सोय। पुरुषादिक गणकौं करैं आकर्षण गुण जोय ॥

अवर पक्षि मृग तरु लता चेतन औ जड़ आहि। प्रेम मत्त करिकैं करैं आकर्षण गुण ताहि ॥

तथाहि—यद्गोद्विजद्रुममृगाः पुलकान्यविभ्रन् ॥ १४ ॥

अर्थ जु वहु हरि शब्द के परम मुख्य हैं दोय। हरैं अमंगल सब हरैं मनहि प्रेम दै सोय ॥

जिहिं तिहिं भांति करै श्रवण जोई सोई आहि। पाप जु चारि प्रकार के हरण करैं जे ताहि ॥

तथाहि—

यथाग्निः सुसमृद्धार्चिः करोत्येधांसि भस्मसात्। तथा मद्विषया भक्तिरुद्धवैनांसि कृत्स्नशः ॥ १६ ॥

करैं तवै बाधक भगति कर्म अविद्या नास। श्रवणादिक कौ फल जु है प्रेमा करैं प्रकास ॥

निज गुण करि ताकौं हरै वपु इन्द्रिय मन आहि। ऐसैं कृष्ण कृपाल हैं ऐसैं गुणगण ताहि ॥

गुण करि सब मन हरि प्रचुर पुरुषारथनि छुटाय। यहै मुख्य हरि शब्दकौ लक्षण कियौ बनाय ॥

हैं जु च अपि ह्यां शब्द विव ये अव्यय हैं दोय। जाही अर्थ लगाइये कहैं अर्थ ये सोय ॥

तऊ कहैं जु च शब्द के मुख्य अर्थ ये सात। हैं जु मुख्य अति शब्द के सात अर्थ विख्यात ॥

तथाहि विश्वप्रकाशे—

चान्वाचये समाहारेऽन्योन्यार्थेच समुच्चये। यत्नान्तरे तथा पादपूरणे व्यवधारणे ॥१७॥

तथाहि तत्रैव—

अपि संभावनाप्रश्नशंकागर्हासमुच्चये। तथा युक्तपदार्थेषु कामाचारक्रियासु च ॥१८॥

इह एकादस पदनि कौ अर्थ सु निश्चय जान। करैं श्लोककौ अर्थ अब जो जिहिं लगे प्रमान ॥

ब्रह्म शब्द कौ अर्थ तत्व सवै बृहत्तम जोय। है स्वरूप ऐश्वर्य्य करि जिहिं सम नाहीं कोय ॥

तथाहि—बृहत्वाद्बृंहणत्वाच्च यद्रूपं ब्रह्मसंज्ञितं। १६ ॥

तिहीं ब्रह्म शब्दहि जुकरि कहै स्वयं भगवान। जिहि विन तीनौ काल मधि वस्तु नहीं कछु आन ॥

तथाहि—

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत् सदसत् परं। पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्यत सोस्म्यहं ॥ २० ॥

आत्मा शब्द करि कृष्ण जु बृहत्तत्व जो रूप। सर्वव्यापक सबनिके साक्षी परम स्वरूप ॥

विभु स्वरूप व्यापक शकति धारण पोषण वर्य्य । परव्योम ईश्वर सकति गोलोकहि माधुर्य्य ॥
करैं जु माया शक्ति करि ब्रह्मांडादिक जोय । परिपाटी तिन जननि की करै आप प्रभु सोय ॥
तथाहि—क्रमः शक्तौ परिपाट्यां क्रमश्चालनकम्पयोः ॥ ६ ॥
हेतु परस्मै पद यहै पद कुर्वंति सु जोय । हरि सुख हेतु सु भजन कौ कहैं जु आसय सोय ॥
तथाहि—स्वरितञितः कर्त्रभिप्राये क्रियाफले ॥ ७ ॥
हेतु शब्द कहिये भुगति वाँछा जिती अपार । भुक्ति सिद्धि औ मुक्ति पुनि मुख्यसु तीन प्रकार ॥
एक भुक्ति पद करि कहैं भोग प्रकार अपार । सिद्धि कहैं अष्टादस जु मुक्ति जु पांच प्रकार ॥
सोइ अहेतुकि भक्ति है ये न होय जा मांहि । कृष्ण कौतुकी तिंही वस औरन के वस नांहिं ॥
भक्ति शब्द कौ अर्थ है दस प्रकार कौ जोय । इक साधन प्रेमा भगति नव प्रकार हैं सोय ॥
रति लच्छणा जु और पुनि प्रेम लच्छणा जोय । भाव लच्छणा औ महा भाव लच्छणा सोय ॥
सांत भक्त की रति जु सो वढ़ै प्रेम परजंत । दास भगति की है जु रति राग दसा जिंहिं अंत ॥
सखा यूथ के रति जु अनुराग अवधि है जाहि । तात मात के स्नेह अनुराग सींव है ताहि ॥
महाभाव सींवा लहै प्रेयसि गण रति जोय । भक्ति शब्द के ये सवै अर्थ सु महिमा सोय ॥
शब्द जु इत्थंभूत गुण है ताके मधि जोय । व्याख्यान ताकौं करैं सुनौ अवै तुव सोय ॥
इत्थंभूत जु शब्द यह भिन्न अर्थ है ताहि । तैसैं हीं गुण शब्द कौ अर्थ भिन्न है आहि ॥
अर्थ जु पूर्णानंदमय इत्थंभूत हि आहि । आगें ब्रह्मानंद हूं त्रिण प्राय हैं जाहि ॥
तथाहि हरिभक्ति सुधोदये—
त्वत्साक्षात् करणाल्हादविशुद्धाब्धिस्थितस्य मे । सुखानि गोष्पदायन्ते ब्राह्मण्यपि जगद् गुरो ॥ ८ ॥
सर्वाकर्षक सवनि कौ आल्हादक है जोय । सव ही के मन श्रवन कौ महारसायन सोय ॥
अपनें रस करि करैं जो सर्व विस्मरण आहि । भुक्ति सिद्धि औ मुक्ति सुख गंध छुटावैं जाहि ॥
जिन के गुण की है महाशक्ति अलौकिक जोय । करि राखें श्री कृष्ण कौं कृपा जु परवस सोय ॥
शास्त्र युक्ति नाही इह्यां है सिद्धांत विचार । यह सुभाव गुण कौ तिहीं माधुरिता कौ सार ॥
अर्थ यहै गुण शब्द कौ हरि के गुण जु अपार । सत चित रूप जु गुण सवै पूर्णानंद विचार ॥
ऐश्वर्य्य माधुर्य्य तिहि औ कारुण्य स्वरूप । पूरणता निज जन विषै वत्सलता सु अनूप ॥
निज स्वरूप पर्य्यंतलौं हौ वदान्यता ताहि । और अलौकिक रूप रस सौरभदि गुण आहि ॥
क्यौंहूं एक गुण करि करैं आकर्षण मन काहि । सौरभादि गुण करि हरचौ सनकादिक मन ताहि॥
तथाहि—तस्यारविंदनयनस्य पदारविन्दे ति ॥ ६ ॥
हरचौ जु मन सुकदेव कौ लीला श्रवणजु ताहि । हरयौजु श्रीअँग रूप करि गोपीगणमन आहि ॥
तथाहि—अजितरुचिरलीलाकृष्टसारस्तदीयमिति, परिनिष्ठितोऽपि नैर्गुण्य इति ॥ १० ॥
तथाहि—वीक्षालकावृतमुखं तव कुण्डलश्रिगण्डस्थलाधरसुधं हसितावलोकं ।
दत्ताभयञ्च भुजदण्डयुगं बिलोक्य वक्षः श्रियैकरमणञ्च भवाम दास्यः ॥११॥

मधुर रूप गुण श्रवण करि रुक्मिण्यादिक जोय। आकर्षण तिनकौं कियौ जानतहैं सब कोय ॥
तथाहि—

श्रुत्वा गुणान्भुवनसुन्दर शृण्वतां ते निर्विश्य कर्णविवरैर्हरतोङ्गतापं।
रूपं दृशां दृशिमतामखिलार्थ लाभं त्वय्यच्युताविशति चित्रमपत्रपं मे ॥१२॥

हरें जु मुरलीनाद करि लक्ष्म्यादिक मन जोय। भाव जोग्य जग में जिते जुवती जन हूं सोय ॥
तथाहि—यद्वांछया श्रीर्ललना इत्यादि १३
तथाहि—

कास्त्र्यगं ते कलपदामृतवेणुगीत संमोहितार्य्यचरितान्न चलेत्रिलोक्याम्।
त्रैलोक्यसौभगमिदञ्च निरीक्ष्य रूपं यद्गोद्विजद्रुममृगा पुलकान्यविभ्रन् ॥ १४ ॥

निज गुरु जन के तुल्य हैं जे नारीगण आहि। वात्सल्य रस करि करैं आकर्षण गुण ताहि ॥
दास्य और सख्यादिक जु भावनि करि कें सोय। पुरुषादिक गणकौं करें आकर्षण गुण जोय ॥
अवर पक्षि मृग तरु लता चेतन औ जड़ आहि। प्रेम मत्त करिकैं करैं आकर्षण गुण ताहि ॥
तथाहि—यद्गोद्विजद्रुममृगाः पुलकान्यविभ्रन् ॥ १४ ॥
अर्थ जु वहु हरि शब्द के परम मुख्य हैं दोय। हरें अमंगल सव हरैं मनहि प्रेम दैं सोय ॥
जिहिं तिहिं भांति करै श्रवण जोई सोई आहि। पाप जु चारि प्रकार के हरण करें जे ताहि ॥
तथाहि—
यथाग्निः सुसमृद्धार्चिः करोत्येधांसि भस्मसात्। तथा मद्विषया भक्तिरुद्धवैनांसि कृत्स्नशः ॥ १६ ॥
करैं तवै बाधक भगति कर्म अविद्या नास। श्रवणादिक कौ फल जु है प्रेमा करैं प्रकास ॥
निज गुण करि ताकौं हरै वपु इन्द्रिय मन आहि। ऐसैं कृष्ण कृपाल हैं ऐसैं गुणगण ताहि ॥
गुण करि सब मन हरि प्रचुर पुरुषारथनि छुटाय। यहै मुख्य हरि शब्दकौ लक्षण कियौ वनाय ॥
हैं जु च अपि ह्यां शब्द विव ये अव्यय हैं दोय। जाही अर्थ लगाइये कहें अर्थ ये सोय ॥
तऊ कहैं जु च शब्द के मुख्य अर्थ ये सात। हैं जु मुख्य अति शब्द के सात अर्थ विख्यात ॥
तथाहि विश्वप्रकाशे—

चान्वाचये समाहारेऽन्योन्यार्थेच समुच्चये। यत्नान्तरे तथा पादपूरणे व्यवधारणे ॥१७॥

तथाहि तत्रैव—

अपि संभावनाप्रश्नशंकागर्हासमुच्चये। तथा युक्तपदार्थेषु कामाचारक्रियासु च ॥१८॥

इह एकादस पदनि कौ अर्थ सु निश्चय जान। करैं श्लोककौ अर्थ अव जो जिहिं लगे प्रमान ॥
व्रह्म शब्द कौ अर्थ तत्व सवै वृहत्तम जोय। है स्वरूप ऐश्वर्य्य करि जिहिं सम नाहीं कोय ॥
तथाहि—वृहत्वाद्वृंहणत्वाच्च यद्रूपं व्रह्मसंज्ञितं। १६ ॥
तिहीं व्रह्म शब्दहि जुकरि कहै स्वयं भगवान। जिहि विन तीनौ काल मधि वस्तु नहीं कछु आन ॥
तथाहि—

अहमेवासमेवाग्रे नान्यद्यत् सदसत् परं। पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्यत सोस्म्यहं ॥ २० ॥

आत्मा शब्द करि कृष्ण जु वृहत्तत्व जो रूप। सर्वव्यापक सबनिके साक्षी परम स्वरूप ॥

तथाहि—आततत्वाच मातृत्वादात्मा हि परमो हरिः ॥२१॥
व्याप्ति हेतु तिहिं कृष्णकी साधन त्रिविधजुआहि । ज्ञान जोगअरु भक्ति सुठि लच्छण न्यारे ताहि॥
इन तीनौ साधननि करि तीन रूप तिहिं भास । ब्रह्म और परमातमा औ भगवत्व प्रकास ॥
तथाहि—ब्रह्मेति परमात्मेति भगवानिति शब्द्यते ॥२२॥
जदपि ब्रह्म परमातमा कहैं कृष्ण कौं दोइ । निर्विशेष व्यापक कहैं रूढ़ि बृत्ति करि सोय ॥
निर्विशेष ही ब्रह्म के ज्ञान मार्ग करि भास । अंतर्जामी रूप करि जोग मार्ग जु प्रकास ॥
राग भक्तिविधि भक्तिये विविहै भक्तिस्वरूप । निज भगवत भगवत्व करि तिहिं प्रकास विविरूप॥
राग भक्ति करि पाइये श्री व्रज के मधि जोय । कृष्ण स्वयं भगवान हैं व्रज पति नंदन सोय ॥
तथाहि—

नायं सुखापो भगवान् देहिनां गोपिकासुतः । ज्ञानिनाञ्चात्मभूतानां यथा भक्तिमतामिह ॥२३॥

पुनि विधि भक्ति जु मार्ग करि देह पारषद होय । जाय भक्त वैकुण्ठ कौं निहचैं करिकें सोय ॥
तथाहि—

यत्र व्रजंत्यनिमिषामृषभानुवृत्त्या दूरे यमा ह्युपरि नः स्पृहणीयशीलाः ।
भर्त्तुर्मिथः सुयशसः कथनानुरागवैक्लव्यबाष्पकलया पुलकीकृतांगाः ॥ २४ ॥

सो जु उपासक होतहैं त्रिविध प्रकारहि जान । इक अकाम बांछक मुकति सर्व काम पुनि आन ॥
तथाहि—

अकामः सर्वकामो वा मोक्षकाम उदार धीः । तीव्रेण भक्तियोगेन यजते पुरुषं परं ॥२५॥

बुद्धिमान कौं होय जो अर्थ विचारहि जान । निज कारज के लोभ करि तऊ भजैं भगवान ॥
भक्ति विना साधन सबै दै न सकैं फल कोइ । भक्ति देय सब भलनि कौं प्रवल स्वतंतर सोय ॥
अजागल स्तन न्याय है जितेक साधन आन । याही तें हरि कौं भजैं बुद्धिमान जन जान ॥
तथाहि—

चतुर्विधा भजंते मां जनाः सुकृतिनोऽर्जुन । आर्त्तो जिज्ञासुरर्थार्थी ज्ञानी च भरतर्षभ ॥२६॥

आर्त्त और अर्थार्थी हैं सकाम मधि दोय । ज्ञानी औ जिज्ञासु पुनि मोक्षकाम विव सोय ॥
येऊ चारों सुकृति हैं महाभाग्य जुत जान । होय जु सो सो काम तजि शुद्ध भक्ति रसवान ॥
साधु भक्तके संग करि हरिकी कृपा जु पाय । कामादिक दुःसंग तजि शुद्ध भक्ति लहि जाय ॥
तथाहि—

सत्संगान्मुक्तदुःसंगो हातुं नोत्सहते बुधः । कीर्त्त्यमानं यशो यस्य सकृदाकर्ण्य रोचनं ॥२७॥

कैतव आतम वंचना कहैं संग इन दोय । कृष्ण कृष्ण की भक्ति विन अन्य कामना जोय ॥

तथाहि—धर्म्मः प्रोज्झितकैतवोऽत्र परमो निर्म्मत्सराणां सतां ॥ २८

कैतव मुख्य प्र शब्द करि कही मुक्ति की चाह । श्री धर स्वामी पद यही कियौ अर्थ अवगाह ॥
अज्ञ जानि कामी जनहि दया जुक्त भगवान् । निज पद पल्लव दै करैं इच्छा की जु पिधान ॥

तथाहि—

सत्यं दिशत्यर्थितमर्थितो नृणां नैवार्थदो यत् पुनरर्थिनो यतः।
स्वयं विधत्ते भजतामनिच्छतामिच्छापिधानं निजपादपल्लवम् ॥ २९ ॥

साधु संग श्री कृष्ण की दया भक्ति जु सुभाव। ए तीनौं जु छुटाय सब करैं कृष्ण मधि भाव ॥
आगें जिहिं जिहिं अर्थ कौ करि हैं व्याख्या जोय। प्रभु गुण के आस्वाद कौ हेतु जानि हौ सोय ॥
श्लोक व्याख्या हित प्रथम यहै कह्यौ आभास। ताही कौं अत्र करत हैं मूल अर्थ परकास ॥
हैं जु उपासी ज्ञान पथ द्वै प्रकार के जान। केवल ब्रह्म उपासक जु औ मुमुक्षु इक आंन ॥
केवल ब्रह्म उपासकनि तीन भेद हैं जोय। इक साधक औ ब्रह्ममय प्राप्त ब्रह्म लय सोय ॥
नही जु केवल ज्ञान करि मुक्ति भुक्ति करि होय। भक्ति सु साधन करि यहै प्राप्त ब्रह्मलय सोय ॥
भक्ति स्वभाव जु ब्रह्म तें करि आकर्षण ताहि। दिव्य देह दै कृष्ण कौं भजन करावै आहि ॥
होय भक्त वपु लहे तें गुण कौ सुमिरण ताहि। करैं जु गुण आकृष्ट ह्वै निर्मल भजन सु आहि ॥

तथाहि—मुक्ता अपि लीलया विग्रहं कृत्वा भगवन्तं भजन्त इति ॥ ३० ॥

सुक सनकादिक जन्म तें हुते ब्रह्ममय जोय। कृष्ण गुणनि आकृष्ट ह्वै कृष्ण हिं भजैं जु सोय ॥
सनकादिक कौ मन हर्यौ सौरभ कृपा जु ताहि। करैं जु गुण आकृष्ट ह्वै निर्मल भजन सु आहि ॥

तथाहि—तस्यारविन्दनयनस्य पदारविन्देति ॥ ३१ ॥

व्यासकृपा करि शुकजु के लीलादिक सुनि हीय। कृष्ण गुणनि आकृष्ट ह्वैं करैं भजन मन दीय ॥

तथाहि—हरेर्गुणाक्षिप्तमति र्भगवान् बादरायणिः। अध्यगान्महदाख्यानं नित्यं विष्णुजनप्रियः ॥ ३२ ॥

परिनिष्ठितोपि नैर्गुण्य इत्यादिच ॥ ३३ ॥

नव योगेश्वर जन्म तें साधक ज्ञानी सोइ। विधि सिव नारद वदनतें हरिगुण सुनिकें जोय ॥
करैं जु गुण आकृष्ट ह्वै भजन कृष्ण कौ आहि। एकादश के मधि कियौ विवरण भक्तिहि ताहि ॥

अन्यच्च—

अक्लेशां कमलभुवः प्रविश्य गोष्ठीं कुर्वन्तःश्रुति शिरसां श्रुतिं श्रुतिज्ञाः।
उत्तुंगं यदुपुरसंगमाय रंगं योगेन्द्राः पुलकभृतो नवाप्यवापुः ॥३४॥

ज्ञानी मोक्षाकांक्षि है तीन प्रकार अनूप। इक मुमुक्षु जीवन मुकत औ इक प्राप्ति स्वरूप ॥
है मुमुक्षु वहु जगत मधि संसारक जन जोय। करैं जतन करि मुक्ति हित हरि कौ सेवन सोय ॥

तथाहि—

मुमुक्षवो घोररूपान हित्वा भूतपतीनथ। नारायणकलाः शान्ता भजन्ति ह्यनसूयवः ॥ ३५ ॥

तिन सबहिनको साधु सँग हरि गुण याहि पुराय। भजन करावै कृष्ण कौ मोक्षजु चाह छुटाय ॥

तथाहि हरिभक्तिसुधोदये—

अहो महात्मन्वहुदोषदुष्टोऽप्येकेन भात्येष भवो गुणेन।
सत्संगमाख्येन सुखावहेन कृताद्य नो येन कृशा मुमुक्षा ॥ ३६ ॥

श्री नारद के संग करि सौनकादि मुनि जोय। कियौ मुमुक्षा छाडिकैं भजन कृष्ण कौ सोय ॥

कोऊ दरशन कृष्ण कौ कृष्ण कृपा लहि कोय । छाँड़ि मुमुक्षा गुननि करि भजैं चरण तिहिं सोय ॥
तथाहि—भः रः सिन्धौ

अस्मिन्सुखघनमूर्त्तौ परमात्मनि वृष्णिपत्तने स्फुरति ।
आत्मारामतया मे वृथा गतो बत चिरंकालः ॥ ३७ ॥

जीवन मुक्ति अनेक तिहि जान भेद विवि मुक्त । भुक्ति मुक्ति इक ज्ञान करि माने जीवन मुक्ति ॥
निसि दिन प्रभुकी भक्ति करि जीवन मुक्त जु होय । गुणाकृष्ट ह्वै भजत हैं कृष्णचन्द्र कौं सोय ॥
जो जन शुस्क जु ज्ञानि करि जीवन मुक्त जु आहि । हरि पद के अपराध करि अधः पात हैं ताहि ॥
तथाहि—

येऽन्येरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनस्त्वय्यस्तभावादविशुद्धबुद्धयः ।
आरुह्य कृच्छ्रेण परं पदं ततः पतन्त्यधोऽनादृत्य युष्मदंघ्रयः ॥ ३८ ॥

गीतायां—

ब्रह्मभूत प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति । समः सर्व्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥ ३९

अन्यत्र च—

अद्वैत वीथीपथिकैरुपास्याः स्वानन्दसिंहासनलब्धदीक्षाः ।
हठेन केनापि वयं शठेन दासीकृता गोपवधूविटेन ॥ ४० ॥

प्राप्त स्वरूप जु भक्त वल दिव्य देह लहि जोय । कृष्ण गुणनि आकृष्ट ह्वै भजैं कृष्णपद सोय ॥
तथाहि—

मुक्ति र्हित्वान्यथारूपं स्वरूपेण व्यवस्थितिः ॥ ४१ ॥
मुक्ता अपि लीलिया विग्रहं कृत्वेति ॥ ४२ ॥

कृष्ण वहिर्मुख दोष करि माया तें भय जोय । हरि उन्मुख कौं देखतें माया मुक्त जु होय ॥
तथाहि—"भयं द्वितीयाभिनिवेशतः स्यादिति श्लोक" "दैवी ह्येषा गुणमयीतिगीतायां" येऽन्येरविन्दाक्ष विमुक्तमानिनेति" "श्रेयः सृतिं भक्तिमुदस्यति," "मुखबाहुरुपादेभ्य इति ॥ ४७ ॥

भक्ति विना नाहिन मुकति मुक्ति भक्ति सों होय । भक्त अवश्य भजें हरिहि पाय मुक्ति हू जोय ॥
तथाहि—मुक्ता अपि लीलया विग्रहं कृत्वेति ॥ ४८ ॥

येई आत्माराम छह हरिकौं भजैं सुजान । पृथक पृथक जु चकार ह्यां अपि कौ अर्थ बखान ॥
करैं जो आत्माराम हू कृष्ण भक्ति निहकाम । कृष्ण भजन आसक्त ह्वै यह मुनि अर्थ सुवाम ॥
निरग्रन्था माया विना कोई विधि करि हीन । जहां जु जोई लगे सो वहै अर्थ आधीन ॥
करियै जवै च शब्द कौ इतरेतर जो अर्थ । तवै एक ही अर्थ कौ कहैं जु परम समर्थ ॥
आत्मारामा फिरि यहै कहियै जब षटवार । पंच आत्माराम षट लोप होय जु चकार ॥
आत्मारामा शब्द यह रहे एक अवशेष । आत्मारामा इक पद जु जन षट कहैं विशेष ॥
तथाहि—

स्वरुपानामेकशेष एकविभक्तौ उक्तार्थानामप्रयोगः रामश्च रामश्च रामश्च रामा इतिवत् ॥४९

पद चकार सोई तवै कहैं समुच्चय जोय । आत्मारामा फिरि मुनय भजैं कृष्ण कौं सोय ॥
निर्ग्रंथा अपि यह सु अपि संभावनाहि जान । एई सातौं अर्थ हम प्रथम किये व्याख्यान ॥

अन्तर जामी सेवक जु आत्माराम बखान। सोऊ आत्माराम है योगी षट पद जानं॥
इक सबीज निर्वीज ए दोय भेद हैं ताहि। इक इक के त्रयभेद हैं षट बिभेद भौ आहि॥

तथाहि तत्रैव—केचित्स्वदेहांतह्वदयावकाशे प्रादेशमात्रं पुरुषं वसन्तमिति ॥५०॥
तच्चापि चित्तबडिशं शनकैर्बियुक्ते ॥५१॥

आरुरुक्ष जोग हि जु इक योगारूढ़ जु आन। और भेद है तीसरौ प्राप्त सिद्ध इक जान॥
तीन तीन ये भेद जब किये दुहुनि के आहि। जोगी आत्माराम जो षट प्रकार भौ ताहि॥

तथाहि—आरुरुक्षोमुनेर्योगं कर्म्म कारणमुच्यते। योगारूढ़स्य तस्यैव शमः कारणमुच्यते ॥५२॥
तत्रैव—यदा हि नेद्रियार्थेषु न कर्म्म स्वनुषज्जते। सर्व संकल्प संन्यासी योगारुढ़स्तदोच्यते ॥५३॥

जन संगादिक हेतु लहि ये षट योगी जोय। कृष्ण गुणनि आकृष्ट ह्वै कृष्णहि भजें जु सोय॥
जो अपि अर्थ च शव्द को कहैं इहां हूँ ताहि। मुनि निरग्रन्थ जु शव्द को अर्थ पूर्ववत आहि॥
उरुक्रम विषै अहेतुकी कहूं अर्थ है कोय। कह्यौं अर्थ इतरेतर जु परम समर्थ जु सोय॥
एई सब जन शांत ह्वै भजैं कृष्ण कौं आहि। सांत भक्ति करिकैं तवै कहियै नाम जु ताहि॥
आत्म शव्द करि मन कहैं जोई रमै जु ताहि। सोऊ हरिजन संग करि भजें कृष्ण पद आहि॥

तथाहि श्रुतिस्तुतौ—
उदर मुपासते इत्यादौ ह्वदयमारुणयो दहरमिति ॥५४॥

कृष्ण गुणनि आकृष्ट ह्वै महामुनि हूं होइ। भक्ति करैं जु अहेतुकी ह्वै निरग्रन्थ जु सोइ॥
आत्म शव्द करि यत्न कहि करिकें जत्नहि सोय। मुनिहूं कृष्ण हिभजत हैं गुण आकृष्ट जु होय॥

तथाहि— तस्यैव हेतोः प्रयतेत कोबिदो न लभ्यते यद्भ्रमतामुपर्य्यधः।
तल्लभ्यते दुःखवदन्यतः सुखं कालेन सर्व्वत्र गभीर रंहसा॥५५॥

तथाहि—सद्धर्म्मस्यावबोधाय येषां निर्व्वन्धिनी मतिः। अचिरादेव सर्व्वार्थः सिध्यत्येषामभीप्सितः॥

है अपि अर्थ च शव्द कौं अपि अवधारण जोय। जत्न आग्रह बिन भगति करै प्रेम नहि होय॥

तथाहि—साधनौघैरनासंगैरलभ्या सुचिरादपि। हरिणा चाश्वदेयेति द्विधा सा स्यात् सुदुर्ल्लभा ॥५७॥
गीतायां— तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकमिति ॥५७॥

आत्म शव्द करि धृति कहै रमै धैर्य्य मधि जोय। धैर्य्यवंत ह्वै कैं करैं भजन कृष्ण को सोई॥
कहियतु है मुनि शव्द करि पक्षि भृंगगण जोय। औ निरग्रंथ जु शव्द करि है मूरख जन सोइ॥

तथाहि—
प्रायो वताम्ब मुनयो विहगा वनेऽस्मिन् कृष्णेक्षितमित्यादि॥ 'एतेऽनिल' इत्यादि।
'प्रायो अमी मुनिगणा भवदीय मुख्या इति' ॥६१॥
'सरसि सारसहंसविहंगाश्चारुगीतहृतचेतस एत्य। हरिमुपासत ते यतचित्ता हन्त मीलितदृशो धृतमौनाः'॥
'किरात हूणान्ध्रपुलिन्दपुक्कशा आभीरशुम्भा यवनाः खसादयः।
येऽन्ये च पापा यदपाश्रयाश्रयाः शुध्यन्ति तस्मै प्रभविष्णवे नमः' ॥६३॥

पूरणता ज्ञान हि कहै कै धृति शव्द जु सोय। दुख अभाव उत्तम लवधि करि पूरणता होय।

तथाहि भ० र० सिन्धौ—

धृतिः स्यात्पूर्णताज्ञान दुःखाभावोत्तमाप्तिभिः । अप्राप्तातीतनष्टार्थानभिसंशोचनादिकृत् ॥६४॥

कृष्णभक्त दुखहीन ह्वै चाह अन्य करि हीन। कृष्ण प्रेम सेवा महा पूर्णानंद प्रवीन ॥

भागवते—मत्सेवया प्रतीतं ते सालोक्यादि चतुष्टयं । नेच्छन्ति सेवया पूर्णाः कुतोऽन्यत्कालविप्लुतं ॥६५॥

गोस्वामिना—हृषीकेशे हृषीकाणि यस्य स्थैर्य्यगतानि हि । स एव धैर्य्यमाप्नोति संसारे जीवचञ्चले ॥६६॥

अब धारण मधि इहां अपि जु समुच्चय जोय । है धृतिमंत भजै हरिहि पच्च मूर्खगन सोय ॥

आत्म शब्द करि मति कहैं जो जन बुद्धि विशेष । साधारण बुधि जु सहित हैं सब जीव अशेष ॥

आत्माराम रमैं सुमति सो है दोय प्रकार । पण्डित मुनि निरग्रंथ औ मूरख जन अविचार ॥

लहि विचार रति बुद्धि हरि संग साधु करि सोइ । शुद्ध भक्ति हरिचरण मधि करै छाडि सब जोइ ॥

तथाहि—अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्त्तते । इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥६७॥

भागवते—ते वै विदन्त्यतितरन्ति च देवमायां स्त्रीशूद्रहूनशबरा अपि पापजीवाः ।

यद्यद्भुतक्रमपरायणशीलशिक्षा स्तिर्य्यग् जना अपि किमु श्रुतधारणा ये ॥६८॥

जब विचार करिकैं भजैं हरि चरणनि कौं आहि । जातें पावै कृष्ण कौं सो मति हरि दैं ताहि ॥

तथाहि—ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥६९॥

साधु संग सेवा जु हरि श्री भागवत जु नाम । व्रज मधि वास जु पंचये साधन मुख्यभिराम ॥

इनही पांचन मधि करैं एक स्वल्प हूं कोय । प्रेम उदय सद्बुद्धि कैं कृष्ण चरण मधि होय ॥

तथाहि—दुरुहाद्भुतवीर्य्येऽस्मिन् श्रद्धादूरेऽस्तु पञ्चके । यत्र स्वल्पोऽपि सम्बन्धः सद्धियां भावजन्मने ॥७०॥

हैं उदार महती सु जिहिं सर्व उत्तमा बुद्धि । नाना काम भजै तऊ लहै भक्ति की सिद्धि ॥

तथाहि—अकामः सर्वकामो वा इत्यादि ॥७१॥

ते सब काम छुटायकें भक्ति प्रभावजु आहि । करैं भक्ति हरिचरण मधि खेंचि गुणनि करि ताहि॥

इत्थंभूत गुणो हरिरिति ॥७२॥ स्वयं विधत्तेभजतामनिच्छतामिच्छापिधानं निजपादपल्लवमिति ॥७३॥

आत्मा शब्द स्वभाव करि तहां रमैं जन जोय । आत्माराम जु जीव जत थावर जंगम सोय ॥

है स्वभाव यह जीव कौ कृष्णदास अभिमान । भौ वपु आत्मज्ञान करि आछादित सो ज्ञान ॥

कृष्ण कृपादिक हेतु तें उदै स्वभाव जु होय । कृष्ण गुणनि आकृष्ट ह्वै भजैं कृष्ण कौं सोय ॥

एवहि अर्थ च शब्द है अपि च समुच्चय जान । ह्वै कैं आत्माराम हीं भजैं कृष्ण भगवान ॥

सनकादिक मुनिजन सबै जीव जु उत्तम सोय । है निरग्रंथ जु मूर्ख पसु नीच स्थावर जोय ॥

व्यास सुक जु सनकादिकौं उदै स्वभाव जु होय । कृष्ण गुणनि आकृष्ट ह्वै भजै कृष्ण कौं सोय॥

तथाहि—नद्योऽद्रयः खगमृगाः सदयावलोकैर्गोप्योऽन्तरेण भुजयोरपि यत्स्पृहा श्रीः ॥७४॥

तथाहि—किरातहूणान्ध्रपुलिन्दपुक्कसाः आभीरशुम्हेति ॥७५॥

आगें तेरह अर्थ किय और जु षट ये दोइ । अर्थ भये उन्नीस ये मिलिकैं दोऊ सोइ ॥

अर्थ किये उन्नीस ये आगें सुनौ जु आन । आत्म शब्द देहहि कहैं चारि अर्थ तिहिं जान ॥

देहोपाधिक ब्रह्म कौं भजैं देह मधि सोय । करैं बहु सतसंग करि भजन कृष्ण कौं जोय ॥

तथाहि—उदरमुपासते य ऋषिवर्त्मसु कूर्पदृशोति ॥७६॥ इत्थंभूतगुणो हरिरिति च ॥७७॥

देहारामी कर्म रति जाज्ञिकादि जन जोय । कर्म छाँड़ि सतसंग करि करैं भजन ही सोय ॥

तथाहि—कर्मण्यस्मिन्ननाश्वासे धूमधूम्रात्मनां भवान् । आपापयति गोविन्दपादपद्मासवं मधु ॥७८॥

जिते तपस्वी प्रभृत हैं देहारामी सोइ । छाड़ि तपहि सतसंग करि भजैं कृष्ण कौं जोइ ॥

तथाहि—यत्पादसेवाभिरुचिस्तपस्विनामशेषजन्मोपचितं मलं धियः ।
सद्यः क्षिणोत्यन्वहमेधती सती यथा पदांगुष्ठविनिः सृता सरित् ॥७९॥

देहारामी कामवस सब ही आत्माराम । कृष्ण कृपा करि हरि भजै तजि सब अन्य हि काम ॥

तथाहि—स्थानाभिलाषी तपसि स्थितोऽहं त्वां प्राप्तवान् देवमुनीन्द्रगुह्यं ।
काचं विचिन्वन्निव दिव्यरत्नं स्वामिन् कृतार्थोऽस्मि वरं न याचे ॥८०॥

इन ही चारों अर्थ मिलि भौ तेईसु जु अर्थ । तीन अर्थ और जु सुनौ हैं जे परम समर्थ ॥
कहैं समुच्चय मधि अरथ आन च शब्द जु सोइ । आत्मारामा पुनि मुनय भजैं कृष्ण कौं जोइ ॥
ह्वै निरग्रंथ इह्या कह्यौ अपि निर्धारण जोय । राम और पुनि कृष्ण ज्यौं वन मधि विहरैं सोय ॥
अन्वाचये च सब्द अरु कहैं अर्थ सुविचार । बटु भिक्षामट धेनु पुनि आनय इही प्रकार ॥
कृष्ण मनन मुनि गण सदा भजैं कृष्ण कौं जोइ । भजैं जु आत्माराम हूँ गौण अर्थ कहि सोइ ॥
मुनि हीं कृष्णहिं भजत हैं एक अर्थ जु चकार । आत्माराम निग्रंथ हूँ भजै यहि अर्थ सार ॥
ह्वै निरग्रंथ जु दुहुनि कौ यहै विशेषण होय । और अर्थ इक सुनौ ज्यौं साधुसंगतें होय ।
पुनि निरग्रंथ जु शब्द करि कहियै निरधन व्याध । सोऊ हरिजन संग करि करैं जु भजन अगाध ॥
एक व्याध की कथा जन सुनौ जु करि अवधान । जाही तैं सत संग की ह्वै महिमा को ज्ञान ॥
लखि नारायण एक दिनं श्री नारद जू आहि । गमन त्रिवेणी न्हायवैं किय प्रयाग कौं ताहि ॥
वन पथ मधि देखें जु मृग परे धरनि में जोइ । वान विधे कर पद कटे तरफरात हैं सोइ ॥
और कितिक दूरहि लख्यौ इक शूकर जो आहि । तरफरात ज्यौं ही विध्यौ कटे पाद कर ताहि ॥
कितक दूर आगें लख्यौ एक ससा अध जीय । जीवनिकौ दुख लखि भये नारद व्याकुल हीय ॥
आगें देख्यौ व्याध इक है तरु अंतर धान । मृग मारण के हेत जिहिं कियौ वान संधान ॥
स्याम वरण लोयण अरुण महा भयंकर जोय । धनुष वान कर धरैं जिमि जम जु दंड धरि सोय ॥
नारद जू पथ छाडि कैं गये निकट चलि ताहि । मृग नारद कौं देखिकें गये भाजि सब आहि ॥
गारी दियौ चहैजु तिहिं व्याध क्रोध अति होय । ऋषिके अमित प्रभाव करि मुख नहि आवे सोय ॥
तुम जु गुसाई सु पथ तजि ह्यां आये किहिं भाय । तुमहि देखि मेरे सहस मृग सब गये पलाय ॥
बोले नारद भूलि पथ तोहि जु पूछत आहि । मन हि भयौ संदेह इक दूरकरण कौं ताहि ॥
है तुम्हरे यौं जानियें पथि सूकर मृग जोय । व्याध कहैं जोई कहौ है निश्चै ही सोय ॥

नारद कहैं जु जीव जो मारे तुम गहि बान। काहे राख्यौ अध मरे लेहु नहीं तिहिं प्रान ॥
व्याध कहै गोस्वामि जू मृगरिपु मेरौ नाम। करौं पिता की सीख तें सब दिन ऐसौ काम ॥
जीव अधमरे जब धरणि तरफराय अति जोय। तब ही मेरे हृदय मधि बड़ौ जु आनँद होय ॥
नारद कहैं जु वस्तु इक तुम पै मागौं जोय। लेहु मृगादिक सौ कहै जो तुम्हरे मन होय ॥
मृग छाला जो चाहिये ऐहौ मेरे गेह। मृग बाघंबर जो चहौ सो दैं हौं करि तेह ॥
नारद कहैं न चाहियै मोहि कछू इन माहि। हौं मागौं कछु दान औ तुमपै जो हिय माहि ॥
काल्हि हि तैं तुम मारियौ जे मृगादि गहिबान। पहिले ही तें मारियौ नाहि रखि हौ अध प्रान ॥
व्याध कहै माँग्यौ कहा मो पै तुम इह दान। अध मारे होय जु कहा मोहि कहौ तिहिं ज्ञान ॥
ऋषि बोले अध मारणे जीव व्यथा अति होय। ज्यौं जीवनि दुख देहु तुम ह्वै है तुम्हरैं सोय ॥
तुम करिके जु कदर्थना जीव हते हैं जोय। तैसैं तुमकौं मारिहैं जन्म मन्म मधि सोय ॥
नारद सँगकरि व्याध कौ मन प्रसन्न भौ आहि। भय उपज्यौ मनमें अधिक सुनि कैं बचन जु ताहि ॥
व्याध कहै सिसु काल तैं यहै हमारौ कर्म। तरिहौं दुर्जन अधम हूं करि जु कौन सौ धर्म्म ॥
यहै पाप जासौं नसै सोई कहौ उपाय। मम निस्तार करौ जु तुम परौं तुम्हारे पाय ॥
नारद बोले जौ करौ बचन हमारौ सार। तौ तेरौ हम करि सकैं निश्चैं करि निस्तार ॥
ब्याध कहै जोइ कहौ करि हौं सोई आहि। नारद कहैं जु धनुष जब तोरैं कहि हौं ताहि ॥
व्याध कहै तोरे धनुष किहि विधि करौं निबाह। कहैं जु ऋषि हौं अन्न तित देहौं जो तुम चाह ॥
धनुष तोरि कैं व्याध तब परचौ चरण मधि ताहि। नारद ताहि उठाय कैं किय उपदेस जु जाहि ॥
देहु द्विजनि कौं जाय कै है घर में धन जोय। पहरि बसन इक इक घर हि हो बाहिर जन दोय ॥
नदी तीर मधि घास की एक कुटी जु बनाय। तिहिं आगें इक चौतरी तुलसी तहां लगाय ॥
करौ प्रणाम परिक्रमा तुलसी सेवन आहि। कृष्ण नाम कीरंतन जु करौ निरंतर ताहि ॥
दिन दिन अन्न पठाय हौं हौं तुमकौं बहु जोय। भोजन दोऊ जन जितौ करौ लेहुगे सोय ॥
तब नारद मृग तीन तें स्वस्थ किये कर लाय। स्वस्थ होइ कें जीव ते वेग हि गये पलाय ॥
देखि व्याध के मन भयौ अचिरज बड़ अभिराम। व्याध गयौ निजघर तबै करि गुरुकौं जु प्रनाम ॥
निज इच्छा नारद गये व्याध गेह निज आय। नारद कौ उपदेस सब कीनौ भलैं बनाय ॥
भयौ व्याध वैष्णव नगर घर घर इह धुनि होय। लाँवन लागे अन्न सब लोक ग्राम के सोय ॥
एक दिना नारद कह्यौ पर्वत मुनि सौं आहि। एक सिष्य हमरौ चलौ जाहि देखि वै ताहि ॥
आये ऋषि दोऊ तबै तिहीं व्याध के धाम। व्याध दूर हीं तें लहै गुरु दरसन अभिराम ॥
हरबराय आयौ चल्यौ पथ नहि पावै धाय। पथ मधि लखि चैंटानि कौं इत उत धारे पाय ॥
व्याध प्रणाम स्थान मधि लखि चैंटनि कौं मोइ। झारि बसन करि भूमि कौं परे दंडबत होइ ॥

तथाहि—एते न ह्यद्भुतं व्याध तवाहिंसादयो गुणाः। हरिभक्तौ प्रवृत्ता ये न ते स्युः परतापिनः ॥

लायौ निज आंगण दुहुनि वहै व्याध तव जोय। लाय कुसासन भक्ति करि वैठारे रिषि सोय ॥
ल्याय नीर अति भक्ति करि पद दोऊन के धोय। पीयौ सीस धरयौ पुरुष नारी सुत जल सोय ॥
कंप पुलक औ अश्रु दृग सरस कृष्ण गुणगाय। भुज उठाय नाचन लग्यौ फिरि फिरि वसन फिराय॥
देखि व्याध के प्रेम कौं पर्वत मुनि भर भाय। तुम हौ पारस मुनि कहैं नारद सौं सुख पाय ॥
तथाहि—अहो धन्योसि देवर्षे कृपया यस्य तत्क्षणात्। नीचोऽप्युत्पुलको लेभे लुब्धको रतिमच्युते ॥८१॥
आवत तुम्हरें अन्न कछु नारद पूछयौ आहि। व्याध कहै पठवौ जिही सोलै आवत ताहि ॥
इतनौ पठवौ अन्न तुम कछू काम नहि ताहि। द्वै जन लायक भक्त जो चाह इती सव आहि ॥
ऋषि जु कहैं ऐसैं रहौ भाग्यवान तुम आहि। अन्तर्द्धान कियौ दुहुनि करि जु प्रसंसा ताहि ॥
यह प्रसंग हम व्याधकौ तुमसौं कह्यौजु आहि। हरिजन संग प्रभाव कौ ज्ञान होय सुनि याहि ॥
सात और आये अरथ ए गणना तें जोय। ए दोऊ मिलि कें भये अरथ वीस छह सोय ॥
सुनौ अर्थ तुम और जिहिं अर्थन कौ भंडार। स्थूल अर्थ विवि सूक्ष्म करि सो वत्तीस प्रकार ॥
शब्द आत्मा कहत हैं सव विधि करि भगवान। एक स्वयं भगवान हैं इक भगवान जु आन ॥
जेई तिन में रमैं सव तेई आत्माराम। विधि भक्त जु रागी भगत तिन प्रति द्वै विधि नाम ॥
दोऊ विधि के भक्त जे हैं तें चारि प्रकार। पारषद साधन जु सिद्धि साधकरण जु विचार ॥
इक साधक हैं जातरति औ अजातरति रूप। इहिं विधि साधन भक्त के भौ विवि भेद अनूप ॥
तिन में विधि मारग जु इक रागमार्ग करि जोइ। चारि चारि के भये पुनि अष्ट भेद यौं सोइ ॥
विधि भक्तिहि मधिहै जु निति सिधि पारषद दास। सखाजु गुरुगण प्रेमसी चारि बिभेद प्रकास॥
साधन सिद्धि दासजु सखा गुरु कांतागण आन। साधक रति उत्पन्नहै भक्त चारि विधि जान ॥
है अजात रति साधक जु जन यौं चार प्रकार। भौ विधि मारग भक्त के षोडस भेद प्रचार ॥
अरु यौं राग जु मार्ग करि भक्तनि सौरह भेद। विवि पथ आत्माराम के भौ वत्तीस विभेद ॥
मुनि निरग्रंथ च शब्द अपि चार शब्द कौ अर्थ। जहां लगै जोई तहां कीजे अर्थ समर्थ ॥
ए वतीस छव्वीस वै मिलि हु अष्ठ पचास। और एक भेद जु सुनौ अर्थ हि कौ जु प्रकास ॥
इतरेतर जु च शब्द द्वै करि समास अभिराम। बेर अठांवन लीजिये आत्माराम जु नाम ॥
आत्माराम फेरि फिरि वार अठांवन भाष। सव कौ सेसहि लोप करि एक बेर तिहि राख ॥
तथाहि—स्वरूपाणामेकशेष एक विभक्तौ ॥ ८२ ॥
आठ पचास चकार सौं सव कौ लोप जु होय। एक आत्माराम पद कहे अठावन सोय ॥
तथाहि—उक्तार्थानामप्रयोगमिति ॥८३ ॥
तरु अस्वस्थ च वट तरु पुनि पीलू तरु जोय। और आम्रतरु मिलि सवै तरवः शब्द जु होय ॥
तरव जु याही वनहि मधि फलै हैं जु यौं जोय। इव ही उनसठि अर्थकौं किय बिज्ञान जु सोइ ॥
सर्व समुच्चय के किये और अर्थ इक होय। आत्मारामा पुनि मुनय निरग्रंथा भजि सोय ॥

अवधारनि मधि शब्द अपि सोऊ चार जु बार। चार शब्द संग कीजिये एव कार उच्चार ॥
तथाहि—उरुक्रम एव, भक्तिमेव, अहैतुकीमेव, कुर्व्वन्त्येव ॥ ८४ ॥
कहैं श्लोक के ये जु यौं संख्या साठ जु अर्थ। और एक अर्थ हि सुनौ है प्रामाण्य समर्थ ॥
आत्मशब्द करि कहत हैं और अर्थ अभिराम। है जु जीव लच्छण वहै जिहिं चेत्रज्ञ जु नाम ॥
है ब्रह्मा कौं आदि लै और कीट पर्य्यंत। ताही की इक शक्ति करि है गणना सु अनंत ॥
तथाहि—विष्णुशक्तिः परा प्रोक्ता चेत्रज्ञा च तथा परेति ॥ ८५ ॥ चेत्रज्ञ आत्मा पुरुष इति च ॥ ८६ ॥
भ्रमत भ्रमत संसार मधि साधु संग जब पाइ। सबहीं सब तजि कैं सबै कृष्ण हि भजै सु जाहि ॥
साठि अर्थ करि जो कह्यौ भजन कृष्ण कौ आहि। तेई अर्थ उदाहरण हैं सब ही ह्यां ताहि ॥
फुरे तिहारे संग करि इक सठि अर्थ अभंग। तुव हरि भक्ति जु फल हि करि उठे सु अर्थ तरंग ॥
तथाहि - भक्त्या भागवतं ग्राह्यं न वुद्धया न च टीकया ॥ ८७ ॥
भये सनातन अर्थ सुनि अतिही विस्मित आहि। नुतिजु करैं चैतन्य की चरण कमल धरिताहि॥
ईश्वर तुम साक्षात हौ ब्रजपति नंदन सोय। सब हीं तुव निश्वास तें वेद प्रवर्त्तन होय ॥
तुम वक्ता भागवत के तुम हीं जानों अर्थ। तुम बिन कोऊ और तिहिं जानन कौं न समर्थ ॥
तथाहि विश्वेश्वरवाक्यं—अहं वेत्ति शुको वेत्ति व्यासो वेत्ति न वेत्ति वा ॥८८ ॥
कहैं जु प्रभु काहे करौ नुति जु हमारी सोय। श्रीभागवत स्वरूप कौ विवरण करै जु कोय ॥
कृष्ण तुल्य श्री भागवत विभु सर्वाश्रय आहिं। नाना अर्थ कहे जु प्रतिपद प्रति अच्छर ताहि ॥
प्रश्नोत्तर करि भागवत किय विद्या निरधार। चमत्कार लागे जननि ज्ञाकें सुनें अपार ॥
तथाहि शौनकप्रश्नं—
ब्रूहि योगेश्वरे कृष्णे ब्रह्मण्ये धर्म्मवर्म्मणि। स्वां काष्ठामधुनोपेते धर्म्मः कं शरणं गतः ॥ ८९॥
तथाहि सुतोत्तरं—
कृष्णस्वधामोपगते धर्म्मज्ञानादिभिः सह। कलौ नष्टदृशामेषः पुराणार्कोधुनोदितः ॥९०॥
कह्यौ जु एक श्लोक कौ यहै जु हम विख्यान। वौरे ने जु प्रलाप किय मानें कौंन प्रमान ॥
हम ही सौं जो दूसरौ कोऊ वौरौ होय। इहीं भांति भागवत के अर्थनि जानें सोय ॥
फेरि सनातन वीनती करें जोरि कर दोय। करिवे कौं स्मृति वैष्णवजु प्रभु निदेस दिय जोय ॥
नीच जाति हौं तुच्छ कछु नहि जानौं आचार। मोसें कैसैं होय गो सुष्टु स्मृति परचार ॥
जौ दिग दरसन सूत्र करि करौ जु तुम उपदेस। आपुन मेरे हृदय मधि करौ आप परवेस ॥
तव ताकी दिग फुरै मम नीच हृदय मधि जोय। तुम ईश्वर जु कहाय हौ सोई सिद्ध जु होय ॥
प्रभु जु कहैं जिहिं करण कौं तुम मन करि हौ जोइ। तुम कौं कृष्ण फुराय हैं तबही सोई सोइ ॥
सूत्र रूप तेऊ सुनौं करि दिग दरसन जोइ। प्रथम सकारण लिखोगे गुरु पद आश्रय सोइ ॥
लच्छण गुरु औ सिष्य के दुहूं परीच्छा जोइ। सेव्य स्वयं भगवान सव मंत्र विचारण सोइ ॥
मंत्र सिद्ध साधन प्रभृति अधिकारी पुनि ताहि। प्रति दीच्छा स्मृति कृष्णजो शौच आचमन आहि ॥

दंतधावन स्नान विधि सन्ध्या वंदन जोय। उर्द्धपुण्ड्र सेवा जु गुरु मुद्रा धारण सोय॥
गोपी चंदन और पुनि माला धात्री सोय। श्री तुलसी को आहरण कहिवें नीकें जोय॥
वस्त्र पीठ औ गेह कौ संस्कार जो आहि। कृष्ण प्रबोधन विधि सकल कहिवें नीकें ताहि॥
पंचकाल श्री कृष्ण की पूजा आरति जोय। प्रभु भोजन औ शयन श्री मूरति लच्चण सोइ॥
लच्चण शालग्राम के महिमा नाम जु आहि। और नाम अपराध जे वर्जन करिवें ताहि॥
जे लच्चण वैष्णव जु के नीकें कहिवे सोइ। औ सेवा अपराध कौ खण्डन जैमें होइ॥
संख नीर औ गंध पुनि पुष्प वहित है जोइ। अरु सब धूपादिकनि के लच्चण कहिवें सोइ॥
जप नुति कृष्ण परिक्रमा दण्ड प्रणामजु ताहि। अरुसब धूपादिकनिकौ पुरश्चरण विधिआहि॥
अनिवेदित कौ त्याग हरिजन निंदादिक त्याग। साधुन लच्चण साधु सँग साधु निसेवन राग॥
असत संग कौ त्याग औ श्रवण भागवत सार। दिवस पच्च कौ कृत्य एकादश्यादि बिचार॥
मासकृत्य जनमाष्टमी बामन द्वादसि जोइ। राम जु नवमी और नरसिंह चतुर्दशि सोइ॥
वेधत्याग इन सबनि कौ करनि अविद्धा आहि। बिना कियें दोष जु कियें भक्तिलाभ है ताहि॥
श्री मूरति श्रीविष्णुकौ मन्दिर कारण जु आहि। तिनके सब लच्चण प्रथक कहै शात्र अवगाहि॥
सदाचार सामान्य करि औ वैष्णव आचार। करिवौ अन करिवौ जितौ है स्मार्त व्यौहार॥
यहै जु सिच्चा रूप करि सूत्र कह्यौ दिक ज्ञान। जबही तुम लिखिहौ स्फुरण करिहैं हिय भगवान॥
यहै सनातन पर कह्यौ प्रभु जू कौ जु प्रसाद। जनकौं जाके श्रवण करि दूरि होय अवसाद॥
कर्णपूर निज ग्रंथ मधि करिकैं तिहिं विस्तार। कृपा सनातन पर प्रभुजु राखी लिखि निरधार॥

तथाहि—गौडेन्द्रस्य सभाविभूषणमणिस्त्यक्त्वा यऋद्धां श्रियं रूपस्याग्रज एष एव तरुणीं वैराग्यलक्ष्मीं दधे। अन्तर्भक्तिरसेन पूर्णहृदयो बाह्येऽवधूताकृतिः शैवालैः पिहितं महारसइव प्रीतिप्रदस्तद्विदां॥ ६१॥

तथाहि— तं सनातनमुपागतमक्ष्णोर्द्दष्टमात्रमतिमात्रदयार्द्रः।
आलिलिंग परिघायतदोर्भ्यां सानुकम्पमथ चम्पकगौरः॥ ६२॥

तथाहि— कालेन वृन्दावनकेलिवार्त्ता लुप्तेति तां ख्यापयितु विशिष्य।
कृपामृतेनाभिषिषेच देबस्तत्रैव रुपञ्च समातनं च॥ ६३॥

यहै सनातन पर कह्यौ श्री चैतन्य प्रसाद। होवै जाके श्रवण करि खंडन सब अवसाद॥
कृष्ण स्वरूप गुणनिकौ होइ भली बिधि ज्ञान। साधन भक्तिजु द्विबिधहै पथ विधि रागहि ज्ञान॥
प्रेम भक्ति रस कृष्ण कौ और भक्ति सिद्धांत। भक्ति जु याके श्रवण करि जानें सब के अंत॥
श्री प्रभु नित्यानंद पद अरु अद्वैत सु जोय। जाके जीवन प्राण धन इह धन पावै सोय॥
श्रीरूप सु रघुनाथ के चरननि की जिहिं आस। प्रभु चरितामृत जो कहै कृष्ण दास तिहिं दास॥
रूप सनातन जगतहित सुवल श्याम पद आस। प्रभु चरितामृत सो लिखै व्रजभाषाहि प्रकास॥

इति श्री चैतन्यचरितामृते मध्यखण्डे व्रजभाषायां आत्मारामाश्चेति श्लोकव्याख्यासनातनअनुग्रहो नाम चतुर्विंशति परिच्छेदः॥

पञ्चविंशति परिच्छेदः

वैष्णवी कृत्य सन्न्यासिमुखान् काशीनिवासिनः । सनातनं सुसंस्कृत्य प्रभु र्नीलाद्रिमागतः ॥१।

जय जय श्री चैतन्य जू जय श्री नित्यानंद । जय अद्वैत हिमांशु जय गौर भक्त के वृन्द ॥
याही विधि चैतन्य जू द्वै मासनि परजंत । सिखयौ तिनकों भक्ति के सिद्धांतनि कौ अंत ॥
परमानंद सेखर सँगी कीरंतनिया जोइ । प्रभु हि सुनावै कीरतन अति बड रंगी सोइ ॥
संन्यासी गण की प्रभुजु जदपि उपेक्षा कीय । भक्तनि के दुख नास हित कृपा करी तिन हीय ॥
संन्यासिन पै जो कृपा लिखी प्रथम विस्तार । करिये तिहिं उद्देस ह्यां करि संक्षेप बिचार ॥
जहं तहं प्रभु निंदा करैं संन्यासी गण सोय । महाराष्ट्र द्विज सुनि दुखी करै चिंतवन जोय ॥
प्रभुकौ सहज सुभावजो निकट लखैं तिहि जोय । करि स्वरूप अनुभवजु तिहिं मानें ईश्वर सोय ॥
किहीं प्रकार सकै जु करि इकठा इन्हैंजु ताहि । लखि संन्यासी गण इन्हैं भक्त होय इन आहि ॥
सर्व काल वाराणसी वास हमारौ आहि । दुख पैहैं हम सर्वदा यौं नहि करिहैं ताहि ॥
न्यौंते संन्यासी जु सब करि बिचार मन एह । वहै विप्र आयौ तवै महाप्रभु जु के गेह ॥
तिहीं समें निंदाजु सुनि शेखर तपनजु दोय । दुखजु पाय प्रभु चरण मधि कियौ निवेदन सोइ ॥
भक्तनकौ दुख देखि प्रभु मन में चिंता कीय । संन्यासिन मन फेरिवैं कियौ तिन्हौं निज हीय ॥
तिंही समें द्विज आइकैं कियौ निमंत्रन आहि । दैन्यादिक जु अनेक करि धरिकैं चरणनि ताहि ॥
अंगीकृत तब महाप्रभु कियौ निमंत्रण ताहि । करि मध्यान्हजु और दिन गये गेह तिहि आहि ॥
तहां कियौ जैसैं जु प्रभु संन्यासिन निस्तार । पंचतत्व आख्यान मधि कियौ जु तिहिं बिस्तार ॥
कहैं ग्रंथ वाढ़ै अधिक औ पुनरुक्त जु होय । तहां लिख्यौ नहिजो कछु कीजै लिखनजु सोइ ॥
कृपा करी जिंहिं दिवसप्रभु संन्यासिन पर आहि । कोलाहल तिहिं दिवसतें भयौ ग्राम मधि ताहि॥
प्रभु देखन हित आंवही लोक समूह अपार । पंडित नाना शास्त्र मधि आवै कृरण विचार ॥
प्रभु सव शात्रनि खंडिकें करैं भक्ति परचार । जुक्ति सहित वचननि फिरैं मन सबकौ निरधार ॥
लै उपदेस करैं जु सब कृष्ण कीरतन जोय । लोक सवै गावैं हँसैं करैं नृत्य पुनि सोय ॥
संन्यासिन कौ गण भयौ प्रभु कौं प्रणत जु सोय । आपुसमें चरचा करैं तजि अध्ययनहि जोइ ॥
शिष्य प्रकासानंद कौ न्यासी तिहिं जु समान । सभामध्य लाग्यौ कहन प्रभु कौ करि सनमान ॥
हैं जु कृष्णचैतन्य जू निज नारायण जोय । अति सुन्दर अर्थनि करें व्यास सूत्र के सोय ॥
मुख्यारथ उपनिषद कौं करैं प्रगट विख्यान । पण्डित लोकनि के जु सुनि ह्वै सीतल मन मान ॥
सूत्र और उपनिषद के मुख्य अर्थ तजि सोइ । संकर करै जु कल्पना करिकैं आग्रह जोइ ॥
आचारज कल्पित अरथ सुनें सभाजन जोइ । मुख करिकैं हां हां करैं हृदय न मानें सोइ ॥
वचन कृष्ण चैतन्य कौं मानें दृढ़ करि सांच । कलि में केवल न्यास करि नहि जीते भव आंच ॥
हरे नाम या पद्य कौ जोई किय व्याख्यान । वहै सत्य अति सुखद है अर्थजु परम प्रमान ॥

मुक्ति नहीं है भक्ति बिनु कहै भागवत जोय । कलि में नामाभास करि सुखसौं मुक्ति जु होय ॥
तथाहि—श्रेयः स्रुतिं भक्तिमुदस्य ते बिभो क्लिश्यन्ति ये केवलेतिश्लोकः ॥ २ ॥
तथाहि—येन्येरबिन्दाक्ष बिमुक्तमानिनेति श्लोकः ॥ ३ ॥
कहैं ब्रह्म पद षट भगति करि पूरण भगबान । निर्विशेष थापैं जु तिहिं पूरणता की हान ॥
श्रुति पुराणजो कृष्णकौ कहि चिच्छक्ति विलास । पण्डित तिहिं मानें नहीं करैं विमुख उपहास ॥
चिदानंद विग्रह जु हरि मायिक मानें ताहि । बड़ौ पाप यह सत्य है प्रभु वाणी जो आहि ॥

तथाहि— नातः परं परमयद्भवतः स्वरूपमानन्दमात्रमबिकल्पमबिद्धवर्च्चः ।
पश्यामि विश्वसृजमेकमबिश्वमात्मन् भूतेन्द्रियात्मकमदस्त उपाश्रितोऽस्मि ॥ ४ ॥

तथाहि— दृष्टं श्रुतं भूतभवद्भविष्यत् स्थास्नुश्चरिष्णुर्महदल्पकं वा ।
विनाच्युताद्वस्तु तरां न वाच्यं स एव सर्व्वं परमात्मभूतः ॥ ५ ॥

तथाहि— तद्वा इदं भुवनमंगलमंगलाय ध्याने स्म नो दर्शितं ते उपासकानां ।
तस्मै नमो भगवतेऽनुविधेम तुभ्यं यो नादृतो नरकभागभिरसत्प्रसंगैः ॥ ६ ॥

तथाहि गीतायां—अबजानन्ति मां मूढ़ा मानुषीं तनुमाश्रितं । परं भावमजानन्तः सर्वभूतमहेश्वरम् ॥७॥
तानहं द्विषतः क्रूरान्संसारेसु नराधमान् । क्षिपाम्यजस्रमशुभानासुरीष्वेव योनिषु ॥८॥

सूत्र बाद परिणाम जो नहीं मानि कैं ताहि । थपि विवर्त्त वाद हिं कह्यौ व्यास भ्रांत भौ आहि ॥
यहै अर्थ कल्पित मनहि नहिं भावत है सोय । करि कु कल्पना शास्त्र तजि बूड़े पाखँड जोइ ॥
वाद मात्र करि गयौ सब जो परमार्थ विचार । कहा मुक्ति पैवौ कहां कृष्ण प्रसाद सुसार ॥
व्यास सूत्र कौ अर्थ निज संकर धरचौ छिपाय । यहै सत्य चैतन्य कौ वचन और नहि भाय ॥
गोस्वामी चैतन्य जो कहे वहै मत सार । और जितौ मत सो सबै छार खार निरधार ॥
इतनौ कहि लाग्यौ करण कृष्ण कीरतन सोइ । सुनि जु प्रकासानंद कछु कहैं वचन यों जोइ ॥
थापन हित अद्वैत मत शंकर कैं हठ प्रीति । सूत्र अर्थ व्याख्या करें तातें औरें रीति ॥
भगवत्ता मानें थप्यौ जोय नहीं अद्वैत । याही तें सब शास्त्र कौ करै जु खण्डन द्वैत ॥
थाप्यौ चाहै निज मत हि ग्रंथ सु कर्त्ता जोइ । अर्थ शास्त्र कौ सहज जो तासौं नाहि न होइ ॥
कहि मीमांसक ईश्वर हि है जु कर्म कौ अंग । सांख्य कहै जग कौ प्रकृति कारण कौ जु प्रसंग ॥
न्याय कहैं परमानु तैं निहचैं विश्व जु होय । निर्विशेष हेतु हि कहैं मायावादी जोय ॥
ईश्वर कारण परम जो तिहि नहि माने कोइ । पर मत कौं खण्डन करैं थापैं निज निज सोइ ॥
तातें षट दरसननि तें नहीं तत्त्व कौ ज्ञान । कहैं महाजन जो कछू वहै सत्य करि मान ॥
तथाहि—तर्कोप्रतिष्ठः श्रुतयो विभिन्नेति श्लोकः द्रष्टव्यः ॥ ६ ॥
वाणी श्री चैतन्य की है जु अमृत की धार । तेई या वस्तुहि कहैं वहै तत्त्व है सार ॥
यहै जु सुनि बृतांत सब महाराष्ट्र द्विज सोइ । सुख करि प्रभुकौ कहत हित कियौ गमन तिन जोय ॥
तिही समें प्रभु पंचनद करि स्नान भरि भाइ । हरी बिंदमाधव दरस हेत चले हैं चाइ ॥
सब वृत्तान्त कह्यौ तिहिं द्विज ने पथ में आय । महा प्रभु जु सुनि कछु हसैं हियें महासुख पाय ॥
माधव कौ सौन्दर्य लखि भौ आविष्ट जु भाइ । नाचन लागे प्रेम करि आंगन के मधि आइ ॥

सेखर परमानंद पुनि तपन सनातन जोय। चारौ जन मिलि कैं करैं नाम कीरतन सोय ॥
तथाहि—हरि हरये नमः कृष्ण यादवाय नमः। गोपाल गोविंद राम श्री मधु सूदन ॥ १० ॥
कोलाहल हरि हरी कहि करें लोक दिसि चारि। मंगल नाद उठ्यौ भरै स्वर्ग मर्त्य रस सार ॥
वहै निकट ही धुनि सुनी तिहीं प्रकासानंद। देखन आयौ कौतुक सु लै करि सिष्यनि वृन्द ॥
प्रेम नृत्य प्रभु कौ निरखि देह माधुरी रंग। हरी हरी बौलै वहू शिष्य गणनि के संग ॥
कंप स्वेद स्वर भंग ही अरु बैवर्ण स्तम्भ। अश्रुधार करि जन भिजै पुलक कदम्बारंभ ॥
हर्ष दैन्य चापल्य दै संचारी जु विकार। लखि कासी वासीन कैं अचिरज भयौ अपार ॥
प्रभु कें जन संघट्ट लखि बाह्य भयौ जब हीय। संन्यासिन के गणनि लखि नृत्य संवरण कीय ॥
प्रभु जु प्रकाशानंद के पग वंदन किय आहि। आप प्रकाशानंद जू धरें चरण पुनि ताहि ॥
कहैं जु प्रभु तुम जगत गुरु बड़े पूज्यतम सोइ। तुम्हरे सिष्यनि सिष्य सम हौं नाहीं हौं जोइ ॥
कहैं करौ जु श्रेष्ठ ह्वै दीन हि वंदन याहि। सर्व नास मम होत है तुम जु ब्रह्म सम आहि ॥
सब ठां तुम्हरैं जदपि हैं ब्रह्म मात्र कौ भान। जन शिक्षा हित यौं करण नहीं जोग्य है जान ॥
ते बोले तुम्हरौ प्रथम किय निंदा अपराध। तुम्हरे चरणनि परसि कें सब क्षय भयौ अबाध ॥
तथाहि—जीवन्मुक्ता अपि पुन र्बन्धनं यान्ति कर्म्मभिः। यद्यचिन्त्यमहाशक्तौ भगवत्यपराधिनः ॥११॥
तथाहि—पादस्पर्शहताशुभ इति च ॥ १२ ॥
विष्णु विष्णु कहि प्रभु कहैं छुद्र जीव हौं हीन। जीवहि माने विष्णुकरि यह अपराध नवीन ॥
विष्णु बुद्धि जीवहि करै ब्रह्म रुद्र सम जोय। मानें नारायण तिन्हैं पाखंण्डिन मधि सोय ॥
तथाहि—यस्तु नारायणं देवं ब्रह्मरुद्रादि दैवतैः। समत्वेनैव मन्येत स पाषण्डी भवेद् ध्रुवम् ॥ १३ ॥
कहैं प्रकासानंद तुम स्वयं ईस भगवान। तौऊ जौ तुम करत हौ तिहि जु दास अभिमान ॥
तऊ पूज्य हौ तुम बड़े हम तें यह विचार। तुम निंदा ते होइ मम सर्वनास निरधार ॥
तथाहि—मुक्तानामपि सिद्धानां नारायणपरायणः। सुदुर्ल्लभः प्रशान्तात्मा कोटिष्वपि महामुने ॥ १४ ॥
आयुः श्रियं यशो धर्म्मं लोकानाशिष एव च। हन्ति श्रेयांसि सर्व्वाणि पुंसो महदतिक्रमः ॥१५॥
तथाहि तत्रैव।—नैषां मतिस्तावदुरुक्रमांघ्रिं स्पृशत्यनर्थापगमो यदर्थः। महीयसामिति ॥ १६ ॥
अब तुम्हरे पद कमल मधि मम उपजैगी भक्ति। तिहिं निमित्त तुव चरण मधि करैं प्रणति अनुरक्ति ॥
इतनौ कहि बैठे तहां प्रभु लै संग हिं सोय। लग्यौ प्रकासानंद तब प्रभु सौं पूँछन जोय ॥
कीजत मायावाद मधि दोषन कौ आख्यान। यह जान्यौ आचार्य कौ सब कल्पित व्याख्यान ॥
तुम विवरण मुख्यार्थ कौ कियौ सूत्र कौ जोय। तिहिं सुनि सब कें मन भयौ चमत्कार अतिसोय ॥
ईस्वर तुम तुम्हरै रहै सर्व शक्ति जे आहि। कहौ जु तुम संक्षेप करि है सुनिवैं मति ताहि ॥
प्रभु जु कहै हौं जीव अति तुच्छ ज्ञान मम जान। व्यास सूत्र कौ गूढ़ है अर्थ व्यास भगवान।
व्यास सूत्र के अर्थ कौं जीव न जाने कोइ। याही तें निज सूत्र कौ व्याख्यान किय सोइ ॥
जेई कर्त्ता सूत्र कौ वहै करै विख्यान। तौ सूत्रनि कै अर्थ कौ होय लोक के ज्ञान ॥
जोई अर्थ जु प्रणव कौ गायत्री कौ सोइ। सोई अर्थ कहै प्रगट चतुः श्लोकीहिं जोइ ॥

ईश्वर अज कौं जो कही चतुः श्लोकीहि सार । ब्रह्मा नारद कौं वहै किय उपदेस विचार ॥
श्री नारद सोई अरथ कह्यौ व्यास सौं आइ । सुनि कैं वेद व्यास किय मन विचार वहु भाइ ॥
यहै अर्थ सम सूत्र के व्याख्या कौ है रूप । करिश्रत श्रीमद्भागवत सूत्रनि भाष्य स्वरूप ॥
चारि वेद और उपनिषद है कछु जितेक आहि । सब संचय किय व्यास जू लै कैं अर्थनि ताहि ॥
तिहिं जु सूत्र की जो रिचा वचन विचारे सोइ । वहै रिचा भागवत मधि चतुरश्लोकीहि जोइ ॥
भाष्य सूत्र कौ भागवत याही तै हैं जोइ । पद्य भागवत उपनिषद कहैं अर्थ इक सोइ ॥

तथाहि—आत्मावास्यमिदं विश्वं यत्किञ्चिज्जगत्यां जगत् । तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मागृधः कस्य स्विद्धनम् ॥१७॥

एक श्लोक दिखाइ कैं किय दिग दरसन ताहि । इहीं भांति भागवत सब पद्य रिचा समआहि ॥
संबंधजु अविधेय पुनि और प्रयोजन ताहि । चतुर श्लोकी प्रगट तिहिं लच्छण किये जु आहि ॥
साधन कौ फल प्रेम जो मूल प्रयोजन सोय । लहै जीव जिहिं प्रेम करि सेवन हमरौ जोइ ॥

तथाहि—ज्ञानं परमगुह्यं मे यद्विज्ञानसमन्वितं । सरहस्यं तदंगञ्च गृहाण गदितं मया ॥ १८ ॥

जेई तीनौ तत्व हम कहि हैं तुम सौं जोइ । इन तीननि कौं जीव तुम जानि सकौ नहि कोइ ॥
जैसौ ममजु स्वरूप है जैसे थिति मम जोइ । जैसौ मम गुण कर्म औ षट भग शक्ति जु सोइ ॥
ए सब मेरी कृपा करि फुरौ जु तुमकौ आहि । इतनौ कहि कैं प्रभु कहैं तीन तत्व ये ताहि ॥

तथाहि—यावानहं यथाभावो यद्रूप गुणकर्म्मकः । तथैव तत्वविज्ञानमस्तु ते मदनुग्रहात् ॥ १९ ॥

जगत पूर्व होंई जु हों षट भग पूरण सोइ । मोही तें जु प्रपंच सब प्रकृति पुरुष मिलि होइ ॥
करि प्रपंच ताके जु मधि हों हीं करौं प्रवेस । जो कछु दीसे जगत् मधि सौ होंई जु असेस ॥
रहौं पूर्ण अवसिष्ट हैं भये प्रलय सब ताहि । पावै प्राकृत जगत सब मोही में लय आहि ॥

तथाहि—अहमेवासमेवाग्रे नान्यद् यत् सदसत् परं ।
पश्चादहं यदेतच्च योऽवशिष्येत सोऽस्म्यहम् ॥ २० ॥

अहमेव जु अहमेव पुनि पद मधि तीन हि वार । पूरण भग श्री विग्रह जु थिति कौ किय निरधार ॥
निराकार जे मानई विग्रह मानें नाहि । तिन्है तिरस्कृत करण हित किय निश्चै पद मांहि ॥
यही शब्द है ज्ञान कौ अरु विज्ञान विचार । मोही तें कारज प्रकृति हों न्यारो निरधार ॥
रवि आभास स्थलहि ज्यौं भासै रवि आभास । सूरज विन नहि आप तें ताकौ होय प्रकास ॥
मायातीत भये जनहिं मेरौं अनुभव होइ । कह्यौ तत्व सबंध यह सुनौ और सव जोय ॥

तथाहि—ऋतेऽर्थं यत्प्रतीयेत न प्रतीयेत चात्मनि । तद्विद्यादात्मनो मायां यथाभासो यथा तमः ॥ २१ ॥

साधन भक्त ऽभिधेय जो ताकौ सुनौ विचार । इन विचार तें है परै साधन भक्ति जु पार ॥
देश काल औ सव दिसा सब जनकौ कर्त्तव्य । वहै भक्ति गुरु के निकट प्रष्टव्य जु श्रोतव्य ॥

तथाहि—एतदेव हि जिज्ञास्यं तत्वजिज्ञासुनात्मनः । अन्वयव्यतिरेकाभ्यां यत्स्यात् सर्व्वत्र सर्व्वदा ॥ २२ ॥

प्रीति प्रेम जो मो विषै है जु प्रयोजन सोइ । तिहिं स्वरूप लच्छण करैं कारज द्वारा होइ ॥
भूतनि भीतर वाहिर हि पंचभूत जिमि होइ । भक्तनि के हौं त्यौं फुरौं वाहिर अंतर जोइ ॥

तथाहि—यथा महान्ति भूतानि भूतेषूच्चावचेष्वनु । प्रविष्टान्यप्रविष्टानि तथा तेषु न तेष्वहं ॥ २३ ॥

हमें बांधि राख्यौ हियें भक्ति प्रम करि जोइ । जहां परै आखैं तहां देखैं हम कौं सोइ ॥

तथाहि— विसृजति हृदयं न यस्य साक्षाद्धरिरवशाभिहितोऽप्यघौघनाशः ।
प्रणय रसनया धृतांघ्रिपद्मः स भवति भागवत प्रधान उक्तः ॥ २४ ॥

तत्रैव— सर्वभूतेषु यः पश्येद्भगवद्भावमात्मनः । भूतानि भगवत्यात्मन्येष भागवतोत्तमः ॥ २५ ॥

याही तें भागवत मधि येई तीन बखान । संबंध अभिधेय पुनि और प्रयोजन जान ॥

तथाहि—वदन्ति तत्तत्वविदस्तत्वं यज्ज्ञानमद्वयमिति ॥ २६॥

तथाहि—भगवानेक आसेदमग्र आत्मात्मनां विभु । आत्मेच्छानुगता वात्मा नानामत्युपलक्षणः ॥ २७ ॥

तत्रैव—कृष्णस्तु भगवान् स्वयमिति ॥ २८ ॥

यह संवंध कह्यौ सुनिब भक्त्यभिधेयजु आहि । प्रतिपद श्रीभागवत मधिहै सु अवस्थिति जाहि ॥

तथाहि तत्रैव—भक्त्याहमेकया ग्राह्यः श्रद्धयात्मा प्रियः सतामिति ॥ यथा भक्ति र्ममोर्जितेति ॥ ३० ॥

तत्रैव—भक्त्यैकयेशं गुरुदेवतात्मेति ॥ ३१ ॥

यह सुनौ अब प्रेम तुम मूल प्रयोजन जोइ । नृत्य गीत आँसू पुलक जिहिं लछन है सोइ ॥

तथाहि—भक्त्या संजातया भक्त्या बिभ्रत्युत्पुलकां तनुं ॥ ३२ ॥

तत्रैव—एवं व्रतः स्वप्रियनामकीर्त्येति श्लोक द्रष्टव्यः ॥ ३३ ॥

याही तें श्री भागवत सूत्रनिकौ निज रूप । निज कृत सूत्रनिकौ कियौ आपहि भाष्य स्वरूप ॥

तथाहि गरुडपुराणे—

अर्थोऽयं ब्रह्मसूत्राणां भारतार्थ बिनिर्णयः । गायत्री भाष्यरूपोऽसौ वेदार्थपरिवृंहितः ॥३४ ॥
सर्ववेदांतसारं हि श्रीभागवतमीष्यते । तद्रसामृततृप्तस्य नान्यत्र स्याद्रतिः क्वचित् ॥३५॥

गायत्री के अर्थ करि श्री भागवतारंभ । सत्यं परं पद करि भयौ सो संवधालंभ ॥
अरु धीमहि पद करि कह्यौ साधन पैवैं ताहि । पुनि ताही पद में कह्यौ मूल प्रयोजन आहि ॥

जन्माद्यस्येत्यादौ सत्यं परं धीमहि इति ॥३६॥ धर्म्म प्रोज्झितकैतवोऽत्र परमो निर्म्मत्सराणामिति ॥३७॥

कृष्ण भक्ति रस रूप है श्रीभागवत सु आहि । तातें निगमागमन तें परम महत है ताहि ॥

तथाहि—निगमकल्पतरो र्गलितं फलमिति ॥ ३८ ॥ प्रथमस्कन्धे—स्वादु स्वादु पदे पदे इति च ॥३६ ॥

याही तें भागवत कौ नीकैं करौ विचार । श्रुति सूत्रनि के अर्थ कौ यातें पैहौ सार ॥
कृष्ण नाम संकीरतन करौ निरन्तर चाइ । हेलाकरि पैहौ मुकति कृष्ण प्रेम धन पाइ ॥

तथाहि—ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षतीति ॥ ४० ॥ मुक्ता अपि लीलयाविग्रहं कृत्वेति ॥ ४१ ॥
परिनिष्ठतोऽपि नैर्गुण्ये उत्तमश्लोक लीलयेति ॥ ४२ ॥ "तस्यारविन्द नयनस्य पदारविन्देति' ॥३४ ॥
"आत्मारामाश्च मुनयो निर्ग्रन्थेति' ॥ ४४ ॥

तिंही समें तिहिं सभा मधि महाराष्ट्र द्विज सोइ । विवरण याही पदयकौ कह्यौ सवनिसौं जोय ॥
प्रभु याही पदकौ अरथ कीनौ इक सठि भांति । जिहिं सुनि लोकनिकें हियें चमत्कार नहिंमाँति ॥
कियौ आग्रह सुनन हित तव सब लोकनि जोइ । प्रभु तब इक सठ अर्थ जे वारि कहै सब सोइ ॥
सुनि लोकनि कें अति भयौ चमत्कार सुख सार । गोस्वामी चैतन्य जू कृष्ण किये निरधार ॥
इतनौ कहि उठिकैं चले गौर हरी प्रभु आहि । हरि धुनि करि कें लोक सव करैं दंडवत ताहि ॥
सब कासी वासी करैं नाम कीरतन जोइ । रौवें हसें जु प्रेम करि नांचै गावैं सोइ ॥

संन्यासी पण्डित करैं श्री भागवत विचार । देस सवै वाराणसी प्रभु जू किय निस्तार ॥
निज गण आगे प्रभु कहैं करिकैं कछु मृदुहास । प्रेम पोट ल्यायौ जु हौं वेंचन कासी वास ॥
कासी में गाहक नहीं नाहिन वस्तु विकाय । फिरि कै देसहि वोझ वहि लै कैं गयौ न जाय ॥
वोझ वहां हां तुम सबनि भयौ दुख हिय आइ । तुम सब की इच्छासु करि देहौं ताहि लुटाय ॥
कहैं सवैं जन तारिबें हित तुम्हरौ अवतार । पूरव दच्छिण औ पछिम कीनें सब निस्तार ॥
इक वाराणसी रही ही तुम तें विषम विचार । कीनौ तिहिं निस्तार कैं हम सब के सुख मार ॥
जब वाराणसी ग्राम मधि भौ कोलाहल जोइ । देस गांव के लोग सुनि लागे आवनि सोइ ॥
लच्छ कोटि आवैं सु जन नाहिन गणना ताहि । प्रभु कौ नहि पावैं दरस कीरंतन ठां आहि ॥
प्रभु जव जांहि स्नान हित देखन विश्वहि नाथ । प्रभु अवलोकन जव करैं दुहुंदिसि होयसनाथ ॥
भुज उठाय प्रभु जु कहैं कहौ कृष्ण हरि सोइ । परैं दंडवत लोकसव हरि धुनि करिकें सोइ ॥
जन निस्तारे इहीं विधि पाँच दिनन लौं जाइ । और दिना उदविगन ह्वै चले महाप्रभु सोइ ॥
प्रभु जु उठि कैं रैन मधि कियौ गमन जव आहि । तवैं भक्त जन पाँच ए पाछैं लगि लिय ताहि ॥
तपन मिश्र रघुनाथ पुनि महाराष्ट्र द्विज जोइ । शशिशेखर गायक हरहि परमानंद जन सोइ ॥
जैवौ चाहै सवै जन लीलाचल प्रभु संग । प्रभु सब कौं दीनी बिदा करि वहु जतन सुरंग ।
हमकौं देखन आइ हौ पाछें इच्छा जोइ । अव हम जैहैं एक ले झारखंड पथ होइ ॥
कह्यौ सनातन कौं प्रभु तुम वृन्दावन जाहु । तुम दोऊ भाई तहां कियौ गमन हिय चाहु ॥
कंथा और करंग कर जन गन मम कंगाल । वृन्द्रावन ऐहैं तिनहिं करि हौ तुम प्रतिपाल ॥
इतनौ कहि कें प्रभु चले सव कौं हिय हि लगाय । परे तहांई भक्त सव ह्वै मूर्छित अकुलाय ॥
कितिक छिन हि में सव उठे आये घर दुख पाप । चले सनातन जू तवैं वृन्दावन भरि भाय ॥
इहां गुसांई रूप जू आये मथुरा आहि । तैब सुबुद्धि राय जु मिले ध्रुव घाटहि मधि ताहि ॥
जब सुबुद्धि राय जु हुये अधिपति गौड हि आहि । साह हुसेंन जु सैद सुत करैं चाकरी ताहि ॥
इक दिन ताल खुदावतैं कियौ जु मुनसब ताहि । फिर तिहिं मारयौ चाबकनि पाय छिद्र कछु आहि॥
जब हुसेंन पाछें भयौ गौड देस नृप जोइ । तिन हूं राय सुबुद्धि कौं वहुत बढ़ायौ सोइ ॥
तिंहिं नारी तिंहिं पीठ मधि चावक चिन्ह हि जोय । मारण हित तव राय कें कहै नृपति सौं सोय ॥
कहैं नृपति पोषक जु मम राय पिता सम जोइ । नहीं वात इह है भली याहि मारिवै सोइ ॥
करौ तुरग नारी कहै नहीं लेहु जो प्राण । कहै नृपति जाति हि लियें यहू न जीवै जान ॥
मरयौ चहै नारी परयौ नृप संकट के वीच । करवा कौ पानी जु तिहि मुख हि दिवायौ नीच ॥
तब ही राय सुबुद्धि जू छल जु पाय कें सोइ । आये पुरी वाराणसी विषय छाडि सब जोइ ॥
पूछयौ तिन पण्डित गननि प्रायश्चित्त जु आहि । खाय तप्त घृत प्राण तजि कहैं विप्र यौं ताहि ॥
कोऊ कहै इतौ नहीं अलप दोष है एह । सुनि कें राय रहे तवहि मन में करि संदेह ॥
तब ही जब वाराणसी आये प्रभु जू सोइ । राय कह्यौ वृत्तांत निज तिन सौं मिलि कैं जोय ॥

ह्यांते वृन्दाविपिन कौं जाहु कह्यौ प्रभु ताहि । करौ निरन्तर कृष्ण कौ नाम कीरतन आहि ॥
पाप दोषजैं है जु तुव करि इक नामाभास । अरु नामनितें कृष्ण पद पैहौ करि विश्वास ॥
चले राय वृन्दाविपिन प्रभु निदेस लै सोइ । नैमिष वन आये तवै अवधि प्रयाग हि होय ॥
प्रभु वार्त्ता पाई तवै राय जु मथुरा आय । भई नही प्रभु भेट यह भौ दुख हिय अधिकाय ॥
सूकी लकरी आनि कें मथुरा वेचें सोइ । पावै पैसा पांच छह एक वोझ के जोइ ॥
इक पैसा के चना चवि रहैं आप इहिं भाय । और वचैं धरि राखई बनिक हाट मधि जाय ॥
देखि दुखीजन कौं जु तिहिं भोजन दै सुख झेलि । देहि जु आवै गौडिया दही भात अरु तेल॥
आये जव श्री रूप जी वहुत प्रीति किय ताहि । द्वादस करवाये जु बन अपनें संग लै आहि ॥
रहे जु वृन्दाविपिन में मास एक ही रूप । चले सनातन सोधहित वेगहि नेह स्वरूप ॥
प्रभु जू गंगातीर पथ ह्वै कें गये प्रयाग । यह सुनि विव भाई तिही पथहि चले करि राग ॥
इहां सनातन जू तवै आय प्रयाग हि सोइ । राज मार्ग सुधे चले आये मथुरा जोइ ॥
तिन्हैं मिले तब राय जू मथुरा के मधि आहि । रूप और अनुपाम की कथा कही सब ताहि ॥
विवि भाई गौ गंग पथ ये आये पथ राज । याही तैं नाहिन भयौ तिन कौ मिलन समाज ॥
करैं सनातन सौं अधिक नेह राय मति सार । नहीं सनातन मान ई सो स्नेह व्यवहार ॥
महा विरक्त सनातन जु वन-वन भ्रमै सुखैंन । प्रति तरु प्रति कुंजनि रहै एक एक दिन रैंन ॥
मथुरा कौ महात्म्य जिहि ग्रंथ संग्रहै जोइ । प्रगट करैं तीरथ गुपत वन में भ्रमें जु सोइ ॥
रहैं सनातन इहीं विधि वृदांवन मधि आइ । रूप गुसाई अनुज सह कासी पहुंचे जाइ ॥
तपनमिश्र ससिशेखर जु महाराष्ट्र द्विज सोइ । तीन जननि संग रूप जू कियो मिलन तब सोइ ॥
मिश्र गेह भिक्षा करैं शेखर के गृहवास । प्रभू सिखयौ जु सनातन हि सुने मिश्र के पास ॥
कासी मधि प्रभुकौ चरित सुनिकैं सुख सौं ताहि । संन्यासिन पै कृपा सुनि पाये अतिसुख आहि॥
प्रणति देखि सव जननि की प्रभु जू विषै अपार । सुखी भये जन मुखनितें सुनि कीरंतन सार ॥
गमन कियौ गौड हि दिना दस रहि कै श्री रूप । यहै सनातन रूप कौ कह्यौ चरित्र अनूप ॥
इहां महाप्रभु जब चले लीलाचल कौं जोइ । निर्जन वन पंथ चलन प्रभु पायौ अति सुख सोइ ॥
सुख सौं पावैं चले प्रभु वल भद्र हि के संग । वन मृगादि सँग प्रथम ज्यौं करैं जु नाना रंग ॥
आय अठारह नला ढिंग भट्टाचारज विप्र । निज जन गण हिं बुलाइवैं पठयौ ताकौं छिप्र ॥
सुनि जन गण जनु फेरिकैं जिये महा सुख पाय । ज्यौं प्राणनि पाये उठें इन्द्रिय गण हुलसाइ ॥
आनँद विह्वल भक्तगण आये सब ही धाय । प्रभु कौं मिले नरेन्द्र मधि आय सवै सुख पाय ॥
पुरी भारती के चरण वंदन प्रभु किय जोइ । दोऊ प्रभु जू कौं कियौ प्रेमालिंगण सोइ ॥

श्री स्वरूप दामोदर पण्डित गदाधर जू कासीश्वर गोविंद और जगदानंद हैं ।
वक्रेश्वर कासीमिश्री प्रद्युम्नमिश्र पण्डित दामोदर हरिदास ठाकुर अमंद हैं ॥
पण्डित श्री शंकर जू औरौ जिते भक्त सब परे प्रभु पाद पद्म जेजे अलिवृंद हैं ।
सब कौं आलिंगन कै भये प्रेमाविष्ट प्रभु आनंद उदधि वहै भक्त रस वृंद हैं ॥ १ ॥

सब भक्तनि सँग लै चले महाप्रभु जू धाय। जगन्नाथ के दरस हित हियें भरे अति चाय ॥
जगन्नाथ कौ दरस करि भौ प्रभु प्रेमावेस। नृत्य गान बहु छिन कियौ सँग लै भक्त असेस ॥
जगन्नाथ सेवक तिन्हैं हार प्रसाद जु दीय। तुलसी अधिकृत आयकें चरण वंदना कीय ॥
कोलाहल भौ ग्राम मधि आये प्रभु जन साथ। सार्वभौम रामानँद जु मिले जु वाणीनाथ ॥
सबकौं सँगलै मिश्र घर आये प्रभु जू आहि। सार्वभौम पंडित तबै कियौ निमन्त्रण ताहि ॥
प्रभु जु कहैं प्रसाद तुम ल्यावौ याही गेह। करिकें भोजन आजु ह्यां सबके सँग करि नेह ॥
तब दोऊ जगन्नाथ कौ निज प्रसाद जो दीय। सब जन संग महाप्रभू सुख सौं भोजन कीय ॥
यहैं कह्यौ श्री गौर प्रभु लखि वृंदांबन जोय। जब सैं लीलाचल गमन फिरि हूं कीनौं जोय ॥
यह मधि लीला कौ कियौ कछु दिग दरसन सार। ज्यौं कीनौं पटवरस लौं गमनागमन विहार ॥
सेस अठारह बरस लौं किय लीलाचल वास। जन गण संग करैं प्रभू कीरंतन उल्लास ॥
श्रवण करै याकौ सुजन श्रद्धा करि कें जोय। पैहै श्री चैतन्य के चरण बेग ही सोय ॥
क्रम करि लीला मध्य कौ अब कीजत अनुवाद। होतु कियें अनुवाद कैं कियैं कथा आस्वाद ॥
प्रथमहि लीला सेस कौ सूत्र कथन सुख सार। किहीं अंस कौ तिहीं मधि किय वर्णन विस्तार ॥
प्रभु प्रलाप वर्णन द्वितीय परिछेद मधि जोइ। नाना भावनि कौ तिहीं मधि दिग दरसन सोइ ॥
परिच्छेद तीजें कह्यौ प्रभु जू कौ संन्यास। जैसैं घर आचार्य कें कीनौ गौर विलास ॥
माधवेन्द्र जू कौ चरित वर्णन चौथैं जान। थापन श्री गोपाल कौ खीर चोर विख्यान ॥
साखी श्री गोपाल कौ चरित पांचमें आहि। नित्यानंद कहैं जु तिहिं सुनें महाप्रभु ताहि ॥
सार्वभौम कौ छठै मधि किय उद्धार विचार। तीरथ यात्रा सातयें वासुदेव निस्तार ॥
अठयें रामानंद कौ संवाद हि विस्तार। सुन्यौ आप प्रभु जू सकल सिद्धान्तनि कौ सार ॥
दक्षिण तीरथ भ्रमण प्रभु कह्यौ नवम में जोइ। सबै वैष्णवन कौ मिलन कह्यौ दसम मधि सोइ ॥
मंदिर मण्डल कीरतन कह्यौ ग्यारहैं जोइ। प्रक्षालन गृह गुंडिचा कह्यौ बारहैं जोइ ॥
रथ आगैं नर्त्तन जु प्रभु कह्यौ तेरहैं सोइ। चौदहै हेरा पंचमी जात्रा दरसन सोइ ॥
व्रज देविन के भाव कौं श्रवण तिहीं मधि जान। भक्तनि के गुण पंद्रहैं श्री मुख करैं वखान ॥
भिक्षा भट्टाचार्य गृह किय अमोघ निस्तार। विपिन गमन पथ गौड़ ह्वै सो सोरहैं मझार ॥
फिरि आये लीलाचल हि नाट हि सालातें जु। वन पथ ह्वै मथुरागमन कह्यौ सत्ररु में जु ॥
वर्णन कियौ अठारहैं वन विहार रस पागि। उन विंशति मधि आगमन मथुरा तें जु प्रयाग ॥
ताही मधि श्री रूप कौ कह्यौ शक्ति संचार। मिलन सनातन कौ कह्यौ वीसति मधि सुखसार ॥
ताही मधि भगवान कौ किय स्वरूप विख्यान। हरि प्रभुता माधुर्य्य कहि एकविंसये जांन ॥
द्वै प्रकार साधन भगति विवरण मधि बाईस। प्रेम भक्ति रस कौ कथन कह्यौ मध्य तेईस ॥
आत्मारामा पद अरथ चौवीस ऐं विचार। कासी वासी भक्त किय पचीसयें मझार ॥
कासी तें फिर आगमन लीलाचल मधि जोइ। भक्तन कौ मिलिवौ कह्यौ ताही के मधि सोइ ॥

परिच्छेद पचीस कौ यह कीनौ अनुवाद। जाकैं सुनैं जु होत है ग्रन्थ अर्थ आस्वाद ॥
यहै कह्यौ संक्षेप करि मधि लीला कौ सार। वर्णन कोटिक ग्रंथ करि जाय न यह विस्तार ॥
देस देस मधि प्रभु भ्रमै हेतु जीव निस्तार। आप भक्ति आस्वाद करि ताकौ कियौ प्रचार ॥
कृष्ण तत्व हरि भक्त कौ तत्व जु प्रेम विचार। भावतत्व रसतत्व पुनि लीलातत्व सु सार ॥
विस्तारे निज वदन करि भक्त हेतु प्रभु जोइ। कहूं कहां जे भक्त मुख सुने आप प्रभु सोइ ॥
दाता वड़े कृपालु अति वत्सल जन दुख जान। तीन लोक में और नहिं श्री चैतन्य समान ॥
श्रद्धा करि लीला यहै सुनें भक्त गण आहि। पैहौ श्री चैतन्य पद कृपा जु हरि कै पाहि
पैहौ इहीं प्रसाद करि कृष्णतत्व कौ सार। सबै सास्त्र सिद्धांत के पैयै यातें पार ॥

राग भैरव—सुनौ रसिक भक्त जूथ दीन वचन मेरौ।

सब की पद रेनु धरिकैं तनु कें आभरण करिकैं, करौं कछु निवेदन हों ताहि हिये हेरौ ॥टेक॥
कृष्ण लीला अमृत सार ताकी सत सहस्र धार, याहीं तें दसौं दिसा वहै निज सुढार।
लीला चैतन्य जोई अक्षय सरवर हैं सोइ, तामें मनहंस कौ करावौ आधार ॥ २ ॥
भक्ति के सिद्धांत रास फूले बन कमल जास, ताकौ मकरंद स्वाद करौ रसिक जेई।
कुमुदवन जु प्रेमरस है प्रफुलित निसि द्यौस, बहै तामें मन भ्रमर गणहि पोख्यौ नित तेई ॥ ३ ॥
नाना विधि भक्त सुजन हंस चक्रवाक निगम, सब ही मिलि जाही मधि करत है विहार।
कृष्ण केलि रस मृणाल पैयै जहां सर्वकाल, ताही कौ भक्तहंस करै नित अहार ॥ ४ ॥
ताही सरवरहि जैकैं हंस मृग चक्र ह्वै कैं, सुख सौं तुम करौ तहां सदाई विलास।
नसि है सब दुख निदान पैहौ अति सुख की खानि, अनायास ह्वै है हियैं प्रेमहि उल्लास ॥ ५ ॥
यहै अमृत रस अखंड साधु संत धन प्रचंड, बरखै उद्यान विश्व या की झकोर तें।
तातें प्रेम फल फलैं स्वादैं तिहिं भक्त सदा तिनके, अवसेस जिये जीव जगत घोरतें ॥ ६ ॥
गौर लीला अमृत पूर कृष्ण लीला पुनि कपूर, दोउन के मिलें होंय माधुरी अपार।
साधु गुरु प्रसाद जाहि लहै पान करै सोई, ताहि बढ़ै माधुरी कौ स्वाद जानें निरधार ॥ ७ ॥
जिहि लीला अमृत विना करैं जदपि खान पान, तऊ भक्त जीवन है दुर्बल अति सोई।
एक बूंद पीवै जाहि प्रफुलित तन मन सु आहि हसैं गावैं नृत्य करैं रस में मगन होई ॥ ८ ॥
यहै अमृत करौ पान जाकी सम नहीं आन, करि कें निज हृदय सुदृढ़ अति ही विश्वास।
परौ जिन कुतर्क गर्त अशुचि कठिनता आवर्त, जाके विच परतहीं जु ह्वै है सब नास ॥ ९ ॥
महाप्रभू नित्यानंद श्री अद्वैत भक्त वृंद, और जिते श्रोता जन साधु आस पास ही।
सव के श्री चरण कमल करिकें सिरोरत्न विमल, ताहीं तें पूर्ण होय वांछित अनायास ही ॥१०॥
रूप श्री सनातन रघुनाथ जीव चरण कमल, धरिकें निज सीस करें तिन ही की आस।
कृष्ण लीला अमृत सहित गौर चंद्र चरितामृत, कहै कछु ताहि दीन हीन कृष्णदास ॥ ११ ॥
रूप श्री सनातन जगन्नाथ सुवल स्याम चरण, कमल ही में भृंग जाकौ मन सतृष्ण।
वरण्यौ कविराज गौर चरितामृत भाषा निज, प्रगट करै भाषा व्रज ताहि वेणी कृष्ण ॥ १२ ॥

इति श्री चैतन्य चरितामृते मध्यखंडे कासी वासी वैष्णवकरन महाप्रभुलीलाद्रिगमन मध्यलीलानुवादकरणो नाम पंचविंशतिपरिच्छेदः ॥

॥ समाप्तोयं मध्यखण्डः ॥

समर्पणपत्रम्

श्री श्री राधारमण चरणदास देवस्यानुचर प्रवरस्य, सकलदेश-
प्रसिद्ध कीर्त्तिराशेः, प्रेममात्र सर्वस्वकृतस्य, निरन्तर सात्विक-
भावावल्या विभूषितस्य, दीनता सागरस्य, मधुर-
स्वरालापैः सर्वदा गौरकीर्तन कर्त्तुः, श्री
रामदासेति मधुर नाम्ना प्रसिद्धस्य,
मदीय आराध्यदेवस्य, श्रीगुरु—
देवस्य, बाबाजी महा-
राजस्य प्रीत्यर्थे

समर्पितेदं ग्रन्थरत्नम्

पुस्तक मिलने का पताः—

(१) श्रीराम निवासजी खेतान
सवामन के सालिग्राम मंदिर के नीचे
लोई बाजार वृन्दावन, मथुरा।

(२) श्री सेठ चेतरामजी
कोसी कलाँ, मथुरा।